जैन विश्वभारती संस्थान

लाडनूं - ३४१३०६ (राज.)

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

णाणस्स सारमायारो

वाणिज्य स्नातक-द्वितीय वर्ष

Bachelor of Commerce- Second Year

तृतीय पत्र

Third Paper

निगम लेखांकन

Corporate Accounting

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

COPYRIGHT
Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun

Written By :
Dr. K.K. Gupta (Section-C)
Sh. Anil Sethia (Section-A, B)
Sh. Rakesh Kankani (Section-D)
Sh. C.P. Joshi (Section-D)

Edition : 2014

Printed Copies : 100

Published By: Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

	अनुक्रमणिका (Contents)	
खण्ड—अ	अंश, निर्गमन, हरण, पुनर्निर्गमन, अधिमान अंशों का शोधन, ऋणपत्र का निर्गमन एवं शोधन, बोनस अंश का निर्गमन, अभिगोपन	01—88
खण्ड—ब	अंतिम खाते, लाभों का निपटारा, समामेलन से पूर्व का लाभ एवं बाद का लाभ एकीकृत चिट्ठा	89—121
खण्ड—स	आन्तरिक पुनर्निर्माण, एकीकरण	122—261
खण्ड—द	समापन की स्थिति में लेखें, बैंकिंग और बीमा कम्पनी के लेखे, विनियोग खाता ख्याति और अंश का मूल्यांकन	262—406

अध्याय 1
अंशों का निर्गमन एवं हरण
(Issue and Forfeiture of Share)

विषय सूची (Contents)

1.0 कम्पनी की परिभाषाएं
1.1 अंश
1.1.1 अधिमान अंश
1.1.2 समता अंश
1.1.3 स्टॉक
1.2 अंश पूंजी के प्रकार
1.3 अंश निर्गमन प्रक्रिया
1.4 अंशों का निर्गमन
1.4.1 सममूल्य पर निर्गमन
1.4.2 प्रीमियम पर निर्गमन
1.4.3 बट्टे पर निर्गमन
1.5 लेखांकन प्रविष्टियां
1.5.1 अंशों का एक मुश्त निर्गमन
1.5.2 अंशों का किस्तों में निर्गमन
1.5.3 बकाया मांग
1.5.4 अग्रिम प्राप्त मांगें
1.6 अंशों का अत्यधिक एवं न्यून अभिदान
1.7 अंशों का रोकड़ के अतिरिक्त अन्य प्रतिफल के लिए निर्गमन
1.8 अंशों का हरण
1.8.1 अंशों का समर्पण
1.8.2 हरण किए गए अंशों का पुनर्निर्गमन
1.9 कर्मचारी स्टॉक विकल्प, 1.9.1 स्वेट ईक्विटी, 1.9.2 अधिकार अंश
1.10 डीमेट
1.11 प्रतिभूतियों की वापसी
स्व परीक्षा प्रश्न (Self Examination Questions)

प्रस्तावना (Introduction)

कम्पनी व्यक्तियों का एक ऐसा संगठन है जिसमें लाभ कमाने का सामूहिक उद्देश्य की पूर्ति हेतु वे मुद्रा या मुद्रा तुल्य अंशदान करते हैं। कम्पनी की संयुक्त पूंजी होती है तथा हस्तान्तरणीय होती है। कम्पनी का वैधानिक अस्तित्व होता है। जो इस पूंजी में अंशदान करते हैं, वे अंशधारी या सदस्य (Member) कहलाते हैं।

1.0 कम्पनी की परिभाषा (Definition of Company)

हैने के शब्दों में "कम्पनी लाभ के लिए निर्मित एक ऐच्छिक संस्था है, जिसकी पूंजी हस्तान्तरणीय अंशों में विभाजित होती है तथा जिसमें स्वामित्व के लिए सदस्यता अनिवार्य है।"

न्यायाधीश लिंडले के शब्दों में "कम्पनी से आशय ऐसे व्यक्तियों के संघ से है जो मुद्रा या मुद्रा के तुल्य अंशदान

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

एक सामूहिक स्कन्ध में करते हैं और इसका उपयोग सामूहिक उद्देश्य के लिए करते हैं।"

कम्पनी अधिनियम, 1956 की धारा (3)(1)(i) के अनुसार "कम्पनी का आशय इस अधिनियम के अन्तर्गत निर्मित एवं पंजीकृत कम्पनी से है अथवा एक ऐसी विद्यमान कम्पनी से है जिसका निर्माण एवं पंजीयन इस अधिनियम के पूर्व के किसी कम्पनी अधिनियम के अन्तर्गत हुआ हो।"

कम्पनी की उपर्युक्त समस्त परिभाषाओं का अध्ययन कर लेने के पश्चात् निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि कम्पनी का आशय कम्पनी अधिनियम के अधीन समामेलित एक कृत्रिम व्यक्ति से है, जिसका अपने सदस्यों से पृथक अस्तित्व एवं अविच्छिन उत्तराधिकार होता है, जिसका निर्माण किसी विशेष उद्देश्य की पूर्ति के लिए होता है और जिसकी एक सार्वमुद्रा होती है।

1.1 अंश (Shares)

कम्पनी की कुल अंश पूंजी विभिन्न भागों में विभाजित होती है, प्रत्येक भाग जिसमें कम्पनी की पूंजी विभक्त होती है, अंश कहलाते हैं। कम्पनी अधिनियम, 1956 की धारा 85(1) के अन्तर्गत कम्पनी दो प्रकार के अंश निर्गमित कर सकती है–

1. अधिमान अंश या पूर्वाधिकार अंश (Preference Shares) तथा
2. समता अंश (Equity Shares)।

1.1.1 अधिमान अंश (Preference Shares)– अधिमान अंशों से आशय ऐसे अंशों से है जिसके धारकों को एक पूर्व निश्चित दर से लाभांश प्राप्त करने का अधिकार होता है तथा कम्पनी के समापन पर ऐसे अंशधारियों को उनके द्वारा दी गई पूंजी वापस प्राप्त करने का प्रथम अधिकार भी प्राप्त होता है। कुछ विशेष अधिकारों के आधार पर अधिमान अंश निम्नलिखित प्रकार के हो सकते हैं–

(i) संचयी अधिमान अंश (Cumulative Preference Shares)– यदि किसी वर्ष कम्पनी को लाभ कम होने या न होने की स्थिति में संचयी अधिमान अंशों पर लाभांश वितरित न कर सके तो इस बकाया लाभांश को आगामी वर्षों के लाभोंमें से दिया जाता है। इस प्रकार ऐसे अंशों पर लाभांश संचयी होता रहता है।

(ii) असंचयी अधिमान अंश (Non-Cumulative Preference Shares)– ऐसे अंशधारियों को लाभांश उसी वर्ष के लाभों में से ही दिया जाएगा जिस वर्ष लाभांश देना है। जिस वर्ष लाभ न हो या कम हो तो आगामी वर्षों के लाभों में से लाभांश नहीं दिया जाएगा।

(iii) अवशिष्टभागी अधिमान अंश (Participating Preference Shares)– ये इस प्रकार के अंश होते हैं जिनमें लाभांश पाने का पूर्वाधिकार होता है साथ ही कम्पनी में बचे लाभ (समता अंशधारियों को लाभांश वितरित करने के पश्चात् बचा लाभ) पर भी समता अंशधारियों के साथ, ये लाभांश के भागी होते हैं।

(iv) अनावशिष्टभागी अधिमान अंश (Non-Participating Preference Shares)– जिन अंशधारियों को पूर्व निर्धारित दर से लाभांश पाने का पूर्वाधिकार तो होता है परन्तु अतिरिक्त लाभों में इन्हें भाग लेने का अधिकार भी नहीं होता तथा न ही कम्पनी के समापन पर आधिक्य में हिस्सा मिलता है, उन्हें अनावशिष्टभागी अधिमान अंश कहते है। सूचना के अभाव में अधिमान अंश अवशिष्टभागी ही माने जाते हैं।

(v) शोधनीय अधिमान अंश (Redeemable Preference Shares)– इस प्रकार के अंशों पर कम्पनी अपने जीवनकाल में कम्पनी अधिनियम, 1956 की धारा 80 एवं 80ए के प्रावधानों के अनुसार पूंजी वापस लौटा देती है। इनका शोधन तभी किया जा सकता है जबकि अंश पूर्णदत्त हों। निर्गमन के अधिकतम 20 वर्षों के भीतर शोधन करना अनिवार्य है।

(vi) अशोधनीय अधिमान अंश (Irredeemable Preference Shares)– वे अंश जिनका शोधन कम्पनी के

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

जीवनकाल में नहीं होता अपितु कम्पनी के समापन के समय होता है, अशोधनीय अधिमान अंश कहलाते हैं। भारत में कम्पनी संशोधन अधिनियम, 1996 के लागू होने के पश्चात् ऐसे अंश जारी नहीं किए जाते।

(vii) परिवर्तनीय पूर्वाधिकार अंश (Convertible Preference Shares)– इस प्रकार के अंशधारकों को एक निश्चित अवधि के पश्चात् अपने अंशों को समता अंशों में परिवर्तन का अधिकार होता है।

(viii) अपरिवर्तनीय पूर्वाधिकार अंश (Non-Convertible Preference Shares)– इस प्रकार के अंशधारकों को अपने अंशों को समता अंशों में परिवर्तन का अधिकार नहीं होता है।

(ix) संचयी परिवर्तन अधिमान अंश (Cumulative Convertible Preference Shares)– भारत सरकार ने 1985 में सार्वजनिक कम्पनियों को संचयी परिवर्तनशील अधिमान अंशों को निर्गमित करने का अधिकार दिया। ये अंश 100 रु. अंकित मूल्य के होते हैं, इन पर लाभांश 10 प्रतिशत दिया जाता है। कम्पनी 3 से 5 वर्षों की अवधि में इन्हें समता अंशों में परिवर्तित करती है। परिवर्तन के समय यदि इन अंशों पर लाभांश बकाया है, तो बकाया लाभांश का भुगतान परिवर्तित समता अंश के धारकों को देय होगा।

1.1.2 समता या साधारण अंश (Equity or Ordinary Shares)– कम्पनी अधिनियम, 1956 की धारा 85(2) के अनुसार समता या साधारण अंश वे अंश है, जो अधिमान अंश नहीं है। ऐसे अंशधारियों को पूर्वाधिकार अंशधारियों को लाभांश वितरण करने के पश्चात् लाभांश दिया जाता है। कम्पनी के समापन के समय भी अधिमान अंशधारियों को पूंजी वापस करने के पश्चात् सामान्य अंशधारियों को पूंजी वापस की जाती है।

समता अंशों पर लाभांश की कोई दर पूर्व निश्चित नहीं होती। जिस वर्ष लाभांश देना है उसी वर्ष के लाभ के अनुसार लाभांश की दर निश्चित की जाती हैं। यदि किसी वर्ष लाभ न हो या कम हो तो समता अंशों पर लाभांश वितरण नहीं किया जाता है और न ही आगे संचित किया जाता है। यदि कम्पनी को अधिक लाभ होता है तो अंशों पर ऊंची दर से लाभांश वितरण किया जा सकता है। कम्पनी के वास्तविक स्वामी समता अंशधारी ही होते हैं। कम्पनी (संशोधन) अधिनियम, 2000 में समता अंश के दो प्रकार बताए है–

(1) मतदान अधिकार के साथ (with voting right)

(2) भिन्न अधिकार के साथ (with differential rights- as dividend, voting or otherwise)

1.1.3 स्टॉक (Stock)– स्टॉक एक ऐसी प्रतिभूति है जिसका कोई निश्चित अंकित मूल्य नहीं होता है और न ही स्टॉक की संख्या निश्चित होती है। स्टॉकधारी किसी भी मूल्य पर स्टॉक का क्रय–विक्रय कर सकता है ये कम्पनी अधिनियम, 1956 के लागू होने से पूर्व प्रचलन में थे, अब नहीं है। अब कम्पनी आन्तरिक पूनर्निर्माण की दशा में पूर्णदत अंशों को स्टॉक में बदल सकती है, जनता को जारी नहीं कर सकती।

1.2 अंश पूंजी के प्रकार (kinds of Share Capital)

समता अंशों एवं अधिमान अंशों के अंकित मूल्य के योग को कम्पनी की अंश पूंजी कहा जाता है। अंश पूंजी को निम्नलिखित श्रेणियों में विभाजित किया जाता है–

1. **अधिकृत पूंजी (Authorised Capital)–** कम्पनी के पार्षद सीमानियम के पूंजी वाक्य में वर्णित पूंजी अधिकृत पूंजी कहलाती है। कम्पनी को पूंजी की वह अधिकतम राशि जिसे निर्गमित करने का अधिकार होता है, अधिकृत पूंजी कहलाती है। इससे अधिक पूंजी निर्गमित नहीं की जा सकती।

2. **निर्गमित पूंजी (Issued Capital)–** कम्पनी अपनी अधिकृत अंश पूंजी में से जितने अंशों का बंटन करे, उनके अंकित मूल्य को निर्गमित पूंजी कहते हैं। अधिकृत पूंजी का वह भाग जो अभी तक निर्गमित नहीं किया गया है, अनिर्गमित पूंजी कहलाती है। कम्पनी इसे आवश्यकता पड़ने पर कभी भी जारी कर सकती है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

3. **प्रार्थित या अभिदत्त पूंजी (Paid up or Subscribed Capital)–** निर्गमित पूंजी का वह भाग जिसके लिए जनता द्वारा आवेदन किया जाता है, प्रार्थित या अभिदत्त पूंजी कहलाती है। जितने अंशों के लिए आवेदन–पत्र आते हैं, उतने अंशों को अभिदत्त अंश कहते हैं। कम्पनी निर्गमित अंशों से अधिक अंशों का आबंटन नहीं कर सकती है। यदि समस्त निर्गमित अशों के लिए आवेदन प्राप्त नहीं होते हैं तो शेष भाग 'न अभिदत्त की गई पूंजी' (Unsubscribed Capital) कहलाती है।

4. **मांगी गई पूंजी (Called up Capital)–** कम्पनी द्वारा अंशधारियों से अंशों के अंकित मूल्यों से जितनी राशि मांग ली जाती है वह राशि मांगी गई पूंजी कहलाती है। अभिदत्त पूंजी का वह भाग जो मांगने से शेष है, न मांगी गई पूंजी (UnCalled up Capital) कहलाती है।

5. **प्रदत्त पूंजी (Paid up Capital)–** मांगी गई पूंजी में जो पूंजी प्राप्त हो जाती है प्रदत्त पूंजी कहलाती है। यदि कम्पनी द्वारा मांगी गई समस्त राशि (अंकित मूल्य+प्रीमियम) का भुगतान अंशधारी कर दे तो मांगी गई पूंजी व अभिदत्त पूंजी एक ही होती है। कम्पनी द्वारा मांगी गई राशि का भुगतान अंशधारियों द्वारा न किया जाए तो इसे बकाया मांग राशि **(Call-in-arrears)** कहते हैं।

6. **संचित पूंजी (Reserve Capital)–** कम्पनी अधिनियम की धारा 99 के अनुसार सीमित दायित्व वाली कम्पनी विशेष प्रस्ताव पारित करके यह निर्णय कर सकती है कि कम्पनी द्वारा 'न मांगी गई पूंजी' का एक निश्चित भाग कम्पनी के समापन की दशा में ही मांगा जाएगा। पूंजी के ऐसे भाग को संचित पूंजी कहते हैं। इस प्रकार की व्यवस्था से कम्पनी के ऋणदाताओं में सुरक्षा एवं विश्वास बढ़ता है। ऐसा करने से कम्पनी की साख बढ़ती है तथा ऋण प्राप्त करने में सुविधा होती है।

अंश पूंजी का चिट्ठे में निरूपण (Disclosure of Share Capital Company Balance sheet)–

उदाहरणार्थ– जैन लि. कम्पनी का पंजीयन 50,00,000 रु. की अधिकृत पूंजी के साथ हुआ जो 100 रु. मूल्य वाले अंशों में विभक्त है। इसमें 35,000 अंशों को जनता में क्रय करने के लिए प्रस्तुत किया। जनता ने 30,000 अंशों के लिए आवेदन प्रस्तुत किया। कम्पनी ने सभी आवेदनकर्त्ताओं को अंश आबंटित कर दिए। अंशों से सभी राशि मांग ली गई। केवल 2,000 अंशों को छोड़कर, जिन पर 25 रु. प्रति अंश के हिसाब से अंतिम मांग का भुगतान प्राप्त नहीं हुआ, शेष से सम्पूर्ण राशि प्राप्त हो गई। इसे इस प्रकार चिट्ठे में बताए जाएगा–

Balance Sheet of----- as at ---

		Rs.	
Authorised Capital			
50,000 Shares of Rs. 100 each (50,000x100)		**50,00,000**	
Issued Capital			
35,000 Shares of Rs. 100 each (35,000x100)		35,00,000	
Subscribed Capital			
30,000 Shares of Rs. 100	Rs.		
Fully Called up (30,000x100) =	30,00,000		
Less: Calls in arrear (2,000x25) =	50,000	29,50,000	
Paid up Capital		29,50,000	

1.3 अंश निर्गमन की प्रक्रिया (Procedure for Issue of Shares)

एक सार्वजनिक कम्पनी समामेलन का प्रमाण–प्रत्र प्राप्त होने के बाद पूंजी प्राप्त करने की प्रक्रिया प्रारम्भ कर सकती है। इस हेतु कम्पनी को भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड **(Securities and Exchange Board of India or SEBI)** द्वारा जारी दिशा–निर्देशों की पालना करनी पड़ती है। कम्पनी द्वारा अंशों के निर्गमन के सम्बन्ध में निम्नलिखित

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

प्रक्रिया अपनाई जाती है–

1. प्रविवरण का निर्गमन (Issue of Prospectus),
2. अंशों के लिए आवेदन–पत्र प्राप्त करना (Receipt of Application for Shares),
3. अंशों का आंबटन करना (Allotment of Shares),
4. अंशों पर मांग राशि प्राप्त करना (Receit of Call Money)।

1. प्रविवरण का निर्गमन (Issue of Prospectus)

समामेलन का प्रमाण–पत्र प्राप्त होने के पश्चात् एक सार्वजनिक कम्पनी अंशों को क्रय करने के लिए जनता से प्रविवरण के माध्यम से आवेदन मांगती है। प्रविवरण में कम्पनी अधिनियम के प्रावधानों एवं सेबी द्वारा जारी दिशा–निर्देशों के अनुरूप अनेक विवरण देने होते हैं यथा कम्पनी का इतिहास, उद्देश्य, भावी संभावनाएं, परियोजना, लाभदायकता आदि। प्रविवरण को जनता के लिए प्रकाशित करने से पूर्व एक प्रति रजिस्ट्रार ऑफ कम्पनीज के पास जमा कराना होता है। निजी कम्पनी प्रविवरण जारी नहीं कर सकती।

2. अंशों के लिए आवेदन–पत्र प्राप्त करना (Receipt of Application for Shares)

प्रविवरण को पढ़ने के पश्चात् इच्छित विनियोजक निर्धारित आवेदन–पत्र एवं आवेदन राशि कम्पनी के बैंक (प्रविवरण में उल्लेखित) के पास भेज देते हैं। सीधे कोई आवेदन कम्पनी के पास आता है तो भी कम्पनी एक बार ऐसे आवेदन–पत्रों मय राशि के बैंक को भेज देती है। बैंक निश्चित दिन आवेदनों की सूची कम्पनी को भेज देती है। कम्पनी कार्यालय में आवेदनों की जांच करती है तथा वर्णाक्रम (Alphabetic order) में या अपनी सुविधानुसार 'आवेदन तथा आबंटन पुस्तक' तैयार कर लेती है। विभिन्न प्रकार के अंशों के लिए अलग–अलग आवदेन एवं आबंटन पुस्तकें रखी जाती है।

3. अंशों का आबंटन (Allotment of Shares)

अंशों के आंबटन से आशय अंशों के आवेदकों को अंश का बंटवारा करना है। संचालक मण्डल अंशों का आबंटन का कार्य करता है। एक सार्वजनिक कम्पनी को अंशों के आंबटन करने के लिए निम्नलिखित शर्तों को पूरा करना आवश्यक है–

(i) **न्यूनतम अभिदान की प्राप्ति–** कम्पनी (संशोधन) अधिनियम, 1990 के अनुसार कम्पनी को सम्पूर्ण निर्गमन के 90 प्रतिशत मूल्यों के बराबर अभिदान प्राप्त होना आवश्यक है। सेबी के नए दिशा–निर्देश के अनुसार यदि 10 रु. का कोई अंश हो तो एक आवेदक को कम से कम 200 अंशों के लिए आवेदन करना होगा।

(ii) **निर्गमन मूल्य का कम से कम 25 प्रतिशत भाग आवेदन के साथ–** अंकित मूल्य का कम से कम 25 प्रतिशत भाग आवेदन के साथ लेना अनिवार्य है। ये नकद में होना चाहिए, यदि चैक या ड्राफ्ट हो तो पहले नगद में परिवर्तन के पश्चात् आबंटन किया जाएगा।

(iii) **प्राप्त राशि अनुसूचित बैंक में जमा कराना–** कम्पनी के अंशों के आवेदकों से प्राप्त राशि अनुसूचित बैंक में तब तक जमा रहेगी जब तक कम्पनी को धारा 149 के अनुसार व्यापार प्रारम्भ करने का प्रमाण–पत्र (Certificate of Commencement of Business) नहीं मिल जाता है।

(iv) **न्यूतम अभिदान राशि प्राप्त करने की अवधि–** सेबी के अनुसार अधिकतम 30 दिनों में न्यूनतम अभिदान राशि प्राप्त हो जानी चाहिए। यदि 30 दिनों के भीतर ऐसा नहीं होता है तो आवेदकों को 12 दिनों के भीतर ये राशि वापस लौटानी होती है, अगर ऐसा नहीं किया जाता है तो विलम्ब अवधि के लिए 15 प्रतिशत वार्षिक दर से ब्याज देना होगा।

(v) **स्टॉक एक्सचेंज को आवेदन–** अंशों को जनता में निर्गमन से पूर्व कम्पनी को किसी एक या अधिक स्टॉक

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

एक्सचेंज में उन अंशों के लेनदेन की अनुमति लेने के लिए आवेदन करना होगा। प्रविवरण में भी इसका उल्लेख होना चाहिए।

(vi) स्टॉक एक्सचेंज से आज्ञा न मिलना– अभिदान सूची के 10 सप्ताह के भीतर अनुमति नहीं मिलती है तो कम्पनी अंशों का आबंटन नहीं कर सकती और यदि आबंटन कर दिया है तो आबंटन व्यर्थ माना जाएगा। स्टॉक एक्सचेंज से अनुमति न मिलने पर आवेदकों को 8 दिनों के भीतर वापस राशि लौटानी होगी। अगर ऐसा नहीं किया जाए तो 8 दिन के पश्चात् कम्पनी और संचालक व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूप से राशि ब्याज सहित चुकाने के लिए उत्तरदायी होंगे।

अंशों के आबंटन सूची तैयार करना– आबंटन की समस्त शर्तों की पालना होने पर कम्पनी सचिव द्वारा आबंटन सूचियां तैयार की जाती है। इन सूचियों पर संचालक मण्डल की सभा में विचार किया जाता है और आबंटन प्रस्ताव पास किया जाता है। यदि आवेदन निर्गमित अंशों के बराबर या इससे कम है तो समस्त आवेदकों को अंशों का आबंटन कर दिया जाता है। यदि जनता से प्रस्तावित अंशों से अधिक अंशों के लिए आवेदन प्राप्त हो जाता है तो 'बंटन समिति' बनाकर बंटन का आधार तय किया जा सकता है। सेबी के दिशा–निर्देशों के अनुसार 50 प्रतिशत अंश ऐसे विनियोजकों हेतु आरक्षित करने होंगे जो 1,000 से कम अंशों के लिए आवेदन किए हैं तथा शेष 50 प्रतिशत अंश उनके लिए होंगे जो 1,000 से अधिक अंशों के लिए आवेदन किए हैं।

आबंटन प्रक्रिया (Allotment Process)– 'अंश आवेदन तथा आबंटन सूची' में उचित खातों व लेखा पुस्तकों में प्रविष्टि करने के पश्चात् प्रत्येक पृष्ठ पर संचालक मण्डल के अध्यक्ष द्वारा हस्ताक्षर किए जाते हैं और संचालक मण्डल सचिव को आबंटन पत्र (Allotment Letter) व खेद–पत्र (Letter of Regret) तैयार कर सम्बन्धित को भेजने का निर्देश देता है। कम्पनी सचिव जिनको अंश आबंटन किए गए हैं उनको आबंटन–पत्र भेजता है। पत्र में निश्चित तिथि तक आंबटन राशि (यदि अंश पर देय सम्पूर्ण राशि आवेदन के साथ नहीं मांगी गई हो) जमा कराने की मांग होती है।

रजिस्ट्रार को आबंटन–रिटर्न भेजना (Filling Allotment Return to Registrar)– बंटन के 30 दिनों के भीतर कम्पनी को रजिस्ट्रार के पास 'बटन का विवरण' भेजना आवश्यक है।

अंश प्रमाण–पत्र (Share Certificate)– कम्पनी द्वारा अंशधारी को दिया गया ऐसा प्रमाण–पत्र जिसमें अंशधारी का नाम, पता, अंशों की संख्या, सदस्यता क्रम संख्या तथा चुकाई गई राशि का उल्लेख होता है।

अंशों का हस्तान्तरण (Transfer of Shares)– कोई भी अंशधारी अपने अंशों का हस्तान्तरण किसी व्यक्ति को कर सकता है। हस्तान्तरण के लिए उचित स्टाम्प लगा हुआ एक हस्तान्तरण विलेख (Transfer Deed) सम्बन्धित अंशों के साथ कम्पनी को भेजना चाहिए। कम्पनी जांच करने के पश्चात् क्रेता को एक नया अंश प्रमाण–पत्र जारी कर देती है तथा विक्रेता का पुराना अंश प्रमाण–पत्र रद्द कर देती है।

अंशों का निजी रूप से निर्गमन (Private Placement of Shares)– भारतीय वित्तीय संस्थाएं, पारस्पारिक कोषों, बीमा कम्पनियों, पूर्णतः परिवर्तनीय ऋणपत्रों (FCD) या अशंतः परिवर्तनीय ऋणपत्रों इत्यादि को अंशों का निगर्मन करना अंशों का निजी रूप से निर्गमन है। इसके लिए कम्पनी को एक विशेष प्रस्ताव पास करना होगा एवं इसे स्टॉक एक्सचेंज एवं कम्पनी रजिस्ट्रार से अनुमति लेनी होगी।

छोटे व्यक्तिगत विनियोगकर्ता के लिए सुरक्षित रखना (Reservation for Retail (Small) Individual Investor)

छोटे व्यक्तिगत विनियोजक से तात्पर्य एक ऐसे विनियोजक से है जो 50,000 रु. तक की प्रतिभूतियों के लिए आवेदन या बोली लगाता है। सेबी के दिशा निर्देशों के अनुसार एक कम्पनी को अपनी प्रतिभूतियों के सार्वजनिक निर्गमन के प्रस्ताव का 50% भाग छोटे व्यक्तिगत विनियोजकों के लिए सुरक्षित रखना होगा।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

अंशों पर मांग (Calls on shares)–

आवेदन व आबंटन पर ली गई राशियों के अतिरिक्त शेष राशि किस्तों में ली जाती है। ऐसे प्रत्येक किस्त की मांग जो बंटन के पश्चात् वसूल की जाती है, मांग कहलाती है। इसके लिए कम्पनी अंशधारी को मांग–पत्र भेजती है। मांग के सम्बन्ध में कम्पनी अधिनियम में निम्नलिखित व्यवस्थाएं है–

1. प्रत्येक मांग राशि अंशों के अंकित मूल्य का अधिकतम 25 प्रतिशत होना चाहिए।
2. मांग के भुगतान के लिए कम से कम 14 दिन की सूचना मिलनी चाहिए।
3. दो मांगों के बीच कम से कम एक माह का अन्तराल होना चाहिए।
4. संचालकों की सभा में मांग का प्रस्ताव पारित होना चाहिए तथा संचालक ही मांग कर सकते हैं।
5. संचालक किसी भी मांग को निरस्त या स्थगित कर सकते हैं।
6. मांग का देय तिथि पर भुगतान न करने पर पांच प्रतिशत ब्याज मांगा जा सकता है। (देय तिथि से भुगतान की तिथि तक की अवधि)
7. यदि अंशधारी मांग का पूर्व भुगतान कर दे तो ऐसी अग्रिम मांग का 6 प्रतिशत वार्षिक दर से ब्याज दिया जा सकता है।

सदस्यों का रजिस्टर (Register of Members)

प्रत्येक कम्पनी को अपने सदस्यों का सम्पूर्ण विवरण रखने के लिए एक रजिस्टर रखना पड़ता है जिसमें सदस्यों द्वारा क्रय किए गए अंशों से सम्बन्धित सम्पूर्ण जानकारी दर्ज किए जाते हैं।

सदस्यों की सूची (Index of Members)

प्रत्येक ऐसी कम्पनी को जिसके सदस्यों की संख्या 50 से अधिक होती है, अपने सदस्यों के नामों की एक सूची रखनी होती है। यह सूची कार्ड अनुक्रमणिका के रूप में ही हो सकती है। इस सूची में हर सदस्य के सम्बन्ध में ऐसी पर्याप्त सूचना दी रहती है जिससे कि उस सदस्य के सम्बन्ध में सदस्य रजिस्टर की प्रविष्टियों का ज्ञान प्राप्त हो जाता है।

लेखा पुस्तकें (Books of Account)

कम्पनी अधिनियम के अन्तर्गत प्रत्येक कम्पनी को ऐसी लेखा–पुस्तकों का रखना अनिवार्य है जो कम्पनी की आर्थिक स्थिति का उचित चित्र प्रस्तुत करने तथा उसके व्यवहारों की व्याख्या कर सकने में सहायक हो। इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए यह अपेक्षा की जाती है कि प्रत्येक कम्पनी समस्त आवश्यक लेखा–पुस्तकों में दोहरा–प्रणाली के आधार पर लेखा करे।

प्रारम्भिक व्यय (Preliminary Expenses)–

ऐसे खर्चे जो कम्पनी के निर्माण के सम्बन्ध में किए जाते हैं, प्रारम्भिक व्यय कहलाते हैं। जैसे 1. पार्षदसीमा नियम, पार्षद अन्तर्नियम, प्रविवरण, प्रार्थना–पत्र, बंटन–पत्र को लिखने व छपवाने के खर्च 2. रजिस्ट्रार से प्रलेखों को बनाने की फीस, कर इत्यादि।

प्रारम्भिक व्यय पूंजीगत व्यय होते हैं, जब तक इन्हें अपलिखित नहीं करते तब तक इन्हें चिट्ठे में कृत्रिम सम्पत्ति के रूप में विविध व्यय शीर्षक के अधीन दिखाते हैं तथा पांच किस्तों में अपलिखित करते हैं।

1.4 अंशों का निर्गमन (Issue of Shares)

एक सार्वजनिक कम्पनी अपने अंशों का निर्गमन अग्रलिखित में से किसी भी प्रकार से कर सकती है–

1.4.1 सम मूल्य पर निर्गमन (Issue at Par)– जब अंशों पर अंकित मूल्य ही निर्गमित मूल्य होता है तो ऐसे निर्गमन

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

'अंशों का सम मूल्य' (Nominal Value) पर निर्गमन कहलाता है। जैसे किसी अंश का अंकित मूल्य 100 रु. हो और जनता को 100 रु. में निर्गमन करें तो ये सम मूल्य पर निर्गमन है। विस्तृत अध्ययन अगले पृष्ठों में किया गया है।

1.4.2 प्रीमियम पर निर्गमन (Issue at Premium)– जब अंश को अंकित मूल्य से अधिक मूल्य पर जनता को निर्गमित किया जाए तो यह निर्गमन प्रीमियम पर निर्गमन है। जैसे किसी अंश का अंकित मूल्य 100 रु. हो और निर्गमन 110 रु. पर किया जाए तो 10 रु. प्रीमियम है। कानून में प्रीमियम की कोई अधिकतम सीमा निर्धारित नहीं है। विस्तृत अध्ययन अगले पृष्ठों में किया गया है।

1.4.3 बट्टे पर निर्गमन (Issue at Discount)– जब अंश को अंकित मूल्य से कम मूल्य पर जनता को निर्गमित किया जाए तो यह निर्गमन बट्टे पर निर्गमन कहलाता है। जैसे किसी अंश का अंकित मूल्य 100 रु. है और उसे निर्गमन 90 रु. पर करें तो ये 10 रु. बट्टे पर निर्गमन है। विस्तृत अध्ययन अगले पृष्ठों में किया गया है।

1.5 लेखांकन प्रविष्टियां (Accounting entries)– अंशों के निर्गमन की विभिन्न परिस्थितियों के अनुसार लेखांकन प्रविष्टियां अग्रलिखित की जाती है–

1.5.1 अंशों का एक मुश्त निर्गमन (Issue of share in one Lump-Sum)– जब अंशों पर सम्पूर्ण राशि एक साथ (आवेदन–पत्र के साथ) मांग ली जाती है तो ऐसे अंश एक मुश्त अंश कहलाते हैं। एक मुश्त निर्गमन पर अग्रलिखित प्रविष्टि की जाती है–

1. अंशों को क्रय के लिए प्रार्थना–पत्र के साथ राशि प्राप्त होने पर– .

Bank A\c Dr. आवेदन–पत्र के साथ प्राप्त वास्तविक राशि
To Share Application and Allotment A\c
(Cash received @ Rs. ---- per share from sundry applicants for the purchases of ---- shares.)

2. अंशों का बंटन करने पर–

Share Application and Allotment A\c Dr. बंटित अंशों पर प्रार्थना–पत्र के साथ मांगी गई एक मुश्त राशि से
To Share Capital A\c
(Allotment of --- shares and the trasfer of Share application and allotment Money received @ Rs.--- per share to share Capital A\c.)

3. अधिक प्राप्त राशि लौटाने पर

Share Application and Allotment A\c Dr. लौटाई गई राशि
To Bank A\c
(Excess applicants money refunded.)

Illustration 1

मुदित लि. की 5,60,000 रु. अधिकृत पूंजी 100 रु. वाले 5,600 समता अंशों में विभाजित है। इन अंशों में से 2,800 अंश जनता को निर्गमित किए। अंकित मूल्य आवेदन–पत्र के साथ देय है। जनता द्वारा सभी अंश क्रय कर लिए और पूर्ण भुगतान भी प्राप्त हो गया। कम्पनी की पुस्तकों में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां दीजिए।

Solution **Journal of Mudeet Ltd.**

Date	Particulars	L.F.	Amount Dr.	Amount Cr.
प्रार्थना–पत्र के साथ	Bank A\c Dr.		2,80,000	
	To Equity Share Application and Allotment A\c			2,80,000
	(Cash received @ Rs.100 per share on 2,800 shares.)			
अंशों के आबंटन पर	Share Application and Allotment A\c Dr.		2,80,000	
	To Share Capital A\c			2,80,000
	(Allotment of 2,800 shares and application Money transfered to share Capital A\c.)			

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

1.5.2 अंशों का किस्तों में भुगतान (Shares Payable by Instalments)

अंशधारियों की सुविधा के लिए कम्पनियां अंश एक मुश्त जारी न करके किस्तों में जारी करती है। जब राशि किस्तों में मंगाई जाती है तो सभी किस्तों के लिए अलग–अलग खाते खोले जाते हैं। जैसे आवेदन पत्रों के साथ आने वाली राशि के लिए 'अंश आवेदन खाता' (Share Application Account), बंटन की राशि को 'अंश बंटन खाते' (Share Allotment Account), प्रथम मांग की राशि के लिए 'अंश प्रथम मांग खाता' (Share First call Account), द्वितीय मांग की राशि के लिए 'अंश द्वितीय मांग खाता' (Share Second call Account) आदि खाते खोले जाते हैं।

कम्पनी की पुस्तकों में अंशधारियों के व्यक्तिगत खातों में डेबिट–क्रेडिट न किया जाकर उनके प्रतिनिधि खाते जैसे अंश आवेदन खाते, अंश बंटन खाते, अंश मांग खाते आदि को डेबिट–क्रेडिट किया जाता है। अंशों के किस्तों पर निर्गमन से सम्बन्धित प्रविष्टयां–

व्यवहार का वर्णन	जर्नल में प्रविष्टि	धनराशि जिसकी प्रविष्टि की जाएगी	विवरण
आवेदन–पत्रों के साथ राशि प्राप्ति पर	Bank A\c Dr. To Share Application A\c (Cash received for the purchases of ---- shares @ Rs. --- per share.)	आवेदन–पत्रों के साथ वास्तविक प्राप्ति राशि से	रोकड़ पुस्तक में प्रविष्टि करने पर नहीं की जाएगी
अंशों का बंटन पर	Share Application A\c Dr. To Share Capital A\c (Transfer of Share appication money on alloted share Capital A\c)	आबंटित अंशों पर मांगी गई राशि से	
बंटन राशि मांगने पर	Share Allotment A\c Dr. To Share Capital A\c (Amount due on allotment.)	आबंटन पर देय राशि से	
बंटन राशि प्राप्ति पर	Bank A\c Dr. To Share Allotment A\c (Amount of allotment received on----shares.)	वास्तविक प्राप्त आबंटन पर राशि से	रोकड़ पुस्तक में प्रविष्टि करने पर नहीं की जाएगी
प्रथम मांग पर	Share First call A\c Dr. To Share Capital A\c (Amount due on respect of first call on---shares @ Rs.--.)	अंश प्रथम मांग पर मांगी गई कुल राशि से	
प्रथम मांग राशि प्राप्ति पर	Bank A\c Dr. To Share first call A\c (Amount of first call received on----shares.)	वास्तविक प्राप्त प्रथम मांग पर राशि से	रोकड़ पुस्तक में प्रविष्टि करने पर नहीं की जाएगी

टिप्पणी : इसी प्रकार द्वितीय व अन्य मांगों के सम्बन्ध में प्रविष्टियां की जाएगी।

Illustration 2

रजनीश लि. ने 100 रु. वाले 2,50,000 समता अंश 1 अप्रैल, 2008 को निर्गमित किए। अभिदान सूचियां 15 अप्रैल, 2008 को बन्द कर दिया गया। बंटन 1 मई को हुआ और बंटन पर देय राशि 1 जून, 2008 को या इससे पूर्व देय थी। प्रथम और द्वितीय मांग 1 सितम्बर तथा 1 दिसम्बर 2008 को की गयी। राशियां क्रमशः 1 अक्टूबर, 2008 तथा 1 जनवरी, 2009 से पूर्व देय थी। निम्नलिखित राशियां देय थी– आवेदन पर 30 रु., बंटन पर 20 रु. पर, प्रथम मांग पर 25 रु. तथा द्वितीय मांग पर 25 रु.। कम्पनी की पुस्तकों में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिए।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Solution **Journal of Rajnish Ltd.**

Date	Particulars	L.F.	Amount Dr.	Amount Cr.
2008 April,15	Bank A\c Dr.		75,00,000	
	To Equity Share Application A\c			75,00,000
	(Application deposit received on 2,50,000 equity shares @ Rs. 30 per share.)			
May,1	Equity Share Application A\c Dr.		75,00,000	
	To Equity Share Capital A\c			75,00,000
	(transfer of Share application money to share Capital A\c on allotment of 2,50,000 equity share.)			
May,1	Equity Share Allotment A\c Dr.		50,00,000	
	To Equity Share Capital A\c			50,00,000
	(Amount due on allotment @ Rs. per share.)			
June,1	Bank A\c Dr.		50,00,000	
	To Equity Share Allotment A\c			50,00,000
	(Amount of allotment received.)			
Sept.1	Equity Share First call A\c Dr.		62,50,000	
	To Equity Share Capital A\c			62,50,000
	(Amount due on respect of first call on 2,50,000 shares @ Rs.25.)			
Oct.,1	Bank A\c Dr.		62,50,000	
	To Equity Share first call A\c			62,50,000
	(Amount of first call received on shares.)			
Dec.,1	Equity Share Second call A\c Dr.		62,50,000	
	To Equity Share Capital A\c			62,50,000
	(Amount due on respect of Second call on 2,50,000 shares @ Rs.25.)			
2009 Jan.,15	Bank A\c Dr.		62,50,000	
	To Equity Share Second call A\c			62,50,000
	(Amount of Second call received on shares.)			

1.5.3 बकाया मांग (Calls in Arrear)

कुछ अंशधारी ऐसे भी हो सकते हैं जो मांगों पर देय राशि का भुगतान न करें। ऐसी न चुकायी गयी मांग राशि को 'बकाया मांग' (Calls in arrears) कहते हैं। सामान्यतया बकाया मांग के लिए कोई पृथक प्रविष्टि नहीं की जाती है। यदि बकाया मांग के सम्बन्ध में अलग से प्रविष्टि करते हैं तो 'बकाया मांग खाते' (Calls in arrears Account) को डेबिट कर दिया जाता है तथा Share Allotment Account या Share Call Account या दोनों खातों को क्रेडिट कर दिया जाता है। छात्रों को "Calls in arrears Account" तभी खोलना चाहिए जब प्रश्न में ऐसा करने के लिए कहा गया हो। चिट्ठे में मांगी गई पूंजी (Called up Capital) में बकाया मांग राशि घटाकर दिखाया जाता है।

बकाया मांग पर ब्याज (Interest Calls in Arrears)

यदि कम्पनी सारणी 'अ' लागू करती है, तो कम्पनी बकाया मांग पर 5 प्रतिशत वार्षिक दर से ब्याज वसूल कर सकती है। इस सबन्ध में अग्रलिखित प्रविष्टि की जाती है–

Bank A\c Dr

To Interest on Call in arrears A\c

वर्ष के अन्त में इसे लाभ–हानि खाते में स्थानान्तरित करने हेतु अग्रलिखित प्रविष्टि करेंगे–

Interest on Call in arrears A\c Dr

To Profit & Loss A\c

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Illustration 3

बालचंद लि. का पंजीयन 25,00,000 रु. की पूंजी से किया गया। 10 रु. मूल्य वाले 1,00,000 10% अधिमान अंशों और 10 रु. मूल्य वाले 1,50,000, समता अंशों में विभक्त थी। कम्पनी ने जनता को अभिदान के लिए 75,000 10% अधिमान अंशों तथा 1,00,000 समता अंशों को जारी किया जो इस प्रकार देय थे–

	अधिमान अंश	समता अंश
आवेदन पर	5.00 रु.	5.00 रु.
आबंटन पर	2.50 रु.	2.50 रु.
प्रथम और अन्तिम मांग	2.50 रु.	2.50 रु.

अभिदान के लिए निर्गमित सभी अंशों के लिए आवेदन–पत्र प्राप्त हुए तथा 5,000 रु. अधिमान अंशों तथा 2,500 समता अंशों पर आबंटन तथा प्रथम एवं अन्तिम मांग की राशियों के अतिरिक्त अन्य सभी देय रकमें प्राप्त हो गयी। कम्पनी के जर्नल तथा रोकड़–बही में आवश्यक प्रविष्टियां कीजिए तथा चिट्ठे में पूंजी किस प्रकार दिखाई जाएगी।

Solution: **Journal of Balachand Ltd.**

Date	Particulars	L.F.	Amount Dr.	Amount Cr.
Date of Allot-ment	10% Preference Share Application A\c Dr. To 10% Preference Share Capital A\c (Preference Share Application Money transferred to Preference share Capital A\c.)		3,75,000	3,75,000
Date of Allot-ment	Equity Share Application A\c Dr. To Equity Share Capital A\c (Equity Share Application Money transferred to Equity share Capital A\c.)		5,00,000	5,00,000
Date of Allot-ment	10% Preference Share Allotment A\c Dr. To 10% Preference Share Capital A\c (Preference Share allotment due on 75,000 shares @ Rs. 2.5 per Share.)		1,87,500	1,87,500
Date of Allot-ment	Equity Share Allotment A\c Dr. To Equity Share Capital A\c (Equity Share allotment due on 1,00,000 shares @ Rs. 2.5 per Share.)		2,50,000	2,50,000
First call made due	10% Preference Share First & Final Call A\c Dr. To 10% Preference Share Capital A\c (Preference Share First & Final call due on 75,000 shares @ Rs. 2.5 per Share.)		1,87,500	1,87,500
First call made due	Equity Share First & Final Call A\c Dr. To Equity Share Capital A\c (Equity Share First & Final call due on 1,00,000 shares @ Rs. 2.5 per Share.)		2,50,000	2,50,000

Cash Book (with Bank

Date	Particulars	L.F.	Amount	Date	Particulars	L.F.	Amount
	To 10% Preference Share App.		3,75,000		By Balance C\d		17,12,500
	To Equity Share Application		5,00,000				
	To 10% Preference Share Allot.		1,75,000				
	To Equity Share Allotment		2,43,750				
	To 10% Prefer Share Final call		1,75,000				
	To Equity Share Final call		2,43,750				
			17,12,500				**17,12,500**

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Working Note : बकाया मांगों की गणना (Calls in Arrear)–

Calls	Amount Due	Amount Received	Arrear
10% Preference Share Application	3,75,000	3,75,000	
Equity Share Application	5,00,000	5,00,000	
10% Preference Share Allotment	1,87,500	1,75,000	12,500
Equity Share Allotment	2,50,000	2,43,750	6,250
0% Prefer Share First & Final call	1,87,500	1,75,000	12,500
Equity Share First & Final call	2,50,000	2,43,750	6,250
Total	**17,50,000**	**17,12,500**	**37,500**

Balance Sheet of Balchand Ltd. as on 31st March, 2009

Liabilities		Amount	Assets	Amount
Share Capital			Cash at Bank	17,12,500
Authorised				
1,00,000 10% Preference Share of Rs.10 each		10,00,000		
1,50,000 Equity Share Capital of Rs.10 each		15,00,000		
		25,00,000		
Issued and Subscribed :				
75,000 10% Preference Share of Rs.10 each fully called up	7,50,000			
Less: calls in Arrear	25,000	7,25,000		
1,00,000 Equity Share Capital of Rs.10 each fully called up	10,00,000			
Less: calls in Arrear	12,500	9,87,500		
		17,12,500		

1.5.4 अग्रिम प्राप्त मांगें (Calls in Advance)–

कभी–कभी अंशधारी भविष्य में की जाने वाली मांग का भुगतान पहले ही कर देते हैं। कम्पनी की पुस्तकों में इस राशि को 'अग्रिम मांग खाते' में जमा किया जाता है। इस सम्बन्ध में निम्नलिखित प्रविष्टि की जाएगी–

Bank A\c Dr
To Call in Advance A\c
(Amount received on --- shares @ Rs. ---per share in anticipation of future calls.)

प्राप्त अग्रिम राशि पूंजी का भाग नहीं होती है। अतः चिट्ठे के दायित्व पक्ष में 'चालू दायित्व' शीर्षक में दिखाया जाता है। कम्पनी द्वारा सारणी 'अ' अपनाने पर इस अग्रिम राशि पर 6 प्रतिशत दर से ब्याज दे सकती है। भविष्य में जब मांग की जाती है तो इस अग्रिम राशि का समायोजन कर लिया जाता है।

अग्रिम मांग राशि पर ब्याज की गणना (Interest on Calls in Advance)– ऐसी राशि प्राप्ति की तिथि से आगामी मांग राशि के देय होने की तिथि तक की जाएगी। ब्याज के सम्बन्ध में निम्नलिखित प्रविष्टि की जाएगी–

(1) ब्याज चुकाने पर

Interest on Calls in Advance A\c Dr
To Bank A\c
(Interest paid on Calls in Advance)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(2) वर्ष के अन्त में हस्तान्तरण करने पर

Profit and Loss A\c Dr

To Interest on Call in Advance A\c

(Interest on Call in advance transfer to P&L A\c)

(3) समायोजन प्रविष्टि

Call in Advance A\c Dr

To Share----Call A\c

(Calls in advance adjusted againt first call.)

Illustration 4

जानवी लि. की अधिकृत पूंजी 20 लाख रु. 100 रु. जो वाले 20,000 समता अंशों में विभक्त थी, ने 15,000 अंश सममूल्य पर निर्गमित किए जो इस प्रकार देय थे– प्रार्थना–पत्र पर 20 रु., बंटन पर 30 रु., प्रथम मांग पर 25 रु. एवं द्वितीय मांग 25 रु.। सभी अंशों को खरीदने के लिए प्रार्थना–पत्र प्राप्त हुए। 1 जून, 2008 को अंशों का बंटन किया गया। बंटन राशि का भुगतान करने की अन्तिम तिथि 30 जून, 2008 थी। प्रथम एवं द्वितीय मांग क्रमशः 1 अक्टूबर, 2008 एवं 1 फरवरी, 2009 को की गई तथा इनका भुगतान क्रमशः 31 अक्टुबर, 2008 एवं 28 फरवरी, 2009 तक देय थी। निर्धारित तिथियों तक सभी धन राशियां प्राप्त की गई। राकेश, जिसके पास 1,400 अंश हैं, बंटन पर मांगी गई राशि का भुगतान नहीं किया और इस राशि का भुगतान प्रथम मांग राशि के साथ 5 प्रतिशत वार्षिक ब्याज सहित भुगतान किया। सुरेश, जिसके पास 1,000 अंश हैं, अपने अंशों पर सम्पूर्ण राशि बंटन के साथ ही दे दी। कम्पनी ने इस अग्रिम राशि पर 6 प्रतिशत वार्षिक दर से ब्याज दिया। उपरोक्त व्यवहारों की जर्नल प्रविष्टियां दीजिए।

Solution:

Journal of Janvi Ltd.

Date	Particulars	L.F.	Amount Dr.	Amount Cr.
Date of Receipt	Bank A\c Dr. To Equity Share Application A\c (Application Money received on 15,000 equity shares @ Rs. 20 per share.)		3,00,000	 3,00,000
June,1	Equity Share Application A\c Dr. To Equity Share Capital A\c (Equity Share Application Money on allotted shares trasfered to Equity Share Capital A\c.)		3,00,000	 3,00,000
June,1	Equity Share Allotment A\c Dr. To Equity Share Capital A\c (Equity Share allotment due on 15,000 shares @ Rs. 30 per Share.)		4,50,000	 4,50,000
June,30	Bank A\c Dr. To Equity Share Allotment A\c To Call in Advance A\c (Cash received for allotment Money and calls in Advance on 1,000 shares @ Rs. 50 per share.)		4,58,000	 4,08,000 50,000
Oct.,1	Equity Share First call A\c Dr. To Equity Share Capital A\c (Equity Share First call due on 15,000 shares @ Rs. 25 per Share.)		3,75,000	 3,75,000
Oct.,1	Call in Advance A\c Dr. To Equity Share First call A\c (Calls in advance money adjusted.)		25,000	 25,000
Oct.,31	Bank A\c Dr. To Equity Share First call A\c		3,50,000	 3,50,000

Cont.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Date	Particulars	L.F.	Dr. (Rs.)	Cr. (Rs.)
	(Cash received for first call Money.)			
Oct.,31	Bank A\c Dr. To Equity Share Allotment A\c To Interest on Call in Advance A\c (Allotment money on 1,400 shares and interest @ 5% p.a.received on 42,000 for 4 Months 1July to 31 oct.)		42,700	 42,000 700
Feb.1	Equity Share Final call A\c Dr. To Equity Share Capital A\c (Amount due on respect of final call on 15,000 shares @ Rs.25 per share.)		3,75,000	 3,75,000
Feb.1	Call in Advance A\c Dr. To Equity Share Finalt call A\c (Calls in advance money adjusted.)		25,000	 25,000
Feb.28	Bank A\c Dr. To Equity Share First call A\c (Cash received for final call money.)		3,50,000	 3,50,000
Feb.28	Interest on Call in Advance A\c Dr. To Bank A\c (Interest on call in advance paid.)		1,250	 1,250

Working Note:

अग्रिम मांग पर ब्याज की गणना :–

कुल 50,000 रु. को दो भागों में बांटा गया है प्रथम– आंबटन भुगतान की अंतिम तिथि से प्रथम मांग तक, द्वितीय– प्रथम मांग की तिथि से द्वितीय मांग की तिथि तक

प्रथम (1 जुलाई से 1 अक्टूबर) 3 माह

$$1{,}000 \ X \ 50 \ X \frac{3}{12} X \frac{6}{100} = Rs.\ 750$$

प्रथम मांग से द्वितीय मांग तक (1 अक्टुबर से 1 फरवरी) 4 माह

$$1{,}000 \ X \ 25 \ X \frac{4}{12} X \frac{6}{100} = Rs.\ 500$$

ब्याज को लाभ–हानि खाते में स्थानान्तरित करने के लिए अन्तिम प्रविष्टियां अग्रलिखित करेंगे–

Interest on Call in arrears A\c Dr.
To Profit & Loss A\c
(Interest on call in arrears transfer to P&L A\c.)
Profit & Loss A\c Dr.
To Interest on Call in Advance A\c
(Interest on call in advance transfer to P&L A\c.)

अंशों का प्रीमियम पर निर्गमन (Issue of Shares at Premium)

यदि कोई कम्पनी अपने अंशों का निर्गमन अंकित मूल्य से अधिक मूल्य पर करती है तो ऐसा निर्गमन प्रीमियम पर निर्गमन कहलाता है। अंकित मूल्य एवं निर्गमित मूल्य में जो अन्तर होता है, प्रीमियम कहलाता है।

प्रतिभूति प्रीमियम (Securities Premium) सम्बन्धी लेखा प्रविष्टियां

प्रीमियम जिस किस्त के साथ मांगा जाए, उस किस्त के देय होने के समय प्रीमियम खाते को क्रेडिट किया जाएगा और प्रीमियम किस किस्त के साथ मांगा गया है, का उल्लेख नहीं है तो आबंटन के साथ प्रीमियम की राशि आबंटन के साथ मांगी गई समझी जानी चाहिए।

Cont.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

प्रीमियम राशि का उपयोग

कम्पनी अधिनियम की धारा 78 में अंश प्रीमियम के प्रयोग के विषय में प्रावधान है। अंशों पर जो राशि प्रीमियम के रूप में मांगी जाती है, उसे 'प्रतिभूति प्रीमियम खाते' (Securities Premium Account) में हस्तान्तरित कर दिया जाता है। प्रतिभूति प्रीमियम की रकम का उपयोग निम्नलिखित कार्यों के लिए लिया जा सकता है–

(1) सदस्यों को पूर्णप्रदत्त बोनस अंश जारी करने हेतु,
(2) प्रारम्भिक व्ययों को अपलिखित करने हेतु,
(3) अंशों व ऋणपत्रों के निर्गमन पर व्यय, बट्टे और कमीशन को अपलिखित करने हेतु,
(4) अंशों व ऋणपत्रों के शोधन पर प्रीमियम का आयोजन बनाने हेतु,
(5) प्रतिभूतियों की वापसी खरीद के समय उपयोग करने हेतु।

उक्त उपयोग के अतिरिक्त कम्पनी किसी अन्य उद्देश्यों के लिए प्रीमियम का उपयोग नहीं कर सकती। यदि अन्य उपयोग किया जाता है तो इसे पूंजी की कमी (Reduction of Capital) माना जाएगा।

प्रतिभूति प्रीमियम को पूंजीगत संचय मानते हुए 'संचय और आधिक्य' (Reserve and Surplus) शीर्षक के अन्तर्गत दिखाया जाता है। यदि प्रीमियम की राशि बकाया है तो प्रीमियम की राशि में से घटाकर दिखाते हैं। यदि प्रश्न में प्रीमियम कौनसी मांग के साथ मांगा गया है, का स्पष्ट उल्लेख नहीं हो तो, प्रीमियम को आंबटन के साथ मानना चाहिए।

Illustration 5

रजनीश लि. ने 8,50,000 समता अंश 125 रु. प्रति अंश के हिसाब से निर्गमित किए, जो इस प्रकार देय थे– आवेदन पर 50 रु., आबंटन पर 50 रु. (प्रीमियम सहित) व प्रथम एवं अन्तिम मांग पर 25 रु.।

जनता से 7,50,000 अंशों के लिए आवेदन प्राप्त हुए। अंशधारियों से निम्नलिखित के अतिरिक्त सभी राशियां देय तिथि पर प्राप्त हो गयी–

1. दिनेश, जिसके पास 2,500 अंश हैं आबंटन राशि पर देय धनराशि नहीं दी, किन्तु इसका भुगतान प्रथम मांग के साथ कर दिया।
2. भरत, जिसके पास 1,500 अंश है, प्रथम मांग की राशि आबंटन के साथ ही दे दी कम्पनी की जर्नल में आवश्यक लेखा कीजिए।

Solution

Journal of Rajneesh Ltd.

Date	Particulars	L.F.	Amount Dr.	Amount Cr.
Date of Receipt	Bank A\c Dr.		3,75,00,000	
	To Equity Share Application A\c			3,75,00,000
	(Application money received on 7,50,000 equity shares @ Rs. 50 per share.)			
Date of Allot-ment	Equity Share Application A\c Dr.		3,75,00,000	
	To Equity Share Capital A\c			3,75,00,000
	(Equity Share Application money transferred to Equity Share Capital A\c.)			
Date of Allot-ment	Equity Share Allotment A\c Dr.		3,75,00,000	
	To Equity Share Capital A\c			1,87,50,000
	To Securities Premium A\c			1,87,50,000
	(Equity Share allotment due on 7,50,000 shares @ Rs. 50 per Share.)			
Date of Receipt	Bank A\c Dr.		3,74,12,500	
	To Equity Share Allotment A\c			3,73,75,000
	To Call in Advance A\c			37,500
	(Cash received for allotment money and calls in advance on 1,500 shares @ Rs. 25 per share.)			

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Date of Receipt	Equity Share First call A\c Dr. To Equity Share Capital A\c (Equity Share first call due on 7,50,000 shares @ Rs. 25 per Share.)		1,87,50,000	1,87,50,000
Date of Call	Call in Advance A\c Dr. To Equity Share First call A\c (Calls in advance money adjusted.)		37,500	37,500
Date of Re-ceipt	Bank A\c Dr. To Equity Share First call A\c To Equity Share Allotment A\c (Cash received for first call money.)		1,88,37,500	1,87,12,500 1,25,000

अंशों का बट्टे पर निर्गमन (Issue of Share at discount)

यदि कम्पनी अंशों का निर्गमन अंकित मूल्य से कम पर करे तो इसे बट्टे पर निर्गमन कहते हैं। कोई भी कम्पनी कम्पनी अधिनियम, 1956 की धारा 79 अन्तर्गत दी गई शर्तों की पूर्ति करने के पश्चात् ही अंशों को बट्टे पर निर्गमित कर सकती है। जो निम्नांकित है–

1. ऐसे निर्गमन के लिए साधारण सभा में प्रस्ताव पास करवाना तथा कम्पनी लॉ बार्ड से स्वीकृति प्राप्त करना।
2. अंश उसी श्रेणी का होना चाहिए जो पहले से निर्गमित किए जा चुके हों।
3. न्यायालय की स्वीकृति प्राप्त हो गई है।
4. बट्टे की अधिकतम दर 10 प्रतिशत है। इससे अधिक के लिए केन्द्रीय सरकार की अनुमति आवश्यक है।
5. व्यापार प्रारम्भ करने का अधिकार मिले हुए कम से कम एक वर्ष हो गया हो।
6. कम्पनी लॉ बोर्ड से स्वीकृति मिलने के दो महिनों के भीतर या बढ़ाई हुई अवधि में निर्गमन करना चाहिए।
7. कम्पनी लॉ बोर्ड द्वारा लगाए गए प्रतिबन्धों एवं शर्तों का भी ध्यान रखना चाहिए।
8. प्रविवरण में बट्टा सम्बंधी तथ्यों की सूचना दी होनी चाहिए।

अंशों के निर्गमन पर दिया गया बट्टा पूंजीगत हानि है। इसे कम्पनी के पूंजीगत लाभों, आयगत लाभों अथवा समामेलन से पूर्व के लाभों में से अपलिखित किया जा सकता है। बट्टे की वह राशि जो अपलिखित नहीं की गई है, चिट्ठे में कृत्रिम सम्पत्ति (Fictitious Assets) के रूप में दिखाते हैं।

बट्टे सम्बन्धी लेखा (Accounting for Discount)–

आबंटन के समय

Share Allotment A\c Dr.
Discount on issue of share A\c Dr.
  To Share Capital A\c

बट्टे को अपलिखित करने की प्रविष्टि

Profit & Loss A\c Dr.
  To Discount on issue of share A\c

Illustration 6

कनक लि. ने 100 रु. वाले 1,00,000 अंशों को 10 प्रतिशत बट्टे पर आवेदन मांगे जो इस प्रकार देय थे– 25 रु. आवेदन पर, 35 रु. आबंटन पर, 30 रु. प्रथम और अन्तिम मांग पर। 90,000 अंशों के लिए आवेदन प्राप्त हुए और सभी को स्वीकार किया। 100 अंशों पर प्रथम एवं अन्तिम मांग को छोड़कर सभी राशियां प्राप्त हो गई। अंशों के बट्टे पर निर्गमन के लिए कम्पनी की पुस्तकों में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिए।

Solution: **Journal of Kanak Ltd.**

Date	Particulars	L.F.	Amount Dr.	Amount Cr.
Date of Re-ceipt	Bank A\c Dr. To Equity Share Application A\c		22,50,000	22,50,000

Cont.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

	(Application money received on 90,000 equity shares @ Rs. 25 per share.)			
Date of Allot-ment	Equity Share Application A\c Dr.		22,50,000	
	To Equity Share Capital A\c			22,50,000
	(Equity Share Application Money transferred to Equity Share Capital A\c.)			
Date of Allot-ment	Equity Share Allotment A\c Dr.		31,50,000	
	Discount on issue of share A\c Dr		9,00,000	
	To Equity Share Capital A\c			40,50,000
	(Equity Share allotment due on 90,000 shares @ Rs. 35 per Share.)			
Date of Receipt	Bank A\c Dr.		31,50,000	
	To Equity Share Allotment A\c			31,50,000
	(Cash received for allotment money.)			
Date of First Call	Equity Share First call A\c Dr.		27,00,000	
	To Equity Share Capital A\c			27,00,000
	(Equity share first call due on 90,000 shares @ Rs. 30 per Share.)			
Date of Receipt	Bank A\c Dr.		26,97,000	
	To Equity Share First call A\c			26,97,000
	(Cash received for first call money.)			

Balance Sheet of Kanak Ltd. as at

Liabilities		Amount	Assets	Amount
Share Capital			Cash at Bank	80,97,000
Authorised			**Miscellenous Expenditure:**	
1,00,000 Equity Share Capital of Rs.100 each		**100,00,000**	Discount on Issue of Share	9,00,000
Issued and Subscribed :				
90,000 Equity Share Capital of Rs.100 each fully called up	90,00,000			
Less: Calls in Arrear	3,000	89,97,000		
		89,97,000		**89,97,000**

1.6 अंशों का अत्यधिक अभिदान (Over Subscription of shares)

यदि निर्गमन की तुलना में आवेदन–पत्र अधिक आते हैं तो इसे अत्यधिक अभिदान या अधि–अभिदान (Over Subscription of shares) कहते हैं। चूंकि कम्पनी निर्गमित अंशों से अधिक अंश आंबटित नहीं कर सकती अतः प्रार्थियों का यथा अनुपात (Pro-rata) के आधार पर अंश आबंटित किए जा सकते हैं अथवा कुछ आवेदकों को धनराशि वापिस की जा सकती है और शेष को आनुपातिक आधार पर आबंटित कर सकते हैं।

अधि–अभिदान पर आबंटन का आधार–सेबी के दिशा–निर्देश

(Basis of Allotment on over Subscription : SEBI Guidelined)

अंशों का आबंटन विपणन योग्य खण्डों (Marketable Lot) में आनुपातिक आधार पर नीचे दिए अनुसार होगा–

1. आवेदकों से प्राप्त आवेदन–पत्रों को आवेदित अंशों की संख्या के आधार पर वगीकृत किया जाए।
2. आनुपातिक आधार पर ज्ञात किया जाए कि प्रत्येक अंश आवेदक वर्ग को कितने अंशों का आबंटन किया जाए। अर्थात् उस श्रेणी में आवेदित कुल अंशों की संख्या (उस श्रेणी के आवेदकों की संख्या x आवेदित अंशों की संख्या) को विपरीत अधि–अभिदान अनुपात से गुणा करके आबंटित अंशों की संख्या ज्ञात की जाएगी। उदाहरणार्थ

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

100 अंशों की श्रेणी के आवेदनकर्त्ता 20,000
कुल अंशों के आवेदन 20,00,000
अधि अभिदान अनुपात 4
आबंटन = 20,00,000 x 1\4 आबंटन = 5,00,000

3. सफल आवेदकों को आबंटित अंशों की संख्या आनुपातिक आधार पर ज्ञात की जाएगी (जो बाजार अंश आकार (Lot) से सम्बन्धित वर्ग का होना चाहिए) यदि आवेदकों में जहां आनुपातिक आबंटन प्रति आवेदन 100 से कम अंशों में आता है, तब आबंटन इस प्रकार किया जाएगा–
   प्रत्येक सफल आवेदक को न्यूनतम 100 अंश बंटित कर दिए जाए, एवं उस श्रेणी के शेष आवेदकों को लॉटरी द्वारा अंश बंटित कर दिए जाए।
4. यदि निकटतम बाजार आकार में अंश आबंटित करने पर अंशों की संख्या कम्पनी द्वारा प्रस्तावित अंशों की संख्या से अधिक हो जाए तो प्रस्तावित अंशों की संख्या से 10 प्रतिशत तक अधिक अंश आबंटित किए जा सकते हैं।
5. निकटतम बाजार लॉट (Market Lot) में अंश आबंटित करने पर यदि आबंटित प्रस्तावित अंशों की संख्या से कम अंश आवेदन वर्ग के अंशधारियों को आबंटित किया जाए।

Illustration 7

नम्रता लि. ने 10 रु. वाले 75,000 समता अंश निर्गमित किए, जो इस प्रकार देय थे– 5 रु. आवेदन–पत्र पर, 3 रु. आबंटन पर और 2 रु. मांग पर। अधि–अभिदान के कारण आबंटन अग्रलिखित प्रकार से किया गया।

आवेदन करने वाले अंशों का समूह	आवेदन पत्रों की सं.	आबंटन
(1) 2000 से अधिक	9,000	9,000
(2) 1000 से अधिक–2000 तक	54,000	24,000
(3) 500 से अधिक–1000 तक	45,000	24,000
(4) 500 या इससे कम	27,000	18,000
	1,35,000	75,000

आवेदन राशि की पूर्ति करने के पश्चात् प्राप्त रोकड़ को आबंटन तथा मांग की देय राशि के भुगतान करने के लिए रोका गया इससे अधिक आवेदन राशि वापिस कर दी गई। जैसे ही आबंटन किया गया, पोनी ने जिसको (समूह 'अ' में 90,000 अंश आबंटित किए गए थे, आबंटन राशि के साथ ही शेष पूर्ण राशि का भुगतान कर दिया। सभी अन्य अंशधारियों ने समय–समय पर आवश्यक राशियों का भुगतान कर दिया। कम्पनी की पुस्तकों में इन लेन–देनों की जर्नल प्रविष्टियां दीजिए। (J.N.V. U., 2004)

Solution

Journal of Namrata Ltd.

Date	Particulars	L.F.	Amount Dr.	Amount Cr.
Date of Receipt	Bank A\c Dr.		6,75,000	
	To Equity Share Application A\c			6,75,000
	(Application money received on 1,35,000 equity shares @ Rs. 5 per share.)			
Date of Allot-ment	Equity Share Application A\c Dr.		3,75,000	
	To Equity Share Capital A\c			3,75,000
	(Equity Share Application money transferred to Equity Share Capital A\c.)			
Date of Allot-ment	Equity Share Allotment A\c Dr.		2,25,000	
	To Equity Share Capital A\c			2,25,000
	(Equity Share allotment due on 75,000 shares @ Rs. 3 per Share.)			
Date of Allot-ment	Equity Share Application A\c Dr.		3,00,000	
	To Equity Share Allotment A\c			1,89,000
	To Bank A\c			81,000
	To Call in Advance A\c			30,000

Count.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Date	Particulars			L.F.	Dr. Rs.	Cr. Rs.
	(Excess application money adjusted and refunded.)					
Date of Receipt	Bank	A\c	Dr.		54,000	
	To Equity Share Allotment	A\c				36,000
	To Call in Advance	A\c				18,000
	(Allotment money and calls in advance received.)					
Date of Call	Equity Share First and Final Call	A\c	Dr.		1,50,000	
	To Equity Share Capital	A\c				1,50,000
	(Equity Share first due on 75,000 shares @ Rs. 2 per Share.)					
Date of Call	Call in Advance A\c		Dr		99,000	
	To Equity Share First and Final Call	A\c				99,000
	(Advance call money adjusted.)					
Date of Receipt	Bank	A\c	Dr.		51,000	
	To Equity Share First and Final Call	A\c				51,000
	(Balance amount of final call money received.)					

Analytical Table

Category	No. of Shares Applied for	No. of Shares allotted	Amount due on Shares Allotted: On Application @ Rs. 5	On Allotment @ Rs. 3	On First Call @ Rs. 2	Total @ Rs. 10	Application Money actually received	Excess application money refunded	Excess money retained for: Allotment	First Call
	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.
(A)	9,000	9,000	45,000	27,000	18,000	90,000	45,000	Nil	Nil	Nil
(B)	54,000	24,000	1,20,000	72,000	48,000	2,40,000	2,70,000	30,000	72,000	48,000
(C)	45,000	24,000	1,20,000	72,000	48,000	2,40,000	2,25,000	Nil	72,000	33,000
(D)	27,000	18,000	90,000	54,000	36,000	1,80,000	1,80,000	Nil	45,000	Nil
Total	1,35,000	75,000	3,75,000	2,25,000	1,50,000	7,50,000	6,75,000	30,000	1,89,000	81,000

Allotment money actually received on due date			First call money actually received on due date		
Categert A	Rs.	27,000	Categert A	Rs.	Nil
Categert B	Rs.	Nil	Categert B	Rs.	Nil
Categert C	Rs.	Nil	Categert C	Rs.	15,000
Categert D	Rs.	9,000	Categert D	Rs.	36,000
	Rs.	36,000		Rs.	51,000

अंशों का न्यून अभिदान (Under Subscription of Shares)

जब निर्गमित अंशों से कम के लिए प्रार्थना–पत्र प्राप्त होते हैं, तो इस स्थिति को न्यून अभिदान कहते हैं। न्यूनतम अभिदान होने पर इससे सम्बन्धी प्रावधानों को ध्यान में रखकर अंश बंटित कर दिए जाते हैं।

1.7 अंशों का रोकड़ के अतिरिक्त अन्य प्रतिफल के लिए निर्गमन

(Shares Issue for a Consideration other then Cash)

जब सम्पत्तियों क्रय करने, प्रवर्तकों को परिश्रमिक के बदले अंशों को निर्गमित किया जाए तो ये अंशों को रोकड़ के अतिरिक्त अन्य प्रतिफल के निर्गमन है। प्रविष्टियां इस प्रकार होगी–

सम्पत्ति क्रय करते समय

Assets A\c Dr. (वास्तविक क्रय मूल्य से)

To Vendor's A\c

(For assets Purchased)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

भुगतान करते समय

Vendor's A\c Dr. (सम्पत्ति के क्रय मूल्य से)
To Share Capital A\c (अंशों के अंकित मूल्य से)
To Securities Premium A\c (प्रीमियम की राशि से)
(Shares issued at par or at a Premium of Rs. --- to vendor's.)

विक्रेता को बट्टे पर अंशों का निर्गमन

Vendor's A\c Dr.
Discount on issue of share A\c Dr.
To Share Capital A\c

प्रवर्तक को परिश्रमिक के बदले में अंशों के निर्गमन पर

Preliminary Expenses A\c Dr.
To Share Capital A\c
(----- Share issued to Promoters.)

1.8 अंशों का हरण (Forfeiture of Shares)

जब कोई अंशधारी अपने अंशों पर सम्बन्धित बकाया मांग राशि को चुकाने में असमर्थ होता है तो कम्पनी आवश्यक कार्यवाही (नोटिस देकर) कर उसके अंश हरण कर सकती है। कोई भी कम्पनी अंशों का हरण तभी कर सकती है जब कम्पनी के अन्तर्नियमों में अंश हरण का अधिकार दे रखा है अथवा कम्पनी पर सारणी 'अ' लागू होती है। हरण करने के पूर्व 14 दिन का लिखित नोटिस रजिस्टर्ड डाक से दिया जाना आवश्यक है। इसमें निश्चित तिथि तक अंशों पर बकाया राशि ब्याज सहित चुकाने हेतु कहा जाता है, अन्यथा अंशों का हरण कर लिया जाता है। अगर निर्धारित तिथि तक अंशधारी बकाया राशि नहीं चुकाता है तो संचालक मण्डल अंश हरण का प्रस्ताव पारित कर इसकी सूचना अंशधारी को प्रेषित कर दी जाती है।

अंशों के हरण लेखा प्रविष्टियां (Accounting Entries on Forfeiture of Shares)

(अ) सम–मूल्य पर निर्गमित अंशों का हरण (Forfeiture of share originally issued at par)

Share Capital A/c Dr. अंशों पर मांगी गई राशि से
To Share Allotment A/c बंटन पर बकाया राशि से
To Share First call A/c प्रथम मांग पर बकाया राशि से
To Share second call A/c द्वितीय मांग पर बकाया राशि से
To Forfeited Share A/c हरण किए अंशों पर प्राप्त राशि से

(ब) बट्टे पर निर्गमित अंशों का हरण (Forfeiture of shares originally issued of discount):– बट्टे पर निर्गमित अंशों के हरण की निम्नालिखित जर्नल प्रविष्टियां की जाती है :–

Share Capital A/c Dr. बट्टे सहित मांगी गई कुल राशि से
To Share Allotment A/c बंटन पर बकाया राशि से बकाया होने पर
To Share First call A/c प्रथम मांग पर बकाया राशि से
To Share second call A/c द्वितीय मांग पर बकाया राशि से
To Discount on issue of share A/c बट्टे की राशि से
To Forfeitd Share A/c हरण किए गए अंशों पर प्राप्त राशि

(स) प्रीमियम पर निर्गमित अंशों का हरण (Forfeited of share originally issued at premimum)– प्रीमियम पर जारी अंशों को हरण करने की दो स्थितियां हो सकती है–

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

प्रथम स्थिति– प्रीमियम प्राप्त हो गया हो– यदि अंशों पर प्रीमियम प्राप्त हो जाए तो हरण की प्रविष्टि करते समय प्रीमियम को शामिल नहीं करेगें तथा अंश हरण खाते की राशि में प्रीमियम की राशि को घटाते हैं। प्रविष्टि इस प्रकार करेगें–

Share Captial A/c	Dr.	अंश पूंजी की मांगी गई राशि से
To Share First call A/c		प्रथम मांग पर बकाया राशि से
To Share second call A/c		द्वितीय मांग पर बकाया राशि से
To Share Forfeited A/c		प्रीमियम को छोड़कर शेष प्राप्त राशि से

द्वितीय स्थिति– प्रीमियम की राशि बकाया हो– यदि अंशों पर प्रीमियम बकाया हो तो हरण की प्रविष्टि करते समय प्रीमियम को प्रविष्टि में शामिल करेगें। प्रविष्टि इस प्रकार करेगें :–

Share Capital A/c	Dr.	मांगी गई अंश पूंजी की राशि से
Securites Premiums A/c	Dr.	प्रीमियम की राशि से
To Share Allotment A/c		बंटन पर बकाया राशि से
To Share First call A/c		प्रथम मांग पर बकाया राशि से
To Share second call A/c		द्वितीय मांग पर बकाया राशि से
To Share Forfeited A/c		हरण अंशों पर प्राप्त राशि से

Illustration 8

जयन्त को ललित लि. में 100 रु. वाले 500 समता अंशों का बंटन किया गयाा। कम्पनी ने आवेदन पत्र पर 25 रु., बंटन पर 25 रु., प्रथम मांग पर 25 रु., और द्वितीय मांग पर 25 रु. मंगवाए। जयन्त केवल प्रार्थना पत्र और बंटन राशियां ही दे सका। उसने प्रथम मांग और द्वितीय मांग पर मांगी गई राशियां नहीं दी। उसके अंश कम्पनी द्वारा हरण कर लिए गए। कम्पनी की पुस्तकों में अंश हरण सम्बन्धी आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिए।

Solution

Journal of Lalit Ltd.

Equity Share Capital	A\c	Dr.	50,000	
To Share First Call	A/c			12,500
To Share Second Call	A/c			12,500
To Share Forfeited	A/c			25,000
(500 Equity Shares Forfieted)				

Illustration 9

जम्बू को धर्म लि. में 100 रु. वाले 500 समता अंश 90 रु. में जारी किया। कम्पनी ने आवेदन पत्र पर 20 रु., बंटन पर 20 रु., प्रथम मांग पर 25 रु. पर और द्वितीय मांग 25 रु. मंगवाए। जम्बू केवल प्रार्थना–पत्र और बंटन राशियां ही दे सका। उसने प्रथम मांग और द्वितीय मांग पर मांगी गई राशियां नहीं दी। उसके अंश कम्पनी द्वारा हरण कर लिए गए। कम्पनी की पुस्तकों में अंश हरण सम्बन्धी आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिए।

Solution

Equity Share Capital	A/c	Dr.	50,000	
To Share First Call	A/c			12,500
To Share Second Call	A/c			12,500
To Discount on issue of Share A/c				5,000
To Share Forfeited	A/c			20,000

(Forfeiture of 500 Equity Shares originally issued at
the discount of 10% on which full amount was called up.)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Illlustration 10

बी को ए लि. में 120 रु. वाले 600 ईक्विटी अंश 5 रु. प्रति अंश प्रीमियम पर बंटित किए गए। कम्पनी ने मांग की : 35 रु. आवेदन के साथ, 30 रु. (प्रीमियम सहित) बंटन पर, 25 रु. प्रथम मांग तथा शेष अन्तिम मांग पर। बी ने केवल आवेदन व बंटन राशि ही चुकाई है। उसके अंश कम्पनी द्वारा हरण कर लिए गए। यह मानिए कि ए लि. द्वारा अन्तिम मांग नहीं की गई है। ईक्विटी अंशों के हरण की प्रविष्टि दीजिए। (Bikaner university B.Com., 2007)

Solution

Equity Share Capital A/c	Dr.	51,000	
To Share First Call A/c			15,000
To Share Forfeited A/c			36,000

(Forfeiture of 500 Equity Shares originally issued at the Premium of 5% on which full amount was called up.)

Illustration 11

मुदित को सागर लि. में 300 रु. वाले 1,500 समता अंश 50 रु. प्रति अंश प्रीमियम पर बंटित किए गए। कम्पनी ने राशियां इस प्रकार मांगी : 100 रु. आवदेन के साथ, 100 रु. (प्रीमियम सहित) बंटन पर, 100 रु. प्रथम मांग पर तथा 50 रु. अन्तिम मांग पर। मुदित ने केवल आवेदन राशि ही चुकाई। कम्पनी द्वारा मुदित के अंश हरण कर लिए गए। समता अंशों के हरण के सम्बन्ध में जर्नल प्रविष्टियां दीजिए।

Solution

Equity Share Capital A/c	Dr.	4,50,000	
Securities Premium A\c	Dr.	75,000	
To Share Allotment A/c			1,50,000
To Share First Call A/c			1,50,000
To Share Final Call A/c			75,000
To Share Forfeited A/c			1,50,000

(Forfeiture of 1,500 Equity Shares originally issued at the Premium of Rs. 50. on which full amount was called up.)

1.8.1 अंशों का समर्पण (Surrender of Shares)

जब कभी कोई अंशधारी अपनी इच्छा से बिना किसी शर्त एवं प्रतिफल के कम्पनी को अपने अंशों को वापस करता है तो इसे अंशों का समर्पण कहते हैं। जब कोई अंशधारी अंशों पर देय राशि का भुगतान करने में असमर्थ होता है तो वह अंशों को जब्त होने से बचाने एवं देय राशि के दायित्व से बचने के लिए अंशों का कम्पनी को समर्पण कर देता है। अंशों का हरण व समर्पण के लेखे एक से ही है।

1.8.2 हरण किए गए अंशों का पुनर्निर्गमन (Reissue of Forfeited Shares)

हरण किए गए अंशों को कम्पनी पुनर्निर्गमन कर सकती है। पुनर्निर्गमन सममूल्य, बट्टे या प्रीमियम पर किया जा सकता है। बट्टे पर पुनर्निर्गमन की स्थिति में बट्टे की अधिकतम राशि हरण किए गए अंशों पर प्राप्त राशि ही होगी। अंश का अंकित मूल्य कम नहीं होना चाहिए। हरण किए गए अंशों को पुनर्निर्गमन पर कोई शेष बचता है तो इसे पूंजी संचय (Capital Reserve) खाते में स्थानान्तरित करते हैं।

(i) पूर्व में सममूल्य पर निर्गमित अंशों का सममूल्य पर पुनर्निर्गमन

Bank A/c Dr. (प्राप्त राशि)
  To Share Capital

(ii) पूर्व में सममूल्य पर निर्गमित अंशों का प्रीमियम पर पुनर्निर्गमन

Bank A/c Dr.
  To Share Capital
  To Securtirs Premium A/c

(iii) पूर्व में सममूल्य पर निर्गमित अंशों का बट्टे पर पुनर्निर्गमन

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Bank A/c Dr.
Forfeited Share A/c Dr.
To Share Capital

(iv) पूर्व में बट्टे पर निर्गमित अंशों का बट्टे पर पुनर्निर्गमन

Bank A/c Dr.
Discount on issue of share A/c Dr.
Forfeited Share A/c Dr.
To Share Capital

Illustration 12

नगराज लि. 100 रु. वाले 40,000 समता अंशों हेतु 5% बट्टे पर, अग्रलिखित प्रकार से देय, आवेदन–पत्र आमन्त्रित करती है–

आवेदन पर 35 रु.
बंटन पर 35 रु.
प्रथम एवं अन्तिम मांग पर 25 रु.

35,000 अंशों के लिए आवेदन–पत्र प्राप्त हुए एवं स्वीकृत किए गए। 500 अंशों के एक अंशधारी ने देय मांग पर राशि का भुगतान बंटन राशि के साथ ही कर दिया। 250 अंशों का एक अन्य अंशधारी मांग राशि का भुगतान करने में असफल रहा, जिसके कारण उसके अंश हरण कर लिए गए। ये अंश 80 रु. प्रति अंश की दर से पूर्णदत्त पुनर्निर्गमित किए गए। कम्पनी की जर्नल तथा रोकड़ पुस्तक में आवश्यक प्रविष्टियां कीजिए।

Solution **Journal of Nagraj Ltd.**

Date	Particulars	L.F.	Amount Dr.	Amount Cr.
	Equity Share Application A\c Dr.		12,25,000	
	To Equity Share Capital A\c			12,25,000
	(Equity Share Application money transferred to Equity Share Cap. A\c.)			
	Equity Share Allotment A\c Dr.		10,50,000	
	Discount on Issue of Shares A\c Dr.		1,75,000	
	To Equity Share Capital A\c			12,25,000
	(Equity Share allotment due.)			
	Equity Share First call A\c Dr.		8,75,000	
	To Equity Share Capital A\c			8,75,000
	(Equity Share first call due.)			
	Call in Advance A\c Dr.		12,500	
	To Equity Share First call A\c			12,500
	(Calls in advance money adjusted.)			
	Equity Share Capital A/c Dr.		25,000	
	To Equity Share First Call A/c			6,250
	To Discount on issue of Shares A/c			1,250
	To Share Forfeited A/c			17,500
	(Forfeiture of 100 Equity Shares originally issued at the discount of 5% on which full amount was called up.)			
	Shares Forfeited A/c Dr.		3,750	
	Discount on issue of Share A/c Dr.		1,250	
	To Equity Share Capital A/c			5,000
	(Discount allowed on re-issue of Forfeited shares.)			

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Cash Book

		Rs.			Rs.
	To Equity Share Application A\c	12,25,000		By Balance c\d	33,38,750
	To Equity Share Allotment A\c	12,25,000			
	To Call in Advance A\c	12,500			
	To Equity Share First call A\c	8,56,250			
	To Equity Share Capital A\c	20,000			
		33,38,750			33,38,750

Illustration 13

एक कम्पनी ने 100 रु. वाले 1,000 ईक्विटी अंश जनता को प्रस्तुत किए। राशियां निम्नलिखित प्रकार से देय थीः (अ) प्रार्थना–पत्र पर 50 रु. (10 रु. प्रीमियम सहित), (ब) बंटन पर 30 रु., (स) मांग पर 30 रु.।

3,000 अंशों के लिए प्रार्थना–पत्र प्राप्त हुए। 1,000 अंशों के प्रार्थियो को कोई बंटन नहीं किया गया और उनकी आवेदन राशि लौटा दी गई। शेष प्रार्थियों को यथानुपात बंटन किया गया। एक्स ने, जिसे 100 अंशों का बंटन किया गया था, आवदेन के अतिरिक्त कोई राशि नहीं चुकाई। निर्गमन पूर्ण हुआ और शेष प्रार्थियों ने अपनी–अपनी राशियां देय होने पर चुका दी।

एक्स के अंश जब्त कर लिए गए और 50 रु. प्रति अंश के हिसाब से वाई को पूर्ण प्रदत रूप में पुनर्निर्गमित कर दिए गए। (M.D.S. UNIV. 2002)

Solution

Journal

Date	Particulars	L.F.	Amount Dr.	Amount Cr.
Date of Receipt	Bank A\c Dr. To Equity Share Application A\c (Application money received on 3,000 equity shares @ Rs. 50 per share.)		1,50,000	 1,50,000
Date of Allot-ment	Equity Share Application A\c Dr. To Equity Share Capital A\c To Securities Premium A\c (Application money @ Rs. 50 per share on 1,000 shares transferred on allotment.)		50,000	 40,000 10,000
Date of Allot-ment	Equity Share Allotment A\c Dr. To Equity Share Capital A\c (Equity Share allotment due on 1,000 Shares @ Rs. 30 per Share.)		30,000	 30,000
Date of Allot-ment	Equity Share Application A\c Dr. To Equity Share Allotment A\c To Call in Advance A\c (Excess application money adjusted.)		50,000	 30,000 20,000
Date of Refund	Equity Share Application A\c Dr. To Bank (Application money on rejected applications refunded.)		50,000	 50,000
Date of Call	Equity Share First call A\c Dr. To Equity Share Capital A\c (Equity Share First call due on 1,000 shares @ Rs. 30 per Share.)		30,000	 30,000
Date of Call	Call in Advance A\c Dr. To Equity Share First call A\c		20,000	 20,000

Cont.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Date	Particulars			L.F.	Dr.	Cr.
	(Calls in advance money adjusted.)					
Date of Receipt	Bank	A\c	Dr.		9,000	
	To Equity Share First call A\c					9,000
	(Cash received for first call money.)					
Date of Forfei-ture	Equity Share Capital	A/c	Dr.		10,000	
	To Share First Call	A/c				1,000
	To Share Forfeited	A/c				9,000
Date of Re issue	(Forfeiture of 100 Equity Shares.)					
	Bank	A\c	Dr.		5,000	
	Shares Forfeited	A/c	Dr.		5,000	
	To Equity Share Capital A/c					10,000
	(re-issue of forfeited shares.)					
Closing Date	Share Forfeited	A/c	Dr.		4,000	
	To Capital Reserve A/c					4,000
	(Profit on reissue of forfeited shares transferred.)					

Working Note:

The amount received on account of share call has been worked out as fellows:

	Rs.
Amount due on share call	30,000
Less: Amount of Calls in advance adjusted	20,000
Amount to be received from 1,000 shares	10,000
Less: Amount not received on 100 shares $\frac{10,000}{1,000} \times \frac{100}{1}$	1,000
Amount received on account of share call	9,000

1.9.1 स्वेट ईक्विटी अंश (Sweat Equity Shares)

स्वेट ईक्विटी अंश से आशय ऐसे समता अंशों से है जो कम्पनी द्वारा अपने कर्मचारियों या संचालकों को बट्टे (Discount) पर या नकद के अतिरिक्त अन्य प्रतिफल (Consideration other then Cash) के लिए निर्गमित किए जाते हैं। यहां प्रतिफल तात्पर्य किसी जानकारी (know-how) देने या बौद्धिक सम्पदा अधिकारों (Intellectual property rights) की प्रकृति के अधिकार उपलब्ध करने या मूल्य वृद्धि (value addition) करने के लिए दिया गया हो, चाहे उसे किसी भी नाम से जाना जाता हो, से है।

कम्पनी (संशोधन) अधिनियम,1999 में जोड़ी गई धारा 79A के अनुसार कम्पनी को निम्नलिखित शर्तों की पूर्ति करने पश्चात् ही स्वेट ईक्विटी अंश जारी करने की छूट हैः–

1. साधारण सभा में इस सम्बन्ध में विशेष प्रस्ताव पारित करना।
2. इस प्रस्ताव में अंशों की संख्या, चालू बाजार दर, प्रतिफल यदि कोई हो तथा कर्मचारियों या संचालको को इन अंशों का निर्गमन किया गया है उनकी श्रेणी अथवा श्रेणियों का स्पष्ट उल्लेख होना चाहिए।
3. व्यापार प्रारम्भ हुए कम से कम एक वर्ष हो गया हो।
4. इन अंशों के निर्गमन के संदर्भ में एक सूचीबद्ध कम्पनी को सेबी द्वारा निर्गत दिशा–निर्देशों का पालन करना चाहिए।

1.9.2 अधिकार अंशों का निर्गमन (Issue of Right Share)

कम्पनी अधिनियम की धारा 81 के अनुसार यदि कोई कम्पनी अपनी स्थापना के दो वर्षों के पश्चात् या स्थापना

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

के पश्चात् किए गए प्रथम बंटन के एक वर्ष पश्चात् (दोनों में जो पहले हो) नए अंशों का निर्गमन करती है, तो उसे सर्वप्रथम वर्तमान अंशधारियों को अंशों का आवेदन करने का प्रस्ताव देना होगा इसी को अधिकार पूर्ण निर्गमन (Rights issue) कहते है तथा यह अधिकार 'हक–शफा' (Rights of pre-emption) कहलाता है। इन अंशधारियों को उनके द्वारा धारित अंशो के अनुपात में नए अंश निर्गमित किए जाते हैं। इस निर्गमन का प्रस्ताव उन अंशधारियों को कम से कम 15 दिन के द्वारा किया जाना चाहिए। अंशधारियों के मना करने पर उक्त अंश व्यक्तियों को निर्गमित किए जा सकते हैं।

यदि कम्पनी वर्तमान अंशधारियों के स्थान पर अन्य व्यक्तियों को अंश निर्गमन करना चाहती है तो साधारण सभा में एक विशेष प्रस्ताव पास करना अनिवार्य है। अधिकार अंशों के सम्बन्ध में धारा 81 के प्रावधान एक सार्वजनिक कम्पनी पर ही लागू होते हैं, निजी कम्पनी पर लागू नहीं होते हैं। सार्वजनिक कम्पनी भी साधारण सभा में विशेष प्रस्ताव पारित करके इन प्रतिबन्धों से मुक्त हो सकती है।

इन अंशों के निर्गमन की प्रविष्टियां ठीक उसी प्रकार की जाती है जिस प्रकार समता अंशों के निर्गमन की जाती है।

1.10 डीमेट खाता (Demat Account)

विनियोजक द्वारा प्रतिभूतियों को भौतिक प्रमाणपत्र (Physical paper Certificate) से इलेक्ट्रोनिक फार्मेट में परिवर्तित कराना या रखना 'डीमेटरीलाइजेशन' (Dematerialisation) कहलाता है जिसे संक्षिप्त में 'डीमेट' कहते हैं तथा जिस खाते में वह प्रतिभूति रखी जाती है उसे डीमेट खाता (Demat Account) कहते हैं।

सेबी ने 1996 में निक्षेपी अधिनियम की स्थापना की और भारत में नेशनल सिक्योरिटीज डिपॉजिटरी लि., (एनएसडीएल) एवं सेन्ट्रल डिपॉजिटरी सर्विसेज (इ.) लि. (सीडीएसएल) की स्थापना हुई। ये दोनों डिपॉजिटरी सेबी के नियन्त्रण व संचालन में है।

डिपॉजिटरी एक ऐसा संगठन है, जहां प्रतिभूतियां इलेक्ट्रोनिक रूप (Eletronic format) में रखी जाती है। इसके लिए अंशधारियों को डिपॉजिटरी सहभागियों (Depository Participants (DPs)) के माध्यम से अनुरोध करना होता है। सेबी के दिशा–निर्देश के अनुसार वित्तीय संस्थाएं, बैक अभिरक्षक, शेयर दलाल आदि डिपॉजिटरी सहभागी बन सकते हैं।

विनियोगकर्त्ता को अपने डिपॉजिटरी सहभागी के माध्यम से प्रतिभूतियों के लेन–देन एवं इलेक्ट्रोनिक फार्मेट में रखने हेतु डीमेट खाता खोला जाता है। डीमेट खाते के माध्यम से अन्य विधियों की अपेक्षा आसानी से प्रतिभूतियों को क्रय–विक्रय किया जा सकता है।

Illustration 16

ए लिमिटेड, समता अंश पूंजी की सहायता से बहुत वर्षों से कार्य कर रही है। चालू वर्ष में कम्पनी ने 100 रु. वाले 2,000 समता अंश जनता में और निर्गमित किए, जो (अंश) अग्र प्रकार देय है :

20 रु. प्रार्थना–पत्र के साथ, 20 रु. बंटन पर, 30 रु. प्रथम मांग पर और शेष द्वितीय मांग पर।
अंशधारी 'ए' ने, जिसके पास 30 अंश हैं, केवल प्रार्थना राशि दी है।
अंशधारी 'बी' ने, जिसके पास 20 अंश हैं, प्रार्थना राशि 20 अंशों पर दी है तथा 10 अंशों पर बंटन राशि दी है।
अंशधारी 'सी' ने, जिसके पास 8 अंश है, केवल प्रार्थना राशि तथा बंटन राशि का भुगतान किया है।
अंशधारी 'डी' ने, जिसके पास 5 अंश है, प्रार्थना राशि, बंटन राशि तथा प्रथम मांग राशि का भुगतान किया है।
अंशधारी 'ई' ने, जिसके पास 3 अंश है, प्रार्थना राशि, बंटन राशि तथा प्रथम मांग राशि का भुगतान किया तथा द्वितीय मांग राशि केवल 2 अंशों पर चुकायी है।

कम्पनी ने उन सभी अंशधारियों के अंशों को जब्त कर लिया है जिन पर देय धन राशियां प्राप्त नहीं हुई हैं। शेष अंशों पर देय राशि पूर्ण रूप से प्राप्त कर ली गयी है। जब्त किये अंशों की संख्या में से 32 अंशों (अंशधारी 'ए' एवं ब वाले) को 10% बट्टे पर पुनर्निर्गमित कर दिया गया है और उनका पूर्ण भुगतान हो गया है।

उपरोक्त सौदों की जर्नल प्रविष्टियां कीजिए तथा अंश पूंजी और जब्त अंश खाते को चिट्ठे में दिखलाइए।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Solution **Journal of A Ltd.**

Date of Receipt	Bank A\c Dr. To Equity Share Application A\c (Application money received on 2,000 equity shares @ Rs. 20 per share.)		40,000	 40,000
Date of Allot-ment	Equity Share Application A\c Dr. To Equity Share Capital A\c (Application money @ Rs. 10 per share on 2,000 shares transferred to Capital A\c on allotment.)		40,000	 40,000
Date of Allot-ment	Equity Share Allotment A\c Dr. To Equity Share Capital A\c (Equity Share allotment due on 2,000 Shares @ Rs. 32 per Share.)		40,000	 40,000
Date of Receipt	Bank A\c Dr. To Equity Share Allotment A\c (Cash received on 1,960 shares om allotment.)		39,200	 39,200
Date of First Call	Equity Share First call A\c Dr. To Equity Share Capital A\c (Equity Share First call due on 2,000 shares @ Rs. 30 per Share.)		60,000	 60,000
Date of Receipt	Bank A\c Dr. To Equity Share First call A\c (Cash received on 1,942 Equity shares on first call.)		58,260	 58,260
Date of Second Call	Equity Share Second call A\c Dr. To Equity Share Capital A\c (Equity Share Second call due on 2,000 shares @ Rs. 30 per Share.)		60,000	 60,000
Date of Receipt	Bank A\c Dr. To Equity Share Second call A\c (Cash received on 1,936 Equity shares on Second call.)		58,080	 58,080
Date of Forfei-ture	Equity Share Capital A/c Dr. To Equity Share Allotment A\c To Share First Call A/c To Equity Share Second call A\c To Share Forfeited A/c (Forfeiture of 64 Equity Shares of Rs. 100 each.)		6,400	 800 1,740 1,920 1,940
Date of re-issue	Bank A\c Dr. Share Forfeited A/c Dr. To Equity Share Capital A/c (re-issue of 32 Forfeited shares of Rs. 100 each at 10% discount.)		2,880 320	 3,200
Date of Transfer	Share Forfeited A/c Dr. To Capital Reserve A/c (Profit on reissue of forfeited shares transferred.)		340	 340

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Balance Sheet of A Ltd. as at .... (Liabilities side)

	Rs.	Rs.
Authorised Share Capital		
2,000 Equity Shares of Rs. 100 each		2,00,000
Issued Share Capital		
2,000 Equity Shares of Rs. 100 each		2,00,000
Subscribed Share Capital		
1,968 Equity Shares of Rs. 100 each, fully called & paid up	1,96,800	
Add : Forfeited Shares	1,280	1,98,080
Reserve & Surplus		
Capital Reserve		340
		1,98,420

टिप्पणीः जब्त किए गए अंशों पर प्राप्त राशि तथा बकाया मांगों की राशि निम्नलिखित विवरण द्वारा ज्ञात की गयी हैः

Name of Allottee	Share Application (Rs. 20)			Share Allotment (Rs. 20)			Share First Call (Rs. 30)			Share Second Call (Rs. 30)		
	Due Rs.	Rec. Rs	Arrear Rs	Due Rs.	Rec. Rs.	Arrear Rs.	Due Rs.	Rec. Rs.	Arrear Rs	Due Rs.	Rec. Rs.	Arrear Rs.
A- 30 Shares	600	600	Nil	600	Nil	600	900	Nil	900	900	Nil	900
B- 20 Shares	400	400	Nil	400	200	200	600	Nil	600	600	Nil	600
C- 8 Shares	160	160	Nil	160	160	Nil	240	Nil	240	240	Nil	240
D- 5 Shares	100	100	Nil	100	100	Nil	150	150	Nil	150	Nil	150
E- 1 Share	20	20	Nil	20	20	Nil	30	30	Nil	30	Nil	30
64 Shares	1,280	1,280	Nil	1,280	480	800	1,920	180	1,740	1,920	Nil	1,920

जब्त किए गए 64 अंशों पर प्राप्त राशि :	रुपये
प्रार्थना पत्र पर	1,280
बंटन पर	480
प्रथम मांग पर	180
द्वितीय मांग पर	NIL
कुल प्राप्त राशि	1,940

Illustration 17

सुमित लिमिटेड ने 10 रु. वाले 1,00,000 अंशों को 2.50 रु. प्रति अंश प्रीमियम पर निर्गमन हेतु प्रविवरण जारी किया जो अग्र प्रकार देय है–

	(including premium) Rs.
On Application (on 1.1.2009)	5
On Allotment (on 1.2.2009)	5
On First & Final Call (on 1.3.2009)	2.50

(निर्गमन अधि–अभिदत्त रहा, प्राप्त आवेदन पत्रों की संख्या एवं आबंटन का सारांश अग्र प्रकार रहा)

Categories	(a)	(b)	(c)
No. of Application	80	40	2
No. of shares applied by each	1,000	10,000	40,000
Share allotted to each applicant	500	1,000	10,000

यह निर्णय किया गया कि आवेदन पर प्राप्त आधिक्य राशि कम्पनी द्वारा रोक ली जाए तथा इसका उपयोग निर्गमित अंशो के बंटन एवं मांग पर देय राशि को समायोजित करने में किया जाए। 15 फरवरी 2009 को समस्त आधिक्य अंशदान की राशि लौटा दी गई। राम एवं श्याम ने (a) श्रेणी में 2,000 अंशों के लिए आवेदन पर 10,000 रु.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

का अभिदान किया था, 1 मार्च को देय राशि का भुगतान करने में असमर्थ रहे। संचालकों ने 1 अप्रैल, 2009 को उनके अंशो का हरण कर लिया। शेष सभी अंशधारियों ने देय तिथियों पर भुगतान कर दिया। जब्त किए गए अंशों का 1 मई, 2009 को 10,500 रु. के मंगल को पूर्णदत्त अंशों के रूप में पुनर्निर्गमन कर दिया गया। उपयुक्त व्यवहारों को दर्ज करने के लिए कम्पनी की पुस्तकों में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां दीजिए।

(R.U. B.Com., 2006)

Solution **Journal of A Ltd.**

2009 Jan. 1	Bank A\c Dr. To Equity Share Application A\c (Application Money received on 5,60,000 equity shares @ Rs. 5 per share.)		28,00,000	 28,00,000
2009 Feb. 1	Equity Share Application A\c Dr. To Equity Share Capital A\c To Securities Premium A\c (Application money @ Rs. 10 per share on 2,000 shares transferred to Capital A\c on allotment.)		5,00,000	 2,50,000 2,50,000
2009 Feb. 1	Equity Share Allotment A\c Dr. To Equity Share Capital A\c (Equity Share allotment due.)		5,00,000	 5,00,000
2009 Feb. 1	Equity Share Application A\c Dr. To Equity Share Allotment A\c To Calls in Advance A\c To Bank A\c (Excess application money used.)		23,00,000	 5,00,000 1,50,000 16,50,000
2009 March1	Equity Share First & Final call A\c Dr. To Equity Share Capital A\c (Equity Share First call due.)		2,50,000	 2,50,000
	Bank A\c Dr. Calls in Advance A\c Dr. To Equity Share First & Final call A\c (Cash received and adjusted on 99,000 shares.)		97,500 1,50,000	 2,47,500
	Equity Share Capital A/c Dr. To Equity Share First & Final call A\c To Share Forfeited A/c (Forfeiture of 1,000 Equity Shares.)		10,000	 2,500 7,500
2009 Mar. 1	Bank A\c Dr. To Equity Share Capital A/c To Securities Premium A\c (re-issue of at a premium of Rs. 500.)		10,500	 10,500 500
	Share Forfeited A/c Dr. To Capital Reserve A/c (Profit on reissue of forfeited shares transferred.)		7,500	 7,500

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Statement of Shares Applied for, Allotted and Amounts Adjuted

Ctegories	Share Applied for (nos.)	Share Allotted (nos.)	Amount Received (Rs.)	Adjusted (Rs.)	Calls in Advance (Rs.)	Refunded (Rs.)
A	80,000	40,000	4,00,000	4,00,000	Nil	Nil
B	4,00,000	40,000	20,00,000	4,00,000	1,00,000	15,00,000
C	80,000	20,000	4,00,000	2,00,000	50,000	1,50,000
Total	5,60,000	1,00,000	28,00,000	10,00,000	1,50,000	16,50,000

बोनस अंशों का निर्गमन (Issue of Bonus Shares)

जब कम्पनी के पास अत्यधिक मात्रा में संचय एकत्रित हो जाते है जिससे अभिदत्त अंश पूंजी (Subscrided Share Capital) और व्यापार में लगी प्रभावशाली पूंजी (Effective Capital Employed in Business) का अनुपात असंतुलित हो जाता है। ऐसी स्थिति कम्पनी की ख्याति के लिए सही नहीं है। इस परिस्थिति में कम्पनी संचय में से वर्तमान अंशधारियों को बिना प्रतिफल के अंश जारी करती है, यही बोनस अंश का निर्गमन है।

बोनस अंश निर्गमन सम्बन्धी सेबी के दिशा–निर्देश (SEBI Guideliness for Issue of Bonus Shares)

भारत के प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड ने 13 अप्रैल, 1994 में बोनस अंश निर्गमन के सम्बन्ध में नियम जारी किए, उन में से कुछ इस प्रकार हैं–

1. बोनस घोषणा के 6 माह के भीतर बोनस अंश जारी हो जाने चाहिए।
2. बोनस अंश जारी होने से पूर्व वर्तमान अंश पूर्णतः प्रदत्त होने चाहिए।
3. लाभांश के स्थान पर बोनस अंश जारी नहीं किए जा सकते है।
4. कर्मचारियों को जब तक वैधानिक भुगतान न हो जाए तब तक बोनस अंश जारी नहीं किए जा सकते।
5. बोनस अंश तब तक जारी नहीं किए जा सकते जब तक बकाया ब्याज व परिपक्व हुए ऋणपत्र व स्थायी जमा की बकाया किस्त का भुगतान न कर दिया जाए।
6. बोनस अंश तभी जारी किए जा सकते है जब इसका उल्लेख पार्षद अन्तर्नियम में हो, अन्यथा इस हेतु एक विशेष प्रस्ताव पारित किया जाएगा।

बोनस अंश निर्गमन के सम्बन्ध में लेखे (Accounting Entries for Issue of Bonus Shares)

(i) जब संचालक मण्डल बोनस हेतु अंशधारियों के समक्ष एक प्रस्ताव रखते है–

Profit & Loss Appropriation A\c Dr.
To Proposed Bonus to Shareholders A\c
(Bouns to Shareholders proposed.)

(ii) अंशधारियों द्वारा स्ताव स्वीकार किए जाने पर–

Proposed Bonus to Shareholders A\c Dr.
To Bonus to Shareholders A\c
(Being proposal for bonus accepted.)

बोनस का भुगतान

(a) पूर्ण चुकता बोनस अंशों का निर्गमन करके–

Reserve A\c Dr.
To Bonus to Shareholders A\c
Bonus to Shareholders A\c Dr.
To Share Capital A\c
(--- Fully paid Bonus Shares of Rs. --- each issued.)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(b) आंशिक चुकता अंशों को पूर्णदत्त बनाकर बोनस अंशों का निर्गमन करना–

	Reserve A\c	Dr.	
	To Bonus to Shareholders A\c		
Date of re-issue	Share Final Call A\c	Dr.	
	To Share Capital A\c		
	(Share Final call money due @ Rs. --- per share on --- Shares.)		
	Bonus to Shareholders A\c	Dr.	
	To Share Final Call A\c		
	(Share Call received.)		
Date of transfer	Bonus to Shareholders A\c	Dr.	
	To Share Capital A\c		
	(--- Fully paid Bonus Shares of Rs. --- each issued.)		

Illustration 18

एक सीमित कम्पनी का 31 मार्च, 2008 का चिट्ठा अग्र प्रकार था–

Balance Sheet

Liabilities	Amount	Assets	Amount
Share Capital		Fixed Assets	2,85,000
Authorised:		Debtors	1,30,000
50,000 Equity share of Rs. 10 each	5,00,000	Stock	1,03,500
Issued & Subscribed:		Cash in hand	1,00,000
30,000 Equity share of Rs. 10 each fully paid	3,00,000	Cash at Bank	2,00,000
Profit & Loss A\c	1,98,401		
10% Debentures	1,50,000		
Sundry Credit	1,35,000		
Proposed Dividend	30,000		
Proposed Tax on Dividend	5,099		
	8,18,500		**8,18,500**

अंशधारियों की सभा में निम्नलिखित प्रस्ताव जो संचालकों ने रखे थे, का अनुमोदन कर दिया–

(i) 10% प्रस्तावित लाभांश का नकद भुगतान किया जाए।

(ii) प्रत्येक वर्तमान तीन अंशों के धारक को एक बोनस अंश निर्गमित किया जाए।

(iii) बोनस अंश निर्गमन से पूर्व अंशधारियों को अधिकार दिया गया कि वे प्रत्येक तीन अंशों पर एक नया 10रु. वाला अंश 15 रु. में ले, जिसे सभी ने स्वीकार किया।

उक्त की जर्नल प्रविष्टियां दीजिए तथा कम्पनी का चिट्ठा भी बनाइए। लाभांश पर कर की दर 16.995% मानिए।

Journal

Proposed Dividend	A\c	Dr.		30,000	
Proposed Tax on Dividend	A\c	Dr.		5,099	
To Dividend	A\c				30,000
To Tax on Dividend	A\c				5,099
(Bening dividend accepted)					

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

	Dividend Bank A\c Dr. Tax on Dividend A\c Dr. To Bank A\c (Being Separate a\c opened and Tax on dividend paid.)		30,000 5,099	 35,099
	Dividend A\c Dr. To Dividend Bank A\c (Being dividend paid.)		30,000	 30,000
	Profit & Loss Appropriation A\c Dr. To Bonus to Shareholders A\c (Bouns to Shareholders provided.)		1,00,000	 1,00,000
	Bonus to Shareholders A\c Dr. To Equity Share Capital A\c (Being bonus shares issued.)		1,00,000	 1,00,000
	Bank A\c Dr. To Equity Share Application A\c (Being application received.)		1,50,000	 1,50,000
	Equity Share Application A\c Dr. To Equity Share Capital A\c To Securities Premium A\c (Being Shares allotted.)		1,50,000	 1,00,000 50,000

Balance Sheet

Liabilities	Amount	Assets	Amount
Share Capital		Fixed Assets	2,85,000
50,000 Equity share of Rs. 10 each	5,00,000	Debtors	1,30,000
Securities Premium	50,000	Stock	1,03,500
Profit & Loss A\c (1,98,401 - 1,00,000)	98,401	Cash in hand	1,00,000
10% Debentures	1,50,000	Cash at Bank	3,14,901
Sundry Credit	1,35,000	(2,00,000 + 1,50,000 - 35,099)	
	9,33,401		**9,33,401**

स्व परीक्षा प्रश्न (Self Examination Questions)

अति लघुरात्मक प्रश्न (Very Short Answer Type Questions)

1. अधि–अभिदान से आशय बताइए।
2. अधिमान अंश से क्या आशय है? विभिन्न प्रकार बताइए।
3. एक कम्पनी ने 10 रु. वाले 1,000 ईक्विटी अंश हरण कर लिए।
4. संचित पूंजी का अर्थ बताइए। (R.U.B.Com, 2006)
5. अंशों के हरण से आप क्या समझते हैं। (Kota B.Com, 2009)

लघुरात्मक प्रश्न (Short Answer Type Questions)

1. प्रतिभूति प्रीमियम खाते की राशि के उपयोग सम्बन्धी उद्देश्य बताइए।
2. सेबी के दिशा–निर्देश के अनुसार न्यूनतम अभिदान को समझाइए।
3. स्वेट ईक्विटी अंशों ये आप क्या समझाते हैं?

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

सैद्वान्तिक प्रश्न (Theoretical Questions)

1. समता अंश तथा अधिमान अंश में क्या अन्तर है? अधिमान अंशों के विभिन्न प्रकार बताइए।
2. अंशों के हरण से क्या आशय है? अंशों के हरण तथा पुनर्निर्गमन के सम्बन्ध में लेखांकन सम्बन्धी व्यवहार बताइए।

(R.U.B.Com, 2009, Bkn Univ, B.com 2007 & MDS univ. B.com 2008)

व्यावहारिक प्रश्न (Practical Questions)

1. गोयल लि. ने 10 रु. वाले 10,000 ईक्विटी अंशों के लिए 10 प्रतिशत प्रीमियम पर आवेदन आमन्त्रित करने के लिए एक विवरण–पत्र निर्गमित किया। इन अंशों पर आवेदन पर 3 रु., आबंटन पर 5 रु. प्रीमियम सहित और शेष राशि मांग पर देय है।

   निर्गमन के लिए ढाई गुना अभिदान प्राप्त हुआ। 20 अंशों से कम आवेदन–पत्र (कुल 5,000 अंश) अस्वीकृत कर दिए गए। 5,000 अंशों के एक आवेदक को 1,000 अंश दिए गए। शेष को यथानुपात आबंटन किया गया। आबंटन राशि की सीमा तक अधिक राशि को रोक लिया गया। 300 अंशों के धारक आबंटन राशि का भुगतान करने में असमर्थ रहे। 450 अंशों के अंशधारी मांग राशि का भुगतान करने में असमर्थ रहे तथा उनके अंशों को जब्त कर लिया गया। 300 जब्त किए गए अंशों के समूह में से 150 अंश 20 प्रतिशत प्रीमियम पर पुनर्निर्गमित कर दिए गए। रोकड़ प्रविष्टियों सहित आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां दीजिए।

   (Raj. Univ., B.Com . Part1 1996, Bikaner Univ. 2006)

   Ans. Capital Reserve Rs. 600

2. लालू लिमिटेड 180 रु. की अधिकत पूंजी से स्थापित की गई जो 100 रु. वाले 60,000 9 प्रतिशत पूर्वाधिकार अंशों और 1,20,000 ईक्विटी अंशों में विभाजित है। कम्पनी ने प्लांट एवं मशीन क्रय की और विक्रेता को 10,000 9 प्रतिशत पूर्वाधिकार अंश (पूर्णप्रदत) 5 प्रतिशत पर निर्गमित किए। 30,000 9 प्रतिशत अंश और 60,000 ईक्विटी अंश जनता द्वारा अभिदान किए गए। ये अंश 5 प्रतिशत पर निर्गमित किए गए और इन पर निम्न प्रकार से धन देय था– प्रार्थना पत्र पर 50 रु. आबंटन पर 30 प्रीमियम सहित और शेष प्रथम और अन्तिम मांग पर। कालू ने, जिसके पास 2,000 ईक्विटी अंश थे, आबंटन राशि के साथ ही प्रथम और अन्तिम मांग का भुगतान कर दिया। बालू जिसके पास 1,000 9 प्रतिशत पूर्वाधिकार अंश थे, प्रथम और अन्तिम मांग का भूगतान करने में असमर्थ रहा। उसके अंश जब्त कर लिए गए और 80 रु. प्रति अंश पूर्णदत के रूप मे पुनः निर्गमित किए गए। कम्पनी की पुस्तकों में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिए।

   (Bikaner Univ. 2009 & Kota Univ, 2009)

   Ans. Transfer to Capital Reserve Rs. 55,000

3. एसजेपी लिमिटेड की 40 लाख रुपये की अधिकृत पूंजी 10 रुपये वाले 4,00,000 ईक्विटी अंशों में विभाजित थी, जिनमें से 3,00,000 अंश जनता में अभिदान के लिये निर्गमित किए गए थे। निर्गमन की शर्तों के अनुसार 2 रुपये प्रति अंश आवदेन पर, 2 रुपये प्रति अंश आबंटन पर, 3 रुपये प्रति अंश प्रथम मांग पर और शेष राशि द्वितीय व अन्तिम मांग पर देय थी। निन्नलिखत के अतिरिक्त सभी देय धन राशियां समय–समय पर प्राप्त हो गई थी–

   From X holding 600 shares on which alloment first and second calls were in arrear.

   From Y holding 400 shares on which first and second calls were in arrear.

   From Z holding 200 shares on which second call was in arrear.

   संचालकों ने उपर्युक्त अंशों का हरण कर उन्हें 'अ' को पूर्ण प्रदत मानते हुए इस प्रकार पुनर्निर्गामित किए– एक्स के अंशों 9 रुपये प्रति अंश, वाई के अंश 7 रुपये प्रति अंश और जेड के अंश 5 रुपये प्रति अंश। उपर्युक्त व्यवहारों को दर्ज करने के लिये आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां यह मानते हुए कीजिए कि 'अ' ने सम्पूर्ण देय राशि का भुगतान कर दिया है।

   (University of Rajasthan, 2003)

   Ans. Transfer to Capital Reserve Rs. 1,400

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

4. एक कम्पनी ने 500 प्रस्तावों की 1 अप्रैल, 2004 को 40 रुपये पर जिनका बाजार मूल्य 160 रुपये है अनुमति देती है। निवेशित अवधि अढ़ाई वर्ष अधिकतम अभ्यास अवधि एक वर्ष है यह भी मानिये कि 150 निवेशित प्रस्ताव 1 मई, 2005 को समाप्त हो गए। 300 प्रस्तावों पर 30 जून, 2006 को कार्य किया गया। 50 निवेशित प्रस्ताव अभ्यास अवधि के अन्त मे समाप्त हो गए। (अंकित मूल्य 10 रु. प्रति प्रस्ताव)

कम्पनी की पुस्तकों मे जर्नल प्रविष्टियां तथा आवश्यक खाते तालिका प्रारूप में तैयार कीजिए।

5. एक्स कम्पनी लिमिटेड की अधिकृत पूंजी 20,00,000 रुपये है जो 100 रुपये वाले 20,000 ईक्विटी अंशों में विभाजित है इनमें से 15,000 अंश जनता में 10 प्रतिशत प्रीमियम पर निर्गमित किए गए है। निर्गमन की शर्तों के अनुसार 20 रुपये प्रार्थना–पत्र के साथ, 30 रुपये प्रीमियम सहित बंटन पर, 30 रुपये प्रथम मांग पर और शेष 30 रुपये द्वितीय मांग पर देने है। निम्नलिखित के सिवाय सभी धन राशियां प्राप्त हो गई है–

अ से जो 30 अंशों का धारक जिस पर बंटन राशि, प्रथम मांग पर तथा द्वितीय मांग पर देय राशियां बाकी है।
ब से जो 20 अंशों का धारक जिस पर प्रथम तथा द्वितीय मांग पर देय राशियां बाकी है।
स से जो 10 अंशों का धारक जिस पर द्वितीय की राशि बकाया है।

संचालकों ने इन अंशों को जब्त कर लिया और 'द' को निम्नलिखत शर्तों पर पूर्ण प्रदत मानते हुए पुनः निर्गमित किया–

अ के अंश 90 रुपये प्रति अंश के हिसाब से पुनः निर्गमित किए गए।
ब के अंश 70 रुपये प्रति अंश के हिसाब से पुनः निर्गमित किए गए।
स के अंश 50 रुपये प्रति अंश के हिसाब से पुनः निर्गमित किए गए।
उपरोक्त सौदों को दर्ज करने के लिये आवश्यक जर्नल प्राविष्टियां कीजिए तथा कम्पनी का चिट्ठा बनाइए।

(Univ. of Rajasthan, 2005)

Ans. Transfer to Capital Reserve Rs. 700

6. तिरूपति लिमिटेड ने 100 रु. मूल्य वाले 1,00,000 ईक्विटी अंशों के लिए 20 रु. प्रति अंश प्रीमियम पर आवेदन आमंत्रित किए जिस पर 30 रु. प्रार्थना पत्र पर 70 रु. आबंटन पर (प्रीमियम सहित) तथा शेष राशि प्रथम एवं अन्तिम मांग पर देय है।

1,25,000 अंशों के लिए प्रार्थना पत्र प्राप्त हुए, यह निर्णय किया गया कि (अ) 5,000 अंशों के आवेदकों को आबंटन के लिए मना कर दिया जाए, (ब) 20,000 अंशों के आवेदकों को पूर्ण आबंटन किया जाए, (स) शेष आवेदकों को यथानुपात बंटन कर दिया जाए एवं (द) आवेदन पर आधिक्य राशि का प्रयोग आबंटन पर देय राशि के लिए कर लिया जाए।

श्री राम जिसके पास 1,000 अंश हैं तथा जिसे यथानुपात बंटन किया था, आबंटन तथा मांग राशियां देने में असमर्थ रहा एवं श्री श्याम जिसे पूर्ण बंटन के रूप में 500 आबंटित किए थे, मांग राशि देने में असमर्थ रहा, इन अंशों का हरण कर लिया गया।

राम के हरण किए गए अंशों में से 800 अंश व श्याम के हरण किए गए अंशों में से 200 अंशों का पुनर्निर्गमन श्री कृष्ण को 10 रु. प्रति अंश के बट्टे पर किया गया। तिरूपति लिमिटेड की पुस्तकों में रोकड़ को दिखाते हुए आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिए।

(M.D.S.Univ., 2009)

Ans. Transfer to Capital Reserve Rs. 36,000

7. अजन्ता कम्पनी लिमिटेड ने 100 रु. मूल्य वाले 8,000 ईक्विटी अंशों के लिए एक प्रविवरण जारी किया, जो 20 रु. प्रति अंश प्रीमियम सहित अग्र प्रकार से देय थे–

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

आवेदन पर 20 रु., आबंटन पर (प्रीमियम सहित) 50 रु., प्रथम मांग पर 30 रु., तथा अन्तिम मांग 20 रु.। 12,000 अंशों के लिए प्रार्थना पत्र प्राप्त हुए। यह निर्णय किया गया कि 9,600 अंशों के आवेदकों को यथानुपात बंटन कर दिया गया तथा शेष आवेदकों को आबंटन के लिए मना कर दिया गया। आवेदन पर आधिक्य राशि का प्रयोग आबंटन पर देय राशि के लिए किया गया।

रमेश, जिसके पास 1,60 अंश हैं तथा जिसे यथानुपात बंटन किया था, आबंटन पर देय राशि का भुगतान करने में असमर्थ रहा और इसके पश्चात् प्रथम मांग का भुगतान न करने पर उसके अंशों को जब्त कर लिया गया। मोहन, जो 240 अंशों का धारक था, दो मांगों का भुगतान करने में असमर्थ रहा एवं उसके अंशों का हरण कर लिया गया। जब्त किए गए अंशों में से 320 अंश कृष्णा को 90 रु. प्रति अंश के हिसाब से पूर्णदत्त मानते हुए बेचे गए जिनमें रमेश के सब अंश सम्मिलित थे। अजन्ता लिमिटेड की पुस्तकों में जर्नल और रोकड़ बही में आवश्यक प्रविष्टियां कीजिए तथा चिट्ठा भी बनाइए। (Raj. Univ., 2006)

Ans. Transfer to Capital Reserve Rs. 8,640, Balance sheet Total Rs. 9,61,440

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

अध्याय – 2
अधिमान अंशों का शोधन
Redemption of Prefernce Shares

विषय सूची (Contents)

2.0 अधिमान अंशों का शोधन

2.1 अधिमान अंशों के शोधन की विधियां एवं लेखाकंन

2.1.1 लाभांश के लिए उपलब्ध लाभों में से शोधन,

2.1.2 नए अंशों के निर्गमन द्वारा शोधन,

2.1.3 आंशिक रुप से लाभों में से तथा आंशिक रुप से नए अंश के निर्गमन द्वारा शोधन,

2.1.4 अंश परिवर्तन द्वारा शोधन।

2.2 धारा 80 की शर्तों कर पालना हेतु आवश्यक अंशों की संख्या ज्ञात करने हेतु समीकरण

स्व परीक्षा प्रश्न (Self Examination Questions)

यदि अंशों द्वारा सीमित कम्पनी अन्तर्नियमों में अधिमान अंशों को जारी करने की व्यवस्था हो, तभी अधिमान अंशों को जारी कर सकती है। यदि कम्पनी ने अधिमान अंशों का निर्गमन किया है तो कम्पनी (संशोधन) अधिनियम, 1988 की धारा 80 (5A) के अनुसार अंशों के निर्गमन के 20 वर्षों के भीतर शोधन करना अनिवार्य है।

यदि कोई कम्पनी पूर्व में निर्गमित अंशों का शोधन करने में समर्थ नहीं है तो कम्पनी को पूर्व में जारी अशोधनीय अधिमान अंश पूंजी की राशि के बराबर राशि के शोधनीय अधिमान अंशों का निर्गमन करना होगा, जो निर्गमन तिथि के 20 वर्षों में शोधनीय हो। इसका उल्लघंन करने पर दोषी अधिकारी पर 10,000 रु. तक जुर्माना तथा तीन वर्ष तक की जेल सजा दी जाएगी।

2.0 अधिमान अंशों का शोधन (Redemption of Preferance Shares)

कम्पनी अधिनियम की धारा 80 के अनुसार पूर्वाधिकार अंशों के शोधन के सम्बन्ध में अग्रलिखित शर्तों का पालन आवश्यक है –

1. अधिमान अंश पूर्ण प्रदत्त होने चाहिए। यदि अंश अंशतः प्रदत्त है तो पहले इन अंशों पर न मांगी गई राशि मांग कर प्राप्त करनी चाहिए तत्पश्चात् शोधन किया जाएगा।
2. ऐसे अंशों का शोधन लाभांश के लिए उपलब्ध लाभों में से (लाभ–हानि खाते का जमा शेष, सामान्य संचय, संचय कोष, बीमा कोष, कर्मचारी कोष, लाभांश समानीकरण कोष इत्यादि।) या उस राशि से किया जाएगा जो शोधन के उद्देश्य से ही नए अंश निर्गमित करके प्राप्त की हो।
3. यदि अधिमान अंशों का शोधन प्रीमियम पर किया जाना है तो ऐसी पूंजीगत हानि को शोधन के पूर्व अपलिखित किया जाना चाहिए। यदि कम्पनी के पास "शोधन पर देय प्रीमियम" को अपलिखित करने के लिए पर्याप्त पूंजीगत या आयगत लाभ नहीं है तो कम्पनी अधिमान अंशों का शोधन प्रीमियम पर नहीं कर सकती है।

2.1 अधिमान अंशों के शोधन की विधियां एवं लेखाकंन
(Methods and accounting Treatment of Redemption of Preferance Shares)

कम्पनी अधिनियम की धारा 80 के प्रावधनों से स्पष्ट है कि अधिमान अंशों का शोधन निम्नलिखित चार विधियों में से किया जा सकता है–

2.1.1 लाभांश के लिए उपलब्ध लाभों में से शोधन,

2.1.2 नए अंशों के निर्गमन द्वारा शोधन,

2.1.3 आंशिक रूप से लाभों में से तथा आंशिक रूप से नए अंश के निर्गमन द्वारा शोधन,

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

2.1.4 अंश परिवर्तन द्वारा शोधन।

2.1.1 लाभांश के लिए उपलब्ध लाभों में से शोधन (Redemption out of Profits available for dividend)

यदि अधिमान अंशों का शोधन लाभांश के लिए उपलब्ध लाभों में से करना है तो उक्त लाभों या संचयों में से अधिमान अंशों के अंकित मूल्य के बराबर राशि 'पूंजी शोधन संचय खाते' (Capital Redemption reserve A/c) में स्थानान्तरित करनी होती है। 'पूंजी शोधन संचय खाते' को चिट्ठे के दायित्व पक्ष में 'संचय एवं आधिक्य' (Reserve and Surplus) शीर्षक के अन्तर्गत दिखाया जाएगा तथा इस खाते की प्रकृति पूंजीगत होगी। इसका उपयोग पूर्णदत्त बोनस अंशों के निर्गमन एवं पूंजी में कटौती सम्बन्धी योजनाओं में किया जाएगा। शोधन से सम्बन्धित प्रविष्टियां निम्नलिखित होगी–

(अ) अंश शोधन का निर्णय लेने पर

Preference Share Capital A/c Dr. (अंकित मूल्य से)
Premium on Redemption of P.S. A/c Dr.(देय प्रीमियम यदि शोधन प्रीमियम पर होना है)
To Preference Shareholder A/c
(Being Preference share Capital transferred)

(ब) शोधन पर देय प्रीमियम को अपलिखित करने पर

Securities Premium/Capital Profits A/c Dr. (प्रथम वरीयता)
P&L/Gen.Resaerve A/c Dr. (द्वितीय वरीयता)
To Premium on Redemption of P.S. A/c
(Being Premium on Redemption written off.)

(स) पूंजी शोधन संचय कोष में स्थानान्तरण करने पर

P&L/G/R A/c Dr.
To Capital Redemption reserve A/c
(Amount Trannsferred equal to P.S. Capital)

(द) भुगतान करने पर

Preference Shareholder s A/c Dr.
To Bank
(Payment Made)

Illustration 1

भरत लि. 31 मार्च, 2010 को अपने 50 रु. वाले 10,000 10% अधिमान अंशों का शोधन सामान्य संचय से करना चाहती है। आवश्यक प्रविष्टियां दीजिए यदि शोधन (a) सम–मूल्य पर हो, (b) प्रीमियम पर हो।

Solution **Journal of Bharat Ltd.**

(A) सममूल्य पर शोधन

2010 March, 31 2010	10% Preference Share Capital A/c Dr. To Preference Shareholders A/c (Being amount due on Redemption of 10,000 Preference Share of Rs. 50 each.)		5,00,000	5,00,000
	General Reserve A/c Dr. To Capital Redemption Reserve A/c (Amount Trannsferred equal to P.S. Capital u\s 80.)		5,00,000	5,00,000
	Preference Shareholders A/c Dr. To Bank (Payment Made)		5,00,000	5,00,000

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(B) प्रीमियम पर शोधन

2010 March, 31	10% Preference Share Capital A/c Dr. Premium on Redemption of P.S. A/c Dr. To Preference Shareholder A/c (Being amount due on Redemption of 10,000 Preference Share of Rs. 50 at 10% Premium.)		5,00,000 50,000	 5,50,000
	Securities Premium/Gen.Resaerve A/c Dr. To Premium on Redemption of P.S. A/c (Being Premium on Redemption Resaerve written off.)		50,000	 50,000
	General Reserve A/c Dr. To Capital Redemption Reserve A/c (Amount Transferred equal to P.S. Capital u\s 80.)		5,00,000	 5,00,000
	Preference Shareholders A/c Dr. To Bank (Payment Made)		5,00,000	 5,00,000

2.1.2 नए अंशों के नकद में निर्गमन द्वारा शोधन (Redemption out of Proceeds of New issue on cash)–

यदि कम्पनी अधिमान अंशों का शोधन नए अंशों के निर्गमन से प्राप्त राशि में से करना चाहती है तो नए अंशों के निर्गमन की राशि का निर्धारण इस प्रकार किया जाएगा–

(i) यदि नए अंश सममूल्य पर जारी किए हो तो नए निर्गमित अंशों का अंकित मूल्य, शोधनीय अधिमान अंशों के अंकित मूल्य के बराबर होना चाहिए।

(ii) यदि नए अंश प्रीमियम पर जारी किए हो तो भी नए निर्गमित अंशों का अंकित मूल्य, शोधनीय अधिमान अंशों के अंकित मूल्य के बराबर होना चाहिए। प्रीमियम की राशि का इस हेतु समायोजन नहीं करेगें।

(iii) यदि नए अंशों का निर्गमन बट्टे पर हुआ है तो नए निर्गमन पर 'प्राप्त राशि' शोधनीय अधिमान अंशों के अंकित मूल्य के बराबर होनी चाहिए।

उदाहरण द्वारा स्पष्टीकरण : यदि कम्पनी 10 रु. वाले 90,000 अधिमान अंशों का शोधन नए अंशों को नकद में निर्गमन करना चाहती है जो 1 रु. अंकित मूल्य के है तो नए निर्गमित अंशों की संख्या निम्नलिखित होगी–

(i) यदि निर्गमन 1 रु. (सममूल्य) पर होना है :	$\frac{\text{9,00,000 रु.}}{\text{अंश का अंकित मूल्य}} = \frac{9,00,000}{1} =$ 9,00,000 अंश
(ii) यदि निर्गमन 2 रु. (प्रीमियम) पर होना हो :	$\frac{\text{9,00,000 रु.}}{\text{अंश का अंकित मूल्य}} = \frac{9,00,000}{1} =$ 9,00,000 अंश प्रीमियम का ध्यान नहीं रखना है।
(iii) यदि निर्गमन 90 पैसे (बट्टे) पर होना हो :	$\frac{\text{9,00,000}}{\text{अंश का अंकित मूल्य}} = \frac{9,00,000}{.90} =$ 10,00,000 अंश

Illustration 2

रणजीत लि. 100 रु. वाले 50,000 10% अधिमान अंशों का शोधन 10 रु. प्रति अंश प्रीमियम पर नए 100 रु. वाले समता अंशों का पर्याप्त मात्रा में निर्गमन करना चाहती है जो– (i) सममूल्य पर, (ii) 20% प्रीमियम पर (iii) 20% बट्टे पर निर्गमन किए। यह मानते हुए कि सम्पूर्ण अंशों का अभिदान हो गया एवं पूर्ण राशि प्राप्त हो गयी, उक्त व्यवहारों का लेखा कीजिए।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Solution

Journal of Ranjeet Ltd.

1. New Share issued at par

10% Preference Share Capital A/c Dr.			50,00,000	
Premium on Redemption of P.S. A/c Dr.			5,00,000	
To Preference Shareholders A/c				55,00,000
(Being amount due on redemption of 50,000 Preference Share of Rs. 100 at 10% Premium.)				
Securities Premium/Gen.Resaerve A/c Dr.			5,00,000	
To Premium on Redemption of P.S. A/c				5,00,000
(Being Premium on Redemption Resaerve written off.)				
Bank A/c Dr.			50,00,000	
To Equity Share Application A/c				50,00,000
(Being application received for 50,000 new Equity Share at par.)				
Equity Share Application A/c Dr.			50,00,000	
To Equity Share Capital				50,00,000
(Being share allotted.)				
Preference Shareholders A/c Dr.			55,00,000	
To Bank				55,00,000
(Payment Made)				

(ii) 20% प्रीमियम पर

उक्त (i) के समान सभी प्रविष्टियां होंगी केवल निर्गमन पर प्राप्त राशि 50,00,000 रु. + 10,00,000 (20% of Rs. 50,00,000) रु. होगी। 10,00,000 रु. Securities Premium A\c में लिखे जाएंगे।

(iii) 20% बट्टे पर

उक्त (i) के समान सभी प्रविष्टियां होगी तथा नए अंशों के निर्गमन पर प्राप्त कुल राशि 50,00,000 रु. होनी चाहिए। अतः 6,25,000 नए अंशों का निर्गमन 20% बट्टे पर करने से 50,00,000 रु. प्राप्त होंगे। 12,50,000 रु. बट्टा खाते में लिखे जाएंगे।

2.1.3 आंशिक रूप से लाभों में से शोधन और आंशिक रूप से नए अंशों का नकद में निर्गमन करके शोधन (Redemption out of Profits available for dividend and Proceeds of New issue of Shares)

यदि कम्पनी शोधनीय अधिमान अंशों का शोधन आंशिक रूप से लाभों में से तथा आंशिक रूप से नए अंशों के निर्गमन से प्राप्त राशि में से करना चाहती है तो प्रविष्टियां पूर्व विधियों के समान ही होगी। लाभांश के लिए उपलब्ध लाभ और नए निर्गमन पर प्राप्त राशि शोधनीय अधिमान अंशों के अंकित मूल्य से कम नहीं होनी चाहिए।

(A) पहले नए अंशों के निर्गमन की प्रविष्टियां होगी–

(i) Bank A/c Dr.
To Share Application A/c
(Apllication money received on shares.)

(ii) Share Application A/c Dr.
To Share Capital
(Amount transferred to share capital a/c on allotment)

(B) लाभों में से शोधन की स्थिति में

General Resaerve/P&L A/c Dr.
To Capital Redemption Reserve A/c
(Amount transferred to capital redemption resarve)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(C) शोधन पर प्रीमियम का आयोजन करना

P&L A/c/General Reserve/Securties Premium A/c Dr.

To Premium on Redemption of Preferance Shares A/c

(Provision made for premium on Redemption of Pref. Share)

(D) अंशों के शोधन की प्रविष्टि

Redeemable Pref. Share Capital A/c Dr.

Premium on Redemption of P.S. A/c Dr.

To Preference Shareholder A/c

(Preference Share Capital transferred with premium)

(E) भुगतान करने की प्रविष्टि

Preference Shareholder A/c Dr.

To Bank A/c

(Being payment made on Redemption)

Illustration 3

पानमल लि. के संचालकों ने अपनी बैठक में निर्णय लिया कि 20 रु. वाले 50,000 10% अधिमान अंशों का शोधन 10% प्रीमियम पर कर दिया जाए। कम्पनी के सामान्य संचय में 6,00,000 रु. जमा है। संचालक इन अंशों के शोधन के लिए आधे संचय (शोधन पर प्रीमियम के अलावा) का उपयोग करना चाहते हैं तथा शेष की पूर्ति पर्याप्त मात्रा में 100 रु. वाले नए समता अंशों के निर्गमन द्वारा करना चाहते हैं। शोधन पर प्रीमियम की पूर्ति भी सामान्य संचय से करनी है। शोधन हेतु आवश्यक प्रविष्टियां व खाते बनाइए।

Solution

Journal of Panmal Ltd.

Date of receipt	Bank A/c Dr. To Equity Share Application & Allot. A/c (Being application received for 7,000 new Equity Share at par.)		7,00,000	7,00,000
Date of Allot.	Equity Share Application & Allot. A/c Dr. To Equity Share Capital (Being share allotted.)		7,00,000	7,00,000
Date of transfer	Gen.Resaerve A/c Dr. To Premium on Redemption of Pref. Share A/c (Being Premium on Redemption of Preference Share provided for.)		1,00,000	1,00,000
Date of transfer	General Reserve A/c Dr. To Capital Redemption reserve A/c (Amount transferred to Capital Redemption reserve A\c.)		3,00,000	3,00,000
Date of redemp.	10% Redeemable Preference Share Capital A/c Dr. Premium on Redemption of P. S. A/c Dr. To Preference Shareholders A/c (Being amount due on Redemption of 50,000 Preference Share of Rs. 20 at 10% Premium.)		10,00,000 1,00,000	11,00,000
Date of payment	Preference Shareholders A/c Dr. To Bank (Payment Made)		11,00,000	11,00,000

10% Redeemable Preference Share Capital Account

		Rs.			Rs.
Date of redemption	To Preference Shareholder A/c	10,00,000	Beginning of Year	By Balance b\d	10,00,000

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Premium on Redemption of Pref. Share Account

Date of redemption	To Bank A/c	Rs. 1,00,000	Dare of transfer	By Gen.Resaerve A\c	Rs. 1,00,000

General Reserve Account

Dare of transfer	To Premium on Redemption of Pref. Share A/c	Rs. 1,00,000	Beginning of Year	By Balance b\d	Rs. 6,00,000
Dare of transfer	To Capital Redemption Reserve A/c	3,00,000			
	To Balance c\d	2,00,000			

Bank Account

Beginning of Year	To Balance b\d	Rs.		By Preferanceshareholder	Rs. 11,00,000
Dare of received	To Equity Share App. A/c	7,00,000			

Equity Share Application & Allo. Account

Date of Allotment	To Equity Share Capital A/c	Rs. 7,00,000	Dare of received	By Bank A\c	Rs. 7,00,000

Equity Share Capial Account

Year end	To Balance c\d	Rs. 7,00,000	Dare of Allotment	By Equity Share Application & Allo. A\c	Rs. 7,00,000

Capial Redemption Account

Year end	To Balance c\d A/c	Rs. 3,00,000	Dare of transfer	By General Reserve A\c	Rs. 3,00,000

Preference Shareholder Account

Dare of payment	To Bank A/c	Rs. 11,00,000	Dare of redemption	By 10% Redeemable Preference Share Capital A/c	Rs. 10,00,000
				By Premium on Redemption of P.S. A/c	1,00,000
		11,00,000			11,00,000

कुछ महत्त्वपूर्ण बातें:–

(i) बकाया मांग राशि (Calls in arrears)

यदि कुछ शोधनीय अधिमान अंशों पर बकाया मांग राशि है तो ऐसे अंशों का शोधन तभी किया जा सकता है जबकि बकाया मांग राशि का भुगतान अंशधारियों द्वारा कर दिया जाता है। अतः प्रश्न हल करते समय विद्यार्थियों को इनका शोधन नहीं करना चाहिए। नये अंशों में निर्गमन करते समय एवं पूंजीगत शोधन संचय खाते में हस्तान्तरण के

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

समय बकाया मांग राशि का ध्यान नहीं रखेंगे तथा सम्पूर्ण शोधनीय पूर्वाधिकार अंशों पर प्रावधान करेंगे। जिन अंशों पर बकाया राशि है उन्हें चिट्ठे के दायित्व पक्ष में पूर्वाधिकार अंशधारियों के खाते में चालू दायित्व के रूप में दिखाते हैं।

(ii) सम्पत्तियों का विक्रय (Sales of Assets)

नकद राशि प्राप्त करने के लिए यदि कुछ सम्पत्तियों को बेचा जाता है तो इसका शोधन नियमों के अनुसार नये अंशों का निर्गमन करते समय एवं पूंजीगत शोधन संचय खाता बनाते समय कोई ध्यान नहीं रखते हैं। सम्पत्तियों को बेचने पर हुआ लाभ या हानि, लाभ–हानि खाते में हस्तान्तरित कर देते हैं।

(iii) ऋणपत्रों का निर्गमन (Issue of Debenture)

नकद राशि प्राप्त करने के लिए यदि कुछ नये ऋणपत्रों का निर्गमन कर सकती है किन्तु इसका प्रभाव भी नये अंशों के निर्गमन एवं पूंजीगत शोधन संचय खाते पर नहीं पड़ता है। केवल नकद राशि अंशों के भुगतान में प्रयोग की जा सकती है।

2.1.4 अंश परिवर्तन द्वारा शोधन (Redemption by Conversion of Share)

यदि अन्तर्नियमों में व्यवस्था हो तो शोधनीय अधिमान अंशों को समता अंशों में परिवर्तित करके भी शोधन किया जा सकता है। इसके लिए सर्वप्रथम शोधन पर देय कुल राशि की गणना कर निर्गमित करने वाले नए अंशों के निर्गमित मूल्य का भाग देकर अंशों की संख्या ज्ञात की जाएगी, तत्पश्चात् निम्नलिखित प्रविष्टियां की जाएगी–

Red. Pref. Share Capital A/c Dr.
Premium on Red. of P.S. A/c Dr.
To Pref. Shareholder a/c
(Being amount due on redemption)

Prference Shareholder A/c Dr.
To Equity Share Capital A/c
(Being Preference Shares Converted.)

नोटः यदि नए अंश प्रीमियम या बट्टे पर निर्गमित है तो उक्त उपर्युक्त प्रविष्टि में प्रतिभूति प्रीमियम को जमा तथा बट्टे की राशि को नाम किया जाएगा ।

Illustration 4

सत्यम् कम्पयूटर्स लि. अपने 100 रु. वाले 5,000 10% शोधनीय अधिमान अंशों का शोधन 20% प्रीमियम पर 31 मार्च, 2007 को सामान्य संचय से करना चाहती है। इस हेतु कम्पनी ने अंशधारियों को उनके अंशों को 10 रु. वाले ईक्विटी अंशों में जो 30 रु. पर निर्गमित किए जाएंगे, परिवर्तन करवाने का विकल्प दिया। 60% अधिमान अंशधारियों ने ईक्विटी अंशों में परिवर्तन करवाने का विकल्प स्वीकार किया। अधिमान अंशों के शोधन से सम्बन्धित आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां दीजिए।

(M.L.S.U., 2002)

Solution

Journal of Satyam Computers Ltd.

	10% Preference Share Capital A/c Dr.		5,00,000	
	Premium on Redemption of P.S. A/c Dr.		1,00,000	
	To Preference Shareholders A/c			6,00,000
	(Being amount due on Redemption of 5,000 Preference Shares.)			
	General Reserve A/c Dr.		3,80,000	
	To Capital Redemption Reserve A/c			3,80,000
	(Amount Trannsferred to Capital Redemption Reserve A\c.)			
	Prference Shareholders A/c Dr.		3,60,000	
	To Equity Share Capital A/c			1,20,000
	To Securities Premium A/c			2,40,000
	(Being Preference Shares Converted.)			

Cont.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

	Preference Shareholders A/c Dr.				2,40,000	
	To Bank A\c					2,40,000
	(Payment Made)					
	Securities Premium A/c Dr.				1,00,000	
	To Premium on Redemption Resaerve A/c					1,00,000
	(Being Premium on Redemption written off.)					

Working Note:

(i) No. of Equity Share to be issued:

$$= \frac{\text{Amount payable to Pref. Shareholders who accepted E.S.}}{\text{Issue price of E. S.}}$$

$$= \frac{3,60,000}{30} = 12,000 \text{ E. S.}$$

(ii) As new shares issued on redemption of Rs. 1,20,000. so only Rs. 3,80,000 has been transferred to CRR.

2.2 धारा 80 की शर्तों की पालना हेतु आवश्यक अंशों की संख्या ज्ञात करने हेतु समीकरण

(use of Equation for Compuation of Required number of shares to fullfil the Conditions of Sction 80)

कई बार प्रश्नों में नए अंश कितने निर्गमित करने हैं, की सूचना नहीं दी जाती है तथा ऐसी अपेक्षा की जाती है कि न्यूनतम अंश जारी किए जाए तथा लाभों का अधिकतम उपयोग किया जाए। इस समस्या के समाधान के लिए एक समीकरण का उपयोग किया जाता है। समीकरण के लिए चार शर्तों की पूर्ति आवश्यक है–

(i) जबकि अधिमान अंशों का शोधन प्रीमियम पर करना हो,

(ii) उपलब्ध लाभों का प्रयोग अधिकतम करना हो,

(iii) नए अंशों का निर्गमन प्रीमियम पर करना हो, एवं

(iv) वर्तमान प्रतिभूति प्रीमियम का शेष एवं नए निर्गमन से प्राप्त प्रीमियम की राशि इन अंशों पर देय प्रीमियम से कम हो।

समीकरण अग्रलिखित है–

Redeemable Preference Shares Capital + Redemtion Premium	=	Existing Securities Premium	+	Existing divisible profit	+	Amount of new share capital to be issued	+	Amount of Securities Premium to be received

Illustration 5

निम्नलिखित से ज्ञात कीजिए कि धारा 80 की शर्तों की पालना के लिए 100 रु. वाले कितने नए समता अंश 10% प्रीमियम पर निर्गमित किए जाए तथा जर्नल प्रविष्टियां दीजिए।

Preference Share Capital to be Redeemed	Rs. 50,00,000
General Resaerve	Rs. 10,50,000
Securities Premium	Rs. 50,000

Preference Share are Redeemable at 10 % Premium.

Solution :

उक्त परिस्थिति में यदि ऐसा मान लिया जाए कि वर्तमान में प्रतिभूति प्रीमियम तथा नए निर्गमन से प्राप्त प्रतिभूति प्रीमियम शोधन पर देय प्रीमियम को अपलिखित करने के लिए पर्याप्त होगें।

अतः उपलब्ध सम्पूर्ण आयगत लाभ 'पूंजी शोधन कोष' में हस्तान्तरित किए जा सकते हैं। धारा 80 की शर्त के अनुसार निर्गमन से प्राप्त नयी अंश पूंजी (50,00,000–10,50,000) रु. = 39,50,000 रु. होगी जिस पर 10% प्रीमियम अर्थात् 3,95,000 रु. मिलेगा जो शोधन पर देय प्रीमियम को अपलिखित करने के लिए पर्याप्त नहीं है। अतः हमारी मान्यता गलत है। ऐसी स्थिति में नए निर्गमन का निर्धारण अग्रलिखित समीकरण बनाकर किया जाएगा–

Redeemable Preference Shares Capital + Redemtion Premium	=	Existing Securities Premium	+	Existing divisible profit	+	Amount of new share capital to be issued	+	Amount of Securities Premium to be received

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

माना कि 100 रु. वाले x अंशों का निर्गमन करना है, अतः

50,00,000 रु. + 5,00,000 = 50,000 + 10,50,000 + 100x + 10% 100x

55,00,000 रु. = 11,00,000 + 110x

110x = 44,00,000

$x = \frac{44,00,000}{11}$ = 4,00,000 अंश

Verification :

	Rs.
Redemption Premium required	5,00,000
Less : Existing Securities Premium	50,000
	4,50,000
Less : New issue Securities Premium	4,00,000
To be met out of General Reserve	50,000
General Reserve	10,50,000
Less : Premium on Redemption	50,000
Profit for transfer to Capital Redemption Reserve	10,00,000
Redeemable Preference Share Capital	50,00,000
Less : Transfer to Capital Redemption Reserve	10,00,000
Face value of new Capital to be issued	40,00,000

Jouranal

					Dr.	Cr.
	Preference Share Capital	A/c	Dr.		50,00,000	
	Premium on Redemption of Preference Share	A/c	Dr.		5,00,000	
	To Preference Shareholders	A/c				55,00,000
	(Being amount due on Redemption of Preference Share at 10% Premium.)					
	Bank	A/c	Dr.		44,00,000	
	To Equity Share Application A/c					44,00,000
	(Being application received for 40,000 new Equity Share at par.)					
	Equity Share Application	A/c	Dr.		44,00,000	
	To Equity Share Capital	A/c				40,00,000
	To Securities Premium	A/c				4,00,000
	(Being share allotted.)					
	Securities Premium	A/c	Dr.		4,50,000	
	General Reserve	A/c	Dr.		50,000	
	To Premium on Redemption of Preference Share A/c					5,00,000
	(Being Premium on Redemption written off.)					
	General Reserve	A/c	Dr.		10,00,000	
	To Capital Redemption Reserve A/c					10,00,000
	(Being amount transferred according to u\s 80.)					
	Preference Shareholders	A/c	Dr.		55,00,000	
	To Bank	A\c				55,00,000
	(Payment Made)					

Illustration 6

राम लि. का 31 मार्च, 2009 को चिट्ठा निम्नलिखित है :

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

Balance Sheet qas on 31st March, 2009

Liabilities	Amount	Assets	Amount
Equity Share Capital (Rs 10)	40,00,000	Plant	23,00,000
Preference Share Capital (Rs. 10)	12,00,000	Furniture	8,00,000
Securties Premium	20,000	Investment	3,50,000
Profit & Loos Account	6,80,000	Stock	14,00,000
Creditors	6,00,000	Debtors	13,00,000
		Bank	3,50,000
	65,00,000		**65,00,000**

आपको निम्नलिखित अतिरिक्त सूचना उपलब्ध है–

(1) अधिमान अंश 1 अप्रैल, 2009 को 10% प्रीमियम पर शोधन किए जाते हैं।

(2) शोधन के लिए नकद राशि उपलब्ध कराने के लिए विनियोगों को 3,00,000 रु. में बेचा गया है।

(3) अधिमान अंशों के शोधन के पश्चात् 2,10,000 रु. का शेष लाभ–हानि खाते में आवश्यक है।

(4) शोधन के उद्देश्य से 10 रु. वाले ईक्विटी अंशों का 10% प्रीमियम पर न्यूनतम संख्या में निर्गमन किया जाता है।

जर्नल प्रविष्टियां दीजिए एवं शोधन के बाद चिट्ठा बनाइए।

(ICWA Modified)

Solution :

Calculation of Minimum Number of New Shares:

Nomonal valve of preference shares =Rs 12,00,000

Profit availble for redemption = 6,80,000 - 50,000 (loss on sale of investment) - 2,10,000 (Minimum balance required) = 4,20,000

Assume that profit available for redemption is not needed for paying premium on redemption then

Minimum proceeds =12,00,000 - 4,20,000 = Rs. 7,80,000

Minimum Proceeds = Nominal valve of shares (Fresh issue is at a premium)

Premium on fresh issue = 10% of Rs.7,80,000 = Rs.78,000

Securities premium = 20,000 (given in balance sheet) + 78,000 (on fresh issue)

= 98,000

premium on redemption = 10% of Rs. 12,00,000 = Rs. 1,20,000

As premium on redemption is more than securities premium, our assumption does not hold goods. Hence equation should be used to calculate minimum fresh issue of shares.

suppose, nominal valve of fresh issue = X

Preference Share Capital = Profit Available for Redemtion + Securities premium
+
Premium on Redemption + Fresh Issue + Premium on fresh issue

12,00,000 + 1,20,000 = 4,20,000 + 20,000 + X + X/10

X + X/10 = 8,80,000 X = 8,80,000 X 10/11 = Rs. 8,00,000

Minimum number of shares = 8,00,000 /10 = 80,000 shares.

Jouranal of Ram Ltd.

	Bank A/c Dr.		8,80,000	
	To Equity Share Application & Allot. A/c			8,80,000
	(Being application received for 80,000 new Equity Share @ Rs. 11.)			
	Equity Share Application & Allot. A/c Dr.		8,80,000	
	To Equity Share Capital A/c			8,00,000
	To Securities Premium A/c			80,000
	(Application tranfer to Equity Share Capital & Securities Premium A\c.)			

Cont.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

	Redeemable Preference Share Capital A/c Dr.		12,00,000	
	Premium on Redemption of P.S. A/c Dr.		1,20,000	
	To Preference Shareholders A/c			13,20,000
	(Being amount due on Redemption of 1,20,000 Preference Share of Rs. 10 at 10% Premium.)			
	Securities Premium A/c Dr.		1,00,000	
	Profit & Loss A/c Dr.		20,000	
	To Premium on Redemption of Pref. Share A/c			1,20,000
	(Being Premium on Redemption of Preference Share provided for.)			
	Bank A/c Dr.		3,00,000	
	Profit & Loss A/c Dr.		50,000	
	To Investment A\c			3,50,000
	(Sale of Investment costing Rs. 3,50,000 at a loss of Rs. 50,000)			
	Profit & Loss A/c Dr.		4,00,000	
	To Capital Redemption Reserve A/c			4,00,000
	(Amount transferred to Capital Redemption reserve A\c.)			
	Preference Shareholders A/c Dr.		13,20,000	
	To Bank			13,20,000
	(Payment Made)			

Balance Sheet (after Redemption)

Liabilities	Amount	Assets	Amount
Equity Share Capital (Rs 10)	48,00,000	Plant	23,00,000
Capital Redemption Reserve	4,00,000	Furniture	8,00,000
Creditors	6,00,000	Stock	14,00,000
Profit & Loos Account	2,10,000	Debtors	13,00,000
		Bank (3,50,000 + 8,80,000 + 3,00,000 - 13,20,000)	2,10,000
	60,10,000		**60,10,000**

Illustration 7

31 मार्च, 2009 को एक्स लि का चिट्ठा इस प्रकार है–

Balance Sheet

Liabilities	Amount	Assets	Amount
Share Capital		Fixed Assets	34,50,000
Equity Share Capital Rs. 50 fully paid	22,50,000	Investment	1,85,000
Preference Share Capital of Rs. 100 fully paid	6,50,000	Balance at Bank	3,10,000
	29,00,000		
Profit & Loos Account	4,80,000		
Creditors	5,65,000		
	39,45,000		39,45,000

अधिमान अंशों का 10 प्रतिशत प्रीमियम पर शोधन करने के लिए कम्पनी ने तय किया–

1 विनियोगों को 1,50,000 रु. में बेचना।

2 कम्पनी के कोषों से 1,20,000 रु. का बैंक शेष छोड़ कर शेष को काम में लेना।

3 शेष कोषों की व्यवस्था के लिए न्यूनतम संख्या में 50 रू वाले ईक्विटी अंशों का 10 रु. प्रति अंश प्रीमियम पर निर्गमन।

आपको आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां देनी है एवं शोधन के पश्चात् का चिट्ठा बनाना है।

(Bikaner Univ., 2008)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Jouranal of X Ltd.

	Particulars	L.F.	Dr.	Cr.
	Bank A/c Dr.		3,75,000	
	To Equity Share Application & Allot. A/c			3,75,000
	(Being application received for 6,250 new Equity Share @ Rs. 60.)			
	Equity Share Application & Allot. A/c Dr.		3,75,000	
	To Equity Share Capital A/c			3,12,500
	To Securities Premium A/c			62,500
	(Application transfer to Equity Share Capital & Securities Premium A\c.)			
	Redeemable Preference Share Capital A/c Dr.		6,50,000	
	Premium on Redemption of P.S. A/c Dr.		65,000	
	To Preference Shareholders A/c			7,15,000
	(Being amount due on Redemption of 6,500 Preference Share of Rs. 100 at 10% Premium.)			
	Securities Premium A/c Dr.		62,500	
	Profit & Loss A/c Dr.		2,500	
	To Premium on Redemption of Pref. Share A/c			65,000
	(Being Premium on Redemption of Preference Share provided for.)			
	Bank A/c Dr.		1,50,000	
	Profit & Loss A/c Dr.		35,000	
	To Investment A\c			1,85,000
	(Sale of Investment at loss of Rs. 35,000)			
	Profit & Loss A/c Dr.		3,37,500	
	To Capital Redemption Reserve A/c			3,37,500
	(Amount transferred to Capital Redemption reserve A\c.)			
	Preference Shareholders A/c Dr.		7,15,000	
	To Bank			7,15,000
	(Payment Made)			

Balance Sheet (after Redemption)

Liabilities	Amount	Assets	Amount
Share Capital		Fixed Assets	34,50,000
Equity Share Capital Rs. 50 fully paid	25,62,500	Balance at Bank (3,10,000 + 3,75,000 + 1,50,000 - 7,15,000)	1,20,000
Capital Redemption Reserve	3,37,500		
Profit & Loos Account (4,80,000 - 2,500 - 35,000 - 3,37,500)	1,05,000		
Creditors	5,65,000		
	35,70,000		35,70,000

Working Note :

Calculation of Number of Shares :

	Rs.
Amount payable on redemption	7,15,000
Less: Sale price of Investment	1,50,000
	5,65,000
Less: Available bank balance (3,10,000 - 1,20,000)	1,90,000
Funds from fresh issue	3,75,000

No of Shares = 3,75,000\60 = 6,250 shares

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

स्व परीक्षा प्रश्न (Self Exaination Questions)

अति लघुतरात्मक प्रश्न (Very Short Answer Type Question)

1. शोधनीय अधिमान अंशों के प्रीमियम पर शोधन सम्बन्धी जर्नल प्रविष्टि बताइए।
2. अधिमान अंशों के शोधन से आशय बताइए।
3. अधिमान अंशों के शोधन की विभिन्न रीतियों के नाम बताइए।

लघुरात्मक प्रश्न (Short Answer Type Quesation)

1 अधिमान अंशों का प्रीमियम पर शोधन के सम्बन्ध में काल्पनिक समंकों के आधार पर जर्नल प्रविष्टियां दीजिए।

2 अधिमान अंशों का समता अंशों में परिवर्तन द्वारा शोधन कब और कैसे किया जाता है? इस सम्बन्ध में जर्नल प्रविष्टियां दीजिए।

सैद्धान्तिक प्रश्न (Theoretical Quesations)

1. पूंजी शोधन संचय खता क्या है ? इसका निर्माण कैसे और क्यों किया जाता है? इसको किस उपयोग में लिया जा सकता है? आप इसे चिट्ठे में किस प्रकार दिखाएगे?
2. शोधनीय अधिमान अंशों का शोधन किन–किन विधियों द्वारा किया जा सकता है? प्रत्येक विधि के सम्बन्ध में काल्पनिक अंक लेते हुए, जर्नल प्रविष्टियां भी दीजिए। (M.D.S. Univ., 2009 & Bikaner Univ. B.Com., 2008)
3. शोधनीय अधिमान अंशों से आप क्या समझते है? ऐसे अंशों के शोधन सम्बन्धी कम्पनी अधिनियम, 1956 के प्रावधान बताइए। (M.D.S. Univ. B.Com., 1998)
4. शोधनीय अधिमान अंश क्या है? इन अंशों के शोधन सम्बन्धी वैद्यानिक प्रावधानों का उल्लेख कीजिए। (R.U.B.Com., 2008)

व्यावहारिक प्रश्न (Practical Quesations)

1. निम्नलिखित परिस्थितियों में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां दीजिए–

   1 एक कम्पनी ने 100 रु. मूल्य वाले 5,000 9 प्रतिशत अधिमान अंशों के लाभाशं के लिए उपलब्ध लाभों में से सम मूल्य पर शोधन किया।

   2 एक कम्पनी ने 100 रु. मूल्य वाले 5,000 9 प्रतिशत अधिमान अंशों का लाभांश के लिए उपलब्ध लाभों में से 10 प्रतिशत प्रीमियम पर शोधन किया।

   3 एक कम्पनी ने 10 रु. मूल्य वाले 50,000 ईक्विटी अंश सम मूल्य पर निर्गमित किए जिससे कि इस प्राप्त धन राशि का 100 रु. मूल्य के 5,000 9 प्रतिशत अधिमान अंशों के सम मूल्य पर शोधन करने में प्रयोग किया जा सके। नये अंशों का पूर्णतया अभिदान किया गया और समस्त राशि चुका दी गई।

   4 एक कम्पनी द्वारा 10 रु. वाले 50,000 ईक्विटी अंश सम मूल्य पर निर्गमित किए गए जिससे कि इस प्राप्त धन राशि का 100 रु. वाले 5,000 9 प्रतिशत अधिमान अंशों के 10 प्रतिशत पर शोधन के लिए प्रयोग किया जा सके। नये अंश पूर्ण रूप से क्रय कर लिए गए और राशि भी चुका दी गई।

   5 एक कम्पनी ने 10 रु. वाले 50,000 ईक्विटी अंश 10 प्रतिशत प्रीमियम पर निर्गमित किये जिससे कि इस प्राप्त धन राशि का 100 रु. वाले 5,000 9 प्रतिशत अधिमान अंशों के 10 प्रतिशत प्रीमियम पर शोधन के लिए प्रयोग किया जा सके। नये अंश पूर्ण रूप से क्रय कर लिए गए और पूर्ण राशि प्राप्त हो गई।

   6 एक कम्पनी ने 5 लाख रु. मूल्य के 9 प्रतिशत अधिमान अंशों का 10 प्रतिशत प्रीमियम पर शोधन करने का निश्चय किया था। इन अंशों के शोधन हेतु कम्पनी ने 10 रु. मूल्य वाले 20,000 ईक्विटी अंश 5 प्रतिशत प्रीमियम पर निर्गमित किए। लाभ–हानि खाते का शेष 12,30,000 रु. था।

   (M.D.S. Univ., 20009)

2. अशोक लिमिटेड के पास 50 रु. वाले अंशों की पूर्णतया मांगी गई एवं प्रदत 10 प्रतिशत शोध्य अधिमान अंश पूंजी 10,00,000 रु. की है। इन अंशों का कम्पनी 10 प्रतिशत प्रीमियम का शोधन करना चाहती है। खाता बही निम्नलिखित शेष दर्शाती है–

   लाभ–हानि खाता (क्रेडिट) 1,80,000 रु., प्रतिभूति प्रीमियम 40,000 रु.।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

अधिमान अंशों के शोधन के लिए संचालक 50 रु. वाले न्यूनतम ईक्विटी अंश 10 प्रतिशत प्रीमियम पर निर्गमित करना चाहते है। आपको संचालकों द्वारा किये जाने वाले ईक्विटी अंशों के नये निर्गमन की राशि ज्ञात करनी है तथा नये ईक्विटी अंशों के निर्गमन एवं अधिमान अंशों के शोधन के सम्बन्ध में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां देनी है।

Ans. 16,000 new shares will be issued.

3. 31 मार्च, 2007 को सजन लिमिटेड का स्थिति विवरण निम्नलिखित था–

Balance Sheet

Liabilities	Amount	Assets	Amount
Authorised Share Capital		Investments (Shares of Rs. 100 each)	1,00,000
1,00,000 Equity Share Capital Rs.10 each	10,00,000	Other Assets	11,85,000
10,000 Preference Share Capital of Rs. 100 each	10,00,000	Balance at Bank	2,00,000
	20,00,000		
Issued & Subscribed Share Capital			
50,000 Equity Share Capital Rs.10 each	5,00,000		
2,500 10% Redeemable Preference Shares 'A' of Rs. 100 each Rs. 2,50,000			
Less: Calls in arrears Rs. 2,500 (on 100 Shares)	2,47,500		
2,500 10% Redeemable Preference Shares 'B' of Rs. 100 each Rs. 75 paid-up	1,87,500		
12% Debentures	1,00,000		
Reserve & Surplus :			
General Reserve	1,35,000		
Capital Reserve	25,000		
Profit & Loos Account	50,000		
Securities Premium	15,000		
Dividends Equalisatuion Reserve	1,25,000		
Current Liabilities :			
Creditors	1,00,000		
	14,85,000		14,85,000

संचालकों ने दोनों श्रेणियों के पूर्वाधिकार अंशों का 5 प्रतिशत प्रब्याजि पर शोधन करने के लिए आवश्यक कार्यवाही करने का निर्णय किया। इस उद्देश्य के लिये

(i) 100 रु. वाले 1,000 9 प्रतिशत पूर्वाधिकार अंशों का 10 प्रतिशत बटे पर निर्गमन किया गया

(ii) 100 रु. वाले 1,000 12 प्रतिशत ऋणपत्र सम मूल्य पर निर्गमित किए गए।

(iii) विनियोग 105 रु. की दर से बेचे गये।

(iv) 1,00,000 रु. पुस्तक मूल्य का भवन जो कि 'अन्य सम्पतियों में' सम्मलित था 10,000 रु. की हानि उठाकर बेचा गया।

(v) लाभांश वितरण योग्य लाभ के शोधन के लिये पूर्ण प्रयोग करते हुए आवश्यकतानुसार पर अधिक नहीं ईक्विटी अंशों का निर्गमिन 10 प्रतिशत प्रीमियम पर किया गया।

(vi) 'ब' पूर्वाधिकारी अंशधारियों में से एक अंशधारी का जो 200 रुपये का धारक था, के पते की जानकारी न

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

होने से उससे मांगी गई मांग राशि प्राप्त न हो सकी तथा उसको शोधन राशि का भुगतान नहीं किया जा सका। शेष सभी का भुगतान कर दिया गया है। 'अ' पूर्वाधिकार अंशों की बकाया मांगें भी वसूल न हो सकी। आवश्यक जर्नल प्राविष्टियां कीजिए तथा अधिमान अंशों के शोधन पश्चात् का स्थिति विवरण बनाइए।

(J.N.V. Univ., Jodhpur, 2003)

Ans. Capital Redemption Reserve Rs. 3,05,000 Balance Sheet Total Rs. 13,59,500

4. सत्या लिमिटेड 31–3–2009 को अपने 100 रु. वाले 40,000 9 प्रतिशत अधिमान अंशों का शोधन सामान्य संचय से करना चाहती है। आवश्यक प्राविष्टियां दीजिए यदि शोधन (अ) सम मूल्य पर हो, (ब) 15 प्रतिशत प्रीमियम पर हो। (Bikaner Univ., 2009)

5. साक्षी लि. की निर्गमित अंश पूंजी में 20 रु. वाले 65,000 10 प्रतिशत शोध्य अधिमान अंश तथा 10 रु. वाले 4,50,000 समता अंश है। अधिमान अंश 1 अप्रैल, 2009 को शोधन के लिए देय है।

31 मार्च, 2007 को साक्षी लिमिटेड का स्थिति विवरण निम्नलिखित था–

Balance Sheet

Liabilities	Amount	Assets		Amount
Issued Share Capital		Plant & Machinnery		25,00,000
4,50,000 Equity Share Capital Rs.10		Furniture		9,20,000
each fully paid up	45,00,000	Stock in Trade		15,00,000
65,000 10% Redeemable Preference		SundryDebtors	21,00,000	
Shares of Rs. 20 fully paid up	13,00,000	Less : Provision	1,00,000	20,00,000
Reserve & Surplus :		Investment		3,50,000
Profit & Loos Account	9,20,000	Balance at Bank		6,00,000
Current Liabilities :				
Sundry Creditors	11,50,00			
	78,70,000			78,70,000

पूर्वाधिकार अंशों के शोधन के सम्बन्ध में यह निश्चय किया गया कि–

(i) विनियोग 3,00,000 रु. में बेचे गये।

(ii) लाभ–हानि खाते में 3,00,000 रु. का शेष छोड़कर शेष लाभों तक शोधन के लिए कम्पनी कोष में से वित्तीय व्यवस्था की जाये, तथा

(iii) शेष के लिए पर्याप्त मात्रा में 10 रु. वाले ईक्विटी अंश 2.50 रु. प्रति अंश के प्रीमियम पर निर्गमित किए जाए। यह मानते हुए कि सभी ईक्विटी अंश पूर्णतः प्रार्थित हुए तथा अंशों का शोधन हो गया है, आप कम्पनी की पुस्तकों में–

(i) आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिए, तथा

(ii) शोधन के बाद का चिट्ठा बनाइए।

(M.D.S. Univ., 20000)

Ans. Balance Sheet Total Rs. 74,32,500

6. कमल लिमिटेड की निर्गमित अंश पूंजी का एक भाग 100 रु. वाले 3,000 5 प्रतिशत शोधनीय अधिमान अंश में सम्मिलित है। अन्तर्नियमों के अनुसार अंशों का शोधन 5 प्रतिशत प्रीमियम पर होना है। कम्पनी के सामान्य संचय में 2,00,000 रुपये जमा है। संचालक इन अंशों के शोधन के लिए आधे संचय का उपयोग करना चाहते हैं तथा शेष की पूर्ति पर्याप्त मात्रा में 10 रु. वाले नये ईक्विटी अंशों के निर्गमिन द्वारा करना चाहते हैं। शोधन पर प्रीमियम की पूर्ति भी सामान्य संचय से करनी है।

उपर्युक्त सौदों के पूर्ण हो जाने पर आपको जर्नल तथा खातों में आवश्यक प्रविष्टियां देनी है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

अध्याय 3

ऋणपत्रों का निर्गमन एवं शोधन
(Issue and Redemption of Debentures)

विषय सूची (Contents)

3.0 ऋणपत्र

3.1 ऋणपत्रों की विशेषताएं

3.2 ऋणपत्रों के प्रकार

3.3 अंश व ऋणपत्र में अन्तर

3.4 ऋणपत्रों का निर्गमन

3.4.1 ऋणपत्रों का निर्गमन,

3.4.2 ऋणपत्रों का निर्गमन

3.4.3 ऋणपत्रों का निर्गमन

3.5 ऋणपत्रों का शोधन

3.5.1 शोधनीय ऋणपत्रों को कम्पनी के अंशों या नए ऋणपत्रों में परिवर्तित करके,

3.5.2 एक मुश्त नकद भुगतान द्वारा

3.5.2.1 पूंजी में से शोधन (शोधन कोष की व्यवस्था किए बिना एक–मुश्त भुगतान करना)

3.5.2.2 संचित लाभों में से शोधन (शोधन कोष (Sinking Fund) बनाकर एक मुश्त भुगतान के माध्यम से ऋणपत्रों का शोधन)

3.5.2.2a संचयी शोधन कोष

3.5.2.2b असंचयी कोष

3.5.2.3 बीमा पॉलिसी की सहायता से ऋणपत्रों के शोधन की व्यवस्था

3.5.3 वार्षिक किश्तों द्वारा नकद भुगतान द्वारा

3.5.4 खुले बाजार में क्रय द्वारा

3.6 ऋणपत्रों का ब्याज रहित तथा ब्याज सहित उद्दरण

स्व परीक्षा प्रश्न (Self Examination Questions)

ऋणपत्र (Debentures)

जब कम्पनी दीर्घकालीन ऋण लेना चाहती है तो कम्पनी ऋणपत्र अथवा ऋणपत्र स्टॉक निर्गमित करती है। भारतीय कम्पनी अधिनियम की धारा 2(12) के अनुसार "ऋणपत्र से आशय ऋणपत्र, ऋणपत्र स्टॉक, बॉण्ड या किसी अन्य प्रतिभूति से है जो कम्पनी की सम्पत्तियों पर प्रभार उत्पन्न कर भी सकती है और नहीं भी।" न्यायाधीश चिट्टी के अनुसार "यह एक प्रलेख है जो या तो ऋण का निर्माण करता है अथवा ऋण की स्वीकृति देता है।"

संक्षेप में 'ऋणपत्र' एक ऐसा प्रपत्र है जो किसी ऋण की प्राप्ति की स्वीकृति है तथा जो कम्पनी की सार्वमुद्रा (Common Seal) के अधीन निर्गमित किया जाता है और इसमें ऋण सम्बन्धी सभी शर्तों का उल्लेख होता है। जैसे ऋण पर ब्याज, प्रभार, ऋण की वापसी आदि।

ऋणपत्रों की विशेषताएं (Characteristics of Debentures)

1. प्रत्येक ऋणपत्र का अंकित मूल्य एवं ब्याज दर पूर्व निर्धारित होते हैं।
2. ऋणपत्रों का निर्गमन कम्पनी की सार्वमुद्रा के अन्तगर्त होता है।
3. ऋणपत्रधारियों को कम्पनी की सभा में मतदान का अधिकार नहीं होता है।
4. सामान्यतः ऋणपत्र कम्पनी की सम्पत्तियों से चल प्रभार द्वारा सुरक्षित होते हैं।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

5. निश्चित समय पश्चात् ऋणपत्रों का भुगतान कर दिया जाता है, जिसे शोधन कहते हैं।

ऋणपत्रों के प्रकार (Types of Debentures)

1. पंजीकृत ऋणपत्र (Registered Debentures) – कम्पनी के ऋणपत्रधारियों के रजिस्टर में जिन ऋणपत्रधारियों के नाम लिखे होते हैं।
2. वाहक ऋणपत्र (Bearer Debentures) – जिस व्यक्ति के पास ऐसे ऋणपत्र होते हैं, वे ही इनके मालिक होते हैं। ब्याज के भुगतान हेतु कम्पनी निर्गमन के समय ही चेक प्रदान कर देती है। देय तिथि पर धारक बैंक से ब्याज प्राप्त कर लेते हैं।
3. शोधनीय ऋणपत्र (Redeemable Debenture) – शोधनीय ऋणपत्र को एक निश्चित अवधि के बाद भुगतान किया जाता है।
4. अशोधनीय ऋणपत्र (Irredeemable Debentures) – ऐसे ऋणपत्र जिनका भुगतान कम्पनी के जीवनकाल में नहीं किया जाएगा।
5. परिवर्तनीय ऋणपत्र (Convertible Debentures) – ऐसे ऋणपत्र जिनको एक निश्चित अवधि के पश्चात् अंशों या नये ऋणपत्रों में बदल दिया जाता है, परिवर्तनीय ऋणपत्र कहलाते हैं। कम्पनी अधिनियम के अनुसार निर्गमन की तिथि से 36 माह के भीतर इनका परिवर्तन हो जाना चाहिए।
6. अपरिवर्तनीय ऋणपत्र (Non-Convertible Debentures) – ऐसे ऋणपत्र जिनका किसी भी प्रतिभूति में परिवर्तन नहीं किया जाता है, अपरिवर्तनीय ऋणपत्र कहलाते हैं।
7. सुरक्षित ऋणपत्र (Secured Debentures) – जो कम्पनी की सम्पत्ति पर प्रभार उत्पन्न करे, बन्धक ऋणपत्र कहलाते हैं। ऋणपत्र प्रायः प्रभार सहित निर्गमित किए जाते हैं।
8. असुरक्षित ऋणपत्र (Unsecured Debentures) – ऐसे ऋणपत्र जिन पर कोई भी सम्पत्ति गिरवी नहीं रखी हो को असुरक्षित ऋणपत्र कहते हैं।
9. प्रथम ऋणपत्र (First Debentures) – ऐसे ऋणपत्र जिनका भुगतान अन्य ऋणपत्रों की अपेक्षा प्राथमिकता के आधार पर प्रथम किया जाता है।
10. द्वितीय ऋणपत्र (Second Debentures) – जिन ऋणपत्रों का भुगतान प्रथम ऋणपत्रों के भुगतान के बाद किया जाता है, उन्हें द्वितीय ऋणपत्र कहते हैं।

अंश और ऋणपत्र में अन्तर (Difference between Share and Debenture)

अंश और ऋणपत्र में निम्नलिखित अन्तर होते हैं :–

क्र.सं.	अन्तर का आधार	अंश	ऋणपत्र
1.	पूंजी अथवा ऋण	अंश कम्पनी की पूंजी का एक हिस्सा है।	ऋणपत्र ऋण की स्वीकृति है।
2.	धारक सम्बोधन	अंश धारक अंशधारी कहलाते हैं।	ऋणपत्र के धारक ऋणपत्रधारी कहलाते हैं।
3.	स्वामित्व	कम्पनी के स्वामी होते हैं।	ऋणदाता होते हैं।
4.	लाभांश व ब्याज	लाभ की स्थिति में ही लाभांश दिया जाता है।	चाहे लाभ हो या हानि पूर्व में निर्धारित दर से ब्याज दिया जाएगा।
5.	समापन पर भुगतान	ऋणपत्रों के भुगतान के बाद बचता है तो ही किया जाता है।	अंशधारियों से पूर्व में किया जाता है।

ऋणपत्रों का निर्गमन (Issue of Debentures)

1. ऋणपत्र निर्गमन का अधिकार होना– कम्पनी के अन्तर्नियमों में ऋणपत्र निर्गमन का अधिकार होना चाहिए। यदि ऐसा नहीं है, तो साधारण सभा में विशेष प्रस्ताव पारित करके यह अधिकार प्राप्त कर लेना चाहिए।
2. बट्टे या प्रीमियम पर निर्गमन– कम्पनी अधिनियम के अनुसार ऋणपत्रों के निर्गमन पर बट्टे व प्रीमियम पर कोई प्रतिबन्ध नहीं है, यदि निर्गमन बट्टे पर किया जाता है तो बट्टा एक पूंजीगत हानि होगा, जिसे कम्पनी अपने जीवनकाल में कभी भी पूंजीगत लाभ या पूंजीगत हानि से अपलिखित कर सकती है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

3. रेटिंग संस्था की अनुमति लेना– यदि कम्पनी 1.5 वर्ष पश्चात् ऋणपत्रों का निर्गमन कर रही तो कम्पनी को किसी रेटिंग संस्था से अनुमति लेनी होगी।

ऋणपत्रों के लिए लेखा सम्बन्धी प्रविष्टियां ठीक उसी प्रकार से की जाएगी जिस प्रकार अंशों के सम्बन्ध में की जाती है। केवल 'share' के स्थान पर 'debentures' शब्द का प्रयोग किया जाएगा।

Illustration 1

जयन्त लि. ने अभिदान के लिए 50 रु. वाले 10,000 ऋणपत्र निर्गमित किए। जो इस प्रकार देय थे– 15 रु. आवेदन पर, 20 रु. बंटन पर, 10 रु. पर प्रथम मांग पर और 5 रु. द्वितीय मांग पर। 15,000 ऋणपत्रों को खरीदने के लिए आवेदन–पत्र प्राप्त हुए। प्रार्थियों को ऋणपत्र यथानुपात बंटित कर दिए गए।

एक व्यक्ति ने जिसके पास 200 अंश थे, बंटन के समय देय राशि का भुगतान नहीं किया। उसने बंटन पर देय राशि का प्रथम मांग के साथ भुगतान कर दिया। दूसरे व्यक्ति ने जिसके पास 500 ऋणपत्र थे बंटन राशि के साथ ही भविष्य की मांगों का भी भुगतान कर दिया। कम्पनी की पुस्तकों में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां दीजिए।

Solution

Journal of Jayant Ltd.

Date	Particulars	L.F.	Amount Dr.	Amount Cr.
Date of Re-ceipt	Bank A\c Dr. To Debenture Application A\c (Cash received for the purchases of 15,000 debentures.)		2,25,000	 2,25,000
Date of allot-ment	Debenture Application A\c Dr. To Debentures A\c (10,000 Debentures application money transferred to debentures A\c.)		1,50,000	 1,50,000
Date of allot-ment	Debenture Allotment A\c Dr. To Debentures A\c (10,000 Debentures Allotment due.)		2,00,000	 2,00,000
Date of allot-ment	Debenture Application A\c Dr. To Debenture Allotment A\c (Excess amount transferred to Debenture Allotment A\c.)		75,000	 75,000
Date of Re-ceipt	Bank A\c Dr. To Debenture Allotment A\c To Debenture Calls received in advance A\c (Allotment money and calls in advance received.)		1,30,000	 1,22,500 7,500
Date of Call	Debenture Share First Call A\c Dr. To Debentures A\c (Debenture First due on 10,000 shares @ Rs. 15 per Debenture.)		1,00,000	 1,00,000
Date of Call	Debenture Calls received in Advance A\c Dr. To Debentures First Call A\c (Debenture call received in advance adjusted.)		5,000	 5,000
Date of Re-ceipt	Bank A\c Dr. To Debenture Allotment A\c To Debenture First Call A\c (Amount received on first call and arrear of allotment on 200 debentures.)		97,500	 2,500 95,000
Date of Call	Debenture final Call A\c Dr. To Debentures A\c (Debenture final due on 10,000 Debentures @ Rs. 5 each.)		50,000	 50,000

Cont.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Date of Call	Debenture Calls received in Advance A\c Dr. To Debentures Final Call A\c (Debenture call received in advance adjusted.)		2,500	2,500
Date of Re-ceipt	Bank A\c Dr. To Debenture Final Call A\c (Amount received on final call.)		47,500	47,500

ऋणपत्रों का नकद के अतिरिक्त अन्य प्रतिफल के लिए निर्गमन

(Issue of debentures for consideration other than cash)

जब कोई कम्पनी कोई सम्पत्ति क्रय करती है या कोई व्यवसाय क्रय करती है तो विक्रेता को भुगतान नकद में न करके ऋणपत्र जारी कर देती है तो ऐसा निर्गमन रोकड़ के अतिरिक्त अन्य प्रतिफल के लिए निर्गमन कहलाता है। इस सम्बन्ध में निम्नलिखित प्रविष्टियां की जायेगी–

(i) सम्पत्ति क्रय करने पर

Assets A\c Dr.
    To Vendor's A\c
(Assets Purchased)

(ii) व्यापार क्रय करने पर

Sundry Assets A\c Dr.
    To Sundry Liabilities
    To Vendor's A\c
(Business Purchased)

(iii) विक्रेता को भुगतान करने पर

Vendor's A\c Dr.
    To Debentures A\c
(Debentures issued)

Illustration 2

जयन्त लि. ने पूजा लि. से एक मशीन 1,00,000 रु. में क्रय की। जयन्त लि. ने इसका भुगतान 40 रु. वाले 10% ऋणपत्रों के निर्गमित द्वारा किए जो 25% प्रीमियम पर निर्गमित किए गए। कम्पनी की पुस्तकों में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां दीजिए।

Solution

Journal of Jayant Ltd.

Date of Pur-chases	Machinery A\c Dr. To Pooja Ltd. A\c (Assets Purchased)		1,00,000	1,00,000
Date of pay-ment	Pooja Ltd. A\c Dr. To 10% Debentures A\c To Securities Premium A\c (Debentures issued)		1,00,000	80,000 20,000

Note : No. of debentures issued is 1,00,000\ 50 (40 + 25% Premium) = 2,000

समपार्श्विक प्रतिभूति के रूप में निर्गमन (Issue of Debentures as Collateral Security)

जब किसी कम्पनी द्वारा ऋण लेने के लिए प्रतिभूतियों के साथ अपने ऋणपत्रों को जमानत के रूप में जमा कराती है तो एसे ऋणपत्र समपार्श्विक प्रतिभूति (Collated Security) कहलाते हैं। कम्पनी समपार्श्विक प्रतिभूतियों के रूप में रखे

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

गए ऋणपत्रों पर ब्याज का भुगतान नहीं करती है, केवल ऋण की राशि पर शर्तों के अनुसार ब्याज का भुगतान करती है। समपार्श्विक प्रतिभूतियों के रूप में ऋणपत्रों को रखने पर लेखा पुस्तकों में दो विधियों से प्रविष्टियां की जा सकती है :–

प्रथम विधि– ऋणपत्रों के समपार्श्विक प्रतिभूति के रूप में निर्गमन के सम्बन्ध में कोई लेखा नहीं किया जाए, केवल कम्पनी द्वारा चिट्ठे के दायित्व पक्ष में ऋण के साथ टिप्पणी के रुप में ऋणपत्रों का उल्लेख किया जाएगा। केवल ऋण लेने की प्रविष्टि की जाएगी।

Balance Sheet (Lialities side)

Secured Loan

Loan From Bank ....

(Collaterally Secured by the issue of Rs…… Debentures)

द्वितीय विधि– ऋणपत्रों के समपार्श्विक प्रतिभूति के रूप में निर्गमन के सम्बन्ध में जर्नल लेखा किया जाए। इस दशा में निम्नलिखित प्रविष्टि की जाएगी–

1. ऋणपत्रों को प्रतिभूतियों के रूप में जमा कराने पर–

Debenture Suspense A\c Dr. (ऋणपत्रों के अंकित मूल्य से)

To Debenture

(...Debentures of Rs. ... each issued as Collaterally Security againtst a loan of Rs....)

2. ऋणपत्रों का भुगतान हो जाने पर–

Debenture A\c Dr.

To Debenture Suspense

(...Debentures issued as Collaterally Security withdrawn)

Debenture Suspense A\c सम्पत्ति पक्ष में विविध व्यय (Miscellaneous Expenditure) शीर्षक में प्रदर्शित होगा तथा Debentures A\c के दायित्व पक्ष में दिखाया जाएगा।

ऋणपत्रों पर ब्याज (Interst on Debentures)

कम्पनी द्वारा सामान्यतः 6 माह के अन्तर से ब्याज का भुगतान किया जाता है। ब्याज की दर ऋणपत्रों के साथ ही वर्णित होती है। ब्याज ऋणपत्रों के अंकित मूल्य पर ही दिया जाता है। ब्याज की राशि लाभ–हानि खाते में डेबिट की जाएगी। ब्याज का भुगतान देय तिथि को पंजीकृत स्वामी को ही होगा। ब्याज का भुगतान करने से पूर्व आयकर अधिनियम के प्रावधानों के अनुसार आयकर की राशि काटकर सरकार को ही जमा करानी होती है। ऐसी काटी गई राशि को "उद्‌गम स्थान पर कर की कटौती" (Tax deduct at source) कहते हैं। ऋणपत्रों पर ब्याज की प्रविष्टि निम्नलिखित होगी–

1. ब्याज के देय होने पर

Debentures Interst A\c Dr.

To Debentureholders A\c (शुद्व राशि)

To Tax deducted at source A\c (आयकर)

(Debentures Interst due and income tax deducted therefrom at source.)

2. ब्याज का भुगतान करने पर

Debentureholders A\c Dr.

To Bank

(Debentures Interest paid)

3. यदि लेखा वर्ष के अन्त में ब्याज बकाया हो –

Interest on Deb. A\c Dr.

To outstanding interest on Deb.

4. लेखा वर्ष के अन्त में ब्याज राशि की लाभ–हानि खाते में हस्तान्तरित करने पर

Jain Vishwa Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Profit & Loss A\c Dr.

To Interest on Deb.

(Interst transferred to Profit & Loss a\c.)

5. उद्‌गम स्थान पर आयकर की कटौती को सरकारी कोष में जमा कराने पर–

Tax deducted at source A\c Dr. (सकल ब्याज)

To Bank

(Amount of Tax deposited.)

टिप्पणी– यदि आयकर की कटौती न की जाए तो उपर्युक्त 5वीं प्रविष्टि नहीं की जाएगी और प्रथम और द्वितीय प्रविष्टियों के स्थान पर निम्नलिखित प्रविष्टि की जाएगी–

Debentures Interest A\c Dr.

To Bank

(Debentures Interest paid)

Illustration 3

1 जनवरी, 2009 को दीपक लि. ने 100 रु. वाले, 2 लाख रु. के 10% ऋणपत्र निर्गमित किए–

(i) 500 ऋणपत्र, 20% प्रीमियम पर नकद में,

(ii) 750 ऋणपत्र, एक विक्रेता को, जिसने 70,000 रु. की भूमि एवं भवन बेचा था,

(iii) 650 ऋणपत्र, बैंक को 50,000 रु. के ऋण के लिए समपार्श्विक प्रतिभूति के रूप में।

ऋणपत्रों पर ब्याज प्रत्येक वर्ष 30 जून व 31 दिसम्बर को देय है तथा बैंक ऋण पर ब्याज 12% वार्षिक दर से प्रतिवर्ष 31 दिसम्बर को देय है। उपर्युक्त व्यवहारों के लिए कम्पनी की पुस्तकों में 2009 के लिए आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां दीजिए तथा कम्पनी के चिट्ठे में इस बैंक ऋण को दिखाइये, यदि समपार्श्विक प्रतिभूतियों के रूप में ऋणपत्रों के जमा कराने सम्बन्धी आवश्यक प्रविष्टियां कम्पनी की पुस्तकों में नहीं की गई हों।

Solution

Journal of Deepak Ltd.

2009 Jan. 1	Bank	A\c	Dr.		72,000	
	To Debenture Application	A\c				72,000
	(Cash received for the purchases of 600 debentures @ Rs. 120.)					
	Debenture Application	A\c	Dr.		72,000	
	To 10% Debenture	A\c				60,000
	To Securities Premium	A\c				12,000
	(10,000 Debenture application Money transfered to Debenture A\c.)					
	Land & Building	A\c	Dr.		70,000	
	To Vendors	A\c				70,000
	(Land & Building Purchases.)					
	Vendors	A\c	Dr.		70,000	
	Discount on issue of Debenture	A\c	Dr.		5,000	
	To 10% Debenture	A\c				75,000
	(Being 750 debentures issued to vendor of Land & Building.)					
	Bank	A\c	Dr.		50,000	
	To Bank Loan	A\c				50,000
	(Borrowed Rs. 50,000 from the Bank and deposited debentures of the nominal value of Rs. 65,000 as collateral security.)					
2009 June, 30	Debentures Interest	A\c	Dr.		6,750	
	To Bank A\c					6,750
	(Debentures Interest paid for 6 months.)					

Cont.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Debentures Interest A\c Dr.		6,750	
To Bank A\c			6,750
(Debentures Interest paid for 6 months.)			
Interst on Bank Loan A\c Dr.		6,000	
To Bank A\c			6,000
(Interest @12% p.a. paid on Bank Loan of Rs. 50,000.)			
Profit & Loss A\c Dr.		19,500	
To Debentures Interest A\c			13,500
To Interst on Bank Loan A\c			6,000
(Interest transferred to Profit & Loss a\c.)			

Balance Sheet as at 31st December, 2009

Liabilities		Rs.	Assets	Rs.
Securities Premium	12,000		Land & Building	70,000
Less : Discount on issue of Deb.	5,000	7,000	Bank	1,02,500
10% Debentures of Rs. 100			Profit & Loss A\c	19,500
600 Issued in cash		60,000		
750 Issued to vendor of Land & Build.		75,000		
Bank Loan (Collaterally Secured by the issue of Rs.65,000 Debentures.)		50,000		
		1,92,000		1,92,000

शोधन की शर्तों के आधार पर ऋणपत्रों का निर्गमन

(Issue of Debentures according to the Condition of Redemption) -

सामान्यतः कम्पनी निर्गमन के समय ही शोधन की स्थिति बताती है। यदि कम्पनी शोधन प्रीमियम पर करती है तो प्रीमियम पूंजीगत हानि है जिसकी जानकारी कम्पनी को निर्गमन के समय ही है। अनुदारवादी (Conservtion) विचारधारा के अनुसार निश्चित भावी हानि के लिए तत्काल प्रावधान कर लेना चाहिए। ऐसी परिस्थिति में ऋणपत्रों के निर्गमन पर निम्नलिखित प्रविष्टि होगी–

1. सममूल्य पर निर्गमन और सममूल्य पर शोधन (Issued at Par and Redeemale at Par)

(a) आवेदन प्राप्त होने पर

Bank A\c Dr. (सममूल्य पर)

To Debenture Application A\c

(Being application money received)

(b) आबंटन पर

Debentures Application A\c Dr.

To Debentures

(Being Debentures Allotted)

2. सममूल्य पर निर्गमन और शोधन प्रीमियम पर (Issued at Par and Redeemale at Premium)

(a) आवेदन पत्र प्राप्त होने पर

Bank A\c Dr. (सममूल्य पर)

To Debentures Application A\c

(Being application money received)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(b) ऋणपत्रों आंबटन पर

Debentures Application A\c Dr. (प्राप्त राशि से)

Loss on issue of Debentures A\c Dr. (शोधन पर देय प्रीमियम से)

To Debentures A\c (सममूल्य पर)

To Premium on redemption of Deb. (शोधन पर देय प्रीमियम)

(Being Debentures Allotted and Provided for premium.)

3. सममूल्य पर निर्गमन और शोधन बट्टे पर (Issued at Par and Redeemale on discount)

शोधन पर बट्टा भविष्य के लाभ है, जो अभी तक प्राप्त नहीं हुआ है। इसलिए इस लाभ के लिए कोई प्रविष्टि नहीं होगी केवल ऋणपत्रों को जारी करने की सामान्य प्रविष्टि की जाएगी। इस प्रकार का शोधन भी लोकप्रिय नहीं है।

4. निर्गमन प्रीमियम पर व शोधन सममूल्य पर (issued at Premium and Redeemale at Par)

Bank A\c Dr.

To Debenture A\c

To Premium on issue of Debenture

5. निर्गमन प्रीमियम पर व शोधन प्रीमियम (issued at Premium and redeemable of premium) –

(a) आवेदन पत्र प्राप्त होने पर

Bank A\c Dr.

To Debenture Application

(Being application money received)

(b) आबंटन पर

Debenture Application A\c Dr. (प्राप्त राशि से)

Loss on issue of Deb. A\c Dr (शोधन पर देय प्रीमियम से)

To Debentures A\c (सममूल्य से)

To Securites Premium A\c (आबंटन पर प्राप्त राशि से)

To Premium on Redemption of Deb. A\c (शोधन पर देय प्रीमियम)

(Being Debentures Allotted and Provided for premium Redemption.)

6. निर्गमन बट्टे पर शोधन सममूल्य पर (Issued at Discount and Redeemable at par)

Bank A\c Dr

Discount on issue of Deb A\c Dr.

To Debentures A\c

7. निर्गमन बट्टे पर व शोधन प्रीमियम पर (Issued at Discount and redeemable Premium)

(a) आवेदन पत्र प्राप्त होने पर

Bank A\c Dr.

To Premium on Redemption od Deb A\c

(Being application money received)

(b) आबंटन पर

Debenture Application A\c Dr. (प्राप्त राशि से)

Discount on issue of Deb A\c Dr. (बट्टे की राशि से)

Loss on issue of Deb A\c Dr (शोधन पर देय प्रीमियम से)

To Debentures A\c (सममूल्य से)

To Premiums on Redemption on Deb A\c (शोधन पर देय प्रीमीयम)

(Being Debentures Allotted at discount and Provided for premium Redemption.)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Illustration 4

ऋणपत्रों के निर्गमिन और शोधन की निन्नलिखित परिस्थितियों में आप क्या जर्नल प्राविष्टियां करेगें–

(a) 5,000 10% Debentures of Rs 50 each issued at par and redeemable at per

(b) 5,000 10% Debentures or Rs 100 each issued at Rs 98 and redeemabled at per

(c) 5,000 10% Debentures of Rs 100 each issued at par and redeemable at Rs 102

(d) 5,000 10% Debentures of Rs 100 each issued at Rs 98 and redeemable at Rs 102

(e)5,000 10% Debentures of Rs 100 each issued at RS110 and redeemable at par

(f) 5,000 10% Debentures of Rs 100 each issued at Rs 100 and redeemable at Rs. 95

Solution (a) **Journal**

Date of Re-ceipt	Bank A\c Dr. To 10% Debenture Application & Allotment A\c (Being application money received)		2,50,000	2,50,000
Date of Allot-ment	10% Debentures Application & Allotment A\c Dr. To 10% Debentures A\c (Being Debentures Allotted)		2,50,000	2,50,000
Date of Pay-ment	10% Debentures Application & Allotment A\c Dr. To Bank A\c (Debentures redeemed at par.)		2,50,000	2,50,000

(b) **Journal**

Date of Re-ceipt	Bank A\c Dr. To 10% Debentures Application & Allotment A\c (Being application money received)		4,90,000	4,90,000
Date of Allot-ment	10% Debentures Application & Allotment A\c Dr. Discount on issue of Debentures A\c Dr. To 10% Debentures A\c (Being Debentures Allotted and transfer to 10% Debenture A\c.)		4,90,000 10,000	 5,00,000
Date of Pay-ment	10% Debentures A\c Dr. To Bank A\c (Debentures redeemed at par.)		5,00,000	5,00,000

(c) **Journal**

Date of Re-ceipt	Bank A\c Dr. To 10% Debenture Application & Allotment A\c (Being application money received)		5,00,000	5,00,000
Date of Allot-ment	10% Debentures Application & Allotment A\c Dr. Loss on issue of Deb. A\c Dr. To 10% Debentures A\c To Premium on issue of Debenture A\c (Being Debentures Allotted)		5,10,000 10,000	 5,00,000 10,000
Date of Pay-ment	10% Debentures A\c Dr. Premium on Redemption of Debenture A\c Dr. To Bank A\c (Debentures redeemed at Premium.)		5,00,000 10,000	 5,10,000

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(d) Journal

Date of Re-ceipt	Bank A\c Dr.		4,90,000	
	To 10% Debenture Application & Allotment A\c			4,90,000
	(Being application money received)			
Date of Allot-ment	10% Debentures Application & Allotment A\c Dr.		4,90,000	
	Loss on issue of Deb. A\c Dr.		20,000	
	To 10% Debentures A\c			5,00,000
	To Premium on issue of Debenture A\c			10,000
Date of Pay-ment	(Being Debentures Allotted)			
	10% Debentures A\c Dr.		5,00,000	
	Premium on Redemption of Debenture A\c Dr.		10,000	
	To Bank A\c			5,10,000
	(Debentures redeemed at par.)			

(d) Journal

Date of Re-ceipt	Bank A\c Dr.		5,10,000	
	To 10% Debenture Application & Allotment A\c			5,10,000
	(Being application money received)			
Date of Allot-ment	10% Debentures Application & Allotment A\c Dr.		5,10,000	
	To 10% Debentures A\c			5,00,000
	To Securities Premium A\c			10,000
	(Application money transfered to Debentures A\c			
Date of Pay-ment	and premium on Issue of Debenture A\c.)			
	10% Debentures A\c Dr.		5,00,000	
	To Bank A\c			5,00,000
	(Debentures redeemed at a premium of 5%.)			

(e) Journal

Date of Re-ceipt	Bank A\c Dr.		5,00,000	
	To 10% Debenture Application & Allotment A\c			5,00,000
	(Application money received on 1,000 debenture @ Rs.110 each)			
Date of Allot-ment	10% Debentures Application & Allotment A\c Dr.		5,00,000	
	To 10% Debentures A\c			5,00,000
	(Application money transferred to Debentures A\c on Allotted.)			
Date of Pay-ment	10% Debentures A\c Dr.		5,00,000	
	To Bank A\c			4,90,000
	To Profit on Redemption of debentures A\c			10,000
	(Debentures redeemed at a 5% Discount.)			

ऋणपत्र निर्गमन पर बट्टा एवं शोधन पर देय प्रीमियम का अपलेखन
(Writing off Discount on Isssue and Redemption of Debentures)

ऋणपत्रों के निर्गमन पर दिया गया बट्टा एवं शोधन पर देय प्रीमियम की हानि का अपलेखन कम्पनी ऋणपत्र शोधन की तिथि के दौरान कभी भी कर सकती है। ऐसी हानियों को पूंजीगत लाभों और आयगत लाभों से अपलिखित किया जा सकता है।

ऋणपत्रों का शोधन (Redemption of Debentures)

जब कम्पनी द्वारा ऋणपत्रधारियों को भुगतान किया जाता है तो इसे 'ऋणपत्रों का शोधन' कहते हैं। ऋणपत्रों के निर्गमन के समय ही शोधन सम्बन्धी शर्तों का उल्लेख होता है। ऋणपत्रों के शोधन पर होने वाला लाभ या हानि पूंजीगत होता है। ऋणपत्रों का शोधन निम्नलिखित प्रकार से किया जा सकता है –

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

1. शोधनीय ऋणपत्रों को कम्पनी के अंशों या नए ऋणपत्रों में परिवर्तित करके,
2 एक मुश्त नकद भुगतान द्वारा
    2.1 पूंजी में से शोधन (शोधन कोष की व्यवस्था किए बिना एक–मुश्त भुगतान करना)
    2.2 संचित लाभों में से शोधन (शोधन कोष (Sinking Fund) बनाकर एक मुश्त भुगतान के माध्यम से ऋणपत्रों का शोधन)
        2.2a संचयी शोधन कोष
        2.2b असंचयी कोष
    2.3 बीमा पॉलिसी की सहायता से ऋणपत्रों के शोधन की व्यवस्था
3 वार्षिक किश्तों द्वारा नकद भुगतान द्वारा
4 खुले बाजार में क्रय द्वारा

1. शोधनीय ऋणपत्रों को कम्पनी के अंशों या नए ऋणपत्रों में परिवर्तित करके
(Redemption of Redeeamble Debentures by Converting them into shares and new debentures)

कम्पनी को पूर्व निर्धारित तिथि पर ऋणपत्रों का शोधन आवश्यक होता है। जब कभी कम्पनी के पास पर्याप्त तरल साधन (Liquid Resources) न हो तो वह ऋणपत्रधारियों को अपने ऋणपत्रों के बदले कम्पनी के अंश या ऋणपत्र लेने का विकल्प देती है। नए अंश या ऋणपत्र सममूल्य या प्रीमियम या बट्टे पर निर्गमित किए जा सकते हैं। जो ऋणपत्रधारी इस सुविधा का लाभ न लेना चाहे उनको नकद में भुगतान कर दिया जाता है।

ऐसे ऋणपत्र, जिन्हें पहले बट्टे पर निर्गमित किया गया था, का अब अंशों में परिवर्तन किया जा रहा है तो निर्गमन के समय प्राप्त वास्तविक राशि को ही अंशों की संख्या ज्ञात करने में प्रयुक्त किया जाना चाहिए अन्यथा यह निर्गमन अंशों का बट्टे पर निर्गमन माना जाएगा जिसे धारा 79 के प्रावधानों का उल्लंघन माना जाएगा। प्रविष्टियां इस प्रकार होगी–

Debenture A\c Dr.
    To Debentureholders A\c
(Transfer of the balance of debenture A\c to
Debentureholders A\c on conversion)

सममूल्य पर (at per)

Denentureholder A\c Dr.
    To Share Capital A\c
        or
    To New Debeture A\c
        or
    To Bank A\c
(Debentureholders Converted and paid off at par.)

प्रीमियम पर (at Premium)

Debentureholder A\c Dr.
    To Securites Premium A\c
    To Share Capital A\c
        or
    To New Debentures
(Debentures Convested into Share and New debenture at Premium)

बट्टे पर (at Discount)

Debentureholder A\c Dr.
Discount on issue of Share A\c Dr.
Discount on issue of Debentures Dr.
    To Share Capital A\c

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

or

To New Debentures a\c

(Debentures Converted into share and debentures at discount)

Illustration 5

31 दिसम्बर, 2006 को एक कम्पनी के 5,00,000 के 100 रु. वाले 7% ऋणपत्र अदत्त थे जिनको कि 31 मार्च, 2007 को 5% प्रीमियम पर शोधन किया जाना है। 1 जनवरी, 2007 को यह निर्णय लिया गया कि ऋणपत्रधारियों को अग्रलिखित विकल्प दिए जाए :–

(1) कि वे अपने ऋणपत्रों को 100 रु. वाले 9% अधिमान अंशों में सममूल्य पर परिवर्तित करा लें,

(2) कि वे अपने ऋणपत्रों को 100 रु. वाले 7.5% ऋणपत्रों में 94.50 रु. की दर पर परिवर्तित करा लें, अथवा

(3) नकद राशि प्राप्त कर लें।

31 मार्च, 2007 तक 2,000 ऋणपत्रों के 9% अधिमान अंश लेने का निश्चय किया। 1,800 ऋणपत्रों के धारकों ने नए 7.5% ऋणपत्र क्रय खरीदने का विकल्प दिया तथा शेष ऋणपत्रधारियों को नकद भुगतान कर दिया गया। ज्ञात कीजिए :

(i) निर्गमित अधिमान अंशों का अंकित मूल्य,

(ii) निर्गमित 7.5% ऋणपत्रों का अंकित मूल्य तथा उनके निर्गमन पर बट्टे की राशि,

(iii) ऋणपत्रधारियों को नकद भुगतान कीजिए। आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां दीजिए।

(Univ of Raj., 2004)

Solution:

(i) निर्गमित अधिमान अंशों के अंकित मूल्य का निर्धारण

2,000 7% ऋणपत्रों के धारकों ने अधिमान अंशों को स्वीकार करने के पक्ष में अपना विकल्प दिया है। इन ऋणपत्रों के धारकों को शोधन पर 2,10,000 रु. (2,00,000 रु. ऋणपत्रों की मूल राशि + 10,000 रु. प्रीमियम) देय है। समझौते की शर्तों के अनुसार इन ऋणपत्रों के धारकों को 2,10,000 रु. अंकित मूल्य के 9% अधिमान अंश सममूल्य पर निर्गमित किए जाएंगे।

(ii) निर्गमित 7.5% ऋणपत्रों का अंकित मूल्य एवं बट्टे की राशि का निर्धारण

1800 7% ऋणपत्रों के धारकों ने एक पुराने ऋणपत्र के बदले में एक नया 7.5% ऋणपत्र लेना स्वीकार किया है। यह नया ऋणपत्र 5.50% बट्टे पर अर्थात् 94.50 रु. की दर पर निर्गमित किया जाएगा। इन ऋणपत्रों के धारकों को शोधन के समय कुल 1,89,000 रु. (1,80,000 रु. ऋणपत्रों की मूल राशि + 9,000 रु. प्रीमियम) के रूप में देय है। इस राशि के बदले में उनको (1,89,000 ÷ 94.50 = 2,00,000 रु.) अंकित मूल्य के नए 7.5% ऋणपत्र निर्गमित किए जाएगे।

7.5% ऋणपत्र के निर्गमन पर बट्टे की राशि का निर्धारण

1,800 7% ऋणपत्रों के धारकों को शोधन के समय निर्गमित नए 7.5%

ऋणपत्रों का अंकित मूल्य 2,00,000 रु.

बट्टे की राशि (2,00,000 X 5.5%) = 11,000 रु.

(iii) 7% ऋणपत्रधारकों को देय नकद राशि

कुल 5,000 ऋणपत्रों के धारकों में से केवल 1,200 अर्थात् (5,000 (2,000+1,800) ऋणपत्रों के धारकों ने नकद राशि लेना स्वीकार किया है। इन ऋणपत्रधारकों को 1,26,000 रु. (अर्थात् 1,20,000 रु. ऋणपत्रों की मूल राशि + 6,000 रु. प्रीमियम) की राशि नकद में देय होगी।

2007, March 31	**Journal**			
	7% Debentures A\c Dr.		5,00,000	
	Premium on Redemption of Debenture A\c Dr.		25,000	
	To Debentureholder A\c			5,25,000
	(Amount Due on redemption to the holders of 5,000			

Cont.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Date	Particulars	L.F.	Dr.	Cr.
2007,	7% Debentures.)			
March 31	Debentureholders A\c Dr.		2,10,000	
	To 9% Prefernce Share Capital A\c			2,10,000
	(2,100 9% Preference Shares of Rs. 100 each issued to the holders of 2,000 7% Debenture.)			
March 31	Debentureholders A\c Dr.		1,89,000	
	Discount on issue of Debentures A\c Dr.		11,000	
	To 7.5% Debentures A\c			2,00,000
	(2,000 7.5% Debentures of Rs. 100 each issued at a discount of 5.50% to the holders of 1,800 7% Debentures.)			
March 31	Debentureholders A\c Dr.		1,26,000	
	To Bank A\c			1,26,000
	(Cash paid to the holders of 1,200 7% Debentures.)			

एक मुश्त भुगतान द्वारा शोधन (Redemption by payment in one Lump-Sum)

शोधन कोष की व्यवस्था किए बिना एक–मुश्त भुगतान करना (Payment in one Lump-Sum without making sinking fund)

जब कम्पनी के पास पर्याप्त मात्रा में तरल साधन (liqued resources) उपलब्ध हो तो बगैर शोधन कोष की व्यवस्था कर एक–मुश्त भुगतान द्वारा शोधन कर देती है। ऋणपत्रों का एक मुश्त शोधन सममूल्य पर, प्रीमियम पर या बट्टे पर किया जा सकता है। सम मूल्य पर एक मुश्त नकद शोधन की प्रविष्टि निम्नलिखित होती है–

Debentures A\c Dr. (ऋणपत्रों के अंकित मूल्य से)

To Bank

(Debentures Redeemed)

प्रीमियम पर एक मुश्त शोधन (Debentures Redemption at Premium)

जब कम्पनी ऋणपत्रों का शोधन प्रीमियम पर करती है तो प्रीमियम पूंजीगत हानि होता है। यदि कम्पनी ने प्रीमियम के लिए आयोजन नहीं किया है तो शोधन के समय अपने किसी पूंजीगत लाभ या संचय या लाभ–हानि खाते से इस हानि को अपलिखित करना आवश्यक है।

Debentures A\c Dr. (ऋणपत्रों के अंकित मूल्य से)

Premium on Redemption of Deb. A\c Dr. (देय प्रीमियम की राशि)

To Bank A\c (दोनों के योग से)

(Debentures Redeemed at Premium)

P&L or Securities Premium A\c Dr. (प्रीमियम की राशि से)

To Premium on Redemption of Deb. A\c

(Premium on Redemption of Debentures written off)

बट्टे पर एक मुश्त शोधन (Debentures Redemption at Discount)

कम्पनी कभी–कभी ऋणपत्रों का शोधन उनके अंकित मूल्य से भी कम मूल्य पर या बट्टे पर कर सकती है। इस प्रकार के शोधन से कम्पनी को पूंजीगत लाभ होता है, परन्तु विनियोजक इसे पसन्द नहीं करते।

Debentures A\c Dr. (ऋणपत्रों के अंकित मूल्य से)

To Bank (नकद भुगतान कर वास्तविक राशि से)

To Profit on Redemption of Deb. (शोधन पर बट्टे की राशि से)

(Debentures redeemed at discount)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Profit on Reemption of Debentures A\c

To Capital A\c

(Profit on Redemption Tranferred)

(ii) संचित लाभों में से

(a) शोधन कोष (Sinking Fund) बनाकर एक मुश्त भुगतान के माध्यम से ऋणपत्रों का शोधन (Redemption of Debentures by Creating Sinking fund paying In lump sum)

इस विधि के अन्तर्गत प्रतिवर्ष एक निश्चित रकम लाभ–हानि खाते से प्रतिवर्ष सिकिंग फण्ड या ऋणपत्र शोधन कोष खाते में हस्तान्तरित कर दिया जाता है। इस कोष का उपयोग व्यापार में या प्रतिभूतियों में विनियोजन किया जा सकता है। कोष का उपयोग व्यापार में करने से शोधन के समय सम्पत्तियों को बेचने का खतरा बना रहता है। कोष को प्रतिभूतियों में विनियोजन से ऋणपत्रों के शोधन के समय व्यापार के तरल साधनों पर भार नहीं पड़ता। इसलिए व्यापारिक गतिविधियों पर विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता। यह शोधन कोष दो प्रकार का हो सकता है–

संचयी शोधन कोष (Cumulative Sinking Fund)

असंचयी कोष (Non Cumulative Sinking Fund)

(1a) संचयी शोधन कोष (Cumulative Sinking Fund) -

इस विधि के अन्तर्गत कोष में प्रतिवर्ष इतनी राशि जमा की जानी चाहिए कि इसको निश्चित चक्रवृद्धि ब्याज की दर से विनियोग किए जाने पर ये राशि ऋणपत्रों के शोधन के समय ऋणपत्रधारियों को भुगतान की जाने वाली राशि के समान हो जाए। यह राशि शोधन कोष तालिका से ज्ञात की जा सकती है। प्रश्न में छात्रों को सारणी से सम्बन्धित मूल्य दे दिया जाता है। इस विधि के अन्तर्गत जर्नल प्रविष्टियां अग्रलिखित होगी–

प्रथम वर्ष के अन्त में :

(i) लाभ–हानि नियोजन खाते में वार्षिक धनराशि को अन्तरित करने पर

Profit & Loss Appropriation A\c Dr. (निश्चित वार्षिक राशि से)

To Debenture sinking Fund A\c

(Annual sum transferred to Deb. Sinking fund A\c)

(ii) शोधन कोष की राशि को विनियोजित करने पर

Sinking Fund investment A\c Dr. (सिकिंग फण्ड राशि से)

To Bank A\c

(Amount of Sinking Fund invested in Securities)

दूसरे वर्ष तथा अगले वर्षों के अन्त में

(i) ब्याज की राशि प्राप्त होने पर

Bank A\c Dr.

To Interest on Sinking Fund Investment A\c

(Interest Recived on Sinking Fund Investments)

(ii) Interest on Sinking Fund Investment A\c Dr.

To Sinking Fund A\c

(Transfer interest to sinking Fund A\c)

(ii) वार्षिक राशि अन्तरित करने पर

Profit & Loss Appropriation A\c (निश्चित वार्षिक राशि से)

To Debentures Sinking Fund A\c

(Annual Sum transferred to Deb. sinking Fund A\c)

वार्षिक राशि तथा ब्याज का विनियोजन करने पर

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Debentures Sinking fund Investment A\c Dr. (वार्षिक किस्त और प्राप्त ब्याज की राशि)

To Bank

(Annual Invesment and Interest Invested)

चिट्ठे में निरुपण :– ऋणपत्र शोधन खाता चिट्ठे के दायित्व पक्ष में दिखाए जाएगा, जबकि ऋणपत्र विनियोग खाता चिट्ठे के सम्पत्ति पक्ष में दिखाया जाएगा।

जब ऋणपत्रों का शोधन किया जाता है–

प्रति वर्ष की भांति ब्याज प्राप्त करने व वार्षिक किस्त की राशि की प्रविष्टि की जाएगी लेकिन इस वर्ष विनियोग नहीं किया जाएगा। अतः विनियोग सम्बन्धी प्रविष्टि नहीं की जाएगी बल्कि विनियोगों को बेचने की प्रविष्टि की जाएगी विनियोग को बेचने पर

Bank A\c Dr.

To Sinking Fund Investment A\c

(Ivestment Sold)

विनियोगों को बेचने पर लाभ होने पर

Sinking Fund Investment A\c Dr.

To Sinking Fund

(Profit on sale of Invesments transferred to Sinking Fund A\c)

विनियोगों को बेचने पर हानि होने पर

Sinking Fund A\c Dr.

To Sinking Fund Invesment A\c

(Loss on sale of Invesment transferred to sinking Fund A\c)

ऋणपत्रों का शोधन करने पर

Debentures A\c Dr.

To Bank

(Debentures Redeemed)

शोधन कोष खाते का शेष सामान्य खाते में हस्तारिन्त करने पर

Sinking Fund A\c Dr.

To General Reserve A\c

(Balance of sinking fund A\c transferred to Genral Reserve A\c)

Illustration 6

1 अप्रैल, 2004 को दिनेश लि. ने 100 रु. वाले 15,000 10% ऋणपत्र सममूल्य पर निर्गमित किए जो 5 वर्ष पश्चात् शोधनीय है। कम्पनी ने ऋणपत्रों के शोधन हेतु एक संचयी शोधन कोष की स्थापना की। प्रत्येक वर्ष के अन्त में राशियां 15% प्रतिभूतियों में विनियोजित की गई जो सममूल्य पर किसी भी समय राशि उपलब्ध थी। 31 मार्च, 2010 को विनियोग 11,40,000 रु. में बेच दिए और ऋणपत्रों का शोधन किया गया। ऋणपत्र शोधन कोष में 1 रु. के लिए वार्षिक अंशदान 0.148324 रु. था। पांच वर्षों के लिए जर्नल प्रविष्टि दीजिए तथा खातों में खतौनी कीजिए।

Solution

2005 April, 1	Bank A\c Dr. To 10% Debentures A\c (Issue of 15,000 10% Debentures of Rs. 100 each.)		15,00,000	15,00,000
2006 March, 31	Profit & Loss Appropriation A\c Dr. To Debenture Sinking Fund A\c (Annual sum transferred to Deb. Sinking fund A\c)		2,22,486	2,22,486
March, 31	Debenture Sinking Fund investment A\c Dr. To Bank A\c (Amount of Sinking Fund invested in 15% Govt. Securities)		2,22,486	2,22,486

Cont.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Date	Particulars			L.F.	Dr. Amount	Cr. Amount
2007 March, 31	Bank	A\c	Dr.		33,372	
	To Interest on Sinking Fund Investment A\c					33,372
	(Interest Recived on Sinking Fund Investments)					
March, 31	Profit & Loss Appropriation	A\c	Dr.		2,22,486	
	To Debentures Sinking Fund A\c					2,22,486
	(Annual Sum transferred to Deb. sinking Fund A\c)					
March, 31	Interest on Sinking Fund Investment A\c		Dr.		33,372	
	To Debenture Sinking Fund A\c					33,372
	(Transfer interest to Debenture Sinking Fund A\c)					
March, 31	Debentures Sinking fund Investment A\c		Dr.		2,55,858	
	To Bank	A\c				2,55,858
	(Annual Invesment and Interest Invested)					
2008 March, 31	Bank	A\c	Dr.		71,751	
	To Interest on Sinking Fund Investment A\c					71,751
	(Interest Recived on Sinking Fund Investments)					
March, 31	Profit & Loss Appropriation	A\c	Dr.		2,22,486	
	To Debentures Sinking Fund A\c					2,22,486
	(Annual Sum transferred to Deb. sinking Fund A\c)					
March, 31	Interest on Sinking Fund Investment A\c		Dr.		71,751	
	To Debenture Sinking Fund A\c					71,751
	(Transfer interest to Debenture Sinking Fund A\c)					
March, 31	Debentures Sinking fund Investment A\c		Dr.		2,94,237	
	To Bank	A\c				2,94,237
	(Annual Invesment and Interest Invested)					
2009 March, 31	Bank	A\c	Dr.		1,15,887	
	To Interest on Sinking Fund Investment A\c					1,15,887
	(Interest Recived on Sinking Fund Investments)					
March, 31	Profit & Loss Appropriation	A\c	Dr.		2,24,486	
	To Debentures Sinking Fund A\c					2,24,486
	(Annual Sum transferred to Deb. sinking Fund A\c)					
March, 31	Interest on Sinking Fund Investment A\c		Dr.		1,15,887	
	To Debenture Sinking Fund A\c					1,15,887
	(Transfer interest to Debenture Sinking Fund A\c)					
March, 31	Debentures Sinking fund Investment A\c		Dr.		3,38,373	
	To Bank	A\c				3,38,373
	(Annual Invesment and Interest Invested)					
2010 March, 31	Bank	A\c	Dr.		1,66,644	
	To Interest on Sinking Fund Investment A\c					1,66,644
	(Interest Recived on Sinking Fund Investments)					
March, 31	Profit & Loss Appropriation A\c		Dr.		2,22,486	
	To Debentures Sinking Fund A\c					2,22,486
	(Annual sum transferred to Deb. sinking fund A\c)					

Cont.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Date	Particulars		L.F.	Dr.	Cr.
March, 31	Interest on Sinking Fund Investment A\c	Dr.		1,66,644	
	To Debenture Sinking Fund A\c				1,66,644
	(Transfer interest to Debenture Sinking Fund A\c)				
March, 31	Bank A\c	Dr.		11,40,000	
	To Debentures Sinking Fund Investment A\c				11,40,000
	(Ivestment Sold)				
March, 31	Debentures Sinking Fund Investment A\c	Dr.		29,046	
	To Debentures Sinking Fund A\c				29,046
	(Profit on sale of Invesments transferred to Sinking Fund A\c)				
March, 31	10% Debentures A\c	Dr.		15,00,000	
	To Bank A\c				15,00,000
	(Debentures Redeemed)				
March, 31	Debentures Sinking Fund A\c	Dr.		15,29,130	
	To General Reserve A\c				15,29,130
	(Balance of sinking fund A\c transferred to Genral Reserve A\c)				

Ledger Account

10% Debentures A\c

Date	Particulars	Amount	Date	Particulars	Amount
2006 March,31	To Balance c\d	15,00,000	2005 April, 1	By Bank A\c	15,00,000
2007 March,31	To Balance c\d	15,00,000	2006 April, 1	By Balance b\d	15,00,000
2008 March,31	To Balance c\d	15,00,000	2007 April, 1	By Balance b\d	15,00,000
2009 March,31	To Balance c\d	15,00,000	2008 April, 1	By Balance b\d	15,00,000
2010 March,31	To Bank A\c	15,00,000	2009 April, 1	By Balance b\d	15,00,000

Debenture Sinking Fund A\c

Date	Particulars	Amount	Date	Particulars	Amount
2006 March,31	To Balance c\d	2,22,486	2006 March,31	By Profit & Loss Appropriation A\c	2,22,486
2007 March,31	To Balance c\d	4,78,344	2006 April, 1	By Balance b\d	2,22,486
				By Bank A\c (Interest)	33,372
			2007 March,31	By Profit & Loss Appropriation A\c	2,22,486
		4,78,344			4,78,344
2008 March,31	To Balance c\d	7,72,581	2007 April, 1	By Balance b\d	4,78,344
				By Bank A\c (Interest)	71,751
			2008 March,31	By Profit & Loss Appropriation A\c	2,22,486
		7,72,581			7,72,581
2009 March,31	To Balance c\d	11,10,954	2008 April, 1	By Balance b\d	7,72,581
				By Bank A\c (Interest)	1,15,887
			2009 March,31	By Profit & Loss Appropriation A\c	2,22,486
		11,10,954			11,10,954
2010 March,31	To General Reserve	15,29,130	2009 April, 1	By Balance b\d	11,10,954
				By Bank A\c (Interest)	1,66,644

Cont.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

				By Profit & Loss Appropriation A\c	2,22,486
				By Deb. S.F. Investme. A\c (Profit)	29,046
		15,29,130			15,29,130

General Reserve A\c

2010 Mar. 31	To Balance c\d	15,29,130	2010 Mar. 31	By Debenture Sinking Fund A\c	15,29,130

Debenture Sinking Fund investment A\c

2006 March,31	To Bank A\c	2,22,486	2006 March,31	By Balance c\d	2,22,486
2006 April, 1	To Balance b\d	2,22,486	2007 March,31	By Balance c\d	4,78,344
2007 March,31	To Bank A\c	2,55,858			
		4,78,344			4,78,344
2007 April, 1	To Balance b\d	4,78,344	2008 March,31	By Balance c\d	7,72,581
2008 March,31	To Bank A\c	2,94,237			
		7,72,581			7,72,581
2008 April, 1	To Balance b\d	7,72,581	2009 March,31	By Balance c\d	11,10,954
2009 March,31	To Bank A\c	3,38,373			
		11,10,954			11,10,954
	To Balance b\d	11,10,954	2010 March,31	By Bank A\c	11,40,000
2010 March,31	ToDeb. S.F. A\c (Profit)	29,046			
		11,40,000			11,40,000

Interest on Sinking Fund Investment A\c

2007 March,31	To Deb. S. F. A\c	33,372	2007 March,31	By Bank A\c	33,372
2008 April, 1	To Deb. S. F. A\c	71751	2008 March,31	By Bank A\c	71751
2009 March,31	To Deb. S. F. A\c	1,15,887	2009 March,31	By Bank A\c	1,15,887
20010 April, 1	To Deb. S. F. A\c	1,66,644	2010 March,31	By Bank A\c	1,66,644

(ib) अंसचयी शोधन कोष (Non-Cumulative Sinking Fund)

इस विधि के अन्तगर्त ब्याज चक्रवृद्धि की दर से अर्जित न करके साधारण दर से अर्जित करते हैं। इसके अन्तर्गत प्रतिवर्ष लाभ–हानि खाते से उतनी राशि हस्तान्तरित की जाती है जितनी ऋणपत्रों के शोधन के समय भुगतान की जाने वाली राशि के समान हो जाए। इस विधि के अन्तर्गत विनियोगों पर प्राप्त ब्याज का पुनर्विनियोग नहीं किया जाता है।

Illustration 7

बजाज गैस लि. ने 1 अप्रेल, 2006 को 100 रु. वाले 6,000 12% ऋणपत्र निर्गमित किए, जिनका 3 वर्षों के बाद शोधन करना है।

निर्गमन की शर्तों के अनुसार कम्पनी शोधन के लिए अंसचयी शोधन कोष का निर्माण करेगी। शोधन कोष के लिए 2,00,000 रु. वार्षिक का प्रावधान है। इस कोष का विनियोग प्रतिभूतियों में किया जाएगा। विनियोग 4,10,000 रु. में बेचकर ऋणपत्रों का शोधन कर दिया गया। कम्पनी की पुस्तकों में इन व्यवहारों का लेखा करने के लिए 3 वर्षों के आवश्यक खाते बनाइए। {R.U., B.Com.(Supp.),1997}

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Solution

Books of Bajaj Gas Ltd.

General Reserve A\c

Date	Particulars	Amount	Date	Particulars	Amount
2007 March, 31	To Balance c\d	6,10,000	2007 March, 31	By Debenture Sinking Fund A\c	6,10,000

12% Debentures A\c

Date	Particulars	Amount	Date	Particulars	Amount
2007 March, 31	To Balance c\d	6,00,000	2006 April,1	By Bank A\c	6,00,000
2008 March, 31	To Balance c\d	6,00,000	2007 April,1	By Balance b\d	6,00,000
2009 March, 31	To Bank A\c	6,00,000	2008 April,1	By Balance b\d	6,00,000

Debenture Sinking Fund A\c

Date	Particulars	Amount	Date	Particulars	Amount
2007 March, 31	To Balance c\d	2,00,000	2007 March, 31	By Profit & Loss Appropriation A\c	2,00,000
2008 March, 31	To Balance c\d	4,00,000	2007 April, 1	By Balance b\d	2,00,000
			2008 March, 31	By Profit & Loss Appropriation A\c	2,00,000
		4,00,000			4,00,000
2009 March, 31	To General Reserve A\c	6,10,000	2008 April, 1	By Balance b\d	4,00,000
			2009 March, 31	By Profit & Loss Appropriation A\c	2,00,000
			March, 31	By Deb. Sinking Fund Inv. A\c	10,000
		6,10,000			6,10,000

Debenture Sinking Fund Investment A\c

Date	Particulars	Amount	Date	Particulars	Amount
2007 March, 31	ToBank A\c	2,00,000	2007 March, 31	By Balance b\d	2,00,000
2007 April, 1	To Balance b\d	2,00,000	2008 March, 31	By Balance b\d	4,00,000
2008 March, 31	ToBank A\c	2,00,00			
		4,00,000			4,00,000
2008 April, 1	To Balance b\d	4,00,000	2009 March, 31	By Bank A\c	4,10,000
2009 March, 31	To Deb. Sinking Fund A\c	10,000			
		4,10,000			4,10,000

(b) बीमा पॉलिसी की सहायता से ऋणपत्रों के शोधन की व्यवस्था

(Redemetion Debentures with the help of Insurance policy)

इस पद्धति में ऋणपत्रों पर भुगतान की जाने वाली राशि के लिए शोधन तिथि को परिपक्व होने वाली बन्दोबस्ती बीमा पॉलिसी (Endowment Insurance Policy) ले लेती हैं। इस पॉलिसी पर प्रतिवर्ष प्रीमियम दिया जाता है। बीमा पॉलिसी

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

की अवधि समाप्त होने पर पॉलिसी की राशि ब्याज सहित प्राप्त हो जाती है जिससे ऋणपत्रों का शोधन कर दिया जाता है। कुल जमा की गई प्रीमियम और बीमा पॉलिसी से प्राप्त रकम का अन्तर ऋणपत्र शोधन निधि खाते में हस्तान्तरित कर दिया जाता है। इस विधि के अन्तर्गत जर्नल लेखे निम्नलिखित प्रकार से की जाएगी–

प्रथम वर्ष एवं आगामी वर्षों में

1. बीमा प्रीमियम जमा कराने पर

Debenture Redmption Policy A\c Dr.

To Bank A\c

2. लाभ–हानि खाते से प्रीमियम की रकम संचय खाते में हस्तान्तरित करने पर

Profit & Loss Appropriation A\c Dr.

To Debenture redemption Fund A\c

उपरोक्त जर्नल लेखे प्रति वर्ष किए जाऐंगे। अंतिम वर्ष जर्नल लेखे अग्रलिखित होंगे–

बीमा प्रीमियम जमा कराने व लाभ–हानि में प्रीमियम हस्तान्तरित करने की प्रविष्टि वही होगी, जो प्रति वर्ष की जाती है।

3. बीमा की रकम प्राप्त होने पर

Bank A\c Dr.

To Debenture Redemption policy A\c

4. बीमा पॉलिसी खाते के शेष को ऋणपत्र शोधन निधि खाते में हस्तान्तरित करने पर

Denebture redemption Policy A\c Dr.

To Debenture redemption Fund A\c

5. ऋणपत्रों का भुगतान करने पर

Debentures A\c Dr.

To Bank A\c

6. ऋणपत्र शोधन निधि खाते का शेष सामान्य संचय खाते में हस्तान्तरित करने पर

Debenture Redenption Fund A\c Dr.

To General Reserve

बीमा पॉलिसी पर प्राप्त कुल रकम और जमा की गई प्रीमियम की रकम का अन्तर कुल ब्याज होगा। कभी–कभी यह ब्याज एक साथ अन्तिम वर्ष जमा न करके प्रतिवर्ष एक निश्चित दर से ऋणपत्र शोधन निधि खाते में जमा तथा ऋणपत्र शोधन पॉलिसी खाते में नाम कर देते हैं।

3. वार्षिक किश्तों के आहरण द्वारा शोधन (Redemption by Annual Drawings)

निर्गमन की शर्तों के अनुसार यदि ऋणपत्रों का शोधन वार्षिक आहरण द्वारा किया जाता है तो शोधन के लिए ऋणपत्रों का चयन लॉटरी (Lottery) द्वारा किया जाता है। इन ऋणपत्रधारियों को भुगतान निर्गमन की शर्तों के अनुसार सममूल्य या प्रीमियम पर किया जाता है। ऋणपत्रों की लेखा प्रविष्टियां उसी प्रकार की जाती है जिस प्रकार एक मुश्त भुगतान करने पर बताई गई है। अन्तर केवल शोधन किए गए ऋणपत्रों की रकम का होता है।

4. ऋणपत्रों का खुले बाजार में क्रय द्वारा शोधन (Redemption of Debentures by purchasing from the open market)

जब कभी ऋणपत्रों का बाजार मूल्य उनके शोधन मूल्य से कम हो तो कम्पनी ऋणपत्रों को खुले बाजार से क्रय कर सकती है। कम्पनी बाजार में अपने स्वयं के ऋणपत्र तभी खरीदती है जबकि उसे क्रय करने में कम्पनी का हित प्रतीत होता है, जैसे :

(i) क्रय करके ऋणपत्रों को तुरन्त रद्द कर देना,

(ii) क्रय करके स्वयं के ऋणपत्रों को विनियोगों के रूप में रखना,

(iii) विनियोग के रूप में रखे हुए स्वयं के ऋणपत्रों को कुछ समय पश्चात् वापस बेच देना,

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(iv) विनियोग के रूप में रखे हुए ऋणपत्रों को कुछ समय पश्चात् रद्द कर देना।

उक्त विभिन्न परिस्थितियों का वर्णन अग्रलिखित है–

(i) रद्द करने हेतु (For Cancellation) ऋणपत्रों का क्रयः–

जब कभी ऋणपत्रों को बाजार से क्रय कर उनको रद्द कर देती है, तो निम्नलिखित प्रविष्टि की जाएगी–

Debentures A\c Dr. (ऋणपत्रों के अंकित मूल्य से)

To Cash/Bank (वास्तविक भुगतान की रकम से)

To Profit on Purchase /Redemption of debentures A\c (लाभ की राशि से)

(Debentures Cancelled by purchase in the open market)

Profit on Purchases /Redemption of Debentures A\c Dr.

To Capital reserve

(Profit on Redemption of debentures transferred to Capital Resarve account)

Illustration 8

1 जनवरी, 2007 को रमेश लिमिटेड की पुस्तकों में 500 रु. वाले 1,000 12 प्रतिशत ऋणपत्र बकाया थे। ऋणपत्र निर्गमन की शर्तों के अनुसार संचालकों ने खुले बाजार से अपने 350 ऋणपत्र तुरन्त करने हेतु क्रय किए–

March,1 100 Debentures @ Rs. 490 (cum-interest)
Aug,. 1 200 Debentures @ Rs. 501.25 (cum-interest)
Dec., 15 50 Debentures @ Rs. 492.50 (ex-interest)

प्रतिवर्ष ऋणपत्रों पर अर्द्धवार्षिक ब्याज 30 जून तथा 31 दिसम्बर को देय है। इन व्यवहारों के लिए आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां दीजिए। (M.D.S. Univ. Ajmer, 2004)

Solution

Journal of Ramesh Ltd.

2007 Mar., 1	12% Debenture A\c Dr.		50,000	
	Debenture Interest A\c Dr.		1,000	
	To Bank A\c			49,000
	To Profit on Redemption of debentures A\c			2,000
	(100 Deb. cancelled by purchase from the open market @ Rs. 490 cum-interest.)			
June, 30	Debenture Interest A\c Dr.		27,000	
	To Bank A\c			27,000
	(Debenture Interest paid on 900 Debenture.)			
Aug., 1	12% Debenture A\c Dr.		1,00,000	
	Debenture Interest A\c Dr.		1,000	
	To Bank A\c			1,00,250
	To Profit on Redemption of debentures A\c			750
	(200 Deb. cancelled by purchase from the open market @ Rs. 501.25 cum-interest.)			
Dec., 15	12% Debenture A\c Dr.		25,000	
	Debenture Interest A\c Dr.		1,375	
	To Bank A\c (24,625 + 1,375)			26,000
	To Profit on Redemption of debentures A\c			1,375
	(200 Deb. cancelled by purchase from the open market @ Rs. 492.50 ex-interest.)			
Dec., 31	Debenture Interest A\c Dr.		19,500	
	To Bank A\c			19,500
	(Debenture Interest paid on 650 Debenture.)			

Cont.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Dec., 31	Profit on Redemption of Debentures	A\c	Dr.		3,125	
	To Capital Reserve	A\c				3,125
	(Profit on cancellation of debentures transferred.)					
Dec., 31	Profit & Loss	A\c	Dr.		49,875	
	To Debenture Interest	A\c				49,875
	(Balance transferred.)					

टिप्पणी : खुले बाजार से ऋणपत्रों का क्रय बाजार में उद्धत, ब्याज सहित मूल्य अथवा ब्याज–रहित मूल्य पर किया जाता है। ब्याज सहित एवं ब्याज रहित उद्धरण का लेखा "विनियोगों का लेखांकन" नामक अध्याय में विस्तार से पाठ्य पुस्तकों में दिया होता है। इस अध्याय में ब्याज सहित एवं ब्याज रहित उद्दरण का संक्षिप्त विवेचन अगले शीर्षक में किया गया है–

1 मार्च को क्रय किए गए ऋणपत्रों पर अर्जित ब्याज $= 50,000 \times \frac{12}{100} \times \frac{2}{12} = \text{Rs. } 1,000$

1 अगस्त को क्रय किए गए ऋणपत्रों पर अर्जित ब्याज $= 1,00,000 \times \frac{12}{100} \times \frac{1}{12} = \text{Rs. } 1,000$

15 दिसम्बर को क्रय किए गए ऋणपत्रों पर अर्जित ब्याज $= 25,000 \times \frac{12}{100} \times \frac{5.5}{12} = \text{Rs. } 1,375$

4 ऋणपत्रों को निरस्त करने पर हुआ लाभ पूंजीगत प्रकृति का है, अत इसे पूंजी संचय में हस्तान्तरित किया गया है।

(ii) विनियोजन करने हेतु (For Investment)– स्वयं के ऋणपत्रों का क्रय कभी–कभी कम्पनी ऋणपत्रों को बाजार से क्रय कर रद्द नहीं करती वरन् विनियोग के रूप में रख लेती है। इससे ऋणपत्रों पर देय ब्याज की बचत होती है। कम्पनी ऐसा निर्णय तभी करती है जब ऋणपत्रों का बाजार मूल्य कम होता है। ऋणपत्रों को क्रय करके विनियोग के रूप में रखने का उद्देश्य होने पर स्वयं के ऋणपत्रों के क्रय की निम्नलिखित प्रविष्टि की जाती है–

Own Debentures A\c Dr. (क्रय मूल्य से)
To Bank
(Own Debentures purchased)

यदि ऋणपत्र ब्याज की देय तिथि से पूर्व क्रय किए जाते हैं तो अर्जित ब्याज के लिए समायोजन किया जाएगा। प्रविष्टि अग्रलिखित होगी–

Own Debentures A\c Dr. (ब्याज सहित)
Interest on own debentures A\c Dr. (अर्जित ब्याज)
To Bank
(own Debentures Purchased as Invesament)

(iii) विनियोग के रूप में रखे हुए ऋणपत्रों को कुछ समय पश्चात् पुनः विक्रय करना :

जब कभी कम्पनी को धन की आवश्यकता होती है तो विनियोगों के रूप में रखे अपने ऋणपत्रों को पुनः बेच देती है। पुनर्बिक्री की प्रविष्टि इस प्रकार होगी –

Bank A\c Dr. (वास्तविक प्राप्त राशि से)
To Own Debentures A\c (क्रय मूल्य से)
To Interst on debentures A\c (ब्याज की राशि से)
To profit on Resale of own Deb. A\c (लाभ की राशि से)
(Own debentures sold at Profit)

ऋणपत्रों के बेचने से हानि होने पर

Bank A\c Dr. (वास्तविक राशि से)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Loss on Resale of Own deb A\c Dr. (हानि की राशि से)
To Own Deb. (क्रय मूल्य से)
To Int. on own Deb. (ब्याज की राशि से)
(own Deb. Sold at loss)

ऋणपत्रों को अल्पकालीन विनियोग मानते हैं, अतः इनके विक्रय पर लाभ या हानि को आयगत लाभ–हानि मानते हुए 'लाभ–हानि खाते' में स्थानान्तरित करते हैं। यदि ऋणपत्रों को दीर्घकालीन विनियोग के रूप में रखा है तो लाभ को पूंजी संचय खाते में और हानि को लाभ–हानि खाते में स्थानान्तरित करते हैं।

(iv) विनियोग के रूप में रखे हुए ऋणपत्रों को कुछ समय पश्चात् रद्द करना –

(a) रद्द करने से लाभ होने पर

Debentures A\c Dr (ऋणपत्रों के अंकित मूल्य से)
To Own Debentures A\c (क्रय मूल्य से)
To Profit on Cancellation of own Debenturesa A\c (लाभ की राशि से)
(Debentures Cancelled)

लाभ को पूंजीगत संचय में स्थानान्तरित किया जायेगा

(b) रद्द करने से हानि होने पर

Debentures A\c Dr.
Loss on Cancellation of own Deb. A\c Dr.
To Own Debentures A\c
(Debentures Cancelled)

ऋणपत्रों का ब्याज रहित तथा ब्याज सहित उद्धरण

(Ex-Interst and Cum-Interest Quotations of Debentures)

ऋणपत्रों पर ब्याज निश्चित तिथि को चुकाया जाता है। यदि ऋणपत्र ब्याज की निर्धारित देय तिथि को ही क्रय किए जाते हैं तब ब्याज का भुगतान विक्रेता ऋणपत्रधारी को ही होता है।

यदि ऋणपत्र ब्याज की देय तिथि के अलावा अन्य किसी तिथि को खरीदा जाता है, तो ब्याज के सम्बन्ध में भी समायोजन किया जाता जाना आवश्यक है।

ब्याज सहित (Cum-Interst) - ब्याज सहित ऋणपत्र क्रय की दशा में ऋणपत्र के क्रय मूल्य में पिछली देय तिथि से सौदे की तिथि तक ब्याज सम्मलित होता है। इसका अर्थ यह है कि ऋणपत्र में सम्मलित ब्याज के लिए पृथक् से कोई भुगतान नहीं किया जाता है। पुस्तकों में लेखा करते समय ऋणपत्रों के कुल मूल्य में से अर्जित ब्याज की रकम घटा दी जाती है। उदाहरणार्थ, कम्पनी ऋणपत्रों के शोधन के उद्देश्य से 1 अप्रेल को 50,000 के 50 रु. वाले ब्याज सहित 10% ऋणपत्र को 48 रु. की दर से क्रय किए। ब्याज की तारीख 30 जून और 31 दिसम्बर है। बीती हुई अवधि का ब्याज

$$\frac{50{,}000 \times 3 \text{ माह} \times 10}{12 \times 100} = 1250 \text{ रु.}$$

ब्याज सहित ऋणपत्र क्रय करने के लिए जो मूल्य चुकाया गया है उसमें ब्याज के 1,250 रु. सम्मिलित। इस प्रकार कुल भुगतान 48,000 रु. में 1,250 रु. ब्याज के तथा शेष 46,750 रु. ऋणपत्रों की लागत है। प्रविष्टि अग्रलिखित होगी–

10% debentures	A\c	Dr.	50,000	
Debentures Interest	A\c	Dr.	1,250	
To Bank	A\c			48,000
To Profit on Redemption of Debentures A\c				3,250

ब्याज रहित मूल्य (Ex-Interst Price)– इस मूल्य में ब्याज देय तिथि से क्रय की तिथि तक का अर्जित ब्याज शामिल नहीं होता है। अतः कम्पनी को ऋणपत्रों के मूल्य के अतिरिक्त ब्याज चुकाना पड़ता है। उदारहणार्थ, कम्पनी ऋणपत्रों के शोधन के उद्देश्य से 1 अप्रेल को 50,000 रु. के 50 रु. वाले ब्याज रहित 10% ऋणपत्र 48 रु. की दर से क्रय किए।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

ब्याज की तारीख 30 जून और 31 दिसम्बर है। कम्पनी को क्रय मूल्य 48,000 रु. के अतिरिक्त ब्याज 1,250 रु. चुकाना पड़ेगा अर्थात् कुल 49,250 रु. का भुगतान करना पडेगा।

$$\text{ब्याज} = \frac{50,000 \times 3 \text{ माह} \times 10}{12 \times 100} = 1,250 \text{ रु.}$$

प्रविष्टि अग्रलिखित होगी–

10% Debenture A\c	Dr.	50,000	
Debentures Interest A\c	Dr.	1,250	
To Bank A\c			49,250
To Profit on Redemption of deb.			2,000

Illustration 9

रमेश लि. के पास 1 अप्रैल, 2008 को 100 रु. वाले 2,000 10% ऋणपत्रों का शेष बकाया था। ऋणपत्र निर्गम की शर्तों के अनुसार कम्पनी ने तुरन्त शोधन करने के लिए खुले बाजार से स्वयं के अग्रलिखित ऋणपत्रों को क्रय किया–

1 June, 2008 : 500 Debentures @ Rs. 97 cum-interest
1 January, 2009 : 1,000 Debentures @ Rs. 101 cum-interest
1March, 2009 : 500 Debentures @ Rs. 98.50 ex-interest

ऋणपत्रों पर अर्द्धवार्षिक ब्याज 30 सितम्बर व 31 मार्च को देय होता है। आवश्यक प्रविष्टियां दीजिए, यह मानते हुए कि स्वयं के ऋणपत्रों का निरस्तीकरण द्वारा शोधन लाभों में से किया गया है। कम्पनी अपनी वार्षिक लेखा पुस्तकें 31 मार्च को बन्द करती है।

Solution **Journal of Ramesh Ltd.**

2008 June, 1	10% Debenture A\c Dr. Debenture Interest A\c Dr. To Bank A\c To Profit on Redemption of debentures A\c (500 Deb. cancelled by purchase from the open market @ Rs. 97 cum-interest.)		50,000 833	 48,500 2,333
Sep., 30	Debenture Interest A\c Dr. To Bank A\c (Debenture Interest paid on 1,500 Debenture.)		7,500	 7,500
2009 Jan, 1	10% Debenture A\c Dr. Debenture Interest A\c Dr. To Bank A\c To Profit on Redemption of debentures A\c (1,000 Deb. cancelled by purchase from the open market @ Rs. 101cum-interest.)		1,00,000 2,500	 1,01,000 1,500
2009 Mar., 1	10% Debenture A\c Dr. Debenture Interest A\c Dr. To Bank A\c To Profit on Redemption of debentures A\c (500 Deb. cancelled by purchase from the open market @ Rs. 98.50 ex-interest.)		50,000 2083	 49,250 2833
Mar., 31	Profit on Redemption of Debentures A\c Dr. To Capital Reserve A\c (Profit on cancellation of debentures transferred.)		6,666	 6,666
Mar., 31	Profit & Loss A\c Dr. To Debenture Interest A\c (Balance transferred.)		12,916	 12,916

Cont.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

Mar., 31	Profit & Loss	A\c	Dr.		2,00,000	
	To Debenture Interest	A\c				2,00,000
	(Balance transferred.)					

स्व परीक्षा प्रश्न (Self Exaination Questions)

अति लघूतरात्मक प्रश्न (Very Short Answer Type Question)

1. पूंजी में से ऋणपत्रों के शोधन का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
2. शोधन कोष विधि एवं बीमा पॉलिसी विधि में अन्तर कीजिए।
3. समपार्श्विक प्रतिभूति के रूप में ऋणपत्रों के निर्गमन की क्या लेखांकन प्रविष्टियां की जाती है।

लघुरात्मक प्रश्न (Short Answer Type Quesation)

1. ऋणपत्रों का खुले बाजार में क्रय द्वारा शोधन से आप क्या समझते हैं? समझाइये।
2. ऋणपत्रों के एक मुश्त भुगतान द्वारा शोधन से आप क्या समझते हैं?
3. वार्षिक किस्तों के आहरण द्वारा शोधन से आप क्या समझते हैं?
4. स्वयं के ऋणपत्रों को क्रय करने के क्या उद्देश्य होते हैं?

सैद्धान्तिक प्रश्न (Theoretical Quesations)

1. निम्नलखित पर संक्षिप्त टिप्पणियां लिखिए–

   ऋणपत्रों का अंशों में परिवर्तन,

   खुले बाजार से खरीदकर ऋणपत्रों का शोधन, तथा

   समर्थक ऋणाधार के रूप में निर्गमित ऋणपत्र,

   ऋणपत्र शोधन संचय

   ऋणपत्रों का ब्याज सहित तथा ब्याज रहित मूल्य उद्दरण।
2. एक कम्पनी ने 500 रु. प्रत्येक 100 12% ऋणपत्र 490 रु. (ब्याज सहित) 1–3–2009 को तुरन्त निरस्त करने हेतु क्रय किए। ऋणपत्रों पर ब्याज 31 दिसम्बर को देय है। जर्नल प्रविष्टियां दीजिए।
3. ऋणपत्रों के शोधन की विभिन्न रीतियां क्या है ? उनकी विशेषताओ का वर्णन कीजिए।

व्यावहारिक प्रश्न (Practical Quesations)

1. 1 जनवरी, 2002 को एक कम्पनी ने 100 रु. वाले दस वर्षीय 10,000 ऋणपत्र निर्गमित किए थे जिन पर 5 प्रतिशत वार्षिक दर से ब्याज देय था। निर्गमन की शर्तों में एक शर्त यह थी कि पांच वर्ष बाद किसी भी समय छः माह की सूचना देकर कम्पनी ऋणपत्रों का 2% प्रीमियम पर शोधन कर सकती है। शोधन पर या तो नकद भुगतान कर दिया जाएगा अथवा ऋणपत्रधारियों को विकल्प होगा कि वे अपने ऋणपत्रों के बदले में अंश तथा/अथवा अन्य ऋणपत्र बंटित करा लें।

   1 जनवरी, 2007 को ऋणपत्रधारियों को सूचित करते हुए आवश्यक नोटिस दिया गया कि कम्पनी का विचार 1 जुलाई, 2007 को समस्त ऋणपत्रों का शोधन करने का है। शोधन का भुगतान या तो नकद किया जा सकता है अथवा 100 रु. वाले 8% अधिमान अंशों का 120 रु. प्रति अंश के हिसाब से बंटन द्वारा किया जा सकता है अथवा 100 रु. वाले 6% ऋणपत्र 98 रु. प्रति ऋणपत्र के हिसाब से दिये जा सकते हैं।

   2,000 ऋणपत्रों के धारकों ने अधिमान अंशों का प्रस्ताव स्वीकार किया, 4,900 ऋणपत्रों के धारकों ने 6% ऋणपत्रों के प्रस्ताव को स्वीकार किया तथा शेष ने नकद भुगतान की मांग की।

   ऋणपत्रों के शोधन सम्बन्धी उपर्युक्त सौदों के लिए जर्नल प्रविष्टियां दीजिए। (M.D.S. Univ., Ajmer, 2005)

2. एक सीमित कम्पनी ने 100 रु. वाले 4,000 5% ऋणपत्र पहले से ही निर्गमित किए हुए थे। कम्पनी को उन ऋणपत्रों को 31 मार्च, 2009 के बाद 105 रु. प्रति ऋणपत्र के हिसाब से उचित नोटिस देने के बाद शोधन करने का भी अधिकार है। 31 मार्च, 2009 को डिबेन्चर शोधन फण्ड खाते का शेष 2,17,000 रु. था और उतनी ही राशि व्यापार के बाहर विनियोगों में लगी हुई थी। संचालकों ने निर्गमन की शर्तों के अनुसार 30 सितम्बर, 2009 को ऋणपत्रों का वापस भुगतान करने का नोटिस दे दिया तथा साथ ही ऋणपत्र धारकों को वैकल्पिक अधिकार दिया

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

कि यदि वे चाहे तो नकद भुगतान के स्थान पर कम्पनी का नव निर्गमित 100 रु. वाला एक 7% ऋणपत्र 98 रु. पर 7 रु. नकद प्रति पुराने ऋणपत्र के बदले प्राप्त कर सकते हैं।

2,800 ऋणपत्रों के धारकों ने यह प्रस्ताव स्वीकार किया। शेष धारकों को नकद भुगतान कर दिया गया। कम्पनी ने इस धन की व्यवस्था आंशिक रूप में चालू कोष से तथा आंशिक रूप से विनियोगों को बेचकर की। विनियोग 1,17,400 रु. में बिके, उनका पुस्तक मूल्य 1,02,000 रु. था।

उपर्युक्त सौदों को सम्बन्धित खातों (ब्याज भुगतान के अलावा) मे बतलाइए। (M.D.S. U. Ajmer, 2002)

3. 1 जनवरी, 2007 को जेड लिमिटेड ने 100 रुपये वाले 5,000 12 प्रतिशत ऋणपत्र 5 प्रतिशत बट्टे पर निर्गमित किए जिनका भुगतान आवेदन पर 1 फरवरी, 2007 को या उससे पहले देय था। इन ऋणपत्रों पर ब्याज प्रति 30 जून व 31 दिसम्बर को भुगतान किया जाएगा। कम्पनी के ऋणपत्र निर्गमन के सन्दर्भ में जनता से आवेदन आमंत्रित किए। जनता ने 5,000 ऋणपत्रों के लिये अभिदान किया। कम्पनी ने 1 मार्च, 2007 को ऋणपत्रों का बंटन किया। उसी तिथि को कम्पनी ने बैंक ऑफ राजस्थान लिमिटेड से 9 प्रतिशत वार्षिक ब्याज की दर पर 1,50,000 रु. का चार्ज लिया और 3,00,000 रु. के ऋणपत्रों को समर्थक प्रतिभूति के रुप मे बैंक के पास जमा करा दिया।

ऋणपत्रों के निर्गमिन, बैक से ऋण लेने तथा 2007 में ऋणपत्रों पर ब्याज के भुगतान से सम्बन्धित जर्नल प्रविष्टियां कीजिए। 31 दिसम्बर, 2007 को कम्पनी के चिट्ठे मे ऋणपत्र सम्बन्धी मदों को भी दिखाइए।

5. जैड लिमिटेड के पास 1 जनवरी, 2007 को 100 रुपये वाले 2,000 6 प्रतिशत ऋणपत्रों का शेष बकाया था। ऋणपत्र निर्गम की शर्तों के अनुसार कम्पनी ने तुरन्त शोधन करने के लिए खुले बाजार से स्वंय के निम्न ऋणपत्रों को क्रय किए–

1 मार्च, 2007	:	400 ऋणपत्र 98 रु. प्रति ऋणपत्र (ब्याज सहित)
1 अक्टुबर, 2007	:	800 ऋणपत्र 100.25 रु. प्रति ऋणपत्र (ब्याज सहित)
1 दिसम्बर, 2007	:	200 ऋणपत्र 98.50 रु. प्रति ऋणपत्र (ब्याज रहित)

ऋणपत्रों पर अर्द्धवार्षिक ब्याज 30 जून व 31 दिसम्बर को देय होता है आवश्यक प्रविष्टियां दीजिए यह मानते हुए कि स्वयं के ऋणपत्रों का निरस्तीकरण द्वारा शोधन लाभों में से किया गया है। कम्पनी अपनी वार्षिक लेखा पुस्तकें 31 दिसम्बर को बन्द करती है।

6. 31 दिसम्बर, 2008 को गंगा मिनरल वाटर लि. के 10,00,000 रु. के 100 रु. वाले 7 प्रतिशत ऋणपत्र अदत थे जिनका कि 28 फरवरी, 2009 को 5 प्रतिशत प्रीमियम पर शोधन किया जाना है। 1 जनवरी, 2009 को यह निर्णय लिया गया कि ऋणपत्रधारियों को निम्नलिखित विकल्प दिए जाए–

1 कि वे अपने ऋणपत्रों को 100 रु. वाले 9 प्रतिशत अधिमान अंशों में सम मूल्य पर परिवर्तित करा ले,

2 कि वे अपने ऋणपत्रों को 100 रु. वाले 8 प्रतिशत ऋणपत्रों 94.50 रु. की दर पर परिवर्तित करा ले अथवा

3 नकद राशि प्राप्त कर लें।

28 फरवरी, 2009 तक 4,000 ऋणपत्रधारकों ने 9 प्रतिशत अधिमान अंशों को लेने का निश्चय किया। 3,600 ऋणपत्रधारकों ने 8 प्रतिशत ऋणपत्र खरीदने का विकल्प दिया तथा शेष ऋणधारियों को नकद भुगतान कर दिया गया। ज्ञात कीजिये–

1 निर्गमित अधिमान अंशों का अंकित मूल्य,

2 निर्गमित 8 प्रतिशत ऋणपत्रों का अंकित मूल्य तथा उन पर देय बट्टे की राशि अथवा

3 ऋणपत्रधारियों को नकद भुगतान कर राशि। आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां भी दीजिए। (R.U.B.Com., 2009)

7. What Journal entries will be passed in each of the following cases for issue and redemption of debentures?

(i) 100 12% Deb.of Rs. 100 each issued at Rs. 98 and repayable at par.

(2) 100 12% Deb. of Rs.100 each issued at par and repayable at Rs. 102.

(3) 100 12% Deb. of Rs. 100 each issued at Rs. 98 and repayable at Rs 102.

(4) 100 12% Deb. of Rs. 100 each issued at Rs. 102 and repayable at par.

(5) 100 12% Deb. of Rs 100 each issued at Rs. 100 and repauable at Rs. 98 (MDS Univ., 2009)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

अध्याय 4

अंशों एवं ऋण पत्रों का अभिगोपन

(Underwriting of Shares and Debentures)

विषय सूची (Contents)

4.0 अभिगोपन का अर्थ

4.1 अभिगोपन से सम्बधी शब्दावली

4.1.1 मुख्य अभिगोपन अनुबन्ध

4.1.2 उप–अभिगोपन अनुबन्ध

4.1.3 फर्म अभिगोपन

4.1.4 अभिगोपन कमीशन

4.1.5 दलाली

4.2 अभिगोपकों के दायित्व का निर्धारण

4.3 अभिगोपन कमीशन सम्बन्धी लेखांकन

4.3.1 कम्पनी की पुस्तकों में लेखांकन

4.3.2 अभिगोंपकों की पुस्तकों में लेखांकन

4.4 अभिगोपकों द्वारा कम्पनी से प्राप्त अंशों का मूल्यांकन

स्व परीक्षा प्रश्न (Self Examination Questions)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

किसी भी कम्पनी के लिए अंश व ऋणों का निर्गमन बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। जब तक कोई भी कम्पनी निर्गमित अंशों के न्यूनतम अभिदान (Mininum subscription) (निर्गमित अंशों के 90 प्रतिशत) के लिए जनता से आवेदन प्राप्त नहीं हो जाते तब तक अंश जारी नहीं कर सकती। कम्पनी को आवेदन राशि वापस लौटानी पड़ती है। पर्याप्त पूंजी प्राप्त न हो तो व्यापार को सुगमता से नहीं चलाया जा सकता। इन सब कठिनाईयों से बचने के लिए कम्पनी अपने अंशों के निर्गमन का अभिगोपन करवा लेती है।

अभिगोपन (Underwriting)

अभिगोपन एक गारण्टी प्रंसविदा (Contract) है। इस प्रंसविदा के अन्तर्गत व्यक्ति या व्याक्तियों का समूह इस बात की गारण्टी देते है, कि जनता द्वारा न्यूनतम अभिदान के बराबर अंशों के आवेदन न करने पर शेष अंश ले लेंगे। इस प्रकार गारण्टी देने वाले व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह को अभिगोपक (Underwriters) कहते हैं और इस प्रकार के समझौते को अभिगोपन (Underwriting) कहते है।

4.0 अभिगोपक का अर्थ (Meaning of Underwriters)

कम्पनी के अंशों के न्यूनतम अभिदान के सम्बन्ध में गारण्टी देने वाले अभिगोपक कहलाते हैं। अभिगोपक एक व्यक्ति, व्यक्तियों का समूह, फर्म और कम्पनी हो सकती है। अंशों या ऋणपत्रों का अभिगोपन होने पर उसका विवरण एवं अभिगोपकों के नाम प्रविवरण में दिए जाते हैं, साथ ही अभिगोपकों की आर्थिक स्थिति के सम्बन्ध में भी उल्लेख करना होता है कि यदि अंश या ऋणपत्र जनता द्वारा न खरीदे गए, तो वे इन्हें खरीदने में सक्षम है।

4.1 अभिगोपन से सम्बधी शब्दावली

4.1.1 मुख्य अभिगोपन अनुबन्ध (Main underwriting Contract)–

ऐसा अनुबन्ध कम्पनी एवं अभिगोपकों के मध्य होता है।

4.1.2 उप–अभिगोपन अनुबन्ध (Sub-underwriting Contract)–

यदि मुख्य अभिगोपक को महसूस होता है कि अभिगोपन में जोखिम अत्यधिक है तो वह अपनी पूरी या आंशिक

जोखिम को किसी अन्य को हस्तान्तरित कर सकता है। इससे कम्पनी और मुख्य अभिगोपक के मध्य हुए अनुबन्ध पर कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता है। उप–अभिगोपक मुख्य अभिगोपक के प्रति दायी होता है, कम्पनी के प्रति नहीं। उप–अभिगोपक अभिगोपन कार्य के लिए मुख्य अभिगोपक से कमीशन प्राप्त होता है, इसे उप–अभिगोपन कमीशन कहते है।

4.1.3 फर्म अभिगोपन (Firm underwriting)–

फर्म अभिगोपन में अभिगोपक कम्पनी से एक निश्चित मात्रा में अंश या ऋणपत्र लेने का अनुबन्ध करते हैं, चाहे कम्पनी के पास अंश आवेदन–पत्र अत्यधिक (Over-Subscription) प्राप्त हुए हो तो इसे फर्म अनुबन्ध कहते हैं।

फर्म अभिगोपन की दशा में अनुबन्ध की शर्तों में यह स्पष्ट उल्लेख किया जाना चाहिए कि अभिगोपक का शुद्ध दायित्व निकालते समय फर्म अभिगोपित अंशों को घटाया जाएगा अथवा नहीं। यदि समझौते में ऐसा कोई स्पष्टीकरण नहीं है तो इन्हें घटाया नहीं जाएगा। फर्म अभिगोपन के अन्तर्गत अभिगोपक के दायित्व की गणना को निम्नलिखित उदाहरणों द्वारा समझा जा सकता है–

(1) एक अभिगोपक ने कम्पनी द्वारा जनता को निर्गमित समस्त 1,00,000 अंशों का अभिगोपन अनुबन्ध किया जिसमें 10,000 अंश फर्म अभिगोपन के थे। जनता से 60,000 अंश खरीदने के लिए आवेदन पत्र प्राप्त हुए। इस स्थिति में अभिगोपक का शुद्ध दायित्व (Net Liability) केवल 30,000 अंश क्रय करने का होगा। फर्म अभिगोपन के लिए 10,000 अंश इनके अतिरिक्त होंगे।

(2)एक अभिगोपक ने कम्पनी द्वारा जनता को निर्गमित समस्त 1,00,000 अंशों का अभिगोपन अनुबन्ध किया। इसके अतिरिक्त 10,000 अंश फर्म अभिगोपन के थे। जनता ने 60,000 अंशों के लिए आवेदन किया। इस स्थिति में अभिगोपक का शुद्ध दायित्व 40,000 अंश खरीदने का होगा। फर्म अभिगोपन के लिए 10,000 अंश इनके अतिरिक्त होंगे।

उपर्युक्त दोनों ही परिस्थितियों में अभिगोपन कमीशन 1,00,000 अंशों पर ही दिया जाएगा।

(3)एक कम्पनी द्वारा 1,00,000 अंश जनता को निर्गमित किए गए जिसका 60 प्रतिशत एक्स द्वारा अभिगोपित था। कम्पनी के साथ फर्म अभिगोपन 5,000 अंशों का था। जनता द्वारा 50,000 अंश खरीदने के लिए आवेदन पत्र आए। एक्स को {1,00,000–(50,000+5,000) = 45,000 अंश का 60%} = 27,000 अंश लेने पड़ेंगें। इसके लिए फर्म अभिगोपन के 5,000 अंश और लेने होंगे। एक्स को कमीशन 60,000 अंशों पर मिलेगा।

उपर्युक्त उदाहरण में फर्म अभिगोपित अंश जनता को प्रस्तुत किए गए अंशों का ही भाग है, उनके अतिरिक्त नहीं। अभिगोपकों का दायित्व ज्ञात करते समय जनता के आवेदन–पत्रों के साथ फर्म अभिगोपन के अंशों को भी घटाया जाएगा। अभिगोपक को शेष रहे अंश एवं फर्म अभिगोपन के अंश दोनों लेने पड़ते हैं।

(4) एक कम्पनी द्वारा 1,00,000 अंश जनता को प्रस्तुत किए जिनके 60% अंश एक्स द्वारा अभिगोपित किए गए। जिसमें 50,000 अंशों का फर्म अभिगोपन शामिल था। जनता द्वारा 50,000 अंश खरीदने के लिए आवेदन–पत्र आए। एक्स को {60% of (1,00,000 – 50,000) – 5,000} = 25,000 अंश लेने होंगे। इसके अतिरिक्त 5,000 अंश फर्म अभिगोपन के और लेने पड़ेगें। एक्स को कमीशन 6,000 अंशों पर ही मिलेगा।

4.1.4 अभिगोपन कमीशन (Underwriting commission)

अभिगोपक एक निश्चित कमीशन के बदले ही अभिगोपन अनुबन्ध करते हैं। कम्पनी अधिनियम, 1956 की धारा 76 के अन्तर्गत कम्पनी निम्नलिखित शर्तों की पूर्ति करने पर उन व्यक्तियों तथा संस्थाओं को कमीशन दे सकती है, जो पूंजी प्राप्त करने में मदद करते हैं–

(1) अन्तर्नियमों (Article of Association) में कमीशन देने का अधिकार दिया हो।

(2) कमीशन अंशों के निर्गमित मूल्य के 5% (ऋणपत्रों की दशा में 2.5%) या अन्तर्नियम में निर्धारित दर, जो भी कम हो, से अधिक नहीं होनी चाहिए।

(3) कमीशन नकद, अंश या ऋणपत्रों के रूप में दिया जा सकता है।

(4) कम्पनी द्वारा प्रावधानों की पालना नहीं की जाए तो प्रत्येक दोषी अधिकारी पर 5,000 रु. तक का अर्थ दण्ड लगाया जा सकता है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

4.1.5 दलाली (Brokerage)

स्कन्ध दलाल उस व्यक्ति को कहते हैं, जो कम्पनी को अंशों या ऋणपत्रों को बिकवाने में सहायता करते हैं। एक निश्चित दलाली के बदले में वह जनता से अंश या ऋणपत्र खरीदने के लिए प्रार्थनापत्र लाता है। दलाली अभिगोपन कमीशन से भिन्न है, क्योंकि दलाली की दशा में दलाल कम अंशों का अभिदान होने की दशा में शेष अंशों को स्वयं क्रय करने की कोई गारण्टी नहीं देते तथा दलाली उन अंशों पर दी जाती है जितने अंशों या ऋणपत्रों को खरीदने के लिए प्रार्थनापत्र लाता है। दलाली पर भी कम्पनी अधिनियम, 1956 की धारा 76 (1) के प्रावधान लागू होते हैं। अतः दलाली भी अंशों पर निर्गमित मूल्य का 5% एवं ऋणपत्रों पर निर्गमित मूल्य का 2.5% से अधिक नहीं हो सकती।

लेखा व्यवहार (Accounting treatment)

अभिगोपन कमीशन एक पूंजीगत हानि है अतः इसे पूंजीगत लाभों से अपलिखित किया जा सकता है। इसे स्थगित आयगत व्यय (Defered revenue expenditure) के रूप में स्थिति विवरण (Balance sheet) के सम्पत्ति पक्ष में दिखाया जाएगा।

Illustration 1

सुनील लि. ने 100 रु. वाले 5,000 10% ऋणपत्रों का 5% प्रीमियम पर निर्गमन किया। हेरम्ब एण्ड कम्पनी ने उक्त निर्गमन के 70% का अभिगोपन किया तथा उसको कमीशन विधान द्वारा निर्धारित अधिकतम दर के अनुसार देय है। 4,000 ऋणपत्रों के लिए जनता से प्रार्थनापत्र आये जिनको स्वीकार कर लिया गया और जिनका पूरा भुगतान प्राप्त हो गया। कम्पनी तथा अभिागोपक की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियां दीजिए। अभिगोपक की पुस्तकों में ऋणपत्र खाता दिखाइए।

Solution

Journal of Sunil Ltd.

	Particulars			Dr. (Rs.)	Cr. (Rs.)
	Bank	A\c	Dr.	4,40,000	
	To Debenture Application A\c				4,40,000
	(Application money received on 4,000 Debentures.)				
	Debenture Application	A\c	Dr.	4,40,000	
	To 10% Debenture	A\c			4,00,000
	To Premium on issue of Debenture A\c				40,000
	(Amount received on debenture applicationstransferred on allotment.)				
	Heramb's	A\c	Dr.	77,000	
	To 10% Debenture	A\c			70,000
	To Premium on issue of Debenture A\c				7,000
	(Allotment of 700 debentures underwriter.)				
	Underwring Commission	A\c	Dr.	8,750	
	To Heramb's	A\c			8,750
	(Underwring Commissiom @ 2.5% (max.) allowed by law on 3,500 debentures calculated at the issue price of Rs. 110 each.)				
	Bank	A\c	Dr.	68,250	
	To Heramb's	A\c			68,250
	(Final payment received from underwriters)				

Journal of Heramb Ltd. (Underwriters)

	Particulars			Dr. (Rs.)	Cr. (Rs.)
	10% Debenture in Sunil Ltd.	A\c	Dr.	77,000	
	To Sunil Ltd.	A\c			77,000
	(700 debentures of Rs. 110 each alloted by Sunil Ltd.)				
	Sunil Ltd.	A\c	Dr.	8,750	
	To Underwring Commission A\c				8,750
	(Commission receivable.)				
	Sunil Ltd.	A\c	Dr.	68,250	
	To Bank A\c				68,250

Cont.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

	(final payment made to company)			
	Underwriting Commission A\c	Dr.	8,750	
	To 10% Debenture in Sunil Ltd. A\c			8,750
	(Commission transferred into share A\c)			

Ledger

10% Debenture in Sunil Ltd.

Date of Intimation	To Sunil Ltd.	Rs. 77,000	Date of Transfer	By Underwriting Commission A\c	Rs. 8,500
			End of Year	By Balance c\d	68,500
		77,000			77,000

4.2 अभिगोपकों के दायित्व का निर्धारण (Determination of the Liability of underwriters)

1. एक अभिगोपक होने पर (In case of one underwriter)– एक अभिगोपक होने पर पूर्ण अभिगोपन की दशा में शेष रहे सम्पूर्ण अंश लेने होंगे। आंशिक अभिगोपन की दशा में यह माना जाएगा कि कुल अभिदान में से अभिगोपकों द्वारा उतने ही अंशों के लिए अभिदान प्राप्त हुआ है जिस अनुपात में उन्होंने अभिगोपन अनुबन्ध किया है और उसे उसी अनुसार शेष अंश लेने होंगे।

2. एक से अधिक अभिगोपक होने पर (In case of more then one underwriter)– एक से अधिक अभिगोपक होने पर प्रत्येक अभिगोपक का दायित्व अपने–अपने हिस्से के अंशों के सम्बन्ध में होता है। प्रत्येक अभिगोपक द्वारा अपनी मोहर (Seal) लगाकर अंश खरीदने के लिए आवेदन निर्गमित किए जाते हैं। ऐसे आवेदनों को चिह्नित आवेदन–पत्र (Marked application) कहते हैं। यदि किसी आवेदन पर ऐसी मोहर अथवा चिह्न न हो तो उन्हें अचिह्नित आवेदन–पत्र कहते हैं। किस अभिगोपक का दायित्व कितना है यह निम्नलिखित चरणों में ज्ञात किया जा सकता है–

1. सकल दायित्व (Gross Liability)– सर्वप्रथम तालिका में सभी अभिगोपकों के नाम व अनुबन्ध के अनुसार अभिगोपित अंशों की संख्या लिख दी जाती है।

2. चिह्नित अंशों को घटाना (Deduct market applications)– अभिगोपित अंशों में चिह्नित अंशों को घटा दिया जाता है शेष बचा अभिगोपकों का सकल दायित्व होगा।

3. अचिह्नित अंशों को घटाना (Deduct unmarket Applications)– अभिगोपकों के सकल दायित्व में प्रत्येक अभिगोपक के हिस्से में आए अचिह्नित अंशों को घटा दिया जाता है। शेष बचा अभिगोपकों का शुद्ध दायित्व होगा। अचिह्नित अंशों का लाभ सबको समान या किसी विशेष अनुपात में बांट दिया जाता है।

4. फर्म अभिगोपन की दशा में (In case of firm Underwriter)– फर्म अभिगोपन की दशा में अभिगोपक स्वयं के आवेदित अंशों को चिह्नित कर सकते हैं परन्तु कम्पनी इन्हें अचिह्नित अंश मानकर दायित्व निर्धारित कर सकती है। इसके विपरीत इन्हें चिह्नित अंश मानकर उनका शुद्ध दायित्व निर्धारित किया जा सकता है।

5. ऋणात्मक शेष की दशा में (In case of Negative Balance)– ऋणात्मक शेष को अभिगोपकों में अनुबन्ध की शर्तों के अनुसार घटा दिए जाते हैं। इस सम्बन्ध में स्पष्ट उल्लेख न होने पर ऋणात्मक शेष के बराबर अंश दूसरे अभिगोपकों के दायित्व में से सकल दायित्व के अनुपात में घटाये जाएंगे।

6. पुनः ऋणात्मक शेष की दशा में (In case of further Negative Balance)– यदि एक बार ऋणात्मक शेष का लाभ देने के पश्चात् अन्य किसी अभिगोपक का शेष ऋणात्मक हो जाए तो उपर्युक्त प्रक्रिया पुनः अपनाई जाएगी।

7. शुद्ध दायित्व (Net Liability)– अंत में शेष अंश प्रत्येक अभिगोपक का शुद्ध दायित्व होगा।

Illustration 2

अर्पित लि. ने 100 रु. वाले 1,25,000 समता अंशों का सार्वजानिक निर्गमन किया। सम्पूर्ण निर्गमन तीन पक्षकारों द्वारा निम्नलिखित प्रकार से अभिगोपित किया–

'अ' ने 75,000, अंशों का, 'ब' ने 31,250 अंशों का, तथा 'स' ने 18,750 अंशों का। अ ब तथा स ने फर्म अभिगोपन के अन्तर्गत भी क्रमशः 10,000, 3,750 तथा 12,500 अंश लेना स्वीकार किया। अभिगोपकों के आवेदन–पत्र अचिह्नित थे।

कम्पनी द्वारा निर्गमित 1,25,000 अंशों हेतु फर्म अभिगोपन सहित कुल 88,750 अंशों के लिए आवेदन–पत्र प्राप्त हुए,

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

जिसमें 'अ' के 12,500, 'ब' के 25,000, 'स' के 6,250 चिह्नित अंश भी शामिल थे। अभिगोपकों के दायित्व का निर्धारण कीजिए यदि–

(अ) यदि फर्म अभिगोपित अंशों को चिह्नित अंशों में शामिल न रखा जाए।

(ब) यदि फर्म अभिगोपित अंशों को चिह्नित अंशों में शामिल रखा जाए।

Solution

Total Liability of Underwriters

(A) If Shares of Firm Underwriting are not deemed as Marked Shares

Particullars	X	Y	Z	Total
Shares of firm underwriting	10,000	3,750	12,500	26,250
Gross Liability (12 : 5 : 3)	75,000	31,250	18,750	1,25,000
Less: Marked shares excluding firm underwriting	12,500	25,000	6,250	43,750
	62,500	6,250	12,500	81,250
Less: Unmarked shares in ratio of gross liability {88,750 - (12,500 + 25,000 + 6,250)}= 45,000	27,000	11,250	6,750	45,000
Net Liability	35,500	(5,000)	5,750	36,250
Liability of B transferred to A and C (12 : 3)	(4,000)	5,000	(1,000)	Nil
	31,500	Nil	4,750	36,250
Add: Shares of firm underwriting	10,000	3,750	12,500	26,250
Total Liability	41,500	3,750	17,250	62,500

Total Liability of Underwriters

(B) If Shares of Firm Underwriting are deemed as Marked Shares

Particullars	X	Y	Z	Total
Shares of firm underwriting	10,000	3,750	12,500	26,250
Gross Liability (12 : 5 : 3)	75,000	31,250	18,750	1,25,000
Less: Marked shares excluding firm underwriting A (12,500+10,000), B (25,000+3,750), C (6,250+12,500) Shares	22,500	28,750	18,750	70,000
	52,500	2,500	Nil	55,000
Less: Unmarked shares in ratio of gross liability {88,750 - (12,500 + 25,000 + 6,250) - (10,000 +3,750+12,500)}= 18,750	11,250	4,688	2,812	18,750
	41,250	(2,188)	(2,812)	36,250
Liability of B and C transferred to A	(5,000)	2,188	2,812	Nil
Net Liability	36,250	Nil	Nil	36,250
Add: Shares of firm underwriting	10,000	3,750	12,500	26,250
Total Liability	46,250	3,750	12,500	62,500

4.3 अभिगोपन कमीशन सम्बन्धी लेखांकन (Accouting for underwriting commission)

4.3.1 कम्पनी की पुस्तकों में लेखांकन (Accounting treatment in the books of company)

कमीशन एक व्यय है जिसे कम्पनी अपनी पुस्तकों में डेबिट करेगी। अगर अभिगोपक को कम्पनी के अंश लेने पड़े तो वह अपना कमीशन काटकर शेष राशि का भुगतान कम्पनी को करेगा। कमीशन उतने अंशों पर मिलेगा जितने अंशों के लिए अभिगोपन अनुबन्ध किया गया है।

कम्पनी की पुस्तकों में

1 अभिगोपन कमीशन देय होने पर (for underwriting commission)

Underwring Commission A\c Dr.

To Underwriter's A\c

(Underwring Commmissiom due)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

2 अभिगोपकों को शेष अंश निर्गमित करने पर (To issue balance shares to underwriters)

Underwriter's A\c Dr.

To Equity share capital

(Share allothed to underwriters under underwriting agreement)

3. अभिगोपकों से शेष राशि प्राप्त होने पर (To Receive final payment)

Bank A\c Dr.

To underwriter's A\c

(Final payment received from underwriters)

4. यदि कम्पनी द्वारा अभिगोपकों का भुगतान किया जाए

Underwriter's A\c Dr.

To Bank

(final payment made to underwriter)

5. कमीशन खाते को अपलिखित करने पर (To write-off commission Account)

Reserve\ premium\ P&L A\c Dr.

To underwriting commission A\c

(Commission Account written off)

Illustration 3

1 जनवरी, 2004 को समामेलित होने वाली वाई लिमिटेड का समामेलन हुआ और उसने 10 रु. वाले 20,000 ईक्विटी अंशों का सम–मूल्य पर निर्गमन करने हेतु आवेदन–पत्र मांगते हुए एक प्रविवरण निर्गमित किया। अंशों के सम्पूर्ण निर्गमन हेतु ए, बी, व सी द्वारा अगलिखित प्रकार से अभिगोपन किया गया–

ए : 10,000 अंश, बी 6,000 अंश तथा सी 4,000 अंश।

16,000 अंशों के लिए आवेदन–पत्र प्राप्त हुए जिनमें से चिह्नित अंश निम्नलिखित प्रकार से थे–

ए 8,000 अंश, बी 2,840 अंश तथा सी 4,160 अंश।

प्रत्येक अभिगोपक का शुद्ध दायित्व ज्ञात कीजिए तथा कम्पनी की पुस्तकों में यह मानते हुए आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिए कि अभिगोपन कमीशन कम्पनी विधान द्वारा स्वीकृत अधिकतम दर पर देय है।

(MDS. Univ., 2004)

Solution

Total Liability of Underwriters (No. of Shares)

	Particulars	A	B	C	Total
	(Ratio of underwriting)	50%	30%	20%	100%
	Gross Liability (5 : 3 : 2)	10,000	6,000	4,000	20,000
Less:	Marked shares	8,000	2,840	4,160	15,000
		2,000	3,160	(160)	5,000
Less:	Liability of C transferred to A and B (5 : 3)	(100)	(60)	160	Nil
	Shares before crediting unmarked shares	1,900	3,100	Nil	5,000
Less:	Unmarked shares in ratio of gross liability (1,000)	625	375	Nil	1,000
	Net Liability	1,275	2,725	Nil	4,000

Computation of Commission (Amount in Rs.)

Particulars	A	B	C	Total
Gross Liability @ Rs. 10	1,00,000	60,000	40,000	2,00,000
Commission @ 5%	5,000	3,000	2,000	10,000

कम्पनी की पुस्तकों में अंशों के निर्गमन के सम्बन्ध में प्रविष्टियां अग्र प्रकार से होगी–

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Journal Entries in the Books of Company

		Dr.	Cr.
Bank A\c Dr.		1,60,000	
To Equity Share Application A\c			1,60,000
(Application money received on 16,000 shares.)			
Equity Share Application A\c Dr.		1,60,000	
To Equity Share Capital A\c			1,60,000
(Amount received on Share applications transferred on allotment.)			
Underwring Commission A\c Dr.		10,000	
To A's A\c			5,000
To B's A\c			3,000
To C's A\c			2,000
(Underwring Commmissiom due)			
A's A\c Dr.		12,750	
B's A\c Dr.		27,250	
To Equity Share Capital A\c			40,000
(Share allotted to underwriters under underwriting agreement)			
Bank A\c Dr.		32,000	
To A's A\c			7,750
To B's A\c			24,250
(Final payment received from underwriters)			
C's A\c Dr.		2,000	
To Bank A\c			2,000
(final payment made to underwriter)			

Working Notes

1 अन्य सूचना के अभाव में किसी भी अभिगोपक के ऋणात्मक शेष का लाभ अन्य अभिगोपकों को उनके द्वारा अभिगोपित अंशों के अनुपात में दिया जाएगा।

2 कम्पनी अधिनियम 1956 की धारा 76 के अनुसार अधिकतम कमीशन अंश के निर्गमित मूल्य के 5 प्रीतिशत के बराबर दिया जा सकता है।

3 'अ' एवं 'ब' को कम्पनी के अंश लेने होंगे। अतः इसे कमीशन काटकर शेष राशि कम्पनी को भुगतान करनी होगी।

4 अतं में 'स' का कोई भी दायित्व शेष नहीं रहता है अतः उसे अंश नहीं लेने होंगे। 'स' को कम्पनी कमीशन का भुगतान नकद में करेगी।

5. अचिह्नित अंश 16,000 − (8,000 + 2,840 + 4,160) = 1,000

4.3.2 अभिगोपकों की पुस्तकों में लेखांकन (Accounting treatment in the Books of underwriters)

अभिगोपकों के लिए कमीशन एक आय है अतः वे कमीशन खाते को क्रेडिट करेंगें

1 अभिगोपन कमीशन देय होने पर (for underwriting commission)

X Company A\c Dr.
To Underwriting Commission A\c
(Underwriting commission due from X company)

2. कम्पनी से शेष अंश प्राप्त होने पर (For shares Received from company)

Shares / Debentures (Investment) in X company A\c Dr.
To X comapny A\c
(Shares / Debentures Received from company)

3. कमीशन खाते को अंश खाते में हस्तान्तरित करने पर (To transfer commission into shares account)

Underwriting commission A\c Dr.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

To shares / Debentares A\c

(Commission transferred into share A\c)

4. कम्पनी को शेष राशि भुगतान करने पर (To make final payment)

X Company A\c Dr.

To Bank A\c

(final payment made to company)

टिप्पणी : यदि कम्पनी का शेष डेबिट हो तो कम्पनी से प्राप्त राशि के लिए विपरीत प्रविष्टि की जायेगी।

5 यदि कम्पनी से कोई अंश न लेने हो तो कमीशन खाते को बन्द करने पर

Underwriting commission A\c Dr.

To P&L A\c

(Commission transferred to P&L A\c)

4.4 अभिगोपकों द्वारा कम्पनी से प्राप्त अंशों का मूल्यांकन

(Valuation of shares by underwriters received from company)

कम्पनी से प्राप्त अंशों का बाजार मूल्य निर्गमित मूल्य से कम हो तो अभिगोपकों द्वारा प्राप्त अंशों की लागत में कमीशन घटा देंगे शेष राशि ही अंशों की लागत मानी जाती है। यदि वर्ष की समाप्ति तक इन्हें नहीं बेचा जाए तो स्टॉक की तरह ही इनका मूल्यांकन लागत मूल्य या बाजार मूल्य में जो भी कम हो पर किया जाएगा।

Illustration 4

दी अण्डरराइटर्स प्रा. लि. ने लक्की लिमिटेड के 100 रु. वाले 50,000 नए समता अंशों के निर्गमन का अभिगोपन अनुबन्ध किया। कमीशन 5% तय हुआ जिसका भुगतान 40% नकद में देय है तथा शेष राशि पूर्ण प्रदत्त अंशों में चुकानी है। जनता ने 30,000 अंशों के लिए प्रार्थनापत्र भेजे तथा बाकी अंश दी अण्डरराइटर्स प्रा. लि. को लेने पड़े। बाद में इन अंशों को 20% बट्टे पर उद्धत किया गया।

दी अण्डरराइटर्स प्रा. लि. एवं लक्की लिमिटेड की पुस्तकों में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिए। अभिगोपकों की पुस्तकों में आवश्यक खाते भी खोलिए।

(Raj. Univ., B.Com., 2005)

Solution

Journal of Lucky Ltd.

	Bank A\c Dr. To Equity Share Application A\c (Application money received on 30,000 Shares @ Rs. 100.)	30,00,000	30,00,000
	Equity Share Application A\c Dr. To Equity Share Capital A\c (Application money transferred to capital A\c.)	30,00,000	30,00,000
	Underwring Commission A\c Dr. To Underwriters Pvt. Ltd. A\c (Underwring Commmissiom due to Underwriters.)	2,50,000	2,50,000
	Underwriters Pvt. Ltd. A\c Dr. To Equity Share Capital A\c (Shares issued to underwriters equal to balance of liability and 60% of commission of Rs. 2,50,000.)	21,50,000	21,50,000
	Bank A\c Dr. To Underwriters Pvt. Ltd. A\c (Final payment received from underwriters)	19,00,000	19,00,000

Journal of Underwriters Pvt. Ltd. (Underwriters)

	Lucky Ltd. A\c Dr. To Underwring Commission A\c	2,50,000	2,50,000

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Date	Particulars	L.F.	Dr. (Rs.)	Cr. (Rs.)
	(Commission receivable.)			
	Shares in Lucky Ltd. A\c Dr.		21,50,000	
	To Lucky Ltd. A\c			21,50,000
	(Lucky Ltd issue shares equal to balance of liability and 60% of commission of Rs. 2,50,000.)			
	Lucky Ltd. A\c Dr.		19,00,000	
	To Bank A\c			19,00,000
	(final payment made to company)			
	Underwriting Commission A\c Dr.		2,50,000	
	To Shares in Lucky Ltd. A\c			2,50,000
	(Commission transferred into share A\c)			
	Profit & Loss A\c Dr.		1,80,000	
	To Shares in Lucky Ltd. A\c			1,80,000
	(Loss on valuation of Shares transferred.)			

Ledger

Shares in Lucky Ltd. A\c

		Rs.			Rs.
	To Lucky Ltd.	21,50,000		By Underwriting Commission A\c	2,50,000
				By P & L A\c	1,80,000
				By Balance c\d	17,20,000
		21,50,000			21,50,000

Lucky Ltd. A\c

		Rs.			Rs.
	To Underwriting Commission A\c	2,50,000		By Shares in Lucky Ltd. A\c	21,50,000
	To Bank A\c	19,50,000			
		21,50,000			21,50,000

Illustration 5

शर्मा इण्डस्ट्रीज लिमिटेड ने 10 रु. वाले 10,00,000 अंश जनता में 12 रु. प्रति अंश की दर पर निर्गमित किये और इसके अतिरिक्त शर्मा इण्डस्ट्रीज लिमिटेड ने 1,00,000 अंश प्रवर्तकों के लिए सुरक्षित रखे। इसके लिए चार अभिगोपकों ने निम्नानुसार अभिगोपन अनुबन्ध किया और जनता से प्राप्त चिह्नित एवं अचिह्नित अंशों के लिए आवेदन अग्रलिखित प्रकार से थे। कमीशन अधिकतम दर पर था।

	अ	ब	स	द	कुल
अभिगोपित अंश	1,00,000	2,00,000	3,00,000	4,00,000	10,00,000
फर्म अभिगोपन	20,000	30,000	40,000	10,000	1,00,000
चिह्नित अंश	1,18,000	80,000	2,52,000	2,48,000	6,98,000
अचिह्नित अंश					1,80,000
					8,78,000

प्रत्येक अभिगोपक का शुद्ध दायित्व यह मानते हुए ज्ञात करें कि फर्म अभिगोपन के अंश चिह्नित अंशों में सम्मिलित थे। (R.U.B.Com., 2006 & Kota Univ., 2009)

Solution

Total Liability of Underwriters

	Particullars	A	B	C	D	Total
	(Ratio of underwriting)	10%	20%	30%	40%	100%
	Gross Liability (1 : 2 : 3 : 4)	1,00,000	2,00,000	3,00,000	4,00,000	10,00,000
Less :	Marked Shares including Firm	1,18,000	80,000	2,52,000	2,48,000	6,98,000
		(18,000)	1,20,000	48,000	1,52,000	3,02,000

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Less :	Liability of A transferred to B, C and D (2 : 3 : 4)	18,000	(4,000)	(6,000)	(8,000)	Nil
	Shares before crediting unmarked Shares	Nil	1,16,000	42,000	1,44,000	3,02,000
Less :	Unmarked shares in ratio of 2:3:4	Nil	40,000	60,000	80,000	1,80,000
	Balance Liability	Nil	76,000	(18,000)	64,000	1,22,000
Less :	Liability of C transferred to B and D (2 : 4)	Nil	(6,000)	18,000	(12,000)	Nil
	Liability before Firm Underwriting	Nil	70,000	Nil	52,000	1,22,000
Add :	Firm Underwriting	20,000	30,000	40,000	10,000	1,00,000
	Liability after Firm Underwriting	20,000	1,00,000	40,000	62,000	2,22,000

Illustration 6

राजकरण लि. ने 100 रु. वाले 1,00,000 10% ऋणपत्र निर्गमित किए। समस्त निर्गमन का मैसर्स जयन्त एण्ड कम्पनी द्वारा अभिगोपन किया गया। 75,000 ऋणपत्रों के लिए प्रार्थना पत्र आए तथा उनका बंटन कर दिया गया। अभिगोपकों ने अपने दायित्व को पूरा किया और उनको ऋणपत्रों के अंकित मूल्य पर 2.5% की दर से कमीशन का भुगतान कर दया। दोनों पक्षों की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियां दीजिए तथा खाते खोलिए।

Solution :

Journal Entries in the Books of Company

	Bank A\c Dr. To Debenture Application A\c (Amount received on 7,500 Debenture Application.)	75,00,000	75,00,000
	Debenture Application A\c Dr. To 10% Debenture A\c (Debenture Application Amount transfer to 10% Debenture A\c)	75,00,000	75,00,000
	Jyant & Co. A\c Dr. To 10% Debenture A\c (Debenture allotted to underwriters under underwriting agreement)	15,00,000	15,00,000
	Underwring Commission A\c Dr. To Jyant & Co. A\c (Underwring Commmissiom due)	25,000	25,000
	Bank A\c Dr. To Jyant & Co. A\c (Final payment received from underwriters)	14,75,000	14,75,000

Illustration 7

अनिल कम्पनी लि. ने 50 रु. वाले 1,00,000 अंश जनता को निर्गमित किए। इन अंशों के 70 प्रतिशत भाग हेरम्ब लि. ने अभिगोपन किए। जनता ने 70,000 अंशों के लिए अभिदान किए। आप निम्नलिखित में से प्रत्येक दशा में अभिगोपक का दायित्व एवं कमीशन ज्ञात कीजिए। यदि उन्हें विधान द्वारा स्वीकृत कमीशन देना है।

(1) यदि अभिगोपकों ने कोई भी फर्म अभिगोपन नहीं किया हो।

(2) यदि अभिगोपकों ने उपर्युक्त के अतिरिक्त 10,000 अंशों के लिए फर्म अभिगोपन किया हो।

(3) यदि अभिगोपन अनुबन्ध में 10,000 अंश फर्म अभिगोपन में शामिल हो।

Solution

1. यदि अभिगोपकों ने कोई भी फर्म अभिगोपन नहीं किया हो–

	(Shares)
Gross Liabilities (70% of 1,00,000)	70,000
Less: Shares Subscribed by them (70% 70,000)	49,000
Net Liability	21,000

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

2. यदि अभिगोपकों ने उपर्युक्त के अतिरिक्त 10,000 अंशों के लिए फर्म अभिगोपन किया हो।

Net Liability = 70% of {1,00,000 - (70,000 + 10,000)}

= 14,000 Shares. In addition 10,000 shares of Firm underwriting will be taken by underwriters.

(3) यदि अभिगोपन अनुबन्ध में 10,000 अंश फर्म अभिगोपन में शामिल हो।

Net Liability = {70% of (1,00,000 - 70,000) - 10,000}

= 11,000 Shares + 5,000 Shares of Firm underwriting.

In all the three cases commission will be calculated as follows	Rs.
70,000 Shares under agreement @ Rs. 50	35,00,000
Commission @ 5% of 35,00,000	1,75,000

स्व परीक्षा प्रश्न (Self Examination Questions)

अति–लघुत्तरात्मक प्रश्न (Very-Short Answer Type Questions)

1. अभिगोपन अनुबंध से आप क्या समझते है?
2. दलाली एवं अभिगोपन कमीशन में क्या अन्तर है?
3. कम्पनी अधिनियम के अनुसार अंशों एवं ऋण–पत्रों के निर्गमन पर अभिगोपन कमीशन की अधिकतम दर क्या है? (R.U.B.Com., 2004)

लघुत्तरात्मक प्रश्न (Short Answer Type Questions)

1 चिह्नित एवं अचिह्नित आवेदन–पत्रों से आप क्या समझते हैं? इनके आधार पर अभिगोपकों का दायित्व किस प्रकार निर्धारित होता है? (R.U.B.Com., 2004)

2 एक कम्पनी ने 10 रु. वाले 20,000 ईक्विटी अंशों के निर्गमन के लिए प्रविवरण निर्गमित किया। सम्पूर्ण निर्गमन इस प्रकार अभिगोपित था–

अ– 10,000 अंश, ब– 6,000 अंश एवं स– 4,000 अंश।

16,000 अंशों के लिए आवदेन–पत्र प्राप्त हुए जिसमें से चिह्नित आवेदन पत्र इस प्रकार थे–

अ– 8,000 अंश, ब– 2,850 अंश एवं स– 4,150 अंश

प्रत्येक अभिगोपन के दायित्व की गणना कीजिए।

Ans A- 1,281 Shares, B- 2,719Shares,

(R.U.B.Com., 2008)

3 फर्म अभिगोपन क्या है?

4 उप–अभिगोपन से आप क्या समझते है?

5 एक कम्पनी द्वारा 30,000 अंश जनता को प्रस्तुत किए गए। इसका 60% अंश अभिगोपित थे। इसमें फर्म अभिगोपन 6,000 अंशों का था। जनता द्वारा 15,000 अंश खरीदने के लिए प्रार्थना–पत्र आए।

ज्ञात कीजिए– (i) अभिगोपक का दायित्व, (ii) अंशों की संख्या जिन पर कमीशन देय होगा।

(Bikaner Univ., 2009)

Ans (i) 3,000+6,000= 9,000 Shares (ii) 18,000 shares

सैद्वान्तिक प्रश्न (Theoretical Questions)

1 विस्तृत टिप्पणियां लिखिए–

(अ) अभिगोपन (ब) उप–अभिगोपन (स) फर्म अभिगोपन

2 अंशों एवं ऋणपत्रों के अभिगोपन से आप क्या समझते है? अभिगोपन कमीशन के भुगतान के लिए कम्पनी अधिनियम, 1956 के प्रावधानों को समझाइए तथा सुदृढ़ अभिगोपन का आशय स्पष्ट करें।

व्यावहारिक प्रश्न (Practical Questions)

1. देवेन्द्र लि. ने 100 रु. वाले 1,25,000 समता अंशों का सार्वजानिक निर्गमन किया। जिस पर आवेदन पर 50 रु. देय थे। सम्पूर्ण निर्गमन चार पक्षकारों द्वारा अभिगोपित किया गया– अ, ब, स, तथा द क्रमशः 30%, 25%, 25%

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

व 20% अनुपात में। अनुबन्ध की शर्तों के अनुसार अभिगोपित राशि पर 2% कमीशन देय था।

अ ब स तथा द ने सुदृढ़ अभिगोपन के अन्तर्गत भी क्रमशः 4,000, 6,000, शून्य तथा 15,000 अंश लेना स्वीकार किया। कुल अभिदान सुदृढ़ (फर्म) अभिगोपन के अतिरिक्त किन्तु चिह्नित आवेदनों को सम्मिलित करते हुए 9,000 अंशों का हुआ। चिह्नित आवेदन अग्र प्रकार से प्राप्त हुए– अ– 24,000, ब– 20,000, स– 12,000 तथा द 24,000. प्रत्येक अभिगोपक का दायित्व फर्म अभिगोपन को अचिह्नित मानते हुए ज्ञात कीजिए तथा कम्पनी की पुस्तकों में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां दीजिए।

(M.L.S.Univ.udaipur, 2000)

Ans Total Liability of A- 4,750, B- 6,625, C- 8625 and D-15,000 Shares

2. जयपुर कम्पनी लिमिटेड ने 100 रुपये वाले 12,500 ऋणपत्रों का सार्वजनिक निर्गमन किया जिसमें आवदेन 60 रु. देय थे। सम्पूर्ण निर्गमन का चार अभिगोपकों द्वारा निम्नलिखित प्रकार से अभिगोपन किया गया है–

पी– 20 प्रतिशत, क्यू– 30 प्रतिशत, आर– 10 प्रतिशत, एस 40 प्रतिशत।

अभिगोपन अनुबन्ध की शर्तों के अनुसार कम्पनी अधिनियम, 1956 की धारा 76 द्वारा स्वीकृत अधिकतम दर पर देय था। इसमे से पी, क्यू, आर तथा एस ने सुदृढ़ अभिगोपन के अन्तर्गत भी क्रमशः, शून्य, 800 तथा 500 ऋण पत्र लेना स्वीकार किया। कुल अभिदान सुदृढ़ अभिगोपन तथा चिह्नित आवेदनों को सम्मिलित करते हुए 7,000 ऋणपत्रों का हुआ। चिह्नित आवेदन निम्न प्रकार प्राप्त हुए–

पी– 1,350, क्यू– 650, आर– 750 तथा 1,500

अभिगोपन अनुबन्ध में यह भी तय किया गया है कि किसी अभिगोपक के दायित्व का निर्वाह होने के बाद यदि आधिक्य ऋणपत्र शेष रहते हैं, तो शेष ऋणपत्र सभी अभिगोपकों में समान रूप से वितरित किए जाएगें। सुदृढ अभिगोपन वाले ऋणपत्रों को चिह्नित आवेदन पत्र मानते हुए आपको प्रत्येक अभिगोपक का दायित्व ज्ञात करना है तथा प्रत्येक अभिगोपक के कमीशन की गणना भी करनी है।

(J.N.V. Univ Jodhpur, 2003)

Ans Total Liability of P- Nil, Q- 2,825, R- Nil and S-2,675 Shares

3. एक बैंकिंग कम्पनी ने बी कम्पनी लिमिटेड द्वारा 10 रुपये वाले 10,000 अंशों के नये निर्गमन का अभिगोपन किया। कमीशन 5 प्रतिशत तय हुआ जिसका 75 प्रतिशत पूर्ण प्रदत अंशों में तथा 25 प्रतिशत नकद में देय था। इन अंशों के अभिगोपन के अतिरिक्त बैंकिंग कम्पनी ने साधारण गतिविधि में 2,500 और अंशों के लिए फर्म आवदेन किया अभिगोपन समझौते के एक अनुच्छेद के अनुसार इन अंशों पर कोई कमीशन देय नहीं है।

जनता द्वारा निर्गमन का समस्त अभिदान नहीं किया गया तथा बैंकिंग कम्पनी को अभिगोपित अंशों का 25 प्रतिशत लेना पड़ा। बाद में बी कम्पनी लिमिटेड के अंशों का मूल्य 12.50 प्रतिशत बट्टे पर उद्धत किया गया। बैंकिंग कम्पनी की पुस्तकों में, स्थिति बतलाते हुए खाते खोलिए।

(M.D.S. Univ, 2005)

Ans Balance of Shares in B Company Ltd. A\c Rs. 47,031.25

4. अनिल कम्पनी लि. ने 100 रु. वाले 1,00,000 अंश जनता को निर्गमित किए। इन अंशों के 80 प्रतिशत भाग हेरम्ब लि. ने अभिगोपन किए। जनता ने 60,000 अंशों के लिए अभिदान किए। आप निम्नलिखित में से प्रत्येक दशा में अभिगोपक का दायित्व एवं कमीशन ज्ञात कीजिए। यदि उन्हें विधान द्वारा स्वीकृत कमीशन देना है।

(1) यदि अभिगोपकों ने कोई भी फर्म अभिगोपन नहीं किया हो।

(2) यदि अभिगोपकों ने उपर्युक्त के अतिरिक्त 15,000 अंशों के लिए फर्म अभिगोपन किया हो।

(3) यदि अभिगोपन अनुबन्ध में 15,000 अंश फर्म अभिगोपन में शामिल हो।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

अध्याय– 4
अन्तिम खाते
(Final Accounts)

विषय सूची (Contents)

4.0 वार्षिक खाते एवं स्थिति विवरण
4.1 स्थिति–विवरण एवं लाभ–हानि खाते का प्रारूप एवं विषय सामग्री
4.2 अन्तिम खातों से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण समायोजन
4.2.1 ऋणपत्रों पर ब्याज
4.2.2 संचालकों की फीस
4.2.3 अंकक्षकों का पारिश्रमिक
4.2.4 करारोपण
4.3 प्रबन्धकीय पारिश्रमिक
4.4 प्रबन्धकीय पारिश्रमिक के लिए लाभ की गणना
स्व परीक्षा प्रश्न (Self Examination Questions)

कम्पनी अधिनियम की धारा 209 के अनुसार प्रत्येक कम्पनी को अपने रजिस्टर्ड कार्यालय में उचित लेखा पुस्तकें रखना आवश्यक है जिनमें निम्नलिखित तथ्यों की जानकारी प्राप्त हो जाए–

1. कम्पनी द्वारा किए गए व्यय एवं प्राप्त की गई आय,
2. कम्पनी द्वारा किए गए माल का समस्त क्रय–विक्रय,
3. कम्पनी की समस्त सम्पत्तियां एव दायित्व,
4. ऐसी कम्पनी की दशा में जो कि उत्पादन, निर्माण अथवा खान सम्बन्धी क्रियाओं में संलग्न हैं, उसके पदार्थों अथवा कीमत सम्बन्धी अन्य बातों का विवरण लेखा पुस्तकों में देना होगा, यदि इस प्रकार की कम्पनियों द्वारा ऐसा किया जाना केन्द्रीय सरकार द्वारा आवश्यक समझा जाता है।

4.0 वार्षिक खाते एवं स्थिति विवरण (Annual Accounts and Balance Sheet)

कम्पनी अधिनियम की धारा 210 के अनुसार

1. कम्पनी के संचालकों को प्रत्येक वार्षिक साधारण सभा में एक स्थिति विवरण तथा लाभ–हानि खाता प्रस्तुत करना आवश्यक होता है तथा गैर व्यपारिक संस्था की दशा में लाभ–हानि खाते के स्थान पर एक आय–व्यय खाता प्रस्तुत करना होता है।
2. खाते चालू वित्तीय वर्ष (Financial year) से सम्बन्धित होते हैं।

4.1 स्थिति–विवरण एवं लाभ–हानि खाते का प्रारूप एवं विषय सामग्री (Forms and Contents)

कम्पनी अधिनियम, 1956 की धारा 211 के अनुसार कम्पनी के वार्षिक खाते अनुसूची vi के अनुसार तैयार किए जाते हैं। अनुसूची vi के भाग प्रथम में चिट्ठे का प्रारूप व भाग द्वितीय में लाभ–हानि खाते का प्रारूप दे रखा है (जिसका वर्णन आगे है) प्रत्येक कम्पनी को इसी प्रारूप में इसका निर्माण करना अनिवार्य है। परिस्थितियों के अनुसार प्रारूप में थोड़ा परिवर्तन किया जा सकता है, परन्तु परिवर्तन प्रारूप उक्त प्रारूप से मिलता–जुलता ही होना चाहिए।

यदि केन्द्रीय सरकार चाहे तो जन–हित में इस अनिवार्यता को समाप्त कर सकती है, जैसे– बीमा कम्पनी, बैकिंग कम्पनी व विद्युत कम्पनी को इस अनिवार्यता से मुक्त कर दिया है। तीसरे भाग में कुछ विशेष मदों जैसे आयोजन, कोष आदि का स्पष्टीकरण कर दिया गया है।

कम्पनी अधिनियम की धारा 211 क अनुसार (अनुसूची 'vi') इनके प्रारूप इस प्रकार हैं–

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Balance Sheet
Horizontal Form
Schedule VI part I (Section 211)
Form of Balance Sheet
Balance sheet of ……... (here enter the name of the company)
As at ………. (here enter the date as at which the Balance Sheet is made out)

Figures for the Previous Year Rs.	LIABILITIES	Figure for the Current year Rs.	Figures for the Previous Year Rs.	ASSETS	Figure for the Current year Rs.
	Share Capital Authoriosed ….Share of Rs…. each Issued: (Distinguishing between the various Classes of capital and stating the Particulars specified below, in respect of each class) —— share of Rs.—— each. Subscribed: (Distinguishing between the various classes of capital and stating the particulars specifed below, in respect of each class) — Share of Rs.— each called up. Less: Calls unpaid (i) By managing agent or secretaries and treasures and where the managing agent or secretaries and treasures are a firm, by the partners thereof, and where the managing agent or secretaries and treasures a peivate company by the directors or members of that company. (ii) By Directors (iii) By Others Add: Forfeited Share (amount originally paid up) **Reserve & Surplus** (1) Capital Reserves (2) Capital Redemption Reserve (3) Securties Premium Account (4) Other Reserves Specifying the nature of each Reserve and the amount in respect thereof Less: (Debit balnce in Profit & loss Account if any) 5. Surplus,i.e.,balance in Profit & loss Account after providing for proposed allocation, namely, Divdends, Bonus or Reserves 6. Proposed additions to Reserves 7. Sinking Fund			**Fixed Assets** **Distinguishing as far as possible between expenditure upon** (a) Goodwill, (b) Land, (c) Building, (d) Leasehold, (e) Railway siding, (f) Plant and machinery, (g) Furniture and Fittings, (h) Developement of property, (i) Patents, Trademarks and Designs, (j) Live stock (k) vahicles, etc. **Investments** Showing nature of investments and mode of valuation, for example, cost of market value, and distinguishing between- (1) Investments in Government or Trust Securities. (2) Investments in shares, Debentures or Bonds. (3) Immovable properties. (4) Investments in the capital of partnership firms. (5) Balance of unutilised money raised by issue. **Current Assets, Loans and Advances** **(a) Current Assets** (1) Interest accrued on Investments (2) Stores and Spare parts (3) Loose Tools (4) Stock in Trade (5) Work in Progress (6) Sundry Debtors (a) Debts outstanding for a period exceeding 6 months (b) Other Debts Less : Provision (7) (a) cash Balance on hand (b) Bank Balance (i) With Scheduled Bank (ii) With others.	

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Secured Loans

1. Debentures
2. Loans and Advances From Banks
3. Loans and Advance From Subsidiaries
4. Other loans and Advances

Unsecured Loans

1. Fixed Deposits
2. Loans and Advances From subsidiaries
3. Short-Term Loans and Advances:
   (a) From Bank
   (b) From Others
4. Others Loans and Advances
   (a) From Banks
   (b) From Others

Current Liabilities and Provisions

(A) Current Liabilities

1. Acceptances
2. Sundry Creditors
3. Subsidiary Companies
4. Advance payment and unexpired discount for the portion for which value has still to be given e.g., in the case og the following companies : Newspapapaer, fire insurance, Theatres, Clubs, Banking, Steamship Companies:
5. Unclaimed Dividends
6. Other Liabilities (if any)
7. Interst accured but not due on loans

(B) Provisions

8. Provision For Taxation
9. Proposed Divdends
10. For Contingencies
11. For Provident Fund Scheme
12. For Insurances , pension and Similar Staff Benfit Schemes
13. Other Provisions

A Foot – Note to the Balance Sheet may be added to show separately :

1. Claim against the company not acknow ledged as debts
2. Uncalled liability on share party paid
3. Arrears of Fixed cumulative dividends (The period For Which the Dividends are in arrear or if there is more than one class of share, the dividends on each and the fact that it is shown shall be stated)

B Loans and Advances

(8) (a) Advances and Loans to subsidiaries.
(b) Advances and Loans to partnership firms in which the company or any of its subsidiaries is a partner.
(9) Bills of Exchange
(10) Advances recoverable in cash or kind or for value to be received e.g. Rates, Taxes, Insurance etc.
(11) Balance with Customs, Port Trust, etc. (where payable on demand)

Miscellaneous Expenditure

(to the extent not written off or adjusted)
(1) Preliminary expenses
(2) Expenses including commission or brokerage or underwriting or sub scription of shares or debentures.
(3) Discount allowed on the issue of shares

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

4. Estimated amount of contracts remaining to be executed on Capital account and not provided For.				
5. Others money for which the company is contingently liable.(The amount or any guarantee given by the company on behalf of directors or their officers of the company shall be stated and, where practicable,the general nature and, amount of each such contingent liability; if material shall also be specified.)				

लम्बवत् प्रारूप (Vertical Form)

Balance Sheet as at ......

	Schedule No.	figures as at the end of current financial year	figures as at the end of previous financial year
I. Sourres of Funds			
(1) Shareholder's Funds:			
(a) Capital	1		
(b) Share Capital Suspense	1A		
(c) Reserves and surplus	2		
(2) Loan Funds	3		
(a) Secured Loans			
(b) Unsecured Loans			
TOTAL			
II Application of Funds			
(1) Fixed Assets:	4		
(a) Gross Block			
(b) Less Depreciation			
(c) Net Block			
(d) Capital Work in Progress			
(2) Investments	5		
(3) Current Assets, Loans and Advances	6		
(a) Inventories	7		
(b) Sundry Debtors	8		
(c) Cash and Bank Balances			
(d) Other Current Assets			
(e) Loans and Advances			
Less:			
Current Liabilities and provisions:			
(a) Current Liabilties	9		
(b) Provisions	10		
Net Current Assets			
(4) (a) Miscellaneous Expenditure to the extent not written off	11		
or adjusted	12		
(b) Profit and Loss Account			
TOTAL			

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

4.2 अन्तिम खातों से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण समायोजन (Important adjustment Regarding final Accounts)

4.2.1 ऋणपत्रों पर ब्याज (Interest on Debenture)– इसे अन्य ब्याज के साथ न दिखाकर अलग से 'Interest on Debenture' शीर्षक में दिखाया जाएगा।

4.1.2 संचालकों की फीस (Directors fees)– सभा में उपस्थित होने के लिए संचालकों को कम्पनी एक निश्चित राशि का भुगतान करती है। ऐसी राशि भी लाभ हानि खाते में 'Directors fees' के नाम से अलग से दिखाया जाएगा। इसे प्रबन्धकों व संचालकों का पारिश्रमिक में शामिल नहीं करते हैं।

4.1.3 अंकक्षकों का पारिश्रमिक (Remunatrion of Auditors)– कम्पनी के खातों का अंकेक्षण करवाने के लिए अंकेक्षक को दिया जाने वाला पारिश्रमिक लाभ–हानि खाते में अलग से दिखाया जाएगा।

4.1.4 करारोपण (Taxation)

(i) उद्‌गम स्थन पर कर की कटौती (Tax deduted at source)– आयकर अधिनियम क अनुसार जो कम्पनियां वेतन, ब्याज, लाभांश आदि का भुगतान करती है उनका यह कर्तव्य है कि इन पर उल्लेखित दरों से उद्‌गम स्थान पर कर काटकर ही भुगतान करे तथा काटी गई राशि को सरकारी कोष में जमा कराएं। उद्‌गम स्थान पर कर की कटौती की दर प्रतिवर्ष बदलती रहती है जैसा कि बजट में पारित होता है।

उदाहरणार्थ किसी कम्पनी ने 5,00,000 रु. के 8% ऋणपत्र निर्गमित किए गए जिस पर अर्द्धवार्षिक ब्याज देय होता है, यदि उद्‌गम स्थान पर कर की कटौती 10.2% की दर से की जाती है तो कम्पनी की पुस्तकों में ब्याज के सम्बन्ध में निम्नांकित प्रविष्टि की जाएगी–

Debenture Interest	A\c	Dr.	20,000	
To Debentureholders	A\c			20,000
(Being debentures interest due for six months)				
Debentureholders	A\c	Dr.	20,000	
To Bank	A\c			17,960
To Tax deducted at Source A\c				2,040
(Being interest paid and Tax deducted at Source)				
Tax deducted at Source	A\c	Dr.	2,040	
To Bank	A\c			2,040
(Being Tax deposited with government Treasury)				

नोटः– उद्‌गम स्थान पर कर की कटौती की राशि को कटौती वाले माह के अगले माह की 7 तारीख तक सरकारी कोष में कराना होता है। यदि इसे जमा नहीं कराया है तो "Tax deducted at Source" खाते को दायित्व पक्ष में दिखाते हैं।

इसी प्रकार कम्पनी को कोई आय उद्‌गम स्थान पर की कटौती के पश्चात् मिली है तो प्रविष्टि इस प्रकार होगी–

Bank	A\c	Dr.
Tax deducted at Source	A\c	Dr.
To Income A\c		

आय पर काटा गया कर का डेबिट शेष है, जिसे वास्तविक कर निर्धारण वर्ष में करों में समामोजित करने का अधिकार है, अतः इसे चिट्ठे के सम्पत्ति पक्ष में दिखाते हैं। लेकिन व्ययों पर काटे गए करों में समायोजित नहीं करेंगे।

(ii) कर का अग्रिम भुगतान (Advance Payment of Tax)

आयकर अधिनियम की धारा 139 (1) के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को अपनी आय का पूर्वानुमान लगाकर उस पर बनने वाले कर का उसी वित्तीय वर्ष में सरकार के कोष में जमा कराना होता है, जबकि वास्तविक कर का निर्धारण अगले वर्ष होता है। इसे ही कर का अग्रिम भुगतान कहते हैं। इसे चिट्ठे के सम्पत्ति पक्ष के (Current Assets, Loan & Advance) शीर्षक में दिखाया जाएगा।

(iii) कर आयोजन (Provision for Taxation)

लेखांकन सिद्धान्त के अनुसार सम्बन्धित वर्ष की समस्त आय चाहे भुगतान प्राप्त हुआ है या नहीं और व्यय चाहे भुगतान किया गया है या नहीं, उन्हें उसी लेखा वर्ष में सम्मिलित करते हैं। इसी आय पर कर का अनुमान लगाकर इस

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

राशि को लाभ–हानि खाते से वसूल करेगा जिसके लिए अग्रलिखित प्रविष्टि की जाएगी–

Profit & Loss A\c Dr.

To Provision for Taxation A\c

कर के लिए आयोजन को चिट्ठे क दायित्व पक्ष में 'Current Liabilities & Provision' शीर्षक के अन्तर्गत दिखाया जाएगा।

(iv) निगम कर (Corporate Tax)

कम्पनी की आय पर लगने वाले कर को 'निगम कर' कहते हैं। आयकर अधिकारी गत वर्ष (Previous Year) की आय पर कर निर्धारण वर्ष (Assessment Year) में कर का निर्धारण करता है। आयकर अधिकारी द्वारा इस निर्धारण के आधार पर कम्पनी को एक मांग–पत्र (Demand Notice) जारी किया जाता है। कमपनी को मांग–पत्र जारी होने के 30 दिनों के भीतर निर्धारित राशि में अग्रिम कर एवं उद्‌गम स्थान पर कर की कटौती (आय स सम्बन्धित) समायोजित कर शेष राशि जमा करानी होगी। इस हेतु अग्रलिखित प्रविष्टि की जाएगी–

Corporate Tax A\c Dr.

To Bank A\c

To Advance Payment of Tax A\c

To Tax deducted at Source

(v) लाभांश कर (Divident Tax)

आयकर अधिनियिम के अनुसार वित्तीय वर्ष 2009–10 (कर निर्धारण वर्ष 2010–11) में कम्पनी द्वारा भुगतान किए गए है लाभांश पर 16.995% (कर 15% + 10% अधिकार + दोनों के योग पर 3% शिक्षा उप कर) की दर से लाभांश कर देय होगा।

Illustration 1

सम्भव लि. का तलपट 31 मार्च, 2010 को निम्नलिखित मदें बताता है–

	Dr.	Cr.
Advance Payment of Income tax	7,00,000	
Provision for Income tax for the year Ending 31st March, 2009		3,84,000

निम्नलिखित अतिरिक्त सूचनाएं उपलब्ध हैं–

(i) आयकर की अग्रिम राशि में 4,80,000 रु. वर्ष 2008–09 सम्मिलित हैं।

(ii) वर्ष 2008–09 मे वास्तविक कर दायित्व 5,00,000 रु. है किन्तु अभी तक लेखों में इसका कोई समायोजन नहीं किया गया।

(iii) वर्ष 2009–10 के लिए कर आयोजन 5,25,000 रु. करना है।

आपको निनलिखित खाते तैयार करना है–

(i) आयकर आयोजन खाता (ii) आयकर अग्रिम भुगतान खाता (iii) कर दायित्व खाता (iv) लाभ–हानि खाता व चिट्ठे में इन मदों का प्रदर्शन।

Solution

Sambhav Ltd.

Provisin for Income Tax A\c (2008-09)

Date	Particulars	Amount	Date	Particulars	Amount
		Rs.	2008,		Rs.
2009,31 March	To Advance Payment of Income Tax A\c	4,80,000	1 April	By Balance b\d	3,84,000
31 March	To Liability for Taxation A\c (Outstanding Tax)	20,000	2009,31 March	By Profit and Loss A\c (Further Provision)	1,16,000
		5,00,000			5,00,000

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Provisin for Income Tax A\c (2009-10)

Date	Particulars	Amount	Date	Particulars	Amount
2010,31 March	To Balance c\d	Rs. 5,25,000	2010,31 March	By Profit and Loss A\c	Rs. 5,25,000
		5,25,000			5,25,000

Liability for Taxation A\c

Date	Particulars	Amount	Date	Particulars	Amount
2010, 1 April	To Balance b\d	Rs. 2,00,000	2010,31 March	By Provisin for Income tax A\c (2008-09)	Rs. 2,00,000
		2,00,000			2,00,000

Advance Payment of Income Tax A\c

Date	Particals	Amount	Date	Particals	Amount
2009, 1 April	To Balance b\d	Rs. 7,00,000	2010,31 March	By Provisin for Income tax A\c (2008-09)	Rs. 4,80,000
			31March	By Balance c\d	2,20,000
		7,00,000			7,00,000

Profit and Loss A\c
for the year ended 31st March, 2010

Particulars	Amount	Particulars	Amount
	Rs.		Rs.
To Provision for Taxation (2008-09) A\c	1,16,000		4,48,000
To Provision for Taxation (2009-10) A\c	5,25,000		1,52,000

Balance Sheet
as on 31st March, 2010

Liabilities	Amount	Assets	Amount
	Rs.		Rs.
Current Liabilities:		**(B) Loan & Advances:**	
Liabilities for Income tax of 2008-09	20,000	Advance Payment of income tax	2,20,000
Provisions:			
Provision for Income tax (2009-10)	5,25,000		

4.3 प्रबन्धकीय पारिश्रमिक (Managerial Remuneration)

कम्पनी का व्यवसाय अंशधारियों के प्रतिनिधियों द्वारा चलाया जाता है, जिन्हें प्रबन्धकीय व्यक्ति कहते हैं। प्रबन्धकीय व्यक्तियों में संचालक (निदेशक), प्रबन्ध संचालक, प्रबन्धक सम्मिलित हैं। इन प्रबन्धकीय व्यक्तियों के समूह का संचालक मण्डल कहते हैं तथा सामान्य भाषा में इन्हें संचालक कहते हैं। संचालक दो प्रकार के होते हैं–

(1) **पूर्णकालिक संचालक (Full Time Directors)–** ऐसे संचालक पूर्णकालीन कर्मचारियों की तरह एक ही कम्पनी में कार्य करते हैं।

(2) **अंशकालिक संचालक (Part Time Directors)–** ऐसे संचालक जो एक समय में कई कम्पनियों में कार्य करते हैं तथा संचालक मण्डल की सभाओं में भाग लेते हैं।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

प्रबन्धकीय पारिश्रमिक की गणना कम्पनी अधिनियम, 1956 की धारा 198, 309, 349 व 350 में दिए गए प्रावधनों के अनुसार की जाती हैं। अधिनियम के अनुसार समस्त प्रबन्धकीय व्यक्तियों का पारिश्रमिक कम्पनी के लाभों के 11% वार्षिक से अधिक नहीं हो सकते। प्रबन्धकीय पारिश्रमिक में संचालकों का वेतन, कमीशन, भत्ते, अनुलाभ, बोनस आदि सम्मिलित है, परन्तु सभा में भाग लेने की फीस शामिल नहीं है।

कम्पनी अधिनियम की धारा 198 के अनुसार विभिन्न दशाओं में अधिकतम पारिश्रमिक अग्रलिखित होगा–

1. लाभ कमाने वाली कम्पनियों के लिए	**शुद्ध लाभ का प्रतिशत**
(1) अधिकतम सीमा	11%
(2) पूर्णकालीक संचालकों, प्रबन्ध संचालकों का अधिकतम पारिश्रमिक	11%
(अ) यदि एक प्रबन्धकीय व्यक्ति हो	5%
(ब) यदि एक से अधिक प्रबन्धकीय व्यक्ति हो	10%
(3) अंशकालीन संचालकों (प्रबन्ध संचालक को छोड़कर) का पारिश्रमिक	
(अ) यदि कोई कम्पनी में कोई प्रबन्ध संचालक या पूर्णकालिक संचालक न हो	3%
(ब) यदि प्रबन्ध संचालक या पूर्णकालिक संचालक भी हो	1%

2. लाभ न कमाने वाली या अपर्याप्त लाभ कमाने वाली कम्पनियों के लिए

यदि किसी कम्पनी में वित्तीय वर्ष में कोई लाभ न हुआ हो या अपर्याप्त हो तो प्रबन्धकीय पारिश्रमिक की गणना, उसकी प्रभावी पूंजी के आधार पर की जाएगी। जो अग्रलिखित विकल्पों में से होगी–

(अ) प्रथम विकल्प– दो लाख रु. प्रतिमाह तक पारिश्रमिक का भुगतान करना हो तो कम्पनी को प्रभावी या क्रियाशील पूंजी (Effective Capital) के आधार पर किया जाएगा। जो इस प्रकार है–

कम्पनी की प्रभावी पूंजी	**अधिकतम मासिक पारिश्रमिक**
(1) 1 करोड़ रु. से कम हो	75,000 रु.
(2) 1 करोड़ रु. या अधिक परन्तु 5 करोड़ से कम	1,00,000 रु.
(3) 5 करोड़ रु. या अधिक परन्तु 25 करोड़ से कम	1,25,000 रु.
(4) 25 करोड़ रु. या अधिक परन्तु 50 करोड़ से कम	1,50,000 रु.
(5) 50 करोड़ रु. या अधिक परन्तु 100 करोड़ से कम	1,75,000 रु.
(6) 100 करोड़ या अधिक	2,00,000 रु.

इस पारिश्रमिक का भुगतान करने के लिए निम्नलिखित शर्तों का पालन करना पड़ेगा–

(1) कम्पनी की पारिश्रमिक समिति द्वारा पारिश्रमिक भुगतान का प्रस्ताव पास कर दिया हो।

(2) कम्पनी ने ऐसे प्रबन्धकीय व्यक्ति की नियुक्ति के पूर्व के वित्तीय वर्ष में कम्पनी के सार्वजनिक जमाओं पर ब्याज व उनके पुनर्भुगतान में निरन्तर तीस दिनों से अधिक विलम्ब नहीं हुआ हो।

(ब) द्वितीय विकल्प – चार लाख रु. प्रतिमाह तक पारिश्रमिक का भुगतान करना हो तो कम्पनी की प्रभावी या क्रियाशील पूंजी के आधार पर किया जाएगा। जो इस प्रकार है–

(1) 1 करोड़ रु. से कम हो	1,50,000 रु.
(2) 1 करोड़ रु. या अधिक परन्तु 5 करोड़ से कम	2,00,000 रु.
(3) 5 करोड़ रु. या अधिक परन्तु 25 करोड़ से कम	2,50,000 रु.
(4) 25 करोड़ रु. या अधिक परन्तु 50 करोड़ से कम	3,00,000 रु.
(5) 50 करोड़ रु. या अधिक परन्तु 100 करोड़ से कम	3,50,000 रु.
(6) 100 करोड़ या अधिक	4,00,000 रु.

इस पारिश्रमिक का भुगतान करने के लिए प्रथम विकल्प की शर्तों के अलावा निम्नलिखित शर्तों का पालन करना पड़ेगा–

(1) कम्पनी की साधारण सभा में पारिश्रमिक भुगतान का विशेष प्रस्ताव (अधिकतम तीन वर्षों हेतु) और पास किया जाएगा।

(2) ऐसी साधारण सभा की सूचना में अंशधारियों को (जो पारिश्रमिक योजना में बताई गई से सम्बन्धित) दे दी गई हो।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

तृतीय विकल्प– चार लाख रु. प्रतिमाह से अधिक पारिश्रमिक भुगतान करना हो तो कम्पनी की प्रभावी या क्रियाशील पूंजी के आधार पर (कुछ शर्तों की पूर्ति करने पर) किया जाएगा। जो इस प्रकार है–

(1) 1 करोड़ रु. से कम हो	1,50,000 रु.
(2) 1 करोड़ रु. या अधिक परन्तु 5 करोड़ रु. से कम	2,00,000 रु.
(3) 5 करोड़ रु. या अधिक परन्तु 25 करोड़ रु. से कम	2,50,000 रु.
(4) 25 करोड़ रु. या अधिक परन्तु 50 करोड़ रु. से कम	3,00,000 रु.
(5) 50 करोड़ रु. या अधिक परन्तु 100 करोड़ रु. से कम	3,50,000 रु.
(6) 100 करोड़ रु. या अधिक	4,00,000 रु.

इस विकल्प से पारिश्रमिक भुगतान करने के लिए प्रथम विकल्प व द्वितीय विकल्प की पूर्ति के साथ एक अन्य शर्त की पूर्ति करना आवश्यक है, जो अग्रलिखित है–

(1) केन्द्रीय सरकार का अनुमोदन करवाना।

नोट :– यदि कम्पनी की प्रभावी पूंजी ऋणात्मक या शून्य होने पर भी इन विकल्पों के आधार पर पारिश्रमिक दिया जा सकता है।

क्रियाशील या प्रभावी पूंजी (Effective Capital) की गणना

Total Paidup Capital	-------
Balance of Security Premium A\c	-------
Reserve and Surplus	-------
Debenture and Long term Loan	-------
Public deposit (payable after one year)	-------
Total (A)	
Total Investment	--------
Fitices Assets	--------
Total (B)	---------
Effective Capital(Total A - Total B)	---------

4.4 प्रबन्धकीय पारिश्रमिक के लिए लाभ की गणना (Profit for Managerial Remuneration)

लाभ–हानि खाते में सकल लाभ के अतिरिक्त सरकार या किसी लोक–प्राधिकार से प्राप्त हुआ अधिदान या उपदान (Subsidy or Grant) लिखना होगा जब तक कि केन्द्रीय सरकार से इस विषय में विपरीत आदेश प्राप्त नहीं हुए हो। निम्नलिखित 'आय' को लाभ–हानि खाते की क्रेडिट में नहीं लिखनी चाहिए–

(i) अंशों व ऋणपत्रों के निर्गमन पर प्रीमियम अथवा ऋणपत्रों की बिक्री से लाभ।

(ii) हरण किए गए अंशों को पुनः निर्गमित करने पर लाभ।

(iii) पूंजीगत लाभ – किसी उपक्रम (Undertaking), उपक्रमों या उसके किसी भाग को बेचने से लाभों को सम्मिलित करते हुए।

(iv) अचल व स्थायी सम्पत्ति के बेचने के लाभ।

यदि उपर्युक्त राशि कम्पनी के लाभ–हानि खाते में से किसी मद को लाभ–हानि खाते में जमा पक्ष में लिखा है तो प्रबन्धकीय पारिश्रमिक के लिए लाभ की गणना करने के लिए उक्त मदों को घटा देना चाहिए। यदि उपर्युक्त मदों को लाभ–हानि खाते में नहीं लिखा है तो उक्त मदों के लिए कम्पनी के लाभों में समायोजन की कोई आवश्यकता नहीं है।

व्यय सम्बन्धी समायोजन– कम्पनी की आय में से निम्नलिखित व्यय घटाएं–

सभी प्रकार परिचालन व्यय, संचालकों की फीस, सभी प्रकार के कर्मचारियों को दिया गया बोनस व कमीशन, असुरक्षित ऋणों पर ब्याज, ऋणपत्रों पर ब्याज, डूबत ऋण, अति या सामान्य लाभ पर कर, विशिष्ट अवस्थाओं में लगाया गया व्यावसायिक लाभ कर, धारा 350 द्वारा निर्धारित दरों में से मूल्य ह्रास, 1 अप्रैल, 1956 के पश्चात् हुई हानि जो

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

धारा 349 के अनुसार ज्ञात की गई है और जिसे अपलिखित नहीं किया गया है धारा 293 (1)(e) के अनुसार पुण्यार्थ कोष में 50,000 रु. तथा धारा 349 के अनुसार परिकलित शुद्ध लाभों के 5% तक दोनों में से जो अधिक हो, वैधानिक दायित्व हेतु दिया गया हर्जाना, वैधानिक दायित्व की पूर्ति हेतु बीमा प्रीमियम, अनुबन्ध को भंग करने से उत्पन्न किसी वैधानिक दायित्व की पूर्ति हेतु भुगतान की गई क्षतिपूर्ति की राशि। ऋणपत्रधारियों के ट्रस्टी का पारिश्रमिक।

न घटाई जाने वाली मदें –

आयकर, अधिकर (Super Tax) या लाभ पर किसी और प्रकार का कर परन्तु ऊपर वर्णित इसमें सम्मिलित नहीं होगे, ऐसा मुआवजा या भुगतान जो कम्पनी ने स्वेच्छा से दिया हो और कानून के अनुसार अनिवार्य नहीं हो, पूंजीगत हानि, प्रारम्भिक व्यय, संचय एवं आयोजनों में हस्तान्तरण, विकास छूट संचय, प्रारम्भिक ह्रास की राशि, प्रस्तावित लाभांश, प्रस्तावित लाभांश पर कर, कृत्रिम सम्पत्तियों एवं ख्याति का अपलेखन।

Compution of Profit (u\s 349, 350 & 351)

Gross Profit as per Trading A\c Portion of P&L A\c	
Add: (i) Subsidies and Bounties received from the government	
(ii) All other Incomes of the Company Except:	
(a) Premium on issue of Share and debenture	
(b) Balance of share forfeited A\c	
(c) Capital Profit and Reserves	
(d) Capital Profit (which represent excess of sales proceeds over the cost of Assets)	
Less: All Expenses Except the following:	
(a) Corporate Tax, Super tax, Provision for tax	
(b) Interim dividend including tax on dividend Distribution	
(c) Proposed dividend including tax on dividend Distribution	
(d) All Capital Expenses and Capital losses	
(e) Transfer to Reserves	
(f) Written-off of goodwill & Fictitious Assets	
(g) Ex-Gratia Payment to Employees (Voluntary Payment or Payment made in excees of statutory provision or requirements)	
(h) Incentives available under income tax Act (e.g. export profit, foreign project profit ect.)	
Total	—

प्रबन्धकीय पारिश्रमिक हेतु लाभों की गणना निम्नलिखित वैकल्पिक विधि से भी की जा सकती है जिसका प्रारूप अग्रलिखित है।

Compution of Profit (u\s 349, 350 & 351)

Profit as per P&L A\c	
Add: (a) for Dr. side of P&L A\c (if Dr. to P&L A\c)	
Provision for taxation	
Reserve	
Excess Provisions	
Investement and Development allowance	
Managerial Remuneration (not managerial fees)	
All Capital Expenses and Capital losses	
Written-off of goodwill & Fictitious Assets	
Ex-Gratia Payment to Employees	
dividend including tax on dividend Distribution (paid or Proposed)	
(b) for Cr. side of P&L A\c (if not Cr. to P&L A\c)	
Add: Subsidies and Bounties	
Less: All Capital Profit (if credited to P&L A\c)	
Total	—

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Illustration 2

निम्नलिखित सूचनाओं से प्रबन्धकीय पारिश्रमिक के लिए शुद्ध लाभ की गणना कीजिए–

Profit and Loss A\c for the year ended 31st March, 2009

To Salary and Wages	26,400	By Gross Profit	7,44,000
To Repairs	9,600	By Profit on Sale of Building (Cost of	81,600
To Depreciation (as per schedule XIV)	48,000	Rs. 1,44,000 and W.D.V. Rs. 72,000	
To Sundry Expenses	7,200	and sold for Rs.1,53,600)	
To Loss on sale of Investment	4,800	By Subsidy from Government	14,400
To Donations	16,812		10,000
To Interest on Deb.	12,000	By Profit on sale of forfeited shares	
To Debenture Trustees Remuneration	7,400		
To Workmen Compenation	5,000		
(Incuding Rs. 2,500 legal Compensation)			
To Compensation for breach of Contract	3,000		
To Income tax	2,40,000		
To Proposed Dividends	2,40,000		
To Corporate Dividend tax	40,788		
@ 16.995% thereom			
To Net Profit after appropriations	1,89,000		
	8,50,000		**8,50,000**

Solution:

Compution of Profit (u\s 349) for Managerial Remuneration

		Rs.
Net Profit as per P&L A\c		**1,89,000**
Add: Items not to be deducted:		
loss on sale of Investments	4,800	
Income tax	2,40,000	
Proposed Dividends	2,40,000	
Corporate Dividend tax	40,788	
Workmen Compenation	2,500	5,28,088
		7,17,088
Less: Capital Profit on Sale of Building (1,53,600 - 1,44,000)	= 9,600	
Profit on sale of forfeited shares	10,000	19,600
Net Profit U\s 349		**6,97,488**

Illustration 3

उदाहरण संख्या 2 में जो अहिंसा लि. का लाभ–हानि खाते से कम्पनी अधिनियम, 1956 की धारा 349 के अन्तर्गत लाभ परिकलित किया गया है, उसकी सहायता से भारतीय कम्पनी अधिनियम के अन्तर्गत संचालकों को देय अधिकतम पारिश्रमिक की गणना कीजिए।

यदि :

(1) कम्पनी में प्रबन्धक या पूर्णकालीन संचालक न हो।

(2) कम्पनी में एक पूर्णकालीन संचालक हो।

(3) कम्पनी में दो पूर्णकालिन संचालक हो।

यदि कम्पनी में कोई पूर्णकालीन संचालक अथवा प्रबन्ध संचालक न हो तो कम्पनी के प्रबन्धक (Manager) को देय अधिकतम पारिश्रमिक की भी गणना कीजिए।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Solution:

(i) जब कम्पनी में प्रबन्धक एवं पूर्णकालीन संचालक न हो

	Rs.
Director's remuneration @ 3% of Rs. 6,97,488	20,925
(ii) जब कम्पनी में एक पूर्णकालीन संचालक हो	
Remuneration of two whole-time Director's @ 5% of Rs. 6,97,488	34,874
Add: Remuneration of other Director's @ 1% of Rs. 6,97,488	6,975
	41,849
(iii) जब कम्पनी में दो पूर्णकालीन संचालक हो	
Remuneration of two whole-time Director's @ 10% of Rs. 6,97,488	69,749
Add: Remuneration of other Director's @ 1% of Rs. 6,97,488	6,975
	76,724

Illustration 4

31 मार्च, 2009 को समाप्त होने वाले वर्ष के नेकी लि. का लाभ–हानि खाता इस प्रकार हैं–

Profit and Loss A\c for the year ended 31st March, 2009

To Rent & Rates	20,000	By Gross Profit	22,00,000
To Salary and Wages	4,80,000	By Profit on Sale of Fixed Assets	2,50,000
To Depreciation	2,00,000	(Cost of Rs. 6,25,000 and W.D.V.	
To Sundry Expenses	1,80,000	Rs.4,50,000)	
To Scientific Rearch	50,000	By Subsidy from Government	1,50,000
To Manager's Salary	75,000	By Profit on sale of forfeited shares	20,000
To Commission to Manager	15,000	By Premium on issue	80,000
To Provision for Bad & doubtful debts	50,000		
To Provision foe Income tax	6,00,000		
To Proposed Dividends	2,50,000		
To Net Profit	7,80,000		
	27,00,000		**27,00,000**

अतिरिक्त सूचनाएं

1. कम्पनी अधिनियम की अनुसूची XIV के अनुसार स्वामी सम्पत्तियों पर मूल्य ह्रास 1,50,000 रु. था।
2. मैनेजर को शुद्ध लाभ में कमीशन व मैनेजर का वेतन घटाने के बाद 1% कमीशन दिया जाता है।

Solution:

Calculation of Remuneration Payable to Manager

Net Profit as per P&L A\c		**7,80,000**
Add: Items not to be deducted:		
Proposed Dividends	2,50,000	
Provision foe Income tax	6,00,000	
Provision for Bad & doubtful debts	50,000	
Commission to Manager	15,000	
Manager's Salary	75,000	
Scientific Rearch	50,000	
Difference of Depreciation as per schedule XIV (2,00,000 -1,50,000)	50,000	10,40,000
		18,20,000
Less: Capital Profit on Sale of Assets	75,000	
Premium on issue	80,000	

Cont.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Profit on sale of forfeited shares	20,000	1,75,000
Net Profit for managerial Remuneration		**17,45,000**
Net Profit as Calculated above	17,45,000	
Less: Manager's Salary	75,000	
	16,70,000	
Manager Commission = 16,70,000 X 1\10 = 16535		
Total Remumeration Payable to Manager (75,000 + 16,535) =	91,535	
Less: Amount already Paid (75,000 + 15,000) =	90,000	
Amount Outstanding	1,535	

Note: Maximum Remumeration Payable to Manager U\s 387 of companies Act is 5% of net profit i.e. (17,45,000 x 5%) = Rs. 87,250. It is assumed that approval from Centtol Government has been taken excess payment.

स्व परीक्षा प्रश्न (Self Examination Questions)

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न (Very Short type Questions)

1 कम्पनी अधिनियम 1956 की धारा 198 के अन्तर्गत प्रबन्धकीय पारिश्रमिक की अधिकतम सीमा क्या है? (R.U.B.Com. 2001 & 2008)

2 अंशों व ऋणपत्रों के निर्गमन पर देय बट्टा व कमीशन को चिट्ठे में कहां दिखाया जाता है। (R.U.B.com 2008)

3 अल्पकालीन ऋणों मे किन ऋणों का शामिल किया जाता है।

4 संदिग्ध दायित्वों को कम्पनी के अन्तिम खातों में कहां दिखाया जाता है।

5 ऋणपत्रों पर देय ब्याज पर उद्गम स्थान पर कर की कटौती को अन्तिम खातों मे कहां दिखाया जाता है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न (Short type Questions)

1 प्रबन्धकीय पारिश्रमिक पर एक संक्षिप्त लेख लिखिए। (Kota Univ.,2008)

2 निम्नलिखित मदों को कम्पनी के चिट्ठे कैसे दिखाएगें–

(i) अंशो के निर्गमन पर देय बट्टा (ii) कर का अग्रिम भुगतान (iii) सामान्य संचय

(iv) ख्याति (v) प्रारम्भिक व्यय जो अपलिखित नहीं किए गए (vi) लाभ हानि खाते का डेबिट शेष

3 कम्पनी के चिट्ठे का संक्षिप्त आकार का प्रारूप तैयार कीजिए

4 अनूसूची 6 के भाग 4 में क्या क्या सूचनाएं दी जाती है।

5 यदि कम्पनी को किसी वर्ष लाभ नही होता है या अपर्याप्त लाभ होता है तो प्रबन्धकीय पारिश्रमिक के भुगतान की सीमा बताइए।

सैद्धान्तिक प्रश्न (Theoretical Questions)

1 काल्पनिक आंकडों का प्रयोग करते हुए कम्पनी अधिनियम, 1956 मे अनूसूची 6 के भाग 1 में वर्णित संतुलन पत्र या चिट्ठा का लम्बरूप या खड़ प्रारूप बनाइए। (Bikaner univ.2006)

2 प्रबन्धकीय पारिश्रमिक से क्या आशय है इससे सम्बन्धित कम्पनी अधिनियम, 1956 के प्रावधान क्या है। (Bikaner Univ., 2009)

व्यावहारिक प्रश्न (Practical Questions)

1. रामा लि. के लेखा लिपिक ने 31–3–2008 को समाप्त वर्ष का निम्नलिखित चिट्ठा बनाया है–
निम्नलिखित को ध्यान में रखते हुए कम्पनी का चिट्ठा कम्पनी अधिनियम के अनुसार बनाइए :
कम्पनी की अधिकृत पूंजी 120 लाख रु. है जो 8 लाख 10 रु. वाले समता अंशों में व 4 लाख 10 रु. वाले पूर्णाधिकार अंशों में विभक्त है। कम्पनी ने समस्त अंश जनता में निर्गमित कर रखे है। एक अंशधारी जिसके पास 40,000 अंश है, पर 5 रु. प्रति अंश की दर से मांग बकाया है, शेष समस्त राशि प्राप्त हो गयी है। कर के लिए 5 लाख रु. का आयोजन करना है। (R.U., B.Com.(H),1999)
Ans. Total of Balance Sheet 1,48,00,000

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

2. आइडियल मैन्यूफैक्चरिंग लिमिटेड का 31 मार्च, 2008 का तलपट अग्र प्रकार है।

Debit Balances	Amount (Rs.)	Credit Balances	Amount (Rs.)
Opening Stock	1,32,000	Sales	7,76,000
Purchases	1,84,000	Departmental orders and items used in works	90,400
Stores	10,000	Dividends	1,000
Manufacturing Expenses	1,65,000	Profit on block sold	30,000
Salaries, Wages etc. to employees	1,90,000	Sundry Receipts	3,000
Freight and Insurance	57,000	Profit and Loss A\c	20,000
Transfer to Repairs Reserve	52,000	Prov. for Dep. on Fixed Assets	5,60,000
Depreciation	22,500	Share Capital	2,80,000
Audit fees	51,500	Securities Premium	20,000
Interim Dividend	28,000	General Reserve	80,000
Interim Dividend Tax	4,759	Development Rebate Reserve	1,20,000
Fixed Assets (at cost)		Repairs Reserve	40,000
opening balance	12,60,000	Secured Loan	2,30,000
Additional	67,000	Unsecured Loan	50,000
Investments	26,000	Creditors	1,70,000
Debtors	1,02,000	Provision for Taxation	75,000
Interest on Capital during construction (for last year)	15,000	Outstanding Expenses	5,000
Deposits	40,000		
Cash at Bank	1,35,241		
Cash in hand	2,000		
Managing Director's Remuneration (Minimum)	6,000		
	25,50,400		25,50,400

निम्नलिखित सूचनाएं और उपलब्ध है– (i) अन्तिम स्कन्ध का मूल्यांकन 1,47,000 रु. किया गया। (ii) प्रबन्ध संचालक को कम्पनी के शुद्ध लाभों पर 5% पारिश्रमिक दिया है। (iii) ब्लॉक की ब्रिकी पर कम्पनी अधिनियम,1956 के अनुसार लाभ 20,000 रु. है। (iv) आयकर नियमों के अन्तर्गत स्वीकृत ह्रास 65,000 रु. है। (v) लाभ–हानि खाते का 20,000 रु. शेष निम्नलिखित डेबिट करने का पश्चात् ज्ञात हुआ है– कर हेतु प्रावधान 75,000 रु. विकास छुट संचिति 15,000 रु. (vi) मरम्मत संचिति का शेष 40,000 रु. इस प्रकार निकाला गया है– आरम्भिक शेष 38,000 रु. + वर्ष में हस्तान्तरण 52,000 रु. – वास्ताविक व्यय 50,000 रु. (vii) अन्तिम लाभांश कम्पनी की प्रदत पूंजी पर कुल 20% में से घोषित अन्तरिम लांभाश घटाकर प्रस्तावित किया गयाा है (viii) अंश पूंजी की राशि 10 रु. पूर्णदत अंशों में है आपको 31 मार्च, 2008 को समाप्त वर्ष के लिए कम्पनी का लाभ हानि खाता तथा चिट्ठा बनाना है। प्रबन्ध संचालक के पारिश्रमिक की गणना भी दिखाइए। (JNVU B.Com.II,1997)

Ans. Total of Balance Sheet 12,34,648, N\P 1,64,630 Bal. transfer to B\S 1,19,112

3. राजस्थान फार्मास्युसिटिकल लिमिटेड में दो पूर्णकालीन संचालक है। पूर्णकालीन संचालकों को अंशकालिक संचालकों के पारिश्रमिक देने के बाद शेष लाभ का 10 प्रतिशत पारिश्रमिक प्राप्त करने का अधिकार है जबकि अंशकालीन संचालकों को, पूर्णकालीन संचालकों को पारिश्रमिक देने के बाद बचे शेष लाभ का 1% पारिश्रमिक प्राप्त करने का अधिकार।

पूर्णकालीन संचालकों एवं अंशकालीन संचालकों को किसी प्रकार का पारिश्रमिक देने से पूर्व कम्पनी का शुद्ध लाभ 20,00,000 रु. है।

आपको पूर्णकालीन व अंशकालीन संचालकों को देय पारिश्रमिक की गणना करनी है।

(Univ.of Rajasthan, 2005)

Ans. 18,018

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

4. चाणक्या लिमिटेड के गैर अनुभवी लेखाकार ने 31 मार्च, 2009 वर्ष का चिट्ठा अग्र प्रकार प्रस्तुत किया है। आप इसकी सहायता से कम्पनी अधिनियम में निर्धारित प्रारूप में इसका निर्माण कीजिए–

Balance Sheet of Chanakya Ltd. as on 31st March, 2009

Liabilities	Amount (Rs.)	Assets		Amount (Rs.)
Trade Creditors	80,900	Stock :		
Advance from Customers	42,260	in hand	3,60,480	
Share Capital	8,00,000	with Agent	24,300	3,84,780
Profit & Loss A\c	45,630	Cash in hand and at Bank		23,540
Provision for Taxation	95,000	Investments		20,000
Proposed Dividend	59,000	Fixed Assets:		
Loan to Managing Director	5,000	Freehold Premises	1,80,000	
General Reserve	75,000	Plant & Machinery		
Development Rebate Reserve	30,000	(Less depreciation)	4,10,000	5,90,000
Provision for Contingencies	23,000	Debtors	2,15,450	
Securities Premium Account	22,000	Less: Provision for baddebts	9,300	2,06,150
Forfeited Share Account	3,000	Bills Payable		5,000
		Amount due from Agent		51,320
	12,80,790			12,80,790

जहां आवश्यकता हो काल्पनिक सूचना भी दीजिए। (Bikaner Univ., 2004)

Ans. Balance Sheet Total Rs. 12,80,790

5. मून्दडा लिमिटेड का 31 मार्च, 2007 को समाप्त होने वाले का लाभ–हानि खाता अग्र प्रकार है

	Amount (Rs.)			Amount (Rs.)
To Administrative Expenses	8,22,000	By Balance b\d		5,70,000
To Rent	26,000	By Gross Profit from Trading A\c		45,00,000
To Directors Fees	66,792	By Subsidy from Government		3,35,000
To Interest on Debentures	32,000	By Interest on Investment		15,000
To Compensation for Breach of Contract	43,290	By Transfer Fees		12,000
To Managerial Remuneration	2,80,000	By Profit on Sale of Assets:		
To Workmen's Compensation (Including		Selling Price	60,000	
Rs. 5,350 paid voluntarily)	27,893	Less: WDV	27,000	33,000
To Depreciation	5,00,000	By Profit on Sale of Forfeited Shares		5,000
To Provision for Taxation	12,00,000			
To General Reserve	4,42,000			
To Investment Allowance Reserve	50,000			
To Loss on Sale of Investment	10,025			
To Balance c\d	19,70,000			
	54,70,000			54,70,000

Additional Information

(1) Original cost of fixed assets sold was Rs 40,000.

(2) Depreciation on fixed assets as per schedule XIv of the companies Act was Rs 5,73,000.

Calculate the amount of Managerial remuneration if there is one whole time director and four part time directors. (Univ. of Bikaner, 2004)

Ans: Remuneration of Whole-time Director = Rs.1,64,468.75,

Remuneration of all part time Director = Rs.1,64,468.75

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

अध्याय– 5

लाभों का निपटारा
(Disposal of Profit)

विषय सूची (Contents)

5.1 कम्पनी अधिनियम एवं विभाजन योग्य लाभ
5.1.1 लाभांश के स्रोत (Soures of Dividend) {धारा 205(1)}
5.1.2 चालू मूल्य–ह्रास (Current Depreciation) {धारा 205(2)}
5.1.3 संचयों में हस्तान्तरण (Transfer to Reserve) {धारा 205(2A)}
5.1.4 मूल्य–ह्रास की बकाया (Arrears of Depreciation) {धारा 205(1)(a)}
5.1.5 पिछली हानियां (Past Losses) {धारा 205(1)(b)}
5.2 पूंजीगत लाभ
5.3 पूंजीगत हानि
5.4 विभाजन योग्य लाभ तथा शुद्ध लाभ में अन्तर
5.5 लाभों का नियोजन
5.5.1 संचयों का निर्माण (Creation of Reserves)
5.5.2 ऋणपत्र शोधन संचय में हस्तान्तरण
5.5.3 संचयों में स्थानान्तरण सम्बन्धी लेखा
5.6 लाभांश की घोषणा एवं भुगतान करने सम्बन्धी प्रक्रिया (Procedure for Declaration & Payment of Dividends)
5.6.1 लाभांश की घोषणा एवं भुगतान का लेखा व्यवहार

स्व परीक्षा प्रश्न (Self Examination Questions)

अंशधारियों को दिए जाने लाभांश के लिए कम्पनी अधिनियम की धारा 205, 205A के प्रावधानों के अनुसार निकाली गई लाभ की राशि विभाजन योग लाभ है।

लाभ–हानि खाते द्वारा प्रकट लाभों में से कुछ राशि संचयों में हस्तान्तरित कर देती है, कुछ राशि अंशधारियों को लाभांश के रूप में वितरित कर देती है तथा कुछ राशि का पूंजीकरण कर देती है। इस हेतु कम्पनी द्वारा लाभ–हानि नियोजन खाता तैयार किया जाता है।

5.1 कम्पनी अधिनियम एवं विभाजन योग्य लाभ

कम्पनी अधिनियम, 1956 की धारा 205 विभाजन योग्य लाभों के सम्बन्ध में नियम को बताती है। कम्पनी अधिनियम की धारा 205 के अनुसार ज्ञात किया गया ऐसे लाभ जो अंशधारियों के लिए लाभांश के रूप में उपलब्ध हो 'विभाजन योग्य लाभ' कहलाता है। विभाजन योग्य लाभ ज्ञात करने के लिए अग्रलिखित प्रावधानों को ध्यान में रखा जाता है–

(1) लाभांश के स्रोत (Soures of Dividend) {धारा 205(1)}
(2) चालू मूल्य–ह्रास (Current Depreciation) {धारा 205(2)}
(3) संचयों में हस्तान्तरण (Transfer to Reserve) {धारा 205(2A)}
(4) मूल्य–ह्रास की बकाया (Arrears of Depreciation) {धारा 205(1)(a)}
(5) पिछली हानियां (Past Losses) {धारा 205(1)(b)}

आय का व्यय पर आधिक्य ही लाभ है। एक कम्पनी के लाभ–हानि खाते को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है– (i) सकल लाभ भाग (ii) शुद्ध लाभ भाग एवं (iii) नियोजन या निपटारा भाग। सकल लाभ और शुद्ध लाभ की गणना उसी प्रकार की जाती है जिस प्रकार इनकी गणना एकांकी व्यापार या साझेदारी व्यापार की दशा में की जाती

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

है। यहां लाभों का निपटारा या नियोजन का तात्पर्य शुद्ध लाभों के उपयोग से हैं। एक कम्पनी अपने शुद्ध लाभों का नियोजन अग्र प्रकार से कर सकती है–

5.1.1 लाभांश के स्रोत (Soures of Dividend)

कम्पनी अधिनियम में 'लाभांश' शब्द की कोई परिभाषा नहीं दी गई है। सामान्यतः कम्पनी के अंशधारी को उसके द्वारा धारित अंशों पर जो लाभ दिया जाता है वह लाभांश है। कम्पनी अधिनियम, 1956 की धारा 205 (i) के अन्तर्गत एक कम्पनी निम्नलिखित साधनों से लाभांश की घोषणा कर सकती है–

(i) चालू वर्ष के लाभों से,
(ii) गत वर्षों के लाभों से,
(iii) चालू व गत वर्षों के लाभों के योग से,
(iv) सरकार द्वारा दी गई गारण्टी के अन्तर्गत प्राप्त अनुदान राशि से।

यदि लाभांश संचयों में से दिया जा रहा है तो निम्नलिखित प्रतिबन्ध है–

(i) लाभांश की दर 10% या गत पांच वर्षों की औसत लाभांश दर दोनों में जो कम हो।
(ii) संचय के लिए राशि हस्तान्तरण करने के बाद बचा संचय राशि चुकता पूंजी के 15% से कम नहीं होना चाहिए।
(iii) गत वर्षों के आयगत लाभ में से अधिकतम 10% (चुकता पूंजी + संचय) राशि ही उपयोग में ली जा सकती है। यदि चालू वर्ष में हानि हो तो समायोजित किया जाएगा।

5.1.2 चालू मूल्य–ह्रास (Current Depreciation)

लाभांश वितरण करने से पूर्व कम्पनी अधिनियम की धारा 205 (2) के अनुसार ह्रास अपलिखित करना अनिवार्य है। निम्नलिखित तीन विधियों से मूल्य–ह्रास लगाया जा सकता हैं–

(अ) कम्पनी अधिनियम की धारा 350 द्वारा निर्धारित विधि के अनुसार मूल्य–ह्रास अपलिखित कर दिया जावे। इस धारा में यह निर्दिष्ट है कि,

1. मूल्य–ह्रास क्रमागत ह्रास विधि से अपलिखित किया जावेगा,
2. भारतीय कम्पनी अधिनियम में दी गई मूल्य–ह्रास की दर को अपनाया जायेगाा, तथा
3. यदि सम्पत्ति बेची जाती है या नष्ट हो जाती है या उसे उपयोग से हटा दिया जाता है तो इस हानि को उसी वित्तीय वर्ष के लाभों से अपलिखित किया जायेगा।

(ब) किसी ह्रास योग्य सम्पत्ति के सम्बन्ध में प्रति वर्ष इतनी राशि मूल्य–ह्रास के रूप में अपलिखित की जानी चाहिए जो सम्पत्ति के जीवनकाल में 95% मूल्य अपलिखित हो जाए। (स्थाई किस्त विधि)

(स) केन्द्रीय सरकार की अनुमति से अन्य कोई भी विधि जिससे सम्पत्ति के मूल लागत का 95% मूल्य सम्पत्ति के जीवनकाल में अपलिखित हो जाए।

5.1.3 संचयों में हस्तान्तरण (Transfer to Reserves)

कम्पनी अधिनियम की धारा 205 (2a) के अनुसार संचयों में न्यूनतम हस्तान्तरण के सम्बन्ध में केन्द्रीय सरकार ने निम्नलिखित नियम बनाए हैं–

साधारण अंशों पर प्रस्तावित लाभांश दर	चालू वर्ष के लाभों का संचय में हस्तान्तरण
10% से अधिक व 12.5% तक	2.5%
12.5% से अधिक व 15% तक	5%
15% से अधिक व 20% तक	7%
20% से अधिक	10%

यदि लाभांश की दर 10% से कम या लाभांश शून्य है तो संचय में हस्तान्तरित करने की आवश्यकता नहीं है। ऊपर वर्णित संचयों में हस्तान्तरण राशि न्यूनतम है। निम्नलिखित नियमों की पालना करके अधिक राशि भी हस्तान्तरित कर सकती है–

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(a) कम्पनी के पास गत तीन वर्षों के लाभांश के औसत के बराबर लाभांश चुकाने के लिए लाभ उपलब्ध हो। परन्तु यदि गत दो वर्षों के कर के पश्चात् लाभों के औसत से चालू वर्ष के कर के पश्चात् लाभ 20% या इससे अधिक से कम है तो ऐसे न्यूनतम लाभांश को बांटा जाना आवश्यक नहीं है तथा कम्पनी स्वेच्छा से अधिक दर से संचय में हस्तान्तरण कर सकती है।

(b) यदि कम्पनी लाभांश नहीं देना चाहती है तो संचय में स्थानान्तरित करना आवश्यक नहीं है किन्तु फिर भी यदि कम्पनी संचय निर्माण करना चाहती है तो यह राशि तीन वर्षों के लाभांश के औसत दर से ज्यादा नहीं होगी।

5.1.4 मूल्य–ह्रास की बकाया (Arrears of Depreciation)

कम्पनी अधिनियम की धारा 205 (1)(a) के अनुसार मूल्य–ह्रास की बकाया राशि को अपलिखित करने के सम्बन्ध में निम्नलिखित दो नियम बताती हैं–

(अ) 28 दिसम्बर, 1960 से पूर्व तक समाप्त हुए वित्तीय वर्ष के लाभ को बिना मूल्य–ह्रास अपलिखित किए लाभांश घोषित में उपयोग लिया जा सकता है।

(ब) 27 दिसम्बर, 1960 के पश्चात् समाप्त होने वाले वित्तीय वर्ष के सम्बन्धित मूल्य–ह्रास को अपलिखित नहीं किए जा सका है ऐसे मूल्य–ह्रास को लाभांश घोषित करने से पूर्व में अपलिखित करना अनिवार्य है।

5.1.5 पिछली हानियां (Past Losses)

कम्पनी अधिनियम की धारा 205 (1)(b) के अनुसार यदि कम्पनी को 27 दिसम्बर, 1960 के पश्चात् सम्बन्धित वर्ष का ह्रास चार्ज करने के पश्चात् हानि हुई हो तो उसे हानि की रकम या उस वर्ष में अपलिखित की गई मूल्य–ह्रास की रकम, जो भी कम हो, को निम्नलिखित में से घटाया जाना चाहिए–

(अ) उस वर्ष के लाभ में से जिसके लिए लाभांश घोषित करने का प्रस्ताव होता है।

(ब) कम्पनी के पिछले वित्तीय वर्षों के लाभ में से।

(स) उपरोक्त (अ) और (ब) के योग में से।

5.2 पूंजीगत लाभ (Capital Profit)

पूंजीगत लाभ वे लाभ होते हैं जो कि व्यापार के सामान्य व्यवहारों से उत्पन्न न होकर अन्य साधनों से उपलब्ध होते हैं। कम्पनी अधिनियम की धारा 205 के अनुसार कोई भी कम्पनी लाभांश की घोषणा केवल आयगत लाभों से ही कर सकती है, पूंजीगत लाभों से नहीं। पूंजीगत मदों में निम्नलिखित मदें शामिल है–

(1) अंशों के निर्गमन पर प्राप्त प्रीमियम
(2) ऋणपत्रों के निर्गमन पर प्राप्त प्रीमियम
(3) अंश हरण खाते की बची राशि
(4) कम्पनी के समामेलन से पूर्व कमाया गया लाभ
(5) कम्पनी के ऋण–पत्रों के शोधन पर प्राप्त बट्टा
(6) स्थायी सम्पत्ति के बेचने से प्राप्त लाभ।

5.3 पूंजीगत हानि (Capital Loss)

कभी–कभी स्थाई सम्पत्तियों के मूल्यों में कमी के कारण पूंजीगत हानि हो जाती है। कम्पनी अधिनियम के अनुसार यह आवश्यक नहीं है कि लाभांश वितरण के पूर्व इस प्रकार की पूंजीगत हानि को अपलिखित किया जाए।

5.4 विभाजन योग्य लाभ तथा शुद्ध लाभ में अन्तर

(1) शुद्ध लाभ का सम्बन्ध किसी विशेष वर्ष से होता है जबकि विभाजन योग्य लाभों का सम्बन्ध किसी विशेष वर्ष से नहीं होता है।

(2) विभाजन योग्य लाभों से तात्पर्य उन लाभों से है जो कम्पनी अधिनियम की धारा 205 के प्रावधानों का पालन करते हुए लाभांश के लिए उपलब्ध हो। जबकि शुद्ध लाभ की सम्पूर्ण राशि लाभांश के लिए उपलब्ध नहीं होते हैं।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(3) विभाजन योग्य लाभों में चालू वर्ष के लाभ, पिछले वर्षों बचाए गए लाभ या सरकार द्वारा लाभांश के लिए दी गई गारण्टी के अन्तर्गत प्राप्त रकम भी शामिल होती है। जबकि शुद्ध लाभ में चालू वर्ष के लाभ ही शामिल होते हैं।

(4) शुद्ध लाभ ज्ञात करने के लिए यह आवश्यक नहीं है कि स्थाई सम्पत्तियों पर मूल्य–ह्रास अपलिखित किया जाए जबकि विभाजन योग्य लाभों की गणना करने के लिए न्यूनतम मूल्य–ह्रास अपलिखित किया जाना आवश्यक है।

(5) विभाजन योग्य लाभ की गणना करने के लिए पिछले वर्ष की बकाया हानि एवं मूल्य–ह्रास की बकाया राशि अपलिखित की जाए जबकि शुद्ध लाभ ज्ञात करने में अपलिखित किया जाना आवश्यक नहीं है।

5.5 लाभों का नियोजन (Appropriation of Profits)

सामान्यतया कम्पनी के लाभों का नियोजन अग्रलिखित कार्यों के लिए किया जाता है–

(i) संचयों में स्थानान्तरण (Transfer to Reserve) हेतु,

(ii) लाभांश का भुगतान (Payment of Dividend) हेतु,

(iii) अंशधारियों को बोनस का वितरण (Distribution of Bonus to Shareholders) हेतु।

5.5.1 संचयों का निर्माण (Creation of Reserves)

संचय की परिभाषा कम्पनी अधिनियम के अनुसार "संचय में ऐसी राशि को सम्मिलित नहीं किया जाएगा जो सम्पत्तियों के मूल्य में कमी आने के कारण या उनके नवीनीकरण के लिए या उन पर मूल्य–ह्रास का आयोजन करने के लिए रोक ली गयी हो अथवा अपलिखित कर दी गयी हो या किसी ज्ञात दायित्व के आयोजन के लिए रोक ली गयी हो।" कम्पनी अधिनियम में संचय को दो भागों में विभक्त किया गया है–

(i) पूंजीगत संचय (Capital Reserve) तथा (ii) आयगत संचय (Revenue Reserve)।

पूंजीगत संचय (Capital Reserve)– "पूंजीगत संचय में ऐसी राशि को सम्मिलित नहीं किया जाएगा जिनका लाभ–हानि खाते के द्वारा मुक्त रूप से वितरण किया जा सके।"

आयगत संचय (Revenue Reserve)– "जो पूंजीगत संचय नहीं हो वह आयगत संचय है।" अर्थात् जो संचय लाभांश वितरण के लिए उपलब्ध हो।

5.5.2 ऋणपत्र शोधन संचय में हस्तान्तरण

कम्पनी अधिनियम की धारा 117 (C) के अनुसार यदि कम्पनी के ऋणपत्र का शोधन संचय बकाया है तो पहले उचित राशि ऋणपत्र शोधन संचय में स्थानान्तरित करने के पश्चात् ही लाभांश घोषित किया जा सकता है।

5.5.3 संचयों में स्थानान्तरण सम्बन्धी लेखा

Profit and Loss Appropriation A\c Dr.
    To ----(Particular) Reserve A\c
(Amount transferred.)

ये संचय की राशि चिट्ठे के दायित्व पक्ष में "Reserve & Surplus" शीर्षक के अन्तर्गत दिखाया जाता है।

5.6 लाभांश की घोषणा एवं भुगतान करने सम्बन्धी प्रक्रिया (Procedure for Declaration & Payment of Dividends)

कम्पनी के अंतिम खाते बनाने समय संचालकों की सभा में लाभांश भुगतान का प्रस्ताव रखा जाता है। इसके बाद में खातों का अंकेक्षण किया जाता है। इसके पश्चात् साधारण सभा में अंशधारी प्रस्ताव को स्वीकार या अस्वीकार कर देते है। साधारण सभा के 30 दिनों के भीतर अंशधारियों को लाभांश का भुगतान हो जाना चाहिए।

5.6.1 लाभांश की घोषणा एवं भुगतान का लेखा व्यवहार (Amount of Declaration & Payment of Dividends)

1. संचालकों द्वारा सभा में लाभांश की सिफारिश करने पर

Profit and Loss Appropriation A\c Dr.
    To Proposed Preference Share Dividend A\c
    To Tax on Proposed Preference Share Dividend A\c

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

To Proposed Equity Share Dividend A\c
To Tax on Proposed Equity Share Dividend A\c
(Bening Dividend Proposed.)

प्रस्तावित लाभांश की राशि को चिट्ठे के दायित्व पक्ष में "चालू दायित्व एवं आयोजन" (Current Liabilities and Provision) शीर्षक के अन्तर्गत 'ब' भाग में दिखाया जाएगा।

2. वार्षिक साधारण सभा में सिफारिश की पुष्टि होने पर

Proposed Preference Share Dividend A\c	Dr
Tax on Proposed Preference Share Dividend A\c	Dr
Proposed Equity Share Dividend A\c	Dr
Tax on Proposed Equity Share Dividend A\c	Dr
To Preference Share Dividend A\c	
To Tax on Preference Share Dividend A\c	
To Equity Share Dividend A\c	
To Tax on Equity Share Dividend A\c	

(Bening Dividend accepted by the Shareholders.)

3. संचालक द्वारा लाभांश भुगतान के लिए बैंक खाता खोलने पर

Dividend Bank A\c	Dr
To Bank A\c	

(Being Separate bank a\c opend for payment of dividend.)

4. लाभांश चैक भेजने पर

Preference Share Dividend A\c	Dr
Equity Share Dividend A\c	Dr
To Dividend Bank A\c	

(Being dividend paid.)

5. कर का भुगतान करने पर

Tax on Preference Share Dividend A\c	Dr
Tax on Equity Share Dividend A\c	Dr
To Bank A\c	

(Being Tax paid.)

6. यदि किसी अंशधारी द्वारा लाभांश का भुगतान नहीं लिया जाए तो उक्त बैंक खाते में इस लाभांश की रकम के बराबर राशि बची रहेगी। इस सम्बन्ध में अग्रलिखित प्रविष्ट की जाएगी–

Dividend Bank A\c	Dr
To Unclaimed Dividend A\c	

(Dividend not Claimed transferred to Unclaimed Dividend A\c.)

7. उक्त रकम से नया बैंक खाता खोलने पर

Unpaid Dividend Bank A\c	Dr
To Dividend Bank A\c	

(Being opening of new bank a\c.)

कम्पनी चिट्ठे में 'न मांगे गए लाभांश खाते' (Unclaimed Dividend A\c) के शेष को दायित्व पक्ष (चालू दायित्व) व (Unpaid Dividend Bank A\c) को सम्पत्ति पक्ष के 'चालू सम्पत्तियों, ऋण एवं अग्रिम' शीर्षक के अन्तर्गत दिखाया जाएगा।

8. अंशधारी द्वारा मांग पर नया लाभांश अधिपत्र निर्गमित करने पर

Unclaimed Dividend A\c	Dr
To Unpaid Dividend Bank	A\c

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(Being Unclaimed Dividend paid.)

9. कम्पनी अधिनियम, 1956 की धारा 205 (A) के अनुसार यदि कोई अंशधारी लाभांश घोषणा के 7 वर्षों तक लाभांश नहीं लेता है तो इस राशि को केन्द्रीय सरकार के 'विनियोजक शिक्षा एवं संरक्षण कोष' में जमा कराना होगा। तब अग्रलिखित प्रविष्ट की जाएगी–

Unclaimed Dividend A\c Dr

To Unpaid Dividend Bank A\c

(Being Dividend not Claimed transfered to Investor Education & Protection fund A\c which is established account of Centtal Government.)

लाभांश के सामान्य नियम (Genreal Rules of Dividnd)

कम्पनी अधिनियम के अनुसार लाभांश की घोषणा एवं भुगतान सम्बन्धी नियम अग्र प्रकार है–

(1) लाभांश दर हमेशा वार्षिक होगी। जो अंश कम्पनी ने वित्तीय वर्ष के पूर्व में निर्गमित किए हो तो सम्पूर्ण वर्ष के लाभांश देय होगा चाहे विनियोगकर्त्ता ने इसे कभी भी खरीदा हो।

(2) लाभांश नकद में ही दिया जाएगा।

(3) लाभांश हमेशा चुकता पूंजी पर देय होगा।

(4) लाभांश केवल आयगत लाभों में से देय होगा।

(5) लाभांश दो प्रकार के हो सकते हैं– (1) अन्तिम लाभांश (Final Dividend) व (2) अन्तरिम लाभांश (Interim Dividend)।

जो लाभांश अन्तिम खाते बनाने के बाद दिया जाए अन्तिम लाभांश कहलाता है तथा जो लाभांश वर्ष के मध्य में दिया जाए अन्तरिम लाभांश कहलाता है।

(6) लाभांश कर 16.995% [(15% + 10% अधिभार + दोनों के योग पर 3% शिक्षा प्रभार)]

अन्तिम लाभांश का प्रस्ताव रखने पर निम्नलिखित प्रविष्टि होगी–

Profit & Loss Appropriation A\c Dr.

To Proposed --- Dividend

To Proposed Tax on Dividend

अन्तरिम लाभांश की घोषणा करने की कोई प्रविष्टि नहीं होगी, क्योंकि घोषणा से कोई दायित्व उत्पन्न नहीं होता है। भुगतान करने पर निम्नलिखित प्रविष्टि की जायेगी–

Interim Dividend A\c Dr.

Tax on Dividend A\c Dr.

To Bank A\c

(Being interim dividend paid)

वर्ष के अन्त में समायोजन प्रविष्टि की जायेगी–

Profit & Loss Appropriation A\c Dr.

To Interim Dividend A\c

To Tax on Dividend A\c

(Balance transferred)

Illustration 1

राजा लि. पिछले वर्षों के मुक्त संचयों में से वर्ष 2009 के लिए लाभांश देना चाहती हैं। निम्नलिखित सूचनाओं की सहायता से लाभांश की अधिकतम घोषित की जा सकने वाली राशि ज्ञात कीजिए–

चुकता पूंजी	1,00,00,000 रु.
मुक्त संचय	45,00,000 रु.
चालू वर्ष की व्यापारिक हानि	6,00,000 रु.
गत पांच वर्षों की लाभांश दर	10%, 12%, 12%, 10%, 8%

यदि मुक्त संचय की राशि 25 लाख रु. होती तो लाभांश की राशि क्या होती?

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Solution

The following Condition must be satisfied for the purpose of declaration of dividend out of past year's profits.

(a) Rate of dividend will be:

Avarage rate of dividend of past 5 year's (10+12+12+10+8) / 5 = 10.4%

(i.e. 10.4%) or 10% whichever is less 10%

(b) Maximum withdrawn from reserves

10% of (Paid up Capital + Free Reserves) = 14,50,000
(1,00,00,000 + 45,00,000)

Less : Current year's Loss = 6,00,000

Amount available for dividend 8,50,000

Rate of dividend on Equity Share Capital $= \frac{8,50,000}{1,00,00,000} \times 100 = 8.5\%$

(c) Residual Reserve Test

After drawn from reserve, the balance of reserve will be Rs. 30,50,000 (45,00,000 - 14,50,000) Such residual reserve is more than by 15% of paid up Capital (15,00,000 = 15% of 1,00,00,000). Hence Condition satisfied.

Here Company can provide 10% dividend only.

If the amount of free reserve is Rs. 25,00,000. then

(a) Maximum Rate of dividend (Same as above) 10%

(b) Maximum withdrawn from reserves

10% of (Paid up Capital + Free Reserves) = 12,50,000
(1,00,00,000 + 25,00,000)

Less : Current year's Loss = 6,00,000

Amount available for dividend 6,50,000

Rate of dividend on Equity Share Capital 6.5%

(d) Residual Reserve Test

After drawn from reserve, the balance of reserve will be Rs. 12,50,000 (25,00,000 - 12,50,000). Such residual reserve is Less than by 15% of paid up Capital (15,00,000 = 15% of 1,00,00,000).

अतः जब संचय 25,00,000 रु. हो तो लाभांश नहीं दिया जा सकता। इस नियम के आधार पर आवश्यक राशि रखकर शेष राशि का उपयोग लाभांश हेतु किया जा सकता है। यहां पर 15,00,000 रु. शेष रखकर बाकी बचे 10,00,000 रु. का उपयोग किया जा सकता है। जिसमें 6,00,000 रु. चालू वर्ष की हानि घटाकर बाकी 4,00,000 रु. ही लाभांश के लिए उपयोग में ले सकते हैं। अतः अंशों पर लाभांश की अधिकतम दर 4% होगी।

लाभांश वितरण के पूर्व लाभों में से घटाई जाने वाली मदें

लाभांश घोषणा के पूर्व निम्नलिखित मदों की राशि घटाई जानी आवश्यक है–

(1) चालू वर्ष के मूल्य–ह्रास की सम्पूर्ण राशि

(2) पिछले वर्ष की बकाया या अशोधित मूल्य–ह्रास

(3) पिछले वर्षों की हानियां जो अभी तक अपलिखित नहीं की गई हो।

पूंजी में से ब्याज– जैसा कि पूर्व में बताया जा चुका है कि कोई भी कम्पनी लाभांश की घोषणा आयगत लाभों से ही कर सकती है, पूंजीगत लाभों से नहीं। परन्तु ऐसी नव स्थापित कम्पनी जिसको प्लाण्ट, मशीनरी व भवन निर्माण में अधिक समय लगेगा। अपने अंशधारियों को लाभांश के स्थान पर ब्याज का भुगतान कर सकती है। इस प्रकार ब्याज भुगतान के लिए कम्पनी अधिनियम धारा 208 के नियम अग्रलिखित है–

(i) केन्द्रीय सरकार की अनुमति आवश्यक है।

(ii) केन्द्रीय सरकार ने जितनी अवधि के लिए ब्याज की अनुमति दी है उतनी ही अवधि के दिया जाएगा। किन्तु ये अवधि किसी भी दशा में जिस अर्द्धवर्ष में वाणिज्यिक उत्पादन प्रारम्भ हुआ है के अगले 6 महिने से ज्यादा नहीं होगी। जैसे यदि वाणिज्यिक उत्पादन 1 जुलाई, 2009 को (अर्द्ध वर्ष समाप्ति 30 सितम्बर, 2009) को हुआ तो ब्याज अधिकतम 31 मार्च,

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

2010 तक देय होगा।

(iii) ब्याज की दर केन्द्रीय सरकार द्वारा घोषित होगी अन्यथा अधिकतम 4% होगी।

(iv) पार्षद अन्तर्नियमों या विशेष प्रस्ताव पारित करके इस सम्बन्ध में व्यवस्था की जानी चाहिए।

Illustration 2

जानवी लि. की निर्गमित अंश पूंजी 100 रु. वाले पूर्ण प्रदत्त समता अंशों में विभाजित 2,00,000 रु. की थी तथा वह अपने वार्षिक खाते प्रतिवर्ष 31 मार्च को तैयार करती है। 31 मार्च, 2007 को अन्य के अतिरिक्त कम्पनी की पुस्तकों में निम्नलिखित शेष थे–

	Rs.
Unclaimed Dividend A\c	558
Unpaid Dividend Bank	558

31 मार्च, 2007 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए कम्पनी ने 1,95,500 रु. का शुद्ध लाभ कमाया जिसमें गत वर्ष से लाए गए शेष के 15,500 रु. जोड़े गए। कर के लिए 70,500 रु. का आयोजन किया गया तथा शेष राशि में से संचालकों ने अग्र प्रकार नियोजन किया–

	Rs.
General Reserve A\c	40,000
Contingency Reserve A\c	35,000
Dividend Reserve A\c	40,000

लाभांश संचय में से संचालकों ने समता अंशों पर 31 मार्च, 2007 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए 16% का लाभांश घोषित करने की सिफारिश की। 10 जुलाई, 2007 को अंशधारियों ने सिफारिश की पुष्टि की तथा लाभांश अधिपत्र अगले दिन प्रेषित कर दिए गए। लाभांश के भुगतान के लिए 11 जुलाई, 2007 को एक अलग बैंक खाता खोला गया। 31 मार्च, 2008 को समाप्त होने वाले वर्ष में निम्नलिखित भुगतान किए गए–

July, 2007 Rs. 29,000 (all for current year's dividends)

August, 2007 Rs. 1,200 (Including Rs. 140 on account of past year's dividends)

September, 2007 Rs. 480 (Including Rs. 30 on account of past year's dividends)

10 अगस्त, 2007 को लाभांश बैंक खाते का शेष न भुगतान किए गए लाभांश बैंक खातें में स्थानान्तरित कर दिया गया। इन सौदों को दर्ज करने के लिए आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिए तथा उनकी खाता बही में खतौनी कीजिए।

Solution

Journal of Janavi Ltd.

Date	Particulars			L.F.	Dr.	Cr.
2007, Mar. 31	Profit and Loss	A\c	Dr.		1,95,500	
	To Provision for Taxation	A\c				70,500
	To Profit and Loss Appropriation A\c					1,25,000
	(Provision for taxation made and balance of net profit transferred to P&L Appropriation A\c.)					
March, 31	Profit and Loss Appropriation	A\c	Dr.		1,21,798	
	To General Reserve	A\c				40,000
	To Contingency Reserve	A\c				35,000
	To Dividend Reserve	A\c				40,000
	To Provision for Div. tax	A\c				6,798
	(Appropriation made for transfer to reserves.)					
March, 31	Dividend Reserve	A\c	Dr.		32,000	
	To Proposed Equity Share Div. A\c					32,000
	(Proposal for declaration of equity share dividend made.)					
July, 10	Proposed Equity Share Div.	A\c	Dr.		32,000	
	To Equity Share Dividend	A\c				32,000
	(Proposal for declaration of equity share dividend approved.)					

Cont.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

July, 10	Provision for Div. Tax	A\c	Dr.	6,798	
	To Dividend Tax	A\c			5,438
	To P&L Appropriation	A\c			1,360
	(Provision of tax adjusted and excess money credited to P&L appropriation A\c.)				
July, 11	Dividend Bank	A\c	Dr.	32,000	
	To Bank	A\c			32,000
	(Separate Dividend Bank A\c opened.)				
July, 11	Dividend Tax	A\c	Dr.	5,438	
	To Bank	A\c			5,438
	(Tax deposited.)				
July, 11	Equity Share Dividend	A\c	Dr.	32,000	
	To Dividend Bank	A\c			32,000
	(Cheque issued for payments of equity share dividend.)				
Aug., 31	Unclaimed Dividend	A\c	Dr.	140	
	To Unpaid Dividend Bank	A\c			140
	(Being Unclaimed Dividend paid.)				
Sept., 30	Unclaimed Dividend	A\c	Dr.	30	
	To Unpaid Dividend Bank	A\c			30
	(Amount paid on account of past year's dividends.)				
2008 Mar. 31	Dividend Bank	A\c	Dr.	1,060	
	To Unclaimed Dividend	A\c			1,060
	(Balance in dividend bank account, being unclaimed dividend transferred to Unclaimed Dividend A\c.)				
March, 31	Unpaid Dividend Bank	A\c	Dr.	1,060	
	To Dividend Bank	A\c			1,060
	(Amount withdrawn from Dividend Bank A|c transferred to Unpaid Dividend Bank A\c.)				

संचालकों ने चूंकि लाभांश संचय खाते में 40,000 रु. का नियोजन किया है अतः लाभांश कर के रूप में 16.995% की दर से 6,798 रु. का लाभांश कर आयोजन किया है। लेकिन सामान्य साधारण समय द्वारा लाभांश 16% की दर से घोषित किया गया। अतः समता अंशों पर 32,000 रु. का लाभांश ही घोषित हुआ जिस पर लाभांश कर 5,438 रु. होता है अतः लाभ–हानि नियोजन खाते को 6,798 – 5,438 = 1,360 रु. से पुनः जमा कर दिया गया है।

Unclaimed Dividend A\c

		Rs.			Rs.
2007			2007		
Aug 31	To Unpaid Dividend Bank a\c	140	April,1	By Balance b\d	558
Sept. 30	To Unpaid Dividend Bank a\c	30	2008		
2008			Mar. 31	By Dividend Bank a\c	1,060
Mar. 31	To Balance c\d	1,448			
		1,618			1,618

Unpaid Dividend Bank A\c

		Rs.			Rs.
2007			2007		
Aug 31	To Balance b\d	140	April,1	By Unclaimed Dividend A\c	558
Sept. 30	To Dividend Bank a\c	30	2008		
2008			Mar. 31	By Unclaimed Dividend A\c	1,060
Mar. 31		1,566		By Balance c\d	
		1,618			1,618

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

स्व परीक्षा प्रश्न (Self Examination Questions)

अति लघुरात्मक प्रश्न (Very Short Answer type Questions)

1. विभाजन योग्य लाभ क्या है? (R.U., B. Com., 2001)
2. बोनस अंशों के निर्गमन करने के लिए कोन–कौन से लाभ उपलब्ध होते है? (R.U., B. Com., 2007)
3. सामान्यतया कम्पनी के लाभों का नियोजन किन कार्यों के लिए किया जाता है?

लघुरात्मक प्रश्न (Short Answer type Questions)

1. लाभों का पूंजीकरण क्या है? (R.U., B. Com., 2008)
2. बोनस अंशों के निर्गमन के सम्बन्ध में सेबी के नवीनतम दिशा–निर्देशों के मुख्य बिन्दु दीजिए। (R.U., B. Com., 2006)
3. विभाजन योग्य लाभ से आप क्या समझते है? (Bikaner Univer., B. Com., 2006)

सैद्वान्तिक प्रश्न (Theortical Questions)

1. एक कम्पनी द्वारा लाभांश घोषणा एवं उसके भुगतान सम्बन्धी कानून एवं प्रक्रिया का संक्षेप में वर्णन कीजिए। लाभांश की घोषणा एवं भुगतान पर क्या–क्या लेखांकन प्रविष्टियां की जाती है? (M.D.S.U., B. Com., 2005)
2. बोनस अंश क्या है? किन परिस्थितियों में इसका निर्गमन किया जाता है? इस हेतु क्या लेखा व्यवहार होता है? सेबी द्वारा प्रस्तावित दिशा–निर्देश क्या है? (Bikaner Univer., B. Com., 2006)

व्यावहारिक प्रश्न (Practical Questions)

1. हिन्दुस्तान केमिकल्स लि. की अधिकृत अंश पूंजी 50 लाख रु. है जो 100 रु. वाले 20,000, 7% पूर्वाधिकार अंशों व 10 रु. वाले 3,00,000 समता अंशों में विभाजित है। 10,000 पूर्वाधिकार अंश 1990 में निर्गमित किए गए थे तथा पूर्ण राशि मांगी जा चुकी है। एक अंशधारी जिसके पास 1,000 अंश हैं, 20 रु. की अन्तिम मांग का भुगतान न कर सका। 2,00,000 साधारण अंश निर्गमित किए हैं जिन पर 8 रु. मांगा गया है एवं सम्पूर्ण राशि प्राप्त हो गयी। 10,000 अंशों पर 2 रु. की दर पर अग्रिम मांग प्राप्त हो गयी। कम्पनी के पार्षद अन्तर्नियम में निम्नलिखित व्यवस्था है–

   (अ) पूर्वाधिकार अंश सहभागी हैं व सामान्य अंशों पर 12.5 प्रतिशत लाभांश देने के बाद 7.5 प्रतिशत अतिरिक्त लाभांश के अधिकारी हैं।

   (ब) पूर्वाधिकार अंशों पर अतिरिक्त लाभांश देने के बाद शेष रहे तो साधारण अंशों पर भी 7.5 प्रतिशत अतिरिक्त लाभांश दिया जायेगा।

   (स) पूर्वाधिकार व सामान्य अंशों पर मूल लाभांश देने के बाद शेष रहे लाभों का 7.5 प्रतिशत कर्मचारियों को बोनस के लिए प्रावधान करना है।

   (द) शेष रहे लाभों में से 5,00,000 रु. तक का लाभ सामान्य संचय में स्थानान्तरित करना है व तत्पश्चात् रहे शेष लाभों को अगले वर्ष के लिए आगे ले जाना है।

   31 मार्च, 2008 वर्ष का लाभ 14,00,000 रु. है। उक्त बातों को ध्यान में रखकर कम्पनी का लाभ–हानि नियोजन खाता बनाइए। (RU B.Com., 2008)

   Ans. Total of Balance Sheet 14,00,000

2. 31 मार्च, 2004 को बेलटेक्स लि. का चिट्ठे का सार निम्नलिखित है–

	Rs.
Authorised Capital	
10,000 12% Preference Shares of Rs. 10 each	1,00,000
1,00,000 Equity Shares of Rs. 10 each	10,00,000
	11,00,000
Issued and Subsribed Capital	
8,000 12% Preference Shares of Rs. 10 each fully paid	1,00,000
1,00,000 Equity Shares of Rs. 10 each, Rs. 8 paid up	7,20,000
Reserves and Surplus	

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

General reserve	1,20,000
Capital reserve	75,000
Securities premium	25,000
Profit & Loss Account	2,00,000
Secured Loan	
12% Partly Convertible Debentures @ Rs. 100 each	5,00,000

1 अप्रैल, 2004 को कम्पनी ने साधारण अंशों पर 2 रु. प्रति अंश की मांग की जो कम्पनी को 20 अप्रैल, 2004 को प्राप्त हुई। इसके पश्चात् कम्पनी ने निर्णय लिया कि लाभों का पूंजीकरण किया जाए व प्रत्येक चार अंशों के धारक को एक बोनस अंश दिया जाए। प्रतिभूति प्रीमियम खाते के शेष में 5,000 रु. की वह राशि सम्मिलित है जो एकीकरण की प्रक्रिया में विक्रेता को अंश निर्गमन पर प्राप्त हुई थी। इसी तरह पूंजी संचय (Capital Reserve) में 40,000 रु. की वह राशि सम्मिलित हैं जो सम्पत्ति विक्रय के लाभ से सम्बन्धित हैं। निर्गमन की शर्तों के अनुसार 12% ऋणपत्रों के 20% का परिवर्तन 1 जुलाई, 2004 को 10 रु. वाले एक साधारण अंश में होना है। आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिए व बोनस निर्गमन के तुरन्त बाद परन्तु ऋणपत्रों के परिवर्तन के पूर्व कम्पनी के चिट्ठे का सार प्रस्तुत कीजिए। क्या परिवर्तनीय ऋणपत्रधारी बोनस के अधिकारी हैं? (Bikaner Univ., 2005)

3. एक्स लि. 31 मार्च, 2004 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए 20,00,000 रु. ईक्विटी अंश पूंजी (100 रु. वाले अंशों में विभाजित) पर 20% लाभांश की घोषणा की है तथा 18 मई, 2004 को बैंक में एक अलग खता खोलकर उसी दिन लाभांश अधिपत्र निर्गमित किए हैं। एक व्यक्ति, जिसके पास 500 ईक्विटी अंश हैं, ने अपने हिस्से के लाभांश की राशि का भुगतान 31 मार्च, 2005 तक भी नहीं मांगा है।

कम्पनी की लेखा पुस्तकों में लाभांश अशिपत्र के निर्गमन तथा 'न मांगी गई राशि' को 'न मांगे गए लाभांश खाते' में स्थानान्तरण करने पर क्या जर्नल प्रविष्टियां होंगी? कम्पनी की पुस्तकों में उस समय और क्या जर्नल प्रविष्टि होगी जबकि कम्पनी द्वारा न मांगी गई उक्त राशि को केन्द्रीय सरकार के 'सामान्य रेवेन्यु खाते' में जमा कराया जायेगा? लाभांश पर कर की दर 16.995% मानिए। (Raj. Univ., 2000)

4. ग्रीन लि. की निर्गमित अंश पूंजी 10 रु. वाले पूर्ण प्रदत्त समता अंशों में विभाजित 2,00,000 रु. की थी तथा वह अपने वार्षिक खाते प्रतिवर्ष 31 मार्च को तैयार करती है। 31 मार्च, 2007 को अन्य के अतिरिक्त कम्पनी की पुस्तकों में निम्नलिखित शेष थे–

	Rs.
Unclaimed Dividend A\c	527
Unpaid Dividend Bank	527

10 जुलाई, 2007 को 16% का लाभांश 31 मार्च, 2007 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए घोषित किया गया, अधिपत्र अगले दिन प्रेषित कर दिए गए। लाभांश के भुगतान के लिए 11 जुलाई, 2007 को एक अलग बैंक खाता खोला गया। 31 मार्च, 2008 को समाप्त होने वाले वर्ष में निम्नलिखित भुगतान किए गए–

30th July, 2007 Rs. 29,888 (all for current year's dividends)

6th August, 2007 Rs. 1,200 (Including Rs. 160 on account of past year's dividends)

30th September, 2007 Rs. 48 (Including Rs. 32 on account of past year's dividends)

10 अगस्त, 2007 को लाभांश बैंक खाते का शेष न भुगतान किए गए लाभांश बैंक खातें में स्थानान्तरित कर दिया गया। इन सौदों को दर्ज करने के लिए आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिए तथा उनकी खाता बही में खतौनी कीजिए।

[Bikaner Univ. 2006]

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

समामेलन के पूर्व लाभ या हानि (Profit or Loss Prior to Incorporation)

कम्पनी अधिनियम, 1956 के अनुसार कम्पनी के समामेलन की तिथि से ही कम्पनी का अस्तिव माना जाता है। यदि कम्पनी को व्यापार क्रय करने की तिथि को समामेलन का प्रमाण–पत्र नहीं मिलता है अर्थात् व्यापार क्रय करने के पश्चात् मिलता है तो व्यापार क्रय करने की तिथि से समामेलन के दिन तक अर्जित लाभ या हानि निकालनी पड़ेगी इसे ही समामेलन से पूर्व का लाभ–हानि कहते हैं। यह लाभ या हानि कम्पनी के लिए पूंजीगत लाभ या हानि होते हैं अतः इस लाभ में से कम्पनी लाभांश घोषित नहीं कर सकती है। पूंजीगत लाभ को पूंजीगत संचय (Capital Reserve) खाते में तथा पूंजीगत हानि (Capital Loss) को ख्याति खाते (Goodwill Account) में हस्तान्तरित कर देंगें।

लाभ या हानि की गणना– यदि कम्पनी के समामेलन के दिन पुस्तकें बन्द न कर पाए तो इस सम्पूर्ण अवधि के लाभों को दो भागों (समामेलन के पूर्व के लाभ या हानि और समामेलन के पश्चात् के लाभ) में विभिक्त किया जाएगा–

1. पूरी अवधि का सकल लाभ (Gross Profit) निकाला जाएगा।

2. समामेलन के पूर्व तथा पश्चात् की अवधि के मध्य समय का अनुपात निकाला जाएगा। उदाहरणार्थ– यदि कम्पनी ने व्यापार का क्रय 1 जुलाई, 2009 को किया और समामेलन का प्रमाणपत्र 1 अक्टुबर, 2009 को प्राप्त हुआ और कम्पनी के अन्तिम खाते 31 मार्च को तैयार होते हैं तो समय का अनुपात अग्र प्रकार से निकाला जाएगा–

समामेलन से पूर्व का समय = 1 जुलाई से 1 अक्टूबर = 3 माह
समामेलन के पश्चात् का समय = 1 अक्टूबर से 31 मार्च = 6 माह
अतः समय का अनुपात = 3 : 6 = 1 : 2

लाभ–हानि में समयानुसार विभक्त होने वाले व्ययों को समय के अनुपात में बांटेंगे। जैसे वेतन, ब्याज, किराया, अंकेक्षण, बीमा प्रीमियम, बिजली व्यय, कार्यालय व्यय आदि।

3. समामेलन के पूर्व तथा पश्चात् की अवधियों के मध्य हुए विक्रय के आधार पर विक्रय अनुपात (Sales Ratio) ज्ञात किया जाएगा।

सकल लाभ को विक्रय अनुपात दो अवधियों में बांटा जाएगा तथा लाभ–हानि खाते के ऐसे व्यय, जिनका सम्बन्ध विक्रय से हो, जैसे बिक्री व्यय, कमीशन, यात्रा व्यय, बट्टा, डूबत ऋण, विज्ञापन व्यय, जावक गाड़ी भाड़ा आदि को विक्रय अनुपात के आधार पर बांटा जाएगा।

उदाहरण– पूरी अवधि की बिक्री 10,00,000 रु.
समामेलन से पूर्व की बिक्री 3,75,000
अतः बिक्री का अनुपात 3,75,000 : 6,25,000 या 3:5

कभी–कभी समामेलन से पूर्व तथा पश्चात् की बिक्री प्रत्यक्ष नहीं दे रखी होती। उस समय बिक्री का अनुपात अग्र प्रकार से निकाला जाएगा।

उदाहरण– (अ) व्यापार क्रय की तिथि 1 अप्रैल, 2009
(ब) कम्पनी के समामेलन की तिथि 1 अगस्त, 2009
(स) वर्ष 2009 की बिक्री 4,80,000 रु.
(द) अप्रैल, जून और दिसम्बर की बिक्री औसत की डेढ़ गुनी है और मई की बिक्री औसत आधी है और मार्च की बिक्री दो गुनी है। शेष बिक्री की रकम शेष महिनों में बराबर है।

हल– समामेलन से पूर्व की गणना अग्र प्रकार से की जाएगी–
वर्ष की कुल बिक्री 4,80,000 रु. है अतः एक माह की औसत बिक्री 4,80,000 / 12 = 40,000 रु.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

अप्रेल की बिक्री (औसत का डेढ़ गुना) = 60,000 रु.
मई की बिक्री (औसत की आधी) = 20,000 रु.
जून की बिक्री (औसत का डेढ़ गुना) = 60,000 रु.
दिसम्बर की बिक्री (औसत का डेढ़ गुना) = 60,0000 रु.
मार्च की बिक्री (औसत का दो गुना) = 80,000 रु.
5 माह की कुल बिक्री 2,80,000 रु.
अतः शेष सात माह की बिक्री = 4,80,000–2,80,000 = 2,00,000 रु.
इन 7 महिनों की औसत बिक्री = 2,00,000 / 7 = 28,571 रु.
व्यापार प्रारम्भ करने की तिथि (1 अप्रैल, 2009) से कम्पनी के समामेलन के दिन (31 जुलाई, 2009) तक की बिक्री (60,000 + 20,000 + 60,000 + 28,571) = 1,68,571 रु.
कम्पनी समामेलन के पश्चात् (1 अगस्त, 2009 से 31 मार्च, 2009 तक की बिक्री)
= 4,80,000 – 1,68,571 = 3,11,429
अतः बिक्री का अनुपात = 1,68,571 : 3,11,429

कुछ ऐसे खर्चे भी लाभ–हानि खाते में हैं जो न तो समय से सम्बन्ध रखते है और न ही विक्रय से। जैसे– पूंजी पर ब्याज, संचालकों की फीस, ऋणपत्रों पर ब्याज, फर्म या एकाकी व्यापार के व्यय आदि। इस प्रकार के व्ययों को निम्नलिखित नियम से बांटेंगे–

(i) समामेलन से पूर्व के व्यय– साझेदारों का वेतन, पूंजी पर ब्याज, आहरण पर ब्याज आदि समामेलन के पूर्व की अवधि में लिखे जाएंगे।

(ii) समामेलन के पश्चात् के व्यय– संचालकों की फीस, संचालकों का पारिश्रमिक, ऋणपत्रों पर ब्याज, प्रारम्भिक व्ययों का अपलेखन, अंश हस्तान्तरण फीस, अंशों व ऋणपत्रों के निर्गमन व्यय आदि समामेलन के बाद की अवधि में लिखे जाएंगे।

(iii) स्थिर व्यय– जैसे किराया, मूल्य–ह्रास, वेतन आदि समय के अनुपात में विभाजित करेंगे।

(iv) परिवर्तनशील व्यय– जैसे बिक्री के व्यय, पैकिंग व्यय आदि बिक्री के अनुपात में।

(v) विक्रेताओं को क्रय मूल्य पर दिया गया ब्याज– यदि क्रय मूल्य पर कोई ब्याज का भुगतान किया जाता है और क्रय मूल्य का भुगतान समामेलन के बाद किया जाता है तो ब्याज की राशि का विभाजन क्रय तिथि तथा समामेलन की तिथि के मध्य समय और समामेलन की तिथि तथा क्रय मूल्य के भगुतान की तिथि के मध्य के समय अनुपात में करना चाहिए। ऊपर वर्णित उदाहरण में यदि क्रय–प्रतिफल का भुगतान 1 सितम्बर, 2009 को 4,000 रु. ब्याज सहित किया गया तो क्रय–प्रतिफल पर चुकाया गया ब्याज की राशि का विभाजन 4 : 1 के अनुपात में किया जाएगा। अतः 3,200 रु. समामेलन से पूर्व (1 अप्रैल, 2009 से 31 जुलाई, 2009) तथा 800 रु. समामेलन के पश्चात् की अवधि में लिखा जाएगा। (1 अगस्त, 2009 से 1 सितम्बर 2009)

Illustration 7

सज्जन लि. का समामेलन 1 जुलाई, 2009 को हुआ। उसने अजय के एकल स्वामित्व वाले व्यापार को 1 अप्रैल, 2009 से खरीदा। 31 मार्च, 2009 को अजय का चिट्ठा अग्र प्रकार था–

Balance Sheet as at 31st March, 2009

Liabilities	Amount	Assets	Amount
Capital	21,57,500	Land & Building	6,00,000
Loan from Mr. Jatan	42,500	Plant & Machinery	15,00,000
Creditors	85,000	Debtors	1,28,000
outstanding	12,500	Profit & Loss A\c	69,000
	22,97,500		**22,97,500**

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

अजय को 22,50,000 रु. 100 रु. का भगुतान करने के लिए सहमति हुई जो 50 रु. वाले समता अंशों के निर्गमन द्वारा किया जाएगा। कम्पनी ने अपने प्रथम वर्ष की लेखा पुस्तकें 31 मार्च, 2010 को बन्द करने का निश्चय किया। इस वर्ष से सम्बन्धित आपको दिए गए अन्य विवरण अग्र लिखित है :–

Sales Rs. 15,00,000, Purchases Rs. 7,00,000, Salary Rs. 1,60,000, General Expenses Rs. 1,60,000, Interest on Loan Rs. 40,000, Freight inward Rs. 23,500, Closing Stock Rs. 1,38,500, Additional to Building (1 Oct., 2009) Rs. 2,00,000, Depreciation at 10% per annum on all Assets.

आपको (i) व्यापार को क्रय के लिए जर्नल प्रविष्टियां देनी हैं–

(ii) 31 मार्च, 2010 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए समामेलन से पूर्व का लाभ तथा समामेलन के बाद का लाभ अलग–अलग दिखाते हुए लाभ–हानि खाता तैयार करना है तथा

(iii) अजय का खाता तैयार करना है, यह मानते हुए कि समामेलन से पूर्व के लाभ का 60% उसको 31 मार्च, 2010 को नकद में भुगतान किया जाना है।

Solution **Journal of Sajjan Ltd**

1 July, 2009	Sundry Debtors A\c Dr.			1,28,500	
	Building A\c Dr.			6,00,000	
	Machinery A\c Dr.			15,00,000	
	Goodwill A\c Dr.			1,61,500	
	To Trade Creditors A\c				85,000
	To Loan A\c				42,500
	To Creditors for Expenses A\c				12,500
	To Ajay A\c				22,50,000
	(Assets and liabilities take over and purchase consideration due.)				
1 July,	Ajay's A\c Dr.			22,50,000	
	To Equity Share Capital A\c				22,50,000
	(22,500 Equity Shares issued at par to discharge purchase Consideration.)				

Trading Account for the year ending 31 March, 2010

	Rs.		Rs.
To Opening Stock	15,000	By Sales	15,00,000
To Purchases	7,00,000	By Closing Stock	1,38,500
To Freight Inward	23,500		
To Gross Profit	9,00,000		
	16,38,500		16,38,500

Profit and Loss A\c for the year ended 31st March, 2010

Particulars	Pre incorporation Rs.	Post incorporation Rs.		Pre incorporation Rs.	Post incorporation Rs.
To Salary and Wages	50,000	1,50,000	By Gross Profit	2,25,000	6,75,000
To Depreciation on					
Building	15,000	55,000			
Machinery	37,500	1,12,500			
To General Expensess	40,000	1,20,000			
To Interest on Loan	10,000	30,000			
To Net Profit	72,500	2,07,500			
	2,25,000	6,75,000		2,25,000	6,75,000

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Ajay A\c

1-7- 2009	To Equity Share Capital A\c	22,50,000	1-7- 2009	By Sundries Assets	22,50,000
31-3- 2010	To Bank A\c	58,000	31-3- 2010	By P & L A\c (60% of Pre incorporation profit Rs.72,500)	43,500
		22,93,500			22,93,500

टिप्पणी:

1 अप्रैल, 2009 विद्यमान भवन (6,00,000 रु.) पर मूल्य–ह्रास 10 प्रतिशत वार्षिक दर से 60,000 रु. है जिसे 1:3 अनुपात में बांटा गया है तथा 1 अक्टुबर, 2009 को भवन में अतिरिक्त निर्माण (2,00,000 रु.) पर 10 प्रतिशत वार्षिक दर से 6 माह का मूल्य–ह्रास 10,000 रु. है, जिसकी सम्पूर्ण राशि को समामेलन के बाद वाले लाभ में से घटाया गया है।

Illustration 8

समता लि. ने सेठिया एण्ड सन्स का चालू व्यवसाय 1 अप्रैल, 2009 से क्रय किया व समामेलन 1 सितम्बर, 2009 को व व्यापार प्रारम्भ करने का प्रमाण–पत्र 30 सितम्बर, 2009 को प्राप्त किया। क्रय–प्रतिफल 17,50,000 रु. निर्धारित किया जो कि 3,50,000 रु. नकद और 14,00,000 रु. पूर्ण प्रदत्त अंशों के रूप में देय था। कम्पनी ने 1 सितम्बर, 2009 को 14,00,000 रु. के अंश नकद में भी बेचे।

सेठिया एण्ड सन्स से क्रय की गई सम्पत्ति अग्र प्रकार थी :
मशीन 10,50,000 रु., स्टॉक 2,10,000 रु., पेटेण्ट 1,40,000 रु.।
कम्पनी का 31 मार्च, 2010 को समाप्त होने वाले वर्ष का लाभ–हानि खाता अग्र प्रकार था–

Trading and Profit & Loss A\c for the year ended 31st March, 2010

	Rs.		Rs.
To Opening Stock	2,10,000	By Sales	63,00,000
To Purchases	53,90,000	1-4-2009 to 31-8-2009 = 21,00,000	
To Gross Profit	9,45,000	1-9-2009 to 31-3-2010 = 42,00,000	
		By Closing Stock	2,45,000
	65,45,000		65,45,000
To Depreciation	1,89,000	By Gross Profit	9,45,000
To Audit fees	26,250		
To Directors fees	87,500		
To Preliminary Expenses	21,000		
To office Expenses	1,36,500		
To Selling Expenses	1,26,000		
To Interest to vendors (up to 30 Sep., 2009)	8,750		
To Net Profit	3,50,000		
	9,45,000		9,45,000

समामेलन के पहले तथा समामेलन के पश्चात् की अवधि में लाभों के बंटवारे के लिए एक विवरण बनाइये तथा कम्पनी की पुस्तकों में इसे किस प्रकार दिखाया जाएगा। अन्तिम स्टॉक का मूल्य 2,45,000 रु. था।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Solution :

Statement showing apportionement of Profit between periods prior to and post Incorporation

Particulars	Total Amount	Basis of Apportinmont	Pre incorporation Rs.	Post incorporation Rs.
Depreciation	1,89,000	5 : 7	78,750	1,10,250
Audit fees	26,250	5 : 7	10,938	15,312
Directors fees	87,500	Post	-	87,500
Preliminary Expenses	21,000	Post	-	21,000
office Expenses	1,36,500	5 : 7	56,875	79,625
Selling Expenses	1,26,000	1 : 2	42,000	84,000
Interest to vendors	8,750	5 : 1	7,292	1,458
Total Exp.	5,95,000		1,95,855	3,99,145
Gross Profit	9,45,000		3,15,000	6,30,000
Less : Total Exp.	5,95,000		1,95,855	3,99,145
Net Profit	3,50,000		1,19,145	2,30,855

समय के अनुपात = 5 : 7, विक्रय अनुपात = 1 : 2

Balance Sheet of Samta Ltd. as at 31st March, 2010

Liabilities		Amount	Assets		Amount
Share Capital			**Fixed Assets**		
Issued & Subscribed			Goodwill	3,50,000	
Share issued for cash as fully paid	14,00,000		Less : Written off	1,19,145	2,30,855
Share issued for Consideration			Machinery	10,50,000	
other than cash to vendors as			Less : Depreciation	1,89,000	8,61,000
fully paid	14,00,000	28,00,000	Patents		1,40,000
Reserve & Surplus			**Current Assets**		
Profit & Loss A\c		2,30,855	Stock		2,45,000
			Cash at Bank		1,54,000
		30,30,855			**30,30,855**

Working Note :

1. ख्याति की राशि की गणना =

Purchase Consideration - Value of Assets

17,50,000 – 14,00,000 = Rs. 3,50,000

2. प्रश्न में समामेलन से पूर्व का लाभ परिकलित करने का है, अतः व्यापार प्रारम्भ करने का प्रमाण–पत्र मिलने की तिथि का ध्यान नहीं रखा गया है। क्योंकि कम्पनी के समामेलन के पश्चात् का आयगत होता है और पूर्व का लाभ पूंजीगत होता है। अतः व्यापार प्रारम्भ करने के प्रमाण–पत्र मिलने की तिथि के आधार पर लाभ का विभाजन करने की कोई उपयोगिता नहीं है।

3. समामेलन से पूर्व के लाभ से ख्याति को अपलिखित किया गया है।

4. समय अनुपात अग्र प्रकार से निकाला गया है–

1 अप्रैल से 31 अगस्त : 1 सितम्बर से 31 मार्च

5 : 7

5. बिक्री का अनुपात अग्र प्रकार से ज्ञात किया गया

1 अप्रैल से 31 अगस्त तक बिक्री : 1 सितम्बर से 31 मार्च तक बिक्री

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

21,00,000 : 42,00,000

21 : 42 or 1 : 2

6. विक्रय पर व्यय को बिक्री के अनुपात में बांटा गया है।
7. अंकेक्षण व्यय, कार्यालय व्यय, मूल्य–ह्रास को समय अनुपात में बांटा गया है।
8. संचालक फीस, प्रारम्भिक व्यय समामेलन के पश्चात् के खर्चे हैं, क्योंकि ऐसे खर्चे कम्पनी से सम्बन्धित होते हैं।
9. ब्याज 1 अप्रैल से 31 अगस्त तक व सितम्बर

   5 : 1 के अनुपात में बांटा गया है।
10. Bank Balance = 63,00,000 - (53,00,000+5,95,000)

स्व परीक्षा प्रश्न (Self Examination Questions)

लघूत्तरात्मक प्रश्न (Short type Questions)

1. लाभांश की गारण्टी से क्या आशय है? (Bikaner Univ, 2008)
2. समामेलन के पूर्व का लाभ एवं समामेलन के पश्चात् के लाभ का विभाजन क्यों आवश्यक है? (M.D.S. Univ, 1998)
3. देनदारों से सम्बन्धित व्यापार विक्रेता की गारण्टी से आप क्या समझते है?

सैद्धान्तिक प्रश्न (Theoretical Questions)

1. 'क्रय–प्रतिफल' से आप क्या समझते है? यह कैसे निर्धारित किया जाता है? क्रेता कम्पनी की पुस्तकों में व्यापार को खरीदने एवं क्रय प्रतिफल के भुगतान करने के लिए क्या जर्नल प्रविष्टियां की जाती है? (Bikaner Univ, 2007)
2. 'समामेलन से पूर्व तथा बाद के लाभों' से क्या आशय है? ऐसे लाभों को ज्ञात करने की विधि समझाइये। ऐसे लाभों तथा हानियों का कम्पनी की लेखा पुस्तकों में आलेखन किस प्रकार किया जाता है? (Bikaner Univ, 2009)

व्यावहारिक प्रश्न (Practical Questions)

1. जैड लि. मैसर्स एल व एम के व्यापार को खरीदने तथा उनकी तरफ से उनके देनदारों से रुपया वसूल करने व उनके लेनदारों को भुगतान करने के लिए सहमत हो गए। एल व एम की पुस्तकों में देनदार 50,000 रु. तथा लेनदार 30,000 रु. दिखाए गए थे। कम्पनी उस प्रकार प्राप्त राशि का केवल विक्रेता के लेनदारों को भुगतान करने में ही उपयोग करती थी। छः माह के अन्त में लेनदार 5,500 रु. के पाये गए, उन्होंने औसतन 2% का नकद बट्टा दिया था। देनदारों में से 800 रु. की राशि डूब गई, उनको औसतन 5% नकद बट्टा दिया गया। छः माह के अन्त में देनदारों का शेष कितना है?

   उन व्यवहारों को दर्ज करने के लिए कम्पनी की पुस्तकों में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिए।

   (Bikaner Univ, 2007 & 2008)

   Ans. Balance of Debtors Rs. 23,926
2. मार्डन एजेन्सीज ने 1जनवरी, 2004 को अपना साझेदारी व्यवसाय एक सीमित कम्पनी में बदलने का निर्णय लिया। क्रय–प्रतिफल 2,34,00,000 रु. निर्धारित हुआ। कम्पनी का समामेलन का प्रमाण–पत्र 1 अप्रैल, 2004 को प्राप्त हुआ। इस बीच कम्पनी के नाम से व्यवसाय चालू रहा व क्रय–प्रतिफल का उक्त तिथि को मय 12% वार्षिक ब्याज से भुगतान किया गया। कम्पनी ने अपने प्रथम अन्तिम खाते 31 मार्च, 2005 को बनाए व संक्षिप्त लाभ–हानि खाता अग्र प्रकार बनाया–

	Rs.	Rs.
Sales		4,68,00,000
Less : Cost of goods sold	3,27,60,000	
Salaries	23,40,000	
Advertisement	14,04,000	
Discount	23,40,000	
Depreciation	3,60,000	
Miscellaneous office Expenses	2,40,000	

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Managing Director's Salary	1,80,000	
Interest	19,02,000	
Rent	14,40,000	4,29,6,000
Net Profit		38,34,000

कम्पनी ने 12% वार्षिक की दर से मय व्यापार क्रय–प्रतिफल को चुकाने व कार्यशील पूंजी की आवश्यकता हेतु 1,00,00,000 का ऋण लिया। 1 अप्रैल, 2004 से कम्पनी की औसत मासिक ब्रिक्री फर्म की तुलना में दो गुणा हो गई, लेकिन वेतन में तीन गुणा से वृद्धि हो गई। कम्पनी को 1 जुलाई, 2004 से एक अतिरिक्त स्थान 60,000 रु. मासिक किराये पर लेना पड़ा।

समामेलन के पूर्व व पश्चात् की अवधियों में विभिन्न व्ययों एवं आयों को बांटते हुए लाभ–हानि खाता बनाइए।

(MLS Univ, 2004)

Profit prior to incorporation Rs. - 38,000, and Post incorporation Rs. 38,72,000

3. एन. पी. लि. का समामेलन 1 अगस्त, 2006 को कानोडिया स्टील्स का व्यापार 1 अप्रैल, 2006 से क्रय करने के उद्देश्य से हुआ। एन. पी. लि. को व्यापार प्रारम्भ करने का प्रमाण–पत्र 1 अक्टुबर, 2006 को प्राप्त हुआ। कम्पनी के अन्तिम खाते 31 मार्च, 2007 को तैयार किए गए। खातों से निम्नलिखित तथ्य प्रकट हुए–

12 माह की बिक्री 16,00,000 रु. थी जिसमें 1 अप्रैल से 31 जुलाई तक की बिक्री 4,00,000 रु. भी सम्मिलित थी। व्यापार खाते द्वारा 6,00,000 रु. का सकल लाभ प्रदर्शित किया गया। लाभ–हानि खाते के विस्तृत विवरण अग्र प्रकार हैं–

	Rs.		Rs.
Directors' Fees	7,500	Rent	21,000
Audit Fees	3,000	Bad debts (Rs. 3,000 related to the pre-incorporation period)	12,500
Salaries	75,000	Selling Commission	20,000
Debenture Interest	30,000	Advertisement	30,000
Depreciation on Plant	45,000	Travelling Expenses	37,500
Preliminary Expenses	12,500	Interest to Vendors from 1st April to 30th September @ 5%	33,000
General Expenses	15,000		

समामेलन से पूर्व तथा पश्चात् के लाभों को दिखाते हुए एक विवरण तैयार कीजिए।

(Bikaner Univ, 2006)

Ans. Profit prior to incorporation Rs. 50,125, and Post incorporation Rs. 2,07,875

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

सूत्रधारी व सहायक कम्पनियों के लेखे

(Accounts of Holding & Subsidiary Companies)

सूत्रधारी कम्पनी व्यावसायिक संयोजन का एक तरीका हैं। इसके अन्तर्गत एक कम्पनी किसी अन्य कम्पनी पर नियन्त्रण स्थापित करने के लिए उसके समस्त अथवा अधिकांश मताधिकार अंश धारण कर लेती हैं। अंश धारण करने वाली कम्पनी सूत्रधारी कम्पनी कहलाती हैं तथा जिस कम्पनी के अंश धारण किये जाते है, वह कम्पनी सहायक कम्पनी कहलाती हैं। प्रो. हैने के अनुसार, ''सूत्रधारी कम्पनी व्यावसायिक संगठन का एक स्वरुप है जिसे आंशिक या अस्थायी संघन द्वारा स्थापित किया जाता है जो दूसरी कम्पनियों की मिलाने के उदद्ेश्य से उनके अंशो की नियन्त्रक राशि को खरीद कर नियन्त्रण स्थापित करता हैं।

वैधानिक परिभाषा :– भारतीय कम्पनी अधिनियम, 1956 की धारा 4 1 में सहायक कम्पनियों के विषय में उल्लेख किया गया है, जो इस प्रकार है :

एक कम्पनी किसी अन्य कम्पनी की सहायक कम्पनी मानी जायेगी, यदि

अ. वह अन्य कम्पनी उस कम्पनी के संचालक–मण्डल के गठन पर नियन्त्रण रखती हो।

अथवा

ब. वह अन्य कम्पनी उस कम्पनी की ईक्विटी अंश पूंजी के अंकित मूल्य के आधे से अधिक अंश धारण करती हैं। यदि उक्त कम्पनी भारत में कम्पनी अधिनियम, 1956 के लागू होने से पूर्व स्थापित करती है तथा इस कम्पनी ने अपने पूर्वाधिकार अंशधारियों को भी वहीं अधिकार दे रखे हों जो ईक्विटी अंशधारियों को प्राप्त है तो उस दूसरी कम्पनी के पास इसकी कुल मताधिकार शक्ति के आधे से अधिक पर स्वामित्व व नियन्त्रण होना चाहिए।

अथवा

स. वह कम्पनी किसी ऐसी कम्पनी की सहायक कम्पनी है जो कि सूत्रधारी कम्पनी की सहायक कम्पनी हो। उदाहरणार्थ, यदि 'ब' कम्पनी 'अ' कम्पनी की सहायक कम्पनी है तथा 'स' कम्पनी 'ब' कम्पनी की सहायक कम्पनी है तो 'अ' कम्पनी की 'स' कम्पनी भी सहायक कम्पनी मानी जावेगी चाहे 'अ' कम्पनी ने प्रत्यक्ष रुप से 'स' कम्पनी का एक भी अंश न खरीद रखा हो। इसी प्रकार यदि 'द' कम्पनी 'स' कम्पनी की सहायक कम्पनी है तो 'द' कम्पनी 'ब' कम्पनी तथा 'अ' कम्पनी दोनो की सहायक कम्पनी मानी जावेगी और यही क्रम आगे चलता रहेगा।

सूत्रधारी कम्पनी की परिभाषा :– कम्पनी अधिनियम की धारा 4 ;1द्ध के अनुसार, ''यदि एक कम्पनी किसी अन्य कम्पनी की सहायक कम्पनी है, तो वह अन्य कम्पनी उक्त कम्पनी की सूत्रधारी कम्पनी मानी जायेगी।'' वास्तव

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

में कम्पनी अधिनियम में सूत्रधारी कम्पनी का कोई स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं हैं। सूत्रधारी कम्पनी केवल उस दशा में हो सकती है जबकि उसकी एक अथवा अधिक सहायक कम्पनियां हों।

संचालक मण्डल के गठन पर नियन्त्रण से आशय – एक कम्पनी (सूत्रधारी कम्पनी) का दूसरी कम्पनी (सहायक कम्पनी) के संचालक–मण्डल पर नियन्त्रण उसी दशा में माना जावेगा जबकि वह कम्पनी बिना अन्य व्यक्तियों की सहायता से केवल अपने प्रस्ताव से ही सभी संचालकों अथवा अधिकाशं संचालकों को हटाने तथा नियुक्ति करने की सामर्थ्य रखती है।

सूत्रधारी कम्पनियों के लाभ (Advantages of holding Companies) – सूत्रधारी कम्पनियों के निम्नलिखित लाभ हैं:

1. सूत्रधारी एवं सहायक कम्पनियों का पृथक् अस्तित्व कायम रहता है जिससे सहायक कम्पनी अपनी ख्याति एवं क्षेत्रीय स्थिति का लाभ उठा सकती है।
2. इस व्यवस्था में प्रत्येक कम्पनी का पृथक् अस्तित्व होने के कारण व्यवसाय का आकार सीमित रहता है जिससे कार्य संचालन कुशलतापूर्वक हो सकता है।
3. सभी कम्पनियां एक ही समूह की होने के कारण व्यापारिक प्रतिद्वन्द्विता समाप्त हो जाती है।
4. सूत्रधारी कम्पनी द्वारा सहायता मिलते रहने से सहायक कम्पनी के वित्तीय साधनों में वृद्धि हो जाती है तथा मुद्रा बाजार में उसकी साख बढ़ जाती है।
5. कम्पनियों द्वारा मिलकर कार्य करने से आन्तरिक एवं बाह्य मितव्ययिताओं का लाभ मिलता है जिससे प्रविधिक एवं अन्य सुविधाओं का अधिकतम लाभ उठाया जा सकता है।
6. प्रत्येक कम्पनी अपने वार्षिक खाते अलग–अलग बनाती है जिससे उनके व्यापारिक परिणाम एवं आर्थिक स्थिति पर पृथक से स्पष्ट ज्ञान हो सकता है।
7. सूत्रधारी कम्पनी, सहायक कम्पनी के अंशों को बेचकर अपने प्रभाव व नियन्त्रण को आसानी से हटा सकती हैं यह सुविधा एकीकरण अथवा संविलयन की योजनओं में नहीं रहती है।
8. कच्चे माल एवं निर्मित माल के मूल्यों को नियन्त्रित करने में सुविधा रहती है।
9. सहायक कम्पनी को हानि होने पर उसे अगले वर्षों के लाभों में से पूर्ति हेतु आगे ले जाया जा सकता है। जिससे आयकर में छूट मिल सकेगी।
10. यदि सहायक कम्पनी घाटे में चल रही है और भविष्य में लाभ होने की सम्भावना नहीं है तो इसे आसानी से बन्द किया जा सकता है।

सूत्रधारी कम्पनियों की हानियां (Disadvantages of Holding Companies) – सूत्रधारी कम्पनियों से होने वाली हानियां निम्नांकित हैं :

1. कई बार सूत्रधारी कम्पनी द्वारा लिये गये निर्णय सहायक कम्पनी के विकास में बाधक हो जाते हैं।
2. अल्पमत अंशधारियों के उत्पीड़न का खतरा रहता है।
3. सूत्रधारी कम्पनी के सदस्यों को सहायक कम्पनी में विनियोजित राशि का वास्तविक मूल्य ज्ञात नहीं हो पाता है।
4. अन्तः कम्पनी व्यवहार सूत्रधारी कम्पनी को लाभ पहुंचानें की दृष्टि से किये जा सकते हैं।
5. सूत्रधारी कम्पनी के संचालक सहायक कम्पनी के संचालक बनकर ऊंचे पारिश्रमिक ले सकते हैं।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

6. अन्तः कम्पनी क्रय–विक्रय में बचे हुए स्टॉक का मूल्यांकन करते समय लेखे सम्बन्धी कठिनाई अनुभव होती है।
7. सहायक कम्पनियों की उपार्जन क्षमता का सही ज्ञान प्राप्त करना कठिन होता है।
8. इससे कम्पनी के कपटपूर्ण प्रवर्तन तथा धोखाधड़ी का खतरा रहता है।

सूत्रधारी कम्पनी का निर्माण (Creation of Holding Company) – सूत्रधारी कम्पनी का निर्माण निम्नांकित प्रकार से हो सकता है :

(1) **नवनिर्मित कम्पनी –**

सूत्रधारी कम्पनी के रूप में एक पूर्णरूपेण नयी कम्पनी का निर्माण किया जा सकता है। यह कम्पनी नयी कम्पनियों अथवा विद्यमान कम्पनियों के समस्त या अधिकाशं अंश खरीद सकती है। ऐसे अंशों का क्रय नकद में किया जा सकता है अथवा इनके बदले सूत्रधारी कम्पनी अपने स्वयं के अंश आबंटित कर सकती है अथवा दोनों प्रकार से भुगतान किया जा सकता है।

(2) **विद्यमान कम्पनी –**

पहले से विद्यमान कम्पनी सहायक कम्पनियों के रूप में नयी कम्पनियों का निर्माण करके अथवा विद्यमान कम्पनियों के अंश खरीद कर उनको अपनी सहायक कम्पनियां बना सकती है।

सूत्रधारी कम्पनियों के लेखे को प्रभावित करने वाले कम्पनी अधिनियम के प्रावधान

(Legal Provisions of the Companies Act affecting Accounts of Holding Companies)

सूत्रधारी एवं सहायक कम्पनियों का पृथक्–पृथक् वैज्ञानिक अस्तित्व होता है। सभी कम्पनियां अपने आप में स्वतन्त्र इकाइयां होती है। इनका अपना संचालक–मण्डल होता है तथा इनकी स्थापना अन्य कम्पनियों की तरह ही कम्पनी अधिनियम के अनुसार की जाती है। प्रत्येक कम्पनी अपनी अलग लेखा पुस्तकें रखती है तथा अन्तिम खाते अलग–अलग तैयार किये जाते हैं। प्रत्येक कम्पनी की लेखा पुस्तकों का अलग–अलग अंकेक्षण कराया जाता है और संचालकों की रिपोर्ट भी अलग–अलग तैयार की जाती है। प्रत्येक कम्पनी की वार्षिक साधारण सभी भी अलग होती हैं चूंकि सूत्रधारी कम्पनी की पूंजी का कुछ भाग सहायक कम्पनी में विनियोजित होता है अतः सूत्रधारी कम्पनी के अंशधारियों की सूचनार्थ सहायक कम्पनी के सम्बन्ध में कुछ सूचनाएं देना अनिवार्य है। ये सूचनाएं सहायक कम्पनी की आर्थिक स्थिति, लाभार्जन क्षमता, सहायक कम्पनी में सूत्रधारी कम्पनी का विनियोग, सहायक कम्पनी से लाभांश आदि के सम्बन्ध में प्रदान की जाती है।

सूत्रधारी कम्पनी के लेखों को प्रभावित करने वाले कम्पनी अधिनियम के विशिष्ट प्रावधान निम्न प्रकार हैं :

(अ) सारणी VI का प्रथम भाग

कम्पनी अधिनियम की सारणी VI के प्रथम भाग के अनुसार सूत्रधारी कम्पनी को अपने चिट्ठे में सहायक कम्पनियों के सम्बन्ध में निम्नलिखित बातों की पृथक से जानकारी देना आवश्यक है :

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(1) विनियोगों के सम्बन्ध में : सहायक कम्पनी के अंशों, ऋणपत्रों तथा बॉण्डों में विनियोजित राशि एवं इनके मूल्यांकन का आधार।

(2) देनदारों के सम्बन्ध में : प्रत्येक सहायक कम्पनी द्वारा सूत्रधारी कम्पनी को देय राशि उसके नाम सहित पृथक्–पृथक् लिखना।

(3) ऋण तथा अग्रिम के सम्बन्ध में : सूत्रधारी कम्पनी द्वारा प्रत्येक सहायक कम्पनी से प्राप्त होने योग्य ऋण तथा अग्रिम की राशि पृथक्–पृथक् दिखाना।

(4) सुरक्षित ऋणों के सम्बन्ध में : सूत्रधारी कम्पनी द्वारा सहायक कम्पनियों को देय असुरक्षित ऋण व उन पर अर्जित ब्याज अलग से दिखाना।

(5) असुरक्षित ऋणों के सम्बन्ध में : सूत्रधारी कम्पनी द्वारा सहायक कम्पनियों को देय असुरक्षित ऋण व उन पर अर्जित ब्याज अलग से दिखाना।

(6) लेनदारों के सम्बन्ध में : सूत्रधारी कम्पनी द्वारा सहायक कम्पनियों को देय राशि उनके नाम सहित अलग–अलग दिखाना।

(7) संदिग्ध दायित्व के सम्बन्ध में : सहायक कम्पनियों के सूत्रधारी कम्पनी ने जो अंश, ऋणपत्र तथा बॉण्ड खरीदे हुए हैं उन पर अयाचित राशि को संदिग्ध दायित्व के रूप में पृथक् से दिखाना।

(ब) सारणी VI का द्वितीय भाग

कम्पनी अधिनियम की सारणी VI के द्वितीय भाग के अनुसार सूत्रधारी कम्पनी को अपना लाभ–हानि बनाते समय सहायक कम्पनी के सम्बन्ध में निम्नलिखित सूचनाएं प्रस्तुत करनी होगी :

(1) सहायक कम्पनियां से प्राप्त लाभांश।

(2) सहायक कम्पनियों की हानियों के लिए आयोजन।

(स) धारा 212 के प्रावधान

कम्पनी अधिनियम, 1956 की धारा 212 से 214 के अन्तर्गत कुछ ऐसे प्रावधान दिये गये हैं जिनको सूत्रधारी कम्पनी एवं सहायक कम्पनी के खातों का प्रस्तुतीकरण करते समय ध्यान में रखना आवश्यक है। ये प्रावधान इस प्रकार हैं:

धारा 212 (1)

इसके अन्तर्गत यह व्यवस्था है कि सूत्रधारी कम्पनी अपनी सहायक कम्पनी/कम्पनियों के सम्बन्ध में निम्नलिखित विवरणों को अपने चिट्ठे के साथ संलग्न करेगी:

(1) सहायक कम्पनी के चिट्ठे की एक प्रति;

(2) सहायक कम्पनी के लाभ–हानि खाते की एक प्रति;

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(3) सहायक कम्पनी के संचालक मण्डल की रिपोर्ट की एक प्रति;

(4) सहायक कम्पनी के अंकेक्षण–प्रतिवेदन की एक प्रति;,

(5) सहायक कम्पनी में सूत्रधारी कम्पनी के हित में सम्बन्ध में एक विवरण (धारा 212(3));

(6) उपधारा (5) में वर्णित विवरण यदि कोई हो;

(7) उपधारा (6) में वर्णित प्रतिवेदन यदि कोई हो।

धारा 212 (2)

इस धारा में यह व्यवस्था दी हुई है कि सहायक कम्पनी का चिट्ठा, लाभ–हानि खाता, संचालकों का प्रतिवेदन व अंकेक्षकों का प्रतिवेदन कम्पनी अधिनियम, 1956 की व्यवस्थाओं के अनुसार तैयार किये जायेंगे। यदि सूत्रधारी कम्पनी व सहायक कम्पनी का लेखा वर्ष एक ही तिथि को समाप्त होता है तो ये प्रपत्र सहायक कम्पनी द्वारा अपने लेखा वर्ष के अन्त में तैयार किये जायेंगे। यदि इन दानों कम्पनियों के लेखा वर्ष एक ही तिथि को समाप्त न होते हों तो उपरोक्त वर्णित प्रपत्र सहायक कम्पनी द्वारा उस लेखा वर्ष की समाप्ति पर तैयार किये जायेंगे जो कि सूत्रधारी कम्पनी के लेखा वर्ष से तुरन्त पहले समाप्त हुआ है। यहां पर ध्यान देने योग्य विशेष बात यह है कि सहायक कम्पनी के लेखा वर्ष की समाप्ति की तिथि में तथा उसकी सूत्रधारी कम्पनी के लेखावर्ष की समाप्ति की तिथि में 6 माह से अधिक का अन्तर नहीं होना चाहिए।

धारा 212 (3)

सूत्रधारी कम्पनी के सहायक कम्पनी में हित के सम्बन्ध में निम्नलिखित बातें लिखी जाती हैं :

(1) सहायक कम्पनी क`लेखा वर्ष के अन्त में सूत्रधारी कम्पनी के हित की सीमा।

(2) सहायक कम्पनी के शुद्व लाभों (हानियों को घटाने के बाद) की वह राशि जो सूत्रधारी कम्पनी से सम्बन्धित हो और जिसका लेखा सूत्रधारी कम्पनी की पुस्तकों में न किया गया हो । इसी प्रकार शुद्व हानियों को लाभ घटाने के पश्चात दिखाया जाना चाहिए ।

(3) सहायक कम्पनी के उन शुद्व लाभों या शुद्व हानियों की कुल राशि जिनका सूत्रधारी कम्पनी के खाते तैयार करते समय ध्यान रखा गया है अथवा हानियों के लिए प्रावधान किया गया है ।

धारा 212 (4)

धारा 212 (3) (ii) व (iii) के प्रावधान सहायक कम्पनी के उन्हीं लाभ अथवा हानियों की कुल राशि जिनका सूत्रधारी कम्पनी के खाते तैयार करते समय ध्यान रखा गया है अथवा हानियों के लिए प्रावधान किया गया है ।

धारा 212 (4)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

धारा 212 (3) (iii) के प्रावधान सहायक कम्पनी के उन्हीं लाभ अथवा हानियों पर लागु होंगे जिन्हे सूत्रधारी कम्पनी के खातों में आयगत लाभों अथवा आयगत हानि मानना उचित होगा ।

धारा 212 (5)

यदि सहायक कम्पनी का लेखा वर्ष सूत्रधारी कम्पनी के लेखा वर्ष से भिन्न है तो इस अन्तर की अवधि में निम्नलिखित बातों से सम्बन्धित सूत्रधारी कम्पनी के चिट्‌ के साथ लगायी जावेगी :

(i) सूत्रधारी कम्पनी के हित की सीमा में हुआ परिवर्तन;

(ii) सहायक कम्पनी की स्थायी सम्पतियों, विनियोगों, ऋणों या चालू दायित्वों के अतिरिक्त अन्य कार्य के लिए उधार ली गई राशियों में महत्वपूर्ण परिवर्तन । चूँकि अब प्रत्येक कम्पनी को अपने खाते प्रति वर्ष 31 मार्च को ही बन्द करने होंगे,अतः अब इस प्रकार के विवरण की आवश्यकता नहीं है ।

धारा 212 (6)

यदि सूत्रधारी कम्पनी का संचालक मण्डल धारा 212 (4) में निर्धारित बातों के सम्बध में कोई सूचना प्राप्त करते में असमर्थ रहता है तो इसके बारे में एक लिखित प्रतिवेदन सूत्रधारी कम्पनी के चिट्‌ के साथ लगाया जावेगा ।

धारा 212 (7)

धारा 212 (1) सम्बन्धित प्रपत्रों पर उन्हीं व्यक्तियों द्वारा हस्ताक्षर किये जायेगें जिन्होने सूत्रधारी कम्पनी के ऐसे प्रपत्रों पर हस्ताक्षर किये हैं ।

धारा 212 (8)

कम्पनी अधिनियम की धारा 212 (8) के अनेसार सूत्रधारी कम्पनी के संचालक मण्डल के आवेदन पर अथवा उसकी सहमति से केन्द्रीय सरकार किसी भी सहायक कम्पनी के सम्बन्ध में यह आदेश दे सकती है कि धारा 212 के प्रावधान लागु नहीं होंगे अथवा उस सीमा तक लागू होंगे जिनका कि विवरण उक्त आदेश में दिया गया है ।

कम्पनी अधिनियम, 1956 की धारा 214 के अन्तर्गत सूत्रधारी कम्पनी के प्रतिनिधियों अथवा सदस्यों को यह अधिकार प्रदान किया गया है कि ऐसे प्रतिनिधि अथवा सदस्य जिनको सूत्रधारी कम्पनी के प्रस्ताव पारित करके अधिकृत किया है, को सहायक कम्पनी अथवा कम्पनियों की पुस्ताकों का निरीक्षण करने का अधिकार होगा एवं सहायक कम्पनी की लेखा पुस्तकें व्यवसाय के कार्य के घण्टों के दौरान ऐसे सदस्यो अथवा प्रतिनिधियों के निरीक्षण के लिए खुली रहेंगी ।

सूत्रधारी कम्पनी की पुस्तकों मे लेखा

(Accounting in the Books of Holding Company)

1. **अंशों का क्रय** :– सूत्रधारी कम्पनी द्वारा सहायक कम्पनी के अंश क्रय करने पर निम्न प्रविष्टि होगी–

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Investment in Shares of Subsidiary Co. a/c Dr.

To Cash/Bank a/c

2. **लाभांश प्राप्तिः**–सहायक कम्पनी के लाभों को अवधि के दृष्टिकोण से निम्न दो भागों में बाँटा जा सकता हैः–

(i) अंश अधिग्रहण के पूर्व के लाभ तथा

(ii) अंश अधिग्रहरण की बाद की अवधि के लाभ।

अंश अधिग्रहरण के पूर्व के लाभों मे ससे लाभांश की प्राप्ति :– सहायक कम्पनी के अंश खरीदने की तिथि से पूर्व के लाभों मे से प्राप्त हुआ लाभांश सूत्रधारी कम्पनी का पूँजीगत लाभ है। लाभांश की इस राशि को विनियोग की लागत की वसूली मानते हुए 'सहायक कम्पनी के अंशों में विनियोग' खाते का क्रेडिट कर दिया जायेगी। लाभांश प्राप्ति की प्रविष्टि निम्न प्रकार होगी :–

Bank a/c Dr.

To Investment in Shares of Subsidiary Co. a/c

अंश अधिग्रहरण के बाद के लाभों मे से लाभाश की प्राप्ति :– सहायक कम्पनी के अंश खरीदने के पश्चात् के लाभों मे से प्राप्त हुआ लाभांश सूत्रधारी कम्पनी का आयगत लाभ माना जाता है, अतः इसे लाभ–हानि खाते के क्रेडिट पक्ष में हस्तान्तरित किया जायेगा। लाभांश प्राप्ति की प्रविष्टि इस प्रकार की जावेगी–

लाभांश प्राप्ति पर :–

Bank a/c Dr.

To Dividend a/c

लाभ–हानि खाते को हस्तान्तरित करने पर :–

Dividend a/c Dr.

To Profit and Loss a/c

आंशिक रूप से पूर्व के लाभों मे से और आंशिक रूप से बाद के लाभों मे से लाभांश की प्राप्ति :– सहायक कम्पनी से सूत्रधारी कम्पनी को मिलने वाला लाभांश आंशिक रूप से अंश खरीदने के पूर्व के लाभो मे और आंशिक रूप से अंश खरीदने के बाद के लाभों में से चुकाया जा सकता है। ऐसी परिस्थिति में सर्वप्रथम लाभांश की राशि को अंश अधिग्रहण से पूर्व व बाद के लाभों मे विभाजित किया जायेगा तत्पश्चात् निम्न प्रविष्टियाँ की जायेगी :–

Bank a/c Dr. (लाभांश की कुल राशि से)

To Dividemd a/c (बाद के लाभों मे से प्राप्त लाभांश से)

To Investments in Shares of Subsidiary Co. a/c (पूर्व के लाभों में से प्राप्त लाभांश से)

Dividend a/c Dr.

To Profit and Loss a./c

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

बोनस अंशों की प्राप्ति :– यदि सूत्रधारी कम्पनी का सहायक कम्पनी से बोनस अंशों की प्राप्ति होती है तो इसके लिए कोई जर्नल प्रविष्टि नहीं की जायेगी। विनियोग खाते में केवल अंशों की संख्या में वृद्धि कर दी जायेगी जिसके परिणामस्वरूप विनियोग खाते में प्रति अंश लागत–मूल्य कम हो जायेगा।

उदाहरण :– 1

1 सितम्बर, 2009 को हरी लिमिटेड ने सूरेश लिमिटेड के 10 रू. वाले पूर्णदत्त 1,00,000 ईक्विटी अंश 12 रू. प्रति अंश की दर से क्रय किये। 31 मार्च, 2010 को समाप्त हुए वर्ष के लिए सूरेश लिमिटेड ने 20 % लाभांश नकद में दिया और प्रति 5 ईक्विटी अंशों पर 1 ईक्विटी अंश बोनस के रूप में घेषित किया।

1 अप्रेल 2009 को सूरेश लि. के लाभ–हानि खाते का क्रेडिट शेष 90,000 रू. था और 31 मार्च, 2010 को वर्ष का शुद्ध लाभ, 1,80,000 रू. था। सुरेश लिमिटेड की निर्गमित अंश पूँजी 10 रू. पूर्णदत्त 1,25,000 ईक्विटी अंशों मे है।

हरि लिमिटेड की पुस्तकों मे सूरेश लिमिटेड के अंशों पर देय लाभांश व बोनस से सम्बन्धित जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिए। यह मानिए कि जहाँ तक सम्भव है, लाभांश सर्वप्रथम वर्ष के लाभों में दिया जाता है तथा इसके पश्चात् गत वर्षो के अवितरित लाभों में से शेष की पूर्ति की जाती है।

हल :–

Journal of Hari Ltd.

			Rs.	Rs.
Date of Receipt	Bank a/c Dr.		2,00,000	
	To Investment in Shares of Suresh a/c.			1,16,000
	To Dividend a/c			84,000
	(Dividend received out of pre-acquisition profits credited to Investment Account and out of post acquisition profits credited to Dividend Account)			
Closing entry	Dividend a/c Dr.		84,000	
	To Profit & Loss Account			84,000
	(Balance transferred)			

Investment in Shares of Suresh Ltd. Account

Date	Particulars	No. of Shares	Amount	Date	Particulars	No. of Shares	Amount
2009 Sept. 1 Date of receipt			Rs.	Date of receipt			Rs.
	To Bank a/c	1,00,000	12,00,000		By Bank a/c		1,16,000
	To Bonus Shares	20,000	-	2010 March 31	By Balance c/d	1,20,000	10,84,000
		1,20,000	**12,00,000**			**1,20,000**	**12,00,000**

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

टिप्पणियाँ :–

1. सूरेश लिमिटेड की कुल निर्गमित अंश पूँजी 12,50,000 रू. है जिसमें से 10,00,000 रू. की अंश पूँजी सूरेश लिमिटेड के पास है। सूरेश लिमिटेड ने अपनी 12,50,000 रू. की अंश पूँजी पर 20 % की दर से 2,50,000 रू. का लाभांश बाँटा जिसमें से 2,00,000 रू. का लाभांश हरी लिमिटेड को प्राप्त हुआ हैं।

2. 2,50,000 रू. लाभांश का वितरण निम्न साधनों से किया गया है :–

वर्ष 2009–10 के सम्पूर्ण शुद्ध लाभ		1,80,000 रू.
गत वर्षो के लाभों मे से (शेष)		70,000 रू.
	कुल लाभांश	2,50,000 रू.

3. अंश क्रय से पूर्व के लाभों तथा उसके बाद के लीाïां का उपयोग उक्त लाभांश के लिए इस प्रकार किया गया है :–

वर्ष 2009–10 में क्रय से पूर्व का समय = माह तथा बाद का समय = 7 माह

1,80,000 रू. में क्रय से पूर्व के लाभ $= 1,80,000 \text{ x } \frac{5}{12} = 75,000$ रू.

तथा क्रय के बाद के लाभ $= 1,80,000 \text{ x } \frac{7}{12} = 1,05,000$ रू.

लाभांश के लिए अंश क्रय से पूर्व के प्रयुक्त कुल लाभ $= 75,000$ रू. $+ 70,000$ रू.

$= 1,45,000$ रू.

अंश क्रय से पूर्व तथा अंश क्रय के बाद के प्रयुक्त लाभों का अनुपात $= 1,45,000 : 1,05,000 = 29 : 21$

4. हरी लिमिटेड को प्राप्त लाभांश का पूँजीगत एवं आयगत राशियों में विभाज इस प्रकार किया गया है :–

हरी लिमिटेड द्वारा प्राप्त लाभांश $= 2,50,000 \text{ x } \frac{80}{100} = 2,00,000$ रू.

अंश क्रय से पूर्व के लाभ $= 2,00,000 \text{ x } \frac{29}{50} = 1,16,000$ रू.

अंश क्रय के बाद के लाभ) $= 2,00,000 \text{ x } \frac{21}{50} = 84,000$ रू.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

सहायक कम्पनी की हानियों के लिए आयोजन :

सहायक कम्पनी हानियों को भी अवधि के दृष्टिकोण से निम्न दो भागों में बांटा जा सकता है :

1. अंश क्रय से पूर्व की हानियां
2. अंश क्रय के बाद की हानियां

सूत्रधारी कम्पनी द्वारा सहायक कम्पनी के अंश जिस तारीख को क्रय किये जाते है उससे पहले की सहायक कम्पनी की हानियों को अंशो का क्रय मूल्य निर्धारित करते समय ध्यान में रखा गया होगा। अतः ऐसी हानियों के लिए सूत्रधारी कम्पनी की पुस्तकों में किसी प्रकार का आयोजन बनाने की आवश्यकता नहीं होती हैं। अंश क्रय करने की तारीख के बाद की सहायक कम्पनी की हानियों में सूत्रधारी कम्पनी के हिस्से की हानि के सम्बन्ध में आयोजन बनाया जायेगा। इसके लिए सूत्रधारी कम्पनी के लाभ–हानि खाते को डेबिट एवं सहायक कम्पनी की हानियों के लिए आयोजन खाते को क्रेडिट किया जायेगा। सहायक कम्पनी को आगामी वर्षो में लाभ होने पर पूर्व वर्षो की हानि की राशि अपलिखित कर दी जाती है और सहायक कम्पनी की हानियों के लिए आयोजन खाते का शेष लाभ–हानि खाते में हस्तान्तरित कर दिया जायेगा। सहायक कम्पनी की लाभ की स्थिति में सुधार न होने पर सूत्रधारी कम्पनी यदि उचित समझे तो इस आयोजन खाते का शेष में स्थान्तरण कर दिया जायेगा।

उदाहरण :– 2

ए लिमिटेड ने 1 अगस्त 2005 को बी लिमिटेड को 100 रु. वाले 16,000 ईक्विटी अंश खरीदे। बी लिमिटेड की कुल निर्गमित अंश पूंजी 100 रु. वाले 20,000 ईक्विटी अंशो की थी। 1 अप्रैल 2005 को बी लिमिटेड के लाभ–हानि खाते में 1,50,000 रु. का डेबिट शेष था। बाद में बी लिमिटेड के व्यापारिक परिणाम निम्न प्रकार रहे :

वर्ष 2005–06 के लिए 24,000 रु. हानि वर्ष 2006–07 के लिए 42,000 हानि, वर्ष 2007–08 के लिए 1,20,000 रु. लाभ, वर्ष 2008–09 के लिए 1,00,000 रु. लाभ।

प्रत्येक वर्ष के अन्त में ए लिमिटेड, बी लिमिटेड में अपने हिस्से की हानि की राशि के 50 प्रतिशत के लिए आयोजन का निर्माण करती हैं। बी लिमिटेड की लार्भाजन क्षमता को ध्यान में रखते हुए 31 मार्च 2009 को ए लिमिटेड उपरोक्त आयोजन को अपनी पुस्तकों में वापिस लिखने का निर्णय करती हैं। वर्ष 2005–06 से 2008–09 तक प्रत्येक वर्ष के अन्त में ए लिमिटेड की पुस्तकों में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां दीजिए तथा सहायक कम्पनी की हानियों के लिए आयोजन खाता तैयार कीजिए।

हल

Journal of A Ltd.

		Dr. Rs.	Cr. Rs.
2006 March 31	Profit and Loss a/c Dr.	6,400	

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

	To Provision for Losses of B Ltd. (Provision made for post acquisition losses of B Ltd.)		6,400
2007 March, 31	Profit and Loss a/c Dr. To Provision for Losses of B Ltd. (Provision made for post acquisition losses of B Ltd.)	16,800	16,800
March, 31	Provision for Losses of B Ltd. Dr. To Profit and Loss a/c (Provision no longer required written back)	23,200	23,200

Provision for Losses of B Ltd. Account

		Rs.			Rs.
2006 March 31	To Balance c/d	6,400	2006 March 31	By Profit and Loss a/c	6,400
2007 March 31	To Balance c/d	23,200	2006 April, 1	By Balance b/d	6,400
			2007 March 31	By Profit and Loss a/c	16,800
		23,200			23,200
2008 March 31	To Balance c/d	23,200	2007 April 1	By Balance b/d	23,200
2009 March 31	To Profit and Loss a/c	23,200	2008 April 1	By Balance b/d	23,200

Working Note :

1. ए लिमिटेड द्वारा बी लिमिटेड में अंश अधिग्रहण की तिथि से पूर्व की हानियों के लिए कोई आयोजन नहीं बनाया जायेगा। अंश अधिग्रहण से पूर्व की हानि की राशि निम्न प्रकार होगी :
   1 अप्रैल 2005 को लाभ–हानि खाते का डेबिट शेष = 1,50,000 रु.
   वर्ष 2005–06 के प्रथम चार माह की हानि (24,000 x 4 / 12) = 8,000 रु.
   कुल हानियां = 1,58,000 रु.
2. वर्ष 2005–06 के अन्तिम आठ माह की हानि = (24,000 x 8 / 12) = 16,000 रु.
   हानि की राशि में सूत्रधारी कम्पनी का हिस्सा = (16,000 x 80 / 100) = 12,800 रु.
   सूत्रधारी कम्पनी के हिस्से की हानि के लिए
   आयोजन की राशि = (12,800 x 50 / 100)= 6,400 रु.
3. वर्ष 2006–07 के लिए हानि की कुल राशि = 42,000 रु.
   हानि की राशि में सूत्रधारी कम्पनी का हिस्सा = (42,000 x 80 / 100) = 33,600 रु.
   सूत्रधारी कम्पनी के हिस्से की हानि के लिए आयोजन की राशि (33,600 x 50 / 100)= 16,800 रु
4. वर्ष 2007–08 व 2008–09 में सहायक कम्पनी को लाभ हुआ है, अतः सूत्रधारी कम्पनी को आयोजन बनाने की आवश्यकता नहीं हैं।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

एकीकृत चिट्ठा एवं लाभ–हानि खाता

(Consolidated Balance Sheet and Profit & Loss Account)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

एकीकृत वित्तीय विवरण :–

पूर्व में भारत में सूत्रधारी कम्पनियाँ वैधानिक रूप से एकीकृत या समूह खाते तैयार करने के लिए बाध्य नहीं थी, किन्तु अब AS 21- 'एकीकृत वित्तीय विवरण' जारी होने से प्रत्येक सूत्रधारी कम्पनी के लिये वित्तीय विवरणों को एकीकृत करना अनिवार्य हो गया है। सूत्रधारी एवं सहायक कम्पनी के वित्तीय विवरणों को एकीकृत करना इसलिये आवश्यक होता है ताकि सूत्रधारी कम्पनी के अंशधारी अपने हित के बारे में अधिक स्पष्ट रूप से जानकारी प्राप्त कर सकें। हालांकि सूत्रधारी कम्पनी के अंशधारियों का हित सहायक कम्पनी में उनके विनियोग की सीमा तक ही सीमित होता है किन्तु यदि सहायक कम्पनी से सम्बन्धित सूचनाऐं सूत्रधारी कम्पनी के वित्तिय विविरणों के साथ अलग से दिखाऐ जाते है, तो यह उसके वित्तीय विवरणों का स्पष्ट चित्र प्रस्तुत नही करेगा। अतः यह आवश्यक है कि सूत्रधारी कम्पनी एवं सहायक कम्पनी के लिए एक मात्र चिट्ठा एवं एक मात्र लाभ–हानि खाता बनाया जाय। इसके पीछे प्रमुख धारणा यह है कि सूत्रधारी कम्पनी एवं उसकी सभी सहायक सम्पनियाँ एक समूह के रूप में एक व्यावसायिक इकाई की भाँति कार्य करती है हालांकि वे अलग–अलग वैधानिक अस्तित्व रखती है।

एकीकृत चिट्ठा :–

सूत्रधारी कम्पनी एवं सहायक कम्पनी के चिट्ठों में प्रदर्षित सम्पत्तियों एवं दायित्व को सम्मिलित करके जब नया चिट्ठा तैयार किया जाता है, तो उसे एकीकृत चिट्ठा करते है। इससे सम्पूर्ण समूह की आर्थिक स्थिति की सही जानकारी प्रस्तुत की जा सकती है। सहायक कम्पनी की अंश पूँजी में सूत्रधारी कम्पनी के विनियोग के दृष्टिकोण से सहायक कम्पनियों को दो श्रेणियों में बाँटा जा सकता है :–

(i) सम्पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कम्पनी :– जब किसी कम्पनी द्वारा निर्गमित सभी अंश एक अन्य कम्पनी के स्वामित्व तथा नियन्त्रण में होते है, ऐसी कम्पनी सम्पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कम्पनी कहलाती है। ऐसी कम्पनियों के चिट्ठों को एकीकृत करते समय निम्नलिखित गणनाएँ की जायेंगी।

(1) अंश अधिग्रहण से पूर्व व अंश अधिग्रहण के पश्चात् के लाभें की गणना :– सूत्रधारी कम्पनी द्वारा सहायक कम्पनी जिस वित्तीय वर्ष में खरीदे जाते हैं उससे पूर्व के वर्षो के समस्त अवितरित लाभ अंश अधिग्रहण से पूर्व लाभ कहलाते है। जिस वित्तीय वर्ष के मध्य में सहायक कम्पनी के अंश सूत्रधारी कम्पनी द्वारा खरीदे गये हैं उस वित्तीय वर्ष के लाभों को भी दो भागों में बाँटा जाता है। उस वित्तीय वर्ष के समस्त लाभों का समय के अनुसार में बाँटकर अंश क्रय से पूर्व की अवधि के लाभ एवं पश्चात् की अवधि के लाभों की गण्ना कर ली जाी है। यदि सूत्रधारी कम्पनी ने कहायक कम्पनी के अंश वित्तीय वर्ष की प्रारम्भिक तिथि को ही खरीद लिये हैं तो उस वित्तीय वर्ष का समस्त लाभ अंश अधिग्रहण के पश्चात् का लाभ कहलायेगा। यदि सूत्रधारी कम्पनी ने सहायक कम्पनी के अंश वित्तीय वर्ष की अन्तिम तिथि को ही खरीदे है। तो उस वित्तीय वर्ष का समस्त लाभ अंश अधिग्रहण से पूर्व का लाभ माना जायेगा। अंश अधिग्रहण से पूर्व के लाभों का सहायक कम्पनी के शुद्ध मूल्य की गणना में जोड़ दिया जायेगा तथा अंश अधिग्रहण के पश्चात् के लाभों को एकीकृत लाभ की गणना करते समय जोड़ा जायेगा।

(2) सहायक कम्पनी के शुद्ध मूल्य की गणना :– सूत्रधारी कम्पनी द्वारा सहायक कम्पनी के अंश क्रय की तिथि को सहायक कम्पनी के शुद्ध मूल्य की गणना की जाती है। यह गणना निम्न प्रकार की जाती है–

		Rs.
Paid-up Share Capital of Subsidiary Company		....
Add : Opening Balance of Capital Reserves		....
Opening Balance of Revenue Reserves		....
Pre-acquisition Trading Profits		....
Profit on Revaluation of Assets and Liabilities		....
	Rs.	....
Less : Opening Balance of Profit and Loss a/c (Dr.)	....	
Balance of Fictitious Assets viz. Preliminary Expenses, Discount on Issue of Shares etc.	....	
Pre-acquisition Trading Losses	....	
Loss on Revaluation of Assets and Liabilities	....	....
Net worth		....

(3) ख्याति अथव नियन्त्रण की लागत की गणना :– शुद्ध मूल्य की गणना करने के पश्चात् इसकी तुलना सहायक कम्पनी के अंशों में विनियोग की लागत से की जाती है। यदि विनियोग की लागत शुद्ध मूल्य से अधिक हो तो आधिक्य की राशि को ख्याति माना जाएगा तथा उसे एकीकृत चिट्ठे में सम्पत्ति पक्ष की ओर ख्याति के रूप में दिखाया जायेगा। शुद्ध मूल्य की राशि विनियोग की लागत से अधिक होने पर आधिक्य राशि को पूँजीगत संचय माना जाएगा जिसे एकीकृत चिट्ठे के दायित्व पक्ष की ओर दिखाया जायेगा। सूत्र रूप मं इसे इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है :

Goodwill = Cost of Investment-Net Worth

Capital Reserves = Net worth- Cost of nvestment

यदि सूत्रधारी कम्पनी एवं सहायक कम्पनी के चिट्ठे में पहले से ही ख्याति की मदें विद्यमान हैं तो उपरोक्त प्रकार से गणना करने पर ख्याति आती है तो इन सबकों जोड़कर एकीकृत चिट्ठे के सम्पत्ति पक्ष की ओर लिख दिया जायेगा। यदि उपरोक्त गणना करने पर पूँजीगत संचय आता है तो उसे दोनों कम्पनियों की ख्याति के योग में से घटाकर शेष राशि को ही सम्पत्ति पक्ष की ओर दिखाया जायेगा। पूँजीगत संचय की राशि ख्याति की राशि से अधिक होने पर शेष राशि को एकीकृत चिट्ठे में दायित्व पक्ष की ओर दिखाया जायेगा।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

कुछ लेखक ख्याति के स्थान पर नियन्त्रण की लागत का प्रयोग करते हैं वैसे दोनों ही एक–दूसरे के समानार्थक माने जाते है लेकिन फिर भी इनमें कछ सांकेतिक अन्तर हैं यह स्वाभाविक ही है कि जब एक कम्पनी दूसरी कम्पनी पर नियन्त्रण स्थापित करना चाहती है तो उसे दूसरी कम्पनी के अधिकांश अंश खरीदने पडते है और जब किसी कम्पनी के अंश खरीदे जाते है तब बाजार में उनकी संख्या कम हो जाती है और जैस–जैसे और अधिक अंश खरीदे जाते है उनकी संख्या और कम होती जाती है। फलस्वरूप उन अंशों का बाजार मूल्य बढता जाता है। किसी सहायक कम्पनी के अंशों के मूल्य में इस प्रकार से जो वृद्धि होती है उसका कारण न तो उस कम्पनी की शुद्ध सम्पत्तियों का मूल्य है, न उसकी लाभोपार्जन क्षमता है, और न उसकी ख्याति है। यदि इसका कोई कारण हो सकता है तो केवल उस कम्पनी के अंशो का बडी संख्या में खरीदा जाना हो सकता है।

यदि किसी कम्पनी की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं हो और उसमें लाभोपार्जनकी क्षमता भी नहीं हो तो ऐसी स्थिति में उसी ख्याति का भी कोई प्रश्न नहीं उठता; फिर भी हो सकता है कि दूसरी कम्पनीख जो उस पर नियन्त्रण करना चाहती है, अपने किसी हित के कारण उस कम्पनी के अंश खरीदा चाहती हो और इस बात की भी सम्भावना हो सकती है कि जिस कम्पनी को अंश खरीदकर सहायक कम्पनी बनाया जा रहा है उस कम्पनी की दशा इतनी खराब हो कि उसमें ख्याति की कोई सम्भावना ही न हो, लेकिन, फिर भी कोई दूसरी कम्पनी अपने निजी हित के लिए उस कम्पनी पर अपना नियन्त्रण स्थापित करना चाहती हो तो उसे नियन्त्रण की लागत के रूप में अंशों के शुद्ध मूल्य से अधिक भुगतान करना पडेगा।

उपरोक्त विवेचन के आधार पर इस निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है कि जब कम्पनी की लाभोपार्जन क्षमता एवं आर्थिक स्थिति को ध्यान में रखकर उसके अंशों के लिए शुद्ध मूल्य से अधिक मूल्य देना उचित एवं न्याय–संगत हो तब इसे ख्याति माना जाए और शेष अन्य सभी परिस्थितियों में उसे नियन्त्रण की लागत माना जाए।

(4) एकीकृत लाभ की गणना :– सूत्रधारी कम्पनी एवं सहायक कम्पनी के लाभों को मिलाकर एकीकृत चिट्ठे में दायित्व पक्ष में दिखाया जाता है जिसे एकीकृत लाभ कहा जाता है। इसकी गणना इस प्रकार की जाती है।

	Rs.
Opening balance of Profit and Loss a/c of Holding Co.	--------
Add : Profit for the year of Holding Co.	--------
Share in post-acquisition profit of Subsidiary Co.	--------
Consolidated Profit	--------

यदि उपरोक्त में लाभ के स्थान पर हानि होगी तो उसे घटा दिया जायेगा।

एच लिमिटेड ने एस लिमिटेड के सभी अंश 1 अप्रैल, 2009 को क्रय कर लिये और दोनो कम्पनियों के चिट्ठे 31 मार्च 2010 को इस प्रकार है :–

Liabities	H Ltd.	S Ltd.	Assets	H Ltd.	S Ltd.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.
Share Capital	2,00,000	1,20,000	Sundry Assets	2,60,000	2,80,000
General Reserve on 1-4-2009	80,000	60,000	Investments in Shares of S Ltd. at cost	2,00,000	-
Profit and Loss Account	1,00,000	40,000			
Sundry Creditors	80,000	60,000			
	4,60,000	2,80,000		4,60,000	2,80,000

एस लिमिटेड के लाभ–हानि खाते में 1 अप्रैल 2009 को 12,000 रु. क्रेडिट शेष था। 31 मार्च 2010 को एकीकृत चिट्‌ठा बनाइए।

हल :–

Consolidated Balance Sheet of H Ltd. and its Subsidiary S Ltd

as on 31st March,2010

Liabilities	Amount	Assets	Amount
	Rs.		Rs.
Share Capital	2,00,000	Goodwill	8,000
General Reserve	80,000	Sundry Assets	5,40,000
Consolidated Profit	1,28,000		
Sundry Creditors	1,40,000		
	5,48,000		**5,48,000**

Working Notes:

Calculation of Net Worth of S Ltd.

Paid up Share Capital	1,20,000
Add: General Reserve on 1.4.2009	60,000
Opening Balance of P.& L a/c	12,000

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Net Worth	1,92,000

(ii) calculation of Goodwill or Capital Reserve

Cost of Investment	2,00,000
Less: Net Worth	1,92,000
Goodwill	8,000

(iii) Calculation of Consolidated Profit

Profit and Loss a/c of H Ltd.	1,00,000
Add: Post Acquisition Profit of S Ltd. (40,000-12,000)	28,000
Consolidated Profit	**1,28,000**

(ii) आंशिक स्वामित्व वाली सहायक कम्पनी :– जब किसी कम्पनी द्वारा निर्गमित अंशों का आधे से अधिक भाग किसी अन्य कम्पनी के स्वामित्व एवं नियन्त्रण में होता है तथा उसके अंशों का शेष भाग बाह्य व्यक्तियों के स्वामित्व में होता है, तो ऐसी कम्पनी 'आंशिक स्वामित्व वाली सहायक कम्पनी' कहलाती है। ऐसी स्थिति में पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कम्पनी का एकीकृत चिट्ठा बनाने के लिए क गई उपरोक्त गणनाओं के अतिरिक्त अल्पमत अंशधारियों के हित की गणना निम्न प्रकार की जाएगी।

	Rs.
Share in Net Worth of Subsidiary Company	---------
Add : Share in Post-acquisition Profits	---------
Minority Shareholders' Interest	---------

सहायक कम्पनी की अंश अधिग्रहण के बाद की अवधि में हानि होने पर उसे घटा दिया जायेगा। अल्पमल अंशधारियों के हित की राशि को एकीकृत चिट्ठे के दायित्व पक्ष की ओर दिखाया जायेगा।

उदाहरण :– 3

निम्न चिट्ठो से एच लिमिटेड तथा इसकी सहायक कम्पनी एस लिमिटेड का एकीकृत चिट्ठा तैयार कीजिए। 1 अक्टूबर 2009 को अंश क्रय किये गये।

Liabilities	H	S	Assets	H	S
Equity share capital of Rs. 100 each	30,00,000	6,00,000	Land and Building	24,00,000	4,00,000
General reserve	4,00,000	-	Plant & Machinery	4,00,000	4,00,000
P & L a/c	6,00,000	2,10,000	Current Assets	11,60,000	2,00,000
Creditors	5,00,000	1,90,000	Investment 5400 share in H Ltd.	5,40,000	
	45,00,000	**10,00,000**		**45,00,000**	**10,00,000**

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Solution-

Consolidated Balance Sheet of Ram Ltd and its Subsidiary Sham Ltd as on 31st March 2010

Liabilities	Amount	Assets	Amount
Equity share capital of Rs. 100 each	30,00,000	Land and Building	28,00,000
Capital reserve	1,35,000	Plant & Machinery	8,00,000
General reserve	4,00,000	Current assets	13,60,000
Consolidated profit	6,54,000		
Minority Shareholder Interest	81,000		
Sundry creditors	6,90,000		
	49,60,000		**49,60,000**

Working note :

1. **Calculation of Net Worth of B Ltd.**

Paid up Share Capital	6,00,000
Opening balance of P & L a/c	90,000
Pre- Acquisition Profit of Six months	60,000
Net worth	7,50,000

2. **Calculation of Goodwill or Capital Reserve**

Cost of Investment	5,40,000
Less-Share in Net Worth (7, 50,000 × 90%)	6,75,000
Capital Reserve	1,35,000

3. **Calculation of Minority Share Holder Interest**

Share in Net worth (75,0000 × 10%)	75,000
Add -Share in Prost Acquisition Profit (60,000 × 10%)	6,000
Minority Share Holder Interest	81,000

4. **Calculation of Consolidated Profit :**

Balance of P & L a/c	6,00,000
Add -Share in Prost Acquisition Profit (60,000 × 90%)	54,000
Consolidated Profit	6,54,000

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

अन्तःकम्पनी व्यवहारों को रद्द करना

(Cancellation of Inter-Company Transactions)

सूत्रधारी कम्पनी एवं सहायक कम्पनी के मध्य परस्पर लेन–देन रहते हैं जिनके परिणामस्वरूप इनके चिट्ठे में कुछ मदें ऐसी होती हैं जो एक–दूसरे से सम्बन्धित होती है। एकीकृत चिट्ठा बनाते समय ऐसी मदों के प्रभाव को हटाना आवश्यक होता है। ये मदें निम्नलिखित हो सकती है।

(i) देनदार व लेनदार :–

परस्पर उधार क्रय–विक्रय तथा प्रदत्त सेवाओं के कारण देनदार व लेनदार उत्पन्न होते है। सूत्रधारी कम्पनी एवं सहायक कम्पनी के चिट्ठों में दिखाई गई ऐसी राशियों को एकीकृत चिट्ठा बनाते समय दोनों तरफ से हटा दिया जायेगा।

(ii) प्राप्य बिल एवं देय बिल :

सूत्रधारी कम्पनी एवं सहायक कम्पनी द्वारा एक–दुसरे पर लिखे गये एवं स्वीकार किये गये देय तथा प्राप्य बिल जिन्हें न तो भुनाया जा सकता है और न ही बेचान किया गया है तथा जो चिठे की तिथि को भुगतान के लिए देय नही है , एकीकृत चिट्ठा बनाते समय ऐसी राशियों को दोनों तरफ जाता है । उदाहरणार्थ सूत्रधारी कम्पनी ने अपनी सहायक कम्पनी पर 25,000रु. का बिल लिखे तथा स्वीकृत के पश्चात 15,000 रु. के बिल सूत्रधारी कम्पनी द्वारा बैंक में भुनवा लिये गये । ऐसी स्थिति में सूत्रधारी कम्पनी के चिठे में प्राप्य बिलों की राशि 10,000 रु. होगी तथा 15,000 रु. के संदीग्ध दायित्व होंगे जिन्हे चिठे के नीचे बताया जाएगा । सहायक कम्पनी के चिठे में 25,000 रु. मे देय होंगे । एकीकृत चिठा बनाते समय 10,000 रु. की राशि दोनों तरफ कम कर दी जायेगी । एकीकृत चिठा के नीचे संदीग्ध दायित्व के रूप में भुनाये गये बिलों की 15,000 रु. की राशि नहीं दिखायी जायेगी।

(iii) परस्पर ऋण व अग्रिम :

यदि सूत्रधारी कम्पनी एवं सहायक कम्पनी ने आपस में कोई उधार ली है तो यह राशि उधार देने वाली कम्पनी के चिठे में सम्पती पक्ष पर उधार लेने वाली कम्पनी के चिठे में दायित्व पक्ष की ओर दिखायी जायेगी । एकीकृत चिठा बनाते समय इस राशि को दोनों तरफ से हटा देते है । इसी प्रकार यदि दोनों कम्पनीयों के मध्य होने वाली आपसी व्यवहारों के लिए चालू खाते खुले हुए हैं तो इन्हे भी एकीकृत चिठा बनाते समय दोनों तरफ से हटा दिया जाएगा । यदि दोनों राशियों में अन्तर हो तो अन्तर की राशि को एकीकृत चिठे में सम्पति पक्ष की ओर मार्गस्थ रोकड़ लिख दिया जायेगा ।

(iii) ऋणपत्र :

यदि सुत्रधारी कम्पनी ने सहायक कम्पनी के अथवा सहायक कम्पनी ने सूत्रधारी कम्पनी के ऋणंपत्र क्रय कर रखे हो तो इन्हे एकीकृत चिठा बनाते समय अन्तः कम्पनी व्यवहार मानकर दोनों तरफ से हटा दिया

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

जायेगा । ऋणपत्रों की प्राप्ति की लागत उनके अंकित मूल्य प्रदत मूल्य से अधिक होने पर आधिक्य ख्याति में जोड़ दिया जायेगा अथवा पूँजीगत संचय में से घटा दिया जायेगा और यदि क्रय मूल्य प्रदत मूल्य से कम है तो अन्तर की राशि पूँजीगत संचय में जोड़ दी जायेगी अथवा ख्याति में से कम कर दी जायेगी ।

(v) पूर्वाधिकार अंश :

यदि सहायक कम्पनी ने पूर्वाधिकार अंशो का भी निर्गमन कर रखा है तो एकीकृत चिठा बनाते समय इसका भी समायोजन करना होगा । यदि इन सभी अंशो को सूत्रधारी कम्पनी ने धारित कर रखा हो तो इन्हे सूत्रधारी कम्पनी के चिठे के सम्पति पक्ष में विनियोग के रूप में दिखाया गया होगा तथा सहायक कम्पनी के चिठे के दायित्व पक्ष मे अंश पूँजी शीर्षक के अन्तर्गत दिखाया गया होगा । यदि सूत्रधारी कम्पनी द्वारा इन अंशो को प्रदत मूल्य पर क्रय किया गया है तो एकीकृत चिठा बनाते समय इन्हे अन्तः कम्पनी व्यवहार मानकर हटा देया जायेगा , लेकिन इन अंशो का क्रय मूल्य इनके प्रदत मूल्य से भिन्न होने पर अन्तर की राशि ख्याति अथवा पूँजीगत संचय में सम्मिलित कर ली जायेगी । यदि सहायक कम्पनी के पूर्वाधिकार अंश पूर्णतः बाह्य अंशधारियों द्वारा धारित किये जाते हैं तो उनका प्रदत मूल्य बाह्य अंशधारीयो मे जोड़ दीया जायेगा । सहायक कम्पनी के पूर्वाधीकार अंश अंशतः सूत्रधारी कम्पनी के पास व अंशतः बाह्य अंशधारीयों के पास होने पर सूत्रधारी कम्पनी का हिस्सा उपरोक्त नियम के आधार पर समायोजित कर लिया जायेगा तथा बाह्य अंशधारियों का हिस्सा उनके हित में जोड़ दिया जायेगा ।

उदाहरण :– 4

एच लिमिटेड ने एस लिमिटेड के 10 रु. अंकित मूल्य वाले 18,000रु. ईक्विटी अंश 2,55,000 रु. की लागत पर 1 अक्टुबर,2009 को खरीदे । 31 मार्च 2010 को दोनों कम्पनीयों के चिठे इस प्रकार थे :

Liabilities	H	S	Assets	H	S
Equity share capital of Rs. 10 each	15,00,000	3,00,000	Land and Building	10,50,000	2,55,000
General reserve (as on 1.4.2009)	6,30,000	1,50,000	Plant & Machinery	7,50,000	1,50,000
P & L a/c (as on 1.4.2009)	1,35,000	60,000	Stock	3,00,000	60,000
Profit for the year	2,55,000	67,500	Debtors	4,50,000	2,02,000
Creditors	3,60,000	1,38,000	Investment	3,00,000	-
Bills Payable	1,20,000	90,000	Bank	90,000	75,000
			Cash	30,000	18,000
	30,00,000	**8,05,000**		**30,00,000**	**8,05,000**

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

एच लिमिटेड के देनदारों और प्राप्य बिलों में से कमशः 75,000 रु और 24,000 रु. एस लिमिटेड द्वारा देय हैं। 31 मार्च 2010 को एक एकीकृत चिट्ठा तैयार करों।

हल :–

Consolidated Balance Sheet of H Ltd. and its Subsidiary S Ltd. as in 31st March, 2010

Liabilities	Amount	Assets	Amount
Equity share capital of Rs. 100 each	15,00,000	Land and Building	13,05,000
Capital reserve	71,250	Plant & Machinery	9,00,000
General reserve	6,30,000	Investment	45,000
Consolidated profit	4,10,250	Stock	3,60,000
Minority Shareholder Interest	2,31,000	Debtors(4,50,000+2,02,000-75,000)	5,77,500
Sundry creditors(3,60,000+1,38,000-75,000)	4,23,000	Bills Receivables(30,000+45,000-24,000)	51,000
Bills Payable (1,20,000+90,000-24,000)	1,86,000	Bank & Cash (1,65,000+48,000)	2,13,000
	34,51,500		**34,51,500**

Working note :

1. **Calculation of Net Worth of H Ltd.**

Paid up Share Capital	3,00,000
Opening balance of P & L a/c	60,000
Opening balance of General Reserve	1,50,000
Pre- Acquisition Profit (67500×6/12)	33,750
Net worth	**5,43,750**

2. **Calculation of Goodwill or Capital Reserve**

Cost of Investment	2,55,000
Less-Share in Net Worth (5,43,750 × 60%)	3,26,250
Capital Reserve	71,250

3. **Calculation of Minority Share Holder Interest**

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Share in Net worth (5,43,750 × 40%)		3,26,250
Add -40% of Share in Prost Acquisition Profit (33,750 × 40%)		13,500
	Minority Share Holder Interest	2,31,000

4. **Calculation of Consolidated Profit :**

Opening Balance of Profit of H Ltd.		1,35,000
Add- Current Year Profit H Ltd.		2,55,000
Add -Share in Post Acquisition Profit (33,750 × 60%)		54,000
	Consolidated Profit	4,10,250

स्टॉक में सम्मिलित न वसूल हुए लाभ के साथ व्यवहार :

सूत्रधारी कम्पनी और उसकी सहायक कम्पनी के मध्य माल के क्रय–विक्रय सम्बन्धी लेन–देन चलते रहते है । प्रायः ऐसे लेन–देन माल की लागत में लाभ का एक निश्चित प्रतिशत जोड़ कर किये जाते है । वार्षिक खाते बनाने की तिथि को ऐसे माल में से शेष बचे माल को क्रेता कम्पनी की पुस्तकों में उसके लागत मूल्य पर ही दिखाया जाता है । जिसमें विक्रेता कम्पनी द्वारा लिया गया लाभ सम्मिलित होता है । अतः एकीकृत चिठा बनाते समय विक्रेता कम्पनी के द्वारा वसूल किये गये लाभों के लिए समायोजन करना आवश्यक होता है ।

1. न वसूल हुए लाभ की गणना :

यदि विक्रेता कम्पनी द्वारा क्रेता कम्पनी को बेचे गये माल, उस पर वसूल कीये गये कुल लाभ तथा क्रेता कम्पनी के पास माल में से शेष स्टॉक की सूचना उपलब्द है तो ऐसे लाभ का वह अनुपात , जो शेष रहे स्टॉक का क्रय किये गये माल के साथ है , न वसूल हुआ लाभ होगा । उदाहारणार्थ यदि सूत्रधारी कम्पनी ने सहायक कम्पनी का 50,000 रु. का माल बेचा जिसमें 10,000 रु. लाभ सम्मिलित है तथा एकीकृत चिठा बनाने की तिथि को सहायक कम्पनी के स्टॉक में 20,000रु. का ऐसा ऐसा माल सम्मिलित है तो न वसूल हुआ लाभ $\left(\frac{10,000}{50,000} X\ 20,000\right)$ 4,000रु. होगा । यदि विक्रेता कम्पनी द्वारा वसूल किये गये लाभों का प्रतिशत दिखाया गया है तो इस प्रतिशत के आधार पर न वसूल हुए लाभों की गणना की जा सकती है । ऐसा प्रतिशत लागत पर अथवा विक्रय मूल्य पर दिया जा सकता है ˙ यदि लाभो का प्रतिशत विक्रय मूल्य पर दिया गया है तो क्रेता कम्पनी के पास शेष रहे माल पर इस प्रतिशत के आधार पर न वसूल हुये लाभ की राशि कर ली जायेगी । लाभ का प्रतिशत क्रय मूल्य अर्थात लागत मूल्य पर दीया हुआ होने पर ऐसे प्रतिशत को निम्न सूत्र की सहायता से विक्रय मूल्य में परिवर्तित करके न वसूल हुए लाभ की गणना कर ली जाती है :

$$\text{Unrealized Profit} = \frac{\text{Percentage of Profit on Cost}}{100 + \text{Percentage of Profit on Cost}} \times \text{Unsold of Stock}$$

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

उदाहरणार्थ, सूत्रधारी कम्पनी अपना माल लागत में 25ःजोड़कर बेचती है । सहायक कम्पनी ने 30,000 रु.का माल सूत्रधारी कम्पनी से क्रय किया था जिसमें से 10,000 रु. का माल बिना बिका रहा । इस 10,000रु. के माल में सम्मिलित न वसूल हुए लाभ की गणना अग्र प्रकार की जायेगी :

न वसूला हुआ लाभ $\frac{25\%}{100 + 25\%}$ X 10,000 रु. = 2,000 रु

न वसूल हुए लाभ के साथ व्यवहार : स्टॉक में सम्मिलित न हुए समस्त लाभ को एकीकृत स्टॉक एवं एकीकृत लाभमेंसे कम कर दिया जायेगा चाहे सहायक कम्पनी के सभी या कम अंश सूत्रधारी के पास हों ।

उदाहरण :— 5

31 मार्च 2010 को एच लिमिटेड कम्पनी तथा एस लिमिटेड के चिठे इस प्रकार थे :

Liabilities	Ram	Sham	Assets	Ram	Sham
Equity share capital of Rs. 100 each	20,00,000	2,00,000	Fixed Assets	18,30,000	2,10,000
General reserve	2,70,000	80,000	Stock	4,00,000	90,000
P & L a/c	2,80,000	60,000	Bills Receivables	70,000	50,000
Bills Payables	50,000	40,000	Investment 1500 shares in Ram Ltd.	2,60,000	-
Creditors	2,00,000	1,20,000	Cash at Bank	40,000	10,000
			Debtor	2,00,000	1,40,000
	28,00,000	**5,00,000**		**28,00,000**	**5,00,000**

एच लिमिटेड ने एस लिमिटेड के अंश 31 दिसम्बर,2009 को खरिदे । 1 अप्रेल, 2009 को एस लिमिटेड का लाभ—हानि खाता 20,000रु. से नाम शेष दिखलाता था । 31 मार्च 2010 को एस लिमिटेड ने 8,000रु. सामान्य संचय में स्थानान्तरित कीये । एच लिमिटेड के लेनदारों में 30,000रु. एस लिमिटेड से उधार माल खरीदने की राशि सम्मिलित है । एच लिमिटेड के अन्तिम स्टॉक में 10,000रु. का बिना बिका माल सम्मिलित है जा कि एस लिमिटेड द्वारा लागत पर 25ः लाभ लेकर बेचा गया था । एस लिमिटेड के प्राप्य देय बिलों में 15,000रु. के ऐसे बिल है। जो एच लिमिटेड के पक्ष में स्वीकार किये गये थे । एच लिमिटेड के प्राप्य बिलों में 8,000रु. के ऐसे बिल हैं जो एस लिमिटेड से प्राप्य हुए थे । एच लिमिटेड का भुनाये गये बिलों के सम्बध में 20,000रु. का संदिग्ध दायित्व है । एकीकृत चिठा तैयार कीजीये।

हल :—

Consolidated Balance Sheet of Ram Ltd and its Subsidiary Sham Ltd as on 31st March 2010

Liabilities	Amount	Assets	Amount
Equity share capital of Rs. 100 each	20,00,000	Goodwill	21,500
General reserve	2,70,000	Fixed Assets	20,40,000
Consolidated profit	2,94,500	Stock	4,88,000
Minority Shareholder Interest	85,000	Debtors	3,10,000
Bills Payable	82,000	Bills Receivable	1,12,000
Sundry creditors	2,90,000	Bank balance	50,000
	30,21,500		**30,21,500**

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Working note:

Determination of Profit of Sham Ltd. for the Year 2009-10

Profit and loss Account

Particular	Rs.	Particular	Rs.
To balance b/d To General Reserve To Balance c/d	20,000 8,000 60,000	By Net Profit for the year (Balancing Figure)	88,000
	88,000		**88,000**

1. **Calculation of Net Worth of Sham Ltd.**

Paid up Share Capital	2,00,000
General Reserve (80,000-8000)	72,000
Profit up to 31st Dec.,2009(88,000×9/12)	66,000
	3,38,000
Less- Debit balance of P & L a/c (Opening)	20,000
Net worth	3,18,000

2. **Calculation of Goodwill or Capital Reserve**

Cost of Investment	2,60,000
Less-Share in Net Worth of Sham (3, 18,000 × 75%)	2,38,500
	21,500
Goodwill	

3. **Calculation of Minority Share Holder Interest**

Share in Net worth (3,18,000 × 25%)	79,500
Add -Share in Prost Acquisition Profit (88,000 ×3/12× 25%)	5,500
Minority Share Holder Interest	85,000

4. **Calculation of Unrealised Profit in Closing Stock of Sham Ltd**

Unsold Stock	10,000
Stock Reserve/ Unrealised Profit in unsold stock (10000 × 25/125)	2,000

5. **Calculation of Consolidated Profit :**

Balance of P & L a/c of Ram Ltd	2,80,000
Add -Share in Prost Acquisition Profit (88,000 ×3/12× 75%)	16,500
	2,96,500
Less – stock reserve of unrealsied profit	2,000

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Consolidated Profit	2,94,500

6. Calculations

Stock = Rs4,00,000+Rs.90,000 – Rs.2,000	4,88,000
Bills Receivables (70,000+ Rs. 50,000 – Rs. 8,000)	1,12,000
Debtors (2,00,000 + 1,40,000 - 30,000)	3,10,000
Bills payables (50,000 + 40,000 – 8,000)	82,000
Creditors (2,00,000 + 1,20,000 -30,000)	2,90,000

विशिष्ट मदों का समायोजन

(Adjustment of Specific Items)

एकीकृत चिठा बनाते समय निम्नलिखित मदों के सम्बन्ध मे दी गई सूचनाओ के अनुसार उनका समायोजन करना आवश्यक हो जाता हैः

प्रस्तावित लाभांश :–

यदि सहायक कम्पनी ने लाभांश प्रस्तावित किया है तो इसकी राशि उसके चिठे के दायित्व पक्ष में दिखाई गई होगी । एकीकृत चिठा बनाते समय प्रस्तावित लाभांश की राशि को चालु वर्ष के लाभो में जोड़ दिया जायेगा तथा इसके पश्चात लाभ की राशि को अंश अधिग्रहण से पूर्व तथा अंश अधिग्रहण के बाद के लाभो में बाँट समायोजन किया जायेगा ।

अदत लाभांश :–

यदि सहायक कम्पनी ने लाभांश घोषित किया है लेकीन अन्तिम खाते बनाने तक उसका भूगतान नहीं किया गया है तो यह सहायक कम्पनी के चिठे में दायित्व पक्ष की ओर अदत लाभांश के रूप मे दिखाया जायेगा । सूत्रधारी कम्पनी द्वारा इस लाभांश में अपने हिस्से की राशि को अपने चिठे में सम्पति पक्ष की ओर 'प्राप्य लाभांश' के रूप में एक अलग मद के अन्तर्गत अथवा विविध देनदारों में दिखाया जायेगा । एकीकृत चिठा बनाते समय सूत्रधारी कम्पनी के हिस्से को अन्तः कम्पनी व्यवहार मानकर हटा दिया जायेगा तथा बाहय अंशधारीयों से सम्बन्धित राशि उनके हित में जोड़ दी जायेगी ।

अन्तरिम लाभांश :–

यदि सहायक कम्पनी द्वारा चालू वर्ष के लाभों मे से अन्तिक लाभांश घोषित किया गया है तो अन्ररिम लाभांश में जितना हिस्सा सूत्रधारी कम्पनी को मिला है उसके लाभ में से कम कर दिया जायेगा तथा बाहय अंशधारीयो का हिस्सा उनके हित में से घटा दिया जायेगा

अंश अधिग्रहण से पूर्व के लाभो में से लाभांश :–

यदि सहायक कम्पनी ने अंश अधिग्रहण से पूर्व के लाभो में से लाभांश घोषित किया है तो सूत्रधारी कम्पनी द्वारा लाभांश को अपने लाभ–हानि खाते से क्रेडिट नहीं किया जाता है बल्कि 'सहायक कम्पनी के अंशो

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

में विनियोग खाते ' को क्रेडिट किया जाता है । यदि सूत्रधारी कम्पनी ने इस लाभांश को अपने लाभ–हानी खाते में क्रेडिट कर दिया है तो एकीकृत लाभ की गणना करते समय इसे लाभ में से कम कर देना चाहिए दुसरी तरफ सहायक कम्पनी के शुद्ध मुल्य की गणना करते समय उक्त लाभांश की राशि घटाने के पश्चात शेष लाभ का ही समायोजन किया जायेगा तथा 'सहायक कम्पनी के अंशो में विनियोग खाते' को क्रेडिट करके विनियोग कि लागत को कम कर दिया जायेगा । अल्पतम अंशधारीयों के हित की गणना में इसके सम्बन्ध में कोई समायोजन नहीं किया जाएगा ।

उदाहरण :– 6

31 मार्च 2010 को ए लिमिटेड तथा बी लिमिटेड के चिठे इस प्रकार है :

Liabilities	H	S	Assets	H	S
Equity share capital of Rs. 100 each	3,00,000	1,50,000	Freehold Premises	2,60,000	90,000
General reserve	1,90,000	6,000	Machinery	60,000	80,000
P & L a/c	1,60,000	1,08,000	Stock	68,000	60,000
Creditors	30,000	48,000	Investment 12000 shares of S Ltd.	1,80,000	-
			Cash at Bank	60,000	33,000
			Debtor	52,000	49,000
	6,80,000	**3,12,000**		**6,80,000**	**3,12,000**

ए लिमिटेड ने बी लिमिटेड के 12,000 अंश 1 अप्रैल, 2009 को 1,80,000 रु. की लागत पर प्राप्य किये। ए लिमिटेड के 31 मार्च , 2010 के चिठे की जाँच करने पर अग्रलिखित विवरण प्राप्त हुए :

(i) लाभ–हानि खाते में बी लिमिटेड से प्राप्त 10: कर मुक्त अन्तरिम लाभांश सम्मिलित है ।

(ii) स्टॉक मे बी लिमिटेड से खरीदा गया 6,000रू. का स्टॉक लागत पर सम्मिलित है ।

(iii) विविध लेनदारों में 18,000 रु. बी लिमिटेड से खरीदे गये माल के सम्मिलित हैं जिस पर बाद वाली कम्पनी ने 4,500 रु. का लाभ लिया था ।

आगे यह भी ज्ञात होता है कि 1 अप्रैल , 2009 को बी लिमिटेड के लाभ–हानि खाते का शेष 76,000रु. एवं सामान्य संचय का शेष 4,500 रु. था । बी लिमिटेड द्वारा अब तक कोई अन्तिम लाभांश प्रस्तावित नहीं किया गया है जिसकी घोषणा की जानी हो । एकीकृत चिठा बनाईए ।

हल :–

Consolidated Balance Sheet of H Ltd and its Subsidiary S Ltd as on 31st March 2010

Liabilities	Amount	Assets	Amount
Equity share capital of Rs. 10 each	3,00,000	Freehold Premises	3,50,000
Capital reserve	4,400	Machinery	1,40,000
General Reserve	1,90,000	Stock	1,26,500
Consolidated profit	1,85,300	Debtors	83,000
Minority Shareholder Interest	52,800	Bank balance	93,000
Sundry creditors	60,000		
	7,92,000		**7,92,000**

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Working note:

Determination of Profit of S Ltd. for the Year 2009-10

Profit and loss Account

Particular	Rs.	Particular	Rs.
To General Reserve	8,000	By Balance c/d(76000-15000)	61,000
To Interim Dividend	15,000	By Net Profit for the year	48,500
To balance c/d	1,08,000	(Balancing Figure)	
	1,24,500		**1,24,500**

1. **Calculation of Net Worth of S Ltd.**

Paid up Share Capital	1,50,000
Opening balance of General Reserve	4,500
Opening Balance of P & L a/c	76,000
Net worth	2,30,500

2. **Calculation of Goodwill or Capital Reserve**

Cost of Investment	1,80,000
Less-Share in Net Worth of S (2,30,500 × 80%)	1,84,400
Capital Reserve	4,400

3. **Calculation of Minority Share Holder Interest**

Share in Net worth (2,30,500 × 20%)	46100
Add -Share in Prost Acquisition Profit (48,500 × 20%)	9,700
Minority Share Holder Interest	85,000

4. **Calculation of Unrealised Profit in Closing Stock of Sham Ltd**

Unsold Stock	10,000
Stock Reserve/ Unrealised Profit in unsold stock (10000 × 25/125)	2,000

5. **Calculation of Consolidated Profit :**

Balance of P & L a/c of Ram Ltd	2,80,000
Add -Share in Prost Acquisition Profit (88,000 ×3/12× 75%)	16,500
	2,96,500
Less – stock reserve of unrealsied profit	2,000
Consolidated Profit	2,94,500

6. **Calculations**

Stock = Rs4,00,000+Rs.90,000 – Rs.2,000	4,88,000
Bills Receivables (70,000+ Rs. 50,000 – Rs. 8,000)	1,12,000
Debtors (2,00,000 + 1,40,000 - 30,000)	3,10,000
Bills payables (50,000 + 40,000 – 8,000)	82,000
Creditors (2,00,000 + 1,20,000 -30,000)	2,90,000

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

उदाहरण :— 7

31 दिसम्बर, 2009 को साबू लिमिटेड और रामू लिमिटेड के चिट्ठे निम्न प्रकार हैः

Liabilities	Saboo Ltd.	Ramoo Ltd.	Assets	Saboo Ltd.	Ramoo Ltd.
Share Capital	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.
Equity Shares of Rs. 100 each	6,00,000	4,00,000	Goodwill	-	20,000
6% Perference Shares of Rs. 100 each	-	1,00,000			
General Reserve (1-1-2009)	1,60,000	80,000	Fixed Assets	3,05,000	2,50,000
P. & L. a/c	1,30,000	1,20,000	Investments	4,05,000	90,000
Bills Payable	20,000	25,000	Stock	2,20,000	3,60,000
Creditors	2,30,000	2,85,000	Debtors	2,10,000	2,50,000
Proposed Dividend	60,000	40,000	Bills Receivables	40,000	35,000
			Cash	20,000	45,000
	12,00,000	10,50,000		12,00,000	10,50,000

साबू लिमिटेड ने रामू लिमिटेड के 3,000 ईक्विटी अंश 1 जनवरी 2009 को 20 प्रतिशत प्रीमियम पर खरीद कर उसमे नियन्त्रक हित प्राप्त किया था। शेष विनियोगों में रामू लिमिटेड के 400 पूर्वाधिकार अंश लागत पर सम्मिलित हैं। साबू लिमिटेड की पुस्तकों में 31 दिसम्बर, 2009 को एकीकृत चिट्ठा तैयार कीजिए। आपको निम्नलिखित सूचनाएं और दी जाती है :

1. रामू लिमिटेड के लाभ–हानि खाते में वर्ष 2008 से लायी गई 20,000 रु. की राशि सम्मिलित हैं।

2. साबू लिमिटेड के लेनदारों में 12,000 रु. की राशि ऐसे माल से सम्बन्धित है जो कि रामू. लि. से खरीदा गया था। यह माल अभी तक नहीं बिका हैं। रामू लिमिटेड अपने माल को लागत मूल्य में 20 प्रतिशत लाभ जोड़कर बेचती हैं।

3. रामू लिमिटेड ने 30 दिसम्बर 2009 को 10,000 रु का एक चैक प्रेषित किया था जो कि साबू लिमिटेड को जनवरी 2010 में प्राप्त हुआ हैं।

4. रामू लिमिटेड से प्राप्त कुल 25,000 रु. के प्राप्य बिलों से 20,000 रु. के बिल साबू लिमिटेड द्वारा भुनाये हुए है, तथा रामू लिमिटेड को साबू लिमिटेड से जो 15,000 रु. के बिल प्राप्त हुए है, इन सब को रामू लिमिटेड ने अपने लेनदारों को बेचान किया हुआ हैं।

5. साबू लिमिटेड और रामू लिमिटेड के संचालकों ने वर्ष 2009 के लिए अपनी ईक्विटी अंश पूंजी पर 10 प्रतिशत लाभांश प्रस्तावित किया हैं।

अपनी कार्य प्रणाली खुलासा रुप में दीजिए।

हल :—

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Consolidated Balance Sheet of Saboo Ltd. and Ramoo Ltd

as on 31st December, 2009

Liabilities	Amount	Assets	Amount
Equity Share Capital	6,00,000	Goodwill	10,000
General Reserve	1,60,000	Fixed Assets	5,55,000
Consolidated Profit	2,30,900	Investments (of Ramoo Ltd)	90,000
Bills Payable (20,000 + 25,000 - 5000)	40,000	Stock	5,78,000
Creditors (2,30,000 +2,85,000 - 12,000)	5,03,000	Debtors (2,10,000-10,000+2,50,000-12,000)	4,38,000
Proposed Dividend	60,000	Bills Receivable	70,000
		Cash in Transit	10,000
		Cash	65,000
	18,16,000		18,16,000

Working Note :

1. **Determination of Net Profit of Ramoo Ltd. for the Year 2009**

Profit & Loss Account

	Rs.		Rs.
To Proposed Dividend on Equity Shares	40,000	By Opening Balance	20,000
To Closing Balance	1,20,000	By Net Profit for the year (Balance figure)	1,40,000
	1,60,000		1,60,000

उपरोक्त 1,40,000रु. के लाभ में से पूर्वाधिकार अंश लाभांश के 6,000 रु. घटाने के बाद जो 1,34,000 रु. बचते हैं , अल्पमत अंशधारीयों में 25ः तथा साबू लिमिटेड में 75ः बाँट दिया जायेगा, क्योंकि यह सभी लाभ अंश अधिग्रहण के पश्चात् का लाभ है ।

2. **Calculation of Net Worth of Ramoo Ltd. on 1st Jan. 2009**

	Rs.	Rs.
Paid up Equity share Capital		4,00,000
Add : General Reserve (1-1-2009)		80,000
Balance of Profit and Loss a/c (1-1-2009)		20,000
	Net worth	5,00,000

3. **Calculation of Goodwill or Capital Reserve** Rs.

	Rs.
Cost of Equity shares	3,60,000
Less : ¾ Share in Net Worth	3,75,000

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Capital Reserve	15,000
Cost of Preference Shares held by Saboo Ltd.	45,000
Less : Paid up value of Pref. Share Capital	40,000
Goodwill	5,000

4. Calculation of Minority Shareholders' Interest

	Rs.
(i) Preference Share Capital	60,000
(ii) Preference Share Dividend (for the year 2009)	3,600
(iii) ¼ th Share in Net worth of Ramoo Ltd.	1,25,000
(iv) ¼ th Share in Post-acquisition Profit (1/4 of 1,34,000)	33,500
Minority Shareholders' Interest	2,22,100

5. Calculation of Unrealised Profit on stock of Saboo Ltd.

Total Profit included in stock 20/120 x 12,000	2000

6. Calculation of Consolidated Profit

Balance of Profit and Loss Account of Saboo Ltd.	1,30,000
Add : ¾ Share in Post-acquisition Profit of Ramoo Ltd. (1,34,000 x ¾)	1,00,500
Add : Pref. share dividend from Ramoo Ltd.	2,400
	2,32,900
Less : Unrealised profit in Stock	2,000
Consolidated Profit	2,30,900

7. Bills Receivables

	Rs.
Saboo Ltd.	40,000
Ramoo Ltd.	35,000
	75,000
Less : Inter Company Bills held by Saboo Ltd.	5,000
	70,000

8. Bills received by Ramoo Ltd. from Saboo Ltd. is endorsed to creditors will not be treated as inter company Bills.

Goodwill	Rs.
Saboo Ltd.	NIL
Ramoo Ltd.	20,000
Add : Goodwill on acquisition of Pref. Shares	5,000
	25,000
Less : Capital Reserve	15,000
Goodwill	10,000

Jain Visva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

सहायक कम्पनी द्वारा बोनस अंश निर्गमित करना :

यदि सहायक कम्पनी द्वारा सामान्य संचय या पूँजीगत संचय में से बोनस अंश निगर्मित किये गये हैं और इसके सम्बन्ध में लेखा पुस्तकों में प्रविष्टियाँ कर दी गई हैं तो सर्वप्रथम बोनस अंशो की राशि को प्रदत अंश पूँजी में से घटाया जायेगा तत्पश्चात बोनस अंशो की राशि को सम्बधित संचय मे जोड दिया जायेगा । इसके बाद सहायक कम्पनी के शुद्ध मूल्य की गणना की जायेगी । यदि सहायक कम्पनी ने बोनस अंशों की घोषणा चालू वर्ष के लाभों में से की है और इसे लेखा प्रविष्टियों द्वारा प्रभावी बना दिया गया है तो बोनस अंशों की राशि को चालू वर्ष के लाभों में पुनः जोडकर अंश अधिग्रहण से पूर्व व पश्चात के लाभों की गणना की जायेगी । यदी सहायक कम्पनी की पुस्तकों में बोनस अंशों के निर्गमन सम्बन्धी लेखा प्रविष्टियाँ नहीं की गई हैं तो उपरोक्त समायोजन की आवश्यकता नहीं होगी ।

उदाहरण :– 8

एस लिमिटेड ने पी लिमिटेड के 12,000 ईक्विटी अंश 1 अप्रैल 2009 को 1,70,000 रु. में क्रय किये। 31 दिसम्बर, 2009 को दोनो कम्पनियों के चिट्ठे इस प्रकार थे।

Liabilities	M Ltd.	P Ltd.	Assets	M Ltd	P Ltd.
	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.
Equity Shares of Rs. 10 each fully paid up	10,00,000	3,00,000	Goodwill	3,00,000	70,000
General Reserve	4,20,000	50,000	Land and Buildings	4,00,000	1,00,000
Profit and Loss Account	2,60,000	85,000	Plant and Machinery	5,00,000	1,00,000
Creditors	2,40,000	42,000	Stock	2,00,000	40,000
Bills Payable	80,000	60,000	Debtors	3,00,000	1,35,000
			Investments	1,70,000	-
			Bills Receivable	50,000	30,000
			Cash at Bank	80,000	62,000
	20,00,000	**5,37,000**		**20,00,000**	**5,37,000**

टिप्पणी :– एम लिमिटेड के बिल भुनाने पर 45,000 रु. का आकस्मिक दायित्व हो सकता हैं।

निम्नलिखित सूचनाएं भी दी गई है :

1. जनवरी, 2009 को पी लिमिटेड का लाभ–हानि खाता 40,000 रु. का जमा शेष बतलाता था जिसमे से उस समय की अंश पूंजी पर 15 प्रतिशत लाभांश का जून, 2009 में भुगतान किया गया था।
2. जून, 2009 में सामान्य संचय में से पुराने दो ईक्विटी अंशो के लिए एक बोनस ईक्विटी अंश पूर्ण प्रदत पी लिमिटेड द्वारा निर्गमित किया गया था।
3. पी लिमिटेड के समस्त देय बिल एम लिमिटेड के पक्ष में निर्गमित किये हुए हैं। इन बिल में से एम लिमिटेड ने 20,000 रु. के बिल भुनवा रखे हैं।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

4. पी लिमिटेड का समस्त स्टॉक उस माल का प्रतिनिधित्व करता है जो कि एम लिमिटेड द्वारा लागत में 25 प्रतिशत जोड़कर बेचा गया था।

5. एम लिमिटेड और पी लिमिटेड ने तय किया कि सेवायें अर्पित करने के बदले में, एम । पी लिमिटेड से 1 अप्रैल 2009 से 500 रु. प्रति माह वसूल करे। इसके लिए दोनो कम्पनियों की पुस्तकों में प्रविष्टियां नहीं की गई हैं। एकीकृत चिट्ठा तैयार कीजिए।

हल :–

Consolidated Balance Sheet of M Ltd. And its Subsidiary P Ltd.

as at 31st December, 2009

Liabilities	Rs.	Assets	Rs.
Equity Shares of Rs. 10 each fully paid up	10,00,000	Goodwill	2,94,750
General Reserve	4,20,000	Land and Buildings	5,00,000
Consolidated Profit	2,69,550	Plant and Machinery	6,00,000
Minority Shareholders' Interest	1,72,200	Stock	2,32,000
Creditors	2,82,000	Debtors	4,35,000
Bills Payable	1,00,000	Bills Receivable	40,000
		Cash at Bank	1,42,000
	22,43,750		**22,43,750**

Note : There is contingent liability for Rs. 25,000.

Working Notes : (i) The Interest of M Ltd. in P Ltd. has been worked out as follows :

	Rs.
Share Capital of P Ltd. on 31-12-2008	3,00,000
Less : Issue of Bonus shares (1/3 of Rs. 3,00,000)	1,00,000
	2,00,000
Share Capital before bonus issue	20,000
No. of Equity Shares before bonus issue	12000
No. of Shares held by the M Ltd.	
Interest of M Ltd. in P Ltd. 12000/20000 x 100 = 60%	

(ii) Determination of Profit of P Ltd.

Profit and Loss Appropriation Account for the year 2009

Particulars	Rs.	Particulars	Rs.
To Dividend a/c (15% on Rs. 2,00,000)	30,000	By Balance b/d	40,000
To Balance c/d	85,000	By Net Profit for the year	75,000
	1,15,000		**1,15,000**

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(iii) Calculation of Net Worth of P Ltd. on 1-4-2009

	Rs.
Share Capital on 1-1-2008	2,00,000
General Reserve (Rs. 50,000 + Rs. 1,00,000)	1,50,000
Profit and Loss Account balance on 1-1-2008 (Rs. 40,000- Rs. 30,000)	10,000
Pre- acquisition Profit for the year (75,000 x3/12)	18,750
Net worth	**3,78,750**

(iv) Calculation of Goodwill or Capital Reserve :

	Rs.
Cost of Investments	1,70,000
Less : Dividend out of Pre-acquisition profits (1,20,000x15/100)	18,000
	1,52,000
Share in Net Worth of P Ltd. (60% of Rs. 3,78,750)	2,27,250
Capital Reserve	**75,250**

(v) Determination of Post-acquisition Profit after adjustments :

	Rs.
Post – acquisition Profit of P Ltd. (75,000x9/12)	56,250
Less : Remuneration of M Ltd. (1-4-2008 to 31-12-2008) (Rs. 500 x 9)	4,500
Adjusted Post-acquisition Profit	**51,750**

(vi) Calculation of Minority Shareholders'' Interest

	Rs.
Share in Net Worth (40% of Rs. 3,78,750)	1,51,500
Add : Share in Post-acquisition Profit (40% of Rs. 51,750)	20,700
Minority Shareholders' Interest	**1,72,000**

(vii) Calculation of Unrealised Profit in the value of Stock of P Ltd.

	Rs.
Value of Stock	40,000
Profit included in stock (40,000 x 25/125)	8000

(viii) Calculation of Consolidated Profit

Profit and Loss a/c balance of M Ltd.	2,60,000
Less : Dividend received from P Ltd. out of acquisition profits	18,000
	2,42,000
Add : Remuneration for services to P Ltd.	4,500
	2,46,500
Add : Share in Post – acquisition Profits (60% of Rs. 51,750)	31,050
	2,77,550
Less : Unrealized Profit in Stock Value	8,000
Consolidated Profit	2,69,550

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(ix) Goodwill	Rs. 3,00,000 + Rs. 70,000 – Rs. 75,250 (Capital Reserve) = Rs. 2,94,750
(x) Stock	Rs. 2,00,000 + Rs. 40,000 – Rs. 8000 = Rs. 2,32,000
(xi)Bills Receivables	Rs. 50,000 + Rs. 30,000 – Rs. 40,000 = Rs. 40,000
(xii) Bills Payable	Rs. 80,000 + Rs. 60,000 – Rs. 40,000 = Rs. 1,00,000
(xiii) Contingent Liability	Rs. 45,000 – Rs. 20,000 = Rs. 25,000

सहायक कम्पनी की सम्पतियों का पुनर्मूल्यांकन तथा ह्ा्स का समायोजन

(Revaluation of assets of subsidiary company amd adjustment of depreciation)

सहायक कम्पनी के शुद्ध मूल्य की गणना करते समय उसकी स्थायी सम्पतियों के पुनर्मूल्यांकन पर लाभ को शुद्ध मूल्य में जोड़ दिया जाता है। और हानि होने पर शुद्ध मूल्य में से घटाया जाता है । यदि इन स्थायी सम्पतियों पर मूल्य ह्ा्स के सम्बध मे भी सूचना दी गयी हो तो मूल्य में कमी या वृद्धि पर मूल्य ह्ा्स का समायोजन करना भी आवश्यक हो जाता है । यदि स्थायी सम्पति के मूल्य मे हो गई तो इस बढ़े हुए मूल्य पर अतिरिक्त मूल्य ह्ा्स की गणना की जायेगी । इस अतिरिक्त मूल्य ह्ा्स की राशि को सहायक कम्पनी के अंश अधिग्रहण के बाद के लाभ में से घटाया जाता है । एकीकृत चिठे में स्थायी सम्पति को पुनर्मूल्यांकित मूल्य में सम्मिलित किया जायेगा तथा इसमें से पुनर्मूल्यांकित मूल्य पर आधारित मूल्य ह्ा्स की राशि घटायी जायेगी । यदि स्थायी सम्पति के मूल्य में कमी हो गई तो घटे हुए मूल्य पर मूल्य ह्ा्स की गणना की जायेगी तथा पूर्व में अपलिखित किये गये मूल्य ह्ा्स की राशि में से घटाकर अन्तर की राशि को सम्बन्धित अवधि के लाभ में जोड़ दिया जायेगा । एकीकृत चिठा बनाते समय सम्पती को घटे हुए मूल्य पर सम्मिलित किया जायेगा तथा इसमें से पुनर्मूल्यांकन मूल्य पर आधारित मूल्य ह्ा्स की राशि धटायी जाएगी।

उदाहरण :– 9

1 जुलाई ,2009 को आर लिमिटेड ने एस लिमिटेड के 75ः ईक्विटी और पूर्वाधिकार अंश लिये । दोनों कम्पनियों के चिठे 31 दिसम्बर ,2009 को नीचे दिये गये है :

Liabitlies	**R Ltd.**	**S Ltd.**	**Assets**	**R. Ltd**	**S. Ltd**
	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.
Equity Shares of Rs. 100 each fully paid up	5,50,000	1,00,000	Land and Buildings	2,60,000	95,000
6% Preference Shares of Rs. 100 each fully paid up	-	50,000	Plant & Machinery	1,40,000	76,000
General Reserve	1,75,000	60,000	Stock	1,10,000	77,000
Profit and Loss a/c	90,000	46,000	Investments in Shares of S Ltd.	2,00,000	-
Creditors	85,000	44,000	Cash at Bank	70,000	26,000
	9,00,000	**3,00,000**		**9,00,000**	**3,00,000**

अतिरिक्त सूचनायें :

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(1) आर लिमिटेड के लाभ–हानि खाते में एस लिमिटेड से प्राप्त 3ः लाभांश शामिल है, लाभांश 31दिसम्बर 2008 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए दिया गया था ।

(2) 1 जनवरी,2009 को एस लिमिटेड के लाभ–हानि खाते का शेष 20,000रु. था जिसमें से 3ः की दर से ईक्विटी अशों पर लाभांश दिया गया था । पूर्वाधिकार अंशों पर 2009 वर्ष का लाभांश अभी देना है ।

(3) आर लिमिटेड के लेनदारों 12,000रु. एस लिमिटेड के क्रय के शामिल है, जिस पर बाद वाली कम्पनी के 2,000रु. का लाभ कमाया है ।

(4) आर लिमिटेड के स्टॉक में 6,000 रु. की लागत का माल शामिल है जिसे एस लिमिटेड से क्रय किया गया था (जो 12,000रु. क्रय का भाग है)

(5) अंश अधिग्रहण की तिथि को एस लिमिटेड के भूमि व भवन का मूल्य 1,15,000रु. तथा प्लाण्ट व मशीन व मूल्य 70,000रु. आँका गया जिनके लिए कोई लेखा नहीं किया गया है । एस लिमिटेड के भूमि व भवन तथा प्लाण्ट व मशीन पर 5 प्रतिशत वार्षिक दर से मूल्य ह्रास काटा गया है ।

एकिकृत चिठा तैयार किजिए ।

हल :–

Liabilities	**Rs.**	**Assets**	**Rs.**
Equity Shares of Rs. 10 each fully paid up	5,00,000	Goodwill	9,500
General Reserve	1,75,000	Land and Buildings	3,72,125
Consolidated Profit	97,531	Plant and Machinery	2,08,250
Minority Shareholders' Interest	66,344	Stock	1,86,000
Creditors	1,17,000	Debtors	1,34,000
		Cash at Bank	96,000
	10,05,875		**10,05,875**

Working Note :

1. **Calculation of Profit for 2009 of S Ltd.**

		Rs.	Rs.	
	Balance of Profit & Loss a/c			46,000
Less:	Balance profit & Loss on 1-1-2008		20,000	
	Less: Dividend on Equity Shares for 2008	3,000		
	Dividend on Preference share for 2008	3,000	6,000	14,000
		Profit for the Year		32,000
Less:	Arrears of Preference Shares Dividend for 2009			3,000
		Profit after Preference Shares for		29,000

2. **Calculation of increase in the value of Land & Buildings:**

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

	Rs.
Value on 1-7-2009	1,15,000
Less : Written down value on 1-7-2009 (Rs. 1,00,000-2,500)	97,500
Increase	17,500

3. **Calculation of decrease in the value of Plant & Machinery:**

	Rs.
Written down value on 1-7-2009 (Rs. 80,000-2,000)	78,000
Less : Value on 1-7-2009	70,000
Decrease	8,000

4. **Calculation of Net Worth of S Ltd.**

Paid up Equity Share Capital	1,00,000
6% Preference share Capital	50,000
Balance of General Reserve on 1-1-2009	60,000
Pre- Acqusition Profit (14,000 + 14,500	28,500
Increase in Land & Building	17,500
	2,56,000
Less- Decrease in Plant & Machinery	8,000
Net Worth	**2,48,000**

5. **Calculation of Goodwill or Capital Reserve:**

		Rs.
Cost of Investments		2,00,000
Less : Dividend received out of Pre-acquisition Profit on :		
Equity Shares @ 3%	2,250	
Preference Shares @ 6%	2,250	4,500
		1,95,500
Less : Share in Net worth (75% of Rs. 2,48,000)		1,86,000
Goodwill		9,500

6. **Calculation of Post-acquisition Profits :**

	Rs.
Profit for 2009 after Preference Share Dividend	29,000
Less : Pre-acquisition Profit (29,000 x ½)	14,500
Balance	14,500
Less : Additional Depreciation on Land an Buildings (Rs. 2,875- Rs. 2,500)	375
	14,125

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Add : Excess Depreciation Provided on Plant and Machinery (Rs. 2,000 – Rs. 1,750)	250
Post-acquisition profit	14,375

7. **Calculation on Minority Shareholders' Interest**

	Rs.
Share in Net Worth (25% of 2,48,000)	62,000
Add : Share in Post-acquistion Profit (25% of Rs. 14,375)	3,594
Preference Share Dividend (25% of Rs. 3,000)	750
Minority Shareholders' Interest	66,344

8. **Calculation of Unrealised Profit in Stock Value :**

	Rs.
Value of Stock	6,000
Profit included (2000/12,000x6000)	1000

9. **Calculation of Consolidated Profit :**

	Rs.
Balance of Profit of R Ltd.	90,000
Less : Dividend received from S Ltd.	4,500
	85,500
Add : Share in Post-acquisition Profits (75% of Rs. 14,375)	10,781
Dividend on Preference Shares (75% of Rs. 3,000)	2,250
	98,531
Less : Unrealised Profit	1000
Consolidated Profit	97,531

10. **Calculation of Land and Buildings :**

	Rs.
Land & Buildings of S Ltd. on 1-7-2009	1,15,000
Less : Depreciation for six months @ 5% p.a.	2,875
	1,12,125
Add : Land and Buildings of R Ltd.	2,60,000
Total	3,72,125

11. **Calculation of Plant & Machinery :**

Plant and Machinery of S Ltd. on 1-7-2009	70,000
Less – Depreciation for six months @ 5% p.a.	1,750

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

68,250
Add : Plant & Machinery of R Ltd. 1,40,000
2,08,250

12. **Stock** = 1,10,000 + 77,000 – 1,000 = 1,86,000

13. **Creditors** = 85,000 + 44,000 – 12,000 = 1,17,000

14. **Debtors** = 1,20,000 + 26,000 – 12000 = 1,34,000

सूत्रधारी कम्पनी का सहायक कम्पनी पर शनैः–शनै नियन्त्रण

(gradual control of holding company on subsidiary company)

जब एक कम्पनी दूसरी कम्पनी पर नियन्त्रण स्थापित करने के उदेश्य से एक साथ ही आधे से अधिक अंशो का क्रय नहीं कर पाती हैं बल्कि कुछ वर्षो में शनैः–शनैः इन अंशो को क्रय करती है अर्थात कुछ अंश एक वर्ष मे,कुछ अंश दूसरे वर्ष में और कुछ अंश तीसरे या बाद वाले वर्षो मे क्रय करती है तथा इन सभी वर्षो में क्रय किये हुए अंशो का योग आधे से अधिक हो जाता है तो इसे सहायक कम्पनी पर शनैः–शनैः नियन्त्रण कहा जाता है । अंशो के क्रय पर ख्याती पर पूँजीगत संचय की राशि ज्ञात करने के लिए सहायक कम्पनी द्वारा अर्जित लाभों का पूँजीगत व आयगत में विभाजन उसी क्रम में किया जाना चाहिए जिस क्रम में अंशो का क्रय किया गया था । यदि अंशो का क्रय बहुत थोडी–थोड़ी संख्या में किया गया है तो अंशो के क्रंय की अन्तिम तिथि को नियन्त्रण की तिथि माना जा सकता है ।

वाई लिमिटेड की निर्गमित अंश पूँजी 8,00,000रु. है जो 100रु. वाले अंशो में विभाजित है । 1 जनवरी , 2008 को कम्पनी के लाभ–हानि के क्रेडिट में 3,00,000रु. का शेष था । कम्पनी के वार्षिक लाभ 1,20,000 रु. माने जा सकते हैं ।

एक्स लिमिटेड ने अंशो का क्रय निम्न प्रकार किया :

Date	No. of Shares	Price in Rs.
January 1, 2008	3,000	4,50,000
January 1, 2009	1,000	1,70,000
January 1, 2010	1,000	1,80,000

नियन्त्रण की लागत ज्ञात कीजिए ।

Particulars	Acquisition			Total
	January 1, 2008	January 1, 2009	January 1, 2010	
	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Cost of Shares acquired	4,50,000	1,70,000	1,80,000	8,00,000
Less : Face Value of Shares acquired	3,00,000	1,00,000	1,00,000	5,00,000
	1,50,000	70,000	80,000	3,00,000
Less : Share's in Pre-acquisition Profits	1,12,500	52,500	67,500	2,32,500
Cost of Control	37,500	17,500	12,500	67,500

टिप्पणीः क्रय से पूर्व के लाभों में सूत्रधारी कम्पनी का हिस्सा इस प्रकार ज्ञात किया गया है :

Total Pre-acquisition Profits (Rs.)	3,00,000	4,20,000	5,40,000
X Ltd.'s share in Y Ltd.'s Capital	37.5%	12.5% Additional	12.5% Additional
Share in Pre-acquisition Profit (Rs.)	1,12,500	52,500	67,500

सहायक कम्पनी के अतिरिक्त अंशो का क्रय

(Purchase of additional shares of subsidiary company)

कभी–कभी सूत्रधारी कम्पनी सहायक कम्पनी के कुछ अंश क्रय कर लेती है । ऐसी परिस्थिति में अग्र लेखांकन प्रकिया अपनायी जायेगी :

(i) इन अतिरिक्त क्रय किये गये अंशो पर ख्याति या पूँजीगत संचय की गणना की जायेगी । इसके लिए इन अंशो के शुद्ध मूल्य की तुलना इनके लागत मूल्य से की जायेगी और अन्तर की राशि ख्याती या पूँजीगत संचय होगा ।

(ii) इसके बाद सूत्रधारी कम्पनी द्वारा पहले से धारित सहायक कम्पनी के अंशों पर ख्याति या पूँजीगत संचय का इसमें समायोजन कर दिया जायेगा ।

(iii) तत्पश्चात उनके नये अशं धारण अनुपात में अल्पतम अंशधारियों के हित की गणना की जायेगी ।

(iv) यदि अतिरिक्त अंशो के क्रय के बाद सहायक कम्पनी अपने अंशों पर लाभांश बाँटती है तो इन अतिरिक्त अंशो पर प्राप्त लाभांश को पूँजीगत एवं आयगत में विभाजित करना होगा । आयगत लाभांश को लाभ–हानि खाते में तथा पूँजीगत लाभांश को विनियोग खाते के क्रेडिट पक्ष में अन्तरित किया जायेगा ।

उदाहरण :– 10

एच लिमिटेड व एस लिमिटेड के निम्न चिठे आपको प्रस्तुत किये गये हैं :

Liabilities	H	S	Assets	H	S
Equity share capital of Rs. 100 each	10,00,000	4,00,000	Fixed Assets	7,00,000	3,00,000
General reserve	2,00,000	-------	Stock	1,80,000	80,000
P & L a/c	1,60,000	-------	Debtors	1,20,000	60,000
12% Debenture	----------	2,00,000	12% Debenture in S at par	1,20,000	--------
Creditors	1,50,000	90,000	Share in S Ltd (3,000 sh.)	2,46,000	-
			Bank at bank	1,44,000	50,000
			P & L Account	---------	2,00,000
	15,10,000	**6,90,000**		**15,10,000**	**6,90,000**

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

एच लिमिटेड ने 2,400 अंश 1 जनवरी ,2009 को एवं 600 अंश 1 अप्रैल ,2009 को क्रमशः 1,92,000 रु. एवं 54,000 रु. की लागत पर क्रय किये । एस लिमिटेड के लाभ–हानि खाते ने 1 जनवरी, 2009 को 3,00,000 रु. का डेबिट शेष प्रदर्शित किया ।

एस लिमिटेड के व्यापारिक लेनदारों मे 4,00,000 रु. एच लिमिटेड द्वारा बेचे गये माल के लिए शामिल हैं जिस पर बाद वाली कम्पनी ने 4,000 रु. का लाभ कमाया । इस माल में से आधा माल 31 दिसम्बर, 2009 को स्टॉक में था । 31 दिसम्बर, 2009 को स्टॉक में था । 31 दिसम्बर, 2009 को एकीकृत चिठा तैयार कीजिए ।

हल :–

Consolidated Balance Sheet of H Ltd. and its Subsidiary S Ltd. as in 31st March, 2010

Liabilities	Amount	Assets	Amount
Equity share capital of Rs. 100 each	10,00,000	Goodwill	1,67,250
General reserve	2,00,000	Other Fixed Assets	10,00,000
Consolidated profit	2,29,250	Stock	2,58,000
Minority Shareholder Interest	50,000	Debtors	1,40,000
12% Debenture	80,000	Cash at Bank	1,94,000
Sundry creditors	2,00,000		
	17,59,250		**17,59,250**

1. Determination of Profit for 2009 of S Ltd

		Rs.
Debit Balance of P & L a/c on 31-12-2009		2,00,000
Debit Balance of P & L a/c on 1-1-2009		3,00,000
	Profit for the year	1,00,000
Profit up to 1st April, 2009 (1,00,000 x 3/12)		25,000
Balance of P. & L a/c on 1-4-2009 (-3,00,000 +25,000)		-2,75,000

2. Calculation of Net Worth of S Ltd.

	1-1-2009	1-4-2009
Paid of Capital	4,00,000	4,00,000
Profit & Loss a/c Balance (Dr.)	-3,00,000	-2,75,000
Net Worth	1,00,000	1,25,000

3. Calculation of Cost of Control of Goodwill

	1-1-2009	1-4-2009
Cost of Investments	1,92,000	54,000
Less : Share in Net Worth (on 1-1-2009 60% of Rs. 1,00,000 and on 1-4-2009 15% of Rs. 1,25,000)	60,000	18,750
Cost of Control of Goodwill	1,32,000	35,250

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

4. Calculation of Minority Shareholders' Interest

	Rs.
Share in Net Worth (25% of Rs. 1,00,000)	25,000
Add : Share in Profit (25% of Rs. 1,00,000)	25,000
Minority Shareholder's Interest	50,000

5. Calculation of Unrealised profit in stock of S Ltd.

	Rs.
Value of Stock	20,000
Unrealised Profit (4,000/40,000 x 20,000)	2000

6. Calculation of Consolidated Profit:

Balance of P.& L a/c of H Ltd.		1,60,000
Add : Share in Post Acquisition Profit of S Ltd 1,00,000 × 75%	75,000	
Less: Treated as Capital Profit for 600 shares (25,000×600/4000)	3,750	71,250
		2,31,250
Less : Unrealised Profit in Stock		2,000
Consolidated Profit		2,29,250

7. Goodwill	= 1,32,000 + 35,250	=1,67,250
8. Stock	= 1,80,000 + 80,000 – 2,000	=2,58,000
9. Debtors	= 1,20,000 + 60,000 – 40,000	=1,40,000
10.12% Debenture	= 2,00,000 - 1,20,000	=80,000
11. Creditors	= 1,50,000 + 90,000 – 40,000	= 2,00,000

सहायक कम्पनी के अंशो को बेचना

(Sale of shares of subsidiary company)

कभी–कभी सूत्रधारी कम्पनी अपनी सहायक कम्पनी के अपने स्वामित्व वाले अंशो में से कुछ अंश बेच देती है । इन अंशो को बेचने से होने वाले लाभ अथवा हानि की गणना के लिए इनका आनुपातीक लागत मूल्य ज्ञात किया जायेगा और इसकी तुलना, विक्रय से की जायेगी यदि इन अंशो का विक्रय मूल्य ,लागत मूल्य से अधिक है तो अन्तर की राशि को पूँजीगत लाभ माना जायेगा, जिसे पूँजीगत संचय में हस्तान्तरित किया जायेगा। अंशो का विक्रय मूल्य , लागत मूल्य से कम होने पर हानि होगी जिसे लाभ–हानि खाते में हस्तान्तरित किया जायेगा । प्रविष्टि इस प्रकार होगी :

Bank a/c Dr. (अंशो के विक्रय से प्राप्त राशि से)

P.& L. a/c Dr. (अंशो पर हानि,यदि कोई हो)

To investment in shares of subsidiary Co. (अंशो के लागत मूल्य से)

To capital reserve a/c (विक्रय पर लाभ की राशि से , यदि कोई हो)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

अंशो के विक्रय से सूत्रधारी कम्पनी का सहायक कम्पनी में अंश धारण अनुपात परिवर्तित हो जायेगा । अतः आगे की समस्त गणनायें नयें अंश धारण अनुपात में ही की जायेगी । अंशो के विक्रय के पश्चात सूत्रधारी कम्पनी के पास सहायक कम्पनी के आधे से अधिक अंश होने चाहिए अन्यथा वह सूत्रधारी कम्पनी नहीं मानी जायेगी ।

उदाहरण :– 11

निम्नलिखित चिठों और सूचनाओं से 31 दिसम्बर , 2009 को एकीकृत चिठा तैयार कीजीए :

Liabilities	H	S	Assets	H	S
Equity share capital of Rs. 10 each	10,00,000	2,00,000	Sundry Assets	9,30,000	3,20,000
Investments Reserve	30,000	-------	Share in S Ltd (12,000 at cost.)	1,80,000	-
P & L a/c	-	-			
1st Jan 2009	60,000	72,000			
Profit for the Year	20,000	48,000			
	11,10,000	**3,20,000**		**11,10,000**	**3,20,000**

एच लि. ने एस लि. में 16,,000 अंश 15 रु. प्रति अंश की दर से उस समय कम्र किये थे जबकि एस लि. के लाभ–हानि खाते का शेष 44,000रु. था और 30 जून,2009 को इन अंशो में से 4,000 अंश को 22.50 की दर से बेच दिया तथा विक्रय से होने वाले लाभ से विनियोग संचय खाता क्रेडिट कर दिया गया।

हल :–

1. Calculation of Goodwill or Capital Reserve

(On the held of existing shares)	Rs.	Rs.
Cost Price of 12,000 Shares @ Rs. per share		1,80,000
Less : Paid up value of shares	1,20,000	-
Share in Capital Profit (60%) 12000/20,000 × 44,000	26,400	1,46,400
Goodwill		33,600

2. Calculation of Minority Shareholders' Interest :

	Rs.
Paid up capital (8000 x Rs. 10)	80,000
Add : Share in existing profits (8000/20,000 x (72,000 + 48,000)	48,000
Minority Shareholders' Interest	1,28,000

3. Calculation of Consoildated Profit :

	Rs.
Balance of Profit of H Ltd. (1-1-2009)	60,000
Add : Profit of H Ltd. during 2009	20,000
Add : Share in Post-acquisition Profit of S Ltd. (60% of Rs. 76,000)	45,600
Consolidated Profit	1,25,600

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Liabilities	Amount	Assets	Amount
Equity share capital of Rs. 10 each	10,00,000	Goodwill	33,600
investments reserve	30,000	Sundry Assets (9,30,000 + 3,20,000)	12,50,000
Consolidated profit	1,25,600		2,58,000
Minority Shareholder Interest	1,28,000		
	12,83,600		**12,83,600**

अन्तःकम्पनी अंश धारण

(Inter-company holdings)

जब सहायक कम्पनी के पास सूत्रधारी कम्पनी के अंश होते हैं तो ऐसी स्थिति अन्तःकम्पनी अंश धारण की स्थिती कहलाती है । यद्यपी भारत में कोई भी कम्पनी की सहायक कम्पनी बनने के बाद उसके अंश नहीं खरीद सकती है , लेकिन सहायक कम्पनी होने से पहले या कम्पनी अधिनियम , 1956 लागू होने से पूर्व ही सूत्रधारी कम्पनी के अंश सहायक कम्पनी द्वारा खरीदे गये हो तो यह कम्पनी ऐसे अंशो को अपने पास रख सकती है । सहायक कम्पनी बनने के बाद वह सूत्रधारी कम्पनी की साधारण सभा में मताधिकार का प्रयोग नहीं कर सकती है ।

अन्तःकम्पनी अंश धारण की स्थिति मे प्रत्तेक कम्पनी का एक–दूसरे के लाभों में पारस्परीक भाग होता है, अतः जब तक एक – दुसरे के लाभों में प्रत्येक के हिस्से की राशि ज्ञात नहीं कर ली जाती है , किसी भी कम्पनी की शुद्ध कीमत नहीं निकाली जा सकती है। एकीकृत चिठा बनाते समय सूत्रधारी कम्पनी द्वारा धारीत सहायक कम्पनी के अंशो के क्रय पर ख्याति या पूँजीगत यंचय की राशि ज्ञात करने के लिए सहायक कम्पनी की शुद्ध कीमत ज्ञात करना आवश्यक है। इसके लिए सहायक कम्पनी के अंश अधिग्रहण से पूर्व एवं पश्चात के लाभों का निर्धारण करना आवश्यक होता है। चूँकी सूत्रधारी कम्पनी एवं सहायक कम्पनी के लाभ एक दुसरे पर निर्भर होते हैं अतः सूत्रधारी एवं सहायक कम्पनी के अंश अधिग्रहण से पूर्व एवं बाद के लाभो की गणना दो युगपत सतीकरण बना कर की जाती है। एकीकृत चिठा बनाते समय कम्पनी द्वारा सूत्रधारी कम्पनी में धारित अंशो को अन्तःव्यवहार मानकर दोनों तरफ से हटा दिया जाता है। अर्थात सहायक कम्पनी के विनियोगों को एवं सूत्रधारी कम्पनी की अंश पूँजी को कम कर दीया जाता है । और अन्तर की राशि , यदि कोई है , तो ख्याति या पूँजीगत संचय मान लिया जाता है।

एकीकुत लाभ–हानि खाता

(Consolidated profit and loss account)

एकीकृत लाभ–हानि खाता समूह के लाभ को प्रदर्शित करता है जिससे अंशधारी कम्पनी के लाभों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते है । इसमें आय की मदों के अलावा सहायक एवं सूत्रधारी कम्पनीयों के खातों में हानि एवं खर्चो को भी अलग–अलग एवं सामूहिक रूप से दीखाते हैं । एकीकृत लाभ–हानी खाता बनाते समय निम्नलिखित महत्वपूर्ण समायोजन किये जाते हैं :

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(i) अन्तर्कम्पनी क्रय–विक्रय को एक दुसरे में से हटा देना चाहिए, जैसे सहायक कम्पनी सूत्रधारी कम्पनी से 2,00,000रु. का माल खरीदती है तो सहायक कम्पनी के क्रय में से तथा सूत्रधारी के विक्रय में से 2,00,000 रु. की राशि को कम कर दिया जायेगा ।

(ii) अन्तर्कम्पनी खर्चे एवं आय भी एकीकृत लाभ–हानि खाते में से हटा देनी चाहीए ।

(iii) यदि अन्तिम स्टॉक में न वसूल हुआ लाभ शामिल है तो इसके लिए एकीकृत लाभ–हानि खाते को डेबिट करके स्टॉक संचय खाते को क्रेडिट कर देना चाहिए ।

(iv) सूत्रधारी कम्पनी द्वारा सहायक कम्पनी से अथवा सहायक कम्पनी द्वारा सूत्रधारी से प्राप्त ऋणपत्रों एवं ऋणों पर ब्याज तथा लाभांश की प्राप्ति राशि को एकीकृत लाभ–हानि खाता बनाते समय अन्तःकम्पनी व्यवहार मानकर दोनों तरफ से हटा देना चाहिए । लाभांश या ऋणपत्रों के ब्याज पर लगे कर का कोई समायोजन नहीं किया जाना चाहिए ।

(v) यदि सहायक कम्पनी द्वारा लाभांश प्रस्तावीत किया गया है और सूत्रधारी कम्पनी ने प्रस्तावित लाभांश में अपने हिस्से को लाभ–हानि खाते में क्रेडिट कर दिया हैं तो एकीकृत लाभ–हानि खाता बनाते समय सहायक कम्पनी के प्रस्तावित लाभांश को समाप्त कर दिया जायेगा तथा सूत्रधारी कम्पनी द्वारा क्रेडिट किये गये प्रस्तावित लांभाश को भी हटा दिया जायेगा । प्रस्तावित लाभांश में अल्पमत अंशधारीयों का हिस्सा उनके हित कि राशि में जोड़ दिया जायेगा । यदि सूत्रधारी कम्पनी द्वारा सहायक कम्पनी के प्रस्तावित लाभांश में अपने हिस्से से लाभ–हानि खाते को क्रेडिट नहीं किया जा सकता है तो एकीकृत लाभ–हानि खाता बनाते समय सहायक कम्पनी के प्रस्तावित लाभांश को हटा दिया जायेगा तथा अल्पमत अंशधारियों के हित की गणना प्रस्तावित लाभांश पूर्व लाभ के आधार पर की जायेगी ।

(vi) यदि सहायक कम्पनी द्वारा निर्गमित पूर्वाधिकार अंश बाह्य व्यक्तियों द्वारा धारित है तो सहायक कम्पनी को लाभ होने की स्थिति में इन पर बकाया लाभांश की राशि को अल्पमत अंशधारियों के हित की गणना में शामिल किया जायेगा ।

(vii) अंश अधिग्रहण की तिथि से पूर्व सहायक कम्पनी के लाभों में सूत्रधारी कम्पनी के हिस्से की राशि से एकीकृत लाभ–हानि खाते को डेबिट करके पूँजीगत संचय या ख्याति को क्रेडिट कर देना चाहिए ।

(viii) अल्पमत अंशधारियों का हिस्सा निम्न प्रकार निर्धारित किया जायेगाः–

(अ) पिछले वर्ष से लाये गये शेष में आनुपातिक हिस्सा ;

(ब) लाभांश अथवा संचयों के स्थानान्तरण से पूर्व चालु वर्ष के लाभों में आनुपातिक हिस्सा;

(स) सम्पतियों के पुनर्मूल्याकंन के कारण मूल्य ह्ास सम्बधी समायोजन ।

(द) अन्तःकम्पनी लाभांश या अधिमान अंशों पर लाभांश का समायोजन ।

अल्पमत अंशधारीयों के हिस्से की राशि से एकीकृत लाभ–हानि खाते को डेबिट करके अल्पमत अंशधारियों के हित को क्रेडिट कर देना चाहिए ।

(इ) यदि सहायक कम्पनी द्वारा कोई राशि संचयों मे स्थानान्तरित की गयी है तो इसमें सूत्रधारी कम्पनी से सम्बन्धित भाग को उनके हित में जोड़ा जायेगा ।

उदाहरण 12 एच लिमिटेड तथा उसकी सहायक कम्पनी एस लिमिटेड का 31 मार्च, 2010 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए लाभ–हानि खाते निम्न प्रकार है :

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Particulars	H Ltd.	S Ltd.	Particulars	H Ltd.	S Ltd.
	Rs.	**Rs.**		**Rs.**	**Rs.**
To Purchase	3,20,000	1,45,000	By Sales	3,80,000	3,00,000
To Manufacturing Expenses	-	80,000	By Closing Stock	20,000	25,000
To Gross Profit c/d	80,000	1,00,000			
	4,00,000	3,25,000		4,00,000	3,25,000
To sundry Expenses	30,000	40,000	By Gross Profit b/d	80,000	1,00,000
To Debenture Interest	-	2,400	By Debenture Interest	1,200	-
To Net Profit c/d	59,600	57,600	By Interim Dividend	8,400	-
	89,600	1,00,000		89,600	1,00,000
To Provision for Tax	28,000	24,000	By Net Profit b/d	59,600	57,600
To Interim Dividend	-	11,200			
To Proposed Predерence Share Dividend	-	1,200			
To Proposed Equity Share Dividend	20,000	16,800			
To Balance c/d	11,600	4,400			
	59,600	**57,600**		**59,600**	**57,600**

आपको निम्नलिखित सूचनाएं भी उपलब्ध है :

1. एस लिमिटेड की निर्गमित अंश पूंजी में 10 रु. वाले पूर्ण प्रदत्त 8,000 ईक्विटी अंश तथा 10 रु. वाले पूर्ण प्रदत 2,000 6 प्रतिशत पूर्वाधिकार अंश शामिल हैं।
2. एस लिमिटेड का समामेलन 1 अप्रैल 2008 को हुआ। उसने 10 रु. वाले 4,000 6 प्रतिशत ऋण–पत्र भी निर्गमित किये।
3. एच लिमिटेड ने एस लिमिटेड के 6,000 ईक्विटी अंश 1 जुलाई 2008 को खरीदे तथा 20,000 रु. के ऋण–पत्र 1 अप्रैल 2008 को खरीदे।
4. 2008–09 वर्ष में एस लिमिटेड ने एच लिमिटेड को 30,000 रु. का माल बेचा। एस लिमिटेड द्वारा यह माल लागत में 50 प्रतिशत जोड़कर बेचा गया था।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

5. उपरोक्त माल का एक–चौथाई भाग एच लिमिटेड के पास 31 मार्च 2009 को बिना बिका हुआ शेष हैं। एकीकृत लाभ–हानि खाता तैयार कीजिए।

Consolidated Profit & Loss Account of H Ltd. and its Subsidary Company S Ltd.

for the year ending 31st March, 2009

	Rs.		Rs.
To Purchase	4,35,000	By Sales	6,50,000
To Manufacturing Expenses	80,000	By Closing Stock	45,000
To Gross Profit c/d	1,80,000		
	6,95,000		6,95,000
To Sundry Expenses	70,000	By Gross Profit c/d	1,80,000
To Debenture Interest	1,200		
To Net Profit c/d	1,08,800		
	1,80,000		1,80,000
To Provision for Tax	52,000	By Net Pofit b/d	
To Interim Dividend	2,800		
To Capital Reserve	6,075		
To Stock Reserve	2,500		
To Minority Interest	6,500		
To Proposed Dividend	20,000		
To Balance c/d	18,925		
	1,08,800		**1,08,800**

1. 30,000 रु. के परस्पर क्रय–विक्रय को एच लिमिटेड के क्रय में से तथा एस लिमिटेड के विक्रय में से घटा दिया गया हैं।
2. एस लिमिटेड के ऋणपत्रों पर ब्याज के 1,200 रु. ब्राह व्यक्तियों से सम्बन्धित है जिन्हें एकीकृत लाभ–हानि खाते में व्यय के रुप में दिखाया गया हैं। इसी तरह ब्राह व्यक्तियों से सम्बन्धित 2,800 रु. का अन्तरिम लाभांश एकीकृत लाभ–हानि खाते के डेबिट पक्ष में दिखाया गया हैं। शेष राशियों को दोनो तरफ से हटा दिया गया हैं।
3. एस लिमिटेड के शुद्ध लाभ (57,600 – 24,000 रु. कर आयोजन – 1,200 रु. पूर्वाधिकार अंश लाभांशद्ध 32,400 रु. का 3/12 भाग अर्थात् 8,100 रु. अंश अधिग्रहण से पूर्व का लाभ हैं। इस लाभ का 3/4 भाग अर्थात् 6,075 रु. एच लिमिटेड के हिस्से का है जिसे पूंजीगत संचय में स्थानान्तरित किया हैं।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

4. एस लिमिटेड ने जो माल एच लिमिटेड को बेचा था उस पर (30,000x1/3) 10,000 रु. का लाभ कमाया गया था। उक्त माल का 1/4 भाग स्टॉक में बचा हुआ हैं। अतः न वसूल हुआ लाभ (10,000 X 1/4) 2,500 रु. है जो कि स्टॉक संचय खाते में केडिट कर दिया गया हैं।

लघुत्त्रात्मक प्रश्न

1. सहायक कम्पनी किसे कहते हैं।
2. किन परिस्थितियों के एक कम्पनी दूसरी कम्पनी की सहायक मानी जाती हैं।
3. नियन्त्रक कम्पनी की हानियां बताइए।
4. नियन्त्रक कम्पनी के क्या उद्देश्य हैं ?
5. काल्पनिक आकड़ो के आधार पर नियन्त्रण कम्पनी के चिट्ठे में सहायक कम्पनी से सम्बंधित संदिग्ध दायित्वों को समझाइये।
6. एकीकृत चिट्ठे के सन्दर्भ में अल्पसंख्यकों का हित समझाइये।
7. एकीकृत चिट्ठे के सन्दर्भ में ख्याति को समझाइए।
8. सहायक कम्पनी के चिटठ् में दिखाये गये लाभांश के साथ में एकीकृत चिट्ठे बनाते समय किस प्रकार व्यवहार किया जायेगा।
9. एकीकृत चिट्ठा बनाते समय सहायक कम्पनी से सम्बधित अधिमान अंशो पर बकाया लाभांश के साथ किस प्रकार व्यवहार किया जायेगा।
10. एकीकृत चिट्ठे बनाते समय सम्पतियां एवं दायित्वों में जिन पदों को हटा दिया जाता हैं उनके कोई चार उदाहरण दीजिए।

निबन्धात्मक प्रश्न

1. कम्पनी अधिनियम 1956 के अनुसार भारत में एक सूत्रधारी कम्पनी के प्रकाशित लेखो में तथा उनके साथ सहायक कम्पनियों के सम्बन्ध में क्या–क्या सूचनाएं अलग से प्रदर्शित की जाती हैं
2. सूत्रधारी कम्पनी किसे कहते है ? सूत्रधारी कम्पनी के लाभों व हानियों की विवेचना कीजिए ।
3. सूत्रधारी कम्पनी और उसकी सहायक कम्पनियों के मध्य अतः कम्पनी व्यवहार क्या होते है ? इस प्रकार के व्यवहारों के कुछ उदाहरण दीजिए और बताइये कि एकीकृत चिट्ठा बनाते समय इसका लेखांकन किस प्रकार किया जाता हैं।
4. क्रय से पूर्व के लाभ और क्रय के बाद के लाभ से आप क्या समझते है ? एकीकृत चिट्ठे में इनके साथ किस प्रकार व्यवहार किया जाता हैं ?
5. एकीकृत चिट्ठे के सन्दर्भ में 'ख्याति' से क्या तात्पर्य है ? क्या ख्याति और नियन्त्रण की लागत में कोई अन्तर है ?
6. एकीकृत चिट्ठा किसे कहते है ? यह किस प्रकार तैयार किया जाता है ?
7. एकीकृत चिट्ठे में आप निम्नलिखित के साथ किस प्रकार व्यवहार करेंगे ?

व्यावहारिक प्रश्न :–

Q. 1 एम लिमिटेड ने पी लिमिटेड के 8,000 ईक्विटी अंश 1 अप्रैल 2008 को क्रय किये। 31 मार्च 2009 को दोनो कम्पनियां के निम्नाकिंत चिट्ठे है :

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Liabilities	M Ltd.	P Ltd.	Assets	M Ltd.	P Ltd.
	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.
Equity Shares of Rs. 100 each	20,00,000	10,00,000	Land & Buildings	5,00,000	3,00,000
General Reserve (1-4-08)	4,00,000	2,00,000	Plant & Machinery	5,00,000	6,00,000
Profit and Loss a/c (1-4-08)	1,00,000	60,000	Stock	1,50,000	1,00,000
Profit for the year 2008-09	2,00,000	80,000	Sundry Debtors	1,00,000	1,20,000
Sundry Creditors	1,00,000	1,00,000	Investments in Shares of P Ltd. at cost	10,00,000	-
Bills Payable	30,000	10,000	Bills Receivable	80,000	10,000
			Cash and Bank Balance	5,00,000	3,20,000
	28,30,000	14,50,000		28,30,000	14,50,000

1. एम लिमिटेड के प्राप्य बिलों में 10,000 रु. ऐसे बिलों के शामिल है जिन्हें पी लिमिटेड ने स्वीकार किया हैं।
2. एम लिमिटेड के विविध देनदारों में 50,000 की ऐसी राशि शामिल है जो पी लिमिटेड द्वारा देय हैं।
3. पी लिमिटेड के स्टॉक में ऐसा माल भी शामिल जिसे इसने एम लिमिटेड से 60,000 रु. में क्रय किया था और इसे एम लिमिटेड ने लागत पर 25 प्रतिशत लाभ पर बेचा था।

   31 मार्च, 2009 को एकीकृत चिट्ठा बनाइए।

Q. 2 एच लि. एवं एस लि. के 30 जून 2009 को चिटठे निम्नलिखित है :

Liabilities	H Ltd.	S Ltd.	Assets	H Ltd.	S Ltd.
	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.
Share Capital			Freehold Premises	2,00,000	75,000
Authorized & Issued Shares of Rs. 100 fully paid	3,20,000	1,50,000	Plant & Machinery	70,000	57,200
Reserve as per last Account	1,60,000	6,000	Furniture & Fixtures	5,000	9,800
Profit & Loss Account	1,50,000	91,000	Sundry Debtors	85,000	56,500
Sundry Creditors	70,000	43,000	Stock in Trade	98,000	61,300
			Investments : 1,200 Shares in S Ltd.	1,90,000	-
			Cash at Bank	52,000	30,200
	7,00,000	2,90,000		7,00,000	2,90,000

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

1 जुलाई, 2008 को एच लिमिटेड द्वारा एस लिमिटेड के अंश क्रय करते समय एस लिमिटेड के लाभ–हानि खाते का शेष 62,500 रु. था। एस लिमिटेड के 30 जून, 2009 के लेनदारों में 15,000 रु. की राशि एच लिमिटेड को देय थी जो उधार खरीदे गये माल से सम्बन्धित थी तथा जिस पर एच लिमिटेड ने वास्तविक लागत पर औसत रुप से 25 प्रतिशत लाभ कमाया था। एस लिमिटेड के 61,300 रु. के स्टॉक में 8,000 रु. का माल एच लिमिटेड से खरीदा गया सम्मिलित था। 1 जुलाई 2008 को एस लिमिटेड की प्लान्ट एवं मशीनरी पुस्तकों में 59,000 रु. दिखाई गई थी किन्तु उसका मूल्य 62,000 रु. निर्धारित किया गया। पुस्तकों में इसके लिए कोई समायोजन नहीं किया गया एवं इसके अतिरिक्त 2008–09 वर्ष के दौरान प्लान्ट एवं मशीनरी में कोई वृद्धि अथवा कमी नहीं हुई। एकीकृत चिट्ठा बनाइए।

Q. 3 ए लिमिटेड एवं उसकी सहायक बी लिमिटेड के 31 मार्च 2009 को संक्षिप्त निम्नांकित प्रकार है :

Liabilities	A Ltd.	B Ltd.	Assets	A Ltd.	B Ltd.
	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.
Equity Shares of Rs. 10 each	10,00,000	4,00,000	Land & Buildings	1,75,000	1,25,000
Premium of 26,000 shares	1,30,000	-	Plant & Machinery	3,50,000	1,95,000
General Reserve	-	1,00,000	Furniture	60,000	25,000
Profit & Loss Account	1,40,000	30,000	Stock	2,00,000	1,35,000
Sundry Creditors	1,95,000	1,50,000	Sundry Debtors	2,50,000	1,55,000
			Due from B Ltd.	35,000	-
			Investments in 36,000 Shares of B Ltd.	3,90,000	-
			Cash at Bank	5,000	45,000
	14,65,000	6,80,000		14,65,000	6,80,000

आपको निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखते हुए एकीकृत चिट्ठा तैयार करना है:

1. ए लिमिटेड द्वारा बी लिमिटेड के अंश 1 अप्रैल 2008 को क्रय किये गये थे, उस समय बी लिमिटेड के संचय 25,000 रु. एवं लाभ–हानि खाते का क्रेडिट शेष 5,000 रु. था।
2. बी लिमिटेड ने अंशो का मूल्य निर्धारित करते समय प्लान्ट एवं मशीनरी जो उस समय 2,25,000 रु. पुस्तक मूल्य पर थी, 2,70,000 रु. पर पुनर्मूल्याकिंत की गई तथा फर्नीचर जो पुस्तको में 30,000 रु. पर प्रदर्शित था, 18,000 रु. पर पुनर्मूल्यांकित किया गया। नये मूल्य पुस्तकों में समाविष्ट नहीं किये गये हैं।
3. बी लिमिटेड द्वारा ए लिमिटेड से क्रय किये गये माल में से 70,000 रु. का माल अभी भी स्टॉक में हैं। ए लिमिटेड ने बी लिमिटेड को लागत पर 25 प्रतिशत जोड़कर माल बेचा हैं।

Q. 4 एच लिमिटेड एवं उसकी सहायक कम्पनी एस लिमिटेड के 30 सितम्बर 2009 के चिट्ठे अग्रांकित प्रकार है :

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Liabilities	H Ltd.	S Ltd.	Assets	H Ltd.	S Ltd.
	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.
Authorized Capital: Shares of Rs. 10 each	8,00,000	7,50,000	Land and Buildings at Cost less depreciation	1,30,000	90,000
Issued Capital : Shares of Rs. 10 each fully paid	6,75,000	5,00,000	Plant & Machinery at Cost less depreciation	2,56,350	11,900
5% Debentures	1,40,000	-	Fixtures & Fittings at Cost less depreciation	30,750	3,850
Sundry Creditors:			Investments in S Ltd. 37,500 shares of Rs. 10 each	4,31,250	2,25,000
H Ltd.	-	48,325			
Trade Accounts	71,750	1,11,675			
General Reserve	1,50,000		Stock in Hand	1,54,800	17,500
Profit and Loss Account	1,65,915	1,00,000	Bills Receivable	-	-
			Sundry Debtors (S Ltd.)	51,025	-
			Trade Accounts	88,675	3,00,000
			Cash Balance	59,815	1,11,750
	12,02,665	7,60,000		12,02,665	7,60,000

निम्नलिखित सूचनाएं दी गई है :

1. एच लिमिटेड ने एस लिमिटेड के अंश 1 अक्टूबर 2008 को अधिग्रहित किये ।अंश अधिग्रहण की तिथि को एस लिमिटेड के लाभ–हानि खाते में 50,000 रु. का जमा शेष था।
2. उस तिथि को एस लिमिटेड के अंशो का मूल्य 4,31,250 रु. तय करते समय भूमि एवं भवन जो उस समय पुस्तकों में 1,20,000 रु. पर थे, 1,60,000 रु. पर पुनर्मूल्यांकित किये गये।
3. एच लिमिटेड द्वारा एस लिमिटेड को माल लागत में 25 प्रतिशत जोड़कर बेचा गया। 30 सितम्बर, 2009 को एस लिमिटेड के 2,25,000 रु. के स्टॉक में एच लिमिटेड से क्रय किया गया। 76,950 रु. का माल सम्मिलित था। एच लिमिटेड द्वारा ए लि. को बेचे गये माल में से 2,700 रु. का माल एस लिमिटेड द्वारा 28 सितम्बर, 2009 को लौटा दिया गया तो एच लिमिटेड के पास 4 अक्टूबर 2009 को पहुंचा था।

आपसे अनुरोध है कि एच लिमिटेड के अंशधारियों को प्रस्तुत करने के लिए 30 सितम्बर, 2009 को एकीकृत चिट्ठा तैयार कीजिए।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

वर्ग (Section) : C
इकाई (Unit) : 1
कम्पनियों के एकीकरण का लेखांकन
(Accounting For Amalgamation of Companies)

उददेश्य :–

इस इकाई को पढ़ने के पश्चात् आप :

- संविलयन, बाह्य पुनर्निर्माण तथा एकीकरण का अर्थ बताने के योग्य होगें।
- भारतीय लेखा मानक (AS) 14 के अनुसार कम्पनियों के एकीकरण के प्रकार/बता सकेगें।
- क्रय प्रतिफल का निर्धारण कर सकेगे।
- कम्पनियों के एकीकरण का लेखांकन विक्रेता कम्पनी तथा क्रेता कम्पनी की पुस्तकों में कर सकेगे।

परिचय (Introduction) :

आज की अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा के युग में केवल वही व्यवसायी अपना अस्तित्व कायम रख सकते हैं जो साधन सम्पन्न हो तथा बड़े पैमाने की उत्पति के लाभ (Advantage of large scale production) प्राप्त कर रहे हों। छोटी व्यावसायिक इकाइयॉ बड़ी इकाइयों से प्रतिस्पर्द्धा करने में असमर्थ रहती हैं इसलिए उनके समक्ष तीन ही विकल्प रहते हैं (i) या तो घाटा उठाते हुए अन्त में अपने व्यवसाय को बन्द कर दें; या (ii) छोटी इकाइयों का संयोग (Combination) बनाकर संयुक्त रूप से एक वृहत इकाई के रूप में साधन सम्पन्न बने तथा बड़े पैमाने की उत्पत्ति के लाभ कमायें; या (iii) किसी बड़ी इकाई के साथ संयोग कर अपना व्यवसाय उसे अन्तरित कर दे। संयोग के कारण दो या दो से अधिक इकाइयॉ सम्मिलित रूप से कार्य करती हैं और इसे सामान्य भाषा में कम्पनियों का एकीकरण भी कहा जा सकता है।

जब एक विद्यमान कम्पनी का समापन होता है तथा उसके स्थान पर या तो नई कम्पनी का निर्माण होता है या चालू व्यवसाय वाली कम्पनी द्वारा उसे क्रय कर लिया जाता है, तो कम्पनियों के ऐसे पुनर्गठन को संयोग (Combination) कहा जाता हैं। संयोग निम्नलिखित प्रारूप में हो सकते है :

1) संविलयन (Absorption/Merger)
2) बाह्य पुनर्निर्माण (External Reconstruction)
3) एकीकरण (Amalgamation)

सविलयन बाह्म पुनर्निर्माण एवं एकीकरण का अर्थ
(Meaning of Absorption, External Reconstruction and Amalgamation)

संविलयन (Absorption/Merger) :

एक विद्यमान कम्पनी द्वारा एक या एक से अधिक विद्यमान कम्पनियों के व्यवसाय को अधिग्रहित कर अपने व्यवसाय के विस्तार करने को संविलयन कहते हैं। इसके अन्तर्गत एक या एक से अधिक कम्पनियों का समापन होता है परन्तु किसी नई कम्पनी का निर्माण नहीं होता है।

बाह्म पुनर्निमाण (External Reconstruction) :

जब किसी वर्तमान कम्पनी का समापन होता है तथा ऐसी कम्पनी की सम्पतियों तथा दायित्वों को नव–निर्मित कम्पनी द्वारा व्यवसाय को चालू रखने के उद्‌देश्य से क्रय कर लिया जाता है तो ऐसे पुर्नगठन को बाह्य पुनर्निमाण कहते हैं। नई कम्पनी का नाम प्रायः पुरानी कम्पनी से मिलता जुलता ही रखा जाता है ताकि पुरानी कम्पनी की ख्याति का लाभ नई कम्पनी उठा सके।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

एकीकरण (Amalgamation) :

दो या दो से अधिक कम्पनियों का समापन कर एक नयी कम्पनी का गठन करने को 'कम्पनियों का एकीकरण' कहते हैं। भारतीय चार्टर्ड लेखाकार संस्था द्वारा जारी लेखा मानक 14 के अनुसार विद्यमान कम्पनियों में से किसी भी एक अथवा एक से अधिक कम्पनियों का अधिग्रहण करना भी एकीकरण कहलाता है। यह लेखा मानक 1 अप्रैल 1995 या इससे पश्चात् होने वाले कम्पनियों के 'एकीकरण के लेखांकन' पर अनिवार्य रूप से लागू हो गया है इसलिए कम्पनियों के एकीकरण के सम्बन्ध में विभिन्न प्रावधान इसी लेखा मानक (AS 14) के अनुरूप लागू होगे

एकीकरण के प्रकार

(Types of Amalgamation)

भारतीय चार्टर्ड लेखाकार संस्था द्वारा जारी लेखा मानक 14, (As-14) ''एकीकरण के लिए लेखांकन'' के अनुसार कम्पनियों का एकीकरण दो प्रकार का हो सकता है :

(1) विलय के स्वभाव वाला एकीकरण, अथवा
(Amalgamation in the nature of merger)

(2) क्रय के स्वभाव वाला एकीकरण
(Amalgamation in the nature of purchase)

(1) विलय के स्वभाव वाला एकीकरण (Amalgamation in the Nature of Merger) :

ऐसा एकीकरण जो निम्नलिखित सभी शर्तो को पूरा करता हो विलय के स्वभाव वाला एकीकरण कहलाता है :

(i) हस्तान्तरक अर्थात् विक्रेता कम्पनी (Transferor Company) की सभी सम्पतियॉ एवं दायित्व एकीकरण के पश्चात् हस्तान्तरिती अर्थात् क्रेता कम्पनी (Transferee Company) की बन जावे।

(ii) हस्तान्तरक कम्पनी के इक्विटी अंशों के अंकित मूल्य के कम से कम 90 प्रतिशत धारण करने वाले अंशधारी, एकीकरण के कारण हस्तांतरिती कम्पनी के अंश धारक बन जायें ; इनमें वे इक्विटी अंश सम्मिलित नहीं होंगे जो कि एकीकरण के तुरन्त पूर्व हस्तांतरिती कम्पनी, उसकी सहायक कम्पनी अथवा उसके नांमाकित व्यक्तियों के पास हों।

उदाहरणार्थ – 'अ' कम्पनी की पूॅजी 1,20,000 ईक्विटी अंश 10 रू. वाले हैं। 'ब' कम्पनी के पास 20,000 ईक्विटी अंश 'अ' कम्पनी के पहले से ही हैं। अब 'ब' कम्पनी 'अ' कम्पनी का विलय करती है तो 'अ' कम्पनी के कम से कम (1,20,000–20,000) = 1,00,000 अंशो का 90% अर्थात् 90,000 ईक्विटी अंशों के धारक एकीकरण के बाद 'ब' कम्पनी में अशों के धारक हो जाने चाहिए।

(iii) हस्तान्तरक कम्पनी के ऐसे अंशधारियों, जो हस्तान्तरिती कम्पनी के ईक्विटी अंशधारी बनने को सहमत हो गये हों, को हस्तान्तरिती कम्पनी द्वारा केवल ईक्विटी अंशों के निर्गमन द्वारा ही प्रतिफल का भुगतान किया जायेगा सिवाय इसके कि अंशों के टुकड़े (Fraction of shares) के संबंध में नकद राशि दी जा सकती है।

(iv) एकीकरण के पश्चात् हस्तान्तरक कम्पनी का व्यवसाय हस्तान्तरिती कम्पनी द्वारा व्यवसाय को चालू रखने के इरादे से लिया गया हो।

(v) लेखांकन नीतियों में एकरूपता बनाये रखने के उद्देश्य को छोड़कर हस्तान्तरक कम्पनी की सम्पतियों एवं दायित्वों के पुस्तक मूल्य में एकीकरण के समय हस्तान्तरिती कम्पनी कोई भी समायोजन नहीं करेगी अर्थात् क्रेता कम्पनी विक्रेता कम्पनी की सभी सम्पतियों एवं दायित्वों (सभी संचयों सहित) को उसके पुस्तक मूल्य पर ही अपनी पुस्तकों में समामेलित करने की प्रविष्टि करेगी। लेखांकन नीतियों में एकरूपता लाने के लिए कुछ समायोजन किये जा सकते हैं।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(2) क्रय के स्वभाव वाला एकीकरण (Amalgamation in the Nature of Purchase) :

कम्पनियों का ऐसा एकीकरण जो विलय के स्वभाव वाले एकीकरण की उपर्युक्त में से किसी भी एक या अधिक शर्तो को पूरा नहीं करता हो, क्रय के स्वभाव वाला एकीकरण कहलाता है।

क्रय प्रतिफल (Purchase Consideration)

क्रेता कम्पनी द्वारा विक्रेता कम्पनी को उसकी शुद्व सम्पतियों या व्यवसाय के अधिग्रहण के बदले जो राशि देय होती है सामान्यतया उसे क्रय प्रतिफल कहते हैं। भारतीय लेखा मानक 14 (Indian Accounting Standard-14) के अनुच्छेद 3 (g) के अनुसार, हस्तान्तरिती कम्पनी द्वारा हस्तान्तरक कम्पनी के अंशधारियों (पूर्वाधिकार तथा समता दोनों को) देय समस्त भुगतान का योग क्रय प्रतिफल कहलाता है। अतः क्रय प्रतिफल में ऐसी राशि को सम्मिलित नहीं किया जाता है जो हस्तान्तरिती कम्पनी द्वारा हस्तान्तरक कम्पनी के ऋण–पत्र धारियों तथा लेनदारों को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से चुकाया जाता है।

कम्पनियों के एकीकरण के समय क्रय प्रतिफल का निर्धारण निम्नांकित विधियों से किया जा सकता है

1. शुद्व सम्पतियॉ विधि (Net Assets Method)
2. शुद्व भुगतान विधि (Net Payment Method)
3. एक मुश्त विधि (Lump Sum Method)
4. अंशों के आन्तरिक मूल्य विधि (Instrinsic Value of Shares Method)

1. शुद्व सम्पतियॉ विधि (Net Assets Method) :

इस विधि के अन्तर्गत क्रय प्रतिफल का निर्धारण निम्नांकित दो स्थितियों में किया जाता है :

(अ) जब एकीकरण विलय के स्वभाव वाला हो ; तथा

(ब) जब एकीकरण क्रय के स्वभाव वाला हो।

(अ) विलय के स्वभाव वाले एकीकरण की दशा में क्रय प्रतिफल का निर्धारण
(Compution of Purchase Consideration in Amalgamation in the Nature of Merger) :

इस प्रकार के एकीकरण में हस्तान्तरक/विक्रेता कम्पनी की समस्त सम्पतियों के पुस्तक मूल्यों के योग में से समस्त दायित्वों तथा संचयों (आयगत, पूँजीगत तथा अन्य) के पुस्तक मूल्यों को घटा दिया जाता है। यदि क्रय प्रतिफल के रूप में दिये जाने वाले अंशों की संख्या भिन्न (Fraction) में आती हो तो अंश टुकड़े (Fraction of share) का मूल्य क्रेता कम्पनी के अंशों के बाजार मूल्य के आधार पर ज्ञात किया जाता है और इस मूल्य का भुगतान रोकड़ (Cash) में किया जाता है।

(ब) क्रय के स्वभाव वाले एकीकरण की दशा में क्रय प्रतिफल का निर्धारण
(Compution of Purchase Consideration when the Amalgamation is in the Nature of Purchase) :

क्रय के स्वभाव वाले एकीकरण की स्थिति में शुद्व सम्पतियां विधि से क्रय प्रतिफल की गणना करने के लिए हस्तान्तरिती कम्पनी द्वारा हस्तान्तरक कम्पनी की जिन सम्पतियों को लिया गया है उनके तय मूल्यों (Agreed Values) के योग में से लिये गये दायित्वों के तय मूल्यों के योग का कम कर दिया जाता है।

यदि तय मूल्य न दिये हुए हों तो सम्पतियों एवं दायित्वों के पुस्तक मूल्य (book value) लिये जाते हैं।

Purchase Consideration = (Assets taken over at agreed values – Liabilities taken over at agreed values)

इस स्थिति में क्रय प्रतिफल ज्ञात करने के लिए निम्नांकित बातों को ध्यान में रखना चाहिए :

(i) सम्पतियॉ (Assets) का तात्पर्य रोकड़ तथा बैंक शेष सहित समस्त सम्पतियों से है परन्तु इसमें काल्पनिक सम्पतियों यथा प्रारम्भिक व्यय, अभिगोपन कमीशन, अंशों या ऋणपत्रों के निर्गमन पर बट्टा लाभ–हानि खाते का नाम शेष आदि को सम्मिलित नहीं माना जाता है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(ii) यदि हस्तान्तरित कम्पनी (Transferee Company) ने किसी विशेष दायित्व या सम्पति को नहीं लिया है तो ऐसी सम्पति या दायित्व को क्रय प्रतिफल ज्ञात करते समय ध्यान में नहीं रखा जाता है।

(iii) यदि पूर्वदत्त व्यय (Pre-paid expenses), ख्याति तथा अन्य अदृश्य सम्पतियॉ चिट्ठे में दी हुई हों तो इन्हें भी क्रय प्रतिफल में सम्मिलित किया जायेगा, यदि अन्यथा कोई बात न ही हुई हो।

(iv) कम्पनी प्रथम पक्षकार कहलाती है, अंशधारी द्वितीय पक्षकार तथा ऋणदाता तृतीय पक्षकार कहलाते हैं। अतः दायित्वों का तात्पर्य प्रथम पक्षकार द्वारा तृतीय पक्षकार को देय राशि से है।

(v) 'व्यापारिक दायित्व' (Trade libility) का तात्पर्य व्यापारिक लेनदार तथा देय–विपत्र (Bills Payable) से है। इसमें तृतीय पक्षकार को देय दायित्व यथा बैंक–अधिविकर्ष, ऋण–पत्रों पर बकाया ब्याज, कर–दायित्व आदि सम्मलित नहीं होते हैं।

(vi) संचय तथा कोष (Reserve and Fund) को दायित्व नहीं माना जाता है क्योंकि यह तृतीय पक्षकार को देय नहीं होते हैं वरन् अंशधारियों से संबंधित होते हैं। यदि संचयों तथा कोषों में से कुछ राशि तृतीय पक्षकार को देय हो तो तृतीय पक्षकार के दावे की राशि को दायित्व (liability) माना जायेगा तथा शेष राशि को संचय माना जायेगा। उदाहरणार्थ, श्रमिक क्षतिपूर्ति कोष के 15,000 रूपये के शेष में से 11,000 रूपये श्रमिकों के दावे की राशि है, तो इस स्थिति में 11,000 रूपये दायित्व होंगें तथा 40,000 रूपये संचय या एकत्रित लाभ माने जावेंगे।

'एकीकरण' के प्रश्न को हल करते समय 'विलय के स्वभाव वाला एकीकरण' मानकर प्रश्न तभी हल करना चाहिए जब AS-14 के अनुसार क्रेता कम्पनी सभी शर्तो का पालन करती हो या फिर प्रश्न में स्पष्ट सूचना दी हुई हो। जब क्रेता कम्पनी प्रश्न में सम्पतियों को बाजार मूल्य पर ले रही हो या विक्रेता का पुराना व्यवसाय चालू न रख रही हो तो ऐसे प्रश्न को क्रय के स्वभाव वाला एकीकरण मानकर ही हल करना चाहिए

शुद्व सम्पतियां विधि को उदाहरण संख्या '1' में समझाया गया है।

उदाहरण (Illustration) 1 :

X Ltd. And Y Ltd. Amalgamated on 1st April, 2010. A new company XY Ltd. Was formed to take over the business of the existing companies. The Balance Sheets of both the companies are as follows :

एक्स लि. एवं वाई लि. का 1 अप्रैल, 2010 को एकीकरण हो गया। इन विद्यमान कम्पनियों के व्यवसायों को लेने के लिए एक नई कम्पनी एक्स वाई लि. की स्थापना की गई। दोनों कम्पनियों के चिट्ठे निम्न प्रकार थे :

Balance Sheets as on 31st March, 2010

Liabilities	X Ltd.	Y Ltd.	Assets	X Ltd.	Y Ltd.
	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.
Equity Share Capital (Rs. 10 each)	16,00,000	27,00,000	Sundry Fixed Assets	38,50,000	37,50,000
General Reserve	11,50,000	22,00,000	Investment	11,05,000	55,000
Profit & Loss A/c	11,00,000	2,50,000	Stock	2,25,000	11,75,000
Foreign Project Reserve	1,50,000	2,10,000	Debtors	2,80,000	14,00,000
Export Profit Reserve	1,05,000	1,10,000	Cash and Bank	1,45,000	40,000
12% Debentures	13,00,000	6,00,000			
Sundry Creditors	2,00,000	3,50,000			
	56,05,000	64,20,000		56,05,000	64,20,000

XY Ltd. issued requisite number of equity shares at par to discharge the claims of shareholders of the transferor companies. Prepare a statement showing purchase consideration assuming ;

(a) Amalgamation is in the nature of merger ; and

(b) Amalgamation is in the nature of purchase.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

एक्स वाई लि. ने हस्तान्तरक कम्पनियों के अंशधारियों के दावों का भुगतान करने के लिए आवश्यक संख्या में ईक्विटी अंश सम मूल्य पर निर्गमित किये। क्रय प्रतिफल को दिखाते हुए विवरण तैयार कीजिए यदि :

(अ) एकीकरण विलय की प्रकृति का हो तथा (ब) एकीकरण क्रय की प्रकृति का हो।

हल (Solution) :

क्रय प्रतिफल का निर्धारण Computation of Purchase Consideration

(अ) जब एकीकरण विलय की प्रकृति का हो :

(a) When Amalgamation is in the Nature of Merger

Statement Showing Computation of Purchase Consideration

	X Ltd.	Y Ltd.
(A) Assets Taken-over	Rs.	Rs.
Sundry Fixed Assets	38,50,000	37,50,000
Investments	11,05,000	55,000
Stock	2,25,000	11,75,000
Debtors	2,80,000	14,00,000
Cash and Bank Balance	1,45,000	40,000
Total (A)	56,05,000	64,20,000
(B) Liabilities and Reserves		
12% Debentures	13,00,000	6,00,000
Sundary Creditors	2,00,000	3,50,000
General Reserve	11,50,000	22,00,000
Profit & Loss A/c	11,00,000	2,50,000
Foreign Project Reserve	1,50,000	2,10,000
Export Profit Reserve	1,05,000	1,10,000
Total (B)	40,05,000	37,20,000
Purchase Consideration (A)-(B)	16,00,000	27,00,000

(ब) जब एकीकरण क्रय की प्रकृति का हो

(b) When the amalgamation is in the Nature of Purchase :

Statement Showing Computation of Purchase Consideration.

	X Ltd.	Y Ltd.
(A) Assets Taken-over	Rs.	Rs.
Sundry Fixed Assets	38,50,000	37,50,000
Investments	11,05,000	55,000
Stock	2,25,000	11,75,000
Debtors	2,80,000	14,00,000
Cash and Bank Balance	1,45,000	40,000
Total (A)	56,05,000	64,20,000
(B) Liabilities and Reserves		
12% Debentures	13,00,000	6,00,000
Sundry Creditors	2,00,000	3,50,000
Total (B)	15,00,000	9,50,000
Purchase Consideration (A)-(B)	41,05,000	54,70,000

(2) शुद्ध भुगतान विधि (Net Payment Method) :

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

इस विधि के अन्तर्गत क्रय प्रतिफल का तात्पर्य क्रेता (हस्तान्तरिती) कम्पनी द्वारा विक्रेता (हस्तान्तरक) कम्पनी को किये जाने वाले विभिन्न भुगतानों के योग से है। क्रेता कम्पनी द्वारा विक्रेता कम्पनी को किये जाने वाले भुगतान नकद ही नहीं वरन् ऋणपत्रों, समता अंशों, पूर्वाधिकार अंशों या अन्य प्रतिभूतियों के रूप में भी हो सकते हैं। लेखा मानक 14 (As 14) के अनुसार हस्तान्तरित कम्पनी द्वारा हस्तान्तरक कम्पनी के अंशधारियों के अलावा अन्य को देय राशि क्रय प्रतिफल में सम्मिलित नहीं की जाती है। अतः लेखा मानक 14 के अनुसार क्रय प्रतिफल का तात्पर्य हस्तान्तरक कम्पनी के अंशधारियों (पूर्वाधिकार तथा समता) को हस्तान्तरिती कम्पनी द्वारा देय राशि से है। हस्तान्तरक कम्पनी के ऋण–पत्रों या अन्य दायित्वों के लिए हस्तान्तरिती कम्पनी द्वारा दी जाने वाले राशि को क्रय प्रतिफल में सम्मिलित नहीं किया जाता है तथा ऐसे दायित्वों का निपटारा समझौते के अनुसार किया जाता है। उदाहरणार्थ, एक्स कम्पनी लि. के व्यवसाय को एम.कम्पनी लिमिटेड द्वारा क्रय किया गया। शुद्व सम्पतियों के प्रतिफल के बदले 1,00,000 रूपये के एम.कम्पनी लि. के समता अंश एक्स कम्पनी लि. के समता अंशधारियों के लिए, 50,000 रूपये के एम.कम्पनी लि. के पूर्वाधिकार अंश एक्स कम्पनी लि. के पूर्वाधिकार अंशधारियों के लिए तथा 70,000 रूपये के एम. कम्पनी लि. 8% ऋण–पत्र एक्स कम्पनी लि. के ऋण–पत्र धारियों के लिए जारी किये गये। एम कम्पनी लि. ने कुल 2,20,000 रूपये का भुगतान व्यवसाय क्रय करने के बदले एक्स कम्पनी को किया, परन्तु लेखा मानक 14 के अनुसार क्रय प्रतिफल का तात्पर्य एक्स कम्पनी लि. के अंशधारियों को देय राशि अर्थात् 1,50,000 रूपये से है न कि 2,20,000 रूपये से।

शुद्व भुगतान विधि से क्रय प्रतिफल ज्ञात करने पर एकीकरण की दोनो ही परिस्थितियों (विलय या क्रय) में क्रय प्रतिफल की राशि समान आती है।

विलय की प्रकृति के एकीकरण की दशा में विक्रेता (हस्तान्तरक) कम्पनी की अंशपूॅजी तथा क्रय प्रतिफल का अन्तर हस्तान्तरिती कम्पनी की पुस्तकों में संचयों (Reserves) की राशि में समायोजित किया जाता है। क्रय की प्रकृति के एकीकरण की दशा में हस्तान्तरिती कम्पनी द्वारा ली गई शुद्व सम्पतियों के मूल्य तथा क्रय प्रतिफल का अन्तर ख्याति या पूॅजीगत संचय के रूप में हस्तान्तरिती कम्पनी की पुस्तकों में दिखाया जाता है।

उदाहरण (Illustration) 2 :

on 31st March, 2010 the balance sheet of Amit Ltd. is as follows:

31 मार्च, 2010 को अमित लिमिटेड का चिट्ठा निम्न प्रकार है :

Balance Sheet

Liabilities	Rs.	Assets	Rs.
Share Capital :		Goowill	60,000
Equity Shares of Rs. 10 each		Land & Buildings	2,40,000
Fully paid up	5,00,000	Plant & Machinery	3,60,000
6% Preference Shares of		Stock	2,40,000
Rs. 10 each fully paid up	3,00,000	Rs.	
General Reserve	1,80,000	Sundry Debtors 1,80,000	
Insurance Fund	80,000	Less : Provision for doubtful	
Workmen Compensation Fund	16,000	Debts 8,000	1,72,000
Provident Fund	12,000	Cash at Bank	1,18,000
Creditors	48,000	Preliminary Expenses	26,000
Bills Payable	24,000		
Workmen Profit-sharing Fund	56,000		
	12,16,000		12,16,000

It has been decided that businees of Amit Ltd. should be absorbed by M.Ltd. at book values except that of land & buildings and plant & machinery which were valued at Rs. 3,40,000 and Rs. 3,00,000 respectively. It has also been decided that M Ltd. will assume the trade liabilities, make payment of

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

liquidation expenses Rs. 2,600 ; make payment of workmen profit sharing fund at 20% premium; issue three equity share of Rs. 10 each for every two preference shares in Amit Ltd., issue two equity shares of Rs. 10 each for every three equity shares in Amit Ltd. and make payment of Rs. 3 per equity share in cash. The equity shares of M Ltd. are quoted in the market at Rs. 60.

You are required to calculate purchase consideration.

यह निश्चय किया गया कि अमित लिमिटेड का एम.लिमिटेड में पुस्तक मूल्यों पर संविलयन कर दिया जाय, केवल भूमि एवं भवन तथा प्लांट व मशीनरी को छोड़कर जिनको क्रमशः 3,40,000 रू. और 3,00,000 रू. पर लिया जाये। यह भी निश्चय किया गया कि एम लिमिटेड व्यापारिक लेनदारों को ग्रहण करेगी, समापन व्यय के 2600 रू. देगी, श्रमिक लाभ भागीदारी कोष का 20 प्रतिशत प्रीमियम पर भुगतान करेगी, अमित लिमिटेड के दो पूर्वाधिकार अंशों के बदले में 10 रू. वाले तीन ईक्विटी अंश निर्गमित करेगी, तथा अमित लिमिटेड के तीन ईक्विटी अंशों की एवज में 10 रू. वाले दो ईक्विटी अंश देगी तथा 3 रू. प्रति ईक्विटी अंश नकद भुगतान करेगी। एम लिमिटेड के अंश बाजार में 60 रू. प्रति अंश की दर से उद्वत है।

आपको क्रय प्रतिफल की गणना करती है,

हल (Solution) : **Computation of Purchase Consideration**
(Net Payment Method)

		Rs.
1. <u>For Pref. Shareholders (पूर्वाधिकार अंशधारियों के लिए)</u> :	(45,000 x Rs.10)	4,50,000
Equity Shares 30,000 x 3 / 2 = 45,000 Shares		
2. <u>For Equity Sareholders (समता अंशधारियों के लिए)</u>		
(i) Equity Shares = 50,000 X 2 / 3 = 33,333 1 / 3		
Issue price of 33,333 shares @ Rs. 10 each	3,33,330	
(ii) Cash for 1 / 3 share at Market Price (1 / 3 x Rs.60)	20	
(iii) Cash Rs. 3 per share (50,000 x Rs. 3)	1,50,000	4,83,350
Purchase consideration (क्रय प्रतिफल)		9,33,350

<u>टिप्पणी</u> : अंशों के टुकड़ों के लिए क्रेता कम्पनी द्वारा विक्रेता कम्पनी को अंशों के बाजार मूल्य पर नकद भुगतान किया जाता है।

(3) एक मुश्त विधि (Lump sum Method) :

इस विधि के अन्तर्गत क्रय प्रतिफल की गणना नहीं की जाती है वरन् व्यापार क्रय करने के बदले क्रेता द्वारा दी जाने वाली राशि प्रश्न में पहले से ही दी हुई होती है। उदाहरणार्थ– मोहन लि. ने श्याम लि. का व्यवसाय 15 लाख रूपये में क्रय किया। इस स्थिति में क्रय प्रतिफल 15 लाख रूपये माना जायेगा। इस विधि से क्रय <u>प्रतिफल का निर्धारण केवल क्रय के स्वभाव वाले एकीकरण की दशा में ही किया जाता है।</u>

(4) अंशों के आन्तरिक मूल्य विधि (Intrinsic Value of Shares Method) :

इस विधि के अनुसार क्रय प्रतिफल का निर्धारण क्रेता कम्पनी तथा विक्रेता कम्पनी के अंशों के आन्तरिक मूल्यों के आधार पर की जाती है। आन्तरिक मूल्य का तात्पर्य कम्पनी की शुद्व सम्पतियों में उस कम्पनी के समता अंशों की संख्या का भाग देने पर ज्ञात राशि से है। शुद्व सम्पतियॉ ज्ञात करने के लिए कम्पनी की समस्त सम्पतियों के पूनर्मूल्यांकित मूल्यों के योग में से समस्त बाहरी दायित्वों एवं पूर्वाधिकार अंश पूॅजी को घटाया जाता है। इस विधि से क्रय प्रतिफल का निर्धारण केवल क्रय के स्वभाव वाले एकीकरण की दशा में ही किया जाता है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

उदाहरण (Illustration) 3 :

X Ltd. absorbs Y Ltd. by issue of 6 shares of Rs. 10 each at a premium of 10% for every 5 shares of Y Ltd. Compute the amount of purchase consideration.

एक्स लिमिटेड में वाई लिमिटेड का संविलयन हुआ जिसके लिए वाई लिमिटेड के प्रत्येक 5 अंशों के बदले एक्स लिमिटेड के 6 अंश प्रत्येक 10 रूपये वाला 10 प्रतिशत प्रीमियम पर, निर्गमित किये गये। क्रय प्रतिफल की राशि का निर्धारण कीजिए।

हल (Solution) :

एक्स लिमिटेड द्वारा निर्गमित किये जाने वाले अंशों की संख्या

$$= \frac{30,000 \times 6}{5}$$ अर्थात् 36,000 अंश

अंशों का निर्गमन मूल्य = 36,000 x 11 रूपये

= 3,96,000 रूपये

अतः क्रय प्रतिफल की राशि = 3,96,000 रूपये है।

हस्तान्तरक कम्पनी की पुस्तकों में एकीकरण के लिए लेखांकन
(Accounting for Amalgamation in the Books of Transferor Company)

विक्रेता कम्पनी या हस्तान्तरक कम्पनी की पुस्तकों में खाते बन्द करने की प्रविष्टियॉ की जाती है इसलिए उसे यह देखने की आवश्यकता नहीं है कि एकीकरण विलय की प्रकृति का है या क्रय की प्रकृति का। इस स्थिति में लेखांकन के लिए निम्नांकित प्रक्रिया अपनाई जाती है :

(1) वसूली खाता (Realisation Account) खोला जाये। काल्पनिक सम्पतियों तथा लाभ–हानि खाते के नाम शेष को छोड़कर क्रेता कम्पनी द्वारा ली गई सम्पतियों के खातों को उनके पुस्तक मूल्य (Book Value) पर वसूली खाते (Realisation A/c) में अन्तरण (Transfer) किया जावे। यदि रोकड़ शेष तथा बैंक शेष को भी हस्तान्तरिती/क्रेता कम्पनी ने ले लिया है तो रोकड़ खाते तथा बैंक खाते के शेष का भी वसूली खाते में अन्तरण (Transfer) किया जावे। क्रेता कम्पनी द्वारा न ली गई सम्पतियों का वसूली खाते में अन्तरण नहीं किया जाता है। क्रेता कम्पनी ,द्वारा ली गई सम्पतियों के पुस्तक मूल्य को वसूली खाते में अन्तरित करने की निम्न प्रविष्टि की जाती है :

Realisation A/c	Dr.	(योग से)
To (Particular) Asset A/c		(पुस्तक मूल्य से)

(2) क्रेता कम्पनी द्वारा स्वीकार किये गये दायित्वों का पुस्तक मूल्य पर वसूली खाते में अन्तरण करने पर :

(Particular) Liability A/c	Dr.	(पुस्तक मूल्य से)
To Realisation A/c		(योग से)

(3) क्रेता कम्पनी से क्रय प्रतिफल प्राप्य होने पर :

Purchasing/Transferee Company A/c	Dr.	
To Realisation A/c		(क्रय प्रतिफल की राशि से)

(4) क्रेता कम्पनी से क्रय प्रतिफल प्राप्त होने पर :

Bank A/c	Dr.	(समझौते के अनुसार क्रय
Shares in Transferee Co. A/c	Dr.	प्रतिफल की प्राप्त राशि से)
Debentures in Transferee Co. A/c	Dr.	

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

To Transferee/Purchasing Co. A/c

(5) पूर्वाधिकार अंश पूँजी को पूर्वाधिकार अंशधारियों के खाते में अन्तरित करने पर :

Preference Share Capital A/c Dr.
To Preference Shareholders A/c (पुस्तक मूल्य पर)

(6) संचयी पूर्वाधिकार अंशों पर बकाया लाभांश देय होने पर :

Realisation A/c Dr. (संचयी बकाया लाभांश की राशि स)
To Preference Shareholders A/c

(7) ऋण–पत्रों को यदि क्रेता कम्पनी ने नहीं लिया है तो उनके खाते का शेष तथा उन पर बकाया ब्याज की राशि को ऋणपत्र धारियों के खाते में अन्तरित करने पर :

Debentures A/c Dr.
Outstanding Debenture Interest A/c Dr.
To Debenture holders A/c

(8) समता अंश पूँजी को समता अंशधारियों के खाते में अन्तरित करने पर :

Equity Share Capital A/c Dr.
To Equity Shareholders A/c

(9) संचयों तथा एकत्रित लाभों के शेष को समता अंशधारियों के खाते में अन्तरित करने पर :

General Reserve A/c Dr.
Capital Reserve A/c Dr.
Revaluation Reserve A/c Dr.
Profit & Loss A/c Dr.
(Particular) Reserve A/c Dr,
To Equity Shareholders A/c

(10) कृत्रिम सम्पतियों तथा लाभ–हानि खाते के नाम शेष को समता अंशधारियों के खाते में अन्तरित करने पर

Equity Shareholders A/c Dr.
To Profit & Loss A/c
To Preliminary Expenses A/c
To Underwriting Commission A/c
To (Particular) Loss A/c

(11) क्रेता कम्पनी द्वारा न खरीदी गई सम्पतियों को बेचने पर :

Cash /Bank A/c Dr. (प्राप्ति राशि से)
Realisation A/c Dr. (हानि की राशि से)
To (Particular) Assets A/c (पुस्तक मूल्य से)
To Realisation A/c (लाभ की राशि से)

(12) समापन व्ययों (Liquidation Expenses) के भुगतान के सम्बन्ध में निम्नांकित चार परिस्थितियों में से कोई भी एक परिस्थिति हो सकती है :

(अ) जब समापन व्यय क्रेता कम्पनी द्वारा चुकाये जावें :

विक्रेता कम्पनी की पुस्तकों में कोई प्रविष्टि नहीं की जावेगी।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(ब) जब समापन व्यय विनते कम्पनी द्वारा चुकाये जावे तथा समझौते के अनुसार यह विनते कम्पनी का ही दायित्व हों :

Realisation A/c Dr.
To Bank A/c

(स) जब समापन व्यय विक्रेता कम्पनी द्वारा चुकाये जावे तथा समझौते के अनुसार यह क्रेता कम्पनी का दायित्व हो :

(i) समापन व्यय चुकाने पर :

Purchasing Co. A/c Dr.
To Bank A/c

(ii) क्रेता कम्पनी द्वारा पुर्नभरण करने पर :

Bank A/c Dr.
To Purchasing Co. A/c

(द) जब समापन व्यय के लिए राशि क्रेता कम्पनी से प्राप्त हो :

(i) राशि प्राप्त होने पर

Bank A/c Dr.
To Realisation A/c (प्राप्त राशि से)

(पप) समापन व्ययों का विक्रेता कम्पनी द्वारा भुगतान करने पर :

Realisation A/c Dr. (समापन व्ययों की
To Bank A/c (वास्तविक राशि से)

(13) क्रेता कम्पनी द्वारा न लिये गये दायित्वों तथा ऋणपत्रों के भुगतान करने पर :

(Particular) Liability A/c Dr. (दायित्व की चुकाई जाने वाली
Debentureholders A/c Dr. राशि से)
To Bank A/c
or/and
To Debentures in Purchasing Co. A/c (भुगतान की राशि से)
or/ and
To (Particular) Assets A/c

(14) पूर्वाधिकार अंशधारियों को भुगतान करने पर :

Preference Shareholders A/c Dr.
To Bank A/c
or/and
To (Particular) Asset A/c

(15) उपर्युक्त (13) तथा (14) की स्थिति में यदि पुस्तक मूल्य से कम भुगतान किया जावे :

(Particular) Liability A/c Dr.
Debenture holders A/c Dr. (अन्तर की राशि)
Preference Shareholders A/c Dr.
To Realization A/c

यदि पुस्तक मूल्य से अधिक राशि का भुगतान किया जाये तो उपर्युक्त प्रविष्टि की विपरीत प्रविष्टि की जायेगी तथा भुगतान प्रविष्टि तो (13) तथा (14) के अनुसार ही होगी परन्तु राशि बढ़ी हुई होगी।

(16) यदि ऐसे दायित्वों का भुगतान किया जावे जो पुस्तकों में न दिखाया हुआ हो :

Realisation A/c Dr.
To Bank A/c (चुकाई गई राशि)

(17) वसूली खाते के शेष को समता अंशधारियों के खाते में अन्तरित करने पर :

(अ) यदि वसूली खाते का जमा शेष हो अर्थात् वसूली खाता लाभ प्रदर्शित करता हो :

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Realisation A/c Dr.
To Equity Shareholders A/c

(ब) यदि वसूली खाते का नाम शेष हो अर्थात् वसूली खाता हानि प्रदर्शित करता हो :

Equity Shareholders A/c Dr.
To Realisation A/c

(18) समता अंशधारियों को भुगतान करने पर :

Equity Share holders A/c Dr.
To Bank A/c
To Equity Share in Purchasing Co. A/c
To Pref. Share in Purchasing Co. A/c
To Debentures in Purchasing Co. A/
To (Particular) Asset A/c
(जिस रूप में भुगतान किया गया हो)

उपर्युक्त प्रविष्टियॉ करने के पश्चात् विनते कम्पनी के सभी खाते बन्द हो जावेंगे तथा किसी भी खाते में शेष नहीं बचेगा।

वैकल्पिक विधि :–

क्रेता कम्पनी द्वारा विनते कम्पनी की न ली गई सम्पतियों एवं स्वीकार न किये गये दायित्वों के लिए निम्नांकित वैकल्पिक विधि भी अपनाई जा सकती है :

(अ) सभी सम्पतियों को वसूली खाते में (त्मंसपेंजपवद ।ध्ब) में पुस्तक मूल्य पर अन्तरित किया जावे जिसके लिए प्रविष्टि निम्न प्रकार होगी :

Realisation A/c Dr.
To (Particular) Assets A/c

(ब) सभी दायित्वों को पुस्तक मूल्य पर वसूली खाते में अन्तरित करने के लिए निम्न प्रविष्टि की जावे :

(Particular) Liability A/c Dr.
To Realisation A/c

(स) क्रेता कम्पनी द्वारा न ली गई सम्पतियों से विक्रेता कम्पनी को प्राप्त होने वाली राशि से निम्न प्रविष्ट की जावे :

Bank/Cash A/c Dr.
To Realisation A/c

(द) क्रेता कम्पनी द्वारा स्वीकार न किये गये दायित्वों का विक्रेता कम्पनी द्वारा भुगतान करने पर निम्न प्रविष्टि की जावे :

Realisation A/c Dr.
To Bank/Cash A/c Dr.

वैकल्पिक विधि अपनाने पर प्रविष्टि संख्या (7),(11),(13), तथा 15 नहीं की जावेगी। पूर्वाधिकार अंश पूँजी को बाहरी दायित्व नहीं माना जाता है इसलिए इसे वसूली खाते में अन्तरित नहीं किया जाता है।

उदाहरण (Illustration) 4 :

On 31st March 2010 the balance-sheet of Mohit Ltd. is as follows :

31 मार्च 2010 को मोहित लिमिटेड का चिट्टा निम्न प्रकार है :

Liabilities	Amount	Assets	Amount
	Rs.		Rs.
8% Preference Share Capital		Goodwill	2,50,000
of Rs. 100 each fully paid up	5,00,000	Land and Buildings	6,50,000
Equity Share Capital of		Plant and Machinery	4,00,000

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Rs. 100 each fully paid up	7,00,000	Patents	70,000
General Reserve	1,00,000	Stock	1,80,000
Export Profit Reserve		Sundry Debtors	2,20,000
(Statutory)	2,00,000	Cash and Bank	60,000
10% Debentures	2,00,000	Preliminary Expenses	50,000
Outstanding Debenture Interest	20,000		
Workmen's Compensation			
Reserve (Expected liability Rs. 8000)	12,000		
Trade Creditors	98,000		
Bills Payable	50,000		
	18,80,000		18,80,000

Ankit Ltd. was to take over all assets (except cash) and liabilities (except outstanding debenture interest) on 1st April, 2010 and to pay the following amounts :

(i) 12% Debentures of Rs. 100 each in Ankit Ltd. for debentures in Mohit Ltd. For the purpose, each debenture of Ankit Ltd. is to be valued at Rs. 105;

(ii) For each preference share in Mohit Ltd. Rs. 20 in cash and one 10% preference share Rs. 100 each in Ankit Ltd., issued at Rs.98;

(iii) For each equity share in Mohit Ltd. Rs. 22 in cash and one equity share in Ankit Ltd. of Rs. 100 each issued at Rs. 130;

(iv) Expenses of liquidation of Mohit Ltd. are to be re-imbursed by Ankit Ltd. to the extent of Rs. 13,000 Acutal expenses amounted to Rs. 15,000.

(v) Export Profit Reserve is to be maintained statutorily for two more years.

Ankit Ltd. valued land and building at Rs. 6,00,000, plant and machinery at Rs. 4,30,000 patents at Rs. 20,000. Pass necessary journal entries in the books of Mohit Ltd.

1 अप्रैल, 2010 को अंकित लिमिटेड ने रोकड़ के अलावा सभी सम्पतियॉ तथा ऋण–पत्रों पर बकाया ब्याज के अतिरिक्त सभी दायित्व ले लिये तथा निम्नांकित राशियों का भुगतान किया :

(i) मोहित लिमिटेड के प्रत्येक ऋण–पत्र धारी को अंकित लिमिटेड का एक 100 रूपये वाला 12: ऋण–पत्र उस उद्देश्य के लिए अंकित लि. के प्रत्येक ऋण–पत्र का मूल्य 105 रूपये माना जावे।

(ii) मोहित लिमिटेड के प्रत्येक पूर्वाधिकार अंश के बदले 20 रूपये नकद तथा 100 रूपये वाला अंकित लिमिटेड का एक 10: पूर्वाधिकार अंश जिसका निर्गमन मूल्य 98 रूपये हैं।

(iii) मोहित लिमिटेड के प्रत्येक समताअंश के बदले 22 रूपये नकद तथा 100 रू. वाला अंकित लिमिटेड का एक समता अंश जिसका निर्गमन मूल्य 130 रूपये हैं।

(iv) मोहित लिमिटेड के समापन व्ययों में से अंकित लिमिटेड द्वारा 13,000 रूपये तक का पुनर्भरण करना है। वास्तविक व्यय 15,000 रूपये थे।

(अ) निर्यात लाभ संचय दो और वर्षों के लिए वैधानिक रूप से रखना आवश्यक है।

अंकित लिमिटेड ने भूमि एवं भवन का 6,00,000 रूपये, प्लाण्ट तथा मशीन का 4,30,000 रूपये तथा एकस्व का 20,000 रूपये पर पुर्न–मूल्यांकन किया।

मोहित लिमिटेड की पुस्तकों में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियॉ दीजिए।

हल (Solution):

सबसे पहले क्रय प्रतिफल ज्ञात किया जाता है। क्रय प्रतिफल का निर्धारण निम्न प्रकार किया गया है :

नकद	= (5000 x 20)+(7000 x 22)	= 2,54,000
पूर्वाधिकार अंशों के रूप में	= (5000 x 98)	= 4,90,000

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

समता अंशों के रूप में = (7000 x 130) = 9,10,000

क्रय प्रतिफल 16,54,000

Journal of Mohit Ltd.

Date	Particulars		L.F.	Amount Debit	Amount Credit
2010				Rs.	Rs.
April 1	Realisation A/c	Dr.		17,70,000	
	To Goodwill A/c				2,50,000
	To Land and Buildings A/c				6,50,000
	To Plant and Machinery A/c				4,00,000
	To patents A/c				70,000
	To Stock A/c				1,80,000
	To Sundry Debtors A/c				2,20,000
	(Transfer of the assets which have been taken over by Ankit Ltd.)				
April 1	10% Debentures A/c	Dr.		2,00,000	
	Workmen's Compensation Reserve A/c	Dr.		8,000	
	Trade Creditors A/c	Dr.		98,000	
	Bills Payable A/c	Dr.		50,000	
	To Realisation A/c				3,56,000
	(Transfer of Liabilities which were to accepted by Ankit Ltd.)			16,54,000	
April 1	Ankit Ltd.	Dr.			16,54,000
	To Realisation A/c				
	(Purchases consideration receivable)				
				2,54,000	
April 1	Bank A/c	Dr.		4,90,000	
	10% Pref. Shares in Ankit Ltd. A/c	Dr.		9,10,000	
	Equity Shares in Ankit Ltd. A/c	Dr.			16,54,000
	To Ankit Ltd.				
	(Purchase consideration received)				
April 1	8% Pref. Share Capital A/c	Dr.		5,00,000	
	To Pref. Shareholders A/c				5,00,000
	(Amount of Pref. Share capital transferred)				
April 1	Equity Share Capital A/c	Dr.		7,00,000	
	To Equity Shareholders A/c				7,00,000
	(Amount of equity Share capital transferred)				
April 1	General reserve A/c	Dr.		1,00,000	
	Export Profit Reserve A/c	Dr.		2,00,000	
	Workmen's Compensation Reserve A/c	Dr.		4,000	
	To Equity Shareholders A/c				3,04,000
	(Balance of various reserves and surplus accounts transferred)				
April 1	Equity shareholders A/c	Dr.		50,000	
	To Preliminary Expenses A/c				50,000

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

	(Fictitious assets transferred)			
April 1	Ankit Ltd. Dr. Realisation A/c Dr. To Bank A/c (Liquidation expenses paid off)		13,000 2,000	 15,000
April 1	Bank A/c Dr. To Ankit Ltd. (Amount of liquidation expenses re-imbused by Ankit Ltd.)		13,000	 13,000
April 1	Outstanding Debenture Interest A/c Dr. To Bank A/c (Outstanding debenture interest paid)		20,000	 20,000
April 1	Realisation A/c Dr. To Preference Shareholders A/c (Excess amount payable to pref. Share holders @ Rs. 18 per share)		90,000	 90,000
April 1	Preference Shareholders A/c Dr. To Bank A/c To 10% Pref. Shares in Ankit Ltd. (Payment made to pref. shareholders)		5,90,000	 1,00,000 4,90,000
April 1	Realisation A/c Dr. To Equity Shareholders A/c (Balance of Realisation A/c transferred)		1,48,000	 1,48,000
April 1	Equity shareholders A/c Dr. To Bank A/c To Equity Shares in Ankit Ltd. (Balance of equity shareholders settled)		11,02,000	 1,92,000 9,10,000

टिप्पणी :

(1) श्रमिक क्षतिपूर्ति संचय में से 8,000 रूपये को दायित्व माना जावेगा है तथा शेष राशि 4,000 रूपये को संचय (त्मेमतअम) माना जावेगा। दायित्व की राशि को वसूली खाते में तथा संचय की राशि को समता अंशधारियों के खाते में अन्तरित किया गया है।

(2) विक्रेता कम्पनी के ऋणपत्रधारियों को क्रेता कम्पनी के माध्यम से नये ऋणपत्र देने है। चूँकि लेखा मानक 14 के अनुसार विक्रेता कम्पनी के ऋणपत्रधारियों को देय राशि क्रय प्रतिफल में सम्मिलित नहीं की जाती हैं, इसलिए विक्रेता कम्पनी नये ऋणपत्रों के सम्बन्ध में कोई प्रविष्टि नहीं करेगी। क्रेता कम्पनी अपनी पुस्तकों में यह मानकर प्रविष्टि करेगी की विक्रेता कम्पनी के ऋणपत्रों का भुगतान क्रेता कम्पनी के माध्यम से ही हुआ है न कि विक्रेता कम्पनी के माध्यम से।

(3) क्रेता कम्पनी द्वारा खरीदी गई सम्पतियों के पुनर्मूल्यांकन का विक्रेता कम्पनी की पुस्तकों में लेखा करते समय कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

(4) वसूली खाते का शेष समता अंशधारियों के खाते में अन्तरित करने के लिए राशि की गणना वसूली खाता (त्मंसपेंजपवद ।बबवनदज) बनाकर की जावेगी।

(5) समता अंशधारियों को चुकायी गई नकद राशि ' बैंक खाता ' बनाकर ज्ञात की गई है। सभी को भुगतान करने के पश्चात् शेष बची नकद राशि समता अंशधारियों में विपरीत कर दी जाती है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(6) वसूली खाता तथा बैंक खाता अगले उदाहरण में देखें।

उदाहरण (Illustration) 5 :

पूर्व उदाहरण 4 में दी गई सूचनाओं के आधार पर मोहित लिमिटेड की पुस्तकों में खाते तैयार कीजिए। Prepare ledger accounts in the books of Mohit Ltd. on the basis of information given in the previous Illustration 4

Solution :

Goodwill Account

2010 April 1	To Balance b/d	Rs, 2,50,000	2010 April 1	By Realisation A/c	Rs. 2,50,000

Land and Buildings Account

2010 April 1	To Balance b/d	Rs, 6,50,000	2010 April 1	By Realisation A/c	Rs. 6,50,000

Plant and Machinery Account

2010 April 1	To Balance b/d	Rs, 4,00,000	2010 April 1	By Realisation A/c	Rs. 4,00,000

Patents Account

2010 April 1	To Balance b/d	Rs, 70,000	2010 April 1	By Realisation A/c	Rs. 70,000

Stock Account

2010 April 1	To Balance b/d	Rs, 1,80,000	2010 April 1	By Realisation A/c	Rs. 1,80,000

Sundry Debtors Account

2010 April 1	To Balance b/d	Rs, 2,20,000	2010 April 1	By Realisation A/c	Rs. 2,2 0,000

Preliminary Expenses Account

2010 April 1	To Balance b/d	Rs, 50,000	2010 April 1	By Equity Shareholders A/c	Rs. 50,000

8% Preference Share Capital Account

2010 April 1	To Preference Share holders A/c	Rs, 5,00,000	2010 April 1	By Balance b/d	Rs. 5,00,000

Preference Shareholders Account

2010		Rs,	2010		Rs.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

April 1	To Bank A/c To 10% Pref. Share in Ankit Ltd.	1,00,000 4,90,000	April 1 April 1	By 8% Pref. share Capital A/c By Realisation A/c	 5,00,000 90,000
		5,90,000			5,90,000

Equity Share Capital Account

2010 April 1	To Equity Shareholders A/c	Rs, 7,00,000	2010 April 1	By Balance b/d	Rs. 7,00,000

General Reserve Account

2010 April 1	To Equity Shareholders A/c	Rs, 1,00,000	2010 April 1	By Balance b/d	Rs. 1,00,000

Export Profit Reserve Account

2010 April 1	To Equity Shareholders A/c	Rs, 2,00,000	2010 April 1	By Balance b/d	Rs. 2,00,000

10% Debentures Account

2010 April 1	To Realisation A/c	Rs, 2,00,000	2010 April 1	By Balance b/d	Rs. 2,00,000

Equity Shareholders Account

2010 April 1	To Preliminary Expenses A/c To Equity Shares in Ankit Ltd. To Bank A/c	Rs, 50,000 9,10,000 1,92,000	2010 April 1 April 1 April 1	By Equity Share Capital A/c By General Reserve A/c By Export Profit Reserve A/c By Workmen's Compensation Reserve A/c By Realisation A/c	Rs. 7,00,000 1,00,000 2,00,000 4,000 1,48,000
		11,52,000			11,52,000

Outstanding Debenture Interest Account

2010 April 1	To Bank A/c	Rs, 20,000	2010 April 1	By Balance b/d	Rs. 20,000

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Workmen's compensation Reserve Account

2010		Rs,	2010		Rs.
April 1	To Realisation A/c	8,000	April 1	By Balance b/d	12,000
April 1	To Equity Shareholders A/c	4,000			
		12,000			12,000

Trade Creditor Account

2010		Rs,	2010		Rs.
April 1	To Realisation A/c	98,000	April 1	By Balance b/d	98,000

Bills Payable Account

2010		Rs,	2010		Rs.
April 1	To Realisation A/c	50,000	April 1	By Balance b/d	50,000

Realisation Account

2010		Rs,	2010		Rs.
April 1	To Goodwill A/c	2,50,000	April 1	By 10% Debentures A/c	2,00,000
	To Land and Buildings A/c	6,50,000		By Workmen's Compensation A/c	8,000
	To Plant and Machinery A/c	4,00,000		By Trade Creditors A/c	98,000
	To Patents A/c	70,000		By Bills Payable A/c	50,000
	To Stock A/c	1,80,000		By Ankit Ltd. (Purchase Consideration)	16,54,000
	To Sundry Debtors A/c	2,20,000			
	To Bank A/c (Liquidation expenses)	2,000			
	To Pref. Shareholders A/c	90,000			
	To Equity Shareholders	1,48,000			
		20,10,000			20,10,000

Cash and Bank Account

2010		Rs,	2010		Rs.
April 1	To Balance b/d	60,000	April 1	By Ankit Ltd.	13,000
April 1	To Ankit Ltd.	2,54,000	April 1	By Realisation A/c	2,000
April 1	To Ankit Ltd.	13,000	April 1	By Outstanding Debenture Interest A/c	20,000
			April 1	By Pref. Shareholders A/c	1,00,000
				By Equity Shareholders A/c (Balancing Figure)	1,92,000
		3,27,000			3,27,000

क्रेता कम्पनी की पुस्तकों में एकीकरण के लिए लेखांकन
(Accounting For Amalgamation in the Books of Purchasing company)

भारतीय लेखा मानक 14 (AS 14) के अनुसार क्रेता कम्पनी की पुस्तकों में एकीकरण के लेखांकन के लिए निम्नांकित दो विधियॉ अपनायी जाती है :

(1) हितों की एकत्रीकरण विधि (Pooling of Interest Method); तथा
(2) क्रय विधि (Purchase Method)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

हितों की एकत्रीकरण विधि (Pooling of Interest Method)

विलय के स्वभाव वाले एकीकरण की दशा में लेखांकन हेतु हितों की एकत्रीकरण विधि अपनाई जाती है। इस विधि के अन्तर्गत लेखांकन हेतु निम्नांकित मुख्य बातें विचारणीय हैं :

(i) हस्तान्तरिती कम्पनी (Transferee Company) की पुस्तकों में सम्पतियों, दायित्वों तथा सभी संचयों (चाहे वे आयगत हो या पुंजीगत हो या पुर्नमूल्यांकन के कारण उत्पन्न हुए हों) को उसी मूल्य तथा उसी स्वरूप में दर्ज किया जायेगा जैसा कि एकीकरण की तिथि को हस्तान्तरक कम्पनी की पुस्तकों में था। हस्तान्तरिती कम्पनी के चिटठे में इन मदों को सम्बन्धित मद में जोड़कर दिखाया जावेगा। यथा, हस्तान्तरक कम्पनी की प्लाण्ट एवं मशीन के पुस्तक मूल्य को हस्तान्तरिती कम्पनी की प्लाण्ट एवं मशीन के मूल्य में जोड़कर दिखाया जायेगा। इसी प्रकार हस्तान्तरक कम्पनी के लाभ–हानि खाते के शेष को हस्तान्तरिती कम्पनी के लाभ–हानि खाते के शेष में जोड़कर दिखाया जावेगा।

(ii) यदि एकीकरण के समय हस्तान्तरक कम्पनी तथा हस्तान्तरिती कम्पनी की लेखांकन नीतियों में अन्तर है, तो एकीकरण के पश्चात् समान लेखांकन नीतियॉ अपनायी जानी चाहिए। **लेखांकन नीतियों में परिर्वतन का प्रभाव वित्तीय विवरणों (Financial Statements) में उचित रूप में प्रदर्शित किया जाना चाहिए।**

(iii) हस्तान्तरक कम्पनी की अंश पॅूजी तथा हस्तान्तरिती कम्पनी द्वारा हस्तान्तरक कम्पनी के अंशधारियों को निर्गमित अंशपॅूजी में यदि कोई अन्तर हो तो उसे संचयों में समायोजित किया जाना चाहिए।

क्रेता या हस्तान्तरिती कम्पनी की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियॉ
(Journal Entries in the Books of Purchaser or Transferee Company)

(1) व्यवसाय क्रय करने के सम्बन्ध में

(i) क्रय प्रतिफल की राशि से :

Business Purchase A/c	Dr.	(क्रय प्रतिफल की राशि से)
To Liquidator of Vender Company A/c		
(Amount of purchase consideration payable)		

(ii) विक्रेता कम्पनी से प्राप्त की गई सभी सम्पतियों के पुस्तक मूल्य से :

(Particular) Assets A/c	Dr.	(पुस्तक मूल्य से)
To Business Purchase A/c		
(Various Assets taken over at agreed value)		

(iii) क्रेता कम्पनी के सभी दायित्वों एवं आयोजनों तथा संचयों के पुस्तक मूल्य से :

Business Purchase A/c	Dr.	पुस्तक मूल्य से
To (Particular) Liability A/c		पुस्तक मूल्य से
To (Particular) Provision A/c		पुस्तक मूल्य से
To Capital Reserve A/c		पुस्तक मूल्य से
To (Particular) Reserve A/c		समायोंजित राशि से
(Various Liabilities and Reserve Taken over)		

उपर्युक्त तीन प्रविष्टियों की जगह निम्नांकित एक प्रविष्टि भी की जा सकती है :

(Particular) Asset A/c	Dr.	पुस्तक मूल्य से
To (Particular) Liability A/c		पुस्तक मूल्य से
To (Particular) Provision A/c		पुस्तक मूल्य से

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

To Capital Reserve A/c — पुस्तक मूल्य से
To Liquidator of Vendor Co. A/c — क्रय प्रतिफल की राशि से
To Particular Reserve A/c — समायोंजित राशि से
(Business Purchased)

इस विधि के अन्तर्गत क्रेता कम्पनी की पुस्तकों में क्रय की प्रविष्टि करते समय किसी भी प्रकार की ख्याति या पूँजी संचय उत्पन्न नहीं होता है। यदि हस्तान्तरक कम्पनी की चुकता अंश पूँजी (Paid-up Share Capital) तथा क्रय प्रतिफल की राशि में अन्तर हो तो उसे लाभ–हानि खाते के शेष या आयगत संचयों में समायोजित किया जाता है।

(2) क्रय प्रतिफल के भुगतान के सम्बन्ध में :

Liquidator of Vendor Co. A/c Dr. — (क्रय प्रतिफल की राशि से
To Equity Share Capital A/c — निर्गमित अंशों के अंकित मूल्य से
To Securities Premium A/c — (प्रीमियम की राशि से
To Bank A/c — केवल भिन्न अंशों (Fractional shares) के लिए

(Purchase Consideration paid-off)

(3) जब विक्रेता कम्पनी के समापन व्यय क्रेता कम्पनी द्वारा वहन किये जाने हो तब ऐसे व्ययों का समायोजन सामान्य संचय से किया जायेगा। इसके लिए निम्न जर्नल प्रविष्टि की जायेगी :

General Reserve A/c Dr.
To Bank A/c

उदाहरण (Illustration) 6 :

X Ltd. and Y Ltd. are engaged in the soap making activities. To get the benefits of large scale production economies, X Ltd. decides the amalgamation of Y Ltd. from the effective date 1st April,2010.

एक्स लि. और वाई लि. साबुन निर्माण क्रियाओं में संलग्न है। वृहत पैमाने के उत्पादन की मितव्ययिताओं को प्राप्त करने के उद्देश्य से एक्स लि. ने वाई लि. का 1 अप्रेल, 2010 से एकीकरण करने का निश्चय किया।

Balance Sheet
As on 31st March, 2010

Liabilities	X Ltd.	Y Ltd.	Assets	X Ltd.	Y Ltd,
	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.
Equity Share Capital	16,00,000	3,00,000	**Fixed Assets** :		
10% Preference Share Capital	12,00,000	20,000	Land & Buildings	18,00,000	1,00,000
Export Incentive Reserve	1,50,000	23,000	Plant & Machinery	15,00,000	1,50,000
General Reserve	4,00,000	86,000	**Current Assets** :		
Profit & Loss A/c	1,50,000	21,000	Debtors	4,00,000	1,00,000
12% Debentures	12,00,000	10,000	Stock	12,00,000	2,00,000
Current Liabilities	3,00,000	1,00,000	Cash at Bank	1,00,000	10,000
	50,00,000	5,60,000		50,00,000	5,60,000

X Ltd. discharges the consideration as below :

(i) Issued 33,000 equity share of Rs. 10 each at par to the equity shareholders of Y Ltd.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(ii) Issued 12% Preference Shares of Rs. 10 each at par to discharge the preference shareholders of Y Ltd. at 10% Premium.

(iii) The debentures of Y Ltd. will be converted into equivalent number of debentures of X Ltd.

Pass necessary journal entries at the time of amalgamation in the books of X Ltd. and also the balance-sheet of X Ltd. after amalgamation on the assumption that the amalgamation is in the nature of merger.

X Ltd. ने प्रतिफल का भुगतान निम्न प्रकार किया :

(i) Y Ltd. के समता अंशधारियों को 10 रूपये वाले 33,000 समता अंशों को सममूल्य पर निर्गमित किये।

(ii) Y Ltd. के पूर्वाधिकार अंशों को 10 प्रतिशत प्रीमियम पर चुकाने के लिए 12% पूर्वाधिकार अंश निर्गमित किये।

(iii) Y Ltd. के ऋणपत्रों को समान संख्या में X Ltd. के ऋणपत्रों में बदला जायेगा।

एकीकरण के समय X Ltd. की पुस्तकों में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियॉ दीजिए तथा X Ltd. का एकीकरण के पश्चात् का चिट्ठा भी यह मानकर बनाइए की एकीकरण विलय की प्रकृति का था।

हल (Solution) :

Journal of X Ltd. (Transferee Co.)

Date	Particulars	L. F.	Amount Debit	Amount Credit
2010			Rs.	Rs.
April 1	Business Purchases A/c Dr.		3,52,000	
	To Liquidator of Y Ltd. A/c			3,52,000
	(Business Purchased for purchase consideration of Rs. 3,52,000)			
April 1	Land and Buildings A/c Dr.		1,00,000	
	Plant and Machinery A/c Dr.		1,50,000	
	Debtors A/c Dr.		1,00,000	
	Stock A/c Dr.		2,00,000	
	Bank A/c Dr.		10,000	
	To Business Purchase A/c			5,60,000
	(Sundry assets of Y. Ltd. acquired)			
April 1	Business Purchase A/c Dr.		2,08,000	
	To 12% Debentures (in Y Ltd.) A/c			10,000
	To Export Incentive Reserve A/c			23,000
	To General Reserve A/c			54,000
	To Profit & Loss A/c			21,000
	To Current Liabilities A/c			1,00,000
	(Sundry Liabilities accepted)			
April 1	Liquidator of Y Ltd. Dr.		3,52,000	
	To Equity Share Capital A/c			3,30,000
	To 12% Preference Share Capital A/c			22,000
	(Purchase consideration paid off).			
April 1	12% Debentures (in Y Ltd.) A/c Dr.		10,000	
	To 12% Debentures A/c			10,000

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

	(Debentures converted).				

Balance Sheet of X Ltd.
As on 1st April, 2010

Liabilities	Amount	Assets	Amount
	Rs.	Fixed Assets	Rs.
Authorized Capital	----------	Land and Buildings	19,00,000
Issued, Subscribed and		Plant & Machinery	16,50,000
Paid Up Capital :		Current Assets	
1,93,000 Equity Shares of Rs. 10		Debtors	5,00,000
each fully paid up		Stock	14,00,000
(33,000 Equity Shares of Rs.10	19,30,000	Cash at Bank	1,10,000
each fully paid up issued for			
consideration other than cash)			
1,20,000 10% Pref. Shares of			
Rs.10 each	12,00,000		
2,200, 12% Pref. Shares of			
Rs. 10 each.	22,000		
Reserve and Surplus			
Export Incentive Reserve	1,73,000		
General Reserve	4,54,000		
Profit & Loss Account	1,71,000		
Secured Loans			
12% Debentures	12.10,000		
Current Liabilities.	4,00,000		
	55,60,000		55,60,000

टिप्पणी :

(1) **Computations of Purchase Consideration (क्रय प्रतिफल की गणना)** :

	Rs.
For Equity Shares of Y Ltd.	3,30,000
For Pref. Shares of Y Ltd. (20,000 X 110/100)	22,000
Purchase Consideration	3,52,000

(2) सामान्य संचय के शेष की गणना :

Share Capital of Y Ltd.	3,20,000
Purchase consideration	3,52,000
Adjustment in General Reserve = (3,52,000 – 3,20,000) =	32,000

Balance of General Reserve = (86,000 – 32,000) + 4,00,000
= Rs. 54,000 + 4,00,000
= Rs. 4,54,000

क्रय विधि (Purchase Method)

क्रय के स्वभाव वाले एकीकरण की दशा में लेखांकन हेतु क्रय विधि (**Purchase Method**) अपनायी जाती है। इस विधि के अन्तर्गत लेखांकन हेतु निम्नांकित मुख्य बातें विचारणीय हैं :

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(i) क्रय प्रतिफल का निर्धारण : सबसे पहले क्रय प्रतिफल की गणना की जाती है। क्रेता कम्पनी द्वारा विक्रेता कम्पनी के अंशधारियों को जो भुगतान किया जाता है, उसे क्रय प्रतिफल कहते हैं। क्रय प्रतिफल की गणना करने की विधि को इसी इकाई में पहले हव समझाया जा चुका है।

(ii) ख्याति या पूँजी संचय की गणना : हस्तान्तरिती कम्पनी द्वारा खरीदी गई शुद्ध सम्पतियों (Net Assest) के मूल्य तथा क्रय प्रतिफल के आधार पर ख्याति या पूँजी संचय की गणना निम्न प्रकार की जाती है :

(अ) शुद्ध सम्पतियों का क्रय प्रतिफल पर आधिक्य पूँजीगत संचय कहलाता है।

Capital Reserve = Net Assets – Purchase Consideration

(ब) क्रय प्रतिफल का शुद्ध सम्पतियों पर आधिक्य ख्याति कहलाता है।

Goodwill = Purchase Consideration – Net Assets

एकीकरण के कारण उत्पन्न 'ख्याति' को उसके लाभदायक जीवनकाल (न्मिनिस सपमि) में किसी न्यायोचित आधार पर आय में से अपलिखित किया जाना चाहिए। अपलिखित करने का उक्त समय पॉच वर्षो (थ्पअम ल्मंते) से अधिक नहीं होना चाहिए जब तक कि इससे अधिक समय न्यायोचित न हो।

(iii) सम्पतियों एवं दायित्वों का लेखांकन : हस्तान्तरिती/क्रेता कम्पनी द्वारा हस्तान्तरक कम्पनी की ली गई सम्पतियों एवं दायित्वों का तय मूल्यों (Agread values) पर लेखांकन निम्न प्रकार किया जाता है :

(अ) क्रय प्रतिफल की राशि से :

Business Purchase A/c Dr. क्रय प्रतिफल की राशि से
To Liquidator of Vendor Company
(Purchase consideration due)

(ब) ली गई सम्पतियों के तय मूल्यों (Agreed Values) से :

(Particular) Asset A/c Dr.
To Business Purchase A/c
(Assets taken over at agreed values)

(स) लिये गये दायित्वों के तय मूल्य से :

Business Purchase A/c Dr.
To (Particular) Liability A/c
(Liabilities taken over)

(द) ख्याति की राशि से :

Goodwill A/c Dr.
To Business Purchase A/c
(Goodwill raised on acquisition of business)

(OR)

Business Purchase A/c Dr.
To Capital Reserve A/c
(Capital Reserve raised on acquisition of business)

(iv) संचयों का लेखांकन : हस्तान्तरक कम्पनी के संचयों का हस्तान्तरिती कम्पनी की पुस्तकों में लेखांकन निम्न प्रकार किया जाता है :

(अ) वैधानिक संचय (Statutory Reserve) : ऐसे संचय जो किसी विधान के प्रावधानों के अन्तर्गत बनाये गये हों तथा उस विधान के अनुसार ऐसे संचय की राशि को अन्य किसी उपयोग में लेने पर प्रतिबन्ध हों, तो ऐसे संचय को वैधानिक संचय कहते हैं। यथा, आयकर

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

अधिनियम के अन्तर्गत विनियोग छूट संचय (Investment Allowance Reserve), निर्यात लाभ संचय (Export Profit Reserve) आदि वैधानिक संचय हैं। इन संचयों के लिए हस्तान्तरिती कम्पनी की पुस्तकों में निम्न जर्नल प्रविष्टि की जाती है

Amalgamation Adjustment A/c Dr.
To (Particular) Statutory Reserve A/c

एकीकरण समायोजन खाते के शेष को चिट्ठे के सम्पत्ति पक्ष में विविध व्यय (Miscellaneous Expenditure) शीर्षक के अन्तर्गत दिखाया जाता है तथा सम्बन्धित वैधानिक संचय को दायित्व पक्ष में 'संचय एवं आधिक्य' शीर्षक के अन्तर्गत दिखाया जाता है। ऐसे वैधानिक संचय को इस रूप में रखने की अवधि जिस समय समाप्त होती है उस समय उपर्युक्त जर्नल प्रविष्टि की विपरीत प्रविष्टि (त्मअमतेम म्दजतल) निम्न प्रकार की जाती है :

(Particular) Statutory Reserve A/c Dr.
To Amalgamation Adjustment A/c

(ब) अन्य संचय एवं कोष (other Reserve and Fund) :हस्तान्तरक कम्पनी के वैधानिक संचयों को छोड़कर अन्य संचयों (चाहे वे आयगत हो या पूँजीगत हो या पुर्नमूल्यांकन के कारण उत्पन्न संचय हो) के लिए हस्तान्तरिती कम्पनी को पुस्तकों में कोई लेखांकन नहीं किया जाता है।

(अ) विक्रेता कम्पनी के समापन व्ययों के सम्बन्ध में लेखाकंन :

यदि क्रेता कम्पनी ने विक्रेता कम्पनी के समापन व्ययों का दायित्व स्वीकार किया है तो ऐसे व्ययों के भुगतान करने या पुनर्भरण करने पर निम्न जर्नल प्रविष्टि की जाती है :

Capital Reserve A/c Dr. (क्रेता कम्पनी द्वारा समझौते के अनुसार)
Or
Goodwill A/c Dr. वहन की गई व्ययों की राशि
To Bank A/c

(vi) हस्तान्तरिती कम्पनी के निर्माण व्ययों (Formation Expenses) के सम्बन्ध में निम्न जर्नल प्रविष्टि की जाती है

Preliminary Expenses A/c Dr.
To Bank A/c

(vii) यदि प्रश्न में ख्याति (Goodwill) तथा पूँजीगत संचय (Capital Reserve) दोनों ही उत्पन्न हुए हो तो दोनो में से न्यूनतम राशि से निम्न जर्नल प्रविष्टि की जावेगी :

Capital Reserve A/c Dr.
To Goodwill A/c

> नोट – उक्त जर्नल प्रविष्टि के कारण पूँजी संचय या ख्याति, जिसकी भी राशि अधिक हो, उसे ही चिटठे में समायोजित राशि से दिखाया जाता है।

(viii) विक्रेता कम्पनी के दायित्वों का क्रेता कम्पनी द्वारा भुगतान करने पर निम्न जर्नल प्रविष्टि की जाती है :

(Particular) Liability A/c Dr.
To Bank A/c
To Debentures A/c (चुकायी गई राशि से)
To Share Capital A/c

एकीकरण के लेखांकन की दोनों विधियों का तुलनात्मक विवरण निम्न प्रकार है

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(**Comparision Between the two Accounting Methods for Amalamation**)

क्रमांक	हितों की एकत्रीकरण विधि (Poling of Interest Method)	क्रय विधि (Purchase Method)
1.	यह विधि 'विलय के स्वभाव वाले एकीकरण' की दशा में क्रेता कम्पनी की पुस्तकों में लेखांकन हेतु अपनाई जाती है।	यह विधि 'क्रय के स्वभाव वाले एकीकरण' की दशा में क्रेता कम्पनी की पुस्तकों में लेखांकन हेतु अपनाई जाती है।
2.	सभी सम्पतियों तथा दायित्वों का पुस्तक मूल्य पर लेखांकन किया जाता है।	स्मझौते के अन्तर्गत ली गई सम्पतियों एवं दायित्वों का तय मूल्य या उचित मूल्यों पर लेखांकन किया जाता है।
3.	सभी संचयों (चाहे वे आयगत हों या पूँजीगत हों अथवा पुर्नमूल्यांकन के कारण उत्पन्न हुए हों) को हस्तान्तरिती कम्पनी की पुस्तकों में पुस्तक मूल्य या समायोजित मूल्य पर दिखाया जाता है। अतः समामेलन समायोजन खाता नहीं खोला जाता है।	वैधानिक संचयों को छोड़कर अन्य संचयों के सम्बन्ध में हस्तान्तरिती कम्पनी की पुस्तकों में लेखांकन नहीं किया जाता है। वैधानिक संचयों की राशि के लेखांकन के लिए समामेलन समायोजन खाता (Amalgamation Adjustment Account) खोला जाता है।
4.	वित्तीय सूचनाओं का पूर्ण समामेलन होता है।	वित्तीय सूचनाओं का आंशिक समामेलन होता है।
5.	एकीकरण के कारण ख्याति या पूँजी संचय उत्पन्न नहीं होता है। क्रय प्रतिफल तथा हस्तान्तरक कम्पनी की अंशपूँजी के मध्य अन्तर को संचयों में समयोजित किया जाता है।	शुद्व सम्पतियों तथा क्रय प्रतिफल के मध्य के अन्तर को 'ख्याति' या 'पूँजीगत संचय' मानकर लेखांकन किया जाता है।

उदाहरण (Illustration) 7 :

पूर्व उदाहरण 4 में दी गई सूचनाओं के आधार पर अंकित लिमिटेड की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियां दीजिए तथा अंकित लिमिटेड का चिट्ठा भी तैयार कीजिए।

Pass necessary journal entries in the books of Ankit Ltd. on the basis of informations given in Illustration 4 and also show the balance sheet of Ankit Ltd.

हल (Solution)

कार्यशील टिप्पणी

प्रश्न को हल करने से पूर्व निम्नलिखित की गणना करना आवश्यक है

(1) क्रय प्रतिफल : उदाहरण संख्या 4 के अनुसार 16,54,000 रू. है

(2) ली गई शुद्व सम्पतियों (**Net Assets**) के मूल्य की गणना	Rs.	Rs.
Land and Buildings	6,00,000	
Plant and Machinery	4,30,000	
Patents	20,000	
Stock (Books Value)	1,80,000	
Sundry Debtors	2,20,000	
Value of Gross Assets सकल सम्पतियों का मूल्य	14,50,000	
Less : **Liabilities taken over :**		
10% Debentures ($2,00,000 \times \frac{105}{100}$)	2,10,000	
Claim for workmen's compensation	8,000	
Trade Creditors	98,000	

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Bills Payable	50,000	3,66,000
'शुद्ध सम्पतियां Net Assets		10,84,000

(3) Goodwill = Purchase Consideration - Net Assets
= Rs. (16,54,000 - 10,84,000) = **Rs. 5,70,000.**

Journal of Ankit Ltd.

2010			L.F.	Rs.	Rs.
April 1	Business Purchase A/c	Dr.		16,54,000	
	To Liquidator of Mohit Ltd.				16,54,000
	(Purchase consideration payable for business purchased)				
April 1	Land and Buildings A/c	Dr.		6,00,000	
	Plant and Machinery A/c	Dr.		4,30,000	
	Patents A/c	Dr.		20,000	
	Stock A/c	Dr.		1,80,000	
	Sundry Debtors A/c	Dr.		2,20,000	
	To Business Purchase A/c				14,50,000
	(Sundry Assets taken over at agreed values)				
	Business Purchase A/c	Dr.		3,66,000	
	To 10% Debentures in Mohit Ltd.				2,10,000
	To claim for Workmen's compensation A/c				8,000
	To Trade Creditors A/c				98,000
	To Bills Payable A/c				50,000
	(Business purchased)				
	Goodwill A/c	Dr.		5,70,000	
	To Business Purchases A/c				5,70,000
	(Goodwill arised on a equisition of business)				
	Amalgamation Adjustment A/c	Dr.		2,00,000	
	To Export Profit Reserve A/c				2,00,000
	(Statutory reserve to be kept into books)				
	Liquidator of Mohit Ltd.	Dr.		16,54,000	
	Discount on Issue of Shares A/c	Dr.		10,000	
	To 10% Preference Share Capital A/c				5,00,000
	To Equity Share Capital A/c				7,00,000
	To Securities Premium A/c				2,10,000
	To Bank A/c				2,54,000
	(Purchase Consideration Discharged)				
	10% Debentures in Mohit Ltd.	Dr.		2,10,000	
	To 12 % Debentures A/c				2,00,000
	To Premium on Issue of Debentures A/c				10,000
	(Debenture holders of Mohit Ltd. discharged)				
	Goodwill A/c	Dr.		13,000	
	To Bank A/c				13,000
	(Liquidation expenses of Mohit Ltd. reimbursed)				

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

	Securities Premium A/c Dr. To Discount on Issue of Shares A/c (Discount on issue of shares written-off)		10,000	10,000

Balance-Sheet of Ankit Ltd.

As on 1st April, 2010

Liabilities	Amount	Assets	Amount
	Rs.		Rs.
I. Share capital Authorized :	....	**I. Fixed Assets**	
Issued and Subscribed		Goodwill (5,70,000+13,000)	5,83,000
Preference Share Capital		Land and Buildings	6,00,000
5,000 Preference Shares of		Plant and Machinery	4,30,000
Rs. 100 each fully paid up		Patents	20,000
Equity Share Capital	5,00,000	**II. Investments**	NIL
7,000 Equity Shares of Rs. 100		**III. Current Assets, Loans and**	
each fully paid up	7,00,000	**Advances :**	
II. Reserve and Surplus		**(A) Current Assets**	
Export Profit Reserve	2,00,000	Stock	1,80,000
Securities Premium	2,00,000	Debtors	2,20,000
Premium on Issue of Debentures	10,000	**(B) Loans and Advances**	NIL
III. Secured Loans		**IV. Miscellaneous Expenditure**	
12% Debentures	2,00,000	Amalgamation Adjustment	2,00,000
IV. Unsecured Loans	NIL		
V. Current Liabilities and Provisions :			
(A) Current Liabilities			
Claim for Workmen's Compensation	8,000		
Trade Creditors	98,000		
Bills Payable	50,000		
Bank Overdraft	2,67,000		
(B) Provisions	NIL		
	22,33,000		22,33,000

टिप्पणी :

विक्रेता कम्पनी के ऋणपत्रधारियों क्रेता कम्पनी के माध्यम से नये ऋणपत्र देने हैं। चूँकि लेखा मानक 14 के अनुसार विक्रेता कम्पनी के ऋणपत्रधारियों को देय राशि क्रय प्रतिफल में सम्मिलित नहीं की जाती है, इसलिए विक्रेता कम्पनी नये ऋणपत्रों के सम्बन्ध में कोई प्रविष्टि नहीं करेगी। क्रेता कम्पनी अपनी पुस्तकों में यह मानकर प्रविष्टि करेगी की विक्रेता कम्पनी के ऋणपत्रों का भुगतान क्रेता कम्पनी के माध्यम से ही हुआ है न कि विक्रेता कम्पनी के माध्यम से।

उदाहरण (Illustration) 8 :

Ram Ltd. and Shyam Ltd. were amalgamated on 1st April, 2010. A new company Mohan Ltd. was formed to take over the business of the existing companies. The balance sheets of both the companies as on 31st March, 2010 are given below :

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

राम लिमिटेड एवं श्याम लिमिटेड 1 अप्रेल, 2010 को एकीकृत हो गई। एक नई कम्पनी मोहन लि. की विद्यमान कम्पनियों के व्यवसाय को लेने के लिए स्थापना की गई। 31 मार्च, 2010 को दोनों कम्पनियों के चिट्ठे निम्न प्रकार हैं :

Liabilities	Ram Ltd.	Shaym Ltd.	Assets	Ram Ltd.	Shyam Ltd.
	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.
Share Capital :			**Fixed Assets :**		
Equity Share of			Land & Buildings	5,20,000	3,00,000
Rs. 100 each	10,00,000	8,00,000	Plant & Machinery	2,90,000	2,40,000
13% Preference Share			**Investments**	1,10,000	60,000
of Rs. 100 each	4,00,000	2,00,000	**Current Assets,**		
Reserves & Surplus :			**Loans and Advances**		
Revaluation Reserve	1,00,000	1,30,000	Stock	3,30,000	2,80,000
General Reserve	2,00,000	-	Sundry Debtors	2,90,000	2,90,000
Export Profit Reserve	60,000		Bills Receivable	30,000	-
Profit & Loss A/c	40,000	1,70,000	Cash and Bank	4,10,000	2,30,000
Secured Loans :		-			
13% Debentures	60,000				
(Rs, 100 each)		50,000			
Unsecured Loans :					
Public Deposits	30,000	-			
Current Liabilities :					
Sundry Creditors	75,000	40,000			
Bills Payable	15,000	10,000			
	19,80,000	14,00,000		19,80,000	14,00,000

Other informations :

(i) Debenture holders of Ram Ltd. and Shyam Ltd. are discharged by Mohan Ltd. by issuing equal number of its 15% Debentures of Rs. 100 each.

(ii) Preference shareholders of two companies are issued equivalent number of 14% preference shares of Mohan Ltd. at a price of Rs. 100 per share (face value Rs. 100).

(iii) Mohan Ltd. will issue 4 equity shares for each equity share of Ram Ltd. and 3 equity shares for each equity share of Shyam Ltd. The shares are to be issued @ Rs. 26 each having a face value of Rs. 10 per share.

(iv) Export Profit Reserve is to be maintained for two more years.

Pass journal entries in the books of Mohan Ltd. and also Show the Balance Sheet of Mohan Ltd. after amalgamation assuming :

(a) amalgamation is in the nature of merger ; and

(b) amalgamation is in the nature of purchase and Mohan Ltd. revalued land and buildings of Ram Ltd. at Rs. 5,00,000 and plant and machinery of Shyam Ltd. at Rs. 2,60,000.

अन्य सूचनाएँ :

(i) राम लि. एवं श्याम लि. के ऋणपत्रधारियों को मोहन लि. में बराबर संख्या में 15% ऋणपत्र 100 रू. वाले निर्गमित किये गये हैं।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(ii) दोनों कम्पनियों के पूर्वाधिकार अंशधारियों को मोहन लि. के बराबर संख्या में 14% पूर्वाधिकार अंश 100 रू. प्रति अंश मूल्य पर (अंकित मूल्य 100 रू.) निर्गमित किये गये हैं।

(iii) मोहन लि. राम लि. के 1 ईक्विटी अंश के लिए 4 ईक्विटी अंश एवं श्याम लि. के 1 ईक्विटी अंश के लिए 3, ईक्विटी अंश निर्गमित करेगी। 10 रू. अंकित मूल्य के अंश 26 रू. प्रति अंश की दर से निर्गमित करने हैं।

(iv) निर्यात लाभ संचय को आगे दो वर्षों तक बनाये रखना है।

मोहन लिमिटेड की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियॉ दीजिए तथा एकीकरण के पश्चात् का चिटठा यह मानकर बनाइए कि :

(v) एकीकरण विलय के स्वभाव का हैय तथा

(vi) एकीकरण क्रय के स्वभाव का है तथा मोहन लिमिटेड ने राम लि. के भवन का पूर्न–मूल्यांकन 5,00,000 रूपये पर तथा श्याम लि. की प्लाण्ट एवं मशीन का 2,60,00 रू. पर किया।

Solution :

(अ) जब एकीकरण विलय के स्वभाव का हो :

(a) When the amalgamation is in the nature of Merger :

Journal of Mohan Ltd.

Date	Particulars	L. F.	Debit Rs.	Credit Rs.
2010 April 1	Business Purchase A/c Dr.		22,64,000	
	To Liquidator of Ram Ltd.			14,40,000
	To Liquidator of Shyam Ltd.			8,24,000
	(Purchase consideration payable for purchase of business)			
April 1	Land and Building A/c Dr.		8,20,000	
	Plant and Machinery A/c Dr.		5,30,000	
	Investments A/c Dr.		1,70,000	
	Stock A/c Dr.		6,10,000	
	Sundry Debtors A/c Dr.		5,80,000	
	Bills Receivable A/c Dr.		30,000	
	Bank A/c Dr.		6,40,000	
	To Business Purchase A/c			33,80,000
	(Sundry assets of Ram Ltd. and Shyam Ltd. acquired at book value)			
April 1	Business Purchase A/c Dr.		11,16,000	
	To 13% Debentures in Ram Ltd.			60,000
	To 13% Debentures in Shyam Ltd.			50,000
	To Public Deposits A/c			30,000
	To Sundry Creditors A/c			1,15,000
	To Bills Payable A/c			25,000
	To Revaluation Reserve A/c			2,30,000
	To General Reserve A/c			3,36,000
	To Export Profit Rserve A/c			2,30,000
	To Profit and Loss A/c			40,000
	(Sundry liabilities and reserves of Ram Ltd. and Shyam			

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

	Ltd. taken into books)			
April 1	Liquidator of Ram Ltd. Dr.		14,40,000	
	To 14% Pref. Share Capital A/c			4,00,000
	To Equity Share Capital A/c			4,00,000
	To Securities Premium A/c			6,40,000
	(Purchase consideration of Ram Ltd. discharged)			
April 1	Liquidator of Shyam Ltd. Dr.		8,24,000	
	To 14% Pref. Share Capital A/c			2,00,000
	To Equity Share Capital A/c			2,40,000
	To Securities Premium A/c			3,84,000
	(Purchase consideration of Shyam Ltd. discharged)			
	13% Debentures in Ram Ltd. A/c Dr.		60,000	
	13% Debentures in Shyam Ltd. A/c Dr.		50,000	
	To 15% Debentures A/c			1,10,000
	(Debentureholders of Ram Ltd. and Shyam Ltd. discharged)			

Balance Sheet of Mohan Ltd.
As on April 1, 2010

Liabilities	Amount	Assets	Amount
	Rs.		Rs.
Share Capital :		**Fixed Assets :**	
64,000 Equity Shares of		Land and Building	8,20,000
Rs. 10 each fully paid up	6,40,000	Plant and Machinery	5,30,000
6000, 14% Preference Shares of		**Investments**	1,70,000
Rs. 100 each Fully paid up	6,00,000	**Current Assets, Loans and**	
Reserve and Surplus		**Advances :**	
Revaluation Reserve	2,30,000	Stock	6,10,000
General Reserve	2,30,000	Sundry Debtors	5,80,000
Export Profit Reserve	40,000	Bills Receivables	30,000
Profit & Loss A/c	10,24,000	Cash and Bank	6,40,000
Securities Premium			
Secured Loans :			
15% Debentures of Rs. 100 each	1,10,000		
Unsecurre Loans :			
Public deposits	30,000		
Current Liabilities :			
Sundry creditors	1,15,000		
Bills Payable	25,000		
	33,80,000		33,80,000

(ब) जब एकीकरण क्रय की प्रकृति का हो :

(b) When the Amalgamation is in the nature of Purchase :

Journal of Mohan Ltd.

Date	Particulars	L.	Debit	Credit

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

		F.	Rs.	Rs.
2010 April 1	Business Purchase A/c Dr. To Liquidator of Ram Ltd. To Liquidator of Shyam Ltd. (Purchase consideration payable for purchase of business)		22,64,000	 14,40,000 8,24,000
April 1	Land and Buildings A/c Dr. Plant and Machinery A/c Dr. Investment A/c Dr. Stock A/c Dr. Sundry Debtors A/c Dr. Bills Receivable A/c Dr. Cash and Bank A/c Dr. To Business Purchase A/c (Sundry assets of Ram Ltd. taken over at agreed values)		5,00,000 2,90,000 1,10,000 3,30,000 2,90,000 30,000 4,10,000	 19,60,000
April 1	Land and Buildings A/c Dr. Plant and Machinery A/c Dr. Investment A/c Dr. Stock A/c Dr. Sundry Debtors A/c Dr. Cash and Bank A/c Dr. To Business Purchase A/c (Sundry assets of Ram Ltd. taken over at agreed values)		3,00,000 2,60,000 60,000 2,80,000 2,90,000 2,30,000	 14,20,000
April 1	Business Purchase A/c Dr. To 13% Debentures in Ram Ltd. To Public Deposits A/c To Sundry creditors A/c To Bills Payable A/c To Capital Reserve A/c (Bal. Figure) (Sundry liabilities of Ram Ltd. taken over and the excess of net assets over purchase consideration transferred to Capital Reserve A/c)		5,20,000	 60,000 30,000 75,000 15,000 3,40,000
April 1	Business Purchase A/c Dr. To 13% Debentures in Shyam Ltd. To Public Deposits A/c To Sundry creditors A/c To Bills Payable A/c To Capital Reserve A/c (Bal. Figure) (Sundry liabilities of Ram Ltd. taken over and the excess of net assets over purchase consideration transferred to Capital Reserve A/c)		5,96,000	 50,000 40,000 10,000 4,96,000
April	Amalgamation Adjustment A/c Dr. To Export Profit Reserve A/c (Statutory reserve of Ram Ltd. taken into books)		60,000	 60,000
	Amalgamation Adjustment A/c Dr. To Export Profit Reserve A/c (Statutory reserve of Ram Ltd. taken into books)		1,70,000	 1,70,000

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

	Liquidator of Ram Ltd. Dr.		14,40,000	
	To 14% Pref. Share Capital A.c			4,00,000
	To Equity Share Capital A/c			4,00,000
	To Securities Premium A/c			6,40,000
	(Purchase Consideration of Ram Ltd. discharged)			
	Liquidator of Ram Ltd. Dr.		8,24,000	
	To 14% Pref. Share Capital A.c			2,00,000
	To Equity Share Capital A/c			2,40,000
	To Securities Premium A/c			3,84,000
	(Purchase Consideration of Shyam Ltd. discharged			
	13% Debentures in Ram Ltd A/c Dr.		60,000	
	13% Debentures in Shyam Ltd A/c Dr.		50,000	
	To 15% Debentures A/c			1,10,000
	(Debentures of Ram Ltd and Shyam Ltd. discharged)			

Balance Sheet of Mohan Ltd.
As on April 1 2010

Liabilities	Amount	Assets	Amount
	Rs.		Rs.
Share Capital :		**Fixed Assets :**	
64,000 Equity Shares of		Land and Building	8,00,000
Rs. 10 each Fully paid up	6,40,000	Plant and Machinery	5,50,000
6000, 14% Preference Shares of		**Investments**	1,70,000
Rs. 100 each Fully paid up	6,00,000	**Current Assets, Loans and**	
Reserve and Surplus		**Advances :**	
Export Profit Reserve (Statutory)	2,30,000	Stock	6,10,000
Securities Premium	10,24,000	Debtors	5,80,000
Capital Reserve	8,36,000	Bills Receivable	30,000
Secured Loans :		Cash and Bank	6,40,000
15% Debentures of Rs. 100 each	1,10,000	**Misc, Expenditure :**	
Unsecured Loans :		Amalgamation Adjustment	2,30,000
Public Deposits	30,000		
Current Liabilities			
Sundry Creditors	1,15,000		
Bills Payable	25,000		
	36,10,000		36,10,000

टिप्पणी

(1) **Computation of Purchase Consideration** क्रय प्रतिफल का निर्धारण

	Ram Ltd.	Shyam Ltd.
	Rs.	Rs.
For Preference Shareholders : iwokZf/kdkj va'k/kkfj;ksa ds fy, %	4,00,000	2,00,000
Ram Ltd : 4,000 Pref. Shares @ Rs. 100		

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Shyam Ltd. 2.000 Pref. Shares @ Rs. 100 For Equity Shareholders : lerk va'k/kkfj;ksa ds fy, Ram Ltd : 10,000 X 4 = 40,000 Equity Shares @ Rs. 26 each Shyam Ltd : 8,000 X 3 = 24,000 Equity Shares @ Rs. 26 each	10,40,000	6,24,000
	14,40,000	8,24,000

(2) लेखा मानक 14 के अनुसार हस्तान्तरक कम्पनी के अंशधारियों को हस्तान्तरिती कम्पनी द्वारा देय राशि को ही क्रय प्रतिफल कहते हैं। अतः ऋण पत्रधारियों को देय राशि क्रय प्रतिफल में सम्मिलित नहीं की जाती है।

(3) शुद्व भुगतान विधि से क्रय प्रतिफल ज्ञात करते समय विलय के स्वभाव वाले एकीकरण तथा क्रय के स्वभाव वाले एकीकरण दोनों ही में क्रय प्रतिफल की राशि समान होती है।

(4) क्रय के स्वभाव वाले एकीकरण की दशा में ख्याति या पूँजीगत संचय की गणना निम्न प्रकार की गई है

	राम लिमिटेड	श्याम लिमिटेड
	Rs.	Rs.
(v) क्रय प्रतिफल	14,40,000	8,24,000
(ब) शुद्व सम्पतियों का निर्धारित मूल्य :		
(प) ली गई कुल सम्पतियों का निर्धारित मूल्य	19,60,000	14,20,000
Less : (ii) fyये गये दायित्वों का निर्धारित मूल्य	1,80,000	1,00,000
शुद्व सम्पतियों	17,80,000	13,20,000
(स) पूँजीगत संचय	3,40,000	4,96,000

अतः कुल पूँजीगत संचय = (3,40,000 + 4,96,000) = 8,36,000 रूपये।

5. विलय के स्वभाव वाले एकीकरण में क्रय प्रतिफल तथा हस्तान्तरक कम्पनियों की अंशपूँजी का अन्तर सामान्य संचय से समायोजित किया जाता है।

	Rs.
हस्तान्तरक कम्पनियों की अंश पूँजी	24,00,000
Less : क्रय प्रतिफल	22,64,000
सामान्य संचय में वृद्वि	1,36,000
हस्तान्तरक कम्पनियों के सामान्य संचय का शेष	2,00,000
चिट्ठे में दिखाने हेतु हस्तान्तरिती कम्पनी के सामान्य संचय	3,36,000

(6) प्रतिभूति प्रीमियम (Securities Premium) की राशि की गणना :

कुल निर्गमित समता अंश = 40,000 + 24,000
= 64,000
प्रति अंश प्रीमियम = 16 रूपये
अतः प्रतिभूति प्रीमियम की कुल राशि = 64,000 X 16 रूपये
= 10,24,000 रूपये।

अन्त कम्पनी व्यवहार
(Inter Company Transactions)

दो कम्पनियों के मध्य होने वाले व्यवहार को अन्तः कम्पनी व्यवहार कहते हैं। एकीकरण की स्थिति में इस मद का तात्पर्य हस्तान्तरक कम्पनी (विक्रेता कम्पनी) तथा हस्तान्तरिती कम्पनी (क्रेता कम्पनी) के मध्य हुए

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

आपसी व्यवहारों से है। अन्तः कम्पनी व्यवहार कई प्रकार के हो सकते हैं। लेखांकन के उद्देश्य से इन्हें निम्नांकित तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है :

(अ) परस्पर ऋण (डनजनंस क्मइजे)
(ब) स्टॉक पर न वसूल हुआ लाभ (Unrealised Profit on Stock)
(स) अन्तः कम्पनी विनियोग (Inter Company Holdings)

परस्पर ऋण (Mutual Debts) के लिए समायोजन :

एकीकरण की स्थिति में परस्पर ऋण माल के क्रय–विक्रय के सम्बन्ध में अथवा ऋण एवं अग्रिम (Loans and advances) के कारण हो सकते हैं। ऐसे ऋण लेनदार (Creditors), देनदार (Debtor), देय विपत्र (Bills Payable), प्राप्त विपत्र (Bills Receivable) अथवा अन्य ऋणों (Other Loans) के रूप में हो सकते हैं।

विक्रेता कम्पनी की पुस्तकों में परस्पर ऋण के लिए लेखा
(Accounting in the Books of Vendor Company) :

विक्रेता कम्पनी की पुस्तकों में ऐसे पारस्परिक ऋणों के लेखांकन का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। विक्रेता कम्पनी की पुस्तकें बन्द करते समय ऐसी मदों के शेष को वसूली खाते में अन्य सम्पतियों एवं दायित्वों की भॉति ही अन्तरित किया जाता है।

क्रेता कम्पनी की पुस्तकों में परस्पर ऋण के लिए लेखा
(Accounting in the Books of Purchsing Company) :

क्रेता कम्पनी की पुस्तकों में व्यापार क्रय करने की जर्नल प्रविष्टियॉ सम्पतियों एवं दायित्वों को निर्धारित मूल्य पर डेबिट व क्रेडिट करते हुए सामान्य नियमों के अनुसार की जावेगी। इसके बाद पारस्परिक मदों के सम्बन्ध में विभिन्न परिस्थितियों के अनुसार लेखा प्रविष्टियॉ निम्न प्रकार की जावेंगी :

(1) यदि क्रेता कम्पनी देनदार (Debtor) के रूप में तथा विनते कम्पनी लेनदार (Creditor) के रूप में है :

Creditors (in Purchasing Co.) A/c Dr.
    To Debtors (in Vendor Co.) A/c

(2) यदि क्रेता कम्पनी लेनदार (Creditor) के रूप में तथा विक्रेता कम्पनी देनदार (Debtors) के रूप में है :

Creditors (in Vendor Co.) A/c Dr.
    To Debtors (in Purchasing Co.) A/c

(3) यदि क्रेता कम्पनी की पुस्तकों में देय बिल (Bills Payable) तथा विक्रेता कम्पनी की पुस्तकों में प्राप्य बिल (Bills Receivable) हैं :

Bills Payable (in Purchasing Co.) A/c Dr.
    To Bills Receivable (in Vendor Co.) A/c

(4) यदि क्रेता कम्पनी की पुस्तकों में प्राप्य विपत्र (Bills Receivable) तथा विक्रेता कम्पनी की पुस्तकों में देय विपत्र (Bills Payable) हैं :

Bills Payable (in Vendor Co.) A/c Dr.
    To Bills Receivable (in Purchasing Co.) A/c

(5) क्रेता एवं विक्रेता कम्पनियों की पुस्तकों में पारस्परिक अन्य ऋण एक कम्पनी की पुस्तकों में सम्पति के रूप में तथा दूसरी कम्पनी की पुस्तकों में उतनी ही राशि दायित्व के रूप में प्रकट होगी। ऐसे पारस्परिक ऋण की राशि से क्रेता कम्पनी की पुस्तकों में सम्पति एवं दायित्व दोनों पक्षों को कम कर दिया जायेगा। यदि क्रेता कम्पनी ने ऋण ले रखा है तो निम्न प्रविष्टि की जायेगी :

Loan from Vendor Co. A/c Dr.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

To Loan to Purchasing Co. A/c

यदि ऋण विक्रेता कम्पनी ने ले रखा है तो निम्न प्रविष्टि की जायेगी :

Loan from Purchasing Co. A/c Dr.

To Loan to Vendor Co. A/c

नोटः उपर्युक्त सभी प्रविष्टियों के प्रभाव से क्रेता कम्पनी के दायित्व तथा सम्पतियां परस्पर ऋण की राशि से कम हो जाती है। सारांश रूप में परस्पर ऋण के सम्बन्ध में केवल एक प्रविष्टि हो सकती है :

Creditors/Bills Payable/Loan A/c Dr.

To Debtors/Bills Receivable/Advances A/c

mnkgj.k (Illustration) 9 :

पी लिमिटेड तथा बी लिमिटेड के 31 मार्च, 2010 को चिट्ठे निम्न प्रकार थे :

The following were the Balance Sheets of P. Ltd. and V Ltd. as on 31st March, 2010 :

Liabilities	P Ltd. (Rs. in lakhs)	V Ltd. (Rs. in lakhs)	Assets	P Ltd. (Rs. in lakhs)	V Ltd. (Rs. in lakhs)
Equity Share Capial (Fully paid shares of Rs. 10 each)	15,000	6,000	Land and Buildings	6,000	-
			Plant and Machinery	14,000	5,000
Securities Premium	3,000	-	Furniture, Fixtures and Fittings	2,304	1,700
Foreign Projects Reserve	-	310	Stock	7,862	4,041
General Reserve	9,500	3,200	Debtors	2,120	1,020
Profit and Loss Account	2,870	825	Cash at Bank	1,114	609
12% Debentures	-	1,000	Bills Receivable	-	80
Bills Payable	120	-	Cost of Issue of Debentures	-	50
Sundry Creditors	1,080	463			
Sundry Provisions	1,830	702			
	33,400	12,500		33,400	12,500

All the bills receivable held by V Ltd. were P. Ltd's acceptances.

On 1st April, 2010 P Ltd. took over the business as amalgamation in the nature of merger.

It was agreed that in discharge of consideration for the business. P Ltd. would allot three fully paid equity shares of Rs. 10 each at par for every two shares held in V Ltd. It was also agreed that 12% debentures in V Ltd. would be converted into 13% debentures in P Ltd. of the same amount and denomination.

Expenses of amalgamation amounting to Rs. 1 lakh were borne by P Ltd.

You are required to :

(i) Pass journal entries in the books of P Ltd., and

(ii) Prepare Balance Sheet of P Ltd. immediately after the merger.

'बी' लिमिटेड के समस्त प्राप्य विपत्र पी. लिमिटेड की स्वीकृतियॉ थी। 1 अप्रैल, 2003 को पी. लिमिटेड ने विलय की प्रकृति वाले एकीकरण के रूप में व्यवसाय को लिया।यह समझौता हुआ कि व्यवसाय के प्रतिफल के भुगतान हेतु वि. लिमिटेड के प्रत्येक दो अंशों के धारक को पी लिमिटेड 10 रूपये वाले 3 पूर्ण प्रदत समता अंश सम मूल्य पर निर्गमित करेगी। यह भी तय हुआ कि वि. लिमिटेड के 12ः ऋणपत्रों को पी. लिमिटेड के 13ः ऋणपत्रों में उसी मूल्य पर बदला जायेगा।

समापन के व्यय एक लाख रूपये पी. लिमिटेड ,द्वारा वहन किये जायेगे।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

आपको करना है : (i) पी. लिमिटेड की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियॉ; तथा (पप) विलय के तुरन्त पश्चात् पी. लिमिटेड का चिट्ठा।

हल (Solution) :

क्रय प्रतिफल की गणना :

बी लिमिटेड के प्रत्येक दो अंशों के धारक को पी. लिमिटेड के 3 ईक्विटी अंश देने हैं

अतः क्रय प्रतिफल के बदले निर्गमित अंशों की संख्या = 600 X 3/2 लाख

= 900 लाख अंश

अंशों का निर्गमन मूल्य = (900 X 10) लाख रूपये

= 9,000 लाख रूपये

अतः क्रय प्रतिफल 9,000 लाख रूपये है।

Journal of P Ltd.

Date	Particulars		L. F.	Amount Debit	Amount Credit
				(Rs. in lakhs)	(Rs. in lakhs)
2010	Business Purchase A/c	Dr.		9,000	
April	To Liquidator of V Ltd.				9,000
1	(Purchase Consideration Payable for the business of V Ltd.)				
	Plant and Machinery A/c	Dr.		5,000	
	Furniture, Fixtures and Fitting A/c	Dr.		1,700	
	Stock A/c	Dr.		4,041	
	Debtors A/c	Dr.		1,020	
	Bank A/c	Dr		609	
	Bills Receivable A/c	Dr.		80	
	Cost of Issue of Debentures A/c	Dr.		50	
	To Business Purchase A/c				12,500
	(Various assets taken over at book value)				
April	Business Purchase A/c	Dr.		3,500	
1	To 12% Debentures in V Ltd. A/c				1,000
	To Sundry Creditors A/c				463
April	To Sundry Provision A/c				702
1	To Foreign Project Reserve				310
	To Profit and Loss A/c				825
April	To General Reserve A/c				200
1	(Various liabilities, provision and reserves taken over)				
	Liquidator of V Ltd.	Dr.		9,000	
	To Equity Share Capital A/c				9,000
	(Purchase consideration discharged)				
	12% Debentures in V Ltd. A/c	Dr.		1,000	
	To 13% Debentures A/c				1,000
	(Debentures issued to debentureholders of V Ltd.)				
	Goodwill A/c	Dr.		1	
	To Bank A/c				1
	(Liquidation expenses of V Ltd. Paid)				

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

	Bills Payable A/c Dr. To Bills Receivable A/c (Mutual acceptance cancelled)			80	 80

Balance Sheet of Mohan Ltd.
As on April, 2010

Liabilities	Amount (Rs.in lakhs)	Assets	Amount (Rs.in lakhs)
Equity Share Capital (Fully Paid Share of Rs. 10 each)	24,000	Land and Buildings	6,000
Securities Premium	3,000	Goodwill	1
Foreign Project Reserve	310	Plant and Machinery	19,000
General Reserve	9,700	Furniture, Fixtures and Fittings	4,004
Profit and Loss A/c	3,695	Stock	11,903
13% Debentures	1,000	Debtors	3,140
Bills Payable	40	Cash and Bank	1,722
Sundry Creditors	1,543	Cost of Issue of Debentures	50
Sundry Provisions	2,532		
	45,820		45,820

टिप्पणी :

(1) सामान्य संचय (General Reserve) का शेष निम्न प्रकार ज्ञात किया जाता हैः (लाख रूपये)

क्रय प्रतिफल	9,000
विक्रेता कम्पनी की चुकता अंशपूॅजी	6,000
सामान्य संचयों में समायोजन	3,000

सामान्य संचय का शेष = (9,500 + 3,200-3000) = 9,700 लाख रूपये।

(2) बैंक खाते का शेष = (1,114 + 609-1) = 1722 लाख रूपये।

स्टॉक पर न वसूल हुए लाभ का लेखांकन
(Accounting for Unrealized Profit on Stock)

व्यवसाय की क्रेता कम्पनी तथा विक्रेता कम्पनी एक ही प्रकार का व्यापार करती हों तो स्वाभाविक है कि दोनों कम्पनियों के मध्य एकीकरण से पूर्व भी माल का क्रय–विक्रय होता रहा है। एकीकरण की तिथि तक दोनों कम्पनियों के मध्य पारस्परिक क्रय के अन्तर्गत जो माल खरीदा गया था उसके सम्बन्ध में निम्नांकित दो स्थितियॉ हो सकती हैं :

(i) या तो एकीकरण की तिथि को उक्त माल में से कुछ माल न बिका रह गया हो अर्थात् माल की क्रेता कम्पनी के पास वह माल स्टॉक में हो या (ii) उक्त सम्पूर्ण माल को एकीकरण से पूर्व ही बेच दिया गया हो तथा ऐसे माल का स्टॉक न हो। यदि माल की क्रेता कम्पनी द्वारा ऐसा सम्पूर्ण माल एकीकरण की तिथि से पूर्व ही बेचा दिया गया हो तो एकीकरण के लेखांकन के समय किसी भी प्रकार के समायोजन की आवश्यकता नहीं होगी। परन्तु एकीकरण की तिथि को व्यवसाय की हस्तान्तरक कम्पनी या हस्तान्तरिती कम्पनी के पास एकीकरण से पूर्व के पारस्परिक क्रय (Mutual purchase) में से माल का न बिका हुआ शेष या स्टॉक हो तो ऐसे स्टॉक पर माल की विक्रेता कम्पनी ने एकीकरण से पूर्व जो लाभ कमाया था, उसे न वसूल हुआ लाभ ' (Unrealised Profit) कहते हैं। ऐसे न वसूल हुए लाभ के सम्बन्ध में हस्तान्तरिती कम्पनी (Transferce Company) की पुस्तकों में आवश्यक समायोजन किये जाते हैं। हस्तान्तरक कम्पनी की पुस्तकों में न वसूल हुए लाभ के सम्बन्ध में कोई समायोजन नहीं किया जाता है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

न बिके हुए ऐसे माल/स्टॉक के सम्बन्ध में निम्नांकित दो परिस्थितियाँ हो सकती हैं :

(1) जब व्यवसाय की हस्तान्तरक कम्पनी (Transferor Company)। विक्रेता कम्पनी (Vendor Company) के पास हस्तान्तरिती/क्रेता (Transferor/Purchasing) कम्पनी से खरीदा हुआ माल स्टॉक में हों, अथवा
(2) जब व्यवसाय की क्रेता कम्पनी के पास व्यवसाय की विक्रेता कम्पनी से खरीदा हुआ माल स्टॉक में हो।

(1) जब व्यवसाय की विक्रेता कम्पनी के पास व्यवसाय की क्रेता कम्पनी से खरीदा हुआ माल स्टॉक में हो।

यदि हस्तान्तरक कम्पनी (विक्रेता कम्पनी) ने हस्तान्तरिती कम्पनी (क्रेता कम्पनी) से माल खरीदा था और उसमें से माल एकीकरण की तिथि को बिना बिका हुआ रह जाता है तो विक्रेता कम्पनी के चिट्ठे में यह स्टॉक क्रय मूल्य पर दिखाया जायेगा जो कि उसके लिए लागत मूल्य है। ऐसे माल की लागत में हस्तान्तरिती कम्पनी द्वारा कमाया हुआ लाभ भी सम्मिलित होता है।

यह माल हस्तान्तरिती कम्पनी के पास उसी मूल्य पर वापस आयेगा जिस मूल्य पर उसने बेचा था। अतः इस माल में न वसूल हुआ लाभ सम्मिलित होगा जिसे रद्द करना होगा। उदाहरणार्थ, एम कम्पनी ने आर कम्पनी को 20,000 रू. की लागत का माल 25,000 रू. में बेचा। कुछ समय पश्चात् एम कम्पनी ने आर कम्पनी को खरीद लिया तथा आर कम्पनी के स्टॉक में इस माल में से 5,000 रू. का माल एम कम्पनी के पास वापस आ गया। इस 5,000 रू. के माल में 5,000 x 5,000/25,000 = 1,000 रू. न वसूल हुआ लाभ है जिसे रद्द किया जायेगा। इस संबंध में एम कम्पनी की पुस्तकों में न वसूल हुए लाभ के सम्बन्ध में जर्नल प्रविष्टि निम्न प्रकार की जावेगी :

Capital Reserve or Goodwill A/c	Dr.	1000	
To Stock A/c			1000

'ख्याति खाता' या 'पूँजीगत संचय खाता' नाम करने की बजाय लाभ–हानि खाता को भी नाम किया जा सकता है। इस सम्बन्ध में एक मत यह भी है कि न वसूल हुए लाभ के सम्बन्ध में कोई जर्नल प्रविष्टि न की जावे तथा सम्पतियों को खरीदने की प्रविष्टि करते समय ही उक्त स्टॉक की लागत में से न वसूल हुआ लाभ घटाकर शेष राशि से स्टॉक खाता नाम कर दिया जाये।

(ii) जब क्रेता कम्पनी के पास विक्रेता कम्पनी से खरीदा हुआ माल स्टॉक में है – यदि माल हस्तान्तरिती कम्पनी (क्रेता कम्पनी) ने हस्तान्तरक कम्पनी (विक्रेता कम्पनी) से खरीदा था और एकीकरण की तिथि को उसमें से कुछ स्टॉक बच गया है तो इस स्टॉक में सम्मिलित न वसूल हुए लाभ के लिए भी समायोजन किया जाना चाहिए।

इस स्टॉक पर न वसूल हुए लाभ की राशि की गणना पूर्ववत् ही की जायेगी। इस राशि से क्रेता अर्थात् हस्तान्तरिती कम्पनी की पुस्तकों में निम्नलिखित प्रविष्टि की जायेगी –

Capital Reserve or Goodwill A/c	Dr.
To Stock A/c	

विक्रेता अर्थात् हस्तान्तरक कम्पनी की पुस्तकों में न वसूल हुए लाभ के लिए कोई प्रविष्टि नहीं की जाती है।

उदाहरण (Illustration) 10 :

P. Ltd. decides to amalgamate R. Ltd. on 1st April,2010 on which date Balance Sheet contained the following items :

(i) Sundry debtors of P. Ltd. include a debt of Rs. 1,25,000 due by R. Ltd.
(ii) Bills payable of R. Ltd. include Rs. 12,000 payable to P. Ltd. out of these, bills worth Rs. 2,200 had been discounted with the Bank.
(iii) Stock-in-trade of P. Ltd. includes goods costing Rs. 6,000 Purchased from R. Ltd. on which the later company made a profit of Rs. 1,000.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Pass Journal entries at the time of Amalgamation in the books of purchasing company in respect of the above items.

पी. लिमिटेड ने आर. लिमिटेड का 1 अप्रेल, 2010 को एकीकरण करने का निश्चय किया जिस दिन उनके चिट्‌ठे में निम्न मदे पाई जाती हैं :

(i) पी. लिमिटेड के विविध देनदारों में आर लिमिटेड द्वारा देय 1,25,000 रू. की राशि सम्मिलित है।

(ii) आर लिमिटेड के देय विपत्रों में पी. लिमिटेड को देय 12,000 रू. की राशि सम्मिलित है। इनमें से 2,200 रू. के विपत्र बैंक से भुनाये हुए हैं।

(iii) पी लिमिटेड के स्टॉक में आर लिमिटेड से खरीदा गया 6,000 रू. की लागत का माल सम्मिलित है जिस पर बाद वाली कम्पनी ने 1,000 रू. का लाभ कमाया था।

उपर्युक्त मदों के सम्बन्ध में एकीकरण के समय क्रेता कम्पनी की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियॉ दीजिए।

हल (Solution) :

Journal of P. Ltd.

Date	Particulars	L.F.	Amount Debit	Amount Credit
2010			Rs.	Rs.
April,1	Creditors A/c Dr.		1,25,000	
	To Debtors A/c			1,25,000
	(Elimination of mutual debts)			
April,1	Bills Payable A/c Dr.		9,800	
	To Bills Receivable A/c			9,800
	(Mutual acceptance eliminated)			
April,1	Goodwill/Capital Reserve A/c Dr.		1,000	
	To Stock A/c			1,000
	(Unrealized profit on Stock eliminated)			

उदाहरण (Illustration) 11 :

Following are the balance sheets of A Ltd. and B. Ltd. as at 31st March, 2010.

31 मार्च, 2010 को ए लिमिटेड और बी लिमिटेड के चिट्‌ठे निम्न प्रकार हैं :

Balance Sheets

Liabilities	A Ltd.	B Ltd	Assets	A Ltd.	B Ltd.
	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.
Equity Shares of Rs. 10 each	3,00,000	5,00,000	Fixed Assets	3,40,000	6,00,000
Reserve Fund	1,00,000	1,00,000	Loan to B Ltd.	1,20,000	–
Workmen's Compensation Fund	20,000	–	Debtors (including A Ltd. Rs. 20,000)	–	60,000
Loan from A Ltd.	–	1,20,000	Debtors	70,000	–
Creditors	–	22,000	B/R (including B. Ltd. Rs. 14,000)	20,000	–
Creditors (including B Ltd. Rs. 20,000)	1,10,000		Stock	40,000	80,000
B/P (including A Ltd. Rs. 14,000)	60,000	18,000	Cash at Bank	–	20,000

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

	5,90,000	7,60,000		5,90,000	7,60,000

B Ltd. agreed to absorb A Ltd. on the following terms :

(i) B Ltd. shall give one equity share of Rs. 10 each fully paid up (at a premium of 10%) in exchange for one equity share in A Ltd.

(ii) The liquidation expenses amounted to Rs. 10,000 are to be borne by B.Ltd.

(iii) B Ltd. had sold prior to 31st March, 2010 goods costing Rs. 60,000 to A Ltd. for Rs. 80,000, Rs. 30,000 worth of goods are still in stock of A Ltd. on 31st March 2010.

(iv) Workmen Compensation Fund of A Ltd. will not be taken over by B Ltd. Other assets and liabilities will be taken over at their book values.

(v) Inter company owings will be cancelled by B Ltd. after absorption.

Prepare necessary ledger accounts to close the books of A Ltd. and give journal entries in the books of B Ltd. Also prepare the balance sheet of B Ltd. soon after absorption.

बी लिमिटेड ए लिमिटेड का निम्नलिखित शर्तों पर संविलयन करने को सहमत हुई :

(i) बी लिमिटेड ए लिमिटेड के एक ईक्विटी अंश के बदले 10 रू. वाला एक पूर्ण प्रदत ईक्विटी अंश (10% प्रीमियम पर) निर्गमित करेगी।

(ii) समापन व्यय 10,000 रूपये के हुए जिन्हें B. Ltd. वहन करेगी।

(iii) 31 मार्च, 2010 से पूर्व B. Ltd. ने 60,000 रूपये की लागत का माल A. Ltd. को 80,000 रूपये में बेचा था। इस माल में से 30,000 रूपये की कीमत का माल 31 मार्च, 2010 को A. Ltd. की पुस्तकों में सम्मिलित है।

(iv) ए लिमिटेड के 'श्रमिक क्षतिपूर्ति कोष' को बी लिमिटेड द्वारा नहीं लिया जायेगा। अन्य सम्पतियॉ व दायित्व पुस्तक–मूल्यों पर लिये जावेंगे।

(v) संविलयन के बाद बी लिमिटेड द्वारा अन्तकम्पनी देनदारियों को रद्द कर दिया जावेगा।

ए लिमिटेड की पुस्तकें बन्द करने के लिए आवश्यक खाते तैयार कीजिए तथा बी लिमिटेड की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियॉ दीजिए। संविलयन के तुरन्त बाद का बी लिमिटेड का चिट्ठा भी बनाइए।

हल (Solution) :

सविलयन की शर्तों के अनुसार, ए लिमिटेड के एक ईक्विटी अंश के बदले बी लिमिटेड द्वारा 10 रू. वाला पूर्ण प्रदत ईक्विटी अंश (10% प्रीमियम पर) निर्गमित किया जायेगा। ए लिमिटेड ने 10 रू. वाले 30,000 ईक्विटी अंश निर्गमित कर रखे हैं। अतः बी लिमिटेड से उसे 10 रू. वाले 30,000 ईक्विटी अंश 10% प्रीमियम पर प्राप्त होंगे। इस प्रकार क्रय–प्रतिफल हुआ, 30,000 अंश x 11 रू. = 330,000 रू.।

Books of A Ltd.

Dr. Realization Account Cr.

	Rs.		Rs.
To Fixed Assets A/c	3,40,000	By Creditors A/c	1,10,000
To Loan to B Ltd. A/c	1,20,000	By B Ltd. (Purchase Consideration)	3,30,000
To Debtors A/c	70,000	By Bills Payable A/c	60,000
To B/R A/c	20,000	By Equity Shareholders A/c	90,000
To Stock A/c	40,000		
	5,90,000		5,90,000

Dr. Equity Shareholders Account Cr.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

	Rs.		Rs.
To Realization A/c (Loss) To Equity Shares in B Ltd. A/c	90,000 3,30,000	By Equity Share Capital A/c By Reserve Fund A/c By Workmen Compensation Fund A/c	3,00,000 1,00,000 20,000
	4,20,000		4,20,000

Dr. B Limited Cr.

	Rs.		Rs.
To Realization A/c	3,30,000	By Equity Share in B Ltd. A/c	3,30,000

Dr. Equity Share in B Limited Account Cr.

	Rs.		Rs.
To B Ltd.	3,30,000	By Equity Shareholders A/c	3,30,000

Fixed Assets A/c

	Rs.		Rs.
To Balance b/d	3,40,000	By Realization A/c	3,40,000

Loan to B Account

	Rs.		Rs.
To Balance b/d	1,20,000	By Realization A/c	1,20,000

Debtors Account

	Rs.		Rs.
To Balance b/d	70,000	By Realization A/c	70,000

Bills Receivable Account

	Rs.		Rs.
To Balance b/d	20,000	By Realization A/c	20,000

Stock Account

	Rs.		Rs.
To Balance b/d	40,000	By Realization A/c	40,000

Reserve Fund Account

	Rs.		Rs.
To Equity Shareholders A/c	1,00,000	By Balance b/d	1,00,000

Workmen compensation Fund Account

	Rs.		Rs.
To Equity Shareholders A/c	20,000	By Balance b/d	20,000

Creditors Account

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

	Rs.		Rs.
To Realization A/c	1,10,000	By Balance b/d	1,10,000

Bills Payable Account

	Rs.		Rs.
To Realization A/c	60,000	By Balance b/d	60,000

Books of B Ltd. Journal of B Ltd.

Date	Particulars			Amount Debit Rs.	Amount Credit Rs.
2010 April1	Business Purchase A/c	Dr.		3,30,000	
	To Liquidator of A Ltd.				3,30,000
	(Purchase consideration payable for Business of B Ltd.)				
April1	Fixed Assets A/c	Dr.		3,40,000	
	Loan A/c	Dr.		1,20,000	
	Debtors A/c	Dr.		70,000	
	B/R A/c	Dr.		20,000	
	Stock A/c	Dr.		40,000	
	To Business Purchase A/c				5,90,000
	(Various assets of B Ltd. taken over at agreed price)				
April1	Business purchase A/c	Dr.		1,70,000	
	To Bills Payable A/c				60,000
	To Creditors A/c				1,10,000
	(Various liabilities of B Ltd. taken over at agreed price)				
April1	Business Purchase A/c	Dr.		90,000	
	To Capital Reserve A/c				90,000
	(Excess of net assets over purchase consideration transferred to Capital Reserve A/c)				
April1	Liquidator of A Ltd.	Dr.		3,30,000	
	To Equity share Capital A/c				3,30,000
	To Securities Premium A/c				30,000
	(Purchase consideration paid.)				
April1	Loan from A Ltd. A/c	Dr.		1,20,000	
	To Loan A/c				1,20,000
	(Mutual liability for loans cancelled.)				
April1	Creditors (of A Ltd.)	Dr.		20,000	
	To Debtors (of B Ltd.)				20,000
	(Mutual liability for debtors & creditors cancelled.)				
April1	B/P (of B Ltd.)	Dr.		14,000	
	To B/R (of A Ltd.)				14,000
	(Mutual liability for B/R and B/P cancelled.)				

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

April1	Capital Reserve A/c Dr. To Bank A/c (Liquidation Expenses Paid.)		10,000	10,000
	Capital Reserve A/c Dr. To Stock A/c (Unrealized Profit on Stock eliminated.)		7,500	7,500

Balance Sheet of B Ltd. as at April 1, 2010
(After Absorption)

Liabilities	Rs.	Assets	Rs.
Share Capital		Fixed Assets	9,40,000
80,000 Equity Shares Rs. 10 each	8,00,000	Debtors	1,10,000
(Out of which 30,000 shares issued)		B/R	6,000
for consideration other than cash)		Stock Rs. (80,000 + 40,000-7,500)	1,12,500
Reserves & Surplus		Cash at Bank	10,000
Securities Premium	30,000		
Capital Reserve (90,000-10,000-7,500)	72,500		
Reserve Fund	1,00,000		
Current Liabilities :			
Creditors	1,12,000		
B/P	64,000		
	11,78,500		11,78,500

टिप्पणी : न वसूल हुए लाभ की राशि = 20,000x30,000/80,000= 7,500 रूपये।

पारस्परिक विनियोग या अन्तर कम्पनी विनियोग का समायोजन
(Adjustment For Mutual Investment or Inter Company Holdings)

कम्पनियों के एकीकरण के समय एक कम्पनी का दूसरी कम्पनी के अंशों में विनियोग हो सकता हें या दोनों कम्पनियों का एक दूसरे के अंशों में विनियोग किया हुआ हो सकता है। ऐसे विनियोग को पारस्परिक विनियोग कहते हैं।

एकीकरण के लेखांकन के समय ऐसे विनियोग का समायोजन किया जाता है पारस्परिक विनियोग के सम्बन्ध में निम्नांकित तीन परिस्थितियॉ हो सकती हैं :

(अ) जब क्रेता कम्पनी विक्रेता कम्पनी के अंशों की धारक हो ;
(ब) जब विक्रेता कम्पनी क्रेता कम्पनी के अंशों की धारक हो ;
(स) जब विक्रेता कम्पनी तथा क्रेता कम्पनी आपस में एक दूसरे के अंशों की धारक हो।

(अ) जब क्रेता कम्पनी विक्रेता कम्पनी के अंशों की धारक हो
(When Purchasing Company holds shares of Vendor Company)

इस स्थिति में क्रेता कम्पनी उसके द्वारा धारित अंशों की सीमा तक विक्रेता कम्पनी की स्वामी होती है। विक्रेता कम्पनी के व्यवसाय का अधिग्रहण करते समय क्रय प्रतिफल के निर्धारण में ऐसे धारित अंशों का ध्यान रखा जाता है।

यदि क्रय प्रतिफल शुद्व सम्पति विधि (Net Assets Method) के आधार पर निर्धारित किया जाता है तो क्रेता कम्पनी द्वारा ली जाने वाली सम्पतियों के मूल्य में से उसके द्वारा लिये गये दायित्वों को घटाकर विक्रेता

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

कम्पनी की शुद्ध सम्पतियाँ ज्ञात की जाती है। इसके पश्चात् इस मूल्य में से क्रेता कम्पनी का हिस्सा (अंश विनियोग के अनुपात में) घटा दिया जाता है शेष राशि बाह्य अंशधारियों के लिए क्रय प्रतिफल होती है।

यदि क्रय प्रतिफल शुद्ध भुगतान विधि (Net Payment Method) के आधार पर निर्धारित किया जाता है तो क्रेता कम्पनी द्वारा धारित अंशों को छोड़कर बाह्य अंशधारियों को जो भुगतान किया जाता है, वह क्रय प्रतिफल कहलाता है।

<u>विक्रेता कम्पनी की पुस्तकों में लेखा</u> : अंश पूँजी का जितना भाग क्रेता कम्पनी द्वारा क्रय किये गये अंशों से सम्बन्धित है उस सीमा तक अंश पूँजी को रद्द करने के लिए निम्नलिखित प्रविष्टि की जाती है :

Share Capital A/c Dr.
To Realization A/c

<u>क्रेता कम्पनी की पुस्तकों में लेखा</u> : क्रेता कम्पनी की पुस्तकों में विक्रेता कम्पनी में धारित अंशों को विनियोग के रूप में दिखाया हुआ होता है। एकीकरण पर विक्रेता कम्पनी का समापन हो जाने से क्रेता कम्पनी द्वारा धारित ऐसे अंशों का कोई महत्व नहीं रहता है इसलिए इन अंशों में विनियोग को रद्द करने के लिए निम्न प्रविष्टि की जाती है :

Goodwill or Capital Reserve A/c Dr.
To Investment in Share of …….Ltd. A/c
(Cancellation of investment in shares of Vendor Company)

उदाहरण (Illustration) 12 :

The following are the Balance Sheets of X Ltd. and Y Ltd. as at 31st March, 2010 :

31 मार्च, 2010 को 'एक्स' लिमिटेड व 'वाई' लिमिटेड के चिट्ठे निम्न प्रकार हैं :

Balance Sheets

Liabilities	X Ltd	Y Ltd	Assets	X Ltd	Y Ltd
	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.
Equity Shares of			Sundry Assets	4,45,000	2,25,000
Rs. 10 each	1,00,000	50,000	1,000 Shares in Y Ltd.	12,000	–
General Reserve	3,57,000	1,85,000	Preliminary Expenses	–	10,000
	4,57,000	2,35,000		4,57,000	2,35,000

It was decided that X Ltd. will absorb Y Ltd. and the purchase consideration will be discharged by issue of equity shares of X Ltd. at intrinsic value.

You are required to :

(i) Calculate Purchase Consideration ;
(ii) Pass necessary journal entries in the books of X Ltd. and Y Ltd, and
(iii) Show Balance sheet of X Ltd. after absorption.

यह निर्णय किया गया कि 'एक्स' लिमिटेड द्वारा 'वाई' लिमिटेड का संविलयन किया जायेगा तथा क्रय प्रतिफल का भुगतान एक्स लि. के समता अंशों के उनके 'आन्तरिक मूल्य' पर निर्गमन द्वारा किया जायेगा। आपको :

(i) क्रय प्रतिफल की गणना करनी है ;
(ii) एक्स लि. तथा वाई लि. की पुस्तकों में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ देनी हैं तथा
(iii) संविलयन के पश्चात् का एक्स लिमिटेड का चिट्ठा तैयार करना है।

<u>हल (Solution) :</u>

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(i) **क्रय प्रतिफल की गणना** :

			रूपये
	Y Ltd. की शुद्व सम्पतियॉ	=	2,25,000
Less :	X Ltd का हिस्सा	=	45,000
	बाहरी अंशधारियों के लिए क्रय प्रतिफल		1,80,000

X Ltd. के अंशों के आन्तरिक मूल्य की गणना :

		रूपये
	विविध सम्पतियों का मूल्य	4,45,000
	वाई लिमिटेड के अंशों का मूल्य	45,000
	कुल सम्पतियॉ	4,90,000
घटाओं : दायित्व		Nil
	शुद्व सम्पतियॉ	4,90,000

X Ltd. का प्रति अंश आन्तरिक मूल्य = 4,90,000/10,000 = 49 रूपये।

क्रय प्रतिफल का भुगतान :

क्रय प्रतिफल के लिए X Ltd. के कुल अंश = 1,80,000/49

= 3673.4693 अंश

अतः 3,673 अंशों का निर्गमन मूल्य = 1,79,977 रू.

तथा भिन्न अंशों का बाजार/आन्तरिक मूल्य जिसका भुगतान नकद में किया जावेगा।

अतः नकद राशि = 0.4693x49 = 23 रू.

Journal of X Ltd.

Date	Particulars	L.F.	Amount Debit	Amount Credit
2010			Rs.	Rs.
April1	Sundry Assets A/c Dr.		2,55,000	
	To Liquidator of Y Ltd.			1,80,000
	To Capital Reserve A/c			45,000
	(Business purchased)			
April1	Liquidator of Y Ltd. Dr.		1,80,000	
	To Equity Share Capital A/c			36,730
	To Securities Premium A/c			1,43,247
	To Cash A/c			23
	(Payment made)			
April1	Capital Reserve A/c Dr.		12,000	
	To Investment in Shares of X Ltd. A/c			12,000
	(Cancellation of investment in shares of x Ltd.)			

Balance sheet (after absorption)
As on April 1, 2010

Liabilities	Amount	Assets	Amount
	Rs.		Rs.
Share Capital		Sundry Assets	

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

13,673 Equity Shares of Rs. 10 each fully paid up (3673 share were issued for consideration other than cash)	1,36,730	(4,45,000 + 2,25,000 − 23)	6,69,977
Reserve and surplus			
General Reserve	3,57,000		
Capital Reserve	33,000		
Securities Premium	1,43,247		
	6,69,977		6,69,977

Journal of Y Ltd.

Date	Particulars	L.F.	Amount Debit Rs.	Amount Credit Rs.
2010 April ,1	Realization A/c Dr. To Sundry Assets A/c (Sundry assets transferred.)		2,25,000	2,25,000
,,	X Ltd. Dr. To Realization A/c (Purchased Consideration due.)		1,80,000	1,80,000
,,	Equity share Capital A/c Dr. To Realization A/c (Cancellation of 1/5 holdings of X Ltd.)		10,000	10,000
,,	Equity Share Capital A/c Dr. General Reserve A/c Dr. To Equity - shareholders A/c (Balance transferred)		40,000 1,85,000	2,25,000
,,	Equity Shareholders A/c Dr. To Preliminary Expenses A/c (Balance transferred.)		10,000	10,000
,,	Equity Shares in X Ltd. Dr. Cash A/c Dr. To X Ltd. (Purchase Consideration received)		1,79,977 23	1,80,000
,,	Equity Shareholders A/c Dr. To Realization A/c (Realization Loss transferred)		35,000	35,000
,,				

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

	Equity Shareholders A/c Dr. To Equity Shares in X Ltd. To Cash A/c (Amount distributed among shareholders.)		1,80,000	1,79,977 23

जब विक्रेता कम्पनी क्रेता कम्पनी में अंशों की धारक हो
(When Vendor company holds shares in Purchasing Company) :

इस स्थिति में क्रय प्रतिफल की गणना शुद्व सम्पति विधि (Net Assets Methods) से करने के लिए सबसे पहले क्रेता कम्पनी के अंशों का बाजार मूल्य ज्ञात किया जाता है। ऐसे अंशों का बाजार मूल्य ज्ञात न हो तो क्रेता कम्पनी की शुद्व सम्पतियों में उस कम्पनी के अंशों की संख्या का भाग देकर अंशों का अन्तर्निहित मूल्य (Intrinsic Value) ज्ञात किया जाता है।

तत्पश्चात् क्रय प्रतिफल की गणना निम्न प्रकार की जाती है :

(1) विक्रेता कम्पनी द्वारा धारित क्रेता कम्पनी के अंशों का मूल्यांकन उपरोक्त अन्तर्निहित मूल्य या बाजार मूल्य के आधार पर ज्ञात किया जाता है।

(2) विक्रेता कम्पनी द्वारा धारित विनियोगों का अन्तर्निहित मूल्य या बाजार मूल्य लेते हुए उसकी (विक्रेता कम्पनी की) शुद्व सम्पतियों का मूल्य ज्ञात किया जाता है।

(3) विक्रेता कम्पनी की शुद्व सम्पतियों को क्रेता कम्पनी के एक अंश के अन्तर्निहित मूल्य या बाजार मूल्य से विभाजित करके क्रय प्रतिफल के बदले जारी होने वाले अंशों की संख्या ज्ञात की जाती है।

(4) इन अंशों की संख्या में से उन अंशों की संख्या को घटा दिया जाता है जो पहले से ही विक्रेता कम्पनी के पास है।

(5) शेष रहे अंशों को र्निगमित मूल्य या अंकित मूल्य से गुणा करके क्रय प्रतिफल की राशि ज्ञात की जाती है।

विक्रेता कम्पनी की पुस्तकों में लेखा :

विक्रेता कम्पनी की पुस्तकों में खुले हुए विनियोग खाते को वसूली खाते में स्थानान्तरित नहीं किया जावेगा बल्कि विक्रेता कम्पनी द्वारा क्रेता कम्पनी से क्रय प्रतिफल के रूप में प्राप्त नये अंश एवं पहले से ही धारित अंशों को अपने अंशधारियों में वितरित कर दिया जायेगा। इससे उसकी पुस्तकों में खुला हुआ विनियोग खाता बन्द हो जायेगा।

क्रेता कम्पनी की पुस्तकों में लेखा : क्रेता कम्पनी इन विनियोगों का क्रय नहीं करेगी। अतः उसकी पुस्तकों में उक्त विनियोगों के सम्बन्ध में कोई लेखा नहीं किया जायेगा। अन्य सम्पतियों एवं दायित्वों को क्रय करने का लेखांकन सामान्य नियमों के अनुसार किया जावेगा।

हल (Illustration) 13 :

Following are the Balance Sheets of X Ltd. and Y Ltd. as on 31st March, 2010 : 31 मार्च, 2010 को एक्स लिमिटेड तथा वाई लिमिटेड के चिट्ठे निम्नलिखित हैं :

Balance Sheets

Liabilities	X Ltd	Y Ltd	Assets	X Ltd	Y Ltd
Shares Capital :	Rs.	Rs.	**Fixed Assets**	Rs.	Rs.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Equity Shares of Rs. 100 each, fully paid up	5,00,000	2,00,000	(other than goodwill)	10,30,000	3,50,000
Reserves	3,00,000	1,78,000	**Current Assets**	2,00,000	1,38,000
6% Debentures	3,00,000	2,00,000	1,000 Shares in X Ltd	–	1,70,000
Creditors	1,50,000	1,40,000	Preliminary Expenses	20,000	60,000
	12,50,000	7,18,000		12,50,000	7,18,000

Goodwill of X Ltd. and Y Ltd. is valued at Rs. 60,000 and Rs. 20,000 respectively. X Ltd. purchases Y Ltd. on the basis of intrinsic values of the shares.

Give journal entries in the books of the two companies.

एक्स लिमिटेड एवं वाई लिमिटेड की ख्याति का मूल्यांकन क्रमशः 60,000 रू तथा 20,000 रू. पर किया गया है। एक्स लिमिटेड वाई लिमिटेड को अंशों के अन्तर्निहित मूल्यों के आधार पर क्रय करती है। दोनों कम्पनियों की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियाँ दीजिए।

हल (Solution) :

(i) X Ltd. के अंशों के अन्तर्निहित मूल्य की गणना

(Calculation of Intrinsic Value of Shares in X Ltd.)

		Rs.	Rs.
Goodwill			60,000
Fixed Assets			10,30,000
Current Assets			2,00,000
	Total Assets		12,90,000
Less Liabilities :		Rs.	
6% Debentures		3,00,000	
Creditors		1,50,000	4,50,000
	Net Assets		8,40,000

Intrinsic Value Per Share = 8,40,000 ÷ 5,000 = Rs. 168.

(2) Y Ltd. की शुद्व समपतियों की गणना :

Calculation of Net Assets of Y Ltd.

			Rs.	Rs.
	Goodwill			20,000
	Fixed Assets			3,50,000
	Current Assets			1,38,000
	Value of shares in X Ltd. (1000x168)			1,68,000
		Total Assets		6,76,000
Less :	Liabilities :			
	6% Debentures		2,00,000	
	Creditors		1,40,000	3,40,000
		Net Assets		3,36,000

(3) क्रय प्रतिफल की गणना :

(Calculation of Purchase Consideration) :

Total number of shares to be issued by X Ltd. = 3,36,000/168	= 2,000
Less : Shares already held by Y Ltd.	= 1,000
New Share to be issued by X Ltd.	1,000

Purchase Consideration = (1,000 x 168) = Rs. 1,68,000

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Journal of Y Ltd. (Vendor Company)

2010			Rs.	Rs.
March 31	Realization A/c Dr.		4,88,000	
	To Fixed Assets A/c			3,50,000
	To Current Assets A/c			1,38,000
	(Various assets transferred)			
	6% Debentures A/c Dr.		2,00,000	
March 31	Creditors A/c Dr.		1,40,000	
	To Realization A/c			3,40,000
	(Liabilities transferred)			
	X Ltd. Dr.		1,68,000	
March 31	To Realization A/c			1,68,000
	(Purchase consideration due.)			
	Realization A/c Dr.		2,000	
	To Equity Shares in X Ltd.			2,000
March 31	(Depreciation in the value of shares of X Ltd. brought into books.)			
	Equity Shares in X Ltd. A/c Dr.		1,68,000	
	To X Ltd.			1,68,000
	(Purchase consideration received)			
	Equity Share Capital A/c Dr.		2,00,000	
	Reserves A/c Dr.		1,78,000	
	To Equity Shareholders A/c			3,78,000
	(Balance transferred.			
	Equity Shareholders A/c Dr.		60,000	
	To Preliminary Expenses A/c			60,000
March 31	(Balance transferred.)			
	Realization A/c Dr.		18000	
	To Equity Shareholders A/c			18000
March 31	(Profit on realization credited.)			
	Equity Shareholders A/c Dr.		3,36,000	
	To Equity Shares in X Ltd.			3,36,000
March 31	(2000 Equity Shares in X Ltd. distributed.)			

Journal of X Ltd. (Purchasing Company

2010	Goodwill A/c Dr.		Rs.	Rs.
March	Fixed assets A/c Dr.		20,000	
31	Current Assets A/c Dr.		3,50,000	

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

	To 6% Debentures A/c To Creditors A/c To Liquidator of Y Ltd. (Assets and Liabilities acquired from Y Ltd. and Purchase consideration due.)		1,38,000	2,00,0001 ,40,000 1,68,000
March 31	Liquidator of Y Ltd Dr. To Equity Share Capital A/c To Securities Premium A/c (Purchase consideration discharged by allotment of 1,000 equity shares of Rs. 100 each at Rs. 168 per share fully paid up.)		1,68,000	1,00,000 68,000

जब क्रेता व विक्रेता कम्पनियों ने एक दूसरे के अंश धारित कर रखे हों
(When the Purchasing Company and Vendor Company holds Shares of each other.)

जब क्रेता और विक्रेता कम्पनियों ने आपस में एक दूसरे के अंशों में विनियोग कर रखा हो तो क्रय प्रतिफल के निर्धारण में कठिनाई आती है क्योंकि दोनों कम्पनियों के अंशों का अन्तर्निहित मूल्य ज्ञात करना पड़ता है। विक्रेता कम्पनी के अंशों का अन्तर्निहित मूल्य तभी ज्ञात किया जा सकता हैं जबकि क्रेता कम्पनी के अंशों का अन्तर्निहित मूल्य ज्ञात हो ; इसी प्रकार क्रेता कम्पनी के अंशों का अन्तर्निहित मूल्य तभी ज्ञात किया जा सकता है जबकि विक्रेता कम्पनी के अंशों का अन्तर्निहित मूल्य ज्ञात हो। चूँकि दोनों कम्पनियों के पास विनियोग के रूप में रखे एक दूसरे के अंशों का मूल्यांकन अन्तर्निहित मूल्य पर किया जाता है, ऐसी स्थिति में दोनों कम्पनियों के अंशों के अन्तर्निहित मूल्यों की गणना करने के लिए उनकी शुद्व सम्पतियॉ युगपत समीकरण की सहायता से ज्ञात की जायेंगी।

क्रेता कम्पनी की सम्पतियों का शुद्व मूल्य ज्ञात करने के पश्चात् इसमें उसके निर्गमित अंशों की संख्या का भाग देकर अंशों के अन्तर्निहित मूल्य की गणना की जायेगी। इस प्रकार ज्ञात किये गये अंशों के अन्तर्निहित मूल्य का विक्रेता कम्पनी की सम्पतियों के शुद्व मूल्य में भाग देकर क्रेता कम्पनी द्वारा निर्गमित किये जाने वाले अंशों की संख्या ज्ञात कर ली जाती है। इन अंशों में से विक्रेता कम्पनी द्वारा पहले से ही धारित अंशों को घटाकर शेष निर्गमित किये जाने वाले अंशों की संख्या ज्ञात कर ली जाती है। इन अंशों की संख्या को निर्गमित मूल्य से गुणा करके क्रय प्रतिफल ज्ञात कर लिया जाता है।

क्रेता कम्पनी की पुस्तकों में लेखा :

क्रेता कम्पनी के अंशों में विक्रेता कम्पनी द्वारा किये गये विनियोग के सम्बन्ध में कोई लेखा नहीं किया जायेगा। लेकिन विक्रेता कम्पनी के अंशों में किये गये विनियोग को रद्द करने के लिए निम्न प्रविष्टि की जायेगी :

Goodwill or Capital Reserve A/c Dr.
To Investment in Shares…..Ltd. A/c

विक्रेता कम्पनी की पुस्तकों में लेखा :

क्रेता कम्पनी के अंशों में विनियोग खाते के शेष को वसूली खाते में हस्तान्तरित नहीं किया जायेगा बल्कि इन अंशों को क्रय प्रतिफल के रूप में प्राप्त होने वाले नये अंशों के साथ कम्पनी के बाह्य अंशधारियों में वितरित कर दिया जायेगा। इससे विनियोग खाता बन्द हो जायेगा। विक्रेता कम्पनी के जितने अंश क्रेता कम्पनी ने ले रखे हैं उनसे सम्बन्धित पूॅजी को अंशधारियों के खाते में हस्तान्तरित न करके वसूली खाते में हस्तान्तरित कर दिया जायेगा। जब दो या दो से अधिक विक्रेता कम्पनियां एक नई कम्पनी में एकीकृत हो रही हों तो एकीकृत होने वाली कम्पनियों के पारस्परिक विनियोग होने पर सर्वप्रथम शुद्व सम्पतियों की गणना युगपत समीकरणों के माध्यम से उपर्युक्त विधि से की जायेगी। उसके बाद प्रत्येक कम्पनी की इस प्रकार ज्ञात शुद्व

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

सम्पतियों में से अन्य कम्पनी द्वारा धारित अंशों के भाग के बराबर शुद्व सम्पतियॉ कम कर दी जायेगी और शेष बची शुद्व सम्पतियों के बराबर ही क्रय प्रतिफल की राशि देय होगी।

एकीकरण तथा बाह्य पुनर्निर्माण में अन्तर
(Difference between Amalgamation and External Reconstruction)

बाह्य पुनर्निर्माण	एकीकरण
1. इसमें केवल एक कम्पनी प्रभावी होती है। 2. इसमें एक पुरानी कम्पनी का समापन होता है तथा उसकी जगह उससे मिलते–जुलते नाम से एक नई कम्पनी का निर्माण होता है। वैधानिक रूप से कम्पनी में अधिकतर पुरानी कम्पनी के अंशधारी ही होते हैं। 3. बाह्य पुनर्निर्माण पुरानी कम्पनी के एकत्रित हानियों को अपलिखित करके नये जोश के साथ नई कम्पनी से कार्य से कार्य करने के उद्देश्य से किया जाता है। 4. बाह्य पुनर्निर्माण के अन्तर्गत यह आवश्यक नहीं है कि पुरानी कम्पनी की सभी सम्पतियों तथा दायित्वों को नई कम्पनी ले। इसलिए बाह्य पुनर्निर्माण 'विलय की प्रकृति' वाला एकीकरण 'न हो कर' क्रय की प्रकृति वाला एकीकरण होता है। 5. नई कम्पनी द्वारा एकीकरण के लेखांकन हेतु केवल ' क्रय विधि ' अपनायी जाती है।	1. इसमें दो या दो से अधिक कम्पनियॉ प्रभावित होती हैं। 2. इसमें दो या दो अधिक कम्पनियों का समापन होकर एक नई कम्पनी का निर्माण हो सकता है या एक या अधिक कम्पनियों का समापन होकर उनका किसी एक पुरानी कम्पनी में संविलयन (absorption) हो सकता है। 3. एकीकरण ही दशा में अधिकारों तथा दायित्वों का समामेलन होता है तथा हस्तान्तरिती कम्पनी को संयुक्त अधिकार एवं दायित्व अन्तरित हो जाते हैं जिससे बड़े पैमाने के उत्पादन के लाभ नई कम्पनी को मिल सके। 4. एकीकरण दो प्रकार के हो सकते हैं : (अ) विलय की प्रकृति वाला एकीकरण तथा (ब) क्रय की प्रकृति वाला एकीकरण। 5. एकीकरण के लेखांकन हेतु निम्न में से कोई भी एक विधि अपनाई जा सकती है : (अ) हितों के एकीकरण विधि, या (ब) क्रय विधि।

अभ्यासार्थ प्रश्न
(Questions for Exercise)

(A) वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Objective Type Questions) :
विभिन्न विकल्पों में से एक सही उत्तर लिखिए :

1. एकीकरण के समय लेखा मानक 14 के अनुसार क्रय प्रतिफल होता है :

(अ) क्रेता कम्पनी द्वारा विक्रेता कम्पनी के समता अंशधारियों एवं पूर्वाधिकार अंशधारियों को भुगतान की जाने वाली राशियों का योग।

(ब) क्रेता कम्पनी द्वारा विक्रेता कम्पनी के अंशधारियों, ऋणधारियों एवं लेनदारों को भुगतान की जाने वाली राशियों का योग।

(स) क्रेता कम्पनी द्वारा विक्रेता कम्पनी के केवल समता अंशधारियों को भुगतान की जाने वाली राशियों का योग।

(द) उपर्युक्त में कोई भी नहीं। ( )

2. विलय के स्वभाव वाले एकीकरण के लिए विक्रेता कम्पनी में कम से कम कितने प्रतिशत समता अंशधारियों का क्रेता कम्पनी के अंशधारी बनने की सहमति देना आवश्यक है

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(अ) 70% (ब) 80 % (स) 90% (द) 95% ( )

उत्तर :– 1. (अ) 2. (स)

(B) लधूतरात्मक प्रश्न (Short Answer Type Questions) :

1. Name two popular methods for formation of combination.
   संयोग के निर्माण की दो लोकप्रिय विधियों के नाम बताइए।
2. What do you mean by absorption.
   संविलयन से आप क्या समझते हैं?
3. Explain the meaning of amalgamation.
   एकीकरण का अर्थ समझाइए।
4. Which accounting standard is related to the 'Accounting for Amalgamtion ? From which date it is effective ?
   कम्पनियों के एकीकरण के लेखांकन से सम्बन्धित भारतीय लेखा मानक कौनसा है और यह कब से प्रभावी हुआ है ?
5. What do you mean by Purchase Consideration?
   क्रय प्रतिफल से आप क्या समझते हैं ?
6. State two types of amalgamation as per Accounting Standard 14.
   लेखा मानक 14 के अनुसार एकीकरण के दो प्रकार बताइए।
7. What is the form of payment for discharge of purchase consideration in the nature of merger ?
   विलय के स्वभाव वाले एकीकरण की दशा में क्रय प्रतिफल का भुगतान किस रूप में किया जाता है ?
8. On what value the assets and liabilities are recorded in the books of transferee company when the amalgamation is in the nature of merger ?
   विलय के स्वभाव वाले एकीकरण की दशा में हस्तान्तरिती कम्पनी की पुस्तकों में सम्पतियों एवं दायित्वों का लेखांकन किस मूल्य पर किया जाता है ?

(C) लधूतरात्मक प्रश्न (Short Answer Type Questions)

1. Explain the types of amalgamation 'for accounting of amalgation' mentioned in Indian Accounting Standared 14.
   भारतीय लेखा मानक 14 के अनुसार कम्पनियों के एकीकरण के लेखांकन हेतु एकीकरण कितने प्रकार का होता है, स्पष्ट कीजिए
2. What do you mean by amalgamation in the nature of merger ?
   विलय के स्वभाव वाला एकीकरण किसे कहते हैं ?
3. What do you mean by amalgamation in the nature of purchase ?
   क्रय के स्वभाव वाला एकीकरण किसे कहते हैं ?
4. Explain the pooling of interest method for accounting of amalgamation.
   कम्पनियों के एकीकरण के लेखांकन की 'हितो की एकत्रीकरण विधि' को समझाइए।
5. Explain the 'Purchase Method' for accounting of Amalgamation of companies.
   कम्पनियों के एकीकरण के लेखांकन की 'क्रय विधि' को समझाइए।
6. State any four difference between 'pooling of interest method' and 'purchase method'
   'हितों की एकत्रीकरण विधि' तथा 'क्रय विधि में कोई चार अन्तर बताइए।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(D) सैद्धान्तिक प्रश्न (Theoretical Questions) :

1. What conditions are to be complied with for amalgation in the nature of a merger.
   विलयन के स्वभाव वाले एकीकरण के लिए किन शर्तो की पूर्ति होना आवश्यक है ?

2. Distinguish between 'Amalgamation in the nature of merger' and 'Amalgamation in the nature of purchase.
   'विलय की प्रकृति के एकीकरण' एवं 'क्रय की प्रकृति के एकीकरण' में अन्तर समझाइए।

3. Explain the 'pooling of interest Method' of Acounting for Amalgamation with suitable example.
   एकीकरण के लिए लेखांकन में हितों का एकत्रीकरण विधि क्या है, उपयुक्त उदाहरण द्वारा समझाइए।

(E) व्यावहारिक प्रश्न (Practical Questions)

1. You are given the following information : आपको निम्नांकित सूचना दी गई है:

Particulars	X Ltd.	Y Ltd.
	Rs.	Rs.
Fixed Assets	2,80,000	1,80,000
Investments	1,20,000	18,000
Current Assets	1,60,000	3,20,000
Outside Liabilities	1,10,000	90,000
General Reserve	70,000	1,20,000
Capital Reserve	30,000	20,000
Revaluation Reserve	20,000	10,000
Statutory Reserve	10,000	8,000
Profit & Loss Account	30,000	32,000

(अ) यदि एकीकरण क्रय की प्रकृति का हो, तथा
(ब) यदि एकीकरण विलय की प्रकृति का हो।

Calculate Purchase Consideration of X Ltd. and Y Ltd. if :
X Ltd. तथा Y Ltd. का क्रय प्रतिफल ज्ञात कीजिए यदि :

(a) Amalgamation is in the nature of puchase; and
(b) Amalgamation is in the nature of Merger.

Ans. X Ltd. (a) Rs. 4,50,000 (b) Rs. 2,90,000
Y Ltd. (a) Rs. 4,28,000 (b) Rs. 2,38,000

2. Following is the Balance Sheet of Ram Ltd. as on 31st March, 2010 :
   राम लिमिटेड का 31 मार्च, 2010 का चिट्ठा निम्न प्रकार है :

Liabilities	Rs.	Assets	Rs.
Share Capital :		Fixed Assets	30,00,000
Equity Shares of Rs. 100 each	15,00,000	Investments	7,00,000
10% Preference Shares of		Current Assets	6,00,000
Rs. 100 each	7,50,000	Preliminary Expenses	50,000
General Reserve	7,00,000		

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(Statutory) Export Profit Reserve 12% Debentures Creditors Bills Payable	2,00,000 6,00,000 4,00,000 2,00,000		
	43,50,000		43,50,000

Shyam Ltd. agreed to take over the assets and liabilities on the following terms and conditions :

(i) Fixed assets at 10% above the book value ;
(ii) Investments at par value ;
(iii) Current assets at a discount of 10%
(iv) Expenses of liquidation of Ram Ltd. are to be re-imbursed by Shyam to the extent of Rs. 23,000. Actual expenses amounted to Rs. 27,000.
(v) Discharge the 12% debentureholders at 10% premium by issuing 13% Debentures of Shyam Ltd.
(vi) Preference Shareholders are discharged at a premium of 10% issuing 12% Preference Shares of Rs. 100 each at par.
(vii) Issue three equity Shares in Shyam Ltd. of Rs. 100 each at 10% premium for every two equity share holders of Ram Ltd. and pay cash @ Rs. 4 per equity share.
(a) Calculate Purchase consideration under Net Payment Method ;
(b) Calculate Purchase consideration under Net Assets Method.
(c) Ascertain the amount of Goodwill or Capital Reserve arised in relation to the amalgamation.

श्याम लिमिटेड ने उपर्युक्त सम्पतियों एवं दायित्वों को निम्न शर्तों के अधीन लेने के लिए सहमति दी :

(i) स्थायी सम्पतियों को पुस्तक मूल्य से 10% अधिक पर ;
(ii) विनियोगों का सम मूल्य पर ;
(iii) चालू सम्पतियों को 10% बट्टे पर ;
(iv) राम लि. के समापन व्ययों में से श्याम लि. द्वारा 23,000 रू. का पुनर्भरण करना है। वास्तविक व्यय 27,000 रू. थे।
(v) 12% ऋणधारियों को 10% प्रीमियम पर, श्याम लिमिटेड के 13% ऋणपत्रों के निर्गमन द्वारा भुगतान किया जायेगा।
(vi) पूर्वाधिकार अंशधारियों को 10% प्रीमियम पर 12% पूर्वाधिकार अंश 100 रू वाले सम मूल्य पर निर्गमित किये जायेंगे।
(vii) राम लि. के प्रत्येक दो समता अशधारियों को श्याम लि. के तीन समता अंश 100 रू. वाले, 10% प्रीमियम पर निर्गमित किये जायेंगे तथा प्रत्येक को 4 रूपये का नकद भुगतान किया जायेगा।
(अ) 'शुद्ध भुगतान विधि' द्वारा क्रय प्रतिफल ज्ञात कीजिए।
(ब) 'शुद्ध सम्पतियां विधि' द्वारा क्रय प्रतिफल ज्ञात कीजिए।
(स) एकीकरण के कारण उत्पन्न ख्याति या पूॅजीगत संचय की राशि का निर्धारण कीजिए

Ans. (a) Rs. 33,60,000 (b) Rs. 32,57,000 (c) Goodwill Rs. 1,03,000

3. Following are the balance Sheets of X Ltd. and Y Ltd. on 31st March, 2010.
एक्स लि. तथा वाई लि. के 31 मार्च, 2010 के चिट्ठे निम्न प्रकार हैं :

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Liabilities	X Ltd	Y Ltd	Assets	X Ltd	Y Ltd
	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.
Equity Shares of Rs. 10 each	3,00,000	2,40,000	Fixed Assets	3,20,000	2,80,000
Statutory Reserve	1,20,000	60,000	Stock	1,60,000	1,20,000
Profit & Loss A/c	1,50,000	60,000	Debtors	1,80,000	2,00,000
Creditors	1,40,000	1,50,000	Cash at Bank	50,000	–
Bank overdraft	–	90,000			
	7,10,000	6,00,000		7,10,000	6,00,000

Z Ltd. valued fixed assets of X Ltd. at Rs, 3,50,000 and that of Y Ltd. at Rs. 3,00,000 Other assets and liabilities were taken over at their book values. Goodwill of X Ltd. is to be calculated at 2 years purchase of 'weighted average net profits' for the past three years. The weights for this purpose may be assigned as 1,2,3, respectively. The net profits were 2007-08 Rs. 30,000, 2008-09 Rs.45,000, 2009-10 Rs. 70,000.
In order to raise working capital, Z Ltd. issued 22,000 equity shares of Rs. 10 each at a price of Rs. 18.50 per share.

You are required to :

(a) Calculate the amount of purchase consideration payable to X Ltd. and Y Ltd. and
(b) Give journal entries in the books of X Ltd. and Y Ltd.

जेड लि. ने एक्स लि. की स्थाई सम्पतियों का मूल्यांकन 3,50,000 रू. पर तथा वाई लि. की स्थाई सम्पतियों का मूल्यांकन 3,00,000 रू. पर किया । अन्य सम्पतियॉ तथा दायित्व पुस्तक मूल्यों पर लिये गये। एक्स लि. की ख्याति की गणना गत तीन वर्षों के शुद्व लाभों के भारित औसत के दो वर्षों के क्रय के आधार पर की जानी है। इस कार्य हेतु भार क्रमशः 1,2,3 दिये जाऐं।
शुद्व लाभ इस प्रकार थे।

2007–08 = 30,000 रू. 2008–09 = 45,000 रू. तथा 2009–10 = 70,000 रूपये।
कार्यशील पूॅजी में वृद्वि के लिये जैड लि. ने 10 रू. वाले 22,000 इक्विटी अंश 18.50 रू. प्रति अंश के मूल्य पर निर्गमित किये।

आपको

(अ) एक्स लि. और वाई लि. को देय क्रय प्रतिफल की गणना करनी है, तथा
(ब) एक्स लि. तथा वाई लि. की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियॉ देनी हैं।

Ans :	X Ltd.	Y Ltd.
Goodwill	Rs. 1,10,000	-
Purchase Consideration	Rs. 7,10,000	Rs. 3,80,000
Realization Profit	Rs. 1,40,000	Rs. 20,000

4. Balance Sheets of A Ltd. And B Ltd. as on 31st March, 2010 were as follows :
31 मार्च, 2010 को 'ए' लिमिटेड तथा 'बी' लिमिटेड के चिट्ठे निम्न प्रकार थे :

Balance Sheets

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

As on 31st March, 2010

Liabilities	X Ltd	Y Ltd	Assets	X Ltd	Y Ltd
Equity Share Capital of Rs. 10 each	20,00,000	22,00,000	Fixed Assets	19,00,000	18,50,000
General Reserve	3,00,000	5,00,000	Investments	3,10,000	1,60,000
Capital Reserve	2,00,000	2,50,000	Stock	2,30,000	5,80,000
Revaluation Reserve	50,000	1,60,000	Debtors	3,00,000	7,00,000
Profit and Loss account	1,75,000	1,00,000	Cash at Bank	4,65,000	4,20,000
12% Debentures	3,00,000	3,00,000			
Sundry Creditors	1,80,000	2,00,000			
	32,05,000	37,10,000		32,05,000	37,10,000

A new company C Ltd. was formed by the amalgamation (in the nature of merger) of A Ltd. and B Ltd. on 1st April, 2010.
C Ltd. issued requisite number of equity shares of Rs. 100 each to discharge the claims of equity shareholders of A Ltd. and B Ltd.
Calculate Purchase Consideration and pass necessary journal entries in the books of C Ltd. Also prepare the balance sheet of C Ltd. on 1st April, 2010 soon after the amalgamation.

ए.लि. व बी.लि. के 1 अप्रेल 2010 को एकीकरण (विलयन के स्वभाव वाला) के द्वारा एक नई कम्पनी सी लि. की स्थापना की गई। सी लि. द्वारा ए लि. व बी.लि. के समता अंशधारियों के दावों का निपटारा करने के लिए आवश्यक संख्या में 100 रू. वाले समता अंश निर्गमित किये गये।
क्रय प्रतिफल की गणना कीजिये तथा सी लि. की पुस्तकों में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियॉ दीजिये। एकीकरण के तुरन्त बाद 1 अप्रेल 2010 को सी लि. का चिट्ठा भी बनाइये।

Ans. Purchase Consideration Rs. 20,00,000 and Rs. 22,00,000 Total of Balance Sheet Rs. 69,15,000.

5. The balance Sheets of A Ltd. and B Ltd. as on 31st March, 2010 are as follows ;
ए. लिमिटेड तथा बी. लिमिटेड के 31 मार्च, 2010 को चिट्ठे अग्र प्रकार हैं :

Balance Sheets
As on 31st March, 2010

Liabilities	X Ltd	Y Ltd	Assets	X Ltd	Y Ltd
	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.
Equity Share Capital of Rs. 10 each	25,00,000	23,00,000	Land & Buildings	12,50,000	11,55,000
14% Pref, Share Capital Of Rs. 100 each			Plant & Machinery	13,25,000	11,70,000
General Reserve	2,20,000	1,70,000	Furniture & Fittings	1,57,500	1,35,000
Export Profit Reserve	1,50,000	1,25,000	Investments	70,000	50,000
Foreign Project Resere	30,000	20,000	Stock	1,25,000	95,000
	–	10,000	Debtors	1,90,000	1,03,000
			Bank Balance	72,500	52,000

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Profit & Loss A/c	75,000	50,000			
13% Debentures of Rs. 100 each	1,50,000	35,000			
Trade Creditors	45,000	35,000			
Other Current Liabilities	20,000	15,000			
	31,90,000	27,60,000		31,90,000	27,60,000

A Ltd. takes over B Ltd. on 1st April 2010. A Ltd. discharges the purchase consideration as given below :

(i) Issued 2,35,000 equity shares of Rs. 10 each at par to the equity sharesholders of B Ltd.

(ii) Issued 15% preference shares of Rs. 100 each at par to discharge the preference shareholders of B Ltd. at 10% premium.

1. अप्रेल, 2010 को ए लिमिटेड बी. लिमिटेड का अधिग्रहण करती है। ए लिमिटेड क्रय प्रतिफल का भुगतान निम्न प्रकार करती है :

(i) बी लिमिटेड के समता अंशधारियों को 10 रू. वाले 2,35,000 समता अंश सम मूल्य पर निर्गमित किए।

(ii) बी लिमिटेड के पूर्वाधिकार अंशधारियों को 10% प्रब्याजि पर भुगतान करने हेतु 100 रू. वाले 15% पूर्वाधिकार अंश सम मूल्य पर निर्गमित किए।

The debentures of B Ltd. will be converted into equivalent number of debentures of A Ltd. The stautory reserves of B Ltd. are to be maintained for 2 more years.

बी लिमिटेड के ऋणपत्रों को ए लिमिटेड के उतने ही ऋणपत्रों में परिवर्तित कर दिया जायेगा। बी लिमिटेड के वैधानिक संचयों को 2 वर्ष और बनाए रखना है।

Pass necessary journal entries in the books of A Ltd. and also show the balance sheet of A Ltd. after amalgamation on the assumption that the amalgamation is in the nature of purchase.

ए लिमिटेड की पुस्तकों में यह मानते हुए जर्नल प्रविष्टियॉ दीजिए की एकीकरण क्रय की प्रकृति का है तथा 'ए' लिमिटेड का चिट्ठा बनाइए।

Ans. Net assets taken over : Rs. 26,75,000;
Capital Reserve Rs. 1,38,000
Balance Sheet Total Rs. 59,80,000;
Purchase Consideration Rs. 25,37,000

वर्ग (Section) : C
इकाई (Unit) : 2
कम्पनियों के आन्तरिक पुनर्निर्माण का लेखांकन
(Accounting For Internal Reconstruction of Companies)

उद्देश्य

इस इकाई को पढ़कर आप इस योग्य हो सकेंगे कि:

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

- आन्तरिक पुनर्निर्माण तथा बाह्म–पुनर्निर्माण का अर्थ तथा इन दोनों के मध्य अन्तर बता सकें।
- आन्तरिक पुनर्निर्माण की वांछनीय परिस्थितियों को बता सकें।
- पुनर्निर्माण की विधियों को बता सकें।
- अंश पूँजी में परिवर्तन द्वारा आन्तरिक पुनर्निर्माण की विभिन्न विधियों को बता सकें।
- अंश पूँजी में कटौती करने की विधियों को बता सकें।
- आन्तरिक पुनर्निर्माण की लेखांकन विधि को बता सकें।

परिचय

कम्पनी विधान द्वारा निर्मित एक कृत्रिम व्यक्ति है। जिस प्रकार एक प्राकृतिक व्यक्ति के स्वास्थ्य में परिवर्तन होता है उसी प्रकार कम्पनी (जो कि एक कृत्रिम व्यक्ति है) के आर्थिक स्वास्थ्य में भी परिर्वतन आते रहते हैं। कम्पनी के पास एकत्रित हानियॉ इतनी अधिक हो जाती हैं कि उसके अंशधारियों को लाभांश देना सम्भव नहीं हो पाता है जिससे उसे वित्तीय कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में कम्पनी के अस्तित्व को बचाने के लिए उसके आर्थिक स्वास्थ्य की शल्य–क्रिया करना आव यक होता है। **कम्पनी का आन्तरित पुनर्निर्माण एक प्रकार की शल्य क्रिया है जिसमें कम्पनी का अस्तित्व बचाते हुए बीमारी के मुख्य तत्वों को समाप्त कर दिया जाता है ताकि कम्पनी पुनः स्वस्थ जीवन प्रारम्भ कर सके।**

पुनर्निर्माण के प्रकार (Types of Reconstruction) :

किसी कम्पनी का पुनर्गठन या पुनर्निर्माण दो प्रकार से हो सकता है :

1. आन्तरिक पुनर्निर्माण (Internal Reconstruction); rFkk
2- बाह्म–पुनर्निर्माण (Enternal Reconstruction)

आन्तरिक पुनर्निर्माण (Internal Reconstruction)

आन्तरिक पुनर्निर्माण को कम्पनी का अर्द्ध–पुनर्गठन (Quasi-Re-organisation) भी कहते हैं जिसके अन्तर्गत कम्पनी के अस्तित्व को कायम रखते हुए कम्पनी की पूँजी संरचना में इस प्रकार के परिवर्तन किये जाते हैं ताकि वह घाटे की स्थिति से निकलकर लाभ की स्थिति में पहुॅच जावे। इसमें कम्पनी का समापन नहीं होता है।

बाह्म–पुनर्निर्माण (External Reconstruction)

बाह्म–पुनर्निर्माण को कम्पनी का पूर्ण पुनर्गठन (Complete-Re-organisation) भी कहते हैं जिसके अन्तर्गत पुरानी कम्पनी का समापन होता है और उसकी जगह एक नई कम्पनी का निर्माण होता है। बाह्म–पुनर्निर्माण का उद्देश्य पुरानी कम्पनी के व्यवसाय को नई कम्पनी द्वारा परिवर्तित परिस्थितियों में चालू रखना है। इसके अन्तर्गत नई कम्पनी द्वारा पुरानी कम्पनी की अधिकतर सम्पतियों एवं दायित्वों को ले लिया जाता है तथा पुरानी कम्पनी के ही अधिकतर अंशधारी नई कम्पनी के अंशधारी बन जाते हैं।

आन्तरिक पुनर्निर्माण की वांछनीय परिस्थितियॉ
(Desirable Conditions for Internal Reconstruction)

आन्तरिक पुनर्निर्माण निम्नांकित परिस्थितियों में उपयुक्त रहता है :

(i) जब कम्पनी की पूँजी संरचना अत्यधिक असुविधाजनक एवं क्लिट हो जिससे नयी पूँजी प्राप्त करना कठिन हो गया हो।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(ii) जब कम्पनी अति–पूँजीकृत हो अर्थात् जब कम्पनी के चिटठे में सम्पतियॉ वास्तविक मूल्य से बहुत अधिक मूल्य पर दिखायी हुई हों और उन्हें उचित मूल्य पर लाना आवश्यक हो गया हो।

(iii) जब कम्पनी के पास एकत्रित हानियॉ बहुत अधिक हों गयी हों और उन्हें अपलिखित करना आवश्यक हो गया हो ताकि कम्पनी भविष्य में अपने अंशधारियों को लाभांश बांट सके।

(iv) जब कम्पनी का पूँजी मिलान अनुपात (Capital Gearing Ratio) उचित न हो तथा उसमें परिवर्तन करना आवश्यक हो गया।

(v) जब कम्पनी के अंशों के अंकित मूल्य को आकर्षक बनाना हो ताकि भावी विनियोजक उस कम्पनी में विनियोजन कर सके।

आन्तरिक पुनर्निर्माण एवं बाह्य–पुनर्निर्माण में अन्तर
(Difference between Internal Reconstruction and External Reconstruction)

आधार	आन्तरिक पुनर्निर्माण	बाह्य पुनर्निर्माण
1. अस्तित्व	वर्तमान कम्पनी का समापन नहीं होता है।	वर्तमान कम्पनी का समापन होता है।
2. पुनर्गठन	कम्पनी का अर्द्ध–पुनर्गठन होता हैं।	कम्पनी का पूर्ण पुनर्गठन होता है।
3. नई कम्पनी का निर्माण	नई कम्पनी नहीं बनती है बल्कि पुरानी कम्पनी का पुनः पूँजीकरण होता है।	नई कम्पनी का निर्माण होता है।
4. विधि	पूँजी ढांचे में परिवर्तन करके आन्तरिक पुनर्निर्माण किया जाता है।	वैधानिक रूप से नई कम्पनी के निर्माण द्वारा बाह्य पुनर्निर्माण किया जाता है।

उपर्युक्त विवेचना से स्पष्ट है कि आन्तरिक पुनर्निर्माण की प्रमुख विशेषता पूँजी ढांचे में परिर्वतन अर्थात् पुनः पूंजीकरण (Recapitalisation) होता है। पुनः पूंजीकरण अर्थात् आन्तरिक पुनर्निर्माण का आशय निम्नलिखित कार्यों से है :

(I) अंश पूँजी में परिवर्तन करना (Alteration in share capital); rFkk

¼II½ अंश पूँजी में कटौती करना (Reduction in share capital)

अंश पूँजी में परिवर्तन द्वारा आन्तरिक पुनर्निर्माण
(Internal Reconstruction through Alteration in Share Capital)

कम्पनी की सम्पतियों, दायित्वों तथा संचयों में उचित समन्वय स्थापित करने के लिए अंश पूँजी में कटौती किये बिना आन्तरिक पुनर्निर्माण किया जा सकता है। इसके अन्तर्गत कम्पनी की वर्तमान अंश पूँजी संरचना में परिवर्तन किया जाता है। कम्पनी अधिनियम की धारा 94 के अनुसार एक सीमित दायित्व वाली कम्पनी अपनी अंश पूँजी संरचना में परिवर्तन कर सकती है यदि उस कम्पनी के अन्तर्नियम इस कार्य के लिए अनुमति देते हों। वह कम्पनी इसके लिए अपने पार्षद सीमा–नियमों में आवश्यक परिवर्तन भी कर सकती है। अंश पूँजी में परिवर्तन करने के लिए न्यायालय की अनुमति लेने की आवश्यकता नहीं होती है। इस उद्देश्य के लिए कम्पनी की साधारण सभा में प्रस्ताव पारित करवाना ही आवश्यक होता है। कम्पनी अधिनियम की धारा 94 के अनुसार अंश पूँजी में परिवर्तन निम्नांकित विधियों से किया जा सकता है :

(1) नये अंशों के निर्गमन द्वारा अंश पूँजी में वृद्वि करना :

(2) कम मूल्य वाले वर्तमान अंशों का अधिक मूल्य वाले अंशों में समामेकन करना ;

(3) अधिक मूल्य वाले वर्तमान अंशों का कम मूल्य वाले अंशों में उप–विभाजन करना य

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(4) अंशों का स्टॉक में परिवर्तन करना य तथा
(5) अनिर्गमित अंशों को रद्द करना।

यह आवश्यक नहीं है कि कम्पनी का पुनर्निर्माण विपरीत आर्थिक स्थिति में ही हो। एक कम्पनी अपनी सम्पन्न आर्थिक स्थिति में भी सम्पतियों, दायित्वों तथा संचयों में उचित समन्वय स्थापित करने के लिए निम्नांकित तरीकों से आन्तरिक पुनर्निर्माण कर सकती है :

(i) बोनस अंशों के निर्गमन द्वारा य
(ii) ऋणपत्रों को पूर्वाधिकार अंशों अथवा ईक्विटी अंशों में परिवर्तन द्वारा य
(iii) विभिन्न श्रेणी के अंशधारियों के अधिकारों में परिवर्तन द्वारा य तथा
(iv) अंशपूँजी में वृद्वि या कमी द्वारा।

(1) नये अंशों के निर्गमन द्वारा अंश पूँजी में वृद्वि करना
(Increase in Share Capital by Issue of New Shares) :

नये अंशों के निर्गमन द्वारा पूँजी में वृद्वि करने के लिए भारतीय कम्पनी अधिनियम के प्रावधानों का पालना करनी होगी तथा भारतीय प्रतिभूतियॉ तथा विनिमय बोर्ड अर्थात् सेबी (Securities and Exchange Board of India) से अनुमति लेनी होगी। कम्पनी अपनी अंश पूँजी में वृद्वि दो प्रकार से कर सकती है :

(क) निर्गमित अंश पूँजी में वृद्वि करके ; तथा
(ख) अधिकृत अंश पूँजी में वृद्वि करके।

(क) निर्गमित अंश पूँजी में वृद्वि (Increase in the Issued Share Capital) :

इसके लिए अंशों के निर्गमन संबंधी आवश्यक प्रावधानों को ध्यान में रखा जाना चाहिए। कम्पनी अधिनियम की धारा 81 के अनुसार अंशों को सर्वप्रथम कम्पनी के वर्तमान समता अंशधारियों को ही प्रस्तावित किया जाना चाहिए। धारा 81 के इस अधिकार को हकशफा (Pre-emption) अथवा पूर्वक्रय अधिकार कहा जाता है। वर्तमान अंशधारियों को नये अंशों के निर्गमन के लिए आवश्यक जर्नल प्रविष्टियॉ की जाती है।

(ख) अधिकृत अंश पूँजी में वृद्वि करना (Increase in Authorized Share Capital) :

अधिकृत अंश पूँजी में वृद्वि करने के लिए कम्पनी के पार्षद सीमा नियमों (Memorandum of Association) में परिवर्तन किया जाता है। सीमा नियमों में परिवर्तन करने के पश्चात् कम्पनी के चिट्ठे में अधिकृत अंश पूँजी बढी हुई दिखाई जाती है। अधिकृत अंश पूँजी में परिवर्तन करने के लिए अन्य कोई लेखांकन प्रविष्टि नहीं की जाती है।

(2) अंशों का समामेकन (Consolidation of Shares) :

अंशों द्वारा सीमित एक कम्पनी को यह अधिकार है कि वह अपने कम अंकित मूल्य वाले अंशों को अधिक अंकित मूल्य वाले अंशों में परिवर्तन कर दे। इस प्रक्रिया को अंशों का समामेकन (**Consolidation of Shares**) कहते हैं। इससे निर्गमित अंशों की संख्या पहले से कम हो जाती है इसलिए कम्पनी के सदस्यों के रजिस्टर में भी सदस्यों को निर्गमित अंशों की संख्या में परिवर्तन किया जाता है। परन्तु चुकता अंश पूँजी (Paid up Share Capital) की राशि में कोई परिवर्तन नहीं होता है। यदि ऐसे अंश पूर्ण प्रदत्त न हों तो ध्यान रखना चाहिए कि समामेकन के बाद अंशों के चुकता मूल्य तथा अंकित मूल्य का वही अनुपात रहे जो कि समामेकन से पूर्व था। उदाहरणार्थ– एक कम्पनी ने दस रूपये अंकित मूल्य वाले एक लाख अंशों का जिन पर मांगी गई राशि 8 रूपये प्रति अंश है, 100 रूपये अंकित मूल्य वाले अंशों में बदलने का निर्णय किया। इस स्थिति में कम्पनी द्वारा प्रत्येक दस अंशों के धारक को 100 रूपये अंकित मूल्य वाला एक अंश जारी किया जावेगा। जिस पर मॉगी गई तथा चुकता पूँजी राशि 80 रूपये मानी जावेगी।

अंशों के समामेकन के लिए कम्पनी की लेखा पुस्तकों में निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टि की जाती है :
Share Capital A/c (पुराना अंकित मूल्य)   Dr.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

To (नया अंकित मूल्य) Share Capital A/c
(….Share of Rs….each consolidated into…..share of Rs….each)

उदाहरण (Illustration) 1 :

A Company converts its share capital of 1,50,000 equity shares of Rs. 10 each fully paid up into equity shares of Rs. 100 each fully paid up. Give necessary journal entry.

एक कम्पनी अपने 10 रूपये वाले पूर्णप्रदत्त 1,50,000 समता अंशों का 100 रूपये पूर्णप्रदत्त अंशों में परिवर्तन करती है। आवश्यक जर्नल प्रविष्टि दीजिए।

हल (Solution) :

		Rs.	Rs.
Equity Share Capital (of Rs. 10 each) A/c	Dr.	15,00,000	
To Equity Share Capital (of Rs.100 each) A/c			15,00,000
(Consolidation of shares)			

टिप्पणी :

यदि प्रश्न में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियॉ (Necessary Journal Entries) लिखा हुआ हो तो उपर्युक्त जर्नल प्रविष्टि के स्थान पर निम्नांकित दो जर्नल प्रविष्टियॉ की जावेगी :

		Rs.	Rs.
(i) Equity Share Capital (of Rs. 10 each) A/c	Dr.	15,00,000	
To Equity Share holders A/c			15,00,000
(ii) Equity Share holders A/c	Dr.	15,00,000	
To Equity Share Capital (of Rs. 100 each) A/c			15,00,000

---

(3) अंशों का उप–विभाजन (Sub-division of shares) : जब कम्पनी अपने वर्तमान अधिक अंकित मूल्य वाले अंशों को कम अंकित मूल्य वाले अंशों में परिवर्तित करती है तो इसे अंशों का उप–विभाजन कहते हैं। अंशों द्वारा सीमित एक कम्पनी अपने अंशों का उप–विभाजन कर सकती है परन्तु इसके लिए आवश्यक है कि उप–विभाजन के पश्चात् नये अंशों के चुकता मूल्य तथा अंकित मूल्य के अनुपात में परिवर्तन नहीं होना चाहिए। अंशों के उप–विभाजन से चुकता अंश पूॅजी या निर्गमित अंश पूॅजी की राशि प्रभावित नहीं होती है लेकिन इससे निर्गमित अंशों की संख्या पहले से अधिक हो जाती है। अंशों का उप–विभाजन प्रायः छोटे विनियोजकों को आकर्षित करने के लिए किया जाता है।

उदाहरण (Illustration) 2 :

Mohan Ltd. decided to sub-divide its 50,000 Equity Shares of Rs. 100 each Rs. 80 paid up, into equity shares having face value of Rs. 10 each. Pass necessary journal entry.

मोहन लिमिटेड 100 रूपये वाले 80 रूपये प्रदत्त 50,000 समता अंशों को 10 रूपये अंकित मूल्य वाले अंशों में उप–विभाजन करने का निश्चय करती है। आवश्यक जर्नल प्रविष्टि दीजिए।

हल (Solution) :

नये समता अंशों की संख्या = $50,000 \times \frac{100}{10} = 5,00,000$

नये एक अंश का चुकता मूल्य = Rs. $\frac{80}{100} \times 10$ = Rs. 8

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Journal of Mohan Ltd.

		Rs.	Rs.
(Rs. 100) Equity Share Capital A/c To (Rs.10) Equity Share Capital A/c (Sub-division of shares made as per………)	Dr.	40,000	 40,000

(4) अंशों को स्टॉक में बदलना (Conversion of Shares into Stock)–

कम्पनी अधिनियम, 1956 की धारा 94(1) के अनुसार कम्पनी अपने पूर्ण प्रदत्त अंशों को स्टॉक में अथवा स्टॉक को पूर्ण प्रदत्त अंशों में परिवर्तित कर सकती है। अंशों को स्टॉक में बदलने पर सदस्यों के पास अंशों की निश्चित संख्या के स्थान पर स्टॉक पूँजी का एक निश्चित भाग होता है। स्टॉक समान तथा क्रमबद्ध भागों में विभाजित नहीं होता है। अंशों की तरह स्टॉक के क्रमांक नहीं होते हैं इसलिए अंशों को स्टॉक में परिवर्तित करने से किसी भी मूल्य की स्टॉक पूँजी को किसी अन्य को हस्तान्तरित किया जा सकता है। ऐसे परिवर्तन की सूचना एक माह के भीतर कम्पनियों के रजिस्ट्रार को देनी आवश्यक है। कम्पनी द्वारा सदस्यों के रजिस्टर में भी अंशों की संख्या के बजाय स्टॉक की राशि दर्ज कर दी जाती है। कम्पनी चाहे तो स्टॉक का पुनः अंशों में परिवर्तन कर सकती है। ऐसे परिवर्तन पर निम्नांकित जर्नल प्रविष्टियों की जाती हैं–

(क) अंशों का स्टॉक में परिवर्तन करने पर :

Equity Share Capital A/c Dr.
To Equity Stock A/c
(……..Equity Shares of Rs. ………each fully paid up converted into equity stock of Rs. ……..)

(ख) अंशों का स्टॉक में परिवर्तन करने पर :

Equity Stock A/c Dr.
To Equity Share Capital A/c
(Equity Stock of Rs. ……… converted into ………equity shares of Rs. …….each fully paid up.)

उदाहरण (Illustration) 3 :

Pankaj Ltd. Converts its 20,000 equity shares of Rs. 100 each fully paid up into equity stock of Rs. 20,00,000 on 30th June, 2009 and then reconverts the equity stock into equity shares of Rs. 10 each fully paid up on 30th April 2010. Give journal entries and show the items in the Balance Sheets as on 31st March, 2010 and 31st March, 2011.

पंकज लिमिटेड 30 जून, 2009 को अपने 100 रू. वाले पूर्ण प्रदत्त 20,000 ईक्विटी अंशों को 20,00,000 रू. के ईक्विटी स्टॉक में परिवर्तित करती है तथा फिर 30 अप्रैल, 2010 को ईक्विटी स्टॉक को 10 रू. वाले पूर्ण प्रदत्त ईक्विटी अंशों में पुनः परिवर्तित करती है। जर्नल प्रविष्टियॉ दीजिए तथा 31 मार्च, 2010 तथा 31 मार्च 2011 को चिट्ठों में मदों को दिखाइए

हल (Solution) :

Journal of Pankaj Ltd.

			Rs.	Rs.
2009 June, 30	Equity Share Capital A/c To Equity Stock A/c (20,000 equity shares of Rs. 100 each fully paid up converted into equity stock of Rs. 20,00,000)	Dr.	20,00,000	20,00,000
2010 April, 30	Equity Stock A/c To Equity Share Capital A/c	Dr.	20,00,000	 20,00,000

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

	(Equity stock of Rs. 20,00,000 converted into 2,00,000 equity shares of Rs. 10 each fully paid up.)		

Balance Sheet of Pankaj Ltd. As on 31st March,2010
(Liabilities side only)

	Rs.
Authorized Share Capital	………….
Issued and subscribed capital :	
Equity Stock	20,00,000

Balance Sheet of Pankaj Ltd. As on 31st March,2011
(Liabilities side only)

	Rs.
Authorized Share Capital	………….
Issued and subscribed capital :	
2,00,000 Equity Shares of Rs. 10 each fully paid up.	20,00,000

(5) अनिर्गमित अंशों को रद्द करना (Cancellation of un-issued shares) :

एक कम्पनी द्वारा अपने समस्त अनिर्गमित अंशों को रद्द करना कम्पनी की अंश पूँजी में कटौती नहीं मानी जाती है। चूँकि ऐसे अंशों के सम्बन्ध में कम्पनी की पुस्तकों में कोई लेखा किया हुआ नहीं होता है, इसलिए इनको रद्द करने के लिए भी कोई लेखा प्रविष्टि नहीं की जाती है केवल कम्पनी के स्थिति विवरण में अधिकृत अंश पूँजी में आवश्यक समायोजन कर दिया जाता है।

उदाहरण (Illustration) 4 :

On 31st March 2010 the Balance Sheet of Richa Ltd. was as under.

31 मार्च, 2010 को ऋचा लिमिटेड का चिट्ठा निम्न प्रकार था

Liabilities	Amount Rs.	Assets	Amount Rs.
Share Capital :		Land and Buildings	92,00,000
Authorized Issued and Subscribed Capital		Plant and Machinery	48,00,000
		Furniture and Fixtures	14,00,000
4,80,000 Equity shares of Rs. 10		Investment	16,00,000
each fully paid up	48,00,000	Stock-in-hand	22,00,000
4,00,000 12% Preference Shares of Rs.		Sundry Debtors	14,00,000
10 each, fully paid up	40,00,000	Cash and Bank Balance	6,00,000
Profit and Loss A/c	80,00,000		
11% Debentures	24,00,000		
Bank Loan	12,80,000		
Sundry Creditors	7,20,000		
Total	2,12,00,000	Total	2,12,00,000

For implementation of the expansion programme , the company passed the following reorganization scheme :

(1) The authorized share capital of the company to be increased to Rs. 2,40,00,000 divided into 20,00,000 equity shares of Rs. 10 each and 4,00,000 10% preference share of Rs. 10 each.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(2) The balance of Profit & Loss is to be capitalized for issue of equity bonus shares to the extent of Rs. 46,00,000.

(3) The company decided to issue three bonus shares of Rs.10 each for every four equity shares held.

(4) Such shareholders who agree to convert their 12% preference shares into 10% preference shares of equal number were to be allotted one bonus share of Rs. 10 each for every 4 preference shares converted.

(5) The holders of 11% Debentures have an option either to convert their holding into equity share of Rs. 10 each at a premium of 20% or to receive cash in full settlement at par.

(6) The remaining equity shares were offered to the existing shareholders at a premium of 20%.

The reorganization expenses incurred amounting to Rs. 40,000. Assuming that all the preference shareholders and 90% of the debenture holders exercised their option of conversion and complete amount on issue of equity shares was received at the time of application, give necessary journal entries and draft balance sheet after reorganization.

विस्तार कार्यक्रम की क्रियान्विति के लिए कम्पनी ने निम्नलिखित पुनर्गठन योजना स्वीकृत की है :

(1) कम्पनी की अधिकृत अंश पूँजी को 2,40,00,000 रू. तक बढ़ाया जाये जो कि 10 रू. वाले 20,00,000 ईक्विटी अंशों में एवं 10 रू. वाले 4,00,000 10% पूर्वाधिकार अंशों में विभाजित हो।

(2) लाभ हानि–खाते के शेष का 46,00,000 रु. की सीमा तक बोनस ईक्विटी अंशों के निर्गमन के लिए पूँजीकरण किया जाये।

(3) कम्पनी ने यह निश्चय किया कि प्रत्येक 4 ईक्विटी अंशों के धारकों को 10 रू. वाले 3 बोनस अंश निर्गमित किये जायें।

(4) जो अंशधारी अपने 12: पूर्वाधिकार अंशों को बराबर संख्या में 10: पूर्वाधिकार अंशों में बदलवाने को सहमत हो जाते हैं, उन्हे प्रत्येक 4 पूर्वाधिकार अंशों के बदले एक 10 रू. वाला एक बोनस अंश दिया जाय।

(5) 11% ऋणपत्रधारकों को यह विकल्प है कि वे या तो अपने ऋणपत्रों को 10 रू. वाले ईक्विटी अंशों में 20: प्रीमियम पर परिवर्तित करवालें अथवा सम मूल्य पर नकद राशि पूर्ण भुगतान के रूप में प्राप्त कर लें।

(6) शेष ईक्विटी अंश वर्तमान अंशधारियों को 20: प्रीमियम पर प्रस्तावित किये गये।

पुनर्गठन व्यय 40,000 रू हुए। यह मानते हुए कि सभी पूर्वाधिकार अंशधारियों एवं 90: ऋणधारियों ने अपने परिवर्तन के विकल्प का प्रयोग किया है तथा ईक्विटी अंशों की समस्त राशियां अंशों के आवेदन के साथ ही प्राप्त हो गई हैं, आवश्यक जर्नल प्रविष्टियॉ दीजिए एवं पुनर्गठन के बाद का चिट्ठा बनाइए।

हल (**Solution**) :

Journal of Richa Ltd.

Date	Particulars	Amount	
		Dr.	Cr.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

2010		Rs.	Rs.
April 1	Profit & Loss Appropriation A/c Dr. To Bonus to Shareholders A/c (Amount transferred from P & L Appropriation A/c for issue of bonus shares.)	46,00,000	 46,00,000
April 1	12% Preference Share Capital A/c Dr. To 10% Preference Share Capital A/c (12% Preference Share Capital converted into 10% Preference Share Capital.)	40,00,000	 40,00,000
April 1	Bonus to Shareholders A/c Dr. To Equity Share Capital A/c (3,60,000 and 1,00,000 Equity Shares of Rs. 10 each issued as bonus shares to Equity shareholders and Preference shareholders respectively as per reorganization scheme.)	46,00,000	 46,00,000
April 1	11% Debentures A/c Dr. To Debenture holders A/c (Amount transferred in Debenture-holders A/c)	24,00,000	 24,00,000
April 1	Debenture holders A/c Dr. To Equity Share Capital A/c To Securities Premium A/c (90% of Debenture holders converted their claim into Equity Shares at a Premium of 20%)	21,60,000	 18,00,000 3,60,000
April 1	Bank A/c Dr. To Equity Share Application & Allotment A/c (Application money received on 8,80,000 Equity Shares @ Rs. 12 per share)	1,05,60,000	 1,05,60,000
April 1	Equity Share Application & Allotment A/c Dr. To Equity Share Capital A/c To Securities Premium A/c (Allotment made.)	1,05,60,000	 88,00,000 17,60,000
April 1	Debenture holders A/c Dr. To Bank A/c (Remaining 10% debenture holders paid off)	2,40,000	 2,40,000
April 1	Reorganization Expenses A/c Dr. To Bank A/c (Reorganization expenses incurred.)	40,000	 40,000
April 1	Securities Premium A/c Dr. To Reorganization Expenses A/c (Reorganization expenses written off)	40,000	 40,000

Balance Sheet of Richa Ltd. (and Reduced)
As on April 1,2010
(After Reconstruction)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Liabilities	Amount	Assets	Amount
Share Capital :		**Fixed Assets** :	
Authorized and Issued		Land and Buildings	92,00,000
4,00,000 12% Preference Shares of Rs. 10 each,	40,00.000	Plant and Machinery	48,00,000
		Furniture and Fittings	14,00,000
20,00,000 equity shares of Rs. 10 each	2,00,00,000	**Investments**	16,00,000
	2,40,00,000	**Current Assets, Loans and Advances**	
Issued and Subscribed :			
4,00,000 10% Preference shares of Rs. 10 each fully paid up.	40,00,000	Stock-in-hand	22,00,000
		Sundry Debtors	14,00,000
20,00,000 Equity shares of Rs. 10 each fully paid up	2,00,00,000	Cash and Bank Balance (Rs. 6,00,000+1,05,60,000-2,40,000-40,000)	1,08,80,000
(6,40,000 shares were issued for consideration other than cash)			
Reserve and surplus :			
Securities Premium	20,80,000		
Profit and Loss Account	34,00,000		
Secured Loans :			
Bank Loan	12,80,000		
Current Liabilities and Provisions	7,20,000		
	3,14,80,000		3,14,80,000

टिप्पणी :

(1) 20,00,000 ईक्विटी अंशों के निर्गमन का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार है :

		अंशों की संख्या
(i) योजना के पहले से ही निर्गमित अंश	=	4,80,000
(ii) ईक्विटी अंशधारियों को निर्गमित बोनस अंश 4,80,000 X 3/4	=	3,60,000
(iii) पूर्वाधिकार अंशधारियों को निर्गमित बोनस अंश 4,00,000 X 1/4	=	1,00,000
(iv) ऋणपत्रधारियों को उनके 90: भाग के लिए 12 रू. प्रति अंश की दर से निर्गमित अंशों की संख्या $24,00,000 \times \frac{90}{100} \times 1/12$	=	1,80,000
	योग	11,20,000
(v) शेष अंश नकद निर्गमित किये गये अर्थात् (20,00,000-11,20,000)		8,80,000
कुल निर्गमित अंश		20,00,000

(2) अधिकृत अंश पूँजी बढ़ाने के लिये कोई प्रविष्टि नहीं की जाती है।

(3) ऐसे ऋणपत्रधारी, जिन्होंने अपने ऋणपत्रों को ईक्विटी अंशों में परिवर्तित नहीं किया, को नकद भुगतान कर दिया गया है।

(4) पुनर्गठन सम्बन्धी व्ययों को जो पूँजीगत व्यय है, प्रतिभूति प्रीमियम खाते से अपलिखित कर दिया गया है।

अंश पूँजी में कटौती द्वारा आन्तरिक पुनर्निर्माण
(Internal Reconstruction through Reduction in Share Capital)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

आपने अभी तक यह अध्ययन किया कि आन्तरिक पुनर्निर्माण की योजना प्रदत पूँजी में कमी किये बिना किस प्रकार की जा सकती है। अब आपको यह बताया जा रहा है कि प्रदत अंश पूँजी में कमी करके आन्तरिक पुनर्निर्माण की योजना किस प्रकार से लागू की जा सकती है।

कम्पनी अधिनियम, 1956 की धारा 100 से 105 के अन्तर्गत दी हुई व्यवस्थाओं के अनुसार एक कम्पनी अपनी अंश पूॅजी में कटौती कर सकती है। लेखांकन के उद्देश्य से अंश पूॅजी में कटौती के लिए कम्पनी को निम्नलिखित शर्तों की पूर्ति करनी होती है–

(अ) कम्पनी के पार्षद अन्तर्नियम कम्पनी को पूॅजी में कटौती करने की अनुमति प्रदान करते हों ;
(ब) कम्पनी ने इस उद्देश्य के लिए एक विशेष प्रस्ताव पारित किया हो, तथा
(स) न्यायालय द्वारा अंश पूॅजी में कटौती की योजना को स्वीकृति प्रदान कर दी गयी हो।

जब कम्पनी अपनी अंश पूॅजी में कटौती करने का विशेष प्रस्ताव पास कर देती है तो वह इसकी स्वीकृति के लिए न्यायालय को आवेदन करती है। यदि अंश पूॅजी में कटौती की योजना के अन्तर्गत अंशधारियों के दायित्व में कमी नहीं होती है या आवश्यकता से अधिक पूॅजी उन्हें वापस नहीं लौटाई जाती है तो न्यायालय लेनदारों की सहमति लिये बिना ही पूॅजी में कमी की योजना को अनुमोदित कर देता है। लेकिन पूॅजी में कमी की योजना से अंशधारियों के दायित्व में कमी होती है या उन्हें पूॅजी वापस लौटाई जाती है तो न्यायालय कम्पनी के प्रत्येक लेनदार को अपना पक्ष रखने का अवसर प्रदान करता है। यदि लेनदार अंश पूॅजी में कमी का विरोध करते हैं तो ऐसे लेनदारों की एक सूची तैयार की जाती है। न्यायालय एक सूचना प्रकाशित करके एक निश्चित समय के अन्दर अन्य लेनदारों को भी इस सूची में शामिल कर सकता है। न्यायालय ऐसे लेनदारों की अंश पूॅजी में कटौती के लिए सहमति प्राप्त करने अथवा उनकी सम्पूर्ण राशि का भुगतान करने का आदेश दे सकता है।

यदि न्यायालय इस बात से सन्तुष्ट है कि लेनदारों की अंश पूॅजी में कटौती के लिए सहमति प्राप्त कर ली गई है या उनके दावों का निपटारा कर दिया गया है अथवा उनके हित सुरक्षित हैं तो वह अंश पूॅजी में कमी की योजना का अनुमोदन कर देता है। यदि न्यायालय आवश्यक समझे तो इसके सम्बन्ध में कुछ शर्तें भी निर्धारित कर सकता है तथा एक निश्चित अवधि तक कम्पनी के नाम के साथ 'And Reduced' शब्द जोड़ने का आदेश भी दे सकता है। जहॉ पर न्यायालय द्वारा कम्पनी को 'And Reduced' शब्द जोड़ने का आदेश दिया जाता है, वहॉ पर निर्धारित अवधि की समाप्ति तक ये शब्द कम्पनी के नाम का अंग माने जायेंगे। न्यायालय कम्पनी को सामान्य जनता की सूचनार्थ अंश पूॅजी में कटौती के कारणों तथा अन्य किसी सूचना को प्रकाशित करने का आदेश दे सकता है। पूॅजी में कटौती की योजना न्यायालय द्वारा अनुमोदित कर दिये जाने पर कम्पनी द्वारा कम्पनियों के रजिस्ट्रार को न्यायालय के आदेश की प्रमाणित प्रतिलिपि तथा अंश पूॅजी की राशि, अंशों की संख्या, प्रत्येक अंश की अंकित राशि तथा प्रदत्त राशि का एक विवरण प्रस्तुत किया जायेगा। रजिस्ट्रार द्वारा न्यायालय के आदेश तथा प्रस्तुत विवरण का पंजीयन करने के बाद अंश पूॅजी में कमी का आदेश प्रभावशाली हो जावेगा।

अंश पूॅजी में कटौती करने की विधियॉ
(Methods of Reduction in Share Capital)

एक कम्पनी अपनी अंश पूॅजी में निम्नलिखित तीन विधियों से कटौती कर सकती है :
(1) अंशों पर अदत राशि में कटौती करके ;
(2) आवश्यकता से अधिक पूॅजी को अंशधारियों को लौटाकर ; तथा
(3) प्रदत्त अंशपूँजी में कटौती करके।

अंश पूँजी में कटौती का कम्पनी की पुस्तकों में लेखांकन

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(Accounting For Reduction in Share Capital)

कम्पनी की अंश पूँजी में कटौती करने की उपर्युक्त तीन विधियों के अन्तर्गत लेखे निम्न प्रकार से किये जाते हैं :

(1) अंशों पर अदत राशि में कटौती करके (Reducing unpaid amount of the Shares) :

यदि कम्पनी द्वारा निर्गमित अंश पूर्णदत नहीं हो तो कम्पनी ऐसे अंशों की अदत राशि के सम्बन्ध में दायित्व को आंशिक रूप से अथवा पूर्ण रूप से समाप्त कर सकती है। इस प्रकार अंशों पर अदत राशि संबंधी दायित्व को समाप्त कर दिये जाने से कम्पनी की प्रदत्त पूँजी में कोई कमी नहीं होती है बल्कि कम्पनी अदत राशि मॉगने के अपने अधिकार को त्याग देती है तथा अंशधारियों का अदत पूँजी सम्बन्धी दायित्व समाप्त हो जाता है। इस प्रकार से अंश पूँजी में कटौती करने पर निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टि की जाती है :

(पुराना अंकित मूल्य) Share Capital A/c Dr.
To (u;k vafdr ewY;) Share Capital A/c
(Uncalled amount of Rs…..per share cancelled.)

उदाहरण (Illustration) 5 :

A Company has an issued Share capital of 2,00,000 equity shares of Rs. 100 each, Rs. 80 called and paid up. Having complied with the formalities, the company decided to reduce the share of Rs. 100 to the share of Rs. 80 as fully paid up by cancelleing unpaid amount of Rs. 20 per share. Pass necessary journal entry and show share capital in balance sheet of the company after cancellation.

एक कम्पनी की निर्गमित अंश पूँजी 100 रू. वाले 2ए00ए000 ईक्विटी अंशों में विभक्त हैं जिन पर 80 रू. प्रति अंश मांगा तथा चुकाया जा चुका है। समस्त वैधानिक औपचारिकताओं को पूर्ण करके कम्पनी ने अपने 100 रू. वाले अंशों को 80 रू. पूर्ण प्रदत्त तक कम करके 20 रू. प्रति अंश की अदत राशि को रद्द करने का निश्चय किया है। आवश्यक जर्नल प्रविष्टि दीजिए तथा रद्द किये जाने के पश्चात् अंश पूँजी को कम्पनी के चिट्ठे में दिखाइए।

हल (Solution) :

Journal

	Rs.	Rs.
(Rs. 100) Equity Share Capital A/c Dr.	1,60,00,000	
To (Rs. 80) Equity Share Capital A/c		1,60,00,000
(Uncalled amount of Rs. 20 per share on 2,00,000 Equity Shares cancelled.)		

Balance Sheet
as on……..
(Liabilities side only)

	Rs.
Authorised Share Capital	…………
Issued and Subscribed Share Capital :	
2,00,000 Equity Shares of Rs. 80 each fully paid up.	1,60,00,000

(2) आवश्यकता से अधिक पूँजी को अंशधारियों को लौटाना
(Paying-off surplus capital to shareholders):

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

यदि कम्पनी के पास आवश्यकता से अधिक पूँजी एकत्रित हो गयी है तो वह इस अधिक पूँजी को अंशधारियों को लौटा सकती है। लेनदारों की आपति को दूर करके तथा कम्पनी अधिनियम की व्यवस्थाओं की पालना करते हुए अंश पूँजी वापस की जा सकती है। अंशधारियों को पूँजी नकद में वापस लौटायी जाती है तथा निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टियाँ की जाती हैं :

(प) जब अंशों के अंकित मूल्य में परिवर्तन किया जाये–

(पुराना अंकित मूल्य) Share Capital A/c Dr. (पुरानी प्रदत पूँजी की कुल राशि से)
To (नया अंकित मूल्य) Share Capital A/c (नयी पूँजी की राशि से)
To Sundry Shareholders A/c (लौटायी जाने वाली राशि से)
(Conversion of share of Rs. …..into share of Rs…….each fully paid and refund of Rs……per share on …..shares.)

Sundry Shareholders A/c Dr.
To Bank A/c
(Payment made to Shareholders.)

(ii) जब अंशों के अंकित मूल्य में परिवर्तन न किया जाये–

Share Capital A/c Dr. (लौटायी जाने वाली राशि से)
To Sundry Shareholders A/c
(Rs…..per share on…..shares refunded to shareholders)

Sundry Shareholders A/c Dr.
To Bank A/c
(Payment made to shareholders.)

उदाहरण (Illustration) 6 :

A Company has a subscribed capital of Rs. 25,00,000 divided into 25,000 equity shares of Rs. 100 each fully paid up. The company decided to repay Rs. 20 per share to equity shareholders. Give necessary journal entries in the books of the company if :

(i) Shares are made of Rs. 80 each fully paid; and
(ii) Face value of Shares is unchanged.

एक कम्पनी की प्रार्थित पूँजी 25,00,000 रू. है जो कि 100 रू. वाले पूर्णदत 25,000 ईक्विटी अंशों में विभाजित है। कम्पनी ने ईक्विटी अंशधारियों को 20 रू. प्रति अंश लौटाने का निश्चय किया है। कम्पनी की पुस्तकों में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियॉ दीजिए यदि :

(i) अंशों को 80 रू. प्रति अंश पूर्णदत बना दिया जाता है य
(ii) अंशों का अंकित मूल्य अपरिवर्तित रहता है।

हल (Solution) :

(i) जब अंशों को 80 रू. प्रति अंश पूर्णदत बना दिया जाता है :

Journal of ………

Date	Particulars	L.F.	Dr.	Cr.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

	(Rs. 100) Equity Share Capital A/c Dr. To (Rs. 80) Equity Share Capital A/c To Equity Shareholders A/c (Conversion of Rs. 100 equity shares into Rs. 80 fully paid up equity shares and refunded Rs. 20 per equity share on 25,000 equity shares.)		Rs. 25,00,000	Rs. 20,00,000 5,00,000
	Equity Shareholders A/c Dr. To Bank A/c (Payment made to equity shareholders.)		5,00,000	 5,00,000

(ii) जब अंशों का अंकित मूल्य अपरिवर्तित रहता हैः

Journal of …….

Date	Particulars	L.F.	Dr.	Cr.
	Equity Share Capital A/c Dr. To Equity Shareholders A/c (Rs. 20 per share on 25,000 equity shares being refunded to equity shareholders)		Rs. 5,00,000	Rs. 5,00,000
	Equity Share Capital A/c Dr. To Bank A/c (Payment made to equity shareholders)		Rs. 5,00,000	Rs. 5,00,000

(3) प्रदत अंश पूँजी में कटौती करना (**Reduction in paid up share Capital**) :

जब कम्पनी निरन्तर रूप से हानि की स्थिति में चल रही हो तो उसके चिट्ठे में काल्पनिक सम्पतियां तथा एकत्रित हानियां यथा लाभ–हानि खाते का नाम शेष, प्रारम्भिक व्यय, आदि बहुत अधिक दिखायी देती हैं। ऐसी स्थिति में वास्तव में कम्पनी के पास उतनी पूँजी नहीं रहती है जितनी चिट्ठे में दिखाई हुए है वरन् एकत्रित हानियों तथा काल्पनिक सम्पतियों की राशि तक की पूँजी नष्ट हो चुकी होती है। **ऐसी स्थिति में कम्पनी रोगग्रस्त हो जाती है जिसके उपचार हेतु शल्य चिकित्सा के रूप में ' पूँजी कटौती कार्यक्रम ' (Capital Reduction Programme) लागू किया जाता है**। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत खोई हुई पूँजी को अपलिखित करने के लिए प्रदत अंश पूँजी में कमी की जाती है, तथा अंशधारियों या अन्य पक्षकारों से नयी पूँजी की व्यवस्था करवायी जाती है। पूँजी कटौती कार्यक्रम का निर्माण संचालकों द्वारा कम्पनी अधिनियम, 1956 की धारा 100 के प्रावधानों को ध्यान में रखते हुए किया जाता है। सबसे पहले अंशधारियों की बैठक बुलाकर उनके सम्मुख प्रदत पूँजी में कमी का प्रस्ताव रखा जाता है। इस प्रस्ताव को अंशधारी यदि मान लेते है तो उनकी प्रदत पूँजी में कमी कर दी जाती है। यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि अंशधारियों की पूँजी में कमी की सहमति तभी प्राप्त हो सकती है जबकि उन्हें विश्वास हो जावे कि रोगग्रस्त कम्पनी के रोग का एक बार इलाज कर देने पर वह कम्पनी नये रूप में व्यवसाय करके लाभ कमा सकेगी। यदि कम्पनी की संचित हानियां बहुत अधिक हो तो ऋण पत्रधारियों तथा लेनदारों को भी त्याग करने के लिए कहा जाता है।

पूँजी कटौती कार्यक्रम लागू करने के लिए कम्पनी की पुस्तकों में एक खाता खोला जाता है जिसे ' पूँजी कटौती खाता ' (Capital Reduction Account) कहते है। इस खाते में अंशधारियों, ऋणपत्रधारियों, लेनदारों तथा अन्य पक्षकारों के द्वारा त्यागी गई राशि जमा (Credit) की जाती है तथा संचित हानियों एवं कृत्रिम सम्पतियों को अपलिखित करने के लिए इस खाते में इनकी राशि को नाम (Debit) किया जाता है। दायित्वों तथा सम्पतियों का पुनर्मूल्यांकन किया जाता है तथा पुनर्मूल्यांकन पर लाभ की राशि को पूँजी कटौती

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

खाते में जमा तथा हानि की राशि को नाम किया जाता है। पूँजी कटौती खाते का नाम (Debit) शेष नहीं हो सकता है बल्कि जमा शेष बच सकता है। **इस खाते के जमा शेष को पूँजीगत संचय खाते** (Capital Reserve A/c) में अन्तरित कर दिया जाता है।

पूँजी कटौती खाते को ही पुनर्निर्माण खाता तथा पुर्नगठन खाता (Reconstruction Account) भी कहते हैं। सम्पतियों के पुनर्मूल्यांकन पर लाभ होता है तो पूँजी कटौती खाते की जगह पुनर्निर्माण खाता खोला जाना चाहिए।

पूँजी कटौती कार्यक्रम के अन्तर्गत लेखांकन
(Accounting for Capital Reduction Programme)

पूँजी कटौती कार्यक्रम के अन्तर्गत लेखांकन निम्न प्रकार किया जाता है :

(i) जब खोई हुई चुकता अंश पूँजी को रद्द करना हो तो निम्न प्रविष्टियां की जावेगी :

(अ) जब अंशों के अंकित मूल्य को घटा दिया जावे –

(पुराना अंकित मूल्य) Share capital A/c	Dr.	(पुराने पूँजी खाते के शेष से)
To (नया अंकित मूल्य) Share Capital A/c		(नयी पूँजी की राशि से)
To Capital Reduction A/c		(पूँजी में कमी की राशि से)

(ब) जब अंशों के अंकित मूल्य में परिवर्तन किये बिना ही प्रदत अंश पूँजी घटाई जाये–

Share Capital A/c	Dr.	(पूँजी में कमी की राशि से)
To Capital Reduction A/c		

(ii) यदि संचय (आयगत, पूँजीगत या अन्य सभी प्रकार के) खाते में जमा शेष हो तो उसे पूँजी कटौती खाते में स्थानान्तरित किया जाता है। संचयों की राशि को आन्तरित करने के लिए निम्न प्रविष्टि की जायेगी :

Capital Reserve A/c	Dr.
General Reserve A/c	Dr.
(Particular) Reserve A/c	Dr.
To Capital Reserve A/c	

(iii) कभी–कभी लेनदार तथा ऋण–पत्रधारी भी त्याग करने के लिए सहमत हो जाते हैं। इस स्थिति में उनके दावों (Claims) में भी कमी की जाती है। इस कमी की राशि से निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टि की जायेगी :

Creditors A/c	Dr.	(त्यागी गई राशि से)
Debentures A/c	Dr.	(त्यागी गई राशि से)
To Capital Reduction A/c		

(iv) किसी सम्पति के पुनर्मूल्यांकन के फलस्वरूप यदि उसके मूल्य में वृद्वि हो तो वृद्वि की राशि से निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टि की जायेगी–

Asset A/c	Dr.
To Capital Reduction A/c	

इसी प्रकार कम्पनी को यदि अन्य कोई लाभ उत्पन्न हो, तो उक्त लाभ की राशि ' पूँजी कमी खाते ' में क्रेडिट कर दी जायेगी।

(v) पूँजी कमी खाते में क्रेडिट की गई राशि का उपयोग व्यापारिक हानियों, विशेष हानियों ख्याति की राशि, कृत्रिम सम्पतियों एवं मूर्त व अमूर्त सम्पतियों में कमी करने के लिए किया जाए तो निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टि की जायेगी :

Capital Reserve A/c Dr.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

To Profit and Loss A/c
To Discount on Issue of Debentures A/c (अपलिखित की जाने वाली राशि से)
To Preliminary Expenses A/c
To Goodwill A/c
To Patents A/c
To (Particular) Asset A/c

(vi) किसी सम्भावित दायित्व (Contingent Liability) के लिए यदि प्रबन्ध किया जावे, तो निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टि की जायेगी–

Capital Reduction A/c Dr.
To (Particular) Liability A/c

(vii) विभिन्न हानियों को ' पूँजी कटौती खाते ' से अपलिखित करने के बाद भी यदि पूँजी कटौती खाते में कोई शेष बचता है, तो उसे पूँजी संचय खाते (Capital Reduction Account) में स्थानान्तरित कर देना चाहिए। इसके लिए निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टि की जावेगी–

Capital Reduction A/c Dr
To Capital Reserve A/c

चिट्ठे में प्रदर्शन (Disclosure in Balance Sheet) :

आन्तरिक पुनर्निर्माण की योजना के क्रियान्वयन के पश्चात् चिट्ठा बनाते समय निम्न बिन्दुओं को ध्यान में रखना चाहिए :

(1) यदि न्यायालय ने निर्देश दिया हो कि कम्पनी के नाम के साथ 'And Reduced ' शब्द लगाने हैं तो चिट्ठे के शीर्षक में 'And Reduced ' शब्द लगाये जाने चाहिए।

(2) पुनर्निर्माण की योजना के अन्तर्गत यदि स्थायी सम्पतियों के मूल्यों में कमी की गई है अर्थात् अपलेखन किया गया है तो स्थायी सम्पतियों की अपलिखित की गई राशि को पॉच वर्षों तक चिट्ठे में अलग से दिखाना चाहिए।

उदाहरण (Illustration) 7 :

The Balance Sheet of X Ltd. As on 31st March 2010 is as follows.

Balance Sheet

Liabilities	Amount	Assets	Amount
	Rs.		Rs.
Authorised, Issued and Subscribed Capital :		Goodwill	2,00,000
		Fixed Assets	4,80,000
50,000 10% Preference Shares of Rs. 10 each fully paid up	5,00,000	Stock in Trade	1,25,000
		Debtors	1,05,000
50,000 Equity Shares of Rs. 10 each fully paid up	5,00,000	Preliminary Expenses	1,00,000
		Profit and Loss A/c	1,05,000
Creditors	1,15,000		
Total	11,15,000		11,15,000

The following 'Capital Reduction Scheme ' is approved by the Court :

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(i) 10 % preference shares of Rs. 10 each be reduced to 10% preference shares of Rs. 6 each fully paid up.

(ii) Equity shares of Rs. 10 each be reduced to fully paid up shares of Rs. 5 each.

(iii) Goodwill, Preliminary expenses and debit balance of Profit and Loss Account be written off completely.

(iv) The balance amount of capital reduction be used to write off fixed assets

Give journal entries and also prepare the revised balance sheet of the Company.

न्यायालय द्वारा पूँजी में कमी की निम्नलिखित योजना स्वीकृत की गयी है :

(i) 10 रू. वाले 10% पूर्वाधिकार अंशों को घटाकर 6 रू. वाले पूर्ण प्रदत 10% पूर्वाधिकार अंश बना दिया जावे।

(ii) 10 रू. वाले ईक्विटी अंशों को घटाकर 5 रू. वाले पूर्णदत ईक्विटी अंश बना दिया जावे।

(iii) ख्याति, प्रारम्भिक व्यय तथा लाभ–हानि खाते के डेबिट शेष को पूर्णरूप से अपलिखित कर दिया जावे।

(vi) पूँजी कटौती खाते की शेष राशि का उपयोग स्थायी सम्पतियों को अपलिखित करने में किया जावे।

जर्नल प्रविष्टियॉ दीजिए तथा कम्पनी का परिवर्तित चिट्ठा भी तैयार कीजिए।

हल (**Solution**) :

Journal of X Ltd.

Date	Particulars	L.F.	Amount Dr.	Amount Cr.
2010 April 1	(Rs. 10) 10% Preference Share Capital A/c Dr.		5,00,000	
	To (Rs. 6) 10% Preference Share Capital A/c			3,00,000
	To Capital Reduction A/c			2,00,000
	(10% Preference Share of Rs. 10 each reduced to Rs. 6 per share and balance transferred to Capital Reduction Account)			
April 1	(Rs. 10) Equity Share Capital A/c Dr.		5,00,000	
	To (Rs. 5) Equity Share Capital A/c			2,50,000
	To Capital Reduction A/c			2,50,000
	(Equity Shares of Rs. 10 each reduced to Rs. 5 per share and balance transferred to Capital Reduction Account.)			
April 1	Capital Reduction A/c Dr.		4,50,000	
	To Profit and Loss A/c			1,05,000
	To Goodwill A/c			2,00,000
	To Preliminary Expenses A/c			1,00,000
	To Fixed Assets A/c			45,000
	(Losses Written off)			

Balance Sheet of X Ltd. (and Reduced)
As on April 1,2010
(After Reconstruction)

Liabilities	Amount	Assets	Amount

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

	Rs.		Rs.	Rs.
Authorised, Issued and Subscribed Capital :		Fixed Assets	4,80,000	
50,000 10% preference Shares of Rs. 6 each fully paid up	3,00,000	Less : Written off Under Capital Reduction Scheme	45,000	4,35,000
50,000 Equity Shares of Rs. 5 each fully paid up	2,50,000	Stock in Trade		1,25,000
Creditors	1,15,000	Debtors		1,05,000
	6,65,000			6,65,000

संचयी पूर्वाधिकार अंशों पर बकाया लाभांश
(Arrear and Dividend on Cumulative Preference Shares)–

कम्पनी को निरन्तर हानि की स्थिति में कम्पनी अपने अंशधारियों को लाभांश विपरीत नहीं कर पाती है इसलिए संचयी पूर्वाधिकार अंशों पर भी लाभांश बकाया रह सकता है। बकाया लाभांश की राशि को चिट्ठे के नीचे संदिग्ध दायित्व (Contingent Liability) के रूप में दिखाया जाता है।

(i) जब पूर्वाधिकार अंशधारी अपने लाभांश की सम्पूर्ण बकाया राशि को त्यागने के लिए सहमत हो जाते है तो ऐसे लाभांश के सम्बन्ध में कोई प्रविष्टि नहीं की जायेगी क्योंकि लाभांश की बकाया राशि संदिग्ध दायित्व होने के कारण, पुस्तकों में दिखायी हुई नहीं है।

(ii) जब पूर्वाधिकार अंशधारियों को बकाया लाभांश पूर्णतया अथवा आंशिक रूप से देना तय होता है तो भुगतान किये जाने वाली लाभांश की राशि का लेखा निम्न प्रकार किया जावेगा–

(अ) लाभांश की व्यवस्था करने पर :

Capital Reduction A/c Dr.
To Preference Share Dividend A/c
(Preference Share dividend payable to Preference Shareholders)

(ब) लाभांश चुकाने पर :

Preference Share Dividend A/c Dr.
To Bank A/c
To Share Capital A/c
To Debentures A/c
(Preference Share Dividend paid.)

(iii) यदि पूर्वाधिकार अंशों पर लाभांश की घोषणा की जा चुकी है लेकिन भुगतान नहीं किया गया है तो यह कम्पनी के स्थिति विवरण के दायित्व पक्ष में पूर्वाधिकार अंश लाभांश खाता (Preference Share Dividend Account) के नाम से दिखाया हुआ होता है। विभिन्न परिस्थितियों में इसके लिए निम्नलिखित प्रविष्टियां की जायेगी–

(1) जब बकाया लाभांश का अंशधारियों द्वारा पूर्ण त्याग कर दिया गया हो :

Preference Share Dividend A/c Dr. (कुल राशि से)
To Capital Reduction A/c

(2) जब बकाया लाभांश का अंशधारियों द्वारा आंशिक रूप से त्याग किया गया हो

Preference Share Dividend A/c Dr. (कुल राशि से)
To Capital Reduction A/c (कुल राशि से)
To Bank A/c To Share Capital A/c To Debentures A/c (चुकायी जाने वाली राशि से)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(3) जब बकाया लाभांश का अंशधारियों को पूर्ण भुगतान किया जाता हो :

Preference Share Dividend A/c Dr.

To Bank A/c To Share Capital A/c To Debentures A/c (जिस रूप में चुकाया गया हो)

हल (Illustration) 8 :

The following is the Balance Sheet of Mohit Limited as on 31st March, 2010

मोहित लिमिटेड का 31 मार्च, 2010 का चिट्ठा निम्नलिखित है :

Liabilities	Amount	Assets	Amount
	Rs.		Rs.
Issued and Subcribed Capital :		Goodwill at Cost	60,000
2,400 8% Cumulative Preference	2,40,000	Leasehold Property	3,00,000
Share of Rs. 100 each fully paid up	4,00,000	Plant and Machinery	1,72,500
4,000 Equity Share of Rs. 100 each		Stock in Trade	69,175
fully paid up		Debtors	60,200
Capital Reserve	1,36,000	Preliminary Expenses	27,250
Trade Creditors	62,500	Profit and Loss Account	2,10,375
Bank Over draft	61,000		
	8,99,500		8,99,500

Dividend on preference shares is in arrear for the last three years and the Company is experiencing trading difficulties and decided to recorganize its finance sourees. The approval of the court was obtained for the following scheme for reduction of capital-

(i) The cumulative preference shares to be reduced to Rs. 65 per share.

(ii) The equity shares to be reduced to Rs. 40 per shares.

(iii) One Rs. 40 equity share to be issued for each Rs. 100 of cimulative preference shares dividend arrears.

(iv) The balance in Capital Reserve Account may be utilized.

(v) Plant and Machinery to be written down to Rs. 85,000.

(vi) The debit balance of Profit & Loss Account and all intangible assets to be written off.

(vii) The authorized share capital to be retained at Rs. 6,40,000 consisting of 2,400, 8% cumulative preference shares of Rs. 65 each and the balance in equity shares of Rs. 40 each.

(viii) 6,660 equity shares to be issued at par, for cash payable in full upon application. The same were fully subscribed and paid for.

You are required to pass the necessary journal entries and prepare the balance sheet of the company after completion of the scheme.

पूर्वाधिकार अंशों पर लाभांश गत तीन वर्षों से बकाया है। कम्पनी व्यापारिक कठिनाईयां महसूस कर रही है तथा वितीय साधनों को पुनर्गठित करने का निश्चय किया है। पूँजी में कमी की निम्नलिखित योजना के लिए न्यायालय से स्वीकृति प्राप्त की गई –

(i) पूर्वाधिकार अंशों को 65 रू. प्रति अंश तक कम किया जाये।

(ii) ईक्विटी अंशों को 40 रू. प्रति अंश तक कम किया जाये।

(iii) संचयी पूर्वाधिकार लाभांश की बकाया प्रति 100 रू. के लिए 40 रू. वाला एक ईक्विटी अंश निर्गमित किया जाये।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(iv) पूँजी संचय खाते के शेष का प्रयोग किया जा सकता है।

(v) प्लाण्ट एवं मशीनरी को 85,000 रू. तक अपलिखित किया जाये।

(vi) लाभ–हानि खाते का डेबिट शेष एवं समस्त अदृश्य सम्पतियां अपलिखित करनी है।

(vii) कम्पनी की अधिकृत अंश पूँजी को 6,40,000 रू. पर कायम रखा है जो कि 2400, 65 रू. वाले 8: संचयी पूर्वाधिकार अंशों तथा शेष 40 रू. प्रति अंश वाले ईक्विटी अंशों में होगी।

(viii) 6,660 ईक्विटी अंश सम मूल्य पर नकद के लिये निर्गमित किये जायें जिन पर समस्त राशि आवेदन पत्र के साथ ही देय हो। सभी अंशों के लिये पूर्ण अभिदान राशि प्राप्त हो गई।

आपको आवश्यक जर्नल प्रविष्टियॉ करनी है तथा योजना के पूर्ण होने के पश्चात् का कम्पनी का चिट्ठा तैयार करना है।

हल (Solution) :

Journal of Mohit Ltd.

Date	Particulars		L.F.	Amount Dr.	Amount Cr.
2010 April,1	(Rs.100) 8% Cum. Pref. Share Capital A/c	Dr.		2,40,000	
	To (Rs. 65) Cum. Pref. Share Capital A/c				1,56,000
	To Capital Reduction A/c				84,000
	(8% Cum Pref. Share of Rs. 100 each reduced to 8% Cum. Pref. share of Rs. 65 each fully paid up and balance transferred to Capital Reduction Account.)				
April,1	(Rs. 100) Equity Share Capital A/c	Dr.		4,00,000	
	To (Rs.40) Equity Share Capital A/c				1,60,000
	To Capital Reduction A/c				2,40,000
	(Equity Share of Rs. 100 each reduced to Equity Shares of Rs. 40 per share fully paid and balance transferred to Capital Reduction Account.)				
April,1	Capital Reduction A/c	Dr.		23,040	
	To Preference Share Dividend A/c				23,040
	(Part of Preference Share Dividend payable to Preference Shareholders provided out of capital reduction Account.)				
April,1	Preference Share Dividend A/c	Dr.		23,040	
	To (Rs. 40) Equity Share Capital A/c				23,040
	(576 Equity Shares of Rs. 40 each issued to Preference Shareholders for dividend.)				
April,1	Capital Reduction A/c	Dr.		3,85,125	
	To Plant and Machinery A/c				87,500
	To Profit and Loss A/c				2,10,375
	To Preliminary Expenses A/c				27,250
	To Goodwill A/c				60,000
	(Loss written off.)				
April,1	Capital Reserve A/c	Dr.		84,165	
	To Capital Reduction A/c				84,165
	(Balance transferred.)				
April,1	Bank A/c	Dr.		2,66,400	
	To Equity Share Application A/c				2,66,400

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

	(Application money received)			
April,1	Equity Share Application A/c Dr. To Equity Share Capital A/c (Application money transferred.)		2,66,400	2,66,400

Balance Sheet of Mohit Ltd. (And Reduced)
As on…….
(After Reconstruction)

Liabilities	Amount	Assets	Amount
Share Capital :	Rs.	**Fixed Assets** Rs.	Rs.
Authorised :		Leasehold Property	3,00,000
2400, 8% Preference Shares of Rs. 65 each	1,56,000	Plant and machinery 1,72,500	
12100 Equity Shares of Rs. 40 each	4,84,000	Less : Reduced under Capital Reduction scheme 87,500	
	6,40,000	--------	85,000
Issued and Subscribed		**Current Assts** :	
2,400 8% Preference Shares of Rs. 65 each fully paid up	1,56,000	Stock in Trade	69,175
		Debtors	60,200
11,236 Equity Shares of Rs. 40 each fully paid up	4,49,440	Bank Balance (2,66,400-61,000)	2,05,400
Reserve and Surplus :			
Capital Reserve (1,36,600-84,165)	51,835		
Current Liabilities :			
Trade Creditors	62,500		
	7,19,775		7,19,775

उदाहरण (**IIIustration**) 9 :

The following is the Balance Sheet of A Ltd. as on 31st March 2010:

'ए' लिमिटेड का चिट्ठा 31 मार्च, 2010 को निम्न प्रकार है :

Liabilities	Amount.	Assets	Amount
Share Capital :	Rs.		Rs.
2000 8% Preference Shares of		Goodwill	50,000
Rs. 100 each fully paid up	2,00,000	Land and Buildings	1,30,000
5,000 Equity Shares of Rs. 100		Plant and Machinery	3,20,000
each fully paid up	5,00,000	Stock in Trade	60,000
Securities Premium Account	10,000	Debtors	1,90,000
6% Debentures of Rs.100 each	1,00,000	Cash in hand	1,000
Trade Creditors	1,40,000	Discount on Issue of Debentures	5,000
Bank Overdraft	50,000	Preliminary Expesnes	10,000
		Profit and Loss Account	2,34,000
	10,00,000		10,00,000

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Note : Preference share dividend is in arrear for the last three years.

It is hoped that worst time is over and the company would start earning profits after reconstruction. Upon revaluation of assets, it was found that goodwill was worthless and other assets were overvalued to the following extent :

Land and Buildings Rs. 10,000; Plant and Machinery Rs. 60,000 ; Stock in Trade Rs. 15,000 and Debtors Rs. 20,000. The following scheme of reconstruction was prepared and approved by the court :

1. The equity shares be reduced to Rs. 25 each.
2. The 8% preference shares be reduced to Rs. 75 each and then exchanged for one new 10% preference share of Rs.50 each and equity share of Rs. 25 each.
3. Preference shareholders have forgone their right for dividend of 2 years and one year's dividend at the old rate is payable to them in fully paid up equity shares of Rs. 25 each.
4. The debenture holders be given the option to either accept 90% of their claims in cash or to convert their claims in full into new 10% preference shares of Rs. 50 each. one-half (in value) of the debenture-holders accepted preference shares and the rest were paid in cash.
5. The revaluation of assets be adopted.
6. 10,000 new equity shares of Rs. 25 each are to be issued at par payable in full on application. This issue was underwritten for a commission of 2% and was fully taken up.
7. The total expenses incurred in connection with the scheme excluding underwriting commission amounted Rs. 2,000.

Pass necessary journal entries to record the above arrangements and prepare Company's Balance Sheet after the scheme of reconstruction had been carried out.

नोट :– अधिमान अंशों पर पिछले तीन वर्षों से लाभांश बकाया है :

यह आशा की जाती है कि खराब समय व्यतीत हो गया है और कम्पनी पुनर्निर्माण के बाद लाभ कमाना प्रारम्भ कर देगी। सम्पतियों के पुनर्मूल्यांकन पर ज्ञात हुआ कि ख्याति का मूल्य शून्य है और अन्य सम्पतियॉ निम्नलिखित सीमा तक अधिक मूल्यांकित की हुई थीः भूमि एवं भवन 10,000 रू.; यन्त्र एवं मशीनरी 60,000 रू., व्यापारिक रहतिया 15,000 रू.; तथा देनदार 20,000 रू.। पुनर्निर्माण की निम्न योजना तैयार की गई व न्यायालय से स्वीकृति प्राप्त की :

1. ईक्विटी अंशों को 25 रू. प्रति अंश तक कम कर दिया जाये।
2. 8% अधिमान अंशों को 75 रू. प्रति अंश तक कम कर दिया जाये तथा फिर 50 रू. वाले एक नये 10% अधिमान अंश तथा 25 रू. वाले एक ईक्विटी अंश में बदल दिया जाये।
3. अधिमान अंशधारियों ने दो वर्ष के लाभांश के अधिकार का त्याग कर दिया है तथा उन्हें एक वर्ष का लाभांश पुरानी दर पर 25 रू. वाले पूर्णदत ईक्विटी अंशों में भुगतान किया जावे।
4. ऋणपत्रधारियों को विकल्प दिया जाये कि वे या तो अपने दावों का 90% नकद प्राप्त कर लें अथवा अपने दावों की पूर्ण राशि को नये 50 रू. वाले 10% अधिमान अंशों में परिवर्तित करा लें। आधे मूल्य के ऋणपत्रधारियों ने अधिमान अंश लेना स्वीकार किया तथा शेष को नकद भुगतान कर दिया जावे।
5. सम्पतियों के पुनर्मूल्यांकन को अपनाया जाये।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

6. 10,000 नये 25 रू. वाले ईक्विटी अंश सम मूल्य पर निर्गमित किए जायें जिनकी सम्पूर्ण राशि प्रार्थना पत्र के साथ देय हो। इस निर्गमन का 2% कमीशन पर अभिगोपन किया गया तथा पूर्ण रूप से अभिदत हुआ।

7. अभिगोपन कमीशन के अतिरिक्त उक्त योजना पर 2,000 रू. की राशि व्यय की गई।

उपर्युक्त व्यवस्थाओं को दर्ज करने के लिए आवश्यक जर्नल प्रविष्टियॉ दीजिए तथा पुनर्निर्माण की योजना को कार्यान्वित करने के पश्चात् कम्पनी का चिट्ठा बनाइये

हल **(Solution) :**

Journal of A Ltd.

Date	Particulars	L. F.	Amount Dr.	Amount Cr.
2010			Rs.	Rs.
April,1	(Rs. 100) Equity share Capital A/c Dr.		5,00,000	
	To (Rs.25) Equity share Capital A/c			1,25,000
	To Capital Reduction A/c			3,75,000
	(Equity shares of Rs.100 each reduced to Equity Shares of Rs. 25 each fully paid up and balance transferred to Capital Reduction Account)			
April,1	(Rs.100) Preference share Capital A/c Dr.		2,00,000	
	To (Rs. 75) Preference Share Capital A/c			1,50,000
	To Capital Reduction A/c			50,000
	(8% Preference shares of Rs. 100 each reduced to 8% Perference Shares of Rs. 75 each fully paid and balance transferred to Capital Reduction Account)			
April,1	(Rs. 75) 8% Pref. Share Capital A/c Dr.		15,00,000	
	To (Rs. 50) 10% Pref. Share Capital A/c			1,00,000
	To (Rs. 25) Equity Share Capital			50,000
	(Rs.75 8% Preference Shares converted into Rs. 50 10% Preference Shares and Rs. 25 Equity Shares)			
April,1	Securities Premium A/c Dr.		10,000	
	To Capital Reduction A/c			10,000
	(Balance transferred.)			
April,1	Capital Reduction A/c Dr.		16,000	
	To Preference Share Dividend A/c			16,000
	(Preference Share Dividend provided.)			
April,1	Preference Share Dividend A/c Dr.		16,000	
	To Equity Share Capital A/c			16,000
	(Equity Shares issued for arrear of Preference Share dividend.)			
April,1	6 % Debentures A/c Dr.		1,00,000	
	To Debenture holders A/c			1,00,000
	(Balance transferred.)			
Date of	Bank A/c Dr.		2,50,000	

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Receipt (प्राप्ति की तिथि)	To Equity Share Application & Allotment A/c			2,50,000
	(Application money received on 1000 Equity Shares @ Rs. 25 each.)			
Date of Allotment (आबंटन की तिथि)	Equity Shares Application & Allotment A/c Dr.		2,50,000	
	To Equity Share Capital A/c			2,50,000
	(Application money transferred to Equity Share Capital Account on Allotment of Shares)			
Date of Payment (भुगतान की तिथि)	Underwriting Commission A/c Dr.			
	Reconstruction Expenses A/c Dr.		5,000	
	To Bank A/c		2,000	
	(Underwriting commission and Reconstruction Expenses paid.)			7,000
Date of Payment (भुगतान की तिथि)	Debenture-holders A/c Dr.		1,00,000	
	To 10% Preference Share Capital A/c			
	To Bank A/c			50,000
	To Capital Reduction A/c			45,000
	(Debenture holders' claim discharged by converting 50% debentures into 10% Preference Shares and rest paid in cash.)			5,000
Date of Payment (भुगतान की तिथि)	Capital Reduction A/c Dr.		4,11,000	
	To Profit and Loss A/c			2.34.000
	To Goodwill A/c			50.000
	To Land and Building A/c			10.000
	To Plant and Machinery A/c			60.000
	To Stock in Trade A/c			15.000
	To Provision for Debtors A/c			20.000
	To Discount on Issue of Debentures A/c			5.000
	To Preliminary Expenses A/c			10.000
	To Underwriting Commission A/c			5.000
	To Reconstruction Expenses A/c			2.000
	(Losses and expenses written off.)			
Date of Payment (भुगतान की तिथि)	Capital Reduction A/c Dr.		13,000	
	To Capital Reserve A/c			13,000
	(Balance transferred.)			

Balance Sheet of A Ltd. And Reduced'
As on……..
(After Reorganisation)

Liabilities	Amount	Assets	Amount
	Rs.	Rs.	Rs.
Share Capital :		Land and Buildings 1,30,000	
Authorised Capital :		Less : Written off	
4000, 10% Preference Shares of	2,00,000	Under Capital	

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Rs. 50 each.		Reduction Scheme	10,000	1,20,000
20,000 Equity Shares of	5,00,000	Plant and Machinery	3,20,000	
Rs. 25 each	7,00,000	Less : Written off under		
		Capital Reduction		
		Scheme	60,000	2,60,000
		Stock in Trade Rs. (60,000-15000)		45,000
Issued & Subscribed Capital :			Rs.	
3,000, 10% Preference Shares of Rs.	1,50,000	Debtors	1,90,000	
50 each fully paid up		Less : Provision		1,70,000
17640 Equity Shares of Rs. 25 each	4,41,000	For Bad debts	20,000	1,48,000
fully paid up	13,000	Cash at Bank		1,000
Capital Reserve	1,40,000	Cash in hand		
Creditors				
	7,44,000			7,44,000

टिप्पणियाँ :

(i) स्थिति विवरण में दिखायी जाने वाली ईक्विटी अंश पूँजी निम्न प्रकार ज्ञात की गई है :

	रू.
पुराने ईक्विटी अंशों की घटी हुई अंश पूँजी	1,25,000
पूर्वाधिकार अंशों को जारी की गई ईक्विटी अंश पूँजी	50,000
पूर्वाधिकार अंशों पर लाभांश के लिये निर्गमित ईक्विटी	16,000
नयी निर्गमित की गई ईक्विटी अंश पूँजी	2,50,000
कुल राशि	4,41,000

(ii) स्थिति विवरण में दिखाई जाने वाली अधिमान अंश पूँजी निम्न प्रकार ज्ञात की गई है :

	रू.
पुराने अधिमान अंशों की घटी हुई अंश पूँजी	1,00,000
ऋण–पत्रधारियों को निर्गमित अधिमान अंश पूँजी	50,000
कुल राशि	1,50,000

(iii) पूँजी संचय में अन्तरित पूँजी कमी खाते का शेष निम्न प्रकार ज्ञात किया गया है :

	रू.
पूँजी कमी खाते में जमा राशियाँ (3,75,000 रू. + 50,000 रू. + 10,000 रू. + 5,000 रू.)	4,40,000
घटाइए : पूँजी कमी खाते से अपलिखित की गई राशियाँ : (16,000 रू. + 4,11,000 रू.)	4,27,000
पूँजी संचय में अन्तरित राशि	13,000

(iv) बैंक शेष इस प्रकार ज्ञात किया गया है :

		रू.	रू.
10,000 ईक्विटी अंशों के निर्गमन से प्राप्त राशि			2,50,000
<u>घटाइए</u> :	ऋण–पत्रधारियों को भुगतान	45,000	
	अभिगोपन कमीशन	5,000	
	पुनर्निर्माण व्यय	2,000	
	बैंक अधिविकर्ष	50,000	1,02,000
	बैंक शेष		1,48,000

कम्पनी के अंशधारियों, ऋणपत्रधारियों व लेनदारों के साथ अनुविन्यसन की योजना
(Seheme of Arrangement with Shareholders, Debentureholders and Creditors)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

कभी–कभी निरन्तर भारी हानि के कारण कम्पनी की स्थिति इतनी जर्जर हो जाती है कि यदि इस तिथि को कम्पनी का समापन कर दिया जाए तो ऋणपत्रधारियों व लेनदारों को, या तो भुगतान बिल्कुल न मिलने की सम्भावना रहती है या बहुत कम भुगतान मिलने की सम्भावना होती है। ऐसी स्थिति में कम्पनी के अंशधारी, ऋण–पत्रधारी व लेनदार यदि आपस में यह तय करें की कम्पनी में खोई हुई पूँजी को अपलिखित करके तथा नये सिरे से पूँजी की व्यवस्था करके कम्पनी को सुचारू रूप से चलाया जाये, तो कम्पनी भविष्य में लाभ कमाने लगेगी। ऐसी दशा में इस प्रकार की योजना का निर्माण किया जा सकता है जिससे सभी पक्ष, यथा अंशधारी, ऋणपत्रधारी व लेनदार अपने–अपने दावों के एक निश्चित भाग का त्याग करते हैं और इस त्याग के कारण उपलब्ध रकम से खोई हुई पूँजी को अपलिखित किया जाता है। तत्पश्चात् नयी पूँजी की आवश्यकतानुसार वे उसका प्रबन्ध करते हैं और नये सिरे से कम्पनी के व्यवसाय को चालू करते हैं।

इस योजना के क्रियान्वयन करने के लिए लेखा प्रविष्टियॉ प्रायः उन्हीं नियमों के आधार पर की जाती है जो पूँजी में कटौती संबंधी योजना के क्रियान्वयन के समय बताए गए थे।

उदाहरण (Illustration) 10 :

The Balance Sheet of X Ltd. as on 31st March, 2010 was as follows:

31 मार्च, 2010 को एक्स लिमिटेड का चिट्ठा निम्न प्रकार था :

Balance Sheet As on March 31,2010

Liabilities	Amount	Assets		Amount
	Rs.			Rs.
Share Capital :		Land and Buildings		7,68,000
64,000 6% Preference Shares of		Plant and Machinery		7,20,000
Rs. 10 each fully paid up	6,40,000	Goodwill		4,48,000
1,92,000 Equity Shares of		Stock		1,28,000
Rs. 5 each fully paid up	9,60,000	Debtors		1,92,000
		Cash		19,200
5% Debentures	3,84,000	Bill Receivable		64,000
Creditors	6,40,000	P. & L. Account	2,88,000	
		Less : General Reserve	3,200	2,84,800
	26,24,000			26,24,000

Upon revaluation of the assets, it was found that goodwill was worthless and that other assets were overvalued to the following extent :

Land and Buildings by Rs. 1,28,000 and Plant & Machinery by Rs, 1,76,000.
A provision for doubtful debts to the extent of Rs. 16,000 was necessary.
The following scheme of reorganization was sanctioned by the court-

(a) The creditors to accept 6% debentures to the extent of 50 per cent of their claims, the balance to be paid in cash six months after the date.

(b) The preference shares to be reduced to Rs. 5 each, partly paid up.

(c) The equity shares to be reduced to Rs. 1 each, partly paid up.

(d) The assets to be reduced to revalued figures and the debit balance of Profit & Loss Account to be wiped out.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Pass journal entries to give effect to the above scheme and also prepare revised Balance Sheet of the Company.

सम्पतियों के पुनर्मूल्यांकन करने पर ज्ञात हुआ कि ख्याति का मूल्य शून्य है और अन्य सम्पतियों निम्नलिखित सीमा तक अधिक मूल्यांकित की हुई है :

भूमि एवं भवन 1,28,000 रू. से, प्लान्ट एवं मशीनरी, 1,76,000 रू. से। संदिग्ध ऋणों के लिए 16,000 रू. का आयोजन आवश्यक समझा गया है।

पुनर्गठन की योजना, जो न्यायालय द्वारा स्वीकार की गई, वह निम्न प्रकार है :

(अ) लेनदारों ने अपने दावों के 50 प्रतिशत के लिए 6% , ऋणपत्र लेना स्वीकार किया, शेष राशि का इस तिथि के 6 माह पश्चात् नकद में भुगतान किया जायेगा।
(ब) प्रत्येक पूर्वाधिकार अंश को 5 रूपये अंशतः प्रदत तक कम करना है,।
(स) प्रत्येक ईक्विटी अंश को 1 रूपये अंशतः प्रदत तक कम करना है, ।
(द) सम्पतियों को पुनर्मूल्यांकित अंकों तक कम करना है तथा लाभ–हानि खाते के डेबिट शेष को अपलिखित करना है।

उक्त योजना को प्रभावी बनाने के लिये जर्नल प्रविष्टियॉ दीजिए तथा कम्पनी का संशोधित चिट्ठा भी बनाइए।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

हल (Solution) :

Journal of X Ltd.

Date	Particulars	L.F.	Amount Dr	Amount Cr.
2010				
April, 1	Creditors A/c Dr.		3,20,000	
	To 6% Debentures A/c			3,20,000
	(6% Debentures issued to the creditors for 50% of their claims under reorganization scheme.)			
April,1	Preference Share Capital A/c Dr.		3,20,000	
	Equity Share Capital A/c Dr.		7,68,000	
	To Capital Reduction A/c			10,88,000
	(paid up value of preference shares and equity shares reduced under reorganization scheme.)			
April, 1	General Reserve A/c Dr.		3,200	
	To Capital Reduction A/c			3,200
	(Balance transferred.)			
April, 1	Capital Reduction A/c Dr.		10,91,200	
	To Profit and Loss A/c			2,88,000
	To Provision for Doubtful Debts A/c			16,000
	To Goodwill A/c			4,48,000
	To Land and Buildings A/c			1,28,000
	To Plant and Machinery A/c			1,76,000
	To Capital Reserve A/c			35,200
	(Losses written off and balance transferred to capital Reserve Account.			

X Ltd. (And Reduced)
Balance Sheet As on April 1, 2010

Liabilities	Amount	Assets		Amount
Share Capital :	Rs.	Fixed Assets :	Rs.	
Authorised :	----------	Land and Buildings	7,68,000	
Issued and Subscribed :		Less : Reduced Under		
64,000 6% Preference Shares of		Reconstruction Scheme	1,28,000	6,40,000
Rs. 10 each, Rs. 5 paid up	3,20,000			
1,92,000 Equity Shares of		Plant and Machinery	7,20,000	
Rs. 5 each Re. 1 paid up	1,92,000	Less : Reduced under		
Reserve and Surplus :		Reconstruction Scheme	1,76,000	5,44,000
Capital Reserve	35,200	**Current Assets Loans and Advances**		
		Stock		1,28,000
Secured Loans :	3,20,000	Debtors	1,92,000	
6% Debentures	3,84,000	Less : Provision For		
5% Debentures		Bad debts	16,000	1,76,000
Current Liabilities and		Bills Receivable		64,000
Provisions :		Cash		19,200
Creditors	3,20,000			
	15,71,200			15,71,000

टिप्पणी : लेनदारों को 30 सितम्बर, 2010 को भुगतान करने पर भुगतान की जर्नल प्रविष्टि कर दी जायेगी।

अशों का समर्पण
(Surrender of Shares)

अंशधारी अपने अंशों का स्वेच्छा से समर्पण निम्नांकित दो परिस्थितियों में कर सकते हैं :

(अ) जब वह अंश पूँजी की मॉग राशि को चुकाने में असमर्थ हो,
(ब) जब एकत्रित हानियों को अपलिखित करने के लिए कम्पनी का आन्तरिक पुनर्निर्माण या पूँजी का पुनगर्ठन करना हो।

अंश पूँजी की मॉग राशि का भुगतान न करने पर ऐसे समर्पित अंशों का लेखांकन हरण किये गये अंशों (Forfeited Shares) की भॉति किया जाता है।

पूँजी पुनर्गठन योजना (Capital Reorganization Scheme) के अन्तर्गत कम्पनी अपने वर्तमान अंशों का कम अंकित मूल्य वाले अंशों में उप–विभाजन कर देती है और तत्पश्चात् अंशधारी अपने नये अंकित मूल्य वाले अंशों में से कुछ अंश कम्पनी को समर्पित कर देते हैं ताकि कम्पनी पूँजी का पुनगर्ठन कर सके। ऐसे समर्पित अंशों का या तो व्यापारिक दायित्व एवं ऋणपत्रों के शोधन में प्रयोग किया जा सकता है या अंश पूँजी में कमी करने के लिए इनको रदद् किया जा सकता है।

अंशों के समर्पण द्वारा पूँजी पुनर्गठन योजना के संबंध में लेखांकन प्रविष्टियॉ निम्न प्रकार की जाती है :

(1) वर्तमान अंशों का कम अंकित मूल्य वाले अंशों में उप–विभाजन करने पर :

(पूराना अंकित मूल्य) Share Capital A/c	Dr.	अंश पूँजी
To (नया अंकित मूल्य) Share Capital A/c		की राशि से

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(2) अंशों का समर्पण करने पर :

Equity Share Capital A/c Dr.
To Share Surrendered A/c

(3) समर्पित अंशों को व्यापारिक लेनदारों, ऋणपत्रों या अन्य दायित्वों के भुगतान के लिए प्रयुक्त करने पर ऐसे ऋणों या दायित्वों को पुस्तक मूल्यों पर पूँजी पुनर्गठन खाता (Capital Re-organization A/c) या पूँजी कटौति खाता (Capital Reduction account) में अन्तरित कर दिया जाता है। यदि ऐसे ऋणों के भुगतान के लिए समर्पित अश निर्गमित करने हों जिनका पुस्तकों में लेखा नहीं हुआ है तो ऐसे ऋणों की राशि पूँजी पुनर्गठन खाते में नहीं दिखायी जाती है। दायित्वों तथा ऋणों को पुस्तक मूल्य पर अन्तरित करने पर ऐसे दायित्वों तथा ऋणों के खाते बन्द हो जाते हैं। इसके पश्चात् समर्पित अंशों के निर्गमन की प्रविष्टि की जाती है।

(अ) दायित्वों तथा ऋणों को पुनर्गठन खाते में अन्तरण करने के लिए निम्न प्रविष्टि की जाती है :

Debentures A/c Dr.
Trade Creditors A/c Dr.
(Particular) Liability A/c Dr.
To Capital Re-organization A/c
or
To Capital Reduction A/c
(Debentures and other liabilities transferred)

(ब) ऋणपत्र धारियों तथा अन्य दायित्वों के लिए समर्पित अंशों का पुनर्निगमन करने पर :

Share Surrendered A/c Dr.
To Equity Share Capital A/c

(4) शेष बचे ऐसे समर्पित अंशों को जिनका पुनर्निगमन न किया गया हो, को पूँजी पुनर्गठन खाते या पूँजी कटौती खाते में अन्तरित करने के लिए निम्न प्रविष्टि की जाती है :

Share Surrendered A/c Dr.
To Capital Re-organization A/c Or
To Capital Reduction A/c

उदाहरण (Illustration) 11 :

The Balance Sheet of Arti Ltd. on 31st March, 2010 was as follows:

31 मार्च, 2010 को आरती लिमिटेड का चिट्ठा निम्न प्रकार था

	Rs.		Rs.
Share Capital		Fixed Assets	16,00,000
15,000 Equity Shares of Rs. 100		Investments	50,000
each fully paid up	15,00,000	Debtors	70,000
8% Debentures (Rs. 100 each)	10,00,000	Stock-in-Trade	2,47,000
Accrued Interest on Debentures	1,20,000	Bank-Balance	23,000
Trade Creditors	3,70,000	Profit and Loss Account	10,20,000
Income Tax	20,000		
	30,10,000		30,10,000

The following scheme of reorganisation was approved by the Court :

(1) Each equity share shall be sub-divided into 20 fully paid equity shares of Rs. 5 each.

(2) After sub-division, each shareholder shall surrender to the Company 80% of his holdings, for the purpose of re-issue to Debenture holders and Creditors so far as required and otherwise for cancellation.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(3) 1,60,000 surrendered shares of Rs. 5 each shall be converted into 9% participating preference shares of Rs. 5 each fully paid up.

(4) Total Claim of Debenture-holders be reduced to Rs. 8,00,000. This will be satisfied by issue of 1,60,000 participating preference shares of Rs, 5 each fully paid up to them.

(5) The full liability of income-tax will be satisfied in cash.

(6) The claims of unsecured creditor shall be reduced by Rs. 1,00,000 and the reduced claim shall be satisfied by allotting them equity shares of Rs. 5 each fully paid up from the shares surrendered.

(7) The value of fixed assests is to reduced to Rs. 10,30,000.

(8) Shares surrendered but not issued shall be cancelled.

Pass necessary journal entries and also prepare balance sheet after reorganisation.

पुनर्गठन की निम्नलिखित योजना को न्यायालय द्वारा स्वीकृति प्रदान की गई :

(1) प्रत्येक ईक्विटी अंश, 5 रू. वाले 20 पूर्णदत अंशों में उपविभाजित किया जायेगा।

(2) उपविभाजन के पश्चात् प्रत्येक अंशधारी अपने द्वारा धारित अंशों का 80% भाग समर्पित कर देगा जिसको ऋणपत्र–धारियों एवं लेनदारों को आवश्यकतानुसार निर्गमित किया जायेगा एवं शेष अंशों को रद्द कर दिया जायेगा।

(3) समर्पण किये गये अंशों में से 5 रू. वाले 1,60,000 अंशों को 5 रू. वाले पूर्ण प्रदत 9% अवशिष्ट भागी पूर्वाधिकार अंशों में बदला जायेगा।

(4) ऋणपत्रधारियों का कुल दावा 8,00,000 रू. तक कम किया जायेगा। ऐसे दावे का निबटारा 5 रू. वाले पूर्ण प्रदत 1,60,000 अवशिष्टभागी पूर्वाधिकार अंशों के निर्गमन द्वारा किया जायेगा।

(5) आयकर के दायित्व का पूर्ण भुगतान नकद में कर दिया जायेगा

(6) असुरक्षित लेनदारों के दावों को एक लाख रूपये से कम करना है एवं घटे हुऐ दावे का निबटारा समर्पण किये गये 5 रू. वाले पूर्ण प्रदत ईक्विटी अंशों के आबंटन द्वारा करना है।

(7) स्थायी सम्पतियों का मूल्य 10,30,000 रूपये तक कम करना है।

(8) समर्पण किये गये ऐसे अंशों को जो निर्गमित नहीं किये जाते हैं, उन्हें रद्द कर दिया जायेगा।

विभिन्न जर्नल प्रविष्टियॉ दीजिए एवं पुनर्गठन की योजना के बाद का चिट्ठा बनाइए

हल (Solution) :

Journal of Arti Ltd.

Date	Particulars	L. F.	Amount Debit	Amount Credit
			Rs.	Rs.
	(Rs. 100) Equity share Capital A/c Dr.		15,00,000	
	To (Rs.5) Equity Share Capital A/c			15,00,000
	(Conversion of equity share of Rs.100 each into equity share of Rs. 5 fully paid up.)			
	Equity Share Capital A/c Dr.		12,00,000	
	To Shares Surrendered A/c			12,00,000
	(80% of Equity share holdings surrendered for reorganisation of capital.)			

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

	Shares Surrendered A/c Dr. To 9% Preference Share Capital A/c (1,60,000 surrendered shares converted into 9% Preference Shares of Rs. 5 each and distributed among the debentures holders for their claim.)		8,00,000	 8,00,000
	Income Tax A/c Dr. To Bank A/c (Income Tax liability discharged.)		 20,000	 20,000
	Shares Surrendered A/c Dr. To Equity Share Capital A/c (Surrendered shares re-issued as 54,000 equity shares of Rs. 5 each fully paid up and distributed among. unsecured creditors for full settlement of their claim.)		 2,70,000	 2,70,000
	8% Debentures A/c Dr. Accrued Interest A/c Dr. Sundry Creditors A/c Dr. Shares Surrendered A/c Dr. To Capital Re-organization A/c (Total amount due to creditors, debenture holders and the balance of Shares Surrendered A/c transferred.)		 10,00,000 1,20,000 3,70,000 1,30,000	 16,20,000
	Capital Re-organization A/c Dr. To Profit and Loss A/c To Fixed Assets A/c To Capital Reserve A/c (Balance of P & L A/c transferred, Fixed assets written off and the balance of capital Re-organization A/c transferred to capital Reserve A/c)		 16,20,000	 10,20,000 5,70,000 30,000

Balance Sheet of Arti Ltd. (And Reduced)
As on……….
(After Reconstruction)

Liabilities	Amount	Assets	Amount
	Rs.		Rs.
Share Capital :		Investments	50,000
1,40,000 Equity Shares of Rs. 5 each fully paid up	5,70,000	Debtors	70,000
		Stock-in-trade	2,47,000
		Bank Balance (23,000-20,000)	3,000
1,60,000, 9% Preference Shares of Rs. fully paid up	8,00,000	Rs. Fixed Assets 16,00,000	
Reserve and Surplus : Capital Reserve	30,000	Less : Reduced under Capital Reorganization Scheme 5,70,000	10,30,000
	14,00,000		14,00,000

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

<u>अभ्यासार्थ प्रश्न</u>

(Questions for Exercise)

(A) वस्तुनिष्ठ प्रश्न (Objective Type Questions)

विभिन्न विकल्पों में से एक सही उत्तर लिखिए :

1. किस प्रकार के पुनर्निर्माण में कम्पनी का अस्तित्व बना रहता है :

(अ) बाह्य पुनर्निर्माण की दशा में

(ब) एकीकरण की दशा में

(स) आन्तरिक पुनर्निर्माण की दशा में

(द) विलय की दशा में ( )

2. कम्पनियों के पुनर्निर्माण में अर्द्व–पुनर्गठन की संज्ञा दी गयी है

(अ) एकीकरण को।

(ब) बाह्य पुनर्निर्माण को।

(स) आन्तरिक पुनर्निर्माण को।

(द) विलय का। ( )

3. अंशों के समामेकन का तात्पर्य है :

(अ) वर्तमान अंशों के अंकित मूल्य में वृद्वि कर चुकता अंश पूॅजी को बढाना।

(ब) कम अंकित मूल्य वाले अंशों को अधिक अंकित मूल्य वाले अंशों में बदलना जिससे चुकता अंश पूॅजी में परिर्वतन न हो।

(स) अधिक अंकित मूल्य वाले अंशों को कम अंकित मूल्य वाले अंशों में बदलना जिससे चुकता अंश पूजी में परिवर्तन न हो।

(द) उपर्युक्त में कोई नहीं। ( )

4. अंशों के उपविभाजन का तात्पर्य है :

(अ) वर्तमान अंशों के अंकित मूल्य में वृद्वि कर चुकता अंश पूॅजी को बढाना।

(ब) कम अंकित मूल्य वाले अंशों को अधिक अंकित मूल्य वाले अंशों में बदलना जिससे चुकता अंश पूॅजी में परिर्वतन न हो।

(स) अधिक अंकित मूल्य वाले अंशों को कम अंकित मूल्य वाले अंशों में बदलना जिससे चुकता अंश पूजी में परिवर्तन न हो।

(द) उपर्युक्त में कोई नहीं। ( )

(उतर : 1. स 2. स 3. ब 4. स)

लघुरात्मक प्रश्न (Short Answer Type Questions) :

1. What do you mean by Internal Reconstruction ?
   आन्तरिक पुनर्निर्माण से आप क्या समझते हैं ?
2. Give characteristics of Internal Reconstruction.
   आन्तरिक पुनर्निर्माण की विशेषताएॅ बताइए।
3. Give names of two methods applicable for internal reconstruction through increase in Share Capital ?
   अंशपॅूजी में वृद्वि द्वारा आन्तरिक पुनर्निर्माण की दो विधियों के नाम लिखिए।
4. What is the method of accounting for increase in Authorized Share Capital ?
   अधिकृत अंश पूॅजी में वृद्वि का लेखांकन किस प्रकार किया जाता है ?
5. Give journal entry for consolidation of shares in the books of a company.
   अंशों के समामेकन के लिए कम्पनी की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टि दीजिए।
6. Give journal entry for conversion of shares into stock.
   अंशों के स्टॉक में बदलने की जर्नल प्रविष्टियॉ दीजिए।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

7. What is the method of accounting for cancellation of unissued shares ?
अनिर्गिमित अंशों को रद्द करने का लेखांकन कम्पनी की पुस्तकों में किस विधि से जाता है ?

8. Prepare capital Reduction Account on the basis of following internal reconstruction scheme of a company :
कम्पनी के पुनर्निर्माण की निम्नलिखित योजना के आधार पर पूँजी कटौती खाता बनाइए :

(i) Write off Plant and Machinery by Rs. 50,000.
प्लाण्ट तथा मशीन का मूल्य 50,000 रूपये से अपलिखित किया जावे।

(ii) Increase the value of Buildings by Rs. 60,000.
भवन का मूल्य 60,000 रूपये से बढ़ाया जावे।

(iii) Reduce value of investment from Rs. 1,00,000 to Rs. 80,000.
विनियोगों का मूल्य 1,00,000 रूपये से 80,000 रूपये तक कम कर दिया जावे।

(iv) Appreciate stock by Rs. 10,000.
स्टॉक को 10,000 रूपये से बढ़ाया जावे।

(v) Create a provision for doubtful debts for Rs. 30,000.
संदिग्ध ऋणों के लिए आयोजन 30,000 रूपये का बनाया जावे।

(vi) Settle arrear of cummulative preference share dividend of Rs. 1,00,000 by payment of Rs. 50,000.
संचयी पूर्वाधिकार अंशों पर बकाया 1,00,000 रूपये के लाभांश में से 50,000 रूपये का भुगतान कर निबटारा किया जावे।

(vii) Reduce equity share capital by Rs. 1,20,000.
समता अंश पूँजी को 1,20,000 रूपये से घटाई जावे।

(viii) Transfer the remaining balance in Capital Reserve Account.
बकाया शेष को पूँजी संचय में अन्तरित किया जावे।

[Ans. : Capital Reserve Rs. 40,000]

सैद्धान्तिक प्रश्न
(Theoretical Questions)

1. What do you mean by internal reconstruction ? How does it differ from external reconstruction ? Give journal entries for accounting of internal reconstruction in the from of Capital Reduction, taking an imaginary example.

आन्तरिक पुनर्निर्माण से आप क्या समझते हैं ? यह बाह्य पुनर्निर्माण से किस प्रकार भिन्न हैं ? पूँजी कटौती द्वारा आन्तरिक पुनर्निर्माण की विधि के लेखांकन की जर्नल प्रविष्टियों को एक काल्पनिक उदाहरण की सहायता से दीजिए।

2. What are different methods of alteration of share capital, as provided under companies Act. 1956 ? Discuss the accounting procedure for each of them.
कम्पनी अधिनियम, 1956 के अन्तर्गत अंश पूँजी में परिर्वतन की कौन–कौन सी विधियॉ दी हुई हैं ? प्रत्येक के लिए लेखांकन प्रकिया का वर्णन कीजिए।

व्यावहारिक प्रश्न
(Practical Questions)

1. Pass Journal entries under the following situations :
निम्नांकित परिस्थितियों में जर्नल प्रविष्टियॉ दीजिए–

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(a) A company converts its 2,00,000 Equity Shares of Rs.10 each fully paid up into equity shares of Rs.100 each fully paid up.

एक कम्पनी अपने 10 रूपये वाले पूर्ण प्रदत 2,00,000 समता अंशों को 100 रू. वाले पूर्ण प्रदत समता अंशों में परिवर्तन करती है

(b) A company converts its 2,00,000 equity Shares of Rs.10 each, Rs. 8 paid up into equity shares having face value of Rs. 100 each.

एक कम्पनी अपने 10 रूपये वाले 8 रूपये प्रदत 2,00,000 समता अंशों को 100 रूपये अंकित मूल्य वाले समता अंशों में परिवर्तित करती है।

(c) X Ltd. decides to sub-divide its 50,000 Equity Shares of Rs. 100 Each, Rs.70 paid up into

Equity Shares having face value of Rs.10 each.
एक्स लिमिटेड 100 रूपये वाले 70 रूपये प्रदत 50,000 समता अंशों को 10 रूपये अंकित मूल्य वाले समता अंशों में उप–विभाजन करने का निश्चय करती है।

2. on 31st March, 2010 the balance sheet of Mohit Ltd. was as under :
31 मार्च, 2010 को मोहित लिमिटेड का चिट्ठा निम्न प्रकार था :

Liabilities	Amount Rs.	Assets	Amount Rs.
Share Capital :		Land and Buildings	90,00,000
Authorized, Issued and Subscribed Capital		Plant and Machinery	40,00,000
5,00,000 Equity Shares of Rs. 10 each, fully paid up	50,00,000	Furniture and Fixtures	24,00,000
3,00,000 12% Preference Shares of Rs. 10 each, fully paid up	30,00,000	Investment	26,00,000
Profit and Loss A/c	78,00,000	Stock in hand	12,00,000
13% Debentures	27,50,000	Sundry Debtors	10,00,000
Bank Loan	17,00,000	Cash and Bank Balance	10,00,000
Sundry Creditors	9,50,000		
	2,12,00,000		12,12,00,000

For implementation of the expansion programme, the company passed following reorganization scheme :

(1) The authorized share capital of the company to be increased to Rs. 2,40,00,000 divided into 20,00,000 equity shares of Rs. 10 each and 4,00,000 10% preference share of Rs. 10 each.

(2) The balance of profit & Loss A/c is to be capitalized for issue of equity bonus shares to the extent of Rs.50,00,000.

(3) The company decided to issue four bonus shares of Rs.10 each for every five equity shares held.

(4) Such share holders who agree to convert their 12% preference shares into 10% preference shares of equal number were to be allotted one bonus share of Rs. 10 each for every 3 preference shares converted.

(5) The holders of 13% Debentures have an option either to convert their holding into equity shares of Rs. 10 each at a premium of 10% or to receive cash in full settlement at par.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(6) The remaining equity shares were offered to the existing shareholders at a premium of 10%.

The reorganization expenses incurred amounting to Rs. 60,000. Assuming that all the preference share holders and 80% of the debenture holders exercised their option of conversion and all the amounts on issue of equity shares were received at the time of application, give necessary journal entries and prepare balance sheet after reorganization.

विस्तार कार्यक्रम की क्रियान्विति के लिए कम्पनी ने निम्नलिखित पुनर्गठन योजना स्वीकृत की है :

(1) कम्पनी की अधिकृत पूँजी को 2,40,00,000 रू. तक बढ़ाया जाये जो कि 10 रू. वाले 20,00,000 ईक्विटी अंशों में एवं 10 रू. वाले 4,00,000 10% पूर्वाधिकार अंशों में विभाजित हो।

(2) लाभ–हानि खाते शेष का 50,00,000 रू. की सीमा तक बोनस ईक्विटी अंशों के निर्गमन के लिए पूँजीकरण किया जाये।

(3) कम्पनी ने यह निश्चय किया कि प्रत्येक 5 ईक्विटी अंशों के धारकों को 10 रू. वाले चार बोनस अंश निर्गमित किये जायें।

(4) जो अंशधारी अपने 12% पूर्वाधिकार अंशों को बराबर संख्या में 10% पूर्वाधिकार अंशों के बदलवाने को सहमत हो जाते हैं, उन्हें प्रत्येक 3 पूर्वाधिकार अंशों के बदले एक 10 रू. वाला बोनस अंश दिया जाये।

(5) 13% ऋणपत्रधारकों को यह विकल्प हैं कि वे या तो अपने ऋणपत्रों को 10 रू. वाले ईक्विटी अंशों में 10% प्रीमियम पर परिवर्तित कर लें अथवा सम मूल्य पर नकद राशि पूर्ण भुगतान के रूप में प्राप्त कर लें।

(6) शेष ईक्विटी अंश वर्तमान अंशधारियों को 10% प्रीमियम पर प्रस्तावित किये गये।

पुनर्गठन व्यय 60,000 रू. हुए। यह मानते हुए कि सभी पूर्वाधिकार अंशधारियों एवं 80% ऋणपत्रधारियों ने अपने परिर्वतन के विकल्प का प्रयोग किया है तथा ईक्विटी अंशों की समस्त राशियॉ अंशों के आवेदन के साथ ही प्राप्त हो गई हैं, आवश्यक जर्नल प्रविष्टियॉ दीजिए एवं पुनर्गठन के बाद का चिट्ठा बनाइए।

[Ans : New shares issued to existing share holders 8,00,000; Total of Balance Sheet Rs. 2,93,90,000]

3. The paid up-capital of Toy Ltd. amounted to Rs. 2,50,000 consisting of 25,000 equity shares of Rs. 10 each. Due to losses incurred by the company continuously, the directors of the company prepared a scheme for reconstruction which was duly approved by the court. The terms of reconstruction were as under :

(i) In lieu of their present holdings, the shareholders are to receive :
- (a) Fully paid equity shares equal to $2/5^{th}$ of their holding.
- (b) 5% preference shares fully paid up to the extent of 20% of the above new equity shares.
- (c) 3,000 6% second debentures of Rs.10 each.

(ii) An issue of 2,500 5% first debentures of Rs.10 each was made and fully subscribed in cash.

(iii) The assets were reduced as follows :
- (a) Goodwill from Rs. 1,50,000 to Rs. 75,000.
- (b) Machinery from Rs. 50,000 to Rs. 37,500.
- (c) Leasehold premises from Rs. 75,000 to Rs. 62,500.

Pass journal entries to give effect to the above scheme of reconstruction.

टॉय लि. की प्रदत पूँजी 2,50,000 रू. है जो 10 रू. वाले 25,000 ईक्विटी अंशों में विभाजित है। कम्पनी में निरन्तर हानियों के कारण पुनर्निर्माण की योजना बनाई गयी जो न्यायालय द्वारा अनुमोदित कर दी गई। पुनर्निर्माण की शर्ते निम्न प्रकार थी :

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(i) वर्तमान अंशों के बदले, अंशधारियों को निम्नांकित प्राप्त होंगे :

(अ) उनकी अश पूँजी के 2/5 भाग तक पूर्णप्रदत ईक्विटी अंश,

(ब) उपर्युक्त नई अंश पूँजी के 20% के बराबर पूर्णप्रदत 5% पूर्वाधिकार अंश,

(स) 3,000, 6% द्वितीय ऋणपत्र 10 रूपये वाले।

(ii) 2,500, 5% प्रथम ऋणपत्र 10 रू. वाले निर्गमित किये गये जिसका नकद में पूर्णतः अभिदान हो गया।

(iii) सम्पतियों को निम्न प्रकार घटाया गया :

(अ) ख्याति 1,50,000 रू. से 75,000 रू. तक

(ब) मशीनरी 50,000 रू. से 37,500 रू. तक

(स) पट्टे वाली सम्पति 75,000 रू. से 62,500 रू. तक

उपरोक्त पुनर्निर्माण की योजना को प्रभावी बनाने हेतु जर्नल प्रविष्टियॉ दीजिये।

[Ans. Capital Reduction Rs. 1,00,000 used for Writing off goodwill, Plant & Machinery and Premises]

4. The Balance Sheet of Shree Ltd. as on 31st March 2010 is as follows :

श्री लिमिटेड का 31 मार्च, 2010 का चिट्ठा निम्न प्रकार है :

Balance Sheet

Liabilities	Amount	Assets	Amount
	Rs.		Rs.
Authorized, Issued and Subscribed Capital :		Goodwill	12,00,000
		Fixed Assets	34,80,000
1,00,000, 10% Preference Shares of Rs. 10 each, fully paid up	10,00,000	Stock in Trade	11,25,000
		Debtors	11,05,000
5,50,000 Equity Shares of Rs. 10 each, fully paid up	55,00,000	Preliminary Expenses	1,00,000
		Profit and Loss Account	1,05,000
Creditors	6,15,000		
	71,15,0000		71,15,000

The following 'Capital Reduction Scheme' is approved by the Court :

(i) 10% preference shares of Rs. 10 each be reduced to 12% preference shares of Rs. 8 each fully paid up.

(ii) Equity shares of Rs.10 each be reduced to fully paid up shares of Rs.5 each.

(iii) Goodwill, Preliminary expenses and debit balance of Profit and Loss Account be written off completely.

(iv) The balance amount of Capital Reduction be used to write off fixed assets.

Give journal entries and revised balance sheet of the Company and also prepare Capital Reduction Account.

न्यायालय द्वारा पूँजी में कमी की निम्नलिखित योजना स्वीकृत की जाती है :

(i) 10 रू. वाले 10% पूर्वाधिकार अंशों को घटाकर 8 रू. वाले पूर्ण प्रदत 12% पूर्वाधिकार अंश बना दिया जावे।

(ii) 10 रू. वाले ईक्विटी अंशों को घटाकर 5 रू. वाले पूर्णदत ईक्विटी अंश बना दिया जावे।

(iii) ख्याति, प्रारम्भिक व्यय तथा लाभ हानि खाते के डेबिट शेष को पूर्णरूप से अपलिखित कर दिया जावे।

(iv) पूँजी कटौति खाते की शेष राशि का उपयोग स्थायी सम्पतियों को अपलिखित करने में किया जावे।

जर्नल प्रविष्टियॉ दीजिए। कम्पनी का परिवर्तित चिट्ठा तैयार कीजिए तथा पूँजी कटौती खाता भी तैयार कीजिए।

[Ans. Fixed Assets written off Rs. 15,45,000, Balance Sheet total Rs. 29,50,000]

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

समापन की स्थिति में कम्पनी के खाते

(Accounts of Companies in Liquidation)

कम्पनी के समापन से आशय उस वैधानिक रीति से है जिसके द्वारा कम्पनी का वैधानिक असितत्व समाप्त कर दिया जाता है। उसका व्यवसाय समापत हो जाता है और उसकी सम्पत्तियों को बेचकर उनसे प्राप्त धन का प्रयोग कम्पनी के दायित्वों के भुगतान के लिए किया जाता है और यदि उसके पास कुछ धन शेष रहता है, तो वह कम्पनी के अंशधारियों में उस कम्पनी के अन्तर्नियमों की व्यवस्थाओं के अनुसार बाँट दिया जाता है।

कम्पनी के समापन की रीतियाँ

(Methods of Winding up of Company)

भारतीय कम्पनी अधिनियम, 1956 की धारा 425 के अनुसार कम्पनी का समापन तीन प्रका से हो सकता हैः

1. न्यायालय द्वारा समापन अथवा अनिवार्य समापन की परिस्थितियाँ (Winding up by the Court or Compulsory Winding up)
2. ऐच्छिक समापन (Voluntary Winding up)

(i) सदस्यों द्वारा ऐच्छिक समापन, तथा

(ii) लेनदारों द्वारा ऐच्छिक समापन

2- न्यायालय के निरीक्षण के अन्तर्गत समापन (Winding up Subject to the Supervision of the Court)

निस्तारक की नियुक्तिः

कम्पनी और कम्पनी के ऋणदाता अपनी–अपनी सभाओं में कम्पनी के समापन के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए कम्पनी की सम्पत्तियों का वितरण करने के लिए निस्तारक मनोनीति करते हैं यदि कम्पनी और कम्पनी के ऋणदाता दो अलग–अलग व्यक्तियों को निस्तारक के रूप में मनोनीति करते हैं तो ऋणदाआतों द्वारा मनोनीत व्यक्ति की निस्तारक नियुक्त किया जाता है, परन्तु निस्तारक मनोनीत होने की तिथि से सात दिन के अन्दर कम्पनी के किसी संचालक, सदस्य अथवा ऋणदाता द्वारा आवेदन कर देने पर न्यायालय किसी अन्य व्यक्ति को भी निस्तारक नियुक्त कर सकता है।

स्थिति विवरण

(Statement of Affairs)

यदि न्यायालय ने समापन आदेश जारी कर दिया है अथवा सरकारी निस्तारक को अस्थायी निस्तारक के रूप में नियुक्त किया है, तो न्यायालय के विपरीत आदेश के अभाव में समापन की तिथि अथवा अस्थायी निस्तारक की नियुक्ति की स्थिति में उनकी नियुक्ति की तिथि के 21 दिन के अन्दर कम्पनी को एक स्थिति विवरण सरकारी निस्तारक को प्रस्तुत करना पड़ता है। इस स्थिति विवरण में निम्नलिखित विवरणों को सम्मिलित करना आवश्यक है–

(i) कम्पनी की सम्पत्तियां–इसके अन्तर्गत नकद शेष, बैंक शेष तथा विनिमय योग्य प्रतिभूतियों को पृथक से दिखाना चाहिए।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(ii) कम्पनी के ऋण तथा दायित्वों की राशि

(iii) कम्पनी के लेनदारों के नाम, निवास स्थान एवं व्यवसाय का विवरण। लेनदारों में सुरक्षित एवं असुरक्षित लेनदारों की अलग–अलग सूचियां तैयार की जाती है। सुरक्षित लेनदारों की स्थिति में प्रतिभूतियों का विवरण भी दिया जाना आवश्यक है। इस विवरण में प्रतिभूति का मूल्य तथा प्रतिभूति देने की स्थिति का उल्लेख करना आवश्यक है। प्रतिभूति का विवरण देते समय यह भी बदलना चाहिए कि प्रतिभूति कम्पनी ने दी है अथवा कम्पनी के किसी अधिकारी ने दी है।

(iv) कम्पनी को देय ऋणों की राशि। उन व्यक्तियों के नाम, निवास स्थान तथा व्यवसाय का विवरण जिनसे ऋण प्राप्य है तथा उससे सम्भावित वसूल क जाने वाली राशि का विवरण दिया जाना आवश्यक है।

(v) ऐसी अन्य कोई सूचना जो निर्धारित कर दी गई हो अथवा सरकारी निस्तारक के द्वारा माँगी गयी हो।

8 मदों में विभाजित सूचियों का विवरण निम्न प्रकार है–

1. सम्पत्तियाँ जो विशिष्ट रूप से गिरवी नहीं रखी हुई हैं। (Assets not specifically pledged as per list A)
2. सम्पत्तियाँ जो विशिष्ट रूप से गिरवी रखी हुई है। (Assets specially pledged as per list B);
3. पूर्वाधिकार लेनदार (Preferential Creditors as per lsit C)
4. कम्पनी की सम्पत्तियों पर चल प्रभर का अधिकार रखने वाले ऋणपत्र (Debentures with a right of floating charge on the assets of the company as per list D);
5. असुरक्षित लेनदार (Unsecured creditors as per list E)
6. पूर्वाधिकार अंशधारी (Preference Shareholders as per list F)
7. ईक्विटी अंशधारी (Equity Shareholders as per list G)
8. न्यूनता अथवा आधिक्य खाता (Deficiency or Suprplus Account as per list H)

Form No. 57 (See rule 127)

Statement of Affairs and Lists to be Annexed

Statement as to the affairs of …..Ltd., on the ….day of ….20…being the date of winding up under (or order appointing Provisional Liquidator or the date directed by the Official Liquidator as the case may be) showing afsets at estimated realizable value and liabilities expected to rank:

Assets not specifically pledged (as per list 'A')	Estimated Realizable Value Rs.
Balance at Bank	
Cash in hand	
Marketable Securities	
Bills Receivable	
Trade Debtors	

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Loans and Advances Unpaid Calls Stock-in-trade Work-in-Progress Freehold Property, Land and Buildings Leasehold Property Plant and Machinery Furniture, Fittings, Utensils etc. Investments other than marketable securities Livestock Other Property viz. ……………….. ………………….. …………………..	

Assets specifically pledged (as per list 'B')	(a) Estimated realizable values Rs.	(b) Amount due to secured creditors Rs.	(c) Deficiency ranking as unsecured Rs.	(d) Surplus carried to last Column Rs.

Estimated Surplus from Assets specifically pledged Estimated Total Assets available for Preferential Creditors, Debentureholders secured by a floating charge, and Unsecured Creditors (carried forward) Sumary of Grosss Assets Rs. Gross realizable value of Assets specifically pledged …………. Other Assets …………... Gross Assets Total ……………	………………. …………………...

Gross Liabilities Rs.	Estimated Total Assets Available for Preferential Creditors, Debentureholders secured by a floating charge, and Unsecured Creditors (brought forward)	Rs.
………….	Liabilities (to be deducted from surplus or added to deficiency as the case may be) Secured Creditors (as per list 'B') to the extent to which	

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

	claims are estimated to be covered by Assets specifically pledge (item (a) or (b) whichever is less)	……………
	(insert in Gross Liabilities Column only)	
	(deduct) Preferential Creditors (as per list 'C')	
…………	Estimated balance of assets available for Debentureholders secured by a floating charge and unsecured creditors	
	(deduct) Debentureholders secured by a floating charge (as per list 'D')	……………
	Estimated surplus/deficiency as regards Debentureholders	
………….	Unsecured Creditors (as per list 'E')	
…………..	Estimated unsecured balance of claims of Creditors partly secured on specific assets brought from (c)	
……………	Trade Account ……………	
…………..	Bills Payable …………….	
……………	Outstanding Expensers …………...	
……………	Bank Overdraft …………...	
……………	Contingent Liabilities …………..	
	Estimated surplus/deficiency as regards creditors, being	
	Difference between: Rs.	
	Grosss Assets ……….	
	and Gross Liabilities ……….	…………..
	Issued and Called up Capital	
	Preference Shares of Rs………each	
	Rs. ……..called up (as per list 'F') ………….	
	Equity shares Rs. ………each	
	Rs. ……..called up) as per list 'G' …………..	
	……………… …………..	
	……………… ……………..	…………..
	Estimated Surplus/Deficiency as regards Members (as per list 'H')	…………..

List –C पूर्वाधिकार लेनदार (Preferential Creditors)

कम्पनी अधिनियम 1956 की धारा 530 (1) के अनुसार, एक कम्पनी के समापन की स्थिति में निम्नलिखित लेनदार 'पूर्वाधिकार लेनदार' माने जाते हैं :

(i) सम्बन्धित तिथि को कम्पनी द्वारा राज्य सरकार अथवा केन्द्रीय सरकार अथवा स्थानीय सत्ता को देय लगान, कर तथा महसूल व दरें। इन मदों के सम्बन्ध में यह शर्त है कि ये ऋण सम्बन्धित तिथि को

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

12 माह की अवधि में ही देय और भुगतान योग्य होने चाहिए इससे पहले के नहीं। यदि कोई लगान, कर इत्यादि न संस्थाओं को 12 माह की अवधि के पूर्व देय तथा भुगतान योगय हो गये हैं तो उनको पूर्वाधिकार लेनदार नहीं माना जावेगा। उदाहरणार्थ मान लीजिए सम्बन्धित तिथि 1 जनवरी, 2007 है और कम्पनी द्वारा 40000 रू. की आयकर की राशि केन्द्रीय सरकार को देय है। इसमें से 30000 रू. की राशि 2005–06 वर्ष से सम्बन्धित है जिसके भुगतान सम्बन्धित आदेश 15 सितम्बर, 2006 को हुए हैं तथा 10000 रू. के भुगतान के आदेश 13 जनवरी, 2003 को हुए हैं। 30000 रू. का आयकर 1 जनवरी, 2007 से पूर्व एक वर्ष के अन्दर देय तथा भुगतान योगय हुआ है, अतः पूर्वाधिकार लेनदार माना जावेगा, परन्तु 10000 रू. का आयकर उक्त 1 वर्ष की अवधि के पूर्व ही देय तथा भुगतान करने योग्य हो गया है, अतः पूर्वाधिकार लेनदार नहीं माना जावेगा।

(ii) कम्पनी के प्रति की गयी सेवाओं के उपलक्ष्य में कर्मचारियों को देय मजदूरी अथवा वेतन। यह मजदूरी या वेतन सम्बन्धित तिथि से तुरन्त पूर्व की 12 माह की अवधि से सम्बन्धित होना चाहिए परन्तु इसमें से अधिकतम केवल 4 माह की मजदूरी या वेतन अथवा 20000 रू. (प्रति व्यक्ति) जो भी दोनों में से कम हो, पूर्वाधिकार लेनदार माने जायेंगे। शेष राशि असुरक्षित लेनदार समझी जावेगी।

यहां पर केवल कर्मचपारियों का वेतन या मजदूरी लेना है। यदि कोई व्यक्ति कर्मचारी नहीं है व वेतन या मजदूरी के नाम से कोई राशि देय है तो इसे पूर्वाधिकार नहीं माना जायेगा, जैसे–संचालकों का वेतन।

औद्योगिक विवार अधिनियम, 1947 (Industrial Disputes Act, 1947) के नियमों के अन्तर्गत निर्धारित देय क्षतिपूर्ति की राशि 1000 रू. (प्रति व्यक्ति) की सीमा तक पूर्वाधिकार लेनदार मानी जाती है।)

List H : न्यूवता अथवा आधिक्य खाता (Deficiency or Surplus Account) :

स्थिति विवरण द्वारा जो न्यूनता अथवा आधिक्य प्रदर्शित किया जाता है, उसके उत्पन्न होने के खुलासा विवरण इस खाते या विवरण में पाये जाते हैं इसको सूची एच (List H) भी कहते हैं इसे निम्नलिखित प्रकार के प्रारूप में तैयार किया जाता हैः

List H-Deficiency of Surplus Account

	Rs.
Items Contributing to Deficiency (or Reducing Surplus) :	
1. Excess (if any) of Capital & Liabilities over Assets on the …20… as shown by balance sheet (copy annexed)	
2. Net dividends and bonuses declared during the period from ….20… to the date of the statement.	
3. Net Trading Lossess (after charging items shown in note below) for the same period.	
4. Losses other than trading losses written off or for which provision has been made in the books during the same period (give particulars or annex schedule).	
5. Estmated losses ow written off or for which provision has been made for the purpose of preparing the statement (give particulars or annex schedule)	

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

6. Other items contributing to deficiency or reducing surplus.	
Items Reducing Deficiency (or Contributing ot Surplus) :	……..
7. Excess (if any) of Assets over Capital and Liabilities on the …20..as shown in the Balance Sheet (copy annexed) ……	
8. Net Trading Profits (after charging items shown in note below) for the period from the ….20…. to the date of statement. …….	
9. Profits and Income other than trading profits during the same period (give particulars annex schedule). ……	
10. Other items reducing deficiency or contributing to surplus …….	……..
Deficiency/Surplus as shown by statement	……..
Note as to Net Trading Profits and Losses:	
Particulars are to be inserted here (so ffar as applicable) of the items mentioned below, which are to be taken into account in arriving at the amount of Net Trading Profit or Losses shown in this account.	
Provisions for depreciation, renewals or diminution in value of fixed assets.	
Charges for Indian Income Tax and other Indian Taxation on Profits.	
Interest on debentures and other fixed loans, payments to directors made by the company and required by law to be disclosed in the accounts.	
………………………………………..	
Less : Exceptional or non-recuring receipts :	………
Balance being other trading profits or losses	………
Net Trading Profit or Losses as shown in Deficiency or Surplus Account above.	………
	………

Illustration 1 :

The following items were contained in the balance sheet of a company under liquidation on 31st October, 2006:

31 अक्टूबर, 2006 को एक कम्पनी परिसमापन प्रक्रिया में थी जिसके चिट्ठे में निम्न मद थे :

		Rs.
5% Debentures		26000
Loan from Bank guaranteed by directors (which was implemented)		39000
Sundry Trade Creditors (including Rs. 2000 for local taxes which became due and payable in 2004)		117000
Income Tax Assessment year 2004-05	Rs. 3250	
Income Tax Assessment year 2005-06	Rs. 13650	

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Income Tax Assessment year 2006-07 Rs. 650	17500
Assessment for 2004-05 was completed on 30.09.2005 and for 2005-06 and 2006-07 on 31.07.2006	
Employee's Salaries for one month (includig Rs. 1950 for Managing Director)	5590
Determine the amount of Prerferential Creditors	

पूर्वाधिकार लेनदारों की राशि का निर्धारण कीजिए।

Solution : Statement showing amount due to Preferential Creditors

Particulars	Amount
	Rs.
Income Tax Assessment year 2005-06	13650
Income Tax Assessment year 2006-07	650
Salary due to Employees (xcludig the salary due to Managing Director)	3650
Preferential Creditors	17950

टिप्पणी :

(i) स्थानीय कर के 2000 रू. वर्ष 2004 में देय हो गये थे। यह अवधि कम्पनी की समापन तिथि 31 अक्टूबर, 2006 के 12 माह पूर्व पड़ती है, अतः यह कर पूर्वाधिकार लेनदार नहीं माना गया है।

(ii) 2004–05 कर निर्धारण वर्ष केक लिए आयकर की राशि के 3250 रू. असुरक्षित लेनदार माने जायेंगे, पूर्वाधिकार लेनदार नहीं, क्योंकि वह राशि 30 सितम्बर, 2005 को देय होगई थी जो तिथि समापन की तिथि के 12 माह पूर्व पड़ती है।

(iii) प्रबन्ध संचालक को देये वेतन कम्पनी अधिनियम की धारा 530 (1) के अन्तर्गत पूर्वाधिकार लेनदार नहीं माना गया है।

Illustration 2 :

From the following particulars of General Trading Company Limited, prepare the Statement of Affairs and Deficiency Account as at 31st March, 2007, the date of winding up order:

जनरल ट्रेडिंग कम्पनी लिमिटेड के निम्नलिखित विवरणों से समापन आदेश की तिथि 31 मार्च, 2007 को स्थिति विवरण तथा न्यूवता खाता बनाइये।

	Rs.
10000 Equity shares of Rs. 10 each Rs. 5 per share called up	50000
10000 6% Preference shares of Rs. 10 each fully paid	100000
Calls in arrears on equity shares (Estimated to produce Rs. 1000)	2000
5% First Mortgage Debentures secured by a floating charge upon the whole of the assets of he company exclusive of uncalled capital	75000
Fully Secured Creditors (Value of Securities Rs. 17500)	15000
Partly Secured Creditors (Value of Securities Rs. 5000)	10000

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Preferential Creditors for Rates, Taxes and Wages etc.	3000
Bills payable	50000
Unsecured Creditors	35000
Bank Overdraft	50000
Bills Receivable	7500
Bills Discounted (One bill for Rs. 5000 known to be bad)	
Book Debts:	
Good	5000
Doubtful (estimated to produce 50 paise in a rupee)	3500
Bad	3000
Land and Building (estimated to produce rs. 50000)	75000
Stock in trade (estimated to produce Rs. 20000)	25000
Machinery, Tools etc. (estimated to produc rs. 1000)	2500
Cash in hand	50
Profit and Loss Account (Dr.)	196950

Solution : Statement of Affairs of General Trading Company Limited

On 31st March, 2007 the date of winding up order

(Showing Assets at estimated realizable values and liabilities expected to rank)

	Estimated Realisable Values Rs.
Assets not specifically pledged (as per list A)	
Cash in hand	50
Bills Receivable	7500
Book Debts	6750
Unpaid Calls	1000
Stock in Trade	20000
Land & Buildings	50000
Machinery & Tools etc.	1000
Assets Spcifically Pledged(as per list B)	

(a) Estimated Realisable Valaues	(b) Due to Realisable Valaues	(c) Deficiency ranking as unsecured	(d) Surplus carried to last column
Rs.	Rs.	Rs.	Rs.
Securities 17500	15000	--	2500
Securities 5000	10000	5000	----

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

22500	25000	5000	2500		

Estimated surplus from asets specifically pledged	2500
Estimated total assets available for Preferential Creditors, Debentureholders with floating changed and unsecured creditors	88800
Summaryof Gross Assets :	
Gross realizable value of assets specifically pledge 22500	
Other Assets 86300	
Gross Assets 108800	

Gross Liabilities Rs.		Rs.
	Estimated Total Assets available for Preferential Creditors, Debenture holders with a floating charge and unsecured creditors brought forward. (To be deducted from Surplus or added to deficiency as the case may be) Secured Creditors (as	88800
20000	per list B) to extent to which claims are estimated to be covered by Assets specifically pledged	
	Preferential Creditors (as per list C)	
3000	Estimated balance of Assets available for Debentureholders with floating charges and unsecured creditors	3000
	Debentureholders secured by a floating charge (as per list D)	
	Estimated surplus as regards debetureholders	85800
75000	Unsecured creditors (as per list E) Rs.	75000
	Unsecured balance of Partly secured creditors 5000	10800
	Bills Payable 50000	
5000	Unsecured Creditors 35000	
50000	Bank Overdraft 5000	
35000	Bills discounted 5000	
5000	Estimated Deficiency as regards Creditors being the difference	
5000	between Rs.	100000
	Grosss Assets 108800	
	And Gross Liabilities 198000	
	Issued and Called up Capital :	
198000	10000 Preference shares of Rs. 10 each (as per list F)	89200
	10000 Equity shares of Rs. 10 each Rs. 5 paid up	
	(as per list G) 50000	100000
	Less : Calls in arrears (irrecoverable) 1000	
	Estimated Deficiency as regards members (as per list H)	
		49000
		238200

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Illustration 5 :

The following iformation is obtained with regard to the assets and liabilities of R. Ltd. As on 30th June 2007 on which date a winding up order has been issued against it:

30 जून, 2007 को आर लिमिटेड की निम्नलिखित सम्पत्तियां एवं दायित्वों के सम्बन्ध में विवरण प्राप्त किए तथा इसी तिथि को समापन के आदेश जारी हुए:

	Rs.
Freehold Premises (book value Rs. 450000) valued at	375000
First Mortgage of Freehold Premises	300000
Second Mortgage on Freehold Premises	112500
8% Debentures carrying a flotating charge on the undertaking	
Interest due on 1st September and 1st April, and paid on due dates	150000
Managing Director's Emoluments (6 months)	22500
Staff Salary unpaid (one month)	16050
Trade Debtors-Good	31500
Doubtful (Estimated to Realise 50%)	12900
Bad	72750
Plant and Machinery (Book value Rs. 247500) estimatede to realize	174000
Bank Overdraft	58125
Cash in hand	825
Stock (at cost Rs. 50850) estimated to realize	33900
Issued Capital : Equity Shares of Rs. 10 each, Fully called up	150000
Calls in arrears, Rs. 3000 estimated to realize	1500
Unsecured Creditors	296250
Contingent Liabilities in respect of a claim for damages Rs. 37500:	
Estimated to be settle for	18000
Income Tax liability : For 30.6.2005	5250
For 30.6.2006	1275
For 30.6.2007	2700

The reserve of the company on 1.7.2006 amounted to Rs. 7500.

You are required to prepare : (i) Statement of Affairs, or (ii) Deficiency Account

आपको तैयार करना है : (i) स्थिति विवरण पत्र तथा (i) न्यूनता खाता

Solution : **Statement of Affairs of R. Ltd. On 30th June, 2006**

	Estimated Realisable Values Rs.
Assets not specifically pledged (as per list A)	
Cash in hand	825

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Trade Debtors	37950
Unpaid Calls (recoverable)	1500
Stock	33900
Plant and Machinery	174000

Assets Spcifically Pledged(as per list B)

(a) Estimated Realisable Valaues	(b) Due to Secured Creditors	(c) Deficiency ranking as unsecured	(d) Surplus carried to last column
Rs.	Rs.	Rs.	Rs.
Freehold Premises 300000 (first mortgage)	300000	--	---

Freehold Premises 75000 (first mortgage)	112500	37500	
375000	412500	37500	--

Estimated surplus from asets specifically pledged	Nil
Estimated total assets available for Preferential Creditors,Debentureholders with floating changed and unsecured creditors (carried forward)	248175

Summaryof Gross Assets :

Assets specifically pledged	375000
Other Assets	248175
Gross Assets	623175

Gross Liabilities	Liabilities	Rs.
Rs.	Estimated Total Assets available for Preferential Creditors, Debenture holders with a floating charge and unsecured creditors (brought forward)	248175
375000	Secured Creditors (as per list B) to the extent claims are covered by Assets specifically pledged	
20025	Preferential Creditors (as per list C)	20025
		228150
	Estimated balance of Assets available for Debentureholders having by a floating charges and unsecured creditors	
153000	Debentureholders secured by a floating charge (as per list D)	153000
	Estimated surplus as regards debetureholders	75150

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

	Unsecured creditors (as per list E) Rs.	
37500	Unsecured balance of Claim of Partly secured creditors 37500	
296250	Trade Creditors 296250	
27750	Outstanding Expenses and taxes 27750	
58125	Bank Overdraft 58125	
18000	Contingent liability for claim for damages 18000	437625
985650		
	Estimated Deficiency as regards Creditors being the difference between : Rs.	
	Grosss Assets 623175	
	And Gross Liabilities 985650	362475
	Issued and Called up Capital :	
	Preference shares capital (as per list F)	
	15000 Equity shares of Rs. 10 each fully called up	
	(as per list G) 150000	
	Less : Irrecoverable Calls 1500	1485000
	Estimated Deficiency as regards members (as per list H)	510975

List H-Deficiency Accounts

Items Contributing to Deficiency :		**Rs.**
Net trading losses		255825
Estimated losses now written off for which provision provision has been made for the purpose of preparing the statement:	Rs.	
On Freehold Premises	75000	
On Trade Debtors	79200	
On Plant & Machinery	73500	
On Stock	16950	
On Claim for damages	18000	262650
Items reducing deficiency		518475
Excess of Assets over Capital and Liabilities as on 1st July, 2003 (reserves)		7500
Deficiency as shown by Statement of Affairs		**510975**

Working Notes:

1. Preferential Creditors : Income Tax Rs. 1275 and Rs. 2700 for 30th June, 2006 and 2007 treated as due and **Rs.** **Rs.**

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

payable within 12 months of winding up.	3975	
Staff Salary	16050	20025

2. Calculation of net trading losses by preparing balance sheet

Balance Sheet

Liabilities	Amount	Assets	Amount
Capital (net)	Rs. 147000	Freehold Premises	Rs. 450000
Reserves	7500	Plant and Machinery	247500
First Mortgage Loan	300000	Sundry Debtors	117150
Second Mortgage Loan	112500	Stock	50850
8% Debentures	150000	Cash	825
Interest for 3 months (April 2005 to June, 2005)	3000	Profit & Loss Account (Balancing figure)	255825
Sundry Creditors (including managerial remuneration and salaries)	334800		
Bank Overdraft	58125		
Provision for Taxation	9225		
	1122150		1122150

निस्तारक के हिसाब का विवरण

(Liquidator's Statement of Account)

जब एक कम्पनी का समापन न्यायालय के आदेशानुसार अनिवार्य रूप से कर दिया जाता है तो सरकारी निस्तारक को नियुक्ति कर दी जाती है। समापन के आदेश जारी होने के साथ ही निस्तारक को कम्पनी की समस्त सम्पत्तियों को अपने कब्जे में लेने का अधिकार है। समापन के आदेश के बाद वह कम्पनी का सर्वोच्च अधिकारी होता है। निस्तारक का कर्त्तव्य है कि वह अपने

प्राप्ति तथा भुगतानों का पूर्ण हिसाब रखे। उसे प्रत्येक छः माह के अन्त में न्यायालय के पास हिसाब का विवरण भेजना पड़ता है। वह कम्पनी के कोषों को किसी निजी बैंक में नहीं रख सकता। उसको इन कोषों को रिजर्व बैंक (Public Account of India) में रखना पड़ता है। निस्तारक को कम्पनी की सम्पत्तियों को वसूल करने तथा दायित्वों का भुगतान करने का अधिकार है। जब कम्पनी की समस्त सम्पत्तियां वसूल हो जाती है तो निस्तारक न्यायालय को अन्तिम हिसाब का विवरण प्रस्तुत करता है। इसे निस्तारक का अन्तिम हिसाब का विवरण (Liquidator's Final Statement of Account) कहते हैं।

Receipt	Estimated Value Rs. P	Value Realised Rs. P	Payments	Rs. P	Payment Rs. P
Assets :			Legal Charges		
Cash at Bank			Liquidator's		
Cash in Hand			Remuneration:		

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

Marketable securities			Where applicable		
Bills Receivable			% on Rs…..realised		
Trade Debtors			% on Rs. …distributed		
Loan and Advances			Total	.....	
Stock in trade			(By whom fixed…..)		
Work in progress			Auctioneers and valuers		
Freehold property			Charges		
Plant and Machinery			Costs of possession and		
Furniture & Fixtures			Maintenance of estate		
Utensils etc.			Cost of notice in Gazette		
Patents, Trade Marks etc.			and newwpapers		
Investment other than			Incidental outlay (esta-		
Marketable securities			blishment charges of		
Surplus from fully secured creditors			Liquidations) Total costs and charges		
Unpaid calls at commencement of winding up			Debenture holder payment of Rs…. Per Rs. ….. Debenture		
Amount realized from			Payment of Rs…. Per Rs. Debentures		
Calls from contribution made in the winding up			Creditors		
Receipt per Trading			Preferential		
Account			Unsecured :		
Other Property, viz. ………………… ………………… Total			Divident ….P. in the Rupee on Rs…….. (The estimate of the amount expected to rank for dividend was Rs…)		
Less: Payment to redeem securities Cost of execution Payment per Trading Account			Returns to Contributorie P. per rupee + share….P Per rupee….. + Share … P Per rupee + share		

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

निस्तारक के अन्तिम हिसाब के विवरण तैयार करने की विधि–

उपर्युक्त प्रारूप को देखने ज्ञात होता है कि निस्तार के अन्तिम हिसाब का विवरण प्राप्ति तथा भुगतान खाता (Receipts & payment Account) के रूप में तैयार किया जाता है। यह विवरण एक खाते के रूप में बनाया जाता है। बाएं हाथ वाला पक्ष प्राप्ति पक्ष तथा दाहिने हाथ वाला पक्ष भुगतान पक्ष कहलाता है। इन पक्षों पर सम्बन्धित मदों को लिखते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए।

प्राप्ति पक्ष से सम्बन्धित मदों के विषय में:

(i) रोकड़ एवं बैंक शेषः इनकी वसूली करने की आवश्यकता नहीं पड़ती, अतः इनको उनके मूल राशि पर बता देना चाहिए।

(ii) अन्य सम्पत्तियों के बेचने से वसूलीः रोकड़ और बैंक को छोड़कर प्रायः अन्य सम्पत्तियों के लिए सम्पत्ति का पुस्तक मूल्य, सम्पत्ति का अनुमानित वसूली मूल्य तथा सम्पत्ति के वास्तविक वसूली मूल्य सम्बन्धी सूचनाएं दी हुई रहती है। इन मूल्यों में से निस्तारक के अंतिम हिसाब–किताब विवरण में, सम्पत्ति का वास्तविक वसूली मूल्य प्राप्त पक्ष पर लिखा जाता है। यदि अलग–अलग सम्पत्तियों का वसूली मूल्य ज्ञात नहीं है तो समस्त सम्पत्तियों का सामूहिक वसूली मूल्य लिखना चाहिए।

यदि सम्पत्तियों का अलग–अलग वसूली मूल्य उपलब्ध है तो ऐसी स्थिति में सम्पत्तियों से प्राप्त अलग–अलग वसूली मूल्य लिखना चाहिए। यदि प्रश्न में सम्पत्तियों का अनुमानित वसूली मूल्य दे रखा है तो इसको भी न्यायालय की सूचनार्थ एक अलग खाने में दिखाना चाहिए। यह स्मरण रखना चाहिए कि सम्पत्तियों के अनुमानित वसूली मूल्य की सूचना विवरण में दी हुई रहती है।

(iii) सुरक्षित लेनदारों के पास सम्पत्ति से वसूलीः कम्पनी की सम्पत्ति सुरक्षित लेनदारों के पास प्रभार के रूप में रहती है। सुरक्षित लेनदारों को उन सम्पत्तियों को बेचकर अपने ऋण को वसूल करने का अधिकार है। वसूल करने के पश्चात यदि कोई राशि शेष रहती है, तो सुरक्षित लेनदारों को उसे कम्पनी को लौटानी पड़ती है। इस सम्बन्ध में ध्यान रखना चाहिए कि निस्तारक के हिसाब विवरण के प्राप्ति पक्ष पर प्रभार में रखी हुई सम्पत्ति का कुल वसूली मूल्य सम्मिलित नहीं किया जाता है अपितु सुरक्षित लेनदारों से उनके भुगतान करने के पश्चात निस्तारक को जो अवशिष्ट राशि प्राप्त हुई है, उसी को दिखाया जाता है।

(iv) अदत्त मांग राशि की वसूली (Recovery of Unpaid Calls): यदि किसी अंशधारी द्वारा मांग राशि का भुगतान नहीं किया है तो निस्तारक को इस प्रकार की अदत्त मांग राशि को वसूल करने का अधिकार है। वसूल की हुई राशि को हिसाब–विवरण के प्राप्ति पक्ष पर बताना चाहिए।

(v) धनदाताओं (Contributories) से वसूली : कम्पनी की समापन क्रिया प्रारम्भ होने के बाद अंशधारियों पर जो मांग की जाती है और उसके फलस्वरूप जो राशि वसूल होती है वह धनदाताओं से वसूली कहलाती है। इनको भी अन्तिम हिसाब–विवरण के प्राप्ति पक्ष पर दिखलाया जाता है।

(vi) व्यापार संचालन से प्राप्तिः प्रायः समापन की क्रिया प्रारम्भ होने के पश्चात एक निस्तारक का कार्य सम्पत्तियों की वसूली तथा दायित्वों के भुगतान एक ही सीमित रहता है। कम्पनी का व्यवसाय चालू नहीं रखा जाता। परन्तु कुछ परिस्थितियों में न्यायालय की अनुमति से व्यवसाय को चालू रखा जाता है तो व्यापार संचालन से प्राप्त राशि को भी प्राप्ति पक्ष पर दिखाना चाहिए।

Illustration 7 :

The X Co. Ltd. Went into Liquidation with the following liabilities :

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(a) Secured Creditors Rs. 20000 (Securities realized Rs. 25000);

(b) Preferential Creditors Rs. 6000; and

(c) Unsecured Creditos Rs. 30500.

The liquidator is entitled to remuneration of 3% on the amount realized and 1½% on the amount distributed to unsecured creditors (excluding preferential creditors). The various assets (excluding securities in the hands of fully secured creditors) realized Rs. 26000.

You are required to prepare the Liquidator's Account showing the composition given to the unsecured creditors. The liquidator is entitled to his renumeration on the realization of securities in the hands of secured creditors.

दी एक्स कम्पनी लिमिटेड का निम्नलिखित दायित्वों के साथ समापन हुआ:

(अ) सुरक्षित लेनदार 20000 रू. (प्रतिभूतियों से वसूली 25000 रू.)

(ब) पूर्वाधिकार लेनदार 6000 रू. तथा

(स) असुरक्षित लेनदार 30500 रू.।

निस्तारक के पास से 252 रू. व्यय हुए।

निस्तारक को वसूल हुई राशि पर 3% तथा असुरक्षित लेनदार (पूर्वाधिकार लेनदारों को छोड़ते हुए) को वितरित राशि पर 1½% पारिश्रमिक पाने का अधिकार है। विभिन्न सम्पत्तियों से (सुरक्षित लेनदारों के पास प्रतिभूति के अतिरिक्त) 26000 रू. वसूल हुये।

आपको असुरक्षित लेनदारों को निपटारे में दी हुई राशि को व्यक्त करते हुए निस्तारक का हिसाब का विवरण तैयार करता है। निस्तारक सुरक्षित लेनदारों के पास रखी प्रतिभूतियों की वसूली पर भी पारिश्रमिक पाने का अधिकारी है।

Solution : **The X Co. Ltd.**

(In Liquidation)

Liquidator's Statement of Account

Receipt	Amount Rs.	Payments	Amount Rs.
To Realisation from Assets :		By Liquidator's Renumeration :	
Surplus from fully secured Creditors	5000	3% on Rs. 51000 1530 1½% on Rs. 22875 343	1873
Other Assets	26000	By Liquidation Expenses	252
		By Preferential Creditors	6000
		By Unsecured Creditors : (first and final dividend of 75 paise in a Rupee on (Rs.33500)	22875
	31000		31000

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Illustration : 8

The Bharat Company Ltd. Went into voluntary liquidation on 31st March, 2007 with the undermentioned assets and liabilities. The capital of the company consisted of 1000 equity shares of Rs. 500 each fully paid.

31 मार्च, 2007 को भारत कम्पनी लिमिटेड का अग्रलिखित सम्पत्तियों एवं दायित्वों के साथ समापन हुआ। कम्पनी की अंश पूँजी पूर्ण प्रदत्त 500 रू. वाले 1000 इक्विटी अंशों में विभाजित थी।

Assets :	Rs. P
Cash in hand	859.18
Stock in trade which realized	29600.00
Book debts which realized	49200.00
Furniture which realized	1050.00
Investment lodged with bankers against overdraft account which were sold by the bankers for	4900.00
Liabilities :	
Unsecured Creditors	53700.00
Preferential Creditors	5295.00
Bank overdraft	4000.00
6% Debentures, secured by a floating charge on the undertaking The interest on which was paid to 30th September, 2006	44000.00

The excess amount realized from the sale proceeds of the investments were remitted by the bankers to the liquidator. The debentures were paid off on 30th September, 2007 together with interest to date of winding up and first and final dividend distributed to the creditors. The Liquidator's remuneration is to be calculated at the rate of 3% on the net amount realized (including cash in hand but excluding the amount paid to the secured creditors out of the proceeds of their security) and 2% on the amount distributed to unsecured creditors. The expenses of winding up amounted to Rs. 1014.75. Prepare the Liquidator's Final Statement of Account showing the rate and the amount of final dividend payable to unsecured creditors.

बैंक ने विनियोगों के बेचने से अधिशेष राशि को निस्तारक को लौटा दी। 30 सितम्बर, 2007 को ऋणपत्रों का भुगतान किया गया तथा उन पर समापन की तिथि तक का ब्याज दिया गया। उसी तारीख को लेनदारों को भी प्रथम तथा अन्तिम लाभांश दिया गया। निस्तारक के पारिश्रमिक की गणना शुद्ध वसूली मूल्य (रोकड़ को सम्मिलित करते हुए परन्तु प्रतिभूति में से सुरक्षित लेनदारों को भुगतान की गई राशि को छोड़ते हुए) पर 3% कमीशन तथा असुरक्ष्झित लेनदारों को वितरित की गई राशि पर 2% कमीशन के हिसाब से करनी है। समापन के व्यय 1014.75 रू. थे। निस्तारक के अन्तिम हिसाब का विवरण, लेनदारों को अन्तिम लाभांश के रूप में दी हुई राशि तथा दर को व्यक्त करते हुए बताइए।

Solution : **The Bharat Company Ltd.**

(In Voluntary Liquidation)

Liquidator's Statement of Account

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Receipt	Amount Rs.	Payments	Amount Rs.
To Assets : Cash 859.18 Stock 29600.00 Debtors 49200.00 Furniture 1050.00	80709.18	By Liquidator's Renumeration : 3% on Rs. 81609.18 2448.18 2% on Rs. 5295.0 105.90 2% on Rs. 26887.5 537.75	3091.93
To Surplus of investment from secured creditors	900.00	By Liquidation Expenses By Preferential Creditors	1014.75 5295.00
		By Debentureholders : Debentures 44000 Interest for 6 months 1320 By Unsecured Creditors Final dividend of 50 paise in a rupee on Rs. 53775)	45320.00 26887.00
	81609.18		81609.18

Illustration 12: B Limited went into voluntary liquidation. The details regarding liquidation are as follows:

बी. लिमिटेड ऐच्छिक समापन में गयी। समापन सम्बन्धी सूचनाएं निम्नलिखित हैं–

Share Capital:

1. 4000 8% Preference Shares of Rs. 100 each (fully paid-up)
2. Class A 4000 Equity Shares of Rs. 100 (Rs. 75 paid up)
3. Class B 3200 Equity Shares of Rs. 100 (Rs. 60 paid up)
4. Class C 28000 Equity Shares of Rs. 10 (Rs. 5 paid up)

Assets including machinery realized Rs. 840000. Liquidation expenses including renumeration of liquidator amounted to Rs. 30000. The company has borrowed a loan of Rs. 100000 from Patil Brothers against the mortgage of machinery (which realized Rs. 161000). In the books of the company salaries of eight clerks for four months at a rate of Rs. 300 per months and salaries of eight peons for three months at a rate of Rs. 300 per months and salaries of eight peons for three months at a rate of Rs. 150 per moth, are outstanding. In addition to this, the company's books shows the creditors worth Rs. 174800. Prepare liquidator's Statement of receipt and payments.

सम्पत्तियों (मशीन सहित) से 840000 रू. प्राप्त हुए, समापन व्यय जिसमें समापक का वेतन सम्मिलित है 30000 रू. था। कम्पनी ने मशीन (जिसमें 161000 रू. प्राप्त हुए) को गिरवी रखकर पाटिल ब्रदर्स से 100000 रू. का ऋण लिया। कम्पनी की किताबां में आठ लिपिकों का चार माह का वेतन 300रू. प्रतिमाह की दर से तथा

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

आठ चपरासियों का तीन माह का वेतन 150 रू. प्रतिमाह की दर से बकाया था। इसके अतिरिक्त कम्पनी की किताबों में 174800रू. के लेनदार बकाया थे। प्रापक का प्राप्ति एवं भुगतान विवरण तैयार कीजिए।

Liquidator's Statement of Account

Receipt	Amount Rs.	Payments	Amount Rs.
Assets realised :	679000	Expenses of Liquidator's	30000
Surplus from Secured Creditors	61000	Preferential Creditors	13200
Proceeds of calls at 10 paise per share on class "C" shares	2800	Unsecured Creditors	174000
		Preference Shareholders	400000
		Return of Rs. 24 per share on 'A' class shares	96000
		Return of Rs. 9 per share on 'B' class shares	28000
	742800		742800

Working Note:

(i) Calculation of Preferential Creditors :

	Rs.
Salary of Clerks : for 8 persons at Rs. 1200 each	9600
Salary of 8 peons at Rs. 450 each	3600
Total	13200

(ii) Distribution of Capital among Equity Shareholders :

Since the face value and paid up value of the shares are different, therefore, it is necessary to know, how much surplus is available for the equity shareholders and what deficiency they have to bear.

Calculation of Surplus:	Rs.	Rs.
Assets realised		840000
Less : Liquidation Expenses	30000	
Preferential Creditors	13200	
Unsecured Creditors	174800	
Secured Creditors	100000	
Preference Shareholders	400000	718000
Balance being surplus available to Equity Shareholders		122000

Calculation of Deficiency :

Equity Share Capital to be returned	300000
4000 shares at Rs. 75 per share	192000
3200 shares at Rs. 60 per share	140000
	632000

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Less : Surplus Available		122000
	Total Deficiency	510000

Percentage of Deficiency = $\frac{\text{Total deficiency}}{\text{Nominal value of shares}} \times 100$

$= \frac{\text{Rs. } 51000}{\text{Rs. } 1000000} \times 100$

Adjustment of rights of contributories:

	'A' shares Rs.	'B' shares Rs.	'C' shares Rs.
Paid up amount	75	60	5.00
Less : Loss to be suffered at 51% of The nomial value	51	51	5.10
Net amount returnable (+) or Receivable (-)	24	9	-0.10

Illustration 21 :

On 1st January, 2007, R. Ltd. went into voluntary liquidation. On 31st December, 2006 the liquidator submitted the following position to prepare his Final Statement of Account on that date:

1 जनवरी, 2007 को आर. लिमिटेड ऐच्छिक समापन में गई। 31 दिसम्बर, 2006 को निस्तारक ने निम्नलिखित स्थिति उसके हिसाब के अन्तिम विवरण बनाने के लिए दी।

	Rs.
10000 7% Cumulative Preference Shares of Rs. 100 each fully called & paid up	1000000
20000 Equity Shares of Rs. 100 each Rs. 75 per share called & paid up	1500000
Securities Premium	200000
Generral reserve	1000000
Profit & Loss a/c (Cr.) Balance	300000
6% Debentures having a floating charge on the assets of the company	800000
Fully Secured Creditors (Securities of the book value or Rs. 600000 Pledged with them which realised Rs. 500000)	400000
Unsecured Creditors (including Rs. 60000 as salary & wages for the Month of November & December 2006, Rs. 40000 as incoe tax for the Assessment year 2005-06 and Rs.30000 to the Director of industries, Government of Rajasthan for the loan borrowed by him.)	1948000
Liquidation expenses	30000
Cash on realization of assets other then pledged with secured creditors	6900000

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

The liquidator is entitled to get one per cent commission on amounts realised and 2 per cent commission on amounts distributed to shareholders.The Articles of Association of the company provide that in the event of winding up preference share would rank for payment before equity shares, but arrears for dividend on Preference Shares will be paid after refunding of amount on equity share capital.The Articles of Association of the company also provide that if any surplus remains in the compay after meeting the above claims, the same shall be shared both by equity and preference shareholders, the former having right to participate in surplus three times than that of the later. The dividend on preference shares had been paid up to 31 December, 2003 while the interest on debentures had been paid up to 30th June, 2003.

Prepare Liquidator's Final Statement of Account.

निस्तारक को वसूल की गयी राशि पर एक प्रतिशत तथा अंशधारियों में वितरित की गई राशि पर 2 प्रतिशत कमीशन प्राप्त करने का अधिकार है। कम्पनी के अन्तर्नियमों में यह व्यवस्था है कि कम्पनी के समापन की स्थिति में पूर्वाधिकार अंशों को इक्विटी अंशों से पूर्व भुगतान प्राप्त करने का अधिकार है। परन्तु पूर्वाधिकार अंशों पर बकाया लाभांश का भुगतान इक्विटी अंशधारियों के भुगतान के पश्चात किया जायेगा। अन्तर्नियमों में यह भी व्यवस्था थी कि यदि उपरोक्त दावों के भुगतान करने के पश्चात कम्पनी में कोई आधिक्य रहता है तो उसको इक्विटी अंशधारियों और पूर्वाधिकार अंशधारियों में बांध दिया जावेगा। इनमें पूर्व वर्णित अंशधारियों को आधिक्य में से बाद वाले अंशधारियों से तीन गुना भाग प्राप्त करने का अधिकार है। पूर्वाधिकार अंशों पर लाभांश 31 दिसम्बर, 2003 तक दिया गया है। जबकि ऋणपत्रों पर ब्याज 30 जून 2003 तक दिया जा चुका है।

निस्तारक का अन्तिम हिसाब का विवरण तैया कीजिए।

R. Limited
(In Voluntary Liquidation)
Liquidator's Statement of Account

Receipt	Amount Rs.	Payments	Amount Rs.
To amount realised from Assets To Surplus from Secured Creditors	6900000 100000	By Liquidator's Renumeration : 1% on Rs. 7000000 70000 2% on Rs. 4000000 80000	150000
	742800	By Liquidation Expenses By Preferential Creditors	30000 100000
		By Debentureholders including interest : By Unsecured Creditors By Refund of Pref. Share Capital By Refund of E. Shares Capital By Dividends on Preference Shares for one years	872000 1848000 1000000 1500000 70000

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

		By Preference Shareholders (¼ of the surplus)	357500
		By Preference Shareholders (¾ of the surplus)	1072500
	7000000		7000000

प्रापक की नियुक्ति

(Appointment of Receiver)

कभी–कभी कम्पनी के किसी विशिष्ट के ऋणदाओं (जैसे Debenturesholders) से कम्पनी का ऐसा समझौता होता है जिसके अनुसार उनको कुछ विशिष्ट परिस्थितियों में प्रापक नियुक्त करने का अधिकार दिया जाता है। ऐसी स्थिति में ये ऋणदाता न्यायालय से प्रापक की नियुक्ति करा सकते हैं।

Illustratin : 22

A Ltd. got into financial difficulties and a receiver was appointed on 31 March, 2007 by the debentureholders under the terms of agreement which provided a floating charge on asset.

A resolution for voluntary winding up was passed on April 30, 2007 when a liquidator was appointed.

The following iss a summary of the company's position as on 31 March, 2007.

ए लिमिटेड को वित्तीय कठिनाइयाँ आ गई और ऋणपत्रधारियों द्वारा शर्तों के अनुसार 31 मार्च, 2007 को प्रापक नियुक्त किया गया। ऋणपत्रधारियों को सम्पत्तियों पर चल प्रभार था।

30 अप्रैल, 2007 को ऐच्छिक समापन के लिए प्रस्ताव पारित किया गया और उसी तारीख को निस्तारक की नियुक्ति भी की गई।

31 मार्च, 2007 को कम्पनी की आर्थिक स्थिति निम्न प्रकार थी।

Balance Sheet

Particulars	Amount Rs.	Particulars	Amount Rs.
200 6% Preference Shares of Rs. 100 each fully paid	20000	Fixed Assets	77000
		Stock	61230
100000 Equity shares of Rs.1 each, 80 paise called up 80000 Less: Calls in arrears 20 paise per share on 5000 shares 1000	79000	Debtors	21365
		Profit & Loss Account	59725
Capital Reserve 5% Debentures 20000 Ass: Interest Accrued 375	20375		

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Bank Loan @ 5½% per annum (Collaterally secured by depositing Debentures worth Rs. 10000 ranking equally with the above) Creditors	8800 83145		
	219320		219320

Creditor comprised as follows : लेनदारों में निम्नलिखित सम्मिलित थे:

	Amount Rs.		Amount Rs.
1. Local Taxes	148	6. Loan by a director to enable salaries for the month of March, 2007 to be paid	2600
2. Sales Tax	130	7. Remaining Creditors	75567
3. Managing Directors Renumeration	1200		
4. Director's Fees	3000		
5. Income Tax	500		
			83145

The Receiver collected Rs. 12490 from debtors and sold some of the stock for Rs. 30792. His expenses and remuneration amounted to Rs. 2800. On June 30, 2007 he made all his obligatory payments and transferred the balance to the liquidator.

The liquidator realised Rs. 42886 from the fixed assets and Rs. 28339 from the remaining stock and collected the rest of the book debts in full.

He made a final call. The call was paid in fully by all the shareholders except one who owed Rs. 1000 for calls in arrear because he could not be traced.

The liquidator made his distribution on August 31, 2007. His expenses amounted to Rs. 305. His remuneration was fixed at a sum equal to 2% on the amount realised by him and 1% on the amount whatsoever distributed by him.

The Company's Articles provided that the preference shareholders, togetherwith any arrears of dividend to the date of winding up, should rank in priority to equity share holders. No dividend on preference shares has been paid since July, 2005.

You are required to prepare:

(i) Receiver's Receipts and Payments Account; and

(ii) Liquidator's Final Statement of Account.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

प्रापक ने देनदारों से 12490 रू. तथा आंशिक स्टॉक की विक्री से 30792 रू. एकत्रित किये। उसका व्यय तथा पारिश्रमिक 2800 रू. हुआ। 30 जून, 2007 को उसने समस्त आवश्यक भुगतान कर दिये और शेष धन राशि को निस्तारक को हस्तांतरित कर दिया।

निस्तारक ने स्थायी सम्पत्तियों से 42886 रू. शेष स्टाक की बिक्री से 28339 रू. तथा शेष देनदारों से समस्त धन वसूल किया। उसने अंशों पर अन्तिम मांग की जो कि पूर्ण प्राप्त हो गई, केवल उस अंशधारी से कोई रकम प्राप्त नहीं हो सकी जिसकी तरफ 1000 रू. की बकाया मांगे थी क्योंकि उसका कहीं पता ही न लग सका।

निस्तारक ने 31 अगस्त, 2007 को धनराशि का वितरण किया। उसका व्यय 305 रू. हुआ। पारिश्रमिक वसूल किये हुए धन पर 2% और वितरित (जो भी) किये गये धन पर 1ः की दर से निश्चित हुआ था।

कम्पनी के नियमों में यह प्रावधान था कि पूर्वाधिकार अंशों को उनके लाभांश की बाकियों सहित (उसका समापन की तारीख तक का) इक्विटी अंशधारियों के पूर्व भुगतान किया जायेगा। पूर्वाधिकार अंशों पर 1 जुलाई, 2005 से कोई लाभांश नहीं दिया गया था।

आपको निम्नलिखित तैयार करना हैः

(1) प्रापक का एक प्राप्ति तथा भुगतान खाता तथा

(2) निस्तारक का अन्तिम लेखा विवरण।

Solution :

A Limited

(In Voluntary Liquidation)

Receiver's Receipts and Payments Account

	Amount Rs.			Amount Rs.
To amount realised from		By Expenses & Renumeration		2800
Debtors	12490	By Preferential Creditors		3378
Stock	30792	By Debenture	20000	
		Interest accured	375	
		Interest for 3 months	<u>250</u>	20625
		By Bank Loan	8800	
		Interest for 3 months	<u>121</u>	8921
		By Payment to Liquidator (Balancing Figure)		7558
	43282			43282

Liquidator's Final Statement of Account

	Amount Rs.			Amount Rs.
To Payment from Receiver	7558	By Liquidator's Renumeration		
To Amount Realised from :		2% on Rs. 99100	1982	

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

Fixed Assets	42886	1% on Rs. 103337 <u>1034</u>	3016
Stock	28339	By Liquidation Expenses	305
Debentures	8875	By Unsecured Creditors	79767
To Final Call on Equity Shares (Rs. 20000-1000)	19000	By Preference Shares-Refund of Capital	20000
		By Preference Share Dividend (for 22 months)	2200
		By Equity Shares-Refund of Capital	1370
	106658		106658

धनदाता

(Contributory)

धनदाता से तात्पर्य उन सभी व्यक्तियों से है जो कि कम्पनी के समापन के समय कम्पनी को धन देने के लिए उत्तरदायी होते हैं। पूर्ण प्रदत्त अंशों के धारक अंशधारी भी धनदाताओं की श्रेणी में आते हैं क्योंकि कुछ परिस्थितियों में उनकी भी आवश्यकता पड़ती है जैसे सभी ऋणों का भुगतान करने के बाद अगर कुछ धन अंशधारियों में वापस किया जाय तो पूर्ण प्रदत्त पुरूषों के अंशधारी भी उसमें हिस्सा लेंगे।

कम्पनी के धनदाताओं को दो श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है– 1. वर्तमान सदस्य एवं 2. भूतपूर्व सदस्य। वर्तमान सदस्य वे हैं जो कम्पनी के समापन के समय सदस्यों के रजिस्टर में मौजूद हैं। भूतपूर्व सदस्य वे हैं जिनके नाम पहले सदस्यों के रजिस्टर में थे। परन्तु अब समापन के प्रारम्भ होने के समय नहीं है क्योंकि उन्होंने अपने अंश दूसरों के नाम हस्तांतरित कर दिये हैं।

धनदाताओं की अ और ब सूचियां (List A and B of Contributory)

वर्तमान सदस्यों की सूची को लिस्ट ए कहा जाता है और भूतपूर्व सदस्यों की जो सूची बनती है उसे लिस्ट बी कहा जाता है। ब सूची में उन धनदाताओं को सम्मिलित किया जाता जो कम्पनी समापन प्रारम्भ होने के एक वर्ष पूर्व के अन्दर कम्पनी की सदस्यता से अलग हुए है। अ सूची के धनदाताओं का प्रमुख दायित्व होता है जबकि ब सूची के धनदाओं का दायित्व गौड़ होता है।

Illustration 24 :

Anurag Limited went into liquiation on 1st January, 2007. Certain creditors remained unpaid and the following information regarding the contributories appearing on lits B is available.:

अनुराग लिमिटेड 1जनवरी, 2007 को समापन में चली गयी। कुछ लेनदारों को नुकसान नहीं हुआ है तथा धनदाता के सम्बन्ध में जिनका नाम बी सूची में हैं निम्न सूचना उपलब्ध है।

Name of Contributory	No. of Shares transferred	Date of Transfer of Shares	Creditors Remaining upaid on the date of transfer
Bimal	1250	December 1, 2006	60000
Mohan	1250	May 31, 2007	76000
Ram	1000	July 15, 2007	86500
Raghav	2500	November 15, 2007	90000

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

The shares are of Rs. 100 each, Rs. 80 paid. Assuming that the contributories on the 'A' list completely default, prepare a statement showing the amount to be realised from the various contributories of list 'B'.

प्रत्येक अंश 100 रू. का है, जिस पर 80 रू. प्रदत्त हैं। यह मानते हुए कि 'ए' सूची के धनदाओं की पूर्ण रूप से असमर्थता है, 'ब' सूची के विभिन्न धनदाओं से प्राप्त की जाने वाली राशियां ज्ञात करने के लिए एक विवरण पत्र बनाइए।

Date of transfer of share	Creditors outstanding on date of transfer Rs.	Mohan (Shares: 1250 x 2(Max. Liability Rs. 25000) Rs.	Ram (Shares: 1000 x 20 Max. Liability : Rs. 20000) Rs.	Raghav (Shares: 2500 x 20 Max. Liability : Rs. 50000) Rs.	Total Rs.
31.5.2007	76000	20000	16000	40000	76000
15.7.2007	10500	..	3000	7500	10500
15.11.2007	3500	..	..	2500	2500
	90000	20000	19000	50000	89000

Questions

1. (a) Explain clearly what is meant by Preferential Creditors?

(b) What do you understand by Liquidator's Final Statement of Account? When and how is it prepared?

(अ) पूर्वाधिकार लेनदारों से आप क्या समझते हैं? स्पष्टतया समझाइये।

(ब) निस्तारक के अन्तिम हिसाब के विवरण से आप क्या समझते है? यह कब और कैसे तैयार किया जाता है?

2. A Limnited company which has a paid up share capital of Rs. 1000000 and a loss of Rs. 1115000 standing in its balance sheet went into voluntary liquidation on 31 March, 2007. The following are the particulars of its assets and liabilities as on that date:

Machinery, Stock and Debtors (which realised their book values) Rs. 790000; Cash Rs. 10000 Creditors, Rs. 400000, 6% Debentures carrying a floating charge Rs. 500000 and interest accrued thereon for 6 months.

The Debentures were paid off with nterest up to the date of windig up. On 30th September, 2007 a first and final dividend was paid to the creditors. Creditors for

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Rs. 25000 are prefrerential. The cost of liquidation amounted to Rs. 1400. The liquidator is entitled to 3% of amount realised and 2% of the amount distributed to the unsecured creditors (excluding preferential creditors) by way of hi remuneration.
Prepare the liquidator's Final Statemet of Account.

एक लिमिटेड कम्पनी जो कि अपने चिट्ठे में 1000000 रू. की प्रदत्त अंश पूंजी तथा 1115000 रू. की हानि प्रकट करती थी, 31 मार्च, 2007 को ऐच्छिक समापन में चली गयी। उस दिन उसकी सम्पत्तियों एवं दायित्वों के विवरण निम्न प्रकार थेः
मशीनरी, स्टाक व देनदार (जिनसे पुस्तक मूल्य की वसूली हुई) 790000 रू. रोकड़ 10000 रू. लेनदार 400000 रू. चल प्रभार रखने वाले 6% ऋणपत्र 500000 रू. तथा उन पर छः का अर्जित ब्याज।
ऋणपत्रों का समापन की तिथि तक ब्याज सहित भुगतान किया गया। 30 सितम्बर, 2007 को लेनदारों को प्रथम व अन्तिम लाभांश भुगतान किया गया। 25000 रू. के लेनदार पूर्वाधिकार थे। समापन व्यय 1400 रू. हुए। निस्तारक अपने पारिश्रमिक के रूप में वसूल हुई राशि पर 3% तथा असुरक्षित लेनदारों (पूर्वाधिकार लेनदारों को छोड़कर) को वितरित की गई राशि पर 2% के हिसाब से प्राप्त करने का अधिकारी है।
निस्तारक का अन्तिम हिसाब–विवरण बनाइए।

7. X Ltd. went ito voluntary liquidationj on 1st April, 2007. The following was the position of the company on 31st March, 2007
एक्स लिमिटेड 1 अप्रैल, 2007 को ऐच्छिक समापन में चली गयी। 31 मार्च, 2007 को कम्पनी की स्थिति निम्न प्रकार थी :
Cash on realization of assets Rs. 1000000; Expenses of Liquidation Rs. 18000; Unsecured creditors (includig salaries and wages for one month prior to liquidation Rs. 12000) Rs. 136000; 10000 6% Preference Shares of Rs. 30 each (dividend paid up to 31st March, 2006) Rs. 300000; 20000 Equity Shares of Rs. 10 each Rs. 9 per share called and paid up Rs. 180000; General Reserve Rs. 240000; and Profit & Loss Account Rs. 20000.
Under the articles of association of the company, the preference shareholders have the right to receive one-third of the surplus remaining after repaying the equity share capital. Prepare the liquidator's Final Statement of Account. The liquidator is entitled to 3% on realization of assets and 2% on distribution to share holders.
कम्पनी के पार्षद अन्तर्नियमों के अन्तर्गत, पूर्वाधिकार अंशधारियों को उस आधिक्य का एक तिहाई भाग प्राप्त करने का अधिकार है, जो कि ईक्विटी अंश पूंजी के पुनर्भुगतान के बाद बचता है। निस्तारक का अन्तिम हिसाब–विवरण बनाइए। निस्तारक को सम्पत्तियों की वसूली पर 3% तथा अंशधारियों को वितरण पर 2% पारिश्रमिक प्राप्त करने का अधिकार है।
9. X Ltd. went into voluntary liquidation on 31 March 2007. The balance in its books on that day were:
एक्स लिमिटेड 31 मार्च, 2007 को ऐचिछक समापन मं चली गई। उसकी पुस्तकों में उस दिन निम्नलिखित शेष थेः

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

	Amount Rs.		Amount Rs.
Share Capital :		Land & Buildings	250000
4000 6% Preference Share of Rs. 100 each	400000	Plant & Machinery	550000
		Stock	120000
3000 Equity Shares of Rs. 100 each, Rs. 80 paid	240000	Sundry Debtors	250000
		Loans	10000
5000 Equity Shares of Rs. 100 each, Rs. 70 paid	350000	Cash & Bank	50000
		Profit & Loss Account	250000
5% Debentures secured by a floating charges	200000	Preliminary Expenses	20000
Interest on debentures	1000		
Creditors	300000		
	1500000		1500000

The liquidator is entitled to a commission of 3% on actual cash realised by him exception Cash at Bank and 2% on amounts distributed among equity shareholders. Creditors include Preferential Creditors Rs. 40000 and a loan of Rs. 100000 secured on mortgage on Land and Buildings. Land and Buildings were sold by the creditors and the liquidator realised surplus money from him. The preference share dividend was in arrears for two years. The arrears are payable automatically on liquidation. The assets realised as follows:

Land and Building 20% over book value; Stock 5% over book value; Plant and Machinery and debtors 10% less than athe book value; Loans are wholly bad. The expenses of liquidation amounted to Rs. 18480.

Assuming the payment was made on 30th June, 2007 prepare Liquidator's Fianal Statement of Account.

निस्तारक को उसके द्वारा वसूल की गई वास्तविक राशि (बैंक में रोकड़ को छोड़कर) पर 3 प्रतिशत तथा ईक्विटी अंशधारियों में वितरित की गई राशि पर 2 प्रतिशत कमीशन प्राप्त करने का अधिकार है। लेनदारों में पूर्वाधिकार लेनदार 40000 रू. तथा भूमि एवं भवन पर सुरक्षित ऋण 100000 रू. सम्मिलित हैं। भूमि एवं भवन लेनदार द्वारा बेची गई तथा निस्तारक ने उससे आधिक्य को वसूल किया। पूर्वाधिकार अंश लाभांश गत दो वर्षों से बकाया थे। समापन पर इस बकाया राशि का स्वतः भुगतान होना है। सम्पत्तियों से निम्नलिखित धनराशि वसूल हुई

भूमि एवं भवन : पुस्तक मूल्य से 20 प्रतिशत अधिक, स्टाकः पुस्तक मूल्य से 5 प्रतिशत अधिक, प्लाण्ट और मशीनरी तथा देनदारः पुस्तक मूल्य से 10 प्रतिशत कम, ऋण पूर्णरूपेण खराब है। समापन के व्यय 18480 रू. थे।

यह मानते हुए कि भुगतान 30 जून, 2007 को किया गया है, निस्तारक के अन्तिम हिसाब का विवरण बनाइए।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

बीमा कम्पनियों के लेखे

(Accounts of Insurance Companies)

बीमा एक ऐसा अनुबन्ध है जिसके अन्तर्गत एक पक्ष (जिसे 'बीमाकर्ता' Inurer कहते हैं) एक निश्चित प्रतिफल के बदले (जिसे प्रीमियम कहते हैं) निर्धारित कारणों से दूसरे पक्ष को हुई क्षति की पूर्ति करने का समझौता करता है। जिस प्रपत्र में बीमा सम्बन्धी अनुबन्ध की शर्तें दी जाती है, उसे 'बीमा पालिसी' कहते हैं।

बीमा व्यवसाय दो प्रकार का हो सकता है– (i) जीवन बीमा व्यवसाय तथा (ii) सामान्य बीमा व्यवसाय। सामान्य बीमा व्यवसाय के अन्तर्गत अग्नि, सामुद्रिक तथा अन्य विविध प्रकार के बीमा व्यवसाय शामिल किये जाते हैं।

सामान्य बीमा के प्रकार

(Kinds of General Insurance)

सामान्य बीमा व्यवसाय कई प्रकार का होता है। जिस प्रकार की जोखिम हो, उसके लिए उसी प्रकार का बीमा उपलब्ध होता है, इसके कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैंः

क्रम सं.	बीमे की किस्म	जोखिम
1.	अग्नि बीमा	आग से हानि
2.	सामुद्रिक बीमा	मल, जहाज और भाड़े की समुद्री यातायात से हानि
3.	मोटरगाड़ी की बीमा	दुर्घटना, चोरी आदि से हानि
4.	दुर्घटना बीमा	दुर्घटनाओं से क्षति
5.	चोरी बीमा	चोरी से क्षति
6.	ईमानदारी बीमा	कर्मचारियों की बेईमानी से हानि
7.	परिणामी हानि बीमा	अग्नि या अन्य प्राकृतिक कारणों से हुई लाभ की क्षति
8.	भूकम्प से क्षति का बीमा	भूकम्प से वास्तविक क्षति
9.	बाढ़ से क्षति का बीमा	बाढ़ से वास्तविक क्षति

लेखा पुस्तकें

(Books of Accounts)

भारत में समस्त प्रकार के बीमा व्यवसाय पर बीमा अधिनियम 1938 (The Insurance Act, 1938) लागू होता है। देश में जीवन बीमा तथा सामान्य बीमा के लिए पृथक्–पृथक् निगम बन गये हैं। अतः इनसे सम्बन्धित कानून सम्बन्धित बीमा व्यवसाय पर लागू होते हैं। बीमा अधिनियम 1938 के अनतर्गत एक बीमा कम्पनी को प्रमुख रूप से निम्नलिखित लेखा पुस्तकें रखनी पड़ती हैं :

1. प्रीमियम रोकड़ पुस्तक (Premium Cash Book) :
   (a) प्रथम वर्ष प्रीमियम पुस्तक (First Year Premium Book); तथा
   (b) नवकरण प्रीमियम पुस्तक (Renewal Premium Book);

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

2. दावा रोकड़ पुस्तक (Claims Cash Book);
3. एजेन्सी तथा शाखा रोकड़ पुस्तक (Agency and Branch Cash Book);
4. फुटकर रोकड़ पुस्तक (Petty Cash Book);
5. सामान्य रोकड़ पुस्तक (General Cash Book);
6. बैंक रोकड़ पुस्तक (Bank Cash Book);
7. कमीशन प्राप्ति खाता बही (Commission Receipt Ledger);
8. कमीशन भुगतान खाता बही (Commission Payment Ledger);
9. पालिसी ऋण खाता बही (Policy Loan Ledger);
10. सामान्य ऋण खाता बही (General Loan Ledger);
11. विनियोग खाता बही (Investment Ledger);
12. जर्नल (Journal); आदि।

पूर्वोक्त लेखा पुस्तकों के अलावा बीमा कम्पनी द्वारा कुछ पुस्तकें स्मरणार्थ भी रखी जाती हैं। इनमें प्रमुख स्मरण पुस्तकें निम्नलिखित हैं:

1. प्रस्ताव रजिस्टर (Register of Proposals);
2. पॉलिसी रजिस्टर (Register of Policies);
3. दावा रजिस्टर (Register of Claims);
4. एजेन्टों का रजिस्टर रजिस्टर (Register of Agents);
5. पुनर्बीमा रजिस्टर (Reinsurance Register); आदि।

बीमा व्यवसाय को वित्तीय विवरण पत्र व लेखांकन के उद्देश्य से मुख्यतः दो भागों में विभाजित किया जा सकता है:

(A) सामान्य बीमा व्यवसाय	(B) जीवन बीमा व्यवसाय
सामान्य बीमा व्यवसाय में सामुद्रिक बीमा, अग्नि बीमा व विविध बीमा शामिल हैं तथा प्रत्येक वयवसाय के लिए पृथक्–पृथक् रेवेनयु खाता बनाना चाहिए। बीमा नियामक तथा विकास प्राधिकरण (वित्तीय विवरणों तथा कम्पनियों के अंकेक्षण रिपोर्ट नियमावली, 2000 की 'अनुसूची बी' के भाग V के अन्तर्गत निर्धारित निम्न प्रारूप में वित्तीय विवरण पत्र तैयार किये जाते हैं : रेवेन्यु खाता – Form B-RA) लाभ–हानि खाता – Form B-PL चिट्ठा – Form B-PL इनका विस्तृत विवरण आगे दिया जा रहा है।	बीमा नियामक एवं विकास प्राधिकरण द्वारा बीमा अधिनियम, 1938 की धारा 114A द्वारा प्रदत्त शक्तियों के अन्तर्गत वित्तीय विवरण बनाने के नये नियम निर्धारित किये हैं। इस नियमों के अन्तर्गत प्रत्येक बीमा बीमा कम्पनी अपने वित्तीय प्रपत्र "अनुसूची ए" के भाग V के अन्तर्गत निर्धारित निम्न प्रारूप में तैयार किया जाता है। रेवेन्यु खाता – Form A-RA) लाभ–हानि खाता – Form A-PL चिट्ठा खाता– Form A-PL इनका विस्तृत विवरण आगे दिया जा रहा है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

सामान्य बीमा व्यवसाय के वित्तीय विवरण पत्र तैयार करना :

1. रेवेन्यु खाता (Revenue Account): यह रेवेन्यु खाता प्रत्येक प्रकार के बीमा व्यवसाय यथा सामुद्रिक बीमा, अग्नि बीमा, विविध बीमा के सम्बन्ध में उपरोक्त वर्णित B-RA प्रारूप में निम्न प्रकार से बनाया जायेगा। एक से अधिक बीमा व्यवसाय होने पर सामान्य आय एवं व्यय लाभ–हानि खाते में दिखायेंगे।

Form B-RA

Name of the Insurer :

Registration No. …………. And Date ………..of Registration with the IRDA

Revenue Account for the year ended 31 March, 20………….

(To be prepared separately fire, marine, and miscellaneous insurance)

Particulars		Current Year Rs.	Previous Year Rs.
1. Premiums earned (Net) 2. Other (to be specified) 3. Change in provision for unexpired risk 4. INterest, Dividend & Rent-Gross	1		
Total (A)			
1. Claims Incurred (Net) 2. Commission 3. Operating Expenses related to Insurance Business 4. Others-To be specified	2 3 4		
Total (B)			
Operating Profit/(Loss) from Fire/Marine/ Miscellaneous Business (A-B)			

SCHEDULE-1

(Premium Earned Net)

Particulars	Current Year Rs.	Previous Year Rs.
Premiums from direct business written Add : Premium on Re-insurance accepted Less: Premium on Re-insurance Ceded Net Premium…………………… Adjustment for charges in Unearned Premium		

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Adjustment for charges in Premium received in advance		
Total Premimum earned (Net)		
Premium Income from business effected : In India Outside India 2. Commission 3. Operating Expenses related to Insurance Business		
Total Premimum earned (Net)		

SCHEDULE-2

(Claims Insured Net)

Particulars	Current Year Rs.	Previous Year Rs.
Claims Paid Direct Add : Re-insurance accepted Less: Re-insurance Ceded		
Total Premimum earned (Net) **Add :** Outstanding at the end of the year		
Less : Outstanding at the beginning of the year		
Total Claims Insured **Claims paid to Claimants :** In India		
Outside India		

SCHEDULE-3

Commission

Particulars	Current Year Rs.	Previous Year Rs.
Commission Paid Direct Add : Re-insurance accepted Less: Commission on Re-insurance Ceded		
Net Commission		

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

SCHEDULE-4
Operating Expenses Related to Insurance Business

Particulars	Current Year Rs.	Previous Year Rs.
1. Employee's remuneration & welfare benefits		
2. Managerial remuneration		
3. Travel, conveyance and vehicle running expenses		
4. Rents, rates & taxes		
5. Repairs		
6. Printing & Stationery		
7. Communication		
8. Legal & Professional charges		
10. Auditor's fees, expenses etc.		
(a) as auditors		
(b) as adviser or in any other capacity, in respect of:		
(i) Taxation matters		
(ii) Insurance matters		
(iii) Maagement services; and		
(c) in any other capacity		
11. Advertisement and publicity		
12. Interest & Bank Charges		
13. Others (to be specified)		
14. Depreciation		
Total		

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

रेवेन्यु खातों की मदों का स्पष्टीकरण:

रेवेन्यु खातों में दिखाई जाने वाली प्रमुख मदों का स्पष्टीकरण इस प्रकार है:

(1) **दावे (Claims) :** यदि बीमा करने वाले को बीमा पॉलिसी में वर्णित किसी कारण से क्षति होती है तो बीमा कम्पनी का उस क्षति को पूर्ति करने का दायित्व उत्पन्न हो जाता है। बीमा कराने वाला व्यक्ति क्षति–पूर्ति के लिए अपना दावा पेश करता है। बीमा कम्पनी जाँच के पश्चात उन दावों को स्वीकार करती है। इसके पश्चात् दावे की रकम का भुगतान कर दिया जाता है। इस मद के सम्बन्ध में निम्नलिखित बातों का ध्यान में रखा जाना चाहिए:

(i) **दावे सम्बन्धी खर्चे** : दावों के निपटारे के सम्बन्ध में समस्त प्रत्यक्ष खर्चे भी दावे की राशि में सम्मिलित किये जाते हैं। जैसे सर्वे की फीस, दावे सम्बन्धी कानूनी व्यय आदि।

(ii) **पुनर्बीमा** : बीमा करने समय यदि कम्पनी यह अनुभव करती है कि किसी विशेष मामले में जोखिम अधिक है तो वह उसके एक भाग का पुनर्बीमा **(Reinsurance)** करा लेती है। इसे **(Reinsurance ceded)** कहते हैं। जिस कम्पनी से पुनर्बीमा कराया जाता है उससे सम्बन्धित दावे की रकम भी

बीमा कम्पनी वसूल करती है। अतः दावे की राशि में से पुनर्बीमा के अन्तर्गत अन्य बीमा कम्पनी से वसूल हुई राशि को घटाकर दिखाया जाता है।

(iii) **दावे की विभिन्न स्थितियाँ** : दावे के सम्बन्ध में निम्न स्थितियाँ हो सकती हैं :

(a) Claims paid

(b) Claims intimated, accepted but not yet paid

(c) Claims intimated but not yet accepted

यह ध्यान रहे कि रेवेन्यु खाते में केवल दावे की वही राशि नहीं दिखाई जाती है जिसका भुगतान किया जा चुका है। बल्कि दावे सम्बन्धी समस्त हानि (चाहे अभी तक भुगतान किया गया हो अथवा नहीं) को दावे की राशि में सम्मिलित किया जाता है। इस दृष्टिकोण से ऊपर बताये गये सभी दावे इस राशि से सम्मिलित किये जाते हैं। इस प्रकार जिन दावों के सम्बन्ध में कम्पनी को सूचित कर दिया गया है लेकिन जिसके सम्बन्ध में जाँच काकर्य पूर्ण नहीं हुआ है और अभी उनको स्वीकार नहीं किया गया है (Claims intimated but not yet accepted) उनको भी इस मद में सम्मिलित कर लिया जात है। अतः वर्ष के अन्त में रही अदत्त राशि को घटा कर रेवेन्यु खाते में दिखाया जाता है।

(iv) **पिछले वर्ष सम्बन्धी दावे** : यदि किसी वर्ष पिछले वर्ष के सम्बन्ध में चुकाई गई दावे की राशि तथा अदत्त राशि पिछले वर्ष में इस सम्बन्ध में किये गये आयोजन से अधिक है तो इस आधिक्य को रेवेन्यु खाते में दिखाया जाना चाहिए।

(v) **भारत के अन्दर तथा बाहर चुकाई गई राशि** : यदि बीमा अधिनियम 1938 की धारा 11 के अनतर्गत लेखे तैयार किये जाते हैं तो भारत के अन्दर दावेदारों को तथा भारत के बाहर दावेदारों को जो राशियाँ चुकाई गई हैं उनको पृथक्–पृथक दिखाया जाना चाहिए। यह सूचना बिन्दु खाते का जोड़ लगाने के पश्चात उसके नीचे अलग से दी जाती है।

Illustration 1 :

From the following particulars, calculate the loss on account of claims to be shown in the Revenue Account in Schedule-2 for the year ending 31st March, 2007:

निम्नलिखित विवरण से 31 मार्च, 2007 को समाप्त हुइ वर्ष क लिए अनुसूची–2 के अनुसार तैयार किये गये रेवेन्यु खाते में दिखाने के लिए दावों के कारण हानि की राशि की गणना कीजिए:

Claims intimated	Claims Admitted	Claims paid	Rs.
in 2005-2006	in 2005-2006	in 2006-2007	150000
in 2006-2007	in 2006-2007	in 2007-2008	100000
in 2004-2005	in 2005-2006	in 2005-2006	50000
in 2004-2005	in 2005-2006	in 2006-2007	120000
in 2006-2007	in 2007-2008	in 2007-2008	80000
in 2006-2007	in 2006-2007	in 2006-2007	1020000

Claim on account of reinsurance were Rs. 250000 ए। (पुनर्बीमा के कारण दावे 250000 रूपये थे।)

Solution :

Schedule : 2 Claim Incurred

Particulars	Current Year Rs.	Previous Year Rs.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

Claim paid in 2006-07		
Direct (Rs. 150000 + Rs. 120000 + Rs.102000)	1290000	
Add : Reinsurance accepted	----	
Less Reinsurance ceded	250000	
Net Claim Paid	1040000	
Add : Outstandig at the end of 2006-07 i.e. intimated in 2006-07 whether accepted in 2006-07 or in 2007-08 (Rs. 100000 + 80000)	180000	
	1220000	
Less : Outstanding at the end of 2005-06 i.e. intimated in 2005-06 or earlier whether accepted in 2005-06 or 2006—07 (Rs.150000 +Rs.120000)	270000	
Total Claim Incurred	950000	
Claim paid to claimants :		
In India (say)	950000	
Outside India	----	
Total	950000	

असमाप्त जोखिमों के लिए संचय (Reserve for Unexpired Risks):

सामान्य बीमा सम्बन्धी अनुबन्ध में जोखिम की अवधि निश्चित होती है। यदि इस निर्धारित अवधि में निर्धारित कारणों से क्षति होती है तो बीमा कम्पनी को बीमा कराने वाले की क्षतिपूर्ति करनी होती है। पालिसी निर्गमन करने का कार्य वर्ष भर चलता रहता है था वर्ष के अन्त में कुछ पालिसियां ऐसी होती हैं जिनकी जोखिम अगले वर्ष किसी समय समाप्त होगी। इन असमाप्त जोखिमों के लिए इस वर्ष के रेवेन्यु खाते में से संचय का निर्माण किया जाता है। इसे

असमाप्त जोखिमों के लिए संचय **(Reserve for Unexpired Risks)** कहते हैं। सामान्य बीमा कौंसिल की प्रबन्ध समिति के निर्णय के अनुसार इस संचय की राशि एक सामुद्रिक बीमा व्यवसाय में शुद्ध प्रीमियम की 100 प्रतिशत तथा अन्य प्रकार के लिए 40 प्रतिशत होगी । इस प्रकार अन्य व्यवसाय में न्यूनतम संचय 40 प्रतिशत की है। लेकिन आयकर विभाग 50 प्रतिशत तक आयोजन करने की अनुमति देता है। अतः बीमा कम्पनियां सामान्यतया सामुद्रिक व्यवसाय के सम्बन्ध में 100 प्रतिशत तथा अन्य व्यवसाय के सम्बन्ध में 50 प्रतिशत संचय का निर्माण करती है।

उक्त न्यूनतम संचय के अलावा बीमा कम्पनियां कभी–कभी असमाप्त जोखिमों के लिए अधिक संचय का निर्माण करती है। इस प्रकार की अधिक राशि से जो संचय बनाया जात है उसे अतिरिक्त संचय **(Additional Reserve)** कहते हैं।

वर्ष के अन्त में उक्त दोनों प्रकार के संचय रेवेन्यु खाते को डेबिट कर दिये जाते हैं। तथा अगले वर्ष में इन खातों का प्रारम्भिक शेष रेवेन्यु खाते को क्रेडित कर दिया जाता है। वर्ष के अन्त डेबिट की गयी राशि को इस खाते के शेष के रूप में इन संचयों के नाम से चिट्ठे में दायित्व पक्ष पर दिखा जाता है। रेवेन्यु खाते में इन संचयों को अन्तिम मद के रूप में दिखाया जाता है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

आय व्यय की समस्त मदों को तथा असमाप्त जोखिमों के लिए संचय के लिए प्रारम्भिक शेष तथा अन्तिम शेष को रेवेन्यु खाते में दिखाने के पश्चात् दोनों पक्षों का अन्तर होता है वह उस बीमा व्यवसाय का लाभ या हानि होता है क्रेडिट पक्ष का योग अधिक होने पर लाभ तथा डेबिट पक्ष का योग अधिक होने पर हानि प्रकट होती है। यह लाभ हानि रेवेन्यु खाते से लाभ हानि खाते को स्थानान्तरित कर दिया जाता है। यह ध्यान रहे कि रेवेन्यु खाते के डेबिट में अन्तिम मद के रूप में अस्मात जोखिम के लिए संचयों की राशि को दिखाया जाता है। और उसके ठीक पहले लाभ हानि खाते को स्थानान्तरित लाभ की राशि दिखायी जाती है।

Illustration 2 :

Prepare the Fire Revenue Account for the year ended on 31st March, 2007 from the following particulars:

निम्नलिखित विवरण से 31 मार्च, 2007 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए अग्नि रेवेन्यु खाता तैयार कीजिए :

Claims paid Rs. 470000; Legal expenses regardiang claims Rs. 10000; Premium received Rs. 1200000; Reinsurance Premium paid Rs. 120000; Commission Rs. 200000; Operating Expenses Rs. 300000; Provision against unexpired risks on 1st April, 2006 Rs. 520000; Claims unpaid on 1st April, 2006 Rs. 40000; Claims unpaid on 31st March. 2007 Rs. 70000.

Soluton :

Form B-RA

Name of the Insurer :

Registration No. …………. And Date ……….of Registration with the IRDA

Revenue Account for the year ended 31 March, 2007

(To be prepared separately fire, marine, and miscellaneous insurance)

Particulars		Current Year Rs.	Previous Year Rs.
1. Premiums earned (Net) 2. Other (to be specified) 3. Change in provision for unexpired risk (540000 – 520000) 4. INterest, Dividend & Rent-Gross	1	1080000 ----- 20000 ------	
Total (A)		1060000	
1. Claims Incurred (Net) 2. Commission 3. Operating Expenses related to Insurance Business 4. Others-To be specified	2 3 4	510000 200000 300000 -----	
Total (B)		1010000	
Operating Profit/(Loss) from Fire/Marine/ Miscellaneous Business (A-B)		50000	

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

SCHEDULE-1

(Premium Earned Net)

Particulars	Current Year Rs.	Previous Year Rs.
Premiums from direct business written Add : Premium on Re-insurance accepted Less: Premium on Re-insurance Ceded Net Premium Adjustment for charges in Unearned Premium Adjustment for charges in Premium received in advance	1200000 ----- 120000 1080000 ---- ----	
Total Premimum earned (Net)	1080000	
Premium Income from business effected : In India Outside India **Total Premimum earned (Net)**	 1080000 ----	
	1080000	

SCHEDULE-2

(Claims Insured Net)

Particulars	Current Year Rs.	Previous Year Rs.
Claims Paid (47000 + 10000) Direct Add : Re-insurance accepted Less: Re-insurance Ceded	480000 -- -- --	
Total Premimum earned (Net) **Add :** Outstanding at the end of the year	480000 70000	
Less : Outstanding at the beginning of the year	40000	
Total Claims Insured **Claims paid to Claimants :** In India	<u>510000</u> 510000	
Outside India	510000	

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

SCHEDULE-3
Commission

Particulars	Current Year Rs.	Previous Year Rs.
Commission Paid Direct Add : Re-insurance accepted Less: Commission on Re-insurance Ceded	 200000 ----- -----	
Net Commission	200000	

SCHEDULE-4
Operating Expenses Related to Insurance Business

Particulars	Current Year Rs.	Previous Year Rs.
1. Employee's remuneration & welfare benefits		
2. Managerial remuneration		
3. Travel, conveyance and vehicle running expenses		
4. Rents, rates & taxes		
5. Repairs		
6. Printing & Stationery		
7. Communication		
8. Legal & Professional charges		
10. Auditor's fees, expenses etc.		
(a) as auditors	300000	
(b) as adviser or in any other capacity, in respect of:		
(i) Taxation matters		
(ii) Insurance matters		
(iii) Maagement services; and		
(c) in any other capacity		
11. Advertisement and publicity		
12. Interest & Bank Charges		
13. Others (to be specified)		
14. Depreciation		
Total	300000	

Illustration 3:

On 31st March, 2007 the books of Bharat Insurance Co. Ltd. contained the following particulars in respect of fire insurance:

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

31 मार्च, 2007 को भारत इन्श्योरेन्स कम्पनी लि. की पुस्तकों में अग्नि बीमा के सम्बन्ध में अग्रलिखित विवरण दर्शाये :

	Rs.
Reserve for Unexpired risks on 31.03.2006	500000
Additional Reserve on 31.3.2006	100000
Claims Paid	640000
Estimated Liability in respect of outstanding claims :	
on 31.3.2006	65000
on 31.3.2007	90000
Expenses of Management (including Rs. 30000 legal expenses paid connection with claims)	280000
Re-insurance Premiums	75000
Re-insurance Recoveries	20000
Premiums	1120000
Interest andf dividends (Gross)	64520
Income Tax on above	6520
Profit on Sale of Investments	11000
Commission	152000

Prepare in the prescribed from the Fire Insurance Revenue Account for the year 2006-07 reserving 50% of the net premium for unexpired risks and keeping an additional reserve of Rs. 100000. Assume the one-fourth of the premium and clais are applicable to business outside India and that the gross premiums written direct in India amounted to Rs. 1125000.

असमाप्त जोखिम के लिए शुद्ध प्रीमियम का 50% संचय और 100000 रू. अतिरिक्त संचय रखते हुये निर्धारित आकार में वर्ष 2006–07 के लिए अग्नि बीमा रेवेन्यु खाता बनाइए। प्रीमियम और दावों का एक चौथाई भारत के बाहर होने वाले व्यवसाय से सम्बन्ध रखता है और भारत में लिखी गई सकल प्रीमियम 1125000 रू. थी।

Soluton :

Form B-RA

Name of the Insurer : Bharat Insurance Company Limited

Registration No. …………. And Date ………..of Registration with the IRDA

Revenue Account for the year ended 31 March, 2007

Particulars		Current Year Rs.	Previous Year Rs.
1. Premiums earned (Net)	1	1045000	
2. Profit on sale of investment		11000	
3. Change in provision for unexpired risk (522500 + 100000)-(500000+100000)		22500	
4. INterest, Dividend & Rent-Gross (64520)		64520	

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Total (A)		1098520	
1. Claims Incurred (Net) 2. Commission 3. Operating Expenses related to Insurance Business 4. Others-To be specified	2 3 4	675000 152000 256520 -----	
Total (B)		1083520	
Operating Profit/(Loss) from Fire/Marine/ Miscellaneous Business (A-B)		14500	

SCHEDULE-1

(Premium Earned Net)

Particulars	Current Year Rs.	Previous Year Rs.
Premiums from direct business written Add : Premium on Re-insurance accepted Less: Premium on Re-insurance Ceded Net Premium Adjustment for charges in Unearned Premium Adjustment for charges in Premium received in advance	1120000 ----- 75000 1045000 ---- ----	
Total Premimum earned (Net)	1045000	
Premium Income from business effected : In India Outside India	 1045000 ----	
Total Premimum earned (Net)	1045000	

SCHEDULE-2

(Claims Insured Net)

Particulars	Current Year Rs.	Previous Year Rs.
Claims Paid Direct (640000+30000) Add : Re-insurance accepted Less: Re-insurance Ceded	 670000 -- 20000	

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Total Premimum earned (Net) **Add :** Outstanding at the end of the year	650000 90000 740000	
Less : Outstanding at the beginning of the year	65000	
Total Claims Insured	675000	
Claims paid to Claimants : In India	675000	
Outside India	675000	

SCHEDULE-3

Commission

Particulars	Current Year Rs.	Previous Year Rs.
Commission Paid Direct Add : Re-insurance accepted Less: Commission on Re-insurance Ceded	 152000 ----- -----	
Net Commission	152000	

SCHEDULE-4

Operating Expenses Related to Insurance Business

Particulars	Current Year Rs.	Previous Year Rs.
1. Employee's remuneration & welfare benefits 2. Managerial remuneration 3. Travel, conveyance and vehicle running expenses 4. Rents, rates & taxes 5. Repairs 6. Printing & Stationery 7. Communication 8. Legal & Professional charges 10. Auditor's fees, expenses etc. (a) as auditors (b) as adviser or in any other capacity, in respect of: (i) Taxation matters (ii) Insurance matters (iii) Maagement services; and (c) in any other capacity 11. Advertisement and publicity 12. Interest & Bank Charges 13. Others (to be specified) Income Tax on Interest & Dividend	 250000 6520	
14. Depreciation **Total**	256520	

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Illustraiton 4 :

The following balance are extracted from the account books of General Fire Insurance Co. Ltd. on 31st March, 2007. Prepare the Revenue Account for the year ended on that date.

31 मार्च, 2007 को सामान्य अग्नि बीमा कम्पनी लिमिटेड की लेखा–पुस्तकों से निम्न शेष लिये गये हैं। उस तिथि को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए रेवेन्यु खाता बनाइए।

	Rs.
Claims paid during the year	152926
Re-insurance Recoveries	2926
Commission Re-insurance accepted	11800
Depreciation	10000
Commission on Direct business	95200
Premium on Direct business	748540
Salaries & Bonus	224850
Communication	65000
Premium paid on Re-insurances	120736
Premium received on Re-insurances	95368
Commission on Re-insurances ceded	21208
Travelling expenses	25432
Legal and Professional charges	10600
Printing & Stationary Lighting charges	8200
Advertisement	12096
Audit Fees as an Auditor	18574
Claims Accepted but not paid up to 31.3.2006	2572
Claims Accepted during the year but not paid	10318
Audit fees for taxation matters	1500
Repairs	1550
Opening Reserve for unexpired risks	396528
Additional Reserve for unexpired risks	66620
Claims intimated during the year but not accepted	1200
Interest and Dividends less Income Tax	90000

Other Information :

1. No business was transacted outside India.
2. Provide 50% of the net premiums received as Reserve for Unexpired Risks as at 31.3.2007 and 10% of the net Premium as Additional Reserve for the same.

1. भारत के बाहर कोई व्यवसाय नहीं होता है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

2. 31.3.2007 को असमाप्त जोखिम के लिए शुद्ध प्रीमियम का 50 प्रतिशत संचय के रूप में रखिये तथा इसी कार्य के लिए शुद्ध प्रीमियम का 10 प्रतिशत अतिरिक्त संचय रखिये।

Soluton :

Form B-RA

Name of the Insurer : General Fire Insurance Co. Ltd.

Registration No. …………. And Date ………..of Registration with the IRDA

Revenue Account for the year ended 31 March, 2007

Particulars		Current Year Rs.	Previous Year Rs.
1. Premiums earned (Net)	1	723172	
2. Other (to be specified)		---	
5. Change in provision for unexpired risk (396528 + 66620-361586-72317)		29295	
6. INterest, Dividend & Rent-Gross		90000	
Total (A)		842417	
1. Claims Incurred (Net)	2	158946	
2. Commission	3	85792	
3. Operating Expenses related to Insurance Business	4	377802	
4. Others-To be specified		-----	
Total (B)		622540	
Operating Profit/(Loss) from Fire/Marine/ Miscellaneous Business (A-B)		219877	

SCHEDULE-1

(Premium Earned Net)

Particulars	Current Year Rs.	Previous Year Rs.
Premiums from direct business written	748540	
Add : Premium on Re-insurance accepted	95368	
	843908	
Less: Premium on Re-insurance Ceded	120736	
Net Premium	723172	
Adjustment for charges in Unearned Premium	----	
Adjustment for charges in Premium received in	----	

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

advance		
Total Premimum earned (Net)	723172	
Premium Income from business effected : In India Outside India	 723172 ----	
Total Premimum earned (Net)	723172	

SCHEDULE-2
(Claims Insured Net)

Particulars	Current Year Rs.	Previous Year Rs.
Claims Paid Direct (640000+30000) Add : Re-insurance accepted Less: Re-insurance Ceded	 152926 -- 2926	
Total Premimum earned (Net) **Add :** Outstanding at the end of the year	150000 11518 161518	
Less : Outstanding at the beginning of the year	2572	
Total Claims Insured **Claims paid to Claimants :** In India	158946 158946	
Outside India	158946	

SCHEDULE-3
Commission

Particulars	Current Year Rs.	Previous Year Rs.
Commission Paid Direct Add : Re-insurance accepted Less: Commission on Re-insurance Ceded	 95200 11800 107000 21208	
Net Commission	85792	

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

SCHEDULE-4
Operating Expenses Related to Insurance Business

Particulars	Current Year Rs.	Previous Year Rs.
1. Employee's remuneration & welfare benefits	224850	
2. Managerial remuneration	--	
3. Travel, conveyance and vehicle running expenses	25432	
4. Rents, rates & taxes	--	
5. Repairs	1550	
6. Printing & Stationery	8200	
7. Communication	65000	
8. Legal & Professional charges	10600	
9. Medical fees	---	
10. Auditor's fees, expenses etc.		
(a) as auditors	18574	
(b) as adviser or in any other capacity, in respect of:		
(i) Taxation matters	1500	
(ii) Insurance matters	----	
(iii) Maagement services; and	----	
(c) in any other capacity		
11. Advertisement and publicity	12096	
12. Interest & Bank Charges	---	
13. Others (to be specified) Income Tax on Interest & Dividend	---	
14. Depreciation	10000	
Total	377802	

Illustration 5 :

The following balances appeared in the books of Bharat General Insurance Company in respect of Fire Insurance as on 31st March, 2007.

31 मार्च, 2007 को भारत जनरल इन्श्योरेन्स कम्पनी की पुस्तकों में अग्नि बीमा के सम्बन्ध में निम्नलिखित शेष थे :

	Amount Rs.		Amount Rs.
Reserve for Unexpired Risk on 31st March, 2006	400000	Premium Received	1000000
Additional reserve on 31st March, 2006	80000	Premium on ceded Reinsurance	100000
		Reinsurnace Recoveries	35000
		Interest and Dividends	60000
Claims paid	600000	Tax on Interest and Dividends	10000
Estimated liability in respect of outstanding claims:		Profits on Sale of Investments	50000
		Commission Paid	120000

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

on 31st March 2006 on 31st March 2007 Epenses of Management	30000 50000 160000	Commission on Reinsurance ceded	15000

Prepare Revenue Acount (in the Form B-RA) for the year ended 31st March, 2007 after taking the following information into consideration:

(i) Provide for unexpired risk at 50% of net premiums.

(ii) Additional Reserve is to be increased by 5% of net premiums.

(iii) Expenses of Management include Rs. 25000 legal expenses incurred in connection with claims.

निम्नांकित सूचनाओं को ध्यान में रखकर 31 मार्च, 2007 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए रेवेन्यु खाता (प्रारूप B-RA) में बनाइए :

(i) शुद्ध प्रीमियम पर 50% असमाप्त जोखिम के लिए संचय बनाइए।

(ii) अतिरिक्त संचय को शुद्ध प्रीमियम के 5% से बढ़ाना है।

(iii) प्रबन्ध व्यय में दावों के सम्बन्ध में किये गये कानूनी व्यय 25000 रू. शामिल है।

Soluton :

Form B-RA

Name of the Insurer : Bharat General Insurance Company

Registration No. …………. And Date ………..of Registration with the IRDA

Revenue Account for the year ended 31 March, 2007

Fire Insurance

Particulars		2006-07 Rs.	2005-06 Rs.
1. Premiums earned (Net) 2. Other (to be specified) 3. Change in provision for unexpired risk (3480000-575000) 4. INterest, Dividend & Rent-Gross (60000 +10000)	1	900000 5000 905000 95000 29295 90000 70000	
Total (A)		880000	
1. Claims Incurred (Net) 2. Commission 3. Operating Expenses related to Insurance Business 4. Others-To be specified	2 3 4	610000 105000 145000 -----	
Total (B)		860000	
Operating Profit/(Loss) from Fire/Marine/ Miscellaneous Business (A-B)		10000	

Calculatin of Reserve for unexpired risk : **Rs.**

(i) Opening Reserve 400000

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Add : Additional Reserve 80000

480000

(ii) Closing Reserve for unexpired risk @ 50% of Rs. 900000 450000

Additional Reserve=80000+(5% of Rs.900000) i.e. Rs.45000 125000

575000

SCHEDULE-1

(Premium Earned Net)

Particulars	2006-07 Rs.	2005-06 Rs.
Premiums from direct business written Add : Premium on Re-insurance accepted Less: Premium on Re-insurance Ceded Net Premium Adjustment for charges in Unearned Premium Adjustment for charges in Premium received in advance	1000000 --- 100000 900000 ---- ----	
Total Premimum earned (Net)	900000	
Premium Income from business effected : In India Outside India **Total Premimum earned (Net)**	 900000 ----	
	900000	

SCHEDULE-2

(Claims Insured Net)

Particulars	2006-07 Rs.	2005-06 Rs.
Claims Paid during the year Add : Legal Expenses Less: Re-insurance recoveries	600000 25000 625000 35000	
Net Claim Paid **Add :** Outstanding at the end of 31.3.2007	590000 50000 640000	
Less : Outstanding at the beginning of 31.3.2007	30000	
Total Claims Incurred **Claims paid to Claimants :** In India Outside India	610000 610000	
Total Claims Incurred	610000	

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

SCHEDULE-3
Commission

Particulars	2006-07 Rs.	2005-06 Rs.
Commission Paid Direct Add : Re-insurance accepted	120000 --- ---- 15000	
Less: Commission on Re-insurance Ceded **Net Commission**	105000	

SCHEDULE-4
Operating Expenses Related to Insurance Business

Particulars	2006-07 Rs.	2005-06 Rs.
1. Employee's remuneration & welfare benefits		
2. Managerial remuneration		
3. Travel, conveyance and vehicle running expenses		
4. Rents, rates & taxes		
5. Repairs		
6. Printing & Stationery		
7. Communication		
8. Legal & Professional charges		
9. Medical fees		
10. Auditor's fees, expenses etc.		
(a) as auditors		
(b) as adviser or in any other capacity, in respect of:		
(i) Taxation matters		
(ii) Insurance matters		
(iii) Maagement services; and		
(c) in any other capacity		
11. Advertisement and publicity		
12. Interest & Bank Charges		
13. Others (to be specified)	135000	
Tax on Interest & Dividend	10000	
14. Depreciation		
Total	145000	

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

लाभ–हानि खाता

(Profit and Loss Account)

बीमा कम्पनियों के विभिन्न व्यवसाय यथा अग्नि बीमा, सामुद्रिक बीमा, विविध बीमा हेतु तैया किये गये रेवेन्यु खाते से होने वाले लाभ अथवा हानि को लाभ–हानि खाते में हस्तान्तरित कर दिया जाता है।
बीमा–नियामक एवं विकास प्राधिकरण अधिनियम, 2000 के अनुसार निर्धारत Form B-PL के अनुसार इसका प्रारूप निम्न है :

Form B-PL

Name of the Insurer :

Registration No…….. and Date ……. Of Registration with the IRDA

Profit and Loss Acount for the year ended 31st March, 20………………..

Particulars	Schedule	Current Year Rs.	Previous Year Rs.
2. OPERATING PROFIT/LOSS (a) Fire Insurance (b) Marine Insurance (c) Miscellaneous Insurance 2. INCOME FROM INVESTMENT (a) Interest, Dividend & Rent-Gross (b) Profit on sale of investment Less : Loss on sale of investment 3. OTHER INCOME (to be specified)			
Total (A)			
4. Provisions (Other than taxation) (a) For diminution in the value of investments (b) Others (to be specified) 5. OTHER EXPENSES (a) Expenses other than those related to Insurance Business (b) Others (To be specified)			
Total (B)			
Profit Before Tax Provision for Taxation Profit After Tax Less : Catastrophe Reserve Profit available for appropriation			

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

APPROPRIATINS (a) Interim dividends paid during the year (b) Proposed final dividend (c) Dividend distribution tax (d) Transfer to any Reserve or Other Accounts (to be specified) Balance of profit/loss brought forward from las year Balance carried forward to Balance Sheet			

Illustration 6 :

From the following balances of Oriental Insurance Company as on March 31, 2007 prepare (i) Fire Revenue Account (ii) Marine Revenue Account and (iii) Profit and Loss Account.

ओरियन्टल इन्श्योरेन्स कम्पनी के निम्नलिखित शेषों से 31 मार्च, 2007 को (i) अग्नि रेवेन्यु खाता (ii) सामुद्रिक रेवेन्यु खाता तथा (iii) लाभ–हानि खाता तैयार कीजिए।

	Amount Rs.		Amount Rs.
Bad debts (fire)	20000	Depreciation	140000
Bad debts (marine)	48000	Interest, dividend received	56000
Auditor's fees	12000	Difference in exchange	1200
Director's fees	12800	Miscellaneous receipts	20000
Share transfer fees	3200	Profit on sale of land	240000
Bad debts recovered	4800	Fire premium less reinsurance	2400000
Reserve (fire, as on 1.4.2006)	1000000	Marine premium les reinsurance	4320000
Reserve (marine as on 1.4.2006)	3280000	Management expenses (fire)	580000
Claims paid and outstanding (Fire)	760000	Management expenses (marine)	1600000
Claims paid and outstanding (Marine)	1520000	Commission earned on reinsurance ceded (fire)	120000
Commission paid (fire)	360000	Commission earned on reinsurance ceded (marine)	240000
Commission paid (marine)	432000		
Additional reserve (fire) on 1.4.2006	200000		

In additional to the usual reserve, additional reserve in case of fire insurance is to be increased by 5% of net preimums. Provision for taxation is to be made @35%.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

सामान्य संचयों के अतिरिक्त अग्नि बीमा के सम्बन्ध में संचय को शुद्ध प्रीमियम के 5: से बढ़ाना है। आयकर के लिए आयोजन 35 प्रतिशत की दर से करना है।

Soluton :

Form B-RA

Name of the Insurer : Oriental Insurance Company

Registration No. …………. And Date ………..of Registration with the IRDA

Revenue Account for the year ended 31 March, 2007

Particulars		2006-07 Rs.	2005-06 Rs.
3. Premiums earned (Net) 2. Other (to be specified) 3. Change in provision for unexpired risk (1200000-152000) 4. Interest, Dividend & Rent-Gross	1	2400000 --- 320000 -----	
Total (A)		2080000	
1. Claims Incurred (Net) 2. Commission 3. Operating Expenses related to Insurance Business 4. Others-To be specified	2 3 4	760000 240000 600000 -----	
Total (B)		1600000	
Operating Profit/(Loss) from Fire/Marine/ Miscellaneous Business (A-B)		480000	

SCHEDULE-1

(Premium Earned Net)

Particulars	2006-07 Rs.	2005-06 Rs.
Premiums from direct business written Add : Premium on Re-insurance accepted Less: Premium on Re-insurance Ceded Net Premium Adjustment for charges in Unearned Premium Adjustment for charges in Premium received in advance	2400000 --- --- 2400000 ---- ----	
Total Premimum earned (Net)	2400000	
Premium Income from business effected : In India Outside India **Total Premimum earned (Net)**	 --- ----	
	2400000	

SCHEDULE-2

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(Claims Insured Net)

Particulars	2006-07 Rs.	2005-06 Rs.
Claims Paid		
Direct	760000	
Add : Re-insurance accepted	--	
Less: Re-insurance Ceded	---	
Net Claim paid	760000	
Add : Outstanding at the end of the year		
Less : Outstanding at the beginning of the year	---	
Total Claims Incurred	760000	
Claims paid to Claimants :		
In India	---	
Outside India	760000	

SCHEDULE-3

Commission

Particulars	2006-07 Rs.	2005-06 Rs.
Commission Paid		
Direct	360000	
Add : Re-insurance accepted	----	
Less: Commission on Re-insurance Ceded	120000	
Net Commission	240000	

SCHEDULE-4

Operating Expenses Related to Insurance Business

Particulars	2006-07 Rs.	2005-06 Rs.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

1. Employee's remuneration & welfare benefits	----	
2. Managerial remuneration	----	
3. Travel, conveyance and vehicle running expenses	----	
4. Rents, rates & taxes	----	
5. Repairs	----	
6. Printing & Stationery	----	
7. Communication	----	
8. Legal & Professional charges	----	
9. Medical fees	----	
10. Auditor's fees, expenses etc.		
(a) as auditors		
(b) as adviser or in any other capacity, in respect of:		
(i) Taxation matters		
(ii) Insurance matters		
(iii) Maagement services; and		
(c) in any other capacity		
11. Advertisement and publicity	----	
12. Interest & Bank Charges	----	
13. Others : Management expenses	580000	
Bad debts	20000	
14. Depreciation	----	
Total	600000	

Soluton :

Form B-RA

Name of the Insurer : Oriental Insurance Company

Registration No. …………. And Date ………..of Registration with the IRDA

Revenue Account for the year ended 31 March, 2007

Marine Insurance

Particulars		2006-07 Rs.	2005-06 Rs.
4. Premiums earned (Net)	1	4320000	
2. Other (to be specified)		---	
5. Change in provision for unexpired risk (3280000-4320000)		1040000	
6. Interest, Dividend & Rent-Gross		-----	
Total (A)		3280000	

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

1. Claims Incurred (Net) 2. Commission 3. Operating Expenses related to Insurance Business 4. Others-To be specified	2 3 4	1520000 192000 1648000 -----	
Total (B)		3360000	
Operating Profit/(Loss) from Fire/Marine/ Miscellaneous Business (A-B)		80000	

SCHEDULE-1

(Premium Earned Net)

Particulars	2006-07 Rs.	2005-06 Rs.
Premiums from direct business written Add : Premium on Re-insurance accepted Less: Premium on Re-insurance Ceded Net Premium Adjustment for charges in Unearned Premium Adjustment for charges in Premium received in advance	4320000 --- --- 4320000 ---- ----	
Total Premimum earned (Net)	4320000	
Premium Income from business effected : In India Outside India	 --- ----	
Total Premimum earned (Net)	4320000	

SCHEDULE-2

(Claims Insured Net)

Particulars	2006-07 Rs.	2005-06 Rs.
Claims Paid Direct Add : Re-insurance accepted Less: Re-insurance Ceded	 1520000 -- ---	
Net Claim paid **Add :** Outstanding at the end of the year	1520000	

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Less : Outstanding at the beginning of the year	---	
Total Claims Incurred	1520000	
Claims paid to Claimants :		
In India	---	
Outside India	1520000	

SCHEDULE-3

Commission

Particulars	2006-07 Rs.	2005-06 Rs.
Commission Paid		
Direct	432000	
Add : Re-insurance accepted	----	
Less: Commission on Re-insurance Ceded	240000	
Net Commission	192000	

SCHEDULE-4

Operating Expenses Related to Insurance Business

Particulars	2006-07 Rs.	2005-06 Rs.
1. Employee's remuneration & welfare benefits	----	
2. Managerial remuneration	----	
3. Travel, conveyance and vehicle running expenses	----	
4. Rents, rates & taxes	----	
5. Repairs	----	
6. Printing & Stationery	----	
7. Communication	----	
8. Legal & Professional charges	----	
9. Medical fees	----	
10. Auditor's fees, expenses etc.		
(a) as auditors		
(b) as adviser or in any other capacity, in respect of:		
(i) Taxation matters		
(ii) Insurance matters		
(iii) Maagement services; and		
(c) in any other capacity		
11. Advertisement and publicity	----	
12. Interest & Bank Charges	----	
13. Others : Management expenses	1600000	
Bad debts	48000	
14. Depreciation	----	
Total	1648000	

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Form B-PL

Name of the Insurer : Oriental Insurance Company

Registration No…….. and Date ……. Of Registration with the IRDA

Profit and Loss Acount for the year ended 31st March, 2007

Particulars	2006-07 Rs.	2005-06 Rs.
5. OPERATING PROFIT/LOSS		
(a) Fire Insurance	480000	
(b) Marine Insurance	80000	
(c) Miscellaneous Insurance	----	
2. INCOME FROM INVESTMENT	---	
(a) Interest, Dividend & Rent-Gross	56000	
(b) Profit on sale of investment	----	
Less : Loss on sale of investment	----	
3. OTHER INCOME (to be specified)		
Profit on sales of Land	240000	
Transfer Fees	3200	
Bad Debts recovered	4800	
Misc. Receipts	20000	
Difference in Exchange	1200	
Total (A)	**725200**	
4. Provisions (Other than taxation)		
(a) For diminution in the value of investments	---	
(b) Others (to be specified)	---	
5. OTHER EXPENSES		
(a) Expenses other than those related to Insurance Business	----	
(b) Others (To be specified)	----	
Expenses of Management :		
Auditor's Fees	12000	
Director's Fees	12800	
Depreciation	140000	
Total (B)	**164800**	
Profit Before Tax	560000	

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Provision for Taxation @35%	196140	
Profit After Tax	364260	
Less : Catastrophe Reserve	---	
Profit available for appropriation	---	
APPROPRIATINS		
(e) Interim dividends paid during the year	---	
(f) Proposed final dividend	---	
(g) Dividend distribution tax		
(h) Transfer to any Reserve or Other Accounts (to be specified)	---	
Balance of profit/loss brought forward from las year	---	
Balance carried forward to Balance Sheet	---	
	364260	

Questions:

1. Prepare the following in proper form, giving imaginary figures, in the books of a General Insurance Company

   एक सामान्य बीमा का व्यवसाय करने वाली कम्पनी की पुस्तकों में काल्पनिक आंकड़े देते हुए उचित आकार में निम्नलिखित को तैयार कीजिए:

(i) Revenue Account रेवेन्यु खाता

(ii) Profit and Loss Account लाभ–हानि खाता

(iii) Profit and Loss Appropriation Account लाभ–हानि नियोजन खाता

2. From the following balances, prepare the Fire Insurance Revenue Account of XYZ. Fire Insurance Ltd. for the year ended March 31, 2007

XYZ फायर इन्श्योरेन्स लिमिटेड के निम्नलिखित शेषों से 31 मार्च, 2007 की समाप्त होने वाले वर्ष के लिए अग्नि रेवेन्यु खाता बनाइये

	Rs.
Commission on reinsurance accepted	186400
Commission on direct business	195210
Depreciation on Furniture	450
Depreciation on Library books	1400
Depreciation on Motor Car	7500
Loss on sale of Motor Cars	12000
General Manager's Salary	24000
Telephone	41000

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Postage and telegrams	6500
Rent	72000
Travelling expenses	45800
Motor Car expenses	45500
Establishment	145500
Bonus	21000
Stationary	28000
Newpapers and periodicals	7000
Legal expenses	23400
Electricity Charges	18500
Provident Fund Contribution	12500
Adit fee	1000
Miscellaneous Expenses	3500
Claims under policies less reinsurance paid during the year	158650
Total estimated liability in respect of outstanding claims as on 31.3.2007 whether due or intimated	10500
Total estimated liability in respect of outstanding claims as on 31.3.2006 whether due or intimated	2800
Reserve for unexpired risks as on 31.3.2006	315000
Additional Reserve for unexpired risks as on 31.3.2006	63000
Premiums received less reinsurance	970400
Commission on reinsurance ceded	141240

You are required to keep 50% of the net premiums received as Reserve for unexpired risks as on march 31, 2007 and 10% of the net premiums as additional Reserve for the same.

आपको असमाप्त जोखिमों के लिए 31 मार्च, 2007 को प्राप्त शुद्ध प्रीमियम को 50 प्रतिशत संचय बनाना है तथा शुद्ध प्रीमियम का 10 प्रतिशत अतिरिक्त संचय बनाना है।

3. From the following information as on 31st March, 2007 prepare the Revenue Acounts of Sagar Bhima Co. Ltd. engaged in Marine Insurance Business:

31 मार्च, 2007 को अग्रलिखित सूचनाओं से सागर भीमा कं. लिमिटेड का जो कि समुद्री बीमा व्यवसाय में संलग्न है का आयगत खाता बनाइयेः

Particulars	Direct Business (Rs.)	Re-insurance (Rs.)
I. Premium : Received Receivable - 1st April, 2006	 2400000 120000	 360000 21000

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

- 31st March, 2007	180000	28000
Premium paid	240000	--
Payable – 1st April, 2006	--	20000
- 31st March, 2007		42000
II. Claims :		
Paid	1650000	125000
Payable – 1st April, 2006	95000	13000
- 31st March, 2007	175000	22000
Received	---	100000
Receivable - 1st April, 2006	---	9000
- 31st March, 2007	---	12000
III. Commission :		
On Insurance accepted	150000	11000
On Insurance ceded	----	14000

Other expenses and income:

Salaries – Rs. 260000; Rent, Rates and Taxes-Rs.18000; Printing and Stationery –Rs.23000; Interest, Dividend and Rent received (net) –Rs. 115500; Income Tax deducted at source-Rs.24500; Legal Expenses (inclusive of Rs. 20000 in connection with the settlement of claims)-Rs.60000; Bad Debts-Rs. 245000, Profit on Sale of Motor Car Rs. 17000.

Balance of Fund on 1st April, 2006 was Rs. 2650000 including Additional Reserve of Rs. 325000. Additional Reserve has to be maintained at 5% of the net premium of the year.

4. Rama Insurance Ltd.is doing composite insurance business. The following balances, pertaining Account for the year ended on that date in the prescribed form:

रामा इन्श्योरेन्स लिमिटेड अनेक बीमा व्यवसाय करती है। आपको 31 मार्च, 2007 को सामुद्रिक बीमा व्यवसाय से सम्बन्धित निम्नलिखित सूचनाये दी गयी हैं, के आधार पर निर्धारित प्रारूप में इस तिथि को समाप्त वर्ष के लिए रेवेन्यु खाता बनाइये।

	Rs.
Commission on reinsurance accepted	186000
Commission on direct business	195000
Commission on reinsurance ceded	342000
Interest Dividend and Rent (Gross)	18600
Depreciation	7000
Loss on sale of Motor Cars	12000
General Manager's Salary	48000
Rent	62500
Postage, telegrams and telephone	10000

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Staff salary and bonus	150000
Travelling expenses	25600
Motor Car expenses	85000
Printing stationery and periodicals	49000
Legal charges	25000
Electricity charges	11000
Contribution to staff provident fund	10900
Audit expenses	4000
Bad debts	1200
Miscellaneous	2500
Claims under policies and during the year	653000
Reserve for unexpired risks as on April, 2006	1367000
Additional Reserve for unexpired risks as on April 1, 2006	46000
Premium received less reinsurance	990000

You are also to consider the following information :

(1) Gross premium direct in India was Rs. 1223000.

(2) No premium was written outside India and as such no business was transacted outside India during 2007.

(3) Total estimated liability in respect of claims due or intimated as on March 312006 and March 31, 2007 were Rs. 1200 and Rs. 6300 respectively.

(4) The salary of the General manager of the Marine Department was Rs. 24000 only.

(5) Make an additional Reserve of 10% of the premium received in addition to the usual Reserve required to be maintained as per the code of conduct in respect of unexpired risks as on March 31, 2007.

आपको निम्नलिखित सूचनाओं एवं निर्देशों का ध्यान रखना हैः

1. भरत में प्रत्यक्ष सकल प्रीमियम 1223000 रू. थी।
2. वर्ष 2007 में भारत के बाहर कोई व्यवसाय नहीं किया गया अतः भारत के बाहर प्रीमियम नहीं लिखी गयी थी।
3. देय या सूचित किये गये दावों के सम्बन्ध में अनुमानित दायित्व 31 मार्च, 2006 तथा 31 मार्च, 2007 को क्रमशः 1200 रू. तथा 6300 रू. क्रमशः थे।
4. सामुद्रिक बीमा विभाग के जनरल मैनेजर का कुल वेतन केवल 24000 रू. था।
5. 31 मार्च, 2007 को असमाप्त जोखिमो के लिए सामान्य रू॰ से बनाये जाने वाले संचय के अतिरिक्त प्राप्त प्रीमियम का 10 प्रतिशत अतिरिक्त संचय बनाया जाए।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

बैंकिंग कम्पनियों के लेखे

(Accounts of Banking companies)

बैकिंग कम्पनियों का संचालन बैंकिंग नियन्त्रण अधिनियम, 1949 (The Banking Regulation Act, 1949) तथा रिजर्व बैंक अधिनियम द्वारा होता है। भारतीय कम्पनी अधिनियम के प्रावधान भी बैंकों पर उस सीमा तक लागु होते हैं जिस सीमा तक ये उक्त दोनों अधिनियमों से असंगती न रखते हों।

बैंक की परिभाषा
(Definition of Bank)

जो कम्पनी भारत में बैंकिंग व्यवसाय करती है उसे 'बैंकिंग कम्पनी' कहते है। ऐसी कम्पनी को अपने नाम में 'बैंक',बैंकर' अथवा 'बैंकिंग शब्द अनिवार्य रूप से लगाना पड़ता है।

बैंकिंग नियन्त्रण अधिनियम,1949 ने बैंकिंग शब्द को निम्न प्रकार से परिभाषित किया है।

'बैंकिंग' से अर्थ है, जनता द्वारा जमा कराई जाने वाली राशि को अन्य व्यक्तियों को उधार देने अथवा विनियोग करने के उदेश्य से स्वीकार करना। यह राशि मॉगने पर अथवा अन्य रूप से वापस भुगतान करने योग्य है तथा चैक, ड्राफ्ट अथवा अन्य रूप से निकाले जाने योग्य है।

व्यापार की मनाही (Prohibition of Trading):

एक बैंकिंग कम्पनी माल के क्रय अथवा विक्रय या विनिमय में प्रत्यक्षतः या अप्रत्यक्षतः व्यवहार नहीं कर सकती है। लेकिन संग्रंहण अथवा पराक्रमण्य हेतु प्राप्त विनिमय पत्रों के सम्बंध में क्रय विक्रय या वस्तुविनिमय कर सकती है।

गैर–बैंकिंग सम्पतियॉ (Non-banking assets):

बैंक की वे सम्पतियॉ जो बैंक के प्रयोग के लिए नही क्रय की गई हैं, गैर–बैंकिंग सम्पतियॉ कहलाती है। इस प्रकार की सम्पतियॉ प्रायः वे सम्पतियॉ होती हैं जो बैंक के पास प्रतिभूति के रूप मे रखी जाती है और ऋण का भुगतान न होने पर बैंक द्वारा अधिगृहीत कर ली जाती है। इस प्रकार की गैर–बैंकिंग सम्पतियॉ अधिग्रहण के 7 वर्षो के अन्दर बेच दी जानी चाहीए । परन्तु विशेष परिस्थितियों में रिजर्व बैंक यह अवधि 7 वर्ष से अधिक करने की अनुमति दे सकता है।

गैर–बैंकिंग सम्पतियों के चिठे में उनके बाजार मूल्य अथवा अनुमानित वसूली मूल्य से अधिक मूल्य पर नहीं दिखाना चाहिए।

गैर–बैंकिंग सम्पतियों का निपटान (Disposal of Non-Banking Assets):

एक बैंकिंग कम्पनी केवल अपने उपयोग के लिए ही अचल सम्पति खरीद सकती है। अन्य प्राप्त अचल सम्पतियॉ प्राप्ति की तिथि से सात वर्षो के भीतर निपटा ली जानी चाहीए। लेकिन, किसी मामले विशेष, में भारतीय रिजर्व बैंक सात वर्षो की ऐसी अवधि को बढ़ा सकता है यदि वह सन्तुष्ट हो जाये कि ऐसी वृद्धि बैंकिंग कम्पनी के जमाकर्ताओं के हित में रहेगी ।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

प्रबन्ध (Management):

धारा 10 (a) के अन्तर्गत एक बैंकिंग कम्पनी के संचालक मण्डल के सदस्यों की कुल संख्या का कम से कम 51% ऐसे व्यक्तियों का समावेश करेगें जिनको निम्नलिखित क्षेत्रों में से एक या अधिक में विशेष ज्ञान या व्यावहारिक अनुभव है–

1. लेखाकर्म 2. कृषि तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था 3. बैंकिंग 4. सहकारिता 5. अर्थशास्त्र 6. वित 7. कानून 8. लघु आकार के उद्योग ।

यह भी अपेक्षा की जाती है कि कम से कम दो संचालकों को कृषि तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था तथा सहकारीता के सम्बंध में विशिष्ट ज्ञान अथवा व्यवहारिक अनुभव हो। धारा 10 (b) (1) के अन्तर्गत प्रत्तेक बैंकिग कम्पनी अपने संचालकों में से एक को संचालक मण्डल का अध्यक्ष नियुक्त करेगी । अध्यक्ष को बैंकिंग कम्पनी के सम्पुर्ण कम्पनी कामकाज के प्रबन्ध का दायित्व सौंपा जाता है। ऐसा अध्यक्ष बैंकिंग कम्पनी का पूर्णकालिक संचालक हैं, लगातार ऐसी अवधि के लिए अपने पद पर रहेगें जो 8 वर्षो से अधिक न हो ।

बैंकिंग नियन्त्रण अधिनियम, 1949 को बैंकिंग नियन्त्रण (संशोधन) अध्यादेश 1994 द्वारा संशोधित किया गया जो कि 31 जनवरी, 1994 से प्रभावी है। अध्यादेश मूलतः निम्नलिखीत के बारे में है।

1. अंशधारियों को वोट देने कि सीमा वर्तमान 1% के स्तर से कुल वोटिंग अधिकर के 10% तक बढ़ाई गई है।
2. पूर्व में केवल एक पूर्णकालीन अध्यक्ष के स्थान पर बैंकिंग कम्पनियों में एक पूर्णकालिन अथवा अंशकालीन अध्यक्ष को नियुक्ति का प्रावधान किया गया ।हालांकि जहॉ पर अंशकालीन आधार पर अध्यक्ष की नियुक्ति की जाये वहॉ पर ऐसी बैंकिंग कम्पनीयों में प्रबन्ध के सम्पुर्ण मामलों को देखने के लिए एक प्रबन्ध संचालक को जिम्मेदारी सौपी जायेगी ।

लेखा पुस्तकें
(Books Of Account)

एक आधुनिक बैंक में प्रतिदिन हजारों व्यवहार होते हैं। इनका उसी समय लेखा करना आवश्यक होता है जिससे बैंक को प्रत्येक ग्राहक की ताजा स्थिति का ज्ञान रहता है तथा उसे अपनी नगद स्थिति का भी पता रहता है। अतः बैंक को लेखे की ऐसी व्यवस्था करनी पड़ती है कि समस्त व्यवहारों का लेखा तुरन्त सम्भव हो सके। इसके लिए बैंक कई सहायक पुस्तकें रखता है। इनमें से प्रमुख इस प्रकार हैं –

(i) खिड़की पर रोकड़ प्राप्ति पुस्तक (Receiving Cashier's Counter Cash Book)
(ii) खिड़की पर रोकड़ भुगतान पुस्तक (Paying Cashier's Counter Cash Book)
(iii) रोकड़ संचय पुस्तक (Cash Reserve Book)
(iv) समाशोधन पुस्तकें (Clearing Books)
(v) चालू खातों की खाता बही (Current Accounts Ledger)
(vi) सेविंग्स बैंक खाता बही (Saving Bank Accounts Ledger)
(vii) स्थानीय जमा खाता बही (Fixed Deposit Accounts Ledger)
(viii) विनियोग खाता (Investment Ledger)
(ix) ऋण एवं अग्रिम खाता बही (Loans and Advances Ledger)
(x) अधिविकर्ष एवं रोकड़ी साख खाता बही (Overdraft and Cash Credit Accounts Ledger)
(xi) भुनाये एवं खरीदे गये बिल खाता बही (Bills Discounted and Purchased Ledger)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(xii) ग्राहको की स्वीकृति, बेचान एवं गारन्टी खाता बही (Customer's Acceptances, Endorsements and Guarantee Ledger)

उपरोक्त सहायक पुस्तकों के अतिरिक्त एक बैंकिंग कम्पनी कुछ स्मरण पुस्तकें अथवा रजिस्टर भी रखती है जो निम्नलिखित है :

(i) एकत्रित किये जाने वाले बिलों का रजिस्टर (Bills for Collection Register)
(ii) मांग ड्राफ्ट रजिस्टर (Demand Draft Register)
(iii) प्रतिभूतियों का रजिस्टर (Securities Register)
(iv) जवाहरात रजिस्टर (Jewellery Register)
(v) सुरक्षित जमा वॉल्ट रजिस्टर (Safe Deposit Vault Register)।

एक बैंकिंग कम्पनी की प्रथम मुख्य पुस्तक सामान्य रोकड़ बही (General Cash Bank) होती है जिसमें सहायक रोकड़ पुस्तकों (प्राप्ति रोकड़िये एवं भुगतान रोकड़िये की रोकड़ पुस्तकों) के प्रतिदिन के विवरण सारांश रूप में दर्ज किये जाते है। इसके अतिरिक्त रोकड़ शेष बही (Cash Balance Book) भी रखी जाती है जिसमें प्रति दिन का प्रारम्भिक शेष, कुल प्राप्ति तथा कुल भुगतान (योग रूप में) दर्ज किये जाते हैं। इसके अंतिम शेष का मिलान रोकड़ियों के पास करेन्सी नोट व सिक्कों से कर लिया जाता है। बैंक की द्वितीय मुख्य पुस्तक सामान्य खाता बही (general Ledger) होती है जिसमें विविध सहायक पुस्तकों के लिए नियन्त्रण खाते (Control Accounts) खाते जाते हैं तथा उन खर्चो व सम्पतियों के खाते खोले जाते है जिनके खाते सहायक बहियों में नहीं खुले हुए हैं।

स्लिप प्रणाली
(Slip System)

बैंकों में हिसाब–किताब रखने में स्लिप प्रणाली महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसका वर्णन निम्न प्रकार है :

स्पिल प्रणाली द्वारा खतौनी (Posting by Slip System) : बैंकिंग कम्पनियों में व्यवहारों का शीघ्र लेखा करने तथा समय की बचत के लिए 'स्लिप प्रणली द्वारा खतौनी' (Posting by slip System) का एक विशेष तरीका अपनाया जाता है। इस तरीके के अन्तर्गत स्लिपों के आधार पर बहियों में खतौनी की जाती है अर्थात् स्लिप ख्तौनी के माध्यम का कार्य करती है। स्लिप प्रणाली बुक–कीपिंग की कोई प्रणाली नहीं है बल्कि दोहरा लेखा सिद्धान्तों पर रखे गये खातों में शीघ्र पोस्टिंग की एक पद्धति है। स्लिप का अर्थ सौदे के एक लिखित अधिकार–पत्र से है जिसके आधार पर बहियों में खतौनी की जाती है, जैसे ग्राहकों द्वारा काटे गये चैक (Cheques), आहरण फार्म (Withdrawal Forms), तथा ग्राहकों के व्यक्तिगत खातों (Ledger Accounts) में खतौनी की जाती है।

स्पिल प्रणाली का कार्य संचालन (Working of Slip System) : प्रत्येक बैंकिंग कम्पनी की स्लिपें छपी हुई होती हैं तथा स्वयं ग्राहक द्वारा भरी जाती हैं। उदाहरण के लिए जब कोई ग्राहक नकद या चैक बैंक में जमा करता है तो साथ में जमा करने वाली स्लिप (Paying-in-slip) भी भर कर देता है। इस स्लिप के आधार पर बैठा हुआ प्राप्ति रोकड़िया अपनी रोकड़ बही (General Cash Book) में लिखता है। इसके बाद ये स्लिपें लेजर क्लर्क (Ledger Keeper) के पास भेज दी जाती हैं जो कि ग्राहकों के व्यक्तिगत खातों में प्रविष्टि कर देता है। प्रत्येक दिन के अंत में इन सब स्लिपों को क्रमानुसार फाइल में लगा दिया जाता है ताकि भविष्य में इनके आधार पर जांच की जा सके।

जब कोई ग्राहक बैंक में अपने खाते से रूपया निकलवाना चाहते हैं तो आहरण फॉर्म या चैक भर कर लेजर क्लर्क (Ledger Keeper) को देता है उक्त स्लिप की रसीद के रूप में लेजर क्लर्क ग्राहक को एक टोकन देता है जिस पर कोई संख्या (Number) अंकित रहती है। इस स्लिप के आधार पर लेजर क्लर्क ग्राहक के व्यक्तिगत खाते मं प्रतिष्टि कर देता है तथा उस स्लिप पर भुगतान का आदेश करने के लिए लेखापाल

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(Accountant) के पास भेज देता है। लेजर क्लर्क उक्त स्लिप को टोकन पुस्तक में चढ़ाकर टोकन पुस्तक के साथ भेजता है। लेखापाल उस व्यक्ति के हस्ताक्षरों का मिलान नमूने के हस्ताक्षरों से करता है तथा स्लिप पर भुगतान का आदेश देकर पुस्तक व स्लिप को खिड़की पर बैठे हुए भुगतान–रोकड़िये के पास भिजवा देता है जो कि अपनी रोकड़ बही में लेखा करके ग्राहक को नकद भुगतान दे देता है। उक्त रोकड़िया समय–समय पर उन स्लिपों को एक अन्य क्लर्क के पास भेज देता है जो सामान्य रोकड़ बही के भुगतान पक्ष की ओर उन सौदों को दर्ज कर लेता है। प्रत्येक दिन के अंत में इन सब स्लिपों को क्रमानुसार लगातार फाइल कर लिया जाता है ताकि भविष्य में इनके आधार पर जांच की जा सके।

अन्य प्रकार के सौदों, जैसे चालू खाते से स्थाई जमा खाते से दूसरे चालू खाते में हस्तांतरण करने में भी यही पद्धति अपनाई जाती है। इसमें ग्राहकों को आहरण फार्म या चैक के अतिरिक्त, अन्य खाते में हस्तांतरण के लिए, एक फार्म और भरना पड़ता है जिसके आधार पर बैंक कर्मचारियों द्वारा प्रविष्टियां कर ली जाती है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि स्लिप द्वारा खतौनी के अन्तर्गत प्रविष्टियां तुरन्त ही विभिन्न कर्मचारियों द्वारा अपनी पुस्तकों में कर ली जाती हैं।

स्लिप पद्धति के लाभ (Advantage of Slip System) : स्लिपों के आधार पर खतौनी करने से बैंकिंग कम्पनियों को निम्नलिखित लाभ प्राप्त होते हैं :

(i) स्लिपें एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को सुगमता से स्थानान्तरित की जा सकती हैं जिसमें समय की बचत होती है जबकि लेखा–पुस्तकें इधर–उधर पहुंचाने में समय अधिक लगता हैं।

(ii) लेखा पुस्तकें इधर–उधर पहुंचाने में बैंकिंग कार्य में बाधा पड़ती है तथा ग्राहकों को भी अधिक समय तक इन्तजार करना पड़ता है। अतः ग्राहकों की सुविधा की दृष्टि से यह पद्धति उतम हैं।

(iii) स्लिप पद्धति को अपनाने से अलग–अलग कर्मचारी स्लिप के आधार पर अपनी–अपनी पुस्तकों में व्यवहारों को दर्ज करते है जिससे किसी भी कर्मचारी की अशुद्धियों का उस दिन के अन्त में पता चल जाता है। यदि लेखा पुस्तकों के आधार पर खतौनी की जाये तथा रोकड़ बही में ही शुद्धि हो जाये तो आगे की सब बहियों मे अशुद्धि होने की सम्भावना रहती है।

(iv) स्लिपों ग्राहकों द्वारा ही भरी जाती हैं, अतः बैंक के कर्मचारियों के श्रम व समय की बचत होती है तथा ये स्लिपें ग्राहकों के साथ हुए सौदे के प्रमाणक का भी कार्य करती हैं।

(v) स्लिप पद्धति अपनाने से लेखा कार्य बहुत सुगम हो जाता है तथा बैंक के बहुत अधिक सौदों का पूर्ण ढंग से विभाजन सम्भव हो जाता हैं।

(vi) यदि बैंकिंग कम्पनियों द्वारा स्लिप पद्धति नहीं अपनाई जावे तो सौदों की संख्या को देखते हुए उसे बहुत अधिक सहायक पुस्तकें रखने की आवश्यकता पड़ेगी तथा कर्मचारी भी अधिक रखने पड़ेगें। अतः स्लिप पद्धति अपनाने से धन की बचत भी होती है।

स्लिप पद्धति की हानियां (Disadvantages of Slip System) : स्लिप पद्धति बैंकिंग लेखा व्यवस्था का अभिन्न अंश हैं। इसके अनेकों लाभ होते हुए भी कुछ दोष भी हैं जो निम्नलिखित हैं :

(i) **खुला प्रमाणक** (Loose Voucher) : बैंक ग्राहकों को प्रायः पुस्तक के रूप में स्लिपें देता है (जैसे, चेक बुक) लेकिन ग्राहको से प्रत्येक स्लिप पृथक्–पृथक् आती है, अतः इतनी स्लिपों को नियन्त्रित करना एक कठिन कार्य हैं।

(ii) **नष्ट होने या खोने का भय** : स्लिपें खुली हुई होने के कारण इनके नष्ट होने या खोने का भय बना रहता है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(iii) **भूल की सम्भावना** : स्लिप के खो जाने से अथवा दो स्लिपों के एक साथ चिपक जाने से लेखों में भूल हो जाती है।

(iv) **गबन की सुगमता** : एक स्लिप को फाइल में से आसानी से हटाया जा सकता है अथवा उसके स्थान पर दूसरी स्लिप रखी जा सकती है। इस प्रकार कर्मचारियों द्वारा गबन करना आसान हो जाता हैं।

(v) **भूल या गबन का संचयी प्रभाव** : भूल या गबन का बैंकों में लम्बे समय तक नहीं चलता है। जब इनका आकार बहुत बड़ा हो जाता है और तब इनके बारे में पता चलता है तो तब तक बैंक को बहुत बड़ा नुकसान हो चुका होता है।

आन्तरिक नियन्त्रण ढीला होने पर ही उपरोक्त हानियां होती हैं। आन्तरिक नियन्त्रण प्रणाली को सुदृढ़ करके इन हानियों से बचा जा सकता है। आधुनिक समय में बैंकों में कम्प्यूटरों का प्रयोग बढ़ता जा रहा है। इसके लिए स्लिप पद्धति ही उपयुक्त हैं।

बैंकिंग विनियमन अधिनियम के कुछ विशिष्ट प्रावधान तथा उनसे सम्बन्धित व्यवहार
(Some special provisions of the Banking Regulation Act and Transactions relating thereto)

बैंकिंग कम्पनी (संशोधन) अधिनियम, 1962 के लागू होने के बाद व्यवसाय प्रारम्भ करने बैंकिंग कम्पनी की व्यवसाय के स्थाना की संख्या को ध्यान में न रखते हुए न्यूनतम प्रदत पूंजी 5 लाख रूपयें से कम नहीं होगी।

अधिनियम की धारा 12 के अनुसार एक बैंकिंग कम्पनी निम्न शर्तें पूरी करे बिना व्यापार नहीं कर सकती:

(i) उसकी प्रार्थित पूंजी, अधिकृत पूंजी की आधी से कम नहीं होनी चाहिए तथा प्रदत पूंजी, प्रार्थित पूंजी की आधी से कम नहीं होनी चाहिए। जब पूंजी बढ़ाई जाती है तो उसे उपरोक्त शर्तों का पालन 2 वर्षो के भीतर–भीतर जैसा कि रिजर्व बैंक अनुमति दे, करना चाहिए।

(ii) बैंकिंग कम्पनी की पूंजी में केवल समता अंश, या समता अंश तथा पूर्वाधिकार अंश (1 जुलाई, 1945 से पूर्व जारी पूर्वाधिकार अंश) होने चाहिए।

उपरोक्त प्रावधान उन बैंकिंग कम्पनी पर लागू नहीं होते जिनका समायोजन 15 जनवरी, 1937 से पूर्व हुआ हो। अंश पूंजी के सम्बन्ध में उपरोक्त दी गई सीमाएं बहुत लम्बे समय पूर्व निर्धारित की गई हैं। ये सीमाएं पूर्ण अपर्याप्त पायी गई हैं। बैंकों के पूंजी आधार को सुदृढ़ करने के लिए नरसिंहमन समिति की सिफारिशों के आधार पर अप्रैल, 1992 में रिजर्व बैंक ने ''जौखिम समायोजित सम्पति अनुपात विधि'' (The risk weighted asset ratio system) लागू किया। इस पद्धति के अनुसार डूबत ऋण अपलिखित करने के बाद बैंकों की प्रदत पूंजी एवं कोष, बैंक की सम्पतियों, उनके विनियोगों, ऋण एवं अग्रिम के उचित अनुपात में होने चाहिए। इन सभी मदों को व्यस्थित जोखिम के आधार पर भार प्रदान किये गये हैं। इस प्रकार ज्ञात अनुपात 'पूंजी पर्याप्त अनुपात' (Capital Adequacy Ratio) के नाम से जाना जाता है। भारत में संचालित सभी बैंकों ने इस अनुपात को मार्च 2005 तक 10 प्रतिशत तक प्राप्त कर लिया था।

रिजर्व बैंक ऐसे निजी बैंकों को भी अनुमति दे रहा है जिनका पंजीयन कम्पनी अधिनियम 1956 के अन्तर्गत एक सार्वजनिक सीमित कम्पनी कम्पनी के रूप में है, की न्यूनतम प्रदत पूंजी 100 करोड़ रूपये होगी।

कमीशन, दलाली आदि का भुगतान : एक बैंकिंग कम्पनी कमीशन, दलाली बट्टे या पारिश्रमिक के रूप में अपनी ऐसी प्रदत पूंजी के 2½ प्रतिशत से अधिक भुगतान नहीं कर सकती है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

न मांगी गयी पूंजी पर प्रभार : एक बैंकिंग कम्पनी अपनी न मांगी गई पूंजी पर किसी प्रकार उत्पन्न नहीं कर सकती है।

ऋणों पर बन्धन (Restriction on Loans and Advances) : एक बैंकिंग कम्पनी अपने अंशों की जमानत पर. ण नहीं दे सकती है। इसके अतिरिक्त बैंक निम्न लोगों को भी ऋण नहीं दे सकती हैं :

(A) बैंक के संचालक,

(B) किसी ऐसी फर्म को जिसमें बैंक के संचालक साझेदार, मैनेजर, कर्मचारी या गारण्टीकर्ता हैं।

(C) किसी ऐसी कम्पनी को जिसमें बैंक को कोई संचालक, उस कम्पनी का मैनेजर, संचालक, कर्मचारी या गारंटकीकर्ता है या उस कम्पनी में बैंक के संचालक के महत्वपूर्ण हित हैं।

(D) किसी ऐसे व्यक्ति को जिसका बैंक का संचालक साझेदार या गारंटीकर्ता हैं।

पूंजी तथा रक्षित निधि (Capital and Reserve Fund) :

बैंकिंग विनियमन अधिनियम की धारा 11 में बैंकों की न्यूनतम पूंजी सम्बन्धी व्यवस्थाओं का उल्लेख किया गया है। न्यूनतम पूंजी निश्चित करते समय भौगोलिक कार्य–क्षेत्र एवं बैंक की स्थापना किस स्थान पर की गई है, आदि बातों को ध्यान में रखा गया है। इस धारा के अनुसार बैंकिंग कम्पनियों की प्रदत पूंजी व संचयों की निर्धारित की गई न्यूनतम सीमा निम्न तालिका द्वारा दर्शायी गयी है :

(1) बैंको के लिए न्यूनत प्रदत्त पूंजी एवं कोष
(Minimum Paid up Capital and Reserves for Banks)

विवरण	प्रदत्त पूंजी एवं कोषों की कुल राशि (रूपयों में)
1. भारत में समामेलित बैंक	
A. (i) भारत में समामेलित ऐसी बैंकिंग कम्पनी जिसके व्यापारिक कार्यालय एक से अधिक राज्यों में हों (मुम्बई या कोलकाता शहरों को छोड़कर)	5 लाख
B. (ii) भारत में समामेलित ऐसी बैंकिंग कम्पनी जिसके व्यापारिक कार्यालय एक से अधिक राज्यों में तथा व्यापारिक कार्यालय मुम्बई या कोलकाता अथवा दोनों शहरों में हों।	10 लाख
(a) यदि बैंकिंग कम्पनी के समस्त व्यापारिक कार्यालय एक ही राज्य में हों तथा उनमें से कोई स्थान मुम्बई अथवा कोलकाता में हो (मुम्बई तथा कोलकाता शहर को छोड़कर अन्य स्थानों पर स्थित प्रत्येक व्यापारिक कार्यालय के लिए 25 हजार रू. अतिरिक्त पूंजी होनी चाहिए परन्तु अधिकतम राशि 10 लाख रू. हैं)।	5 लाख
(b) यदि व्यापारिक स्थान एक राज्य में हो तथा उक्त स्थान मुम्बई अथवा कोलकाता में न हो (उसी जिले में प्रत्येक अतिरिक्त व्यावसायिक स्थान के लिए 10 हजार रू. तथा अन्य जिलों में स्थित प्रत्येक कार्यालय के लिए 25 हजार रू.किन्तु ऐसे बैंक की प्रदत्त पूंजी एवं संचय 5 लाख से अधिक होने की आवश्यकता नहीं है)।	1 लाख
2. भारत से बाहर समामेलित बैंक	
(i) यदि मुम्बई अथवा कोलकाता शहर में इनका कोई व्यापारिक कार्यालय नहीं हो।	15 लाख
(ii) यदि मुम्बई या कोलकाता अथवा दोनों जगह इनका व्यापारिक कार्यालय हो।	20 लाख

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

बैंक के चिट्ठे में पूंजी को दायित्व पक्ष पर दिखाया गया है। अन्य कम्पनियों के समना बैंक को भी पूंजी को विभिन्न शीर्षकों यथा अधिकृत, प्रार्थित एवं प्रदत पूंजी के रूप में दिखाया जाता हैं।

(ii) **अधिकृत, प्रार्थित एवं प्रदत पूंजी के अनुपात** (Ratio of Authorised, Subsciribed and Paid up Capital) : बैंकिंग विनियमन अधिनियम की धारा 12 (1) के अनुसार बैंक की प्रार्थित पूंजी (Subscribed Capital) उसकी अधिकृत पूंजी (Authorised Capital) के 50 प्रतिशत से कम नहीं हो सकती। यदि भविष्य में बैंक की अधिकृत पूंजी में वृद्धि की जाती है तो रिजर्व बैंक द्वारा निर्धारित अवधि में प्रार्थित पूंजी एवं प्रदत पूंजी में आवश्यक वृद्धि करनी होगी। यह अवधि अधिक से अधिक 2 वर्ष हो सकती है।

(iii) **वैधानिक कोष** (Statutory Reserve) : बैंकिंग विनियमन अधिनियम की धारा 17 (i) के अनुसार भारत में समामेलित प्रत्येक बैंकिंग कम्पनी के लिए वैधानिक कोष की स्थापना आवश्यक है। इस धारा के अनुसार प्रत्येक कम्पनी को लाभांश घोषणा से पूर्व लाभों का कम से कम 20 प्रतिशत इस कोष में स्थानांतरित करना आवश्यक है। इस कोष को चिट्ठे में अन्य कोषों से भिन्न दिखाना चाहिए। रिजर्व बैंक किसी भी बैंकिंग कम्पनी को इस प्रावधान से छूट दे सकता है। यदि कोई बैंकिंग कम्पनी संचय कोष अथवा प्रतिभूति प्रीमियम खाते से कोई नियोजन करती है तो उसको 21 दिन के भीतर इस प्रकार के किये गये नियोजन के कारणों (Causes) की रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया को रिपोर्ट करनी होती हैं।

मांग तथा समय दायित्व (Demand and Time Liability) :

मांग तथा समय दायित्व से तात्पर्य बैंक के ऐसे दायित्व से है जो मांग करने पर (On demand) अथवा एक समय में भुगतान योग्य हो। सामान्यतः ग्राहकों के द्वारा खुलवाए गये प्रत्येक बैंक खाते में जमा धन इस श्रेणी में आते हैं। इसमें बचत खाता, आवर्ती जमा खाता, स्थायी जमा खाता एवं चालू खाता सम्मिलित है। सामन्यतः बैंक में इन सभी खातों का जमा शेष होता है किन्तु चालू खाते में नाम शेष (Overdraft) हो कसता है। ऐसी परिस्थिति में मांग एवं समय दायित्व में केवल क्रेडिट शेष ही लेना है, डेबिट शेष का समायोजन नहीं किया जाएगा। डेबिट शेष को चिट्ठे में सम्पति की तरफ अलग से दिखाया जाता है। इस दायित्व से सम्बन्धित दो प्रावधान है – रोकड़ संचय एवं तरल अनुपात, जिनकी पालना प्रत्येक बैंक को करनी होती हैं।

रोकड़ संचय (Cash Reserve) : प्रत्येक बैंक (ग्रामीण बैंक को छोड़कर) को अपनी मांग एवं समय दायित्व का एक निश्चित प्रतिशत राशि भारतीय रिजर्व बैंक के पास खुले चालू खाते में जमा करानी होगी, इस जमा राशि को ही रोकड़ संचय कहते हैं। रोकड़ संचय की गणना प्रत्येक बैंक अपनी मांग एवं समय दायित्व (Demand and Time liability) का एक निश्चित प्रतिशत (जैसा भारतीय रिजर्व बैंक घोषित करें) के आधार पर की जाएगी।

एक गैर–अनुसूचित बैंक (Non-scheduled Bank) को अपने मांग एवं दायित्व के 3 प्रतिशत के बराबर राशि भारतीय रिजर्व बैंक के पास जमा करानी होती है व इस बात की सूचना मय मांग एवं समय दायित्व की सूची के साथ प्रत्येक माह की 20 तारीख से पूर्व आए शुक्रवार को भारतीय रिजर्व बैंक को प्रेषित करनी होगी।

वैधानिक तरलता अनुपात (Statutory Liquidity Ratio) : प्रत्येक बैंक को अपने पास अपनी मांग एवं समय दायित्व के अन्तर्गत (बैंक दायित्व को छोड़कर) 20 प्रतिशत से 40 प्रतिशत के मध्य (भारतीय रिजर्व बैंक की घोषणानुसार) राशि तरल सम्पति के रूप में बनाए रखनी चाहिए। तरल सम्पति से तात्पर्य ऐसी सम्पति से है, जिसकी नगद में तुरन्त परिवर्तन हो सके। सामान्यतः बैंक हस्तस्थ रोकड़ (Cash in hand), अन्य बैंकों के पास (भारतीय रिजर्व बैंक के पास रोकड़ संचय को छोड़कर) जमा धन जो मॉगते ही मिल जाए या अल्प अवधि में मिल जाए (Money at call and short notice), चालू विनियोग, स्वर्ण–आभूषण–बहुमूल्य मान धातुओं में विनियोजन आदि सम्मिलित होते हैं। रिजर्व को इसे 40 प्रतिशत तक बढ़ाने का अधिकार हैं।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

बिलों का बट्टाकरण करना (Discounting of Bills) : प्रत्येक बैंक अपने ग्राहकों के बिलों को बट्टे पर भुनाने का कार्य भी करते हैं। इस कार्य के लिए बैंक उस बिल की अवधि के लिए ब्याज वसूलती है व ऐसे ब्याज की वसूली गयी राशि को बट्टा कहा जाता है। ग्राहक के बिल बैंक प्राप्त करती है तथा उसे एक विशिष्ट खाते "Bills Discounted and Purchesed a/c" को डेबिट किया जाता है व परिपक्वता तिथि पर इस खाते को क्रेडिट कर दिया जाता है। यदि परिपक्वता तिथि गत वर्ष की समाप्ति के पश्चात् आती है तो इस खाते का डेबिट शेष होगा व चिट्ठे में 'अग्रिम' के साथ दिखाया जाता है। ऐसे बिलों पर जो बट्टा प्राप्त किया गया है, उसमें से परिपक्वता तिथि का बट्टा अग्रिम माना जाता है व इस अग्रिम प्राप्त बट्टे की राशि से घटाने के स्थान पर लाभ–हानि खाते से इसका प्रावधान किया जाएगा। ऐसा प्रावधान अगले वर्ष की आय मान कर बट्टे की राशि में जोड़ दिया जाएगा। संक्षेप में निम्न प्रविष्टियां होगी :

(1) On Discounging of Bill

Bills Discounted & Purchased a/c   Dr.

To Customer's Personal a/c

To Discount on Bills a/c

(Being bills discounted)

(2) On Maturity of Bill :

(a) If payment received :

Cash a/c   Dr.

To Bills Discounted & Purchased a/c

(b) If bill is dishonored :

Customer's Personal a/c   Dr. (By full value of bill)

To Bills Discounted & Purchased a/c

भुनाये गये बिलों पर रिबेट (Rebate on Bills Discounted) :

जब बैंक किसी विनिमय पत्र/बिल को भुनाता है तो कमायी गयी सारी छुट (Discount) की राशि को छूट (Discount) खाते में क्रेडिट कर लेता है जैसा कि ऊपर बताया गया है लेकिन ऐस भुनाये गये कुल बिल वर्ष की समाप्ति तक भुगतान हेतु परिपक्व (Matured) नहीं होते। वस्तुतः ऐसे बिलों के सम्बन्ध में छूट (Discount) की राशि वर्ष के दौरान कमाई हुई नहीं मानी जा सकती। इस तरह से ''न वसूल हुई छूट'' (Unexpired Discount) को निम्न प्रविष्टि कर आगे ले जाया जाता है –

(3) For Closing Balnce of Rebate on Bill Discounted :

Discount on Bills a/c   Dr.

To Rebate on Bills Discounted A/c

(4) For Transfer of Discount A/c to P. & L. A/c

Discount on Bills a/c   Dr.

To P. & L. a/c

(5) For Opening Balance of Rebate on Bill Discounted :

Rebate on Bills Discounted a/c   Dr.

To Discount on Bills a/c

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

उदाहरण – 1

The following is an extract from the Trial Balance of Royal Bank Ltd. as at 31st March, 2007 : 31 मार्च, 2007 को रॉयल बैंक लिमिटेड के तलपट से अग्रलिखित अंश लिया गया है :

	Dr. Rs.	Cr. Rs.
Bills Discounted	31,28,000	
Rebate on bills discount.		
As on 1.4.2006		70,160
Discounts Received		3,77,080

An analysis of the bills discounted shows as follows :

Amount (Rs.)	2,80,000	8,72,000	5,64,000	8,12,000	6,00,000
Due Date (2007)	5 June	12 June	25 June	5 July	9 July

How much amount of discount to be credited to Profit and Loss Account for the year ending 31st March, 2007 and pass appropriate Journal entries for the same. The rate of discount may be takent at 10 per cent per annum.

31 मार्च, 2007 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए लाभ–हानि खातें में बट्टे की कितनी रकम क्रेडिट की जायेगी तथा उसके लिए आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां दीजिए। बट्टे की दर 10 प्रतिशत वार्षिक ली जावे।

Solution :

सर्वप्रथम हमें 31 मार्च, 2007 को भुनाये हुए बिलों पर बट्टे की राशि ज्ञात करनी होगी जिसकी अवधि उस तिथि तक समाप्त नहीं हुई है। यह गणना निम्न तालिका द्वारा ज्ञात की जायेगी :

	रू.
2,80,000 रू. पर 66 दिन का 10 प्रतिशत से बट्टा 28,000 x 66 / 365	5,063
8,72,000 रू. पर 73 दिन का 10 प्रतिशत से बट्टा 87,200 x 73 / 365	17,440
5,64,000 रू. पर 86 दिन का 10 प्रतिशत से बट्टा 56,400 x 86 / 365	13,289
8,12,000 रू. पर 96 दिन का 10 प्रतिशत से बट्टा 81,200 x 96 / 365	21,357
6,00,000 रू. पर 100 दिन का 10 प्रतिशत से बट्टा 60,000 x 100 / 365	16,438
योग	73,587

Dr. Discount on Bills Account Cr.

Date	Particulars	Amount Rs.	Date	Particulars	Amount Rs.
31.3.2007	To Rebate on bills discount.	73,587	1.4.2006	By Rebate on Bills Dis.	70,160
31.3.2007	To Profit & Loss a/c (Balancing figure)	3,73,653	31.3.2007	By Bills Dicount and Purchased	3,77,080
		4,47,240			4,47,240

Dr. Rebate on Bills Discounted Account Cr.

Date	Particulars	Amount Rs.	Date	Particulars	Amount Rs.
31.3.2007	To Discount a/c	73,587	1.4.2006	By Balance b/d	70,160
31.3.2007	To Balance c/d	73,587	31.3.2007	By Discount on Bills a/c	73,587
		4,47,240			4,47,240

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Journal of Royal Bank Ltd.

Date	Particulars	L.F	Amount	
			Debit (Rs,)	Credit (Rs)
2006 April 1	Rebate on Bills Discounted a/c Dr. To Discount on Bills a/c (Transfer of opening balance)		70,160	70,160
2007 Mar. 31	Discount on Bills a/c Dr. To P. & L. a/c (Being discount on Bills a/c transferred.)		3,73,653	3,73,653
Mar. 31	Discount on Bills a/c Dr. To Rebate on Bills Discount a/c (Being unexpired discount at year end adjusted.)		73,587	73,587

उदाहरण – 2

The following balances are extracted from the trial balance of Indian bank as on 31st march, 2007:

31, मार्च, 2007 को इण्डियन बैंक के तलपट से लिये गये शेष निम्न प्रकार हैं :

	Rs.
Interest and discount (credit)	42,45,735
Rebate on bills discounted)	35,885
Bills discounted and purchased (debit) (maturity date 30-6-2007)	5,00,000

It is ascertained that the proportionate discount not earned related to bill of which maturity date will come on 30-6-2007 amount to Rs. 35,745. prepare ledger accounts.

यह पाया गया कि जो बिल 30–12–2007 को परिपक्व होगा, से सम्बन्धित बटे की आनुपातिक राशि, जो अभी तक कमायी नहीं है, 35,745 रु. है। आवश्यक खाते बनाइऐ ।

Solution

Dr. Discount on Bills Account Cr.

Date	Particulars	Amount Rs.	Date	Particulars	Amount Rs.
31.3.2007	To Rebate on bills discount.	35,735	2006 & 2007	By Rebate on Bills Dis.	35,845
31.3.2007	To Profit & Loss a/c	42,45,835		By Bills Dicount and Purchased	42,45,735
		42,81,580			42,81,580

Dr. Rebate on Bills Discounted Account Cr.

Date	Particulars	Amount Rs.	Date	Particulars	Amount Rs.
31.3.2007	To Discount a/c	35,845	1.4.2006	By Balance b/d	35,845
31.3.2007	To Balance c/d	35,745	31.3.2007	By Discount on Bills a/c	35,745
		71,590			71,590

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

विनियोग (Investments) :

रिजर्व बैंक द्वारा दिनांक 30 सितम्बर, 2000 को विनियोगों के वर्गीकरण एवं मूल्यांकन हेतु नवीन मार्गदर्शन (Guidelines) जारी किये गये है। इन मार्गदर्शन के अनुसार बैंको को अपने सम्पूर्ण निवेश (Total Investment) को निम्न तीन श्रेणियों में वर्गीकृत करना होता है –

परिपक्वता तक धारित (Held to maturity)	विक्रय हेतु उपलब्ध (Availabel for Sale)	क्रय–विक्रय हेतु धारित (Held for Trading)

परिपक्वता तक धारित (held to maturity) के अन्तर्गत वे सभी प्रतिभूतियां आती हैं जिन्हें परिपक्वता की अवधि तक रखा जाता है। अल्पकालीन मूल्य/ब्याज दर उच्चावचनों के लाभ उठाने के उद्देश्य से रखी गयी प्रतिभूतियों को क्रय–विक्रय हेतु धारित (Held for Trading) की श्रेणी मे रखा जाता है। ऐसी प्रतिभूतियां जो उपरोक्त दोनों श्रेणियों में नही आती उनको विक्रय हेतु उपलब्ध (Acquisition Cost) पर दिखाया जाना चाहिए। दूसरी ओर क्रय–विक्रय हेतु धारित (Held for Trading) प्रतिभूतियों को तथा विक्रय हेतु उपलब्ध प्रतिभूतियों को सामान्यतः मासिक तोर पर पुनः मूल्यांकित किया जाना चाहिए ताकि इन्हे बाजार के प्रति अंकित (marked-to-market) मूल्य पर दिखाया जा सके।

उल्लेखनीय है कि उपरोक्त वर्गीकरण केवल विनियोगों के मूल्यांकन के उद्देश्य हेतु है जो कि रिजर्व बैंक के मार्गदर्शन (Guidelines) पर आधारित है। विनियोगों को बैंकिंग नियमन अधिनियम, 1949 की तृतीय अनुसूची के अनुसार चिट्ठे में निम्न श्रेणियों में रखकर प्रदर्शित (Disclose) किया जाता है –

Investment in India		Investment outside India	
(i)	Government Securities	(i)	Government Securities
(ii)	Other Approved Securites	(ii)	Subsidiaries and/or joint ventures abroad
(iii)	Shares	(iii)	Others
(iv)	Debentures and Bonds		
(v)	Investment in Subsidiaries/Joint Ventures		
(vi)	Others		

अग्रिम (Advances) :

बैंक के चिट्ठे में पुस्तक ऋणों (Book Debts) की राशि सबसे महत्वपूर्ण होती है। इसी राशि को अग्रिम (Advances) कहा जाता है। इनमें निम्नलिखित मदें सम्मिलित होती हैं :

(a) कटौती पर लिये हुए अथवा क्रय किये हुए बिल (Bills discounted and purchased);
(b) नगद साख के अन्तर्गत ऋण (Cash credit) व अधिविकर्ष (Overdraft); तथा
(c) अवधि ऋण (Term Loan)।

चिट्ठे में अग्रिम (Advances) से सम्बन्धित राशि का विवरण अनुसूची 9 में दिया जाता है।

अग्रिम का वर्गीकरण (Classification of Advances) :

जहां ऋण है वहां डूबत भी अवश्य होती है। ऋण और डूबत का चोली–दामन का साथ है, फिर चाहे वह सरकारी ण हो अथवा बैंक ऋण हो या अन्य किसी प्रकार का ऋण हो। बैंकों के लिए यह आवश्यक है कि वे अपने ऋणों के सम्बन्ध में पर्याप्त आयोजन करें। आयोजन के दृष्टिकोण से ऋणों को निम्नलिखित वर्गों में विभक्त किया जाता है –

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(a) मानक सम्पतियां (Standard Assets) : मानक सम्पतियां वे सम्पतिया होती हैं जिनके सम्बन्ध में व्यवसाय की सामान्य जोखिमों से अधिक जोखिम नहीं होती। लेकिन गैर–निष्पादित सम्पतियों (Non-Performing Assets of NPA) को इसमें सम्मिलित नहीं किया जाता है। इन सम्पतियों के सम्बन्ध में 0.25 प्रतिशत के बराबर सामान्य आयोजन का निर्माण करना आवश्यक है।

(b) उपमानक सम्पतियां (Sub-standard Assets) : उपमानक सम्पतियां ऐसी सम्पतियां होती हैं जिन्हें 18 माह या इससे कम समय से गौर–निष्पादित सम्पतियों के रूप में वर्गीकृत किया जाता रहा है। इसके सम्बन्ध में बैंक को उपलब्ध प्रतिभूति अपर्याप्त होती है और बैंक को हानि होने की सम्भावना रहती है। इन सम्पतियों की कुल राशि के 10 प्रतिशत के बराबर आयोजन निर्माण करना आवश्यक है।

(c) संदिग्ध सम्पतियां : संदिग्ध सम्पतियां उन्हें कहते हैं जो 18 माह से अधिक समय से गैर–निष्पादित सम्पतियों में वर्गीकृत की जाती रही हैं। इन सम्पतियों के सम्बन्ध में बैंक को काफी नुकसान होने की प्रबल सम्भावना रहती है। इन सम्पतियों से सम्बन्धित हानि के लिए आयोजन का निर्माण करते समय इनको निम्नलिखित दो भागों में विभक्त किया जावेगा : **सुरक्षित भाग** (Secured Portion) तथा **असुरक्षित भाग** (Unsecured Portion)।

असुरक्षित भाग के लिए शत–प्रतिशत आयोजन करना अनिवार्य है। इसके अतिरिक्त सुरक्षित भाग के लिए भी निम्न प्रकार से आयोजन का निर्माण किया जाना चाहिए :

जिस अवधि से सम्पत्ति को संदिग्ध माना जाता रहा है	सुरक्षित भाग का प्रतिशत जितना आयोजन किया जाना चाहिए
एक वर्ष तक	20%
एक से तीन वर्ष तक	30%
तीन वर्ष से अधिक	50%

(d) हानि सम्पत्तियां (Loss Assets) : हानि सम्पतियां वे होती हैं जिनके सम्बन्ध में बैंक अथवा आन्तरिक अंकेक्षकों अथवा रिजर्व बैंक के निरीक्षकों ने हानि को पहचान लिया हो लेकिन राशि को पूर्ण रूप से या आंशिक रूप से अपलिखित नहीं किया गया हो। ऐसी सम्पतियों को अपलिखित कर दिया जाना चाहिए।

उदाहरण – 3

you are given the following information taken from the books of a bank:

आपको एक बैंक की पुस्तकों से ली हुई निम्नलिखित सूचना दी जाती है।

		('000 omitted)
(a) standard assets		3200
(b) sub-standard assets		260
(c) doubtful assets but secured	up to one year	140
	One to three years	80
	More than three years	40
(d) loss assets		100

Ascertain the amount of provision required to be made by the bank
उस आयोजन की राशि ज्ञात कीजिए जो बैंक द्वारा किया जाना आवश्यक है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Solution: Statement showing the amount of provision

Assets	Amount ('000) omitted)	Required provision in percentage	Amount of provision ('000 omitted)
Standard assets	3200	0.25	8
Sub-standard assets	260	10	26
Doubtful assets;			
Upto one year	140	20	28
One to three years	80	30	24
More than three years	40	50	20
Loss assets	100	100	100
			206

हानि प्रावधान की राशि यदि ऋण ECGC/DICGC द्वारा गारण्टी युक्त हो (proviosion for loss if advance is guranteed by export credit & guarantee corporation or DICGC):

यदि बैंक ने किसी ग्राहक को कोई अग्रिम दिया है व इस अग्रिम हेतु ECGC (Export Credit & Guarantee Corporation) या DICGC द्वारा गारन्टी प्रदान की है तो अग्रिम पर प्रावधान हेतु भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा अपने परिपत्र दिनांक 3–4–1995 (Circular no. B.P. BC. 36/12.04.048/95) के परिपत्र के अनुसार 1995–96 से ऋण की राशि में से ग्राहक द्वारा दी गयी प्रतिभूति को बाजार मूल्य पर घटाया जाएगा ।

रिजर्व बैंक द्वारा जारी दिशा निर्देश के अनुसार ECGC/DICGC गारण्टीशुदा अग्रिमों के सम्बंध में डुबत ऋण हेतु प्रावधान की राशि की गणना को अग्र उदाहरण द्वारा समझाया जा सकता है –

मान लीजिए DECGC कवर 50% निर्धारीत है। एक अवधिगत ऋण खाते के सम्बंध में निम्न विवरण हैं–

(अ) अदत राशि (outstanding amount)	40 लाख रु.
(ब) प्रतिभूति का बाजार मूल्य (realisable balue of security)	15 लाख रु.
(स) DICGC कवर	50%

(द) खाते को दो वर्षो के लिए संदिग्ध ऋण के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। खाते के सम्बन्ध में किए जाने वाले प्रावधान की राशि की गणना निम्न प्रकार की जाएगी –

हल–	रूपये (लाख में)
अदत राशि (outstanding amount)	40.00
घटाईये : प्रतिभूति का बाजार मूल्य	15.00
असुरक्षित राशि	25.00
सुरक्षित राशि के संबंध में प्रावधान (15 लाख रु. का 30%)	4.50
असुरक्षित राशि के संबंध में प्रावधान (100%)	25.00
	29.50

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

घटाइये : DICGC कवर (50%)	14.75
अपेक्षित प्रावधान (provision required)	14.75

महत्वपूर्ण टिप्पणी : मान लीजीए उपरोक्त उदाहरण में DICGC कवर 50% को 10 लाख रु. तक सीमित किया गया है तो ऐसी दशा में बनाये जाने वाले प्रावधान की राशि निम्न प्रकार निकाली जाएगी–

DICGC कवर के बिना अपेक्षित प्रावधान (उपरोक्त)	29.00
घटाइये : DICGC कवर	10.00
अपेक्षित प्रावधान (provision required)	19.50

उदाहरण – 4

Shri ram bank ltd. Gives you the following informations for the year 2006-2007

श्री राम बैंक लिमिटेड की वर्ष 2006 & 07 की सूचना निम्नलिखित हैं

Export credit given	Rs. 70 lakhs
ECGC Cover	40%
Securities held	Rs. 8 lakhs (realisable value Rs.12 lakhs)
Period for which the adcance has remained doubtful	More than 3 years.

You are asked to compute the provision required on the above advances.

आपको उपरोक्त अग्रिम पर आयोजन की गणना करनी हैं।

solution:

	Rs. (in lakhs)
Amount outstanding	70.00
Less: realisable value of securities held	12.00
Unsercured amount	58.00
Provision required :	
Provision for unsecured portion (100%)	58.00
Provision for secured portion (50%)	6.00
	64.00

उदाहरण – 5

Bhavana united bank ltd. Gives the following information for the year 2006-07:

भावना युनाइटेड लिमिटेड की वर्ष 2006–07 की सूचना निम्नलिखित है :

Term loan	Rs. 140 lakhs
DICGC cover	50%(maximum limit Rs.25 lakhs)
Securities held	Rs. 30 lakhs (relisable value Rs. 35 lakh.
Period for which the loan has remained doubtful	More than 3 years

You are asked to compute the provisions required on the above advances.

आपको उपरोक्त अग्रिम पर आयोजन की गणना करनी है ।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

solution:

	Rs. (in lakhs)
Amount outstanding	140
Less: realisable value of securities	35
Unsecured amount	105
Provision required:	
Provision for unsecured portion (100%)	105
Provision for secured portion (50%)	17.5
	122.5
Less: DECGC Cover (50%limited to Rs. 25 lakhs)	25
Total provision	97.5

गैर–निष्पादित सम्पतियां (Non-performing Assets) :

एक बैंक के अग्रिमों को निष्पादित सम्पतियों तथा गैर–निष्पादित सम्पतियों (NPA) के रूप में बांटा जाना होता है। अन्तर्राष्ट्रीय व्यवहार है कि ब्याज की आय को जो गैर–निष्पादित सम्पतियों पर होती है, उपार्जन आधार पर न मानी जाये वरन् ऐसी आय को तब लिया जाये जब यह वास्तव में प्राप्त की जाये।

एक सम्पति गैर–निष्पादित बन जाती है जब उससे आय एक निर्दिष्ट अवधि के लिए बैंक द्वारा प्राप्त न की जाये। भारतीय रिजर्व बैंक ने निष्पादित तथा गैर निष्पादित सम्पतियों के बीच अग्रिमों के वर्गीकरण के बारे में बैंकों को मार्गदर्शक सिद्धान्त जारी किये हैं।

(अ) अवधि ऋण (Term Loans) : अवधि ऋण से आशय ऐसे ऋणों से है जो स्थायी सम्पतियों को क्रय करने के लिए दीर्घकालीन समय अवधि के लिए दिये गये हैं। अवधि ऋण को गैर–निष्पादित सम्पतियों के रूप में वर्गीकृत तब किया जाता है जब उन पर ब्याज अथवा किश्त 90 दिन से अधिक अवधि के लिए अतिदेय हो चुके हैं।

(ब) नकद साख एवं अधिविकर्ष (Cash Credit & Overdrft) : नकद साख एवं अधिविकर्ष को गैर–निष्पादित सम्पति तब माना जाएगा जब यह 90 दिन से अधिक के लिए बाहर (Out of order) रहे हैं। एक खाते को निम्न दशा में आदेश के बाहर (Out of order) माना जाता है –

1. जब खाते का शेष निरन्तर रूप से स्वीकृत सीमा (Samction Limit) के अन्तर्गत हो, लेकिन –
2. जब खाते का शेष तो स्वीकृत सीमा (Sanction Limit) के अन्तर्गत हो, लेकिन –

(i) चिट्ठे की तिथि के पूर्व छः माह से खाते में जमा (Credit) नहीं आ रही हो, अथवा

(ii) खाते में जमाएं (Credits) तो आ रही हों लेकिन यह जमा डेबिट किए गए ब्याज से कम हो।

(स) खरीदे गए और भुनाए गए बिल (Bills purchased and discounted) : खरीदे गए और भुनाए गए बिल को गैर–निष्पादित सम्पति तब माना जाएगा जब बिल 90 दिन से अधिक अवधि के लिए अति देय (Overdue) हो।

(द) अन्य खाते (Other Accounts) : अन्य किसी साख सुविध को गैर–निष्पादित सम्पति तब माना जाएगा जब ब्याज अथवा किश्त 90 दिन से अधिक के लिए अति देय हो।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(य) कृषि सम्बन्धी अग्रिम (Agricultural Advance) : कृषि सम्बन्धी अग्रिम को गैर–निष्पादित सम्पति तब माना जाएग जब ब्याज अथवा मूल धन की किश्त, अभी के दो फसल की अवधि परन्तु दो अर्द्धवार्षिक अवधि से अधिक न हों, से बकाया है।

आय मापन सिद्धान्त (Income Recognition Concept) :

31.03.91 के पश्चात् आय को ' आय की तरह मानने के सिद्धान्त' में परिवर्तन किया गया है। निष्पादित सम्पतियों पर ब्याज को उस दिन आय मान लिया जाता है जब यह देय (due) हो गयी है, जबकि गैर–निष्पादित सम्पतियों पर ब्याज उस दिन आय मानी जाएगी जब इसे वास्तविकता में प्राप्त कर लिया हो।

Note : यह आय–मापन सिद्धान्त केवल अग्रिम केवल अग्रिम (Advance, Loan, BOD एंव Cash Credit) पर ही लागू होता है। अन्य समस्त आय उस दिन आय मानी जाती है जब यह देय होती है। अर्थात् AS-9 के अनुसार ही लेखांकन होगा।

उदाहरण – 6

Given below interest and advances of a commercial Bank (Rs.in lakhs):

एक वाणिज्यिक बैंक के ब्याज तथा अग्रिम निम्न प्रकार है :

Particulars	Performing assets		NPA	
	Interest Earned	Interest received	Interest earned	Interest received
Term loans	120	80	75	5
Cash credits and overdrafts	750	620	150	12
Bills purchased and discounted	150	150	100	20

Calculate the amount of interest to be credited to profit and loss account .

लाभ–हानि खाते में क्रेडिट किए जाने वाले ब्याज की गणना कीजिए।

Solution:

interest on performing assets should be recognised on accrual basis, but interest on NPA should be recognised on cash basis:

			Rs. (in lakhs)
Interest on term loan:	(120+5)	=	125
Interest on cash credits and overdrafts	(750+12)	=	762
Income from bills purchased and discounted	(150+20)	=	170
	Total		1057

संग्रह के लिए आये बिल (Bills for collection)

यह मद चिट्ठे में 'संदिग्ध दायित्वों' के नीचे दिखाई जाती है। बैंक के पास संग्रह के लिए जो बिल आते है, वे दो प्रकार के हो सकते हैं :

(अ) संग्रह के लिए आन्तरिक बिल (Inward Bills for Collection); तथा

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(ब) संग्रह के लिए बाह्य (Outward Bills for Collection)।

(अ) आन्तरिक बिल : बहुधा माल के विक्रेतागण क्रेताओं को माल की बिल्टी, बीजक इत्यादि बैंक के जरिये भेजते हैं तथा बैंक से प्रार्थना करते हैं ि कवह बीजक की रकम लेकर क्रेताओं को माल की सुपुर्दगी दे दे। बैंक इन बिलों पर क्रम संख्या डाल देता है और इनके विवरण संग्रह के लिए आन्तरिक बिलों के रजिस्टर (I.B.C. Resgister) में दर्ज कर लेता है। उन्हें तब तक किसी खातें में दर्ज नहीं किया जाता जब तक कि उनकी रकम वास्तव में प्राप्त न हो जावे। संग्रह होने पर रोकड़ खाते में डेबिट तथा बिल भेजने वाले व कमीशन खाते को क्रेडिट किया जाता है। संग्रह होने के बाद बिल की राशि तुरन्त भेज दी जाती है। उस समय बिल भेजने वाले के खाते को डेबिट कर रोकडत्र खाते को क्रेडिट कर दिया जाता है। चिट्ठे की तिथि पर कुछ बिल ऐसे हो सकते हैं, जो कि बैंकिंग कम्पनी के पास हों किनतु जिनका संग्रह अीी तक न हुआ हो। ऐसे बिलों की सूचना, संग्रह के लिए 'आन्तरिक बिल रजिस्टर' से मिल जावेगी। इन बिलों को चिट्ठे के दोनों पक्षों में दिखाया जाता है। ये बैंकिंग कम्पनी की सम्पति इसलिए है कि कालान्तर में बैंक को भुगतान प्राप्त हो जायेगा ओर दायित्व इसलिए है कि बैंक उसका हिसाब चुकाने के लिए बिल भेजने वालों के प्रति दायी हैं।

(ब) बाह्य बिल : बैंकिंग कम्पनी के ग्राहक अपने बाहर के चैकों, ड्राफ्टों, हुंडियों व बिलों को बैंक के पास संग्रह के लिए जमा कराते रहते हैं। बैंक इनको संग्रह के लिए बाह्य बिल रजिस्टर (O.B.C. Register) में दर्ज करके इनका रूपया शीघ्र संग्रह करने की कोशिश करता है। परन्तु बाहर से पत्र–व्यवहार करने में कुछ समय तो लग ही जाता है। अतः चिट्ठे की तिथि को ऐसे बैंक, ड्राफ्ट, हुंड़ी या बिल जिनका रूपया संग्रह नहीं हुआ है, बैंक के पास 'संग्रह के लिए बाह्य बिल' कहलायेंगे। इन बिलों को भी चिट्ठे के दोनों पक्षों में दिखाया जाता है क्योंकि ये बैंको की सम्पति भी है और दायित्व भी।

चिट्ठे में बिलों की राशि को संदिग्ध दायित्वों के पश्चात् दिखाया जाता हैं।

स्वीकृतियां, बेचान तथा अन्य दायित्व (Acceptances, Endorsements and Other Obligations) :

बैंकिंग कम्पनी की एक सेवा यह भी है कि वह अपने ग्राहकों की तरफ से बिलों या हुण्डियों को स्वीकार करती है अथवा उनका बेचान करती है। उदाहरणार्थ, एक्स ने वाई को 2,000 रू. का माल बेचा जिसके लिए एक्स चाहता है कि उसके द्वारा लिखा गया बिल वाई द्वारा नहीं बल्कि उसके बैंक द्वारा स्वीकृत होना चाहिए। यदि वाई का बैंक उसकी तरफ से उक्त बिल को स्वीकार कर लेता है तो बैंक का दायित्व उत्पन्न हो जाता है। दूसरी तरफ चूंकि बैंक ने वाई की तरफ से उक्त बिल को स्वीकार किया है, अतः बैंक को वाई से उतना रूपया लेना है, अतः यह बैंक की सम्पति भी हो गई। चिट्ठे के दिन इसी प्रकार की बकाया स्वीकृतियां या बेचान के योग को बैंकिंग कम्पनी के चिट्ठे में संदिग्ध दायित्व के रूप में दिखाया जाता हैं।

बैंकिंग कम्पनी के अन्य दायित्वों (Other Obligations) से आशय बैंक द्वारा निर्गमित साख–पत्रों (Letters of Credit) तथा उसके द्वारा दी गई गारन्टी से लगाया जाता है। चिट्ठे की तिथि को यदि ये भुगतान भी बकाया हैं तो इनके योग को भी चिट्ठे में संदिग्ध दायित्व के रूप में दिखाया जाता हैं।

लाभांशों पर प्रतिबन्ध (Restrictions on Dividends) :

बैंकिंग कम्पनी नियमन अधिनियम की धारा 15 के अन्तर्गत एक बैंक तब तक लाभांश नहीं दे सकता जब तक कि उसके समस्त पूंजीगत खर्चे अपलिखित नहीं हो जाते। पूंजीगत खर्चो के उदाहरण हैं : प्रारम्भिक व्यय, संगठन व्यय, अंश बेचने पर दलाली व कमीशन आदि। यदि कम्पनी को हानियां हुई हैं अथवा ऐसे व्यय हैं जो मूर्त सम्पतियों द्वारा प्रतिनिधित्व नहीं हैं तो उन्हें भी लाभांश चुकाने से पूर्व अपलिखित करना आवश्यक है। इसके निम्नलिखित अपवाद हैं :

(a) चल विनियोगों के अतिरिक्त अन्य मान्यता प्राप्त विनियोगों के मूलय में कमी को अपलिखित करना आवश्यक नहीं हैं जब तक कि ऐसी कमी वास्तव में हानि न हो चुकी हो अथवा उस हानि का पूंजीकरण नहीं कर लिया गया हो;

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(b) मान्यता प्राप्त प्रतिभूतियों के अतिरिक्त अंशों, ऋणपत्रों या बॉण्डों के मूल्य में कमी को उस स्थिति में अपलिखित करना आवश्यक नहीं है जबकि इस कमी के सम्बन्ध में पर्याप्त आयोजन कर लिया गया है और अंकेक्षक इससे संतुष्ट है;

(c) ऐसा डूबत ऋण अपलिखित करना आवश्यक नहीं है जिसके लिए पर्याप्त आयोजन कर लिया गया है तथा अंकेक्षक इससे सन्तुष्ट है।

शाखा सम्बन्धी समायोजन (Branch Adjustments)

एक बैंकिंग कम्पनी की प्रायः अनेक शाखाएं हुआ करती हैं जो कि भिन्न–भिन्न शहरों में बैंकिंग कार्य चलाती हैं। व्यापारिक गतिविधि में प्रधान कार्यालय व शाखाओं के बीच तथा शाखाओं में परस्पर अनेक सौदे हुआ करत हैं, जैस मांग ड्राफ्ट (Demand Draft), साख पत्र (Letters of Crdit) इत्यादि निर्गमित करना। ऐसे सौदों की प्रविष्टियां सूचना मिलने पर प्रधान कार्यालय तथा सम्बन्धित शाखा या शाखाओं की पुस्तकों में होती हैं। अपर्याप्त सूचना या सूचना के अभाव में लेखा प्रविष्टियां यातो गलत रकम से हो जाती हैं, अथवा बिलकुल होती ही नही हैं। ऐसी स्थिति में चिट्ठे के दिन प्रधान कार्यालय के लेखों व शाखाओं के लेखों में अनतर पाया जा सकता है। उक्त अनतर का समायोजन करने के लिए प्रधान कार्यालय की पुस्तकों में 'शाखा समायोजन खाता' (Branch Adjustment Account) खोला जाता है। प्रधान कार्यालय की पुस्तकों में कुछ शाखाओं के खातों का समायोजन करने के लिए शाखा समायोजन खाते को डेबिट किया जाता है तथा अनय शाखाओं के खातों का समायोजन करने के लिए उसको क्रेडिट किया जाता है। शाखा समायोजन खाते का डेबिट शेष होने पर चिट्ठे में 'अन्य सम्पतियां' शीर्षक के अन्तर्गत दिखलाया जाता है तथा क्रेडिट शेष होने पर चिट्ठे में ''अन्य दायित्व'' शीर्षक के अन्तर्गत दिखलाया जाता हैं।

वार्षिक खाते का अंकेक्षण
(Annual Accounts and Audit)

बैंकिंग कम्पनी के खाते, वार्षिक खातों तथा अंकेक्षण से सम्बन्धित वैधानिक आवश्यकतायें बैंकिंग विनियमन अधिनियम, 1949 की 29 से 34A धाराओं में दी गई है, जो निम्न प्रकार से हैं :

वार्षिक खाते : प्रत्येक वितीय वर्ष के अनत में भारत में समामेलित प्रत्येक बैंकिंग कम्पनी को भारत में किये गये अपने समस्त व्यापार के सम्बन्ध में वार्षिक खाते तेयार करने पड़ते हैं। वार्षिक खातों में चिट्ठा एवं लाभ हानि खाता तैयार किया जाता है। प्रतयेक वर्ष 30 सितम्बर को भी बैंक की पुस्तकें आन्तरिक नियन्त्रण के लिए बनद की जाती हैं। भारत में समामेलित बैंकिंग कम्पनी की स्थिति में वार्षिक खाते कम से कम तीन संचालकों द्वारा (जहां पर तीन से अधिक संचालक न हो, वहां तमाम संचालकों द्वारा) प्रमाणित तथा हस्ताक्षरित होने चाहिए। भारत से बाहर समामेलित कम्पनी की स्थिति में, भारत में कम्पनी के प्रधान कार्यालय का मैनेजर वार्षिक खातों को प्रमाणित करेगा तथा उन पर हस्ताक्षर करेगा।

वार्षिक खातों का अंकेक्षण : प्रत्येक बैंकिंग कम्पनी का चिट्ठा व लाभ–हानि खाता योग्य अंकेक्षक द्वारा अंकेक्षित होगा। अंकेक्षक की योग्यताएं वहीं होगी जो कि अन्य कमपिनयों की स्थिति में होती हैं। बैंकिंग कम्पनी के अंकेक्षक की नियुक्ति, उसके अधिकार, कर्तव्य तथा दायित्व कम्पनी अधिनियम, 1956 के द्वारा नियन्त्रित होते हैं।

वार्षिक खातों को फाइल करना : प्रत्येक बैंकिंग कम्पनी को अपने अंकेक्षित वार्षिक खातों की तीन प्रतियां अंकेक्षक की रिपोर्ट के सहित रिजर्व बैंक के पास फाइल करनी पड़ती हैं। सम्बन्धित वर्ष की समाप्ति के बाद तीन महीने के भीतर उक्त वार्षिक खाते फाइल कर दिये जाने चाहिए। यह अवधि रिजर्व बैंक द्वारा तीन माह के लिए और बढ़ाई जा सकती है। रिजर्व बैंक को बैंकिंग कम्पनी से अन्य सूचनाऐं एवं स्पष्टीकरण भी मांगने का अधिकार है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

प्रत्येक बैंकिंग कम्पनी को अंकेक्षित वार्षिक खातों की 'तीन प्रतियां' रजिस्ट्रार के पास भी फाइल करनी पड़ती हैं। यदि रिजर्व बैंक द्वारा अन्य अतिरिक्त सूचनायें तथा स्पष्टीकरण मांगे गये हैं तो इनकी एक प्रति रजिस्ट्रार के पास भी फाइल करनी पड़ती हैं। यदि रिजर्व बैंक द्वारा अन्य अतिरिक्त सूचनायें तथा स्पष्टीकरण मांगे गये हैं तो इनकी एक प्रति रजिस्ट्रार के पास भी भेजनी होगी।

वार्षिक खातों का प्रकाशन : प्रत्येक बैंकिंग कम्पनी को लेखा वर्ष के अन्त से छः माह के भीतर अपना चिट्ठा, लाभ–हानि खाता तथा अंकेक्षण की रिपोर्ट किसी समाचार पत्र, जो कि कम्पनी के प्रधान कार्यालय वाले क्षेत्र में प्रचलित हो, में प्रकाशित करवाना होगा।

वार्षिक खातों का आकार एवं मदें
(Form and Contents of Annual Accounts)

एक बैंकिंग कम्पनी का चिट्ठा एवं लाभ–हानि खाता बैंकिंग विनियमन अधिनियम, 1949 के साथ लगी हुई तृतीय अनुसूची में निर्धारित प्रारूप में बनाया जाना चाहिए। जहां तक बैंकिंग विनियमन अधिनियम के आदेशों से विरोध न हो वहां तक कम्पनी अधिनियम, 1956 की धारा 211 के प्रावधान भी बैंकिंग कम्पनियों पर लागू होंगे। तृतीय अनुसूची के अन्तर्गत ''प्रारूप क'' चिट्ठे से सम्बन्ध रखता है और ''प्रारूप ख'' लाभ–हानि खाते से सम्बन्ध रखता हैं।

नया प्रारूप (New Formet) :

31 मार्च, 1991 तक समाप्त हुए लेखा वर्षो के सम्बन्ध में बैंकों पर चिटठे और लाभ–हानि खाते के सम्बन्ध में पुराना प्रारूप लागू होता था। इस प्रारूप के अनुसार चिट्ठा एवं लाभ–हानि खाता क्षेतिज स्वरूप (Horizontal form) में बनाया जाता था। चिट्ठे के बायीं ओर पूंजी तथा दायित्वों को व दाहिनी ओर सम्पतियों को दिखाया जाता था। कुछ मदों को चिट्ठे के दोनों ओर दिखाया जाता था (जैसे : Acceptances, Endorsements and other obligations)। मदों की संख्या भी काफी होती थी। एक सामान्य व्यक्ति के लिए इन सब मदों को समझना मुश्किल होता था। लाभ–हानि खाता भी क्षेतिज स्वरूप में होता था। बायीं ओर खर्चों को तथा दाहिनी ओर आय सम्बन्धी मदों को दिखाया जाता था।

31 मार्च, 1992 को समाप्त हुए लेखा वर्ष से उक्त पुराने प्रारूप को समाप्त कर दिया गया है। अब बैंकिंग कम्पनियों को अपना चिट्ठा व लाभ–हानि खाता नये प्रारूप में तैयार करने पड़ते हैं। नये प्रारूप की विशेषताएं निम्नलिखित हैं :

(i) नये प्रारूप में चिट्ठा तथा लाभ–हानि का खड़ा स्परूप (Vertical Form) दिया गया है। चिट्ठे का स्वरूप ''क'' तथा लाभ–हानि खाते का ''ख'' हैं।

(ii) चिट्ठे में पहले पूंजी तथा दायित्वों सम्बन्धी मदों को पांच शीर्षकों के अन्तर्गत दिखाया जाता है। इसका विस्तृत वर्णन क्रमशः 1 से 5 तक सारणियों में चिट्ठे के साथ नत्थी किया जाता है। पूंजी तथा दायित्वों की पांचों मदो को जोड़ लगा दिया जाता है।

(iii) पूंजी तथा दायित्वों के जोड़ के पश्चात् समपितयों को छः शीर्षकों के अन्तर्गत दिखाया गया है। इनका विस्तृत वर्णन क्रमशः 6 से 11 तक सारणियों में दिया जाता है। सम्पतियों की समस्त छः मदों का जोड़ लगा दिया जाता है।

(iv) सम्पतियों के जोड़ के नीचे संदिग्ध दायित्वों को दिखया जाता है। इनका विस्तृत वर्णन सारणी 12 में दिखाया जाता है।

(v) संदिग्ध दायित्वों के पश्चात् संग्रह के लिए आये बिलों (Bills for collection) की मद को दिखाया जाता है। इस मद के विस्तृत वर्णन के लिए पृथक् से कोई सारणी निर्धारित नहीं की गई है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(vi) उपरोक्त प्रारूप में चिट्ठा देने के पश्चात् उससे सम्बनिधत 12 सारणियां दी जाती हैं।

(vii) समस्त 12 सारणियां देने के पश्चात् ''स्वरूप ख'' के अनुसार लाभ–हानि खाता तेयार किया जाता है।

(viii) लाभ–हानि खाते में आय की मदों को दो शीर्षकों के अन्तर्गत दिया जाता है और इनका विस्तृत वर्णन क्रमशः सारणी 13 और 14 में दिया जाता है। लाभ–हानि खाते में आय की दोनों मदों का जोड़ लगा दिया जाता हैं।

(ix) आय के जोड़ के पश्चात् व्यय की मदों को दो शीर्षकों के अन्तर्गत दिया जाता है जिनका विस्तृत वर्णन क्रमशः सारणी 15 और 16 में दिया जाता हैं।

(x) इसके पश्चात् आयोजन और सम्भाव्यताओं (Provisions and Contingencies) को दिखाया जाता है। इनके विस्तृत विवरण के लिए कोई सारणी तैयार नहीं की जाती है बल्कि इनसे सम्बन्धित सभी मदों को लाभ–हानि खातें में ही दिखा दिया जाता है।

(xi) तत्पश्चात् उपरोक्त (ix) व (x) मदों का जोड़ लगा दिया जाता हैं।

(xii) आय व व्यय की मदों का अनतर लाभ या हानि को प्रकट करेगा। व्यय की मदों के जोड़ के पश्चात् लाभ या हानि (जैसी भी स्थिति हो) की मद लिख दी जावेगी। इसमें पिछले वर्षों के लाभ या हानि को जोड़ा या घटाया जावेगा। इस प्रकार नियोजन के लिए कुछ लाभ उपलब्ध हो जावेगा।

(xiii) उपरोक्त लाभों में से किये गये नियोजनों (Appropriations) को दिखाया जावेगा और फिर चिट्ठे में ले जाये गये शेष को लिखा जावेगा। नियोजनों और इस शेष का जोड़ लगा दिया जावेगा।

(xiv) चिट्ठे व लाभ–हानि खाते तथा सभी सारणियों में चालू वर्ष की मदों के साथ–साथ पिछले वर्ष के भी तत्सम्बन्धी आंकड़े दिये जावेगे।

(xv) चिट्ठे व लाभ–हानि खाते के पश्चात् अनुसूची 17 में लेखों पर टिप्पणियां तथा मुख्य लेखा नीतियां दी जाती हैं। बैंक इनके लिए पृथक्–पृथक् सारणी 17 व सारणी 18 तैयार करते हैं।

चिट्ठा तथा उससे सम्बन्धित सारणियों का प्रारूप
(Format of Balance Sheet and Concerning Schedules)
THE THIRD SCHEDULE
(See Section 29)
Form 'A'
FORM OF BALANCE SHEET
Balance Sheet ….. (here enter name of the banking company)
Balance Sheet as on 31 st March, …… (year)

CAPITAL & LIABILITIES	Schedule No.	As on 31.3…… (Current year)	As on 31.3…… (Previous year)
		Rs.	Rs.
Capital	1		
Reserves & Surplus	2		
Deposits	3		
Borrowings	4		
Other liabilities and provisions	5		
TOTAL			

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

ASSETS			
Cash and balance with Reserve Bank of India	6		
Balances with banks and money at Call and short notice	7		
Investments	8		
Advances	9		
Fixed Assets	10		
Other Assets	11		
TOTAL			
Contingent liabilities	12		
Bills for collection			

SCHEDULE 1 : CAPITAL

	As on 31.3…… (Current year)	As on 31.3…… (Previous year)
	Rs.	Rs.
I. FOR NATIONALISED BANKS		
Capital (Fully owned by Central Government)		
II. FOR BANKS INCORPORATED OUTSIDE INDIA		
Capital		
(i) The amount brought in by banks by way of Start-up capital as prescribed by RBI should be Shown under this head.		
(ii) Amount of deposit kept with the RBI under Section 11(2) of the Banking Regulation Act, 1949.		
TOTAL		
III. FOR OTHER BANKS		
Authorised Capital		
(…… Shares of Rs …… each)		
Issued Capital		
(…… Shares of Rs …… each)		
Subscribed Capital		
(…… Shares of Rs …… each)		
Called-up Capital		
(…… Shares of Rs …… each)		
Less : Calls unpaid		
Add : forfeited shares		
TOTAL		

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

SCHEDULE 2 : RESERVES & SURPLUS

	As on 31.3…… (Current year)	As on 31.3…… (Previous year)
	Rs.	Rs.
I. Statutory Reserves		
Opening Balance		
Additions during the year		
II. Capital Reserves		
Opening Balance		
Additions during the year		
Deductions during the year		
III. Share Premium		
Opening Balance		
Additions during the year		
Deductions during the year		
IV. Revenue and other Reserves		
Opening Balance		
Additions during the year		
Deductions during the year		
V. Balance in Profit and Loss Account		
TOTAL (I, II, III, IV and V)		

SCHEDULE 3 : DEPOSITS

	As on 31.3…… (Current year)	As on 31.3…… (Previous year)
	Rs.	Rs.
A. I. Demand Deposits		
(i) From banks		
(ii) From others		
II. Savings Bank Deposits		
III. Term Deposits		
(i) From banks		
(ii) From others		
TOTAL (I, II, and III)		
B. Demand Deposits		
(i) Deposits of branches in India		
(ii) Deposits of branches outside India		
TOTAL		

SCHEDULE 4 : BORROWINGS

	As on 31.3…… (Current year)	As on 31.3…… (Previous year)
	Rs.	Rs.
I. Borrowings in India		
(i) Reserve Bank of India		
(ii) Other Banks		
(iii) Other Institutions and Agencies		
II. Borrowings outside India		

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

TOTAL (I, II, and III)		
Secured borrowings in I and II above Rs.		

SCHEDULE 5 : OTHER LIABILITIES AND PROVISIONS

	As on 31.3…… (Current year)	As on 31.3…… (Previous year)
	Rs.	Rs.
I. Bills payable **II.** Inter-office adjustments (net) **III.** Interest accrued **IV.** Others (including provisions)		
TOTAL		

SCHEDULE 6 : CASH AND BALANCES WITH RESERVE BANK OF INDIA

	As on 31.3…… (Current year)	As on 31.3…… (Previous year)
	Rs.	Rs.
I. Cash in hand **II.** (including foreign currency notes) Balance with Reserve Bank of India (i) In Current Account (ii) In Other Accounts		
TOTAL (I) & (II)		

SCHEDULE 7 : BALANCES WITH BANKS & MONEY AT CALL & SHORT NOTICE

	As on 31.3…… (Current year)	As on 31.3…… (Previous year)
	Rs.	Rs.
I. In India (i) Balances with banks (a) in current Accounts (b) in Other Deposit Accounts (ii) Money at call and short notice (a) With banks (b) With other institutions		
TOTAL (i) & (ii)		
II. Outside India (i) in Current Accounts (ii) in other Deposit Accounts (iii) Money at call and short notices TOTAL (i) + (ii) + (iii)		
GRAND TOTAL (I & II)		

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

SCHEDULE 8 : INVESTMENTS

	As on 31.3…… (Current year)	As on 31.3…… (Previous year)
	Rs.	Rs.
I. Investments in India in (i) Government Securities (ii) Other approved securities (iii) Shares (iv) Debentures and Bonds (v) Others (to be specified)		
TOTAL		
II. Investment outside India in (i) Government securities (Including local authorities) (ii) Subsidiaries and/or joint ventures abroad (iii) Other investments (to be specified)		
TOTAL **GRAND TOTAL (I & II)**		

SCHEDULE 9 : ADVANCES

	As on 31.3…… (Current year)	As on 31.3…… (Previous year)
	Rs.	Rs.
A. (i) Bills purchased and discounted (ii) Cash credits, overdrafts And loans payable on demand (iii) Term loans		
TOTAL		
B. (i) Secured by tangible assets (ii) Covered by Bank/Government Guarantees (iii) Unsecured		
TOTAL		
C. I. Advances in India (i) Priority Sectors (ii) Public Sector (iii) Banks (iv) Others		
TOTAL **II.** Advances outside India (i) Due from banks (ii) Due Bills purchased and discounted (a) Bills purchased and discounted (b) Syndicated loan (c) Others **TOTAL** **GRAND TOTAL (I & II)**		

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

SCHEDULE 10 : FIXED ASSETS

	As on 31.3…… (Current year)	As on 31.3…… (Previous year)
I. Premises At cost as on 31st March of the preceding year Additions during the year Deductions during the year Depreciation to date		
TOTAL		
II. Other Fixed Assets (including Furniture and Fixtures) At cost as on 31st March of the preceding year Additions during the year Deductions during the year Depreciation to date		
TOTAL **TOTAL (I & II)**		

SCHEDULE 11 : OTHER ASSETS

	As on 31.3…… (Current year)	As on 31.3…… (Previous year)
I. Inter-office adjustments (net) **II.** Interest accrued **III.** Tax paid in advance/tax deducted at source **IV.** Stationery and stamps **V.** Non-banking assets acquired in satisfaction of claims **VI.** Others*		
TOTAL		

*In case there is any unadjusted balances of loss the same may be shown under this item with appropriate foot-note.

SCHEDULE 12 : CONTINGENT LIABILITIES

	As on 31.3…… (Current year)	As on 31.3…… (Previous year)
I. Claims against the bank not acknowledged as debts **II.** Liability for partially paid investments **III.** Liability on account of outstanding forward exchange contracts **IV.** Guarantees given on behalf of constituents (a) In India (b) Outside India **V.** Acceptances, endorsements and other obligations **VI.** Other items for which the bank is contingently liable.	Rs.	Rs.
TOTAL		

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

चिट्ठे की मदों का स्पष्टीकरण
(Explanation of Items of Balance Sheet)

रिजर्व बैंक ने अन्तिम खाते बनाने के सम्बन्ध में कुछ दिशानिर्देश (Guidelines) दिये हैं। इनके आधार पर तथा सारणी तृतीय की आवश्यकताओं के आधार पर चिट्ठे सम्बन्धी मदों का स्पष्टीकरण निम्नलिखित है :

1. **पूँजी (Capital)–सारणी 1 :**

(i) **राष्ट्रीयकृत बैंक** : केन्द्रीय सरकार के स्वामित्व वाली पूँजी को दिखाया जाना चाहिए।

(ii) **भारत से बाहर समामेलित बैंकिंग कम्पनियाँ** : रिजर्व बैंक द्वारा लायी गयी प्रारम्भिक पूंजी (Start up Capital) को इस शीर्षक के अन्तर्गत दिखाया जाना चाहिए। बैंकिंग विनियमन अभिनियम, 1949 की धारा 11(2) के अन्तर्गत रिजर्व बैंक के पास निक्षेप के रूप में रखी गई राशि को भी दिखाया जाना चाहिए।

(iii) **अन्य बैंक (भारतीय)** : अधिकृत, निर्गमित, अभ्दित तथा मांगी गई पूंजी को पृथक पृथक दिखाया जाना चाहिए। मांगी गई पूंजी में सें बकाया मांग को घटाया जाना चाहिए और इसमें जप्त अंशों पर चुकाई गई राशि को जोड़ाजाना चाहिए, इस प्रकार प्रदत पूंजी (Paid- up Capital) की राशि ज्ञात की जावेगी। जहाँ आवश्यक हो , मदों को मिलाकर भी दिखाया जा सकता है , जैसे 'Issued and Subscribed Capital'

उपरोक्त मदों में वर्ष के दौरान हुए परिवर्तनों कों टिप्पणियों में स्पष्ट किया जा सकता है।

2. **संचय और आधिक्य (Reserves and Surplus) - सारणी 2 :**

(i) **वैधानिक संचय** (Statutory Reserves) **:** बैंकिग विनियमन अधिनियम की धारा 17 या अन्य किसी धाेेाा के अन्तर्गत निर्मित वैधनिक संचय को पृथक् दिखाया जाना चाहिए।

(ii) **पूजीगत संचय** (Capital Reserves) : इसमें मुक्त संचय (Free Reserve) को सम्मिलित नहीं किया जावेगा। पुनर्मूल्यांकन सम्बन्धी आधिक्य को पूँजीगत संचय माना जावेगा।

(iii)**अंश प्रीमियम** (Share Premium) **:** अंश पूँजी के निर्गमन पर प्रीमियम को इस शीर्षक के अन्तर्गत पृथक्से दिखाया जावें।

(iv) आयगत तथा अन्य संचय (Revenue and other Reserves) : पूँजीगत संचय के अतिरिक्त अन्य संचय को आयगत संचय कहा जाता है। पृथक् रूप् से वर्गीकृत संचय के अतिरिक्त सभी संचय इसमें सम्मिलित होते है। इसमें किाी दायित्व या सम्पति के पूल्य–हास के लिए किया गया दायित्व सम्मिलित नहीं किया जावेगा।

(v) लाभ का शेष (Balance of Profit) **:** इसमें नियोजन के पश्चात शेष को सम्मिलित किया जाता है।

3. **निक्षेप** (Deposits) **–सारणी 3 :**

(i) मॉग निक्षेप (Demand Deposits) **:** इसमें बैंकों तथा गैर बैंकिंग क्षेत्र से मॉग पर देय निक्षेपों को सम्मिलित किया जाता है। बैंक अधिविकर्ष , नकद साख खाते , नकद प्रमाण पत्र आदि इसमें आते है। चालू खाते जो गतिशील नहीं हैं उनको भी सम्मिलित किया जाता हैं।

(ii) बचत बैंक निक्षेप (Savings Bank Depodits) **:** बचत बैंक खाते जो गतिशील नहीं हैउनके सहित सभी बचत बैंक निक्षेपों को सम्मिलित किया जाता है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(iii) सावधि निक्षेप (Term Deposits) **:** इसमें एक निश्चित अवणि के पश्चात् देय बैंकिंग और गैर–बैंकिंग क्षेत्र के निक्षेपों को सम्मिलित किया जाता है।

भारतिय शाखाओं के निक्षेप तथा भारत से बाहर की शाखाओं के निक्षेपों को पृथकृ पृथकृ दिखाया जावेगा। निक्षेपों पर जो ब्याज अर्जित कर लिया गया है लेकिन नहीं हुआ है उसको अन्य दायित्व वाले शीर्षक के अन्तर्गत दिखाया जावेगा। परिपक्व हुई सावधि जमा की माँग को निक्षेप समझा जाना चाहिए।

4. उधार (Borrowings) –सारणी 4 :

(i) भारत में उधार (Borrowings in India) **:** इसमें रिजर्व बैंक , अन्य बैंकों जथा अन्य संस्थाओं से दिये गये उधार को सम्मिलित किया जावेगा।

(ii) भारत के बाहर से उधार (Borrowings outside India) **:** इसमें भरत से बाहर की भारीय शाखाओं तथा विदेशी शाखाओं के उधार को सम्मिलित किया जावेगा।

उपरोक्त में सम्मिलित सुरक्षित उधारों (Secured borrowings) को पृथक् दिखाया जावेगा।

5. अन्य दायित्व तथा आयोजन (Other Liabilities and Provisions)–सारणी 5 :

इस मद में निम्नलिखित को सम्मिलित किया जाता है–

(i) देय बिल (Bills payable)

(ii) अन्तर – कार्यालय समायोजन (शुद्ध) (Inter– office adjustments net)

(iii) अर्जित ब्याज (Interest accrued)

(iv) अन्य (आयोजन सहित) (Others– including Provisions)

6. नकद तथा भारतीय रिजर्व बैंक के पास शेष (Cash and Balsnces with the Reserve Bank of India) – सारणी 6 :

इनमें विदेशी पूद्रा सहित (विदेशी शाखाओं कोसम्मिलित करते हुए) हाथ में रोकड. को सम्मिलित किया जावेगा।

7. बैंकों के पास शेष, माँग व अल्पकालीन नोटिस पर देय राशि (Balances with Banks and money at call and short notices) – सारणी 7 :

इसमें निम्नलिखित राशियों को सम्मिलित किया जाता है –

(i) भारत में बैंकों में जमा समस्त शेष ,

(ii)15 या इससे कम दिनों के नाटिस पर प्राप्त करने योग्य अन्तर – बैंक निक्षेप,

(iii)विदेशी शाखाओं तथा विदेशों में भारतीय शाखाओं के पास शेष।

8. विनियोग (Investments) सारणी 8 :

(i) सरकारी प्रतिभूतियाँ : इसमूें केन्द्रीय तथा राज्य सरकार की प्रतिभूतियाँ तथा ट्रेजरी बिल्स को सम्मिलित किया जाता है।

इनकों पुस्तक पूल्य पर दिखाया जाना चाहिए। लेकिन बाजार मूल्य तथा पुस्तक मूल्य क अन्तर को चिट्ठे के साथ टिप्पणियों में दिखाना चाहिए।

(ii) अन्य अनुमोदित प्रतिभूतियाँ : सरकारी प्रतिभूतियाँ के अतिरिक्त अन्य प्रतिभूतियाँ जो बैंकिंग विनियमन अधिनियम द्धारा अनुमोदित हैं , इस मद में सम्मिलित की जाती हैं।

(iii) अंश : कम्पनियाँ तथा निगमों के अंशों में किया गया विनियोग जिसे उपराक्त (ii) में सम्मिलित नहीं किया गया हों , यहाँ सम्मिलित किया जावेगा।

(iv) ऋण–पत्र और बॉड : कम्पनियों तथा निगमों के ऋणपत्रों तथा बॉण्डों में विनियोग जिसे उपराक्त **(ii)** में नहीं दिखाया गया हो , यहाँ दिखाया जावेगा।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(v) सहायक कम्पनियों तथा संयूक्त साहसों में विनियोग : ग्रामीण बैंकों में किये गये को भी इस मद में सम्मिलित किया जावेगा।

भारत में किये गये विनियोगों तथा भरत से बाहर किये गये विनियोगों को पृथक्–पृथक् दिखाया जावेगा।

9. अग्रिम (Advances) – सारणी 9 :

सरणी 9 में दिखाई गई 'A' व 'B' मदों के सम्बन्ध में भी भारत और भारत से बाहर सम्बन्धी निक्षेपों के विवरण दिये जायेंगे। 'A' मदों का जोड. तथा 'B' मदों का जोड. मिलना चाहिए।

10.स्थायी सम्पतियाँ (Fixed Assets) – सारणी 11 :

भवन में बैंक द्वारा रिहायशी काम में आने वाले भवनों सहित व्यवसाय में काम में आने वाले भवनों को सम्मिलित किया जावेगा चाहे उन पर पूर्ण स्वामित्व हो अथवा आंशिक स्वामित्व हो। मोटर गाडि.यों को अन्य स्थायी सम्पतियों में सम्मिलित किया जावेगा।

11.अन्य समपतियाँ (Other Assets) – सारणी 11 :

(i) अन्तर – कार्यालय समायोजन सम्बन्धी समस्त खातों को एकत्रित करके एक शुद्ध राशि ज्ञात कर लेनी चाहिए। यदि इस राशि का डेबिट शेष है तो उसे यहाँ दिखाना चाहिए।

(ii) विनियोगों तथा अग्रिमों पर जो ब्याज अर्जित हो गया है लेकिन देय नहीं हुआ है तथा जो देय हो चूका है लेकिन प्राप्त नहीं हुआ है उसे अर्जित आय की मद में सम्मिलित किया जावेगा।

(iii) अग्रिम कर तथा उद्गम पर काटे गये कर को यदि सम्बन्धित आयोजन से नहीं काटा गया है तो उसे यहाँ दिखाया जाना चाहिए।

(iv) स्टेशनरी पर अपवादजना रूप से बडी. मात्रा में किये गये क्रय को ही यहाँ सम्मिलित किया जाना चाहिए। यह स्टेशनरी ऐसी होनी चाहिए जिसे कई वर्षो में अपलिखित किया जाना हैं।इनका पूल्यांकन वास्तविक आधार पर किया जाना चाहिए और यदि लागत बढ. भी जावे तो उसका ध्यान नहीं रखा जाना चाहिए।

(v) दावों के भुगतान में प्राप्त अचल सम्पतियों तथा दृश्य सम्पतियों को यहाँ दिखाया जाता है।

(vi) इस मद में सम्मिलित की जाने वाली मदों के उदाहरण इस प्रकार है –

एक नियोक्ता के रूप में कर्मचारियों को दिये गये अग्रिम, ब्याज के अतिरिक्त अर्जित आय आदि।

12. संदिग्ध दायित्व (Contingent Liabilities) – सारणी 12 :

(i) बैंक के विरूद्ध ऐसे दावे जिन्हें ऋण के रूप में स्वीकार नहीं किया गया है , इस मद में सम्मिलित किये जाते है।

(ii) इस मद में आंशिक प्रदत अंशों व ऋणपत्रों के सम्बन्ध में दायित्व को सम्मिलित किया जावेगा।

(iii) अदत अग्रिम विनिमय अनुबन्धों को इस मद में सम्मिलित किया जावेगा।

(iv) भारत और भारत से बाहर ग्राहकों के लिए दी गई गारन्टी को पृथक् पृथक् दिखाया जाना चाहिए।

(v) इसमें बैंक द्वारा ग्राहकों की तरफ से स्वीकृत बिल तथा साख पत्रों को सम्मिलित किया जावेगा।

(vi) संचयी लाभांशों की बकाया , अभिगोपन अनुबन्धों के अन्तर्गत पुनर्भुनाये गये बिल आदि इस मद में दिखाये जायेंगे।

13. संग्रह के लिए आये बिल (Bills for Collection) :

इस मद के सम्बन्ध में पृथक्से कोई सारणी नहीं दी गई हैं।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

लाभ–हानि खाता तथा उससे सम्बन्धित सारणियों का प्रारूप

(Format of Profit & Loss account and Concerning Schedules)

FORM 'B'

Profit & Loss Account

For the year ended 31st March, …………

	Schedule No.	As on 31.3…… (Current year)	As on 31.3…… (Previous year)
I. INCOME			
Interest earned	13		
Other income	14		
TOTAL			
II. EXPENDITURE			
Interest expended	15		
Operating expenses	16		
Provisions and contingencies			
TOTAL			
III. PROFIT/LOSS			
Net profit/loss (-) for the year			
Profit/Loss (-) brought forwerd			
IV. APPROPRIATIONS			
Transfer to statutory reserves			
Transfer to other reserves			
Transfer to Government/Proposed dividends			
Balance carried over to balance sheet			
TOTAL			

SCHEDULE 13 : INTEREST EARNED

	As on 31.3…… (Current year)	As on 31.3…… (Previous year)
	Rs.	Rs.
I. Interest/discount on advance/bills		
II. Income on investments		
III. Interest on balances with Reserve Bank Of India and other inter-bank funds		
IV. Others		
TOTAL		

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

SCHEDULE 14 : OTHER INCOME

	As on 31.3…… (Current year)	As on 31.3…… (Previous year)
	Rs.	Rs.
I. Commission, exchange and brokerage		
II. Profit on sale of investments		
Less : Loss on sale of investments		
III. Profit on revaluation of investments		
Less : Loss on revaluation of investments		
IV. Profit on sale of land, building and other assets		
Less : Loss on sale of land, building and other assets		
V. Profit on exchange transactions		
Less : Loss on exchange transactions		
VI. Income earned by way of dividends etc.		
Income earned by way of dividends etc. From subsidiaries/companies and/or joint ventures abroad/in India		
VII. Miscellaneous Income		
TOTAL		

Note : Under Items II to V loss figures may be shown in brackets.

SCHEDULE 15 : INTEREST EXPENDED

	As on 31.3…… (Current year)	As on 31.3…… (Previous year)
	Rs.	Rs.
I. Interest on deposits		
II. Interest on Reserve Bank of India/inter-bank		
III. Borrowings		
Others		
TOTAL		

SCHEDULE 16 : OPERATING EXPENSES

	As on 31.3…… (Current year)	As on 31.3…… (Previous year)
I. Payments to and provisions for employes		
II. Rent, taxes and lighting		
III. Printing and stationery		
IV. Advertisement and publicity		
V. Depreciation on Bank's property		
VI. Directors' fees, allowances and expenses		
VII. Auditors' fees and expenses (Including branch auditors)		
VIII. Law Charges		
IX. Postage, Telegrams, Telephones, etc.		
X. Repair and maintenance		
XI. Insurance		
XII. Other expenditure		
TOTAL		

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

खातों पर टिप्पणीयाँ : सारणी–17

(Notes on Accounts : Schedule - 17)

प्रत्येक बैंकिंग कम्पनी को सारणी 17 में खातों पर टिप्पणी करनी होती है। इसी सन्दर्भ में कतिपय उदाहरण निम्नलिखित हैं :

1. अन्तः शाखा लेनदेनों में शेष मदों के समाधा तथा परिणाम अन्य समायोंजन जिनमें दंय ड्राफ्ट तथा बिना परामर्श के चुकाये गये ड्राफ्ट, अन्य बैंकों के साथ खाते जिनमे विदेश बैंक, समाशोधन खाते तथा विविध प्राप्तियों की मदें, विविध जमा खाते शामिल हैं। कुछ शाखाओं में कुछ खातों में शेष सहायक लैजर्स तथा रजिस्टर्स के शंषों से मेल नहीं खाते। अन्तर के लिए पहले ही कदम उठाये जा चूके हैं। लाभ हानि खाते तथा चिट्ठे की इन शेष मदों के समाधान के प्रभाव इस चरण पर निर्धारणीय नहीं होता।

2. गैर – अंकेक्षित शाखाओं के सम्बन्ध में , जहाँ भी अग्रिमों के वर्गीकरण के बारे में सूचनाएँ अपर्याप्त हों , उसको प्रशासनिक कार्यालयों/मुख्यालय में उपलब्ध सूचनाओं के आधार पर सम्भव सम्भव सीमा तक वर्गीकृत की जा चुकी है।

3. नर्सिंग कार्यक्रमों, राष्टीयकृत इकाइयों के अन्तर्गत आने वाली रूग्ण/इकाइयों से प्रपप्त अग्रिम तथा अनेक संश्लिष्ट, फाइल हुए वादो के सम्बन्ध में तथा डिक्री हुई खातों के सम्बन्ध में निम्न के आधार पर उनकों श्रेष्ठ माना जा चुका है–विधमान तथा सम्भावित।

(अ) प्राथमिक तथा समपार्श्विक प्रतिभूतियों के उपलब्ध अनुमानित मूल्य जिनमें शामिल है ऋणियों तथा गारन्टरों की व्यक्तिगत महता।

(ब) प्रस्तावित/चल रहे पुनर्जीवन/पुनर्स्थापन कार्यक्रम

(स) सरकार द्वारा दावों के बकाया निपटान।

(द) कृषि तथा ग्रामीण ऋण सहायता योजना , 1990 तथा विभिन्न साख गारन्टी योजनाओं के अन्तर्गत दिये गये/दिये जाने वाले दावे।

4. 31 मार्च, 19____ को भरतीय सरकारी प्रतिभूतियों में निवेश कोषागार मूल्य के ऊपर पुस्तकीय मूल्य का आधिक्य ____ लाख रूपये हैं।

5. भवनो में सम्पतियाँ शामिल हैं , जिनका पुस्तकीय मूल्य ____ लाख रूपये है जिसके लिए पंजीकरण औपचारिकताएँ पूरी की जा रही हैं।

6. तत्परता से वसूली योग्य सम्पतियों पर दायित्वों का आधिक्य (जिनको तथाकथित बैंक ऑफ थन्जावूर लिमिटेडसे लि6या गया है) जो ''अन्य सम्पतियों''' में शामिल हैं, Deposit Insurance and Credit Guarantee Corporation of India के पास दिये गये दावों के निपटाने के रहते , सम्पतियों की वसूली संग्रहण आधार पर ली गई है तथ्रर अन्तिम निपटान आधार पर 'एकीकरण की योजना' के अन्तर्गत।

7. विगत वर्ष की संख्याओं को पुनः ग्रुपों में लिखा गया है कि जहां ता वे बैंकिंग नियमन अधिनियम की तृीय अनुसूची में व्यक्त संशोधित फार्मों के अनुसार चालू वर्ष के वर्गीकरण के अनुरूप व्यावहारिक हों सिवाय प्रतिभूतियों पर अग्रिमों के वर्गीकरण के सम्बन्ध में/क्षेत्रीय आधार के अतिरिक्त जिसके लिए प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा प्रस्तुत सूचनाओं को स्वीकार कर लिया गया है।

मुख्य लेखांकन नीतियाँ –सारणी -18

(Principal Accounting Policies : Schedule -18)

प्रत्येक बैंकिंग कम्पनी को , जो उसने मुख्यतः लेखांकन नीतियाँ अपनायी हैं , उनके संदर्भ में सारणी- 18 में उल्लेख करना होता है। इसी क्रम में कुछउदाहरण निम्नलिखित हैं :

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

1. सामान्य : सरथ लगे वितीय विवरण ऐतिहासिक लागत आधार पर तैयार किये गये हैं तथा देशस में प्रचलित वैधानिक प्रावधानों तथा व्यवहारों के अनुरूप है।

2. विदेशी विनिमय लेनदेन : (अ) मौद्रिक तथा गैर–मौद्रिक सम्पतियाँ तथा दायित्वों को वर्ष के अन्त में चल रहे विनिमय दरों पर परिवर्तित किया गया है।

(ब) भरतीय शाखाओं के सम्बन्ध में आय तथा व्यय की मदों को लेनदेन के दिन चल रही विनिमय दरों पर बदला गया है तथा विदेशी शाखाओं के सम्बन्ध में तत्सम्बन्धी छमाही के अन्त में चल रहे विनिमय दरों पर परिवर्तित किया गया है।

(स) विदेशी विनिमय स्थिति पर लाभ या हानि जिनमें बकाया आगामी विनिमय अनुबन्ध भी शामिल हैं, वर्ष के अन्त में चल रही विनिमय दरों के आधार पर लेखाबद्ध किया गया है जैसा कि भरतीय विदेशी विनिमय विक्रेता संघ के मार्गदर्शक सिद्धान्तों के अनुरूप है।

3. निवेश : (अ) भारत में सरकारी एवं अन्य अनुमोदित प्रतिभूतियों में विनियोग लागत मूल्य एवं बाजार मूल्य में से , जो कम हो, उस पर दिखाये जाते हैं।

(ब) सहायक कम्पनियों एवं कुछ कम्पनियों में ऐतिहासिक लागत के आधार पर लेखांकन किया जाता है।

(स) अन्य सभी विनियोग लागत या बाजार मूल्य में, जो कम हो, उस आधार पर मूल्यांकित करते हैं।

4. अग्रिम : नर्सिंग कार्यक्रमों के अन्तर्गत रूग्ण इकाइयों, राश्ट्रीयकृत इकाइयों से प्राप्त ऋणों तथा विभिन्न संश्लिष्ट फाइल हुए वादों तथा डिक्री हुए खातों के सम्बन्ध में निम्न के आधार पर श्रेष्ठ माना गया हैं :

(अ) विद्यमान तथा सम्भावित प्राथमिक तथा सम्पार्श्विक प्रतिभूतियों का उपलब्ध अनुमानित मूल्य जिनमें शामिल है ऋणियों तथा गारन्टरों की व्यक्तिगत हैसीयत।

(ब) प्रस्तावित/चल रहे पुनर्जीवन/पुनर्स्थापन कार्यक्रम।

(स) सरकार द्वारा बाकी पडे. दावों का निपटान।

(द) विभिन्न गारन्टी योजनाओं तथा कृषि एवं ग्रामीण ऋण सहायता योजना,1990 के अन्तर्गत रखे गये दावे/रखे जाने वाले दावे।

(ई) संदिग्ध अग्रिमों के सम्बन्ध में अंकेक्षकों की सन्तुष्टि तक प्रावधान बनाये गये हैं तथा अग्रिमों से घटाये गये हैं। ऐसे प्रावधान सकल आधार पर बनाये गये हैं। कर रियायत उपलब्ध होगी तब अग्रिम अपलिखित कर दिये गये हैं तथा अपलेखन के वर्ष में लेखाबद्ध किये गये हैं।

5. स्थायी सम्पतियाँ : (अ) भवन तथा अन्य स्थायी सम्पतियों को अपनी ऐतीहासिक लागत पर खातों में दिखाते हैं। वे भवन, जिनका पुनर्मूल्यांकन पेशेवर मूल्यांकनकर्ता द्वारा किया गय हो, को पुनर्मूल्यांकित मूल्य पर दिखाया जाता हैं। पुनर्मूल्यांकन पर उत्पन्न लाभ को पूँजी संचय खाते में क्रेडिट किया जाता है।

(ब) मूल्य हास सीधी रेखा/क्रमागत हास पद्धति द्वारा लगाया जायेगा।

(स) पुनर्मूल्यांकित सम्पति के सम्बन्ध में मूल्य हास पुनर्मूल्यांकित मूल्य पर लगाया जायेगा तथा इसके अतिरिक्त हास की रकम को वार्षिक पूँजी संचय से लाभ हानि खाते या सामान्य संचय में सथानान्तरित करेंगे।

6. स्टाफ लाभ : उपार्जन आधार पर निर्धारित ग्रेच्युटी बैंक द्वारा निर्मित अनुमोति ग्रेच्युटी कोष को चुकाई जा चुकी है।

7. शुद्ध लाभ : लाभ हानि खाते में दिखाया शुद्ध लाभ निम्न के बाद प्रकट होता है :

(1) वैधनिक आवश्यकताबों के अनुरूप आय पर करों का आयोजन।

(2) संदिग्ध अग्रिमों के लिए आयोजन।

(3) भारत में सरकारी एवं अन्य अनुमोदित प्रतिभूतियों में विनियोग के मूल्यांकन के कारण समायोजन।

(4) अनिश्चित कोषों मे स्थानान्तरण।

(5) अन्य आवश्यक प्रावधान।

(6) अनिश्चित कोषों को चिट्ठक के 'अन्य दायित्व एवं कोष ' शीर्षक में वर्गीकृत किया है।

संकलन हेतु टिप्पणियाँ तथा आदेश (Notes and Instructions for Compilation) :

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

सामान्य आदेश

1. चिट्ठे तथा लाभ हानि खाते के प्रारूप इन विवरणों में आने के लिए सम्भावित सभी मदों का समावेश करते हैं। यदि किसी विशेष मद के सम्बन्भ में बैंक करे कुछ रिपोर्ट नहीं करना है तो उसको प्रारूप से मिटाया जा सकता है।

2. गत वर्ष के लिए तत्सम्बन्धी तुलनात्मक राशियाँ भी दिखानी होती हैं जैसा कि प्रारूप में इंगित किया गया है। प्रारूप में प्रयुक्त शब्द ''चालू वर्ष'' तथा ''गत वर्ष'' को मात्र प्रस्तुति के क्रम को इंगित करने के लिए दिया गया है तथा वे खातों में दिखाये जा सकते हैं।

3. राशियों को निकटतम हजार रूप्यों तक उपसादित यिा जाना चाहिए।

4. जब तक अन्यथा इंगित न किया जाये, बैंक इन विवरणों में बैंकिंग कम्पनियों, राष्ट्रीयकृत बैंकों, भारतीय स्टेट बैंक, सम्बद्ध बैंकों को तथा अन्य दूसरी सभी संस्थाओं को शामिल करेगा जिनमें शामिल हैं, बैंकिग व्यवसाय को चला रहे सहकारी संस्थान चाहे समामेलित हो या न हो अथवा भरत में काम कर रहे हों। चिट्ठे काहिनदी अनुवाद वार्षिक रिपोर्ट का एक भाग होगा।

लाभ–हानि खाते की मदों का स्पष्टीकरण
(Explanation of Items of Profit and Loss Account)

रिजर्व बैंक ने लाभ – हानि खाता बनाने के सम्बन्ध में जो दिशा–निर्देश दिये हैं उनके आधार पर लाभ – हानि खाता सम्बन्धी मदों का स्पष्टीकरण इस प्रकार है :

1. अर्जित ब्याज (Interest earened) - सारणी 13 :

(i) अग्रिम और बिलों पर ब्याज और बट्टा : इसमे सभी प्रकार के ऋणों और अग्रिमों पर ब्याज और बट्टा सम्मिलित किया जाता है।

(ii) विनियोगों पर आय : इसमें विनियोगों पर ब्याज और लाभांश को सम्मिलित किया जाता है।

(iii) रिजर्व बैंक के पास शेष तथा अन्य अन्तर–बैंक कोषों पर ब्याज : इस मद में रिजर्व बैंक व अन्य बैंकों के पास शेषों, माँग ऋणों (Call loans) आदि को सम्मिलित किया जाता है।

(iv) अन्य : ब्याज व बट्टे सम्बन्धी अन्य आय जिसे ऊपर वाले शिर्षकों में सम्मिलित नहीं किया गया हो, इस मद में सम्मिलित किया जाता है।

2. अन्य आय (Other Income) – सारणी 14 :

(i) कमीशन, विनिमय और दलाली : इसमें सेवाओं के बदले में प्राप्त सभी प्रकार के पारिश्रमिक को सम्मिलित किया जाता हैं।

(ii) विनियोग की बिक्री पर लाभ : इसमें प्रतिभूतियों, फर्नीचर, भूमि और भवन, मोटर गाडी, सोना व चाँदी की बिक्री पर लभ/हानि को सम्मिलित किया जाता है।

(iii) विनियोगों के पुनर्मूल्यांकन पर लाभ : इस मद में केवल शुद्ध स्थिति को ही दिखाष जावेगा। यदि शुद्ध स्थिति हानि प्रकट करती है तो इस राशि को घटा कर दिखाना चाहिए।

(iv) भूमि, भवन तथा अन्य सम्पतियों की बिक्री पर लाभ अथवा हानि को इस मद के अन्तर्गत दिखाया जाता है।

(v) विनिमय व्यवहारों पर लाभ : इस मइ में अन्तर्गत ब्याज के अतिरिक्त सभी प्रकार के आमदनी तथा लाभ/हानि को सम्मिलित किया जाता है।

(vi) सहायक कम्पनियों और संयुक्त साहस से अर्जित आय : इसमें भारत और भरत से बाहर लाभंश आदि के रूप में अर्जित आय को सम्मिलित किया जाता है।

(vii) विभिन्न आय : इस मद के अन्तर्गत सभी प्रकार की विभिन्न मदों को सम्मिलित किया जाता है। इस शीर्षक के अन्तर्गत यदि किसी मद की राशि कुल आय के 1% से अधिक है तो टिप्पणियों में इसका विवरण दिया जाना चाहिए।

नोट : यदि किसी सम्पति के विक्रय या पुनर्मूल्यांकन से कोई हानि हो जाती है तो इसे इन्हीं अन्य आयों मेंसे घटाकर दिखाया जाता है क्योंकि व्ययों में इसके लिए अलग से कोई मद नहीं हैं।

3. ब्याज (Interest)– सारणी 15 :

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(i) निक्षेपों पर ब्याज : इसमें सभी प्रकार के निक्षेपों पर चुकाया गया ब्याज सवम्मिलित किया जाता हैं।

(ii) रिजर्व बैंक तथा अन्तर–बैंक उधार पर ब्याज : इस मद में रिजर्व बैंक तथा अन्य बैंकों से ली गई समस्त उधार राशियों पर ब्याज व बट्टे को सम्मिलित किया जाता है।

(iii) अन्य : वितीय संस्थानों से उधार राशि पर ब्याज और बट्टे को इस मद में सम्मिलित किया जाता है। अन्य सभी भुगतानों जैसे 'Penal Interest' को भी यहाँ दिखाया जा सकता है।

4. संचालन व्यय (Operating Expenses) – सारणी 16 :

(i) कर्मचारियों को भुगतान तथा उनके लिए आयोजन : इसके अन्तर्गत कर्मचारियों को दिये गये सभी प्रकार के वेतन, मजदूरी,भते, बोनस, अनुलाभ आदि को सम्मिलित किया जाता है।

(ii) किराया, दर और रोशनी : इस मद में बैंक द्वारा भवन का दिया गया किराया सम्मिलित होगा। इसके अतिरिक्त आयकर, ब्याज कर (Interest Tax), विद्युत और ऐसे ही चार्जेज को छोड.कर नगरपालिका और अन्य कर भी सम्मिलित होंगे। कर्मचारियों को यिा गया मकान, किराया भता और ऐसे ही अन्य भुगतान उपरोक्त (i) में सम्मिलित किये जायेंगे।

(iii) मुद्रण और स्टेशनरी : इसमें पुस्तकें, प्रपत्र व स्टेशनरी जो बैंक द्वारा काम में ली जाती हैं, सम्मिलित की जाती हैं। विज्ञापन खर्च के अतिरिक्त अन्य मुद्रण खर्च भी इसमें सम्मिलित होते हैं।

(iv) विज्ञापन और प्रचार : विज्ञापन और प्रचार सम्बन्धी खर्चों में ऐसे मुद्रण सम्बन्धी खर्चे भी सम्मिलित किये जाते हैं जिन्हें प्रचार सामग्री को छापने पर खर्च किया गया है।

(v) बैंक की सम्पति पर मूल्य हास : इस मद में बैंक की स्वयं की सम्पति, मोटर कार तथा अनय गाडि.यां, फर्नीचर, विद्युत फिटिंग्स, वाल्टस, लिफ्ट पट्टे पर ली हुई सम्पतियाँ, गैर – बैंकिंग सम्पतियाँआदि पर मूल्य हास सम्मिलित किया जाता हैं।

(vi) संचालको की फीस, भते और खर्चे : इस मद में संचालको के शुल्क तथा उनकी ओर से किये जाने वाले समस्त खर्चों को सम्मिलित किया जाता है। दैनिक भता, होटल चार्जेज, परिवहन खर्जेज आदि जो खर्चा किया जाता है, वह खर्चों के पुनर्भरण के (reimbursement) स्वभाव के होते हुए भी इस मद में सम्मिलित किये जा सकते हैं। स्थानीय समितियोंके सदस्यों के भी ऐसे ही खर्चों को इस मद में सम्मिलित किया जा सकता है।

(vii) अंकेक्षकों के शुल्क एवं व्यय : पेशेवर सेवाओं के लिए वैधानिक अंकेक्षकों और शाखा अंकेक्षकों को दिया गया शुल्क तथा उनके कार्य सम्पादन के लिए किये गये खर्चों को इस मद में सम्मिलित किया जाता है। यदि आन्तरिक अंकेक्षण के लिए बाह्यअंकेक्षकों कों नियुक्त किया गया है तो इस सम्बन्ध में किया गया खर्चा ''अन्य व्यय'' शीर्षक के अन्तर्गत दिखाया जावेगा।

(viii) कानूनी खर्चे : वैधानिक सेवाओं के लिए किये गये सभी खर्चे इस मद के अन्तर्गत सम्मिलित किये जायेंगं।

(ix) डाक, तार, टेलीफरेल आदि : इसमें सभी डाक सम्बन्धी खर्चे और टेलीप्रिनटर आदि के खर्चे भी सम्मिलित किये जायेंगे।

(x) मरम्मत और रखरखाव–इसमें बैंक की सम्पति के मरम्मत और रखरखाव सम्बन्धी खर्चे सम्मिलित होते हैं।

(xi) बीमा : इस मद में बैंक की सम्पतियों पर बीमा सम्बन्धी खर्चे, निखेप, बीमा पर चुकाई गई प्रीमियम आदि को सम्मिलित किया जाता है।

(xii) अन्य व्यय : अन्य शीर्षकों के अन्तर्गत जो खर्चे सम्मिलित नहीं हुए उन्हें इस शीर्षक के अन्तर्गत सम्मिलित किया जावेगा। यदि कोई मद कुल आय के 1% से अधिक है तो उसका विवरण टिप्पणियों में दिया जावेगा।

5. आयोजन तथा सम्भाव्यताएँ (Provisions snd Contingencies) :

इसमें डूबत और संदिग्ध ऋण के लिए किये गये आयोजन, अग्रिम प्राप्त बट्टे कि लिए आयोजन, कर के लिए आयोजन,विनियोग के मूल्य में कमी के लिए आयोजन, सम्भाव्यताओं के लिए स्थानान्तरण तथा अन्य

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

ऐसी ही मदों को सम्मिलित किया जाता है। किन्तु बैंक किसी भी आयोजन के लिए विशिष्ट नाम नहीं देगा। सभी को आयोजन (Provision) कहा जाएगा। इन्हें विस्तार से दिखानें की आवश्यकता नहीं है।

उदाहरण – 7

Prepare the profit and loss account of a banking company for the year ending 31st March, 2007 from the following information:

निम्ननिखित सूचना से 31 मार्च, 2007 को समाप्ता होने वाले वर्ष के लिए एक बैंकिंग कम्पनी का लाभ–हानि खाता तैयार कीजिए :

('000s omitted)

	Rs.
Interest on loans (ऋणों पर ब्याज)	5,18,000
Interest of fixed deposits (स्थाई जमाओं पर ब्याज)	5,50,000
Rebate on bills discounted (भुनाये गये विपत्र पर छुट)	98,000
Commission charged customers (ग्राहको से प्राप्त कमिशन)	16,400
Establishment (व्यवस्थापन)	1,08,000
Discount on bills discounted (पूर्व प्राप्ति विपत्रों पर बटा)	3,90,000
Interest on cash credit account (रोकड़ ऋण खातो पर ब्याज)	4,46,000
Interest on current accounts (चालु खातों पर ब्याज)	84,000
Rent and taxes (किराया तथा कर)	36,000
Interest on overdrafts (vfधविकर्षो पर ब्याज)	1,08,000
Directors' fees(संचालकों का शुल्क)	6,400
Audit fees (अंकेक्षण शुल्क)	2,000
Interest on saving bank deposits(बचत खातों पर ब्याज)	1,36,000
Postage and telegrams (पोस्टेज एवं तार)	2,800
Printing and stationery(छपाई और स्टेशनरी)	3,800
Advertisement (विज्ञापन)	2,000
Sundry charges (विविध व्यय)	3,400
Depreciation (मूल्य –हास)	16,000
Law charges (कानूनी खर्चे)	1,000
Repair and maintenance (मरम्मत और रख–रखाव)	4,000
Insurance (बिमा)	20,000
Provisions (आयोजन)	5,000
Profit brought forward (आगे लाया गया लाभ)	50,000
Transfer to statutory reserve (वैधानिक संचय में स्थानान्तरण)	1,00,000
Transfer to general reserve (सामान्य संचय में स्थानान्तरण)	1,50,000
Proposed dividend (प्रस्तावित लाभांश)	1,50,000

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Profit and Loss Account

For the year ended 31st March, 2007

	Schedule No.	As on 31.3…… (Current year)	As on 31.3…… (Previous year)
I. INCOME			
Interest earned	13	14,62,000	
Other income	14	16,400	
TOTAL		14,78,400	
II. EXPENDITURE			
Interest expended	15	7,70,000	
Operating expenses	16	2,05,400	
Provisions and contingencies		1,03,000	
TOTAL		10,78,000	
III. PROFIT/LOSS			
Net profit/loss (-) for the year		4,00,000	
Profit/Loss (-) brought forward		50,000	
TOTAL		4,50,000	
IV. APPROPRIATIONS			
Transfer to statutory reserves		1,00,000	
Transfer to other reserves		1,50,000	
Transfer to Government/Proposed dividends		1,50,000	
Balance carried over to balance sheet		50,000	
TOTAL		4,50,000	

Schedules to Profit & Loss Account

	Year ended As on 31.3…… (Current year) Rs.	Year ended As on 31.3…… (Previous year) Rs.
Schedule 13 : Interest Earned		
Interest on Loans	5,18,000	
Interest on Cash Credit Accounts	4,46,000	
Interest on Overdraft	1,08,000	
	10,72,000	
discount on bills discounted	3,90,000	
	14,62,000	
Schedule 14 : Other Income		
Commission, exchange and brokerage	16,400	
	16,400	

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Schedule 15 : Interest Expended	5,50,000	
Interest on Fixed deposits	84,000	
Interest on Current Account	1,36,000	
Interest on Savings Bank Deposits	7,70,000	
Schedule 16 : Operating Expenses	1,08,000	
I. Payments to and provisions for employes	36,000	
II. Rent, taxes and lighting	3,800	
III. Printing and stationery	2,000	
IV. Advertisement and publicity	16,000	
V. Depreciation on Bank's property	6,400	
VI. Directors' fees, allowances and expenses	2,000	
VII. Auditors' fees and expenses	1,000	
VIII. Law Charges	2,800	
IX. Postage, Telegrams, Telephones, etc.	4,000	
X. Repair and maintenance	20,000	
XI. Insurance	3,400	
XII. Other expenditure	2,05,400	

टिप्पणियां : (1) प्रश्न में पिछले वर्ष के आँकड़े नहीं दिये गये हैं, अतः उनका ध्यान नहीं रखा गया हैं।

(2) सारणियों से सम्बन्धित जो मदें नहीं दी गई हैं, उनका ध्यान नहीं रखा गया है।

(3) आयोजन एवं संदिग्ध दायित्व की गणना निम्न प्रकार की गई है :

आयोजन	5,000 रू.
भुनाये गए विपत्र पर छुट	98,000 रू.
	1,03,000 रू.

उदाहरण – 8

From the following trial balance as on 31st March, 2007, prepare final accounts of Latha Bank Limited :

31 मार्च, 2007 को खत्म होने वाली अवधि के निम्न तलपट के आधार पर लाथा बैंक लिमिटेड के अन्तिम खाते तैयार कीजिए :

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

	Dr.	(Rs. In ‘ 000) Cr.
Interest on Advances		800
Interest from Investments		125
Commission, Exchange & Brokerage		200
Profit on sale of investments		20
Other revenue receipts		80
Share capital		2,000
Statutory Reserves		900
Profit & Loss Account		650
Fixed Deposits		275
Savings Deposits		325
Current Account		125
Borrowings from other banks		300
Borrowings from RBI		100
Bills payable (Net)		25
Interest accrued		75
Cash balance	200	
Balance with Other Banks	400	
Cash with RBI	100	
Investments in Govt. Securities	300	
Other Approved Securities	100	
Bills purchased and discounted	250	
Cash credits, Overdrafts and Demand loans	1,425	
Term loans	1,275	
Premises (Net)	1,375	
Furniture	250	
Interest paid	120	
Salary	75	
Printing and stationery	35	
Postage & telegram	20	
Repairs	25	
Interest accured	50	
	6,000	6,000

Bills for collection 235

Additional Information :

Advances made have been classified as under : (Rs. in ‘ 000)

	Cash credits, Overdrafts, etc.	Term Loans	Bills Purchased

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Standard Assets	1,000	975	225
Sub-standard Assets	125	100	25
Doubtful – Upto one year	100	20	-
One to three years	120	50	-
More than three years	50	80	-
Loss Assets	30	50	-
	1,425	1,275	250

No provision has been made so far against these assets. Doubtful assets are secured to the extent of 50% of the dues. 20% profit transferred to Statutory Reserve.

उपरोक्त सम्पतियों के एवज में कोई प्रावधान नहीं किया गया है। डूबत सम्पत्तियां 50 प्रतिषत की सीमा तक सुरक्षित हैं।

Solution :

Latha Bank Limited

Balance Sheet as on 31st March, 2007

CAPITAL & LIABILITIES	Schedule No.	As on 31.3…… (Current year)	As on 31.3…… (Previous year)
		Rs.	Rs.
Capital	1	2,000.0	
Reserves & Surplus	2	2,109.5	
Deposits	3	725.0	
Borrowings	4	400.0	
Other liabilities and provisions	5	490.5	
TOTAL		5,725.0	
ASSETS			
Cash and balance with Reserve Bank of India	6	300.0	
Balances with banks and money at Call and short notice	7	400.0	
Investments	8	400.0	
Advances	9	2,950.0	
Fixed Assets	10	1,625.0	
Other Assets	11	50.0	
TOTAL		5,725.0	
Contingent liabilities	12	Nil	
Bills for collection		235.0	

Profit and Loss Account

For the year ended 31st March, 2007

	Schedule No.	As on 31.3…… (Current year)	As on 31.3…… (Previous year)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

I. INCOME			
Interest earned	13	925.00	
Other income	14	300.00	
TOTAL		1,225.00	
II. EXPENDITURE			
Interest expended	15	120.00	
Operating expenses	16	155.00	
Provisions and contingencies		390.50	
TOTAL		665.50	
III. PROFIT/LOSS			
Net profit/loss (-) for the year		559.50	
Profit/Loss (-) brought forward		650.00	
TOTAL		1209.50	
IV. APPROPRIATIONS			
Transfer to statutory reserves @ 20%		111.90	
Balance carried over to balance sheet		1097.60	
TOTAL		1209.50	

Schedule 1 – Capital

	(Rs. in '000)	
	As on 31.3.07	As on 31.3.06
Authorised Capital		
…….. Shares of Rs. ……… each		
Issued Capital		
……… Shares of Rs. …….. each		
Subscribed Capital		
………. Shares of Rs. ……… each		
Called up Capital		
………. Shares of Rs. ….…. each	2,000	

Suhedule 2 – Reserves and Surplus

Statutory Reserves :		
Opening balance	900	
Additions during the year	111.9	
	1011.9	
Balance in Profit and Loss Account	1097.6	
	2109.5	

Schedule 3 – Deposits

Demand Deposits	125	
Savings Deposits	325	

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Fixed Deposits	275
	725

Schedule 4 – Borrowings

Borrowing in India :	
(i) From RBI	100
(ii) From other banks	300
	400

Schedule 5 – Other liabilities and provisions

Bills payble	25
Interest accrued	75
Other Provision (W.N.1)	390.5
	490.5

Schedule 6 – Cash and Balance with RBI

Cash in hand	200
Balance with RBI	100
	300

Schedule 7 – Balance with banks and Money at call and short notice

In India :	
Balance with other banks	400

Schedule 15 – Interest Expended

Interest on deposits	120

Schedule 16 - Operating Expenses

Payments to and provision for employees	75
Printing and Stationery	35
Postage and Telegram	20
Repairs	25
	155

Working Notes :

1. Calculation of provision on advances

Profit and Loss Account

For the year ended 31st March, 2007

	Assets Amount (Rs. in ‘ 000)	% of Provision	Provision (Rs. in’ 000)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Standard Assets	2,200	025%	5.5
Sub-Standard Assets	250	10	25.0
Doubtful Assets – Unsecured (50%)	210	100	210.0
Secured (50%) – Doubtful upto one year	60	20	12.0
Doubtful one to three years	85	30	25.5
Doubtful more than three years	65	50	35.5
Loss Assets	80	100	80.0
	2,950		390.5

Schedule 8 – Investments (Rs. in '000)

Investment in India In :

Government Securities	300
Other Approved Securities	100
	400

Schedule 9 – Advances

A. Bills Purchased and discounted	250
Cash credits, overdrafts and demand loans	1,425
Term loans	1,275
	2,950
B. (i) Secured by tangible assets	…..
(ii) Secured by Bank/Govt. guarantees	…..
(iii) Unsecured (Details are not available)	…..

Schedule 10 – Fixed assets

Premised (net)	1,375
Other fixed articles :	
Furniture	250
	1,625

Schedule 11- Other Assets

Interest accrued	50

Schedule 12 – Contingent Liabilities

NIL

Schedule 13 – Interest Earned

Interest on advances	800
Interest from Investments	125
	925

Schedule 14 – Other Income

Commission, Exchange & Brokerage	200
Profit on sale of investments	20
Miscellaneous Income	80
	300

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

प्रश्न –

प्र. 1 बैंक बुक–कीपिंग की स्पिल प्रणाली को समझाइए। इस पद्धति के गुण –दोष क्या हैं? इसकी कार्य–प्रणाली का वर्णन कीजिए।

प्र. 2 बैंक की न्यूनतम प्रदत पूंजी और संचयों के सम्बन्ध में क्या आवश्यकताएं हैं? इन मदों को क्रमशः अनुसूची 1 और 2 में किस प्रकार दिखाया जाता है?

प्र. 3 Write short notes on (संक्षिप्त टिप्पणियां लिखिए)

(i) Provision for discount on unexpired period of Bill
(ii) Branch Adjustments.
(iii) Non-Banking Assets.
(iv) Non-Performing Assets.

प्र. 4 एक बैंक के विनियोग किस प्रकार से वर्गीकृत और मूल्यांकित किये जाते है ? काल्पनिक ऑकड़ों से सारणी 8 तैयार कीजिए।

प्र. 5 बैंक के 'अग्रिम' किस प्रकार वर्गीकृत किये जाते है? अग्रिम के सम्बन्ध में आयोजन निर्माण करने के मानदण्ड दीजिए।

प्र. 6 एक बैंकिंग कम्पनी के वार्षिक खातों में निम्न मदें कहां और कैसे दिखाई जायेंगी?

(1) जमा तथा अन्य खाते
(2) कमीशन, विनिमय तथा दलाली
(3) समाप्त बट्टा
(4) शाखा समायोजन

प्र. 7 बैंकिंग कम्पनी लेखों मे पदों 'मांग' तथा 'अल्प सूचना पर मुद्रा' 'ग्राहकों के स्वीकृतियां' तथा 'पृष्ठांकन' तथा भुनाये गये तथा क्रय किये गये बिल को समझाइये।

प्र. 8 निम्नलिखित मदों को बैंक के लाभ हानि खातें में किस प्रकार दर्शाते हैं।

(क) डूबत ऋण व संदिग्ध ऋणों के प्रावधान।

(ख) विनियोगों के विक्रय अथवा अवमूल्यन पर हानि।

(ग) ब्याज तथा कटौती से आय।

(घ) गैर–बैंकिंग सम्पतियों पर आय, लाभ अथवा हानि।

व्यवहारिक प्रश्न –

1. The following balances have been extracted from the books of Prakash Commercial Bank Ltd. On 31 st March, 2007. Prepare the relevant Profit and Loss Account and Balance Sheet

31 मार्च, 2007 को प्रकाष कॉमर्षियल बैंक लिमिटेड की पुस्तकों से निम्नांकित शेष लिये गये हैं। सम्बन्धित वर्ष का लाभ–हानि खाता व चिट्ठा बनाइए :

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(,000 omitted)

Paid up Capital (चुकता पूंजी)	20,00,000
Profit and Loss Account-Cr (लाभ–हानि खाता केडिट)	80,666
Current Accounts (चालू खाते)	68,25,658
Fixed Deposits (स्थाई खाते)	77,91,108
Savings Bank Deposits (सेविंग्स बैंक जमा)	51,36,000
Directors' Fees (संचालकों की फीस)	9,960
Auditors' Fees (अंकेक्षकों की फीस)	2,000
Furniture-Cost Rs. 1,00,000 (फर्नीचर–लागत 1,00,000 रू.)	74,560
Interest and Discount (ब्याज एवं बट्टा)	10,20,446
Commission & Exchange (कमीषन एवं विनियम)	2,04,000
Investment Reserve Fund (विनियोग संचय कोष)	70,000
Branch Adjustments-Cr. (षाखा समायोजन–केडिट)	93,788
Postage and Telegrams (पोस्टेज एवं तार)	2,312
Printing and Stationery (छपाई तथा लेखन सामग्री)	6,780
Rent, taxes and Lighting (किराया, कर व रोषनी)	17,014
Provident Fund Contribution (प्रॉविडेंट फण्ड अनुदान)	20,000
Salaries (वेतन)	1,04,300
Premium (प्रीमियम)	3,000
Unexpired Insurance (पूर्वदत बीमा)	874
Stamps in hand (हस्तगत स्टाम्प)	378
Satutory Reserve Fund (वैधानिक रिजर्व फण्ड)	1,30,000
Land and Building-Cost Rs. 6 lakh (भूमि व भवन लागत 6 लाख रू)	4,10,000
Legal expenses (वैधानिक खर्चे)	3,300
Cash in hand (हस्तगत रोकड़)	8,17,648
Deposit with Reserve Bank (रिजर्व बैंक के पास जमा)	8,00,000
Deposit with other Banks (अन्य बैंको के पास जमा)	24,10,250
Advertisement (विज्ञापन)	5,000
Repair and Maintenance (मरम्मत और रख–रखाव)	7,000
Investment (विनियोग)	17,56,000
Loans, Cash Credit and Overdraft (ऋण, नकद साख एवं अधिविकर्ष)	1,40,00,000
Bills Discounted (भुनाये गये बिल)	28,01,040

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Reserve Fund (रिजर्व फण्ड)	4,00,000
Contingency Reserve (सम्भावित–रिजर्व)	1,00,000
Interest on Deposits (जमाओं पर ब्याज)	6,00,000

Other Information (अन्य सूचनाएं) :

(i) The authorized capital of the Bank is 40 lakh Rupees divided into 40,000 Equity Shares of Rs. 100 each. All shares have been subscribed, but only falf of the face value has been called up.

बैंक की 100 रू. वाले 40,000 ईक्विटी अंषों में विभाजित 40 लाख रूपयों की अधिकृत पूंजी है। समस्त अंषों के लिए प्रार्थना पत्र आ गए थे किन्तु अंकित मूल्य की आधी राषि ही मांगी गई हैं।

(ii) The Bank has accepted on behalf of customer's bills worth Rs. 4 lakh anainst securities of the value of Rs. 6 lakh lodged with the bank. (बैंक के पास जमा कराई गई 6 लाख रूपयों की प्रतिभूतियें के विरूद्ध बैंक ने, अपने ग्राहकों की तरफ से 4 लाख रूपयों के बिलों को स्वीकार किया हुआ है।)

(iii) Deprciation is to be written off Rs. 16,000 from Land and Building and Rs. 7,000 from furniture. (भूमि एवं भवन से 16,000 रू. तथा फर्नीचर से 7,000 रू. ह्राय के अपलिखित करने हैं।)

(iv) The market value of Investment on 31 st March, 2006 was Rs. 17,00,000.

(31 मार्च, 2006 को विनियोगों का बाजार मूल्य 17,00,000 रू. था।)

(v) Unexpired Discount on 31 st March, 2007 was Rs. 11,800

(31 मार्च, 2007 को 'बिना अवधि समाप्त हुआ बट्टा' 11,800 रू. था।)

(vi) Transfer to Statutory Reserve

(वैधानिक संचय में स्थानान्तरण) रूपये 1,00,000.

(vii) Transfer to Reserve Fund

(संचय कोष में स्थानान्तरण) रूपये 1,00,000.

(viii) Proposed Dividend

(प्रस्तावित लाभांष) 10 :

2. From the following particulars of a Nationalised Bank, prepare Schedule No. 9 of Advances :

एक राष्ट्रीयकृत बैंक के अग्रलिखित विवरणों से 'अग्रिम की' सारणी सं. 9 तैयार कीजिए :

(000' s omitted)

	As on 31st March, 2007 Rs. (000's omitted)	As on 31st March, 2007 Rs. (000's omitted)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

1. Bills purchased and discounted	1,88,76,005	1,40,54,774
2. Cash Credits, Overdrafts and Loans repayable on demand	6,29,28,128	4,69,78,260
3. Term Loans	2,70,14,719	2,18,34,084
4. Advances secured by tangible assests	7,01,08,601	5,85,31,509
5. Covered by Banks Guarantees	2,78,47,892	1,52,58,516
6. Advances unsecured	1,08,26,099	90,59,875
7. Advances in India		
(i) Priority Sector	3,59,64,819	3,00,23,450
(ii) Public Sector	1,44,78,136	1,09,59,860
(iii) Banks	12,40,826	7,92,354
(iv) Others	5,40,40,775	3,92,38,575
8. Advances outside India		
(i) Bills purchased and discounted	36,260	17,218
(ii) Syndicated Loans	6,33,218	5,23,370
(iii) Others	23,88,558	12,95,073

3. From the following particulars taken from the books of a bank, prepare schedule 8 of Investments:

एक बैंक की पुस्तकों से लिये गये निम्नलिखित विवरण से 'विनियोगों' से सम्बन्धित सारणी 8 तैयार कीजिए।

	As on 31st March, 2007 Rs. (000's omitted)	As on 31st March, 2007 Rs. (000's omitted)
1. Investments in Government Securities	5,49,07,852	4,91,61,147
2. Other approved securities	2,06,20,092	2,09,48,298
3. Shares and Debentures	90,05,733	41,16,569
4. Subsidiaries and/or Joint Ventures	5,42,058	4,80,683
5. Other Investments :		
Indira Vikas Patra & U.T.I Shares	41,300	16,00,512
6. Investmetns outside India in		
(i) Government securities	44,58,881	17,44,179
(ii) Subsidiaries and/or Joint Ventures abroad	2,78,680	2,78,680
(iii) Shares and Debentures	6,21,339	8,05,853

4. The following balances are shown in the subsidiary ledger of a banking company. These do not agree with balances in the General Ledger :

एक बैंकिंग कम्पनी की सहायक खाता बहियों में निम्नलिखित शेष प्रकट होते हैं। ये सामान्य खाता बही के शेषों से मेल नहीं खाते हैं :

	Rs.
Current Account Ledger No. 1	16,00,000
Current Account Ledger No. 2	14,00,000
Savings Account Ledger	4,00,000
Fixed Deosit Ledger	10,20,000
Loan Ledger	13,00,000

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

The following mistakes were discovered :

(i) Rs. 20,000 received in an account in Current Account Ledger No. 2 was credited in the General Ledger to Current Account Ledger No. 1 Control Account
(ii) Fixed Deposit of Gopal for Rs. 2,00,000 paid by transfer to Current Account Ledger No. 1 was not debited to the account in Fixed Deposit Ledger
(iii) Rs. 20,000 received from a Savings Account-holder was credited to the customers' accounts in Fixed Deposit Ledger.
(iv) A sum of Rs. 3,00,000 granted as loan to a customer and debited to his account in the Loan Ledger was not passed through the General Ledger.
(v) Rs. 2,000 debited to an account in the Loan Ledger for interest was credited to the Loan Ledger Control Account in the General Ledger.

Pass correcting journal entries and prepare a statement to show correct balance of the accounts

निम्न अशुद्धियां ज्ञात हुई :

(i) चालू खाते नं. 2 में खुले एक खाते में प्राप्त 20,000 रू. सामान्य खाता बही के चालू खाता लेजर नं. 1 नियन्त्रण खाते को क्रेडिट कर दिये गये।

(ii) गोपाल की 2,00,000 रू. की स्थायी जमा खाता लेजर नं. में स्थानान्तरित करके चुकाई गई लेकिन इसे स्थायी जमा लेजर में डेबिट नहीं किया गया ।

(iii) एक बचत खाते के धारक के प्राप्त 20,000 रू. की स्थायी जमा लेजर में ग्राहक के खाते में जमा कर दिये गये।

(iv) एक ग्राहक को 3,00,000 रू. का ऋण स्वीकार किया गया और ऋण खाता बही में उसके खाते को डेबिट कर दिया गया लेकिन इसकी सामान्य खाता बही में कोई प्रविष्टि नहीं की गई।

(v) ऋण खाता बही में एक खाते को ब्याज के 2,000 रू. डेबिट किये गये लेकिन सामान्य खाता बही में ऋण लेजर नियन्त्रण खाते को क्रेडिट कर दिये गये।

सुधार करते हुए जर्नल प्रविष्टियां दीजिए तथा खातों की सही शेष दिखाते हुए एक विवरण पत्र तैयार कीजिए।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

अध्याय–1

ख्याति का मूल्यांकन
Valuation of Goodwill

विषय सूची (Contents)

4.1 ख्याति की परिभाषा
4.2 ख्याति की विशेषताएं
4.3 ख्याति को प्रभावित करने वाले घटक
4.4 ख्याति के प्रकार
4.5 ख्याति के मूल्यांकन की आवश्यकता
4.6 ख्याति के मूल्यांकन की उपयोगिता शब्दावली
4.6.1 भविष्य में कायम रहने योग्य लाभ
4.6.2 समायोजित लाभ
4.7 ख्याति के मूल्यांकन की विधियां
4.7.1 सामान्य लाभ विधि
4.7.1(a) वर्षों की क्रय विधि
4.7.1(b) लाभों का पूंजीकरण विधि
4.7.2 अधिलाभ विधि
4.7.2(a) अधिलाभों की क्रय विधि
4.7.2(b) अधिलाभों का पूंजीकरण विधि
4.7.2(c) अधिलाभों की वार्षिक वृत्ति विधि
4.7.2(d) अधिलाभों गिरते हुए क्रम में मूल्यांकन
स्व परीक्षा प्रश्न (Self Examination Questions)

4.1 ख्याति की परिभाषा

ख्याति संस्था की प्रतिष्ठा का मूल्य है। ख्याति व्यवसाय के लाभार्जन क्षमता का प्रदर्शन करती है। ख्याति व्यवसाय की अमूर्त सम्पत्ति (Non-tangible Assets) है। विभिन्न विद्धानों ने ख्याति की परिभाषा अलग–अलग ढंग से दी हैं।

1. जॉनसन के अनुसार "ख्याति एक सम्पत्ति या व्यवसाय का वह अमूर्त भाग है जिसकी उत्पति ऐसी सम्पत्तियों या व्यवसाय से परोक्ष रूप से सम्बन्धित घटकों के कारण उत्पन्न नहीं होती है। उदाहरणार्थ ख्याति की उत्पत्ति व्यवसाय की उत्तम प्रतिष्ठा के कारण या सामान्य लाभ से अधिक लाभार्जन क्षमता के कारण हो सकती है।"
2. मोरिशे के अनुसार "ख्याति एक संस्था के आशातीत अधिलाभों का वर्तमान मूल्य है।"

4.2 ख्याति की विशेषताएं (Features of goodwill)

1. ख्याति एक अमूर्त सम्पत्ति है।
2. ख्याति का मूल्य ज्ञात करना कठिन है, क्योंकि व्यवसाय के आंतरिक व बाह्य घटकों के कारण इसका मूल्य दिन–प्रतिदिन घटता–बढ़ता रहता है।
3. ख्याति स्वयं उत्पादक सम्पत्ति नहीं है परन्तु यह व्यवसाय को अधिक लाभ कमाने में सहायता करती है।

4.3 ख्याति को प्रभावित करने वाले घटक (Factors affecting goodwill)

एक व्यापार की ख्याति के मूल्यांकन को मुख्यतया निम्नलिखित तत्त्व प्रभावित करते हैं–

1. **व्यापार का स्थान (Place of Business)–** यदि व्यवसाय किसी विशिष्ट स्थान पर है तो ख्याति का मूल्य अधिक होगा। जैसे कोलकत्ता के बड़ा बाजार में दुकान हो और बीकानेर के बड़ा बाजार में दुकान हो तो बीकानेर की बजाय

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

कोलकत्ता में स्थित दुकान की ख्याति अधिक होगी।

2. **व्यापार की प्रकृति (Nature of Business)–** यदि व्यवसाय एकाधिकार प्रकृति का है तो ख्याति का मूल्य अधिक होगा।
3. **व्यापार की आयु (Age of Business)–** यदि व्यापार पुराना है तो ग्राहकों की संख्या अधिक होगी। इससे लाभ भी अधिक होंगे और ख्याति भी अधिक होगी।
4. **जाखिम की मात्रा (Risk Factors)–** यदि व्यापार में जोखिम अधिक तथा लाभ अनिश्चित हो तो ख्याति का मूल्य भी कम होगा। यदि व्यापार में जोखिम कम है तो ख्याति का मूल्य ज्यादा होगा।
5. **योग्य व कुशल प्रबन्ध (Able and efficient Management)–** यदि व्यापार का प्रबन्ध योग्य एवं कुशल है तो यह लोगों को बढ़ाने में सहायक होगा जिससे ख्याति के मूल्य में वृद्धि होगी।

इसके अलावा व्यवसायी का स्वभाव, पूंजी की आवश्यकता, विज्ञापन, पेटेण्ट एवं ट्रेडमार्क से भी ख्याति प्रभावित होती है।

4.4 ख्याति के प्रकार (Types of goodwill)

ख्याति मुख्यतः दो प्रकार की होती है :

1. क्रय की गई ख्याति (Purchase goodwill) तथा
2. स्वजनित ख्याति (Self Generated goodwill)

1. क्रय की गई ख्याति (Purchases goodwill)

जब किसी अन्य व्यक्ति से व्यापार क्रय करते हैं तो विक्रेता को शुद्ध सम्पत्तियों के मूल्य से अधिक क्रय मूल्य चुकाते हैं तो ये आधिक्य ख्याति होगी।

भारतीय लेखा मानक– 10 के अनुसार ख्याति को लेखा पुस्तकों में उसी अवस्था में प्रदर्शित किया जाता है जब उसके लिए भुगतान किया गया हो।

2. स्वजनित ख्याति (Self Generated goodwill)

यह ख्याति व्यवसाय में स्वतः उत्पन्न होती है। इस ख्याति का लाभ अर्जन करने में महत्त्वपूर्ण योगदान है। भारतीय लेखा मानक– 10 के अनूसार स्वजनित ख्याति को लेखा–पुस्तकों में नहीं दिखाते।

4.5 ख्याति के मूल्यांकन की आवश्यकता (Need for valuation of goodwill)

निम्नलिखित दशाओं में ख्याति के मूल्यांकन की आवश्यकता है–

1. जब व्यापार बेचा जा रहा हो।
2. नए साझेदार का प्रवेश हो।
3. जब साझेदारों के लाभ विभाजन अनुपात में परिवर्तन किया जा रहा हो।
4. जब किसी साझेदारी की मृत्यु हो जाए या निवृत्त हो जाए।
5. जब फर्म को कम्पनी के रूप में परिवर्तन किया जा रहा हो।
6. जब व्यापार का एकीकरण किया जा रहा हो।

4.6 ख्याति के मूल्यांकन में उपयोगी (Useful in valuation of goodwill)

4.6.1 वास्तविक औसत लाभ या भविष्य में कायम रहने योग्य लाभ– इसकी गणना निम्नलिखित चरणों में की जाएगी–

(i) समायोजत लाभ की गणना

शुद्ध लाभ लेंगे परन्तु शुद्ध लाभ में निम्नलिखित व्यय घटे हुए नहीं होने चाहिए जैसे– संचयों में हस्तान्तरण, समता अंशों पर प्रस्तावित लाभांश, असाधारण हानि या व्यय आदि। यदि ऐसे व्यय सम्मिलित है तो इन्हें वापस लाभ में जोड़ देना चाहिए। लेकिन शुद्ध लाभ में निम्नलिखित आय भी जुड़ी हुई नहीं होनी चाहिए जैसे गैर विनियोग से आय, असाधारण लाभ या आय। यदि ऐसी आय सम्मिलित है तो उसे उस वर्ष के लाभ में से घटा देना चाहिए।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Statement Showing Adjusted Profit

	Rs.
Net Profit before tax	---
Add : Abnormal Expenses & Losses (if debited in P & L a\c)	
(e.g. Loss on Sale of Fixed Assets ect.)	---

Less : Abnormal Income and Profit (if credited in P & L a\c)	
(e.g. Speculation profit)	---
Preference Share dividend	---
Provision for Taxation	---
Provision for Bad and Doubtful Debts (due to accounting error)	---
Income of Non-trade Investments (if unequal income in every year)	---
Adjusted Profit	---

(ii) औसत लाभ की गणना– औसत लाभ ज्ञात करने के लिए पिछले तीन या पांच वर्षों के समायोजित लाभ का सरल औसत निम्नलिखित ज्ञात किए जाता है–

$$\textbf{Simple Average Profit} = \frac{\textbf{Total adjusted profit of given number of year}}{\textbf{Number of years}}$$

नोट :– यदि पिछले वर्षों के समायोजित लाभों के बढ़ने या घटने की प्रवृत्ति हो तो सामान्य औसत लाभ की जगह भारित औसत (Weight Average) ज्ञात किया जाएगा। इसके प्रथम वर्ष के लाभों को 1, दूसरे वर्ष के लाभों को 2 व आगे के वर्षों के लाभों को 3, 4 व 5 भार प्रदान करेंगे व इसके पश्चात् भारित औसत अग्र प्रकार से ज्ञात किया जाएगा।

$$\textbf{Weight Average Profit} = \frac{\textbf{Total Product of profit \& Weights}}{\textbf{Total of Weights}}$$

वास्तविक औसत लाभों या भविष्य में कायम रहने योग्य लाभों की गणना

उपर्युक्त औसत लाभों में निम्नलिखित समायोजन करके वास्तविक औसत लाभ ज्ञात किए जाएंगे–

(अ) व्यापार के स्वामी या साझेदारों को पारिश्रमिक (Remuneration to owner or Partners)– यदि व्यवसाय के स्वामी द्वारा व्यवसाय का संचालन किया जाता है तो उसके पारिश्रमिक को औसत लाभों में घटाया जाना चाहिए, क्योंकि अब इस कार्य के लिए कर्मचारी रखना पड़ेगा और उसे पारिश्रमिक का भुगतान करना पड़ेगा। कम्पनी की स्थिति में ये समायोजन नहीं किया जाएगा।

(ब) ऐसे व्यय जो भविष्य में नहीं होंगे (Expenses that will not Incur in future)– ऐसे खर्चे जो भविष्य में नहीं होंगे को औसत लाभों में जोड़ दिया जाएगा।

(स) ऐसे व्यय जो भविष्य में उत्पन्न होंगे (Expenses that will Incur in future)– यदि भविष्य में किसी व्यय के उत्पन्न होने या वृद्धि होने की संभावना हो तो व्यय के औसत लाभों में घटाएंगे।

(द) ऐसी आय जो भविष्य में उत्पन्न होगी (Income that will arise in future)– किसी नए मद के अन्तर्गत भविष्य में आय होने की संभावना हो जो कि गत वर्षों में अर्जित नहीं हुई थी, तो ऐसी नई आय को औसत लाभ में जोड़ देना चाहिए।

(य) ऐसी आय जो भविष्य में उत्पन्न नहीं होगी (Income that will not arise in future)– ऐसी आय को औसत लाभ में से घटा दिया जाएगा।

(र) स्थाई सम्पत्तियों के पुनर्मूल्यांकन पर अतिरिक्त मूल्य–ह्रास (Expenses that will Incur in future)– स्थाई सम्पत्तियों पर अतिरिक्त मूल्य–ह्रास की राशि को औसत लाभों में घटाया जाएगा और मूल्य–ह्रास की बचत को लाभों में जोड़ा जाएगा।

यदि प्रश्न में मूल्य–ह्रास की दर नहीं दे रखी हो तो निम्नलिखित दरों का प्रयोग करना चाहिए–

Fixed Assets	Estimated Rate of Depricaition
Land	Nil

Cont.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Buildings	**10% p.a.**
Plant & Machinery	**15% p.a.**
Motor & Vehicles	**20% p.a.**
Furniture	**10% p.a.**

(ल) गैर–व्यापारिक विनियोगों से आय– गैर व्यापारिक विनियोंगो से अर्जित आय को गैर–व्यापारिक आय मानते हुए औसत लाभों में से घटा दिया जाता है।

(व) देनदारों पर डूबत ऋण आयोजन– यदि आयोजन किसी वर्ष विशेष में लेखांकन त्रुटि के कारण है तो उस वर्ष के लाभों में से घटाते है। यदि यह भविष्य के आशातीत लाभों पर दिया गया हो तो इसे औसत लाभ में से घटाते हैं। यदि लेखांकन त्रुटि है, तो इसे सम्बन्धित देनदारों में से घटाया जाएगा एवं औसत विनियोजित पूंजी ज्ञात करने के लिए घटाये जाने वाले चालू वर्ष के लाभ में से भी इसे घटाया जाएगा।

(ष) कर के लिए आयोजन को औसत लाभ में से घटा देना चाहिए।

Statement Showing Actual Average Profit or Future Maintainable Profit

			Rs.
Average Profit			---
Add :	Exepenses that will not incur in future		---
	Income and profit that will arise in future		---
	Saving in Depreciation due to decease in value of Fixed assets		---
			---
Less :	Expenses that will incur in future	---	
	Provision for Taxation	---	
	Provision for Bad and Doubtful Debts	---	
	Income of Non-trade Investments	---	
	Income and profit that will not arise in future	---	
	Fair remuneration of the owner	---	
	Additional Depreciation on Increased value of Assets	---	---
	Future Maintainable Profit or Actual Average Profit		---

Illustration 1

1 अप्रैल 2009 को सलमान ने अभिषेक का व्यापार क्रय किया। अभिषेक ने 31 मार्च को समाप्त हुए पिछले वर्षों में प्रतिवर्ष लाभ कमाएं– 2006 में 1,90,000 रु., 2007 में 2,10,000 रु., 2008 में 2,50,000 रु. एवं 2009 में 70,000 रु.।

यह पता लगा कि 2006 के लाभों में 32,000 रु. का सम्पत्ति विक्रय से लाभ तथा 2007 वर्ष के लाभों में 30,000 रु. की असाधारण हानि सम्मिलित थी। सलमान वर्तमान में एक लेखापाल के रूप में कार्यरत है और 5,000 रु. मासिक वेतन मिल रहा था। सलमान अपने लेखापाल की सेवाएं समाप्त करना चाहता है जो वर्तमान में 1800 रु. मासिक वेतन पा रहा है। आपको वास्तविक औसत लाभों की गणना करनी है।

Solution

Step I Calculation of Adjusted Profit

	Rs.	**Rs.**
Year ended 31 March, 2006	1,90,000	
Less : Profit on Sale of Assets	32,000	1,58,000
Year ended 31 March, 2007	2,10,000	
Add : Abnormal Loss	30,000	2,40,000
Year ended 31 March, 2008		2,50,000
Year ended 31 March, 2009		70,000

Step II Calculation of Average Profit

Year ended 31 March	**Profit**	**Weight**	**Products**
2006	1,58,000	1	1,58,000

Cont.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

2007	2,40,000	2	4,80,000
2008	2,50,000	3	7,50,000
2009	70,000	4	2,80,000
		10	16,68,000

$$\text{Weight Average Profit} = \frac{\text{Total Product of profit \& Weights}}{\text{Total of Weights}}$$

$$= \frac{16,68,000}{10} = 1,66,800$$

Step III Calculation of Actual Average Profit

Average Profit	1,66,800
Add : Expenses not to be Paid in Future (Salary of accountant 1,800 x 12)	21,600
	1,88,400
Less : fair remuneration of Salman as on opportunity Cost (5,000 x 12)	60,000
Actual Average Profit or Future M. P.	1,28,400

(2) अधिलाभ (Super Profit)

वास्तविक औसत लाभ का सामान्य लाभ पर आधिक्य ही अधिलाभ कहलाता है। सूत्र रूप में

अधिलाभ = वास्तविक औसत लाभ – सामान्य लाभ

वास्तविक औसत लाभ की गणना पूर्व में वर्णित विधि के अनुसार ही की जाएगी। सामान्य लाभों की गणना निम्नलिखित सूत्रानुसार की जाएगी–

$$\text{सामान्य लाभ– औसत विनियोजित पूंजी} \times \frac{\text{सामान्य प्रत्याय दर}}{100}$$

(i) औसत विनियोजित पूंजी (Average Capital Employed)

विनियोजित पूंजी ज्ञात करने के सर्वप्रथम व्यापार की सम्पत्तियों में दायित्वों को घटा देना चाहिए। विनियोजित पूंजी ज्ञात करते समय सम्पत्तियों में गैर व्यापारिक विनियोग, ख्याति, कृत्रिम सम्पत्तियां (प्रारम्भिक व्यय, निर्गमन पर बट्टा, अभिगोपन पर कमीशन, विविध व्यय, निर्गमन) आदि को सम्मिलित नहीं करेंगे। यदि सम्पत्तियों का बाजार मूल्य ज्ञात है तो विनियोजित पूंजी की गणना में बाजार मूल्य ही आधार होगा।

Statement Showing Capital Employed

		Rs.
Assets :		
Fixed Assets (At realisable value)		---
Current Assets (After provision)		---
Trade Investment		---
Patent and Trademark (at realisable value)		---
(Fictitious assets will not be considered)		

Less : All Current Laibilities	---	
All Long-term liabilities	---	
Provision for Taxation	---	
Provision for Depreciation (if reaslisable value of asset not given)	---	
Fund for Future Liabilities (e. g. Provident Fund, Gratuity Fund etc.)	---	
Preference Share Capital (Non-participating)	---	
Proposed dividend on preference shares	---	---
Closing Capital Employed		---

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

प्रारम्भिक विनियोजित पूंजी ज्ञात हो तो औसत विनियोजित पूंजी

$$\textbf{Average Capital Employed} = \frac{\textbf{Opening Capital Employed + Closing Capital Employed}}{2}$$

• यदि वर्ष के अन्त की पूंजी में वर्ष का सम्पूर्ण लाभ शामिल हो तो लाभ का आधा भाग अन्त की पूंजी में से घटा देना चाहिए।

• यदि वर्ष के अन्त की पूंजी में पिछले वर्ष का लाभ सम्मिलित नहीं है परन्तु यह लाभ वर्ष के अन्त में व्यापार से निकाला गया है जो औसत पूंजी ज्ञात करने के लिए वर्ष का आधा लाभ अन्त की पूंजी में जोड़ देंगे।

• यदि वर्ष में समय–समय पर व्यापार से लाभ निकाला जाता है तो लाभ के सम्बन्ध में कोई समायोजन नहीं करेंगे और वर्ष के अन्त की पूंजी ही औसत विनियोजित पूंजी होगी।

औसत विनियोजित पूंजी ज्ञात करने की वैकल्पिक विधि–

जोड़िए–
1. समता अंश पूंजी
2. सभी प्रकार के संचय एवं आधिक्य
3. सम्पत्तियों एवं दायित्वों के पूनर्मूल्यांकन पर लाभ

घटाइए –
1. सम्पत्तियों एवं दायित्वों के पूनर्मूल्यांकन पर हानि
2. गैर–व्यापारिक विनियोग
3. कृत्रिम सम्पत्तियां
4. लाभ–हानि खाते का डेबिट शेष
5. चालू वर्ष का कर के पश्चात् लाभ का 50%

सामान्य प्रत्याय दर (Normal Rate of Returen) – सामान्यतया व्यवसाय द्वारा की जा रही लाभार्जन दर या बाजार में प्रचलित ब्याज दर सामान्य प्रत्याय दर होती है। सामान्य प्रत्याय दर की गणना प्रश्न में दी गई सूचना के आधार पर निम्नलिखित में से किसी भी सूत्र से की जा सकती है–

Normal Rate of Returen = Pure Rate + Premium for Risk factor

Or

$$\frac{\text{Dividend per share}}{\text{Market Price per share}} \times 100$$

Or

$$\frac{\text{Sum of Dividend Rates declared in last year}}{\text{No. of Years}} + \text{Premium for Risk factor}$$

Illustration 2

निम्नलिखित चिट्ठे से शान्ति लि. की औसत विनियोजित पूंजी की गणना कीजिए–

Balance Sheet as at 31st March, 2009

Liabilities	Rs.	Assets	Rs.
Equity Share Capital	2,50,000	Goodwill	30,000
General Reserve	25,000	Land & Building (at cost)	2,00,000
Profit & Loss A\c	1,25,000	Stock	1,00,000
Depreciation fund	10,000	Debtors	1,80,000
Sundry Creditors	70,000	Cash in hand	20,000
Bank overdraft	50,000	Prepaid Exp.	10,000
Outstanding expense	20,000	Preliminary Exp.	10,000
	5,50,000		5,50,000

भवन का वर्तमान वसूली मूल्य 1,20,000 रु. है। देनदार 1,90,000 रु. अनुमानित किए गए। 5000 रु. के लेनदार कई वर्षों के है जिन्हें अब चुकाना नहीं पड़ेगा। शान्ति लि. में 2008–09 में 90,000 रु. का शुद्ध लाभ कमाया।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Solution

Statement Showing Capital Employed

		Rs.
Building (At realisable value)		1,20,000
Stock		1,00,000
Debtors		1,90,000
Cash in hand		20,000
Prepaid Exp.		10,000
		4,40,000
Less : Laibilities		
Sundry Creditors (70,000 - 5,000)	65,000	
Bank overdraft	50,000	
Outstanding expense	20,000	1,35,000
Closing Capital Employed		3,05,000
Calculation of Average Capital Employed		
Closing Capital Employed		3,05,000
Less : 1\2 of Current year's Profit (1\2 X 90,000)		45,000
Average Capital Employed		2,60,000

नोट : भवन को बाजार मूल्य पर लिया गया है, अतः मूल्य–ह्रास कोष को नहीं घटाया गया है।

Illustration 3

31 मार्च 2009 को प्रतीक एण्ड क. का अग्रलिखित चिट्ठा है–

Balance Sheet as at 31st March, 2009

Liabilities	Amount	Assets	Amount
Capital	3,00,000	Goodwill	50,000
Loan	1,00,000	Land & Building	2,00,000
Provision for Debtors	6,000	Plant & Building	1,00,000
Sundry Creditors	74,000	Stock	70,000
Outstanding expense	20,000	Sundry Debtors	60,000
		Cash at Bank	20,000
	5,00,000		5,00,000

प्रति वर्ष 31 मार्च को समाप्त होने वाले गत पांच वर्षों का शुद्ध लाभ (कर से पूर्व) क्रमशः 40,000 रु., 60,000 रु., 1,20,000 रु., 1,90,000 रु., 1,70,000 रु. थे। 31 मार्च, 2005 के लाभ में पूंजीगत लाभ 10,000 रु. शामिल था और 31 मार्च, 2009 को समाप्त हुए वर्ष लाभ 7,500 रु. आग से हुई हानि के बाद था। आयकर की दर 50% एवं लाभ की दर 20% है। अधिलाभ ज्ञात कीजिए।

Solution

Step I Calculation of future maintainable Profit

Net profit for the year ended

	Rs.	**Rs.**
Year ended 31 March, 2005	40,000	
Less : Capital Profit	10,000	30,000
Year ended 31 March, 2006		60,000
Year ended 31 March, 2007		1,20,000
Year ended 31 March, 2008		1,90,000
Year ended 31 March, 2009	1,70,000	
Less : Capital Profit	7,500	1,77,500
Total Profit for 5 Years		5,77,500

Cont.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Average Annual Profit	1,15,500
Less : Income tax @ 50%	57,500
future maintainable Profit	57,500

Step II Calculation of Normal Profit

	Capital as on 31st March, 2009	3,00,000
Less :	Book value of goodwill	50,000
	Capital Employed	2,50,000

Normal Profit = Capital employed X Normal Rate

= 2,50,000 X 20% = 50,000

Annual Super Profit = 57,500 - 50,000 = Rs. 7,500

4.7 ख्याति के मूल्यांकन की विधियां

4.7.1 सामान्य लाभ विधि

4.7.1 (a) वर्षों की क्रय विधि

4.7.1 (b) लाभों का पूंजीकरण विधि

4.7.2 अधिलाभ विधि

4.7.2 (a) अधिलाभों की क्रय विधि

4.7.2 (b) अधिलाभों का पूंजीकरण विधि

4.7.2 (c) अधिलाभों की वार्षिक वृत्ति विधि

4.7.2 (d) अधिलाभों गिरते हुए क्रम में मूल्यांकन

4.7.1(a) वर्षों की क्रय विधि (Year's Purchases method)–

इस विधि में "भविष्य में कायम रहने योग्य लाभ" (FMP) को निश्चित वर्षों की संख्या से गुणा करके ख्याति का मूल्य ज्ञात किया जाएगा। सूत्र रूप में–

औसत लाभ x क्रय किए गए वर्षों की संख्या

इस विधि में निम्नलिखित कमियां है–

(1) लाभों के गुणा करने के लिए वर्षों की संख्या निर्धारण एक कठिन कार्य है क्योंकि यह भविष्य में होने वाली अनेक घटनाओं की संभावनाओं पर निर्भर करता है।

(2) इस विधि से व्यवसाय में विनियोजित पूंजी की मात्रा का ध्यान नहीं रख जाता है।

Illustration 4

किशन ने नरेन्द्र का व्यवसाय क्रय करने का विचार किया। 31 मार्च, 2009 को समाप्त होने वाले वर्ष का चिट्ठा निम्नलिखित प्रकार था–

Balance Sheet as at 31st March, 2009

Liabilities	Amount	Assets	Amount
Capital	24,00,000	Land & Building	5,00,000
Profit & Loss A\c	6,00,000	Plant & Building	5,00,000
Sundry Creditors	5,00,000	Stock	7,00,000
		Sundry Debtors	13,00,000
		Investement	2,00,000
		Cash at Bank	3,00,000
	35,00,000		35,00,000

ख्याति का मूल्यांकन गत तीन वर्षों के सामान्य लाभों के क्रय के आधार पर किया जाएगा। यह तय हुआ कि देनदारों पर 5% की दर से डूबत ऋण के लिए आयोजन बनाया जाए। सभी सम्पत्तियों का पुस्तक मूल्य उचित है सिवाय मशीन, भवन एवं स्टॉक के जिनका वर्तमान में बाजार मूल्य क्रमशः 4,00,000 रु. व 7,00,000 रु. एवं स्टॉक का 7,50,000 रु. है। पिछले पांच वर्षों के शुद्ध लाभ क्रमशः 3,50,000 रु., 5,00,000 रु., 4,00,000 रु., 5,50,000 रु. एवं 6,50,000 रु. है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

यह मानते हुए कि नरेन्द्र का उचित पारिश्रमिक 15,000 रु. वार्षिक है, मूल्य–ह्रास की दर भवन पर 10% एवं मशीनरी पर 15% है। ख्याति की राशि की गणना कीजिए। आयकर का ध्यान नहीं रखना है।

Solution

Step I Calculation of future maintainable Profit

Total Net profit for the past 5 years

(3,50,000 + 5,00,000 + 4,50,000 + 5,50,000 + 6,50,000)

Total Profit for 5 Years		= 25,00,000
Average Annual Profit 25,00,000\5		= 5,00,000
Less : Fair Remuneration payable to owner	15,000	
Provision for Baddebts (5% 13,00,000)	65,000	
Additional depreciation	5,000	85,000
Future Maintainable Profits		4,15,000

Value of goodwill = FMP X 3

4,15,000 X 3 = Rs. 12,45,000

(ब) लाभों का पूंजीकरण विधि (Capitalisation of Average profit Method)– इस विधि के अन्तर्गत लाभों का पूंजीकृत मूल्य ज्ञात किया जाता है। इस विधि से ज्ञात किया जाता है कि व्यवसाय में प्रचलित सामान्य प्रत्याय दर से लाभ कमाया जाए तो कितनी पूंजी की आवश्यकता होगी।

ख्याति की गणना– इस विधि द्वारा ख्याति की गणना के लिए निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई जाएगी–

Step-1 भविष्य में कायम रहने योग्य लाभ की गणना

Step-2 सामान्य प्रत्याय दर के आधार पर व्यवसाय के भविष्य में कायम रहने योग्य लाभ का पूंजीगत मूल्य अर्थात् व्यवसाय का मूल्य निम्नलिखित सूत्र द्वारा ज्ञात किया जाएगा–

$$\text{Value of Business} = \frac{\text{Future Maintainable profit}}{\text{Normal Rate of Return}} \times 100$$

Step-3 व्यवसाय की वास्तविक औसत विनियोजित पूंजी (ख्याति के अतिरिक्त) की गणना कीजिए।

Step-4 ख्याति का मूल्य इस प्रकार ज्ञात किया जाएगा–

Value of goodwill = Value of Business - Capital Employed

Illustration 5

31 मार्च, 2009 को रोहित ने राजा हसन का व्यापार क्रय किया। राजा हसन के गत वर्षों का औसत लाभ 5,00,000 रु. है।

यह तय किया गया कि उक्त लाभ की गणना में 15,000 रु. राजा हसन के पारिश्रमिक के शामिल है जो रोहित द्वारा नहीं लिया जाएगा। रोहित व्यवसाय का संचालन 48,000 रु. वार्षिक किराए के कार्यालय में किया जाएगा जबकि राजा हसन स्वयं के भवन में व्यवसाय संचालित करता है।

1 अप्रैल, 2008 को राजा हसन की शुद्ध सम्पत्तियों का मूल्य 36,50,000 रु. था। इस प्रकार के व्यवसाय में सामान्य प्रत्याय दर 10% है।

Solution

Step I Calculation of future maintainable Profit	**Rs.**
Average Net profit	5,00,000
Add : Expenses that will not Incurred in future (owner Remuneration)	15,000
	5,15,000
Less : Expenses that will Incurr in future (office rent)	48,000
Future maintainable Profit	4,67,000

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Step II Calculation of Value of Business

$$\text{Value of Business} = \frac{\text{Future Maintainable profit}}{\text{Normal Rate of Return}} \times 100$$

$$= \frac{4,67,000}{10} \times 100 = \text{Rs. } 46,70,000$$

Step III Calculation of Average Capital Employed

Capital Employed at the beining	36,50,000
Add : 1\2 of Current year's Profit (1\2 X 5,00,000)	2,50,000
Average Capital Employed	39,00,000

Step IV Calculation of Value of goodwill

Value of goodwill = Value of Business - Average Capital Employed
= 46,70,000 - 39,00,000 = Rs. 7,70,000

(ii) (अ) अधिलाभों की क्रय विधि– इस विधि में अधिलाभों (Super profit) को निश्चित वर्षों की संख्या से गुणा करके ख्याति का मूल्य ज्ञात किया जाएगा। सूत्र रूप में–

ख्याति = अधिलाभ x क्रय किए गए वर्षों की संख्या

Goodwill = Super profit x no. of years

(ब) अधिलाभों की पूंजीकरण विधि (Capitalisation of Super profit method)– इस विधि के अन्तर्गत अधिलाभों का पूंजीकृत मूल्य ज्ञात किया जाता है। सामान्य लाभों के पूंजीकरण की तरह ही अधिलाभों के पूंजीकृत मूल्य की गणना का निम्नलिखित सूत्र का प्रयोग करके ख्याति का मूल्य ज्ञात किया जाएगा।

$$\text{Goodwill} = \frac{\text{Amount of Super profit}}{\text{Normal rate of Return}} \times 100$$

Illustration 6

निम्नलिखित सूचना से (i) वास्तविक औस्त लाभों के तीन वर्षों के क्रय द्वारा (ii) अधिलाभों के 10 वर्ष के क्रय द्वारा एवं (iii) पूंजीकरण विधि द्वारा ख्याति का मूल्य ज्ञात कीजिए–

(1) औसत विनियोजित पूंजी 4,00,000 रु.।

(2) पिछले चार वर्षों के शुद्ध व्यापारिक लाभ क्रमशः 68,000 रु., 75,000 रु., 80,000 रु. एवं 92,000 रु.।

(3) इसी प्रकार के व्यवसाय में सामान्य प्रत्याय की दर 15%।

(4) पिछले दो वर्षों के लाभों में गैर व्यापारिक विनियोगों से 3,000 रु. की आय सम्मिलित है।

(5) स्वामी का उसकी सेवाओं के लिए उचित पारिश्रमिक 15,000 रु. वार्षिक है।

(R. U. B.Com., 2005)

Solution

Step I Calculation of future maintainable Profit

ear ended 31 March	Profit	Weight	Products
I year	68,000	1	68,000
II year	75,000	2	1,50,000
III year (80,000 -3,000)	77,000	3	2,31,000
IV year (92,000 -3,000)	89,000	4	3,56,000
		10	8,05,000

$$\text{Weight Average Profit} = \frac{\text{Total Product of profit \& Weights}}{\text{Total of Weights}}$$

$$= \frac{8,05,000}{10} = \text{Rs. } 80,500$$

Less : Fair remuneration of owner	15,000
Future Maintainable Profit	65,000

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Step II Calculation of Normal Profit

15% on Average Capital Employed

(4,00,000 X 15%) = 60,000

Step III Calculation of Super Profit

Actual Average Profit - Normal Profit

65,500 - 60,000 = 5,500

Step IV Calculation of Value of goodwill

(i) By 3 year's Purachase of Actual Average Profit

(3 X 65,500) = 1,96,500

(ii) By 10 year's Purachase of Super Profit

(10 X 5,500) = Rs. 55,000

(iii) Capitalisation method

(a) Base on Actual Average profit

$$\text{Value of Business} = \frac{\text{Future Maintainable profit}}{\text{Normal Rate of Return}} \times 100$$

$$= \frac{65{,}500}{15} \times 100 = \text{Rs. } 4{,}36{,}667$$

Value of goodwill = Value of Business - Average Capital Employed

= 4,36,667 - 40,00,000 = Rs. 36,667

(b) Base on Super profit

$$\text{Goodwill} = \frac{\text{Amount of Super profit}}{\text{Normal rate of Return}} \times 100$$

$$= \frac{5{,}500}{15} \times 100 = \text{Rs. } 36{,}667$$

(C) वार्षिक वृत्ति विधि (Annuity Method)– व्यापार का क्रेता ख्याति मूल्य का भुगतान भविष्य में होने वाले लाभ की आशा में करता है। इससे क्रेता को ब्याज की हानि होती है, क्योंकि ख्याति का सम्पूर्ण राशि का भुगतान एक साथ किया जाता है, जबकि उसको अतिरिक्त लाभ अगले 3–4 वर्षों में प्राप्त होता है। वार्षिक विधि के अन्तर्गत इस दोष को दूर कर दिया गया है और ब्याज को ध्यान में रखते हुए ख्याति का मूल्यांकन किया जाता है।

इस विधि में ख्याति की गणना के लिए 1 रु. की वार्षिक वृत्ति का वर्तमान मूल्य वृत्ति सारणी (Annuity Table) या निम्नलिखित सूत्र द्वारा ज्ञात किया जाएगा–

Goodwill = Super profit x P. V. of Re. 1

$$\text{P. V. of Re. 1} = \frac{1 - \left(\frac{1}{1+r}\right)^n}{r}$$

यहां पर

वृत्ति सारणी से वर्तमान मूल्य की गणना ब्याज दर एवं वर्षों की संख्या के आधार पर ज्ञात किया जाता है।

ख्याति = अधिलाभ X एक रुपये का वर्तमान मूल्य

Illustration 7

निम्नलिखित सूचनाओं के आधार पर ख्याति का मूल्यांकन वार्षिक वृत्ति विधि के आधार पर कीजिए–

(1) शुद्ध लाभ (कर घटाने के बाद) वर्ष 2007 में 1,90,000 रु., 2008 में 1,50,000 रु. और वर्ष 2009 में 2,30,000 रु.।

(2) औसत विनियोजित पूंजी 8,25,000 रु.।

(3) लाभ की सामान्य दर 12%।

(4) ख्याति का मूल्यांकन अधिलाभ के 3 वर्षों के क्रय की वार्षिक विधि के आधार पर करना है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Solution

Step I Calculation of future maintainable Profit

Total Net profit for the past 3 years

(1,90,000 + 1,50,000 + 2,30,000)

Total Profit for 3 Years = 5,70,000

Average Annual Profit 5,70,000\3 = 1,90,000

Step II Calculation of Super Profit

Actual Average Profit - Normal Profit on average Capital employed

1,90,000 - 12% of Rs. 8,25,000 = 99,000

1,90,000 - 99,000 = Rs. 91,000

Step III Calculation of Value of goodwill

Value of goodwill = Super Profit x Annuity factor (as calculare above)

91,000 X 2.402

= Rs. 2,18,582

Annuity factor of Re. 1 for 3 years at 12% normal profit

=

$$\text{P. V. of Re. 1} = \frac{1 - \left(\frac{100}{100 + 12}\right)^3}{\frac{12}{100}}$$

= 2.402

Illustration 8

भरत अपना व्यापार मुदित को बेचना चाहता है। निम्नलिखत तथ्यों को ध्यान में रखते हुए ख्याति की राशि ज्ञात कीजिए–

भरत का लाभ–हानि खाता निम्नलिखित शेष बताता है– 2004 में लाभ 6,00,000 रु., 2005 में लाभ 5,40,000 रु., 2006 में लाभ 10,80,000 रु., 2007 में लाभ 1,00,000 रु. और 2008 में लाभ 9,00,000 रु.।

1. ख्याााति पिछले 5 वर्षों के औसत लाभों के 3 वर्षों के क्रय पर मूल्यांकित की जाती है।
2. 2006 वर्ष के लाभ हानि खाते में सट्टे का लाभ 2,40,000 रु. था।
3. 2007 वर्ष में एक मशीन बेची गई जिसकी हानि 3,60,000 रु. को लाभ हानि खाते में दिखा दिया गया।
4 मुदित को भरत के लेखापाल की सेवाओं की आवश्यकता नहीं होगी जिसे 5,000 रु. मासिक वेतन चुकाया जाता था। मुदित स्वयं एक लेखापाल है जो फर्म के लेखों को रख सकता है।
5. मुदित वर्तमान में एक सीमित कम्पनी में 5,500 रु. मासिक पर नौकरी कर रहा है अब उसे अपनी नौकरी छोड़नी पड़ेगी।

Solution

Net Profit of Last 5 years-

Year ended on 31st March	Profit Rs.	Adjustment Rs.	Actual Rs.
2003	6,00,000	---	6,00,000
2004	5,40,000	---	5,40,000
2005	10,80,000	(-) 2,40,000	8,40,000
2006	1,00,000	(+) 3,60,000	4,60,000
2007	9,00,000	---	9,00,000
		-	33,40,000

	Rs.
Average Profit = Rs. 33,40,000 /5	6,68,000
Add: Salary of Accountant not to be paid (5,000 X 12)	60,000
	7,28,000
Less: Fair Remunerationn of kanan(5,500 X 12)	66,000
Actual Average Profit	6,62,000

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Value of Goodwill = Actual Average profit X 2 years
= 6,62,000 X 3 = Rs. 19,86,000

4.7.2 (d) अधिलाभों गिरते हुए क्रम में मूल्यांकन (Sliding Scale Valuation of Super Profit)

इस विधि को कटफार्थ ने अपनी पुस्तक "Methods of Amalgamation and Valuation of Business" में लिखा। कटफार्थ के अनुसार अधिलाभ जितना अधिक होगा उतनी ही उसको भविष्य में अर्जित करने की अवधि कम होगी। इस विधि के अन्तर्गत सम्पूर्ण वार्षिक अधिलाभ को कुछ भागों में बांट देते हैं और प्रत्येक भाग को गिरते हुए क्रम में अलग–अलग वर्षों की संख्या से गुणा करते है।

स्व परीक्षा प्रश्न (Self Examination Questions)

अति–लघुत्तरात्मक प्रश्न (Very-Short Answer Type Questions)

1. अधिलाभ के पूंजीकरण द्वारा ख्याति का मूल्य ज्ञात करने का सूत्र क्या है? (R. U.,B.Com., 2008)
2. भविष्य में कायम रहने योग्य लाभ क्या है?

लघुत्तरात्मक प्रश्न (Short Answer Type Questions)

1. अधिलाभ से क्या आशय है? ख्याति की गणना के लिए अधिलाभ की गणना करने की विधि समझाइए। (R. U.,B.Com., 2002)
2. ख्याति के मूल्यांकन के कौन–कौन से आधार है? उनके नाम बताइए। (Bikaner Univ. B.Com., 2005)
3. ख्याति की लेखांकन अवधारणा को स्पष्ट कीजिए।
4. ख्याति के संदर्भ में 'व्यवसाय में विनियोजित पूंजी' से क्या तात्पर्य है?

सैद्धान्तिक प्रश्न (Theoretical Questions)

1. ख्याति की अवधारणा का वर्णन कीजिए तथा उसके मूल्यांकन की विभिन्न विधियों को समझाइए। (Bikaner Univ. B.Com., 2004)
2. ख्याति के मूल्यांकन के लिए 'भविष्य में कायम रहने योग्य लाभ' 'औसत विनियोजित पूंजी', 'सामान्य प्रत्याय दर' एवं अधिलाभ की अवधारणा की उचित उदाहरणों सहित व्याख्या कीजिए। (Bikaner Univ. B.Com., 2006)

व्यावहारिक प्रश्न (Practical questions)

1. चिट्ठे की तिथि को एक फर्म की शुद्ध सम्पत्तियों का मूल्य 2,00,000 रु. था। 2,00,000 रु. में से 20,000 के गैर–व्यापारिक विनियोग 5% सरकारी प्रतिभूतियों में शामिल थे, जिन्हें उनके अंकित मूल्य पर खरीदा गया था। उपर्युक्त विनियोग की आय को शामिल करते हुए भविष्य के आशातीत लाभ 30,000 रु. हैं। सामान्य प्रत्याय दर व्यवसाय में चालू वर्ष की अन्तिम विनियोजित पूंजी पर 10% है।

   ख्याति का मूल्यांकन कीजिए :

   (i) (अ) आशातीत लाभों के तीन वर्षों के क्रय के आधार पर; (ब) अधिलाभों के पांच वर्षों के क्रय के आधार पर,

; (ii) (a) आशातीत लाभों के, तथा (b) अधिलाभों के पूंजीकरण के आधार पर;

   (iii) अधिलाभों की 5 वर्षीय वार्षिक वृत्ति के आधार पर। (MLS Univ. Udaipur, 2005)

Ans. Value of goodwill (i)(a) Rs. 87,000 (b) Rs. 55,000 (ii) Rs. 1,10,000 and (iii) Rs. 41,701

2. रमेश एक जनरल स्टोर संचालित करता है। इसका भूस्वामी उसके व्यवसाय को खरीदने का इच्छुक है। इस प्रयोजन के लिए ख्याति का मूल्यांकन पिछले चार वर्षों के भारित औसत लाभ के तीन गुने के बराबर किया जाना तय होता है। उपर्युक्त भार तथा इन वर्षों के लाभ अग्र प्रकार हैं–

Year	**Weight**	**Profits (Rs.)**
2004-05	1	10,100
2005-06	2	10,400
2006-07	3	12,000
2007-08	4	15,000

लेखों की जांच पर निम्नलिखित बातें प्रकट हुई–

(अ) 1 दिसम्बर, 2005 को प्लाण्ट के सम्बन्ध में एक भारी मरम्मत का काम किया गया था जिस पर 3,000 रु.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

व्यय हुए थे। इस राशि को लाभ–हानि खाते से चार्ज कर लिया गया था। ख्याति का मूल्यांकन करने के लिए इस राशि का पूंजीकरण किया जाना तय होता है, लेकिन इसमें क्रमागत ह्रास अवधि से 10 प्रतिशत वार्षिक की दर से मूल्य–ह्रास का समायोजन करना है।

(ब) वर्ष 2005–06 के लिए अन्तिम रहतिये का मूल्य 1,200 रु. अधिक लगाया गया था।

(स) ख्याति के मूल्याकंन के लिए प्रबन्धकीय लागत के समबन्ध में 2,400 रु वार्षिक लगाना है।

रमेश के व्यापार की ख्याति का मूल्यांकन कीजिए। (Bikaner Univ., 2007., R.U.B.com.,1998)

Ans. Value of goodwill Rs. 32,396

3. कारण सहित बताइए कि निम्नलिखत विवरण सही है या नही।

Ram and shyam's Financial position is as follows :

(i) Sundry assets Rs. 9,27,342,

(ii) Current liabilities Rs. 52,492,

(iii) Average net profit of the last years Rs. 1,20,500,

(iv) Average capital employed Rs. 9,00,000,

(v) Partner's average annual remuneration Rs.18,000,

(vi) The goodwill valued at four years purchase for super profit Rs. 50,000

The expected rate of return is 15%. (Bikaner Univ. 2006, Kota Univ, 2007)

4. 31 मार्च, 2007 एवं 2008 को एक्स लिमिटेड का चिट्ठा निम्नलिखित हैः

Balance Sheet

Liabilities	2007 Rs.	2008 Rs.	Assets	2007 Rs.	2008 Rs.
Equity Share Capital	8,00,000	8,00,000	Fixwd Assets	9,60,000	10,00,000
General Reserve	1,60,000	2,10,000	Investments	1,00,000	1,40,000
Profit & Loss A\c	1,50,000	1,80,000	Stock	3,20,000	3,60,000
11% Debentures	2,00,000	2,00,000	Debtors	1,60,000	1,40,000
Sundry Creditors	1,20,000	1,40,000	Cash in Bank	70,000	1,64,000
Bank overdraft	50,000	90,000	Deferred Revenue Expenses	20,000	16,000
Provision for tax	30,000	40,000			
Proposed Dividend	1,20,000	1,60,000			
	16,30,000	18,20,000		16,30,000	18,20,000

स्थाई सम्पत्तियों का बाजार मूल्य 31 मार्च, 2007 को 14,40,000 रु. तथा 31 मार्च, 2008 को 17,00,000 रु. है।

कुल विनयोग का 75% हिस्सा गैर–व्यापारिक विनियोग है तथा इस पर 11% ब्याज दर से आय अर्जित हो रही है। वर्ष 2007–08 के लाभों में मशीनरी के क्रय पर सरकारी सहायता के रूप में प्राप्त 40,000 रु. सम्मिलित है।

शोध एवं विकास व्यय के 36,000 रु. चालू वर्ष के लाभ–हानि खाते से अपलिखित किए गए है। यह व्यय भविष्य में नहीं होगा।

स्टॉक का बाजार मूल्य 31 मार्च, 2007 को 4,10,000 रु. तथा 31 मार्च, 2008 को 4,80,000 रु. है।

देनदारों में विदेशी मुद्रा के देनदार 10,000 डालर के शामिल है जिन्हें एक डालर की विनिमय दर 42 रु. के आधार पर रिकार्ड किया गया किन्तु वर्ष के अन्त में एक डालर की विनिमय दर 44.5 रु. थी।

लेनदारों में विदेशी मुद्रा के लेनदार 4,000 डालर के शामिल है जिन्हें एक डालर की विनिमय दर 41 रु. के आधार पर लेखा किया गया किन्तु वर्ष के अन्त में एक डालर की विनिमय दर 44 रु. थी। वर्ष 2006–07 व 2007–08 में आयकर की दर 40 प्रतिशत थी तथा सम्भावित कर की दर 30 प्रतिशत है।

औसत विनियोजित पूंजी पर सामान्य लाभ की दर 15 प्रतिशत है। ख्याति का मूल्यांकन अधिलाभों की पूंजीकरण विधि से ज्ञात कीजिए। (Kota Univ. B.Com., 2006)

Ans. Value of Goodwill Rs. 2,51,267, Super profit Rs. 37,690

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

5. 31 मार्च, 2007 को गैजीबो लिमिटेड का चिट्ठा अग्र प्रकार था :

Balance Sheet

Liabilities	Rs.	Assets	Rs.
Authorised Capital		Building	3,30,000
25,000 Equity Share of Rs. 100 each	25,00,000	Machinery	6,00,000
Subscribed & Paid up Capital		Stock	9,00,000
15,000 Equity Share of Rs. 100 each	15,00,000	Debtors	5,76,000
Profit & Loss Appropriation A\c	77,500		
Brorowing from RFC	3,00,000		
Bank overdraft	1,00,000		
Sundry Creditors	2,50,000		
Provision for tax	1,78,500		
	24,06,000		24,06,000

कम्पनी ने अपना व्यापार 1 अपैल, 2002 को प्रारम्भ किया। कर के लिए आयोजन से पूर्व कम्पनी के लाभ इस प्रकार थे : 2002—03 3,60,000 रु., 2003—04 4,50,000 रु., 2004—05 5,10,000 रु. तथा 2006—07 5,10,000 रु. कम्पनी का गत वर्षों का औसत लाभ अर्जित अनुपात 8 था।

आपको ख्याति का मूल्यांकन अधिलाभों के पूंजीकरण विधि से करना है, यह मानते हुए कि आयकर एक रुपये में 35 पैसे के हिसाब से देय है। सामान्य लाभों की गणना औसत विनियोजित पूंजी के आधार पर करनी है।

(MLS Univ. Udaipur, 2002)

Ans. Value of Goodwill Rs. 11,88,250, Super profit Rs. 1,42,590

6. 31 मार्च 2009 को प्रतीक एण्ड क. का अग्रलिखित चिट्ठा है—

Balance Sheet as at 31st March, 2009

Liabilities	Rs.	Assets	Rs.
Authorised Capital		Fixed Assets	10,00,000
25,000 Equity Share of Rs. 100 each	25,00,000	Stock	9,00,000
Subscribed & Paid up Capital		Debtors	5,25,000
15,000 Equity Share of Rs. 100 each	15,00,000	Cash at Bank	1,25,000
Profit & Loss Appropriation A\c	77,500		
Brorowing from RFC	3,00,000		
Bank overdraft	1,00,000		
Sundry Creditors	2,50,000		
Provision for tax	1,78,500		
	25,50,000		25,50,000

प्रति वर्ष 31 मार्च को समाप्त होने वाले गत पांच वर्षों का शुद्ध लाभ (कर से पूर्व) क्रमशः 40,000 रु., 60,000 रु., 1,20,000 रु., 1,90,000 रु., 1,70,000 रु. थे। 31 मार्च, 2005 के लाभ में पूंजीगत लाभ 10,000 रु. शामिल था और 31 मार्च, 2009 को समाप्त हुए वर्ष लाभ 7,500 रु. आग से हुई हानि के बाद था। आयकर की दर 50% एवं लाभ की दर 25% है। अधिलाभ एवं ख्याति ज्ञात कीजिए।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

अध्याय– 2

अंशों का मूल्यांकन
(Valuation of Share)

विषय सूची (Contents)

2.1 अंशों के मूल्यांकन की आवश्यकता
2.2 अंशों के मूल्यों को प्रभावित करने वाले घटक
2.3 मूल्यांकन का आधार
2.4 अंशों का मूल्यांकन की विधियां
2.4.1 शुद्ध सम्पत्ति मूल्यांकन विधि
2.4.1.1 लाभांश रहित एवं लाभांश सहित अंशों का मूल्यांकन
2.4.1.2 जब कम्पनी ने पूर्वाधिकार अंश की निर्गमित कर रखें हो
2.4.1.3 अवशिष्ट भागी अधिमान अंशों की दशा में अंशों का मूल्यांकन
2.4.2 प्रत्याय या प्रतिफल मूल्यांकन विधि
2.4.2.1 लाभांश दर विधि
2.4.2.2 संभावित लाभांश दर या लाभांश दर विधि
2.4.2.3 वास्तविक लाभर्जन दर या उपार्जन क्षमता विधि
2.5 अंशों का उचित मूल्य ज्ञात करना
2.6 बोनस अंशो के निर्गमन की दशा में सामान्य अंशों का मूल्यांकन
2.7 अधिकार अंशों का निर्गमन
स्व परीक्षा प्रश्न (Self Examination Questions)

2.1 अंशों के मूल्यांकन की आवश्यकता (Need of Valuation of Shares)

निम्नलिखित परिस्थितियों में अंशों का मूल्यांकन आवश्यक होता है–

1. धन कर (wealth Tax) का निर्धारण करने के लिए।
2. जब अंश क्रय या विक्रय करने हो।
3. अशों की जमानत पर ऋण देना हो।
4. निजी कम्पनी के अंशों के हस्तान्तरण के समय।
5. कम्पनी के एकीकरण के समय क्रय प्रतिफल के निर्धारण करने के लिए।
6. जब कम्पनी के एक श्रेणी के अंशों का परिवर्तन दूसरी श्रेणी के अंशों में किया जाए।
7. जब सरकार द्वारा कम्पनी के व्यवसाय का राष्ट्रीयकरण किया जाए तो क्षतिपूर्ति निर्धारित करने के लिए।
8. कम्पनी के समापन के समय मूल्य निर्धारण करने के लिए।

2.2 अंशों के मूल्यों को प्रभावित करने वाले घटक (Factors affecting Value of Shares)

अंशों का मूल्य मुख्य रूप से निम्नलिखित घटकों से प्रभावित होते हैं–

1. कम्पनी की लाभार्जन क्षमता एवं भविष्य में उन्नति करने की संभावनाए।
2. देश का राजनैतिक, आर्थिक एवं सामाजिक वातावरण।
3. कम्पनी के व्यापार के सम्बन्ध में सरकार की व्यापार एवं कर नीति।
4. कम्पनी की लाभांश नीति एवं पूर्व में घोषित लाभांश।
5. दायित्वों का पूंजी अनुपात।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

6. कम्पनी के उत्पाद, बॉण्ड की ख्याति।

2.3 मूल्यांकन का आधार (Basis of Valuation)

अंशों का मूल्य मुख्यतः दो बातों पर निर्धारित होता है–

(i) कम्पनी की शुद्ध सम्पत्तियां, एवं

(ii) कम्पनी लाभार्जन क्षमता।

इन दोनों घटकों का अलग–अलग परिस्थितियों में अलग–अलग महत्त्व होता है। इस सम्बन्ध में निम्नलिखित नियम महत्त्वपूर्ण है–

(1) चालू कम्पनी के अंशों का मूल्यांकन कम्पनी की शुद्ध सम्पत्तियों एवं भावी लाभार्जन क्षमता दोनों को आधार पर किया जाएगा।

(2) समापन में जाने वाली कम्पनी के अंशों का मूल्यांकन कम्पनी की शुद्ध सम्पत्तियों के आधार पर किया जाएगा।

(3) सेवा कार्य में संलग्न जैसे इंजीनियरिंग, सलाहकार, आरकीटेक्ट, कानूनी सलाहकार, मनोरंजन, विज्ञापन, प्रतिभूतियों के दलाल आदि कार्य करने वाली कम्पनियों के अंशों का मूल्यांकन लाभार्जन क्षमता के आधार पर किया जाएगा।

2.4 अंशों के मूल्यांकन की विधियां (Methods of Valuation of Shares)

अंशों का व्यावहारिक मूल्य स्टॉक एक्सचेंज द्वारा निर्धारित मूल्य है। स्टॉक एक्सचेंज में अंशों का मूल्य निर्धारण मूलतः उनकी मांग और पूर्ति की आवश्यकतानुसार निर्धारित किया जाता है। इसे अंशों का उचित मूल्य नहीं माना जा सकता है, क्योंकि इन मूल्यों के निर्धारण में कम्पनी की सम्पत्तियों का मूल्य एवं लाभार्जन क्षमता को महत्त्व नहीं दिया जाता है और न ही ध्यान रखा जाता है। अतः कम्पनी के अंशों का मूल्य के निर्धारण में निम्नलिखित विधियां उपयोग में ली जाती है–

(1) शुद्ध सम्पत्ति मूल्यांकन विधि (Net Assets Valuation Method)

(2) प्रत्याय मूल्यांकन विधि (Yield Valuation Method)

2.4.1 शुद्ध सम्पत्ति मूल्यांकन विधि (Net Assets Valuation Method)

जब विनियोगकर्त्ता विनियोजित धन की सुरक्षा को महत्त्व देता है, तो शुद्ध सम्पत्ति मूल्यांकन विधि से अंशों का मूल्य ज्ञात किया जाता है। इस विधि से विनियोगकर्त्ता को यह ज्ञात हो जाता है कि यदि कम्पनी समापन में भी चली जाए तो कम्पनी सम्पत्तियों में से बाह्य दायित्वों को चुकाने के बाद अंश धारियों के हिस्से में क्या आएगा। इस विधि को पुस्तक मूल्य विधि (Book Value Method), सम्पत्ति आधारित विधि (Assets Backing Method), शुद्ध सम्पदा विधि (Net Worth Method) आदि नामों से भी जानते हैं।

इस विधि के अनुसार अंशों के मूल्यांकन के लिए निम्नलिखित प्रक्रिया अपनायी जाती है–

1. सर्वप्रथम स्थाई सम्पत्तियों (ख्याति सहित) को वसूली योग्य मूल्य या बाजार मूल्य या अपलिखित मूल्य पर योग लगा लिया जाता है। अमूर्त सम्पत्तियों को इनके वसूली योग्य मूल्य पर लिया जाएगा। यदि इन सम्पत्तियों का वसूली मूल्य नहीं दिया गया है तो इन्हें सम्पत्तियों में शामिल नहीं करेंगे। विनियोगों को उनके वर्तमान बाजार मूल्य पर लिया जाएगा। गैर–व्यापारिक सम्पत्तियों को भी सम्मिलित किया जाता है परन्तु कृत्रिम सम्पत्तियां (Fictitious Assets) मूल्यहीन होती है इसलिए इन्हें सम्पत्तियों के मूल्यांकन में सम्मिलित नहीं किया जाता है।
2. उक्त सम्पत्तियों के योग में से समस्त दीर्घकालीन एवं अल्पकालीन दायित्वों एवं आयोजनों को घटाया जाएगा। (जैसे– ऋणपत्र, पूर्वाधिकार अंश पूंजी, व्यापारिक एवं व्यय लेनदार, वित्तीय संस्थाओं से ऋण एवं अधिविकर्ष, अदत व्यय, बकाया लाभांश, प्रस्तावित लाभांश, आयकर, आयोजन आदि) संदिग्ध दायित्वों (Contingent Liabilities) दायित्वों को भी उनके संभावित दायित्वों की राशि के आधार पर घटाएगें।

अतः शुद्ध सम्पत्तियों को सूत्र रूप में इस प्रकार लिखा जा सकता है–

शुद्ध सम्पत्ति = सम्पत्तियों (ख्याति सहित) का वसूली योग्य मूल्य – समस्त बाहरी दायित्वों का योग

Net Assets = Total of Realisable value of Assets - Total of outsiders Liabilities

शुद्ध सम्पत्तियों के मूल्य की गणना को निम्नलिखित विवरण से समझा जा सकता है–

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Statement showing value of Net Assets

		Realisable value in Rs.
Assets:		
(A) Intangible Assets:		
Goodwill	-------	
Patents & Trademark	-------	------
(B) Fixed Assets:		
Land & Building	-------	
Plant & Machinery	------	
Furniture & Fixtures	------	------
(C) Investments:		
Trade Investments	------	
Non-Trade Investments	------	------
(D) Current Assets, Loan & Advance:		
(i) Current Assets		
Inventories of Raw material, WIP and Finished goods		
Receivables (Debtors\B\R ect.)	------	
(ii) Loan & Advances		
Prepaid expenses	------	
Accrued Income	------	
Loan & Advance	------	
(iii) Cash in hand and at Bank	------	------
Less: Liabilities		
(i) Secured Loan	------	
(ii) Unsecured Loan	------	
(iii) Curent Liabilities	------	
(iv) Provision	------	
(v) Preference share Capital	------	------
Value of Net Assets		------

वैकल्पिक विधि

Share Capital		------
Reserve & Surplus		------
Profit on Revaluation		------
Excess of Provision for		
Taxation	------	
Workmen's Compensation fund	------	
Gratuity fund	------	
Provided fund	------	------

Less: Fictitious Assets	------	
Loss on Revaluation	------	
Contingent Liabilities	------	-----
Value of Net Assets		------

प्रति अंश मूल्य ज्ञात करना (Calculation of value Per share)

(अ) जब कम्पनी ने केवल समता अंश ही निर्गमित कर रखे हों–

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

इसके अन्तर्गत निम्नलिखित परिस्थितियां हो सकती है–

(1) जब सभी समता अंश समान अंकित मूल्य तथा पूर्ण प्रदत्त हो– ऐसी स्थिति में प्रति समता अंश का मूल्य निम्नलिखित प्रकार से ज्ञात किया जाएगा–

$$\textbf{Value per Equity Share} = \frac{\textbf{Value of Net Assets}}{\textbf{No. of Equity Shares}}$$

इसे अंश का आन्तरिक मूल्य भी कहा जाता है।

Illustration 1

प्रांजल अपना व्यवसाय प्रभावती को बेचना चाहता है एवं आपसे शुद्ध सम्पत्ति विधि से मूल्यांकन करने को कहते है। 31 मार्च, 2009 को निम्नलिखित चिट्ठा था।

Balance Sheet as 31st March, 2009

Liabilities		Amount	Assets	Amount
Share Capital			Land & Building (Rs. 9,00,000)	9,60,000
1,00,000 Equity share of Rs. 10 each		10,00,000	Plant & Machinery (Rs. 3,25,000)	3,00,000
General Reserve		2,50,000	Investments (Rs. 2,20,000)	2,80,000
Profit & Loss A\c		2,00,000	Debtors (Rs.2,50,000)	2.60,000
10% Debentures		1,50,000	Cash in hand	20,000
Bills Payable		50,000	Cash at Bank	1,30,000
Creditors		1,00,000	Preliminary expence	2,50,000
Outstanding expense		35,000	Discount on issue of share	25,000
Provision for Taxation		1,40,000		
Provision for Depreciation on				
Land & Building	50,000			
Plant & Machinery	25,000	75,000		
		20,00,000		**20,00,000**

कोष्ठक में दी गई संख्या में सम्पत्तियों का बाजार मूल्य दिया गया है एवं ख्याति का मूल्य 80,000 रु. आंका गया है। समता अंशों के अन्तनिहित मूल्य का परिकलन कीजिए।

Solution

Statement showing value of Net Assets

		Rs.
Assets:		
Goodwill		80,000
Land & Buildiing		9,00,000
Plant & Machinery		3,25,000
Inventories		2,20,000
Debtors		2,50,000
Cash in hand		20,000
Cash at Bank		1,30,000
Total Assets		**19,25,000**
Less: Liabilities		
10% Debentures	1,50,000	
Bills Payable	50,000	
Creditors	1,00,000	
Outstanding expense	35,000	
Provision for Taxation	1,40,000	4,75,000
Value of Net Assets		**14,50,000**

$$\text{Value per share} = \frac{\text{Value of Net Assets}}{\text{No. of Equity Share}}$$

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

$$= \frac{14,50,000}{1,00,000} = \text{Rs. } 14.50$$

(2) जब सामान्य अंश का अंकित मूल्य समान हो परन्तु उनके विभिन्न प्रदत्त मूल्य असमान हो– ऐसी स्थिति में अंशतः प्रदत समता अंशों पर न मांगी गई राशि को शुद्ध सम्पत्तियों में मानी हुई रोकड़ (Notional Cash) नाम से जोड़ा जाएगा। सूत्र रूप में

$$\text{पूर्ण प्रदत प्रति समता अंश का मूल्य} = \frac{\text{शुद्ध सम्पत्तियां + आंशिक प्रदत अंशों की बकाया मांग}}{\text{अंशों की संख्या}}$$

इसके पश्चात् आंशिक प्रदत अंश का मूल्य की गणना निम्नलिखित प्रकार से की जाएगी–

आंशिक प्रदत प्रति अंश का मूल्य = पूर्ण प्रदत्त प्रति अंश – संबन्धित प्रति अंश मानी हुई रोकड़

Illustion 2

राकेश लि. अपना व्यवसाय सज्जन को बेचना चाहता है। राकेश लि. का 31 मार्च, 2009 को चिट्ठा निम्नलिखित है–

Balance Sheet as 31st March, 2009

Liabilities	Amount	Assets	Amount
Share Capital		Land & Building (Rs. 8,00,000)	8,60,000
50,000 Equity share of Rs. 10 each	5,00,000	Plant & Machinery (Rs. 3,25,000)	3,00,000
25,000 Equity share of Rs. 10 each, Rs. 5 paid up	1,25,000	Investments (Rs. 2,20,000)	2,80,000
		Debtors (Rs.1,50,000)	1,60,000
25,000 Equity share of Rs. 10 each, Rs. 4 paid up	1,00,000	Cash in hand	1,20,000
		Cash at Bank	1,30,000
Securities Premium	50,000	Preliminary expence	50,000
General Reserve	2,00,000		
Profit & Loss A\c	2,00,000		
10% Debentures	3,00,000		
Bills Payable	1,00,000		
Sundry Creditors	1,00,000		
Outstanding expense	50,000		
Provision for Taxation	1,00,000		
Provision for Depreciation on			
Land & Building 50,000			
Plant & Machinery 25,000	75,000		
	19,00,000		**19,00,000**

कोष्ठक में दी गई संख्या में सम्पत्तियों का बाजार मूल्य दिया गया है एवं ख्याति का मूल्य 80,000 रु. आंका गया है। समता अंशों के अन्तर्निहित मूल्य का परिकलन कीजिए।

Solution

Statement showing value of Net Assets

	Rs.	Rs.
Assets:		
Goodwill		80,000
Land & Building		8,00,000
Plant & Machinery		3,25,000
Inventories		2,20,000
Debtors		1,50,000
Cash in hand		1,20,000
Cash at Bank		1,30,000
Total Assets		**18,25,000**

Cont.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Less: Liabilities

10% Debentures	3,00,000	
Bills Payable	1,00,000	
Creditors	1,00,000	
Outstanding expense	50,000	
Provision for Taxation	1,00,000	6,50,000
Value of Net Assets		**11,75,000**

$$\text{Value per full paid share} = \frac{\text{Value of Net Assets + Notional Cash}}{\text{Total No. of equity share}}$$

$$= \frac{11,75,000 + (25,000 \times 5) + (25,000 \times 6)}{1,00,000}$$

$$= \frac{11,75,000 + 1,25,000 + 1,50,000}{1,00,000}$$

= Rs. 14.50

Value of per partly share = Value per full paid Equity Share - Notional Cash

Value of Rs. 5 paid up share = 14.5 - 5 = Rs. 9.5

Value of Rs. 4 paid up share = 14.5 - 6 = Rs. 8.5

3. जब समता अंश की अंकित मूल्य असमान हो तथा वे सभी पूर्ण प्रदत हों– ऐसी स्थिति में शुद्ध सम्पत्तियों को अलग–अलग अंकित मूल्य वाले समता अंशों के वर्गों में उनकी कुल प्रदत पूंजी के अनुपात में विभाजित कर प्रत्येक प्रकार के अंशों की संख्या का भाग देकर अलग–अलग प्रति अंश मूल्य ज्ञात किया जाएगा।

$$\text{Value per share} = \frac{\text{Proportionate Net Assets of a particular Category}}{\text{Total No. of equity share some Category}}$$

Illustration 3

गौतम लि. का चिट्ठा 31 मार्च 2009 को अग्र प्रकार है। समता अंशों के मूल्य की गणना कीजिए।

Balance Sheet as 31st March, 2009

Liabilities	Amount	Assets	Amount
Share Capital		Patent	1,00,000
2,000 Equity share of Rs. 100 each	2,00,000	Land & Building	5,00,000
6,000 Equity share of Rs. 50 each	3,00,000	Plant & Machinery	3,00,000
10,000 Equity share of Rs. 25 each	2,50,000	Furniture & Fixtures	1,00,000
General Reserve	2,00,000	Investments	2,00,000
8% Debentures of Rs. 100 each	3,50,000	Stock	80,000
Pension fund	1,50,000	Debtors	70,000
Provision for Taxation	1,00,000	Cash at Bank	50,000
Proposed Dividend	50,000		
	14,00,000		**14,00,000**

कम्पनी की ख्याति का मूल्यांकन 1,00,000 रु. पर किया गया। भूमि एवं भवन को 8,00,000 रु. पर मूल्यांकित किया गया।

Solution **Statement showing value of Net Assets as on 31st March, 2009**

	Rs.	Rs.
Assets:		
Goodwill	1,00,000	
Patent	1,00,000	
Land & Building	8,00,000	
Plant & Machinery	3,00,000	

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Furniture & Fixtures	1,00,000	
Investment	2,00,000	
Stock	80,000	
Debtors	70,000	
Cash at Bank	50,000	
Total Assets		**18,00,000**
Less: Liabilities		
8% Debentures	3,50,000	
Pension fund	1,50,000	
Provision for Taxation	1,00,000	
Proposed Dividend	50,000	6,50,000
Value of Net Assets		**11,50,000**

Ratio of different face value Categories of fully paid equity share Capital 4 : 6 : 5. Apportionment of net Assets according to the above mentioned ratios are as under;

1. Net assets for Rs. 100 face value fully paid equity share

$$= \text{Rs. } 11,50,000 \times \frac{4}{15} = \text{Rs. } 3,06,667$$

Value per Rs. 100 fully paid Equity Share = $\frac{3,06,667}{2,000}$ = Rs. 153.33

2. Net assets for Rs. 50 face value fully paid Equity Share

$$= \text{Rs. } 11,50,000 \times \frac{6}{15} = \text{Rs. } 4,60,000$$

Value per Rs. 50 fully paid Equity Share = $\frac{4,60,000}{6,000}$ = Rs. 76.67

3. Net assets for Rs. 25 face value fully paid Equity Share

$$= \text{Rs. } 11,50,000 \times \frac{5}{15} = \text{Rs. } 3,83,333$$

Value per Rs. 25 fully paid Equity Share = $\frac{3,83,333}{10,000}$ = Rs. 38.33

4. जब समता अंश विभिन्न अंकित मूल्य वाले हो तथा उनके प्रदत्त मूल्य भिन्न–भिन्न हों– उदाहरण द्वारा स्पष्टीकरण

Illustration 4

गणपति लि. की 31 मार्च 2009 को चिट्ठा अग्र प्रकार है–

Balance Sheet as 31st March, 2009

Liabilities	Amount	Assets	Amount
Share Capital		Fixed Assets (Excluding goodwill)	20,00,000
20,000 Equity share of Rs. 100 each fully paid up	2,00,000	Current Assets	18,00,000
		Preliminary Expenses	1,00,000
15,000 Equity share of Rs. 50 each, Rs. 35 paid up	5,25,000		
10,000 Equity share of Rs. 25 each, Rs. 20 paid up	2,00,000		
General Reserve	2,00,000		
Profit & Loss A\c	5,75,000		
11% Debentures	1,00,000		
SundryCreditors	2,00,000		
Proposed Dividend	1,00,000		
	39,00,000		**39,00,000**

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

ख्याति का मूल्य 1,00,000 रु. तथा स्थायी सम्पत्तियों का मूल्य 19,00,000 रु. पर मूल्यांकित किया गया। 50,000 रु. का संदिग्ध दायित्व था जिसका भुगतान किया जाना है। शुद्ध सम्पत्ति विधि से अंशों का मूल्य ज्ञात कीजिए।

Solution

Statement showing value of Net Assets

	Rs.	Rs.
Assets:		
Goodwill		1,00,000
Fixed Assets		19,00,000
Current Assets		18,00,000
Total Assets		**38,00,000**
Less: Liabilities		
11% Debentures	1,00,000	
SundryCreditors	2,00,000	
Proposed Dividend	1,00,000	
Contingent Liabilities	50,000	4,50,000
Value of Net Assets		**33,50,000**

		Rs.
Net Assets (as above)		33,50,000
Add: Notional Call		
On 15,000 equity shares @ Rs. 15 per share	2,25,000	
On 10,000 equity shares @ Rs. 5 per share	50,000	2,75,000
Net Assets availablefor equity shareholders		36,25,000

Value per Rs. 1 fully paid equity share

$$\frac{36,25,000}{20,00,000 + 7,50,000 + 2,50,000} = \frac{36,25,000}{30,00,000}$$

$$= \text{Re. } 1.21$$

Value per Rs. 100 fully paid Equity Share = (100 x Rs.1.21) = Rs. 121

Value per Rs. 50 fully paid Equity Share = (50 x Rs.1.21) = Rs. 60.50

Value per Rs. 50 partly paid Equity Share = 60.50 - 15 = Rs. 45.50

Value per Rs. 25 filly paid Equity Share = (25 x Rs.1.21) = Rs. 30.25

Value per Rs. 25 Partly paid Equity Share = 30.25 - 5 = Rs. 25.25

2.4.1.1 लाभांश रहित एवं लाभांश सहित अंशों का मूल्यांकन

(1) लाभांश रहित की दशा में— इस के अन्तर्गत अंशों के मूल्य में बकाया लाभांश शामिल नहीं किया जाता है। शुद्ध सम्पत्ति का मूल्य ज्ञात करते समय चिट्ठे में प्रदर्शित लाभांश की राशि को दायित्व के रूप मे घटा देते हैं। तत्पश्चात् ज्ञात मूल्य ही लाभांश रहित मूल्य कहलाता है।

(2) लाभांश सहित की दशा में— इसके अन्तर्गत लाभांश की राशि भी अंश के मूल्य में सम्मिलित होती है। इसकी गणना अग्रलिखित प्रकार से करते हैं—

लाभांश रहित अंश का मूल्य ज्ञात करते है, फिर निम्नलिखित सूत्र द्वारा कुल प्रदत्त समता अंश पूंजी पर प्रस्तावित लाभांश का प्रतिशत ज्ञात करते हैं।

$$\text{Precentage of Prosed dividend on equity share} = \frac{\text{Prosed dividend on equity share}}{\text{Total paid up equity share}} \times 100$$

और लाभांश रहित मूल्य में प्रस्तावित लाभांश की दर को जोड़ देते हैं।

Illustration 5

निम्नलिखित सूचनाओं के आधार पर 31 मार्च, 2009 को नैकी लि. के समता अंशों के (i) लाभांश रहित एवं (ii) लाभांश सहित आन्तरिक मूल्य की गणना कीजिए।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Balance Sheet of Neki Ltd. as 31st March, 2009

Liabilities	Amount	Assets	Amount
Share Capital		Fixed Assets (Excluding goodwill)	24,50,000
25,000 Equity share of Rs. 100 each fully paid up	25,00,000	Current Assets	15,00,000
15,000 Equity share of Rs. 50 each, Rs. 35 paid up	5,25,000	Preliminary Expenses	50,000
10,000 Equity share of Rs. 25 each, Rs. 20 paid up	2,00,000		
General Reserve	1,00,000		
Profit & Loss A\c	2,75,000		
Sundry Creditors	2,50,000		
Proposed Dividend	1,50,000		
	40,00,000		**40,00,000**

31 मार्च, 2009 को ख्याति सहित स्थाई सम्पत्तियों का मूल्यांकन 30,00,000 रु. तथा संदिग्ध दायित्व 30,000 रु. किया गया।

Solution

Statement showing value of Net Assets

	Rs.	Rs.
Assets:		
Fixed Assets		30,00,000
Current Assets		15,00,000
Total Assets		**45,00,000**
Less: Liabilities		
Sundry Creditors	2,50,000	
Proposed Dividend	1,50,000	
Contingent Liabilities	30,000	4,30,000
Value of Net Assets		**40,70,000**

Net Assets (as above)		40,70,000
Add: Notional Call		
On 15,000 equity shares @ Rs. 15 per share	2,25,000	
On 10,000 equity shares @ Rs. 5 per share	50,000	2,75,000
Net Assets available for equity shareholders		43,45,000

(i) Computation of ex-dividend value per share

$$\text{Value of Re. 1 fully paid equity share} = \frac{\text{Net Assets}}{\text{Total Share Capital with uncalled amount}}$$

$$\frac{43,45,000}{25,00,000 + 7,50,000 + 2,50,000} = \frac{43,45,000}{35,00,000}$$

$$= \text{Re. } 1.24$$

Value of Rs. 100 fully paid equity share = (100 x Rs.1.24) = Rs. 124

Value of Rs. 50 fully paid equity share = (50 x Rs.1.24) = Rs. 62

Value of Rs. 50 Partly paid equity share = 62 - 15 = Rs. 47

Value of Rs. 25 fully paid equity share = (25 x Rs.1.24) = Rs. 31

Value of Rs. 25 Partly paid equity share = 31 - 5 = Rs. 26

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(ii) Computation of Cum-Dividend value per equity share

% of proposed Dividend on Total paid-up Value of equity share capital.

$$= \frac{\text{Proposed equity Dividend}}{\text{Total paid-up value of all equity shares}}$$

$$\frac{1,50,000}{25,00,000 + 5,25,000 + 2,00,000} \times 100 = \frac{1,50,000}{32,25,000}$$

= 4.58% on paid value

Cum-Dividend Intrinsic value of Rs. 100 fully paid-up share

Ex-dividend value + 4.58% of its paidup value

124 + 4.58% of Rs. 100

124 + 4.58

= Rs. 128.58

Cum-Dividend Intrinsic value of Rs. 50 partly paid-up share

Ex-dividend value + 4.58% of its paidup value

44.50 + 4.58% of Rs. 35

44.50 + 1.60

= Rs. 46.10

Cum-Dividend Intrinsic value of Rs. 25 partly paid-up share

Ex-dividend value + 4.58% of its paidup value

24.75 + 4.58% of Rs. 20

24.75 + .92

= Rs. 25.67

2.4.1.2 जब कम्पनी ने पूर्वाधिकार अंश को निर्गमित कर रखे हों

जब पूर्वाधिकार अंश एवं समता अंश दोनों जारी कर रखे हो तो पूर्वाधिकार अंश व इन पर बकाया लाभांश को शुद्ध सम्पत्तियों की गणना करते समय दायित्व मानते हुए सम्पत्तियों में से घटाएगें। तत्पश्चात् शुद्ध सम्पत्तियों में समता अंशों की संख्या का भाग देकर प्रति समता अंश मूल्य ज्ञात किया जाएगा। निजी कम्पनी अपने अन्तर्नियमों में पूर्वाधिकार अंशों को प्रदत्त पूर्वाधिकारों में से किसी भी पूर्वाधिकार पर प्रतिबन्ध लगा सकती है। सूत्र रूप में–

(i) जब पूर्वाधिकार अंशों को अन्तर्नियमों के अनुसार पूंजी व लाभांश, दोनों के सम्बन्ध में पूर्वाधिकार हों–

$$\text{Value per equity share} = \frac{\text{Net Assets - (Preference share Capital + Arrears of Preference share dividend)}}{\text{No. of equity share}}$$

$$\text{Value per preference share} = \frac{\text{Preference share Capital + Arrears of Preference share dividend}}{\text{No. of Preference share}}$$

(ii) यदि पूर्वाधिकार अंशों को अन्तर्नियमों के अनुसार केवल पूंजी के सम्बन्ध में ही पूर्वाधिकार हो–

$$\text{Value per equity share} = \frac{\text{Net Assets - Preference share Capital}}{\text{No. of equity share}}$$

ऐसी स्थिति में पूर्वाधिकार अंश का मूल्य उसके प्रदत्त मूल्य के बराबर होगा।

$$\text{Value per preference share} = \frac{\text{Preference share Capital}}{\text{No. of Preference share}}$$

(iii) यदि पूर्वाधिकार अंशों को अन्तर्नियमों के अनुसार कवल लाभांश के सम्बन्ध में ही पूर्वाधिकार हो–

$$\text{Value per equity share} = \frac{\text{Net Assets -Arrears of Preference share dividend}}{\text{No. of equity share + No. of Preference share}}$$

ऐसी स्थिति पूर्वाधिकार अंश का मूल्य समता अंश के मूल्य से अधिक होगा।

$$\text{Value per Preference share} = \text{Value of equity share} + \frac{\text{Arrears of Preference share dividend}}{\text{No. of Preference share}}$$

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(iv) यदि पूर्वाधिकार अंशों को अन्तर्नियमों के अनुसार कोई पूर्वाधिकार न हो–

$$\text{Value of share} = \frac{\text{Net Assets}}{\text{No. of equity share + No. of Prefernce share}}$$

उपर्युक्त स्थिति में दोनों प्रकार के अंशों का मूल्य समान होगा।

नोट– उपर्युक्त (iii) व (iv) की दशा में यदि पूर्वाधिकार अंशों एवं समता अंशों का अंकित मूल्य अलग–अलग हो तो दोनों की कुल प्रदत्त पूंजी के अनुपात में शुद्ध सम्पत्ति को विभाजित करेंगे तथा ज्ञात राशि में सम्बन्धित अंशों की संख्या का भाग लगाकर प्रति अंश मूल्य ज्ञात करेंगे।

Illustration 6

31 मार्च, 2009 को दीपक लि. का चिट्ठा अग्र प्रकार था–

Balance Sheet as 31st March, 2009

Liabilities	Amount	Assets	Amount
Share Capital		Fixed Assets (at Cost)	10,00,000
50,000 Equity share of Rs. 10 each	5,00,000	Current Assets	4,00,000
20,00010% Preference share of Rs.10 each	2,00,000	Preliminary Expenses	50,000
General Reserve	1,00,000	Discount on issue of Deb.	1,00,000
Profit & Loss A\c	1,50,000	Deferred Advertisement Exp.	50,000
Debenture Redemption Reserve	50,000		
10% Debentures	3,00,000		
Provision for Depreciation	50,000		
Sundry Creditors	2,50,000		
	16,00,000		**16,00,000**

स्थायी सम्पत्तियों का वसूली मूल्य 9,50,000 रु. व चल सम्पत्तियों का 3,75,000 रु. है। ऋणपत्रों पर 6 माह का ब्याज बकाया है तथा अधिमान अंशों पर चालू वर्ष का लाभांश बकाया है। समता अंशों एवं पूर्वाधिकार अंशों का मूल्य ज्ञात कीजिए, यदि :

(i) पूर्वाधिकार अंशों को पूंजी तथा लाभांश दोनों के सम्बन्ध में पूर्वाधिकार है।

(ii) पूर्वाधिकार अंशों को पूंजी का पूर्वाधिकार है, परन्तु लाभांश का पूर्वाधिकार नहीं है।

(iii) पूर्वाधिकार अंशों को पूंजी का पूर्वाधिकार नहीं है, परन्तु लाभांश का ही पूर्वाधिकार है।

(iv) पूर्वाधिकार अंशों को न तो पूंजी के सम्बन्ध में और न ही लाभांश के सम्बन्ध में पूर्वाधिकार है।

Solution

Statement showing value of Net Assets

	Rs.	Rs.
Assets:		
Fixed Assets (Realisable value)		9,50,000
Current Assets (Realisable value)		3,75,000
Total Assets		**13,25,000**
Less: Liabilities		
10% Debentures	3,00,000	
Sundry Creditors	2,50,000	
Accrued Deb. interest for 6 months	15,000	
Provision for Dep.	50,000	6,15,000
Value of Net Assets		**7,10,000**

Value of Share

(i) When Prefernce Share are preferential as to Capital and dividend

$$\text{Value of Equity Share} = \frac{\text{Net Assets - (Preference share Capital + Arrears of Preference share dividend)}}{\text{No. of equity shares}}$$

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

$$= \frac{7,10,000 - (2,00,000 + 20,000)}{50,000} = \frac{4,90,000}{50,000}$$

= Re. 9.80 per share

$$\text{Value of Preference Share} = \frac{\text{Preference share Capital + Arrears of Preference share dividend}}{\text{No. of Preference Shares}}$$

$$= \frac{2,00,000 + 20,000}{20,000} = \frac{2,20,000}{20,000}$$

= Re. 11 per share

(ii) When Preference Share are preferential as Return of Capital but not as to payment of dividend

$$\text{Value per Equity Share} = \frac{\text{Net Assets - Preference Share Capital}}{\text{No. of Equity Share}}$$

$$= \frac{7,10,000 - 2,00,000}{50,000} = \frac{5,10,000}{50,000}$$

= Re. 10.20 per share

$$\text{Value per Preference Share} = \frac{\text{Net Assets - Preference Share Capital}}{\text{No. of Equity Share}}$$

$$\frac{2,00,000}{20,000} = \text{Re. } 10$$

(iii) When Prefernce Share are preferential as to dividend only

$$\text{Value per equity share} = \frac{\text{Net Assets -Arrears of Prefernce share dividend}}{\text{No. of Equity share + No. of Prefernce share}}$$

$$= \frac{7,10,000 - 20,000}{50,000 + 20,000} = \frac{5,10,000}{70,000}$$

= Re. 7.29 per share

$$\text{Value per Preference Share} = \text{Value per Equity Share} + \frac{\text{Arrears of Preference share dividend}}{\text{No. of Preference Shares}}$$

$$= 7.29 + \frac{20,000}{20,000} = \text{Rs. } 8.29 \text{ per share}$$

(iv) When Preference Shares have no preferences

$$\text{Value of Equity and Preference Share} = \frac{\text{Net Assets}}{\text{No. of Equity Shares + No. of Preference Shares}}$$

$$= \frac{7,10,000}{50,000 + 20,000} = \frac{7,10,000}{70,000}$$

= Re. 10.14 per share

नोट : स्थायी सम्पत्तियों को बाजार मूल्य पर लिया गया है, अतः मूल्य—ह्रास के आयोजन को नहीं घटाते हैं।

2.4.1.3 अवशिष्ट भागी अधिमान अंशों की दशा में अंशों का मूल्यांकन

ऐसी दशा में समता अंशों व पूर्वाधिकार अंशों को लाभांश का वितरण करने के पश्चात् शेष बचे लाभ में दोनों को कम्पनी अन्तर्नियमों में वर्णित अनुपात अथवा दर से अतिरिक्त लाभांश और वितरित किया जाता है। यदि कम्पनी अन्तर्नियमों में अधिमान अंशों की पूंजी वापसी का पूर्वाधिकार नहीं हो तो कम्पनी के समापन पर अधिमान अंशों एवं समता अंशों की प्रदत्त पूंजी जोड़ कर प्रति रु. पूंजी वापसी दर परिकलिप की जाती है तथा उसी आधार पर दोनों अंशों के धारकों को भुगतान किया जाता है।

2.4.2 प्रत्याय या प्रतिफल मूल्यांकन विधि (Yield Valuation Method)

इस विधि के अन्तर्गत अंश का मूल्यांकन उस पर मिलने वाली भावी आय (Yield) के आधार पर किया जाता है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

साधारणतया विनियोगकर्त्ता अंशों के लिए उपलब्ध शुद्ध सम्पत्ति (Net Assets) की अपेक्षा अंशों से प्राप्त आय को अधिक महत्त्व देते है। इस विधि से प्राप्त मूल्य को अंश का प्रतिफल मूल्य कहा जाता है।

प्रत्याय मूल्यांकन विधि मुख्यतः तीन तत्त्वों (i) भावी लाभांश दर, (ii) अंशधारियों में लाभांश के रूप में वितरण योग्य औसत लाभ, (iii) संभावित लाभार्जन क्षमता में से किसी एक तत्त्व को आधार मानकर अंशों का मूल्य परिकलित करती है। अंश के प्रत्याय 'प्रतिफल मूल्य' की गणना करने के लिए जिन विधियों का प्रयोग किया जात है, वे निम्नलिखित है–

1. लाभांश दर विधि (Dividend Rate Method)
2. संभावित लाभांश दर या लाभांश क्षमता दर विधि (Expected Dividend Rate or Dividend Capacity Method)
3. वास्तविक लाभर्जन दर या उपार्जन क्षमता विधि (Actual Rate of Return or earning capacity Method)

2.4.2.1 लाभांश दर विधि (Dividend Rate Method)– इस विधि के अन्तर्गत अंश धारियों को भुगतान किए गए लाभांश की दर एवं सामान्य प्रत्याय की दर से अंशों का मूल्यांकन किया जाता है। लाभांश की औसत दर तथा सामान्य प्रत्याय दर की तुलना करके यह ज्ञात किया जाता है कि विनियाग कर्त्ता अंशों के लिए कितना मूल्य देने को तैयार है इसके लिए निम्नलिखित सूत्र का प्रयोग किया जाता है–

$$\text{Value of per share} = \frac{\text{Rate of dividend}}{\text{Normal Rate of Return}} \text{X Paid up value per share}$$

$$\text{प्रति अंश मूल्य} = \frac{\text{लाभांश दर}}{\text{सामान्य प्रत्याय दर}} \text{X अंश का प्रदत्त मूल्य}$$

उपर्युक्त सूत्र में प्रयोग की गई मदों का स्पष्टीकरण

(i) लाभांश दर (Rate of Dividend)– ऐसी दर जिस पर कम्पनी लाभांश की घोषणा करती है। अधिमान अंशों पर लाभांश दर पूर्व निश्चित् रहती है जबकि समता अंश पर लाभांश दर अनिश्चित एवं परिवर्तनशील रहती है। यदि लाभांश दर गत कई वर्षों की ज्ञात है तो इन वर्षो की लाभांश दरों को भारित अथवा साधारण औसत निकाल कर इस 'औसत लाभांश दर' का प्रयोग करते हैं। सामान्यतः तीन से पांच वर्षो की अवधि का ही औसत ज्ञात करना चाहिए। कुछ लेखापाल केवल पिछले वर्ष की लाभांश दर का प्रयोग करते हैं।

$$\text{Rate of dividend} = \frac{\text{Amount of dividend}}{\text{Total paid up Capital}} \text{ X 100}$$

(ii) सामान्य प्रत्याय दर (Normal Rate of Return)– लाभ की वह दर जो कोई विनियोगकर्त्ता अपने धन को लगभग समान जोखिम वाले व्यवसाय में कहीं अन्यत्र विनियोजित करने पर सामान्यतः प्राप्त कर सकता है, सामान्य प्रत्याय दर कहलाती है। निम्नलिखित परिस्थितियों में इसमें अग्रलिखित समायोजन किए जाते हैं–

(i) यदि कम्पनी के अंशों के हस्तान्तरण पर प्रतिबन्ध है तो सामान्य प्रत्याय दर में 1/2 प्रतिशत की वृद्धि की जाएगी।
(ii) यदि लाभांश का वितरण अनियमित हो तो सामान्य प्रत्याय दर को 1/2 प्रतिशत बढ़ा देना चाहिए।
(iii) यदि कम्पनी के अंश अंशतः प्रदत हो तो सामान्य प्रत्याय की दर को 1/2 प्रतिशत बढ़ा देना चाहिए।

(iii) अंशों का आधारभूत मूल्य (Basic Denomination of the shares)– जिस मूल्य पर लाभांश की गणना की जाती है, उसे अंश का आधारभूत मूल्य कहते हैं। यदि अंकित मूल्य का कुछ भाग ही मांगा गया हो तो मांगा गया भाग ही आधारभूत मूल्य कहलाएगा।

Illustration 7

शुभम लि. ने 100 रु. वाले पूर्ण प्रदत्त समता अंशों पर निम्नलिखित लाभांश का भुगतान किया।

वर्ष 2007 : 15%, वर्ष 2008 : 17%, वर्ष 2009 : 19%

उसी प्रकार की समान कम्पनी के 100 रु. वाले पूर्ण प्रदत समता अंश 180 रु. मूल्य पर उद्धत किए गए तथा उसी प्रकार की समान कम्पनी की आगामी प्रत्याशित लाभांश दर 27 रु. प्रति अंश है।

समता अंशों का मूल्य ज्ञात कीजिए यदि लाभांश की प्रत्याशा (i) लाभांश की सामान्य औसत दर के बराबर हो,
(ii) लाभांश की भारित औसत दर के बराबर हो, तथा
(iii) वर्ष 2009 के चुकाए गए लाभांश से 10% अधिक हों।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Solution

Normal rate of return (on the basis of next div. & quoted prices)

$$= \frac{27}{180} \times 100 = 15\%$$

Value per equity share of shubham Ltd.

(i) Based on simple Average rate of past div.

$$= \frac{15 + 17 + 19}{3} = 17\%$$

$$\text{Value per Equity Share} = \frac{\text{Expected Dividend}}{\text{Normal Rate of return}} \times \text{Paid up value of Equity Share}$$

$$= \frac{17}{15} \times 100 \qquad = \text{Rs. } 113.33$$

(ii) Based on Wighted Average

$$\text{Expected Dividend} = \frac{(15 \times 1) + (17 \times 2) + (19 \times 3)}{1 + 2 + 3} = 17.67\%$$

$$\text{Value per Equity Share} = \frac{17.67}{15} \times 100 \qquad = \text{Rs. } 117.78$$

(iii) Based on Expectation of 10% growth rate

Expected Dividend = (19% + 10% of Rs. 19) = 19 + 1.90 = 20.90%

$$\text{Value per Equity Share} = \frac{20.90}{15} \times 100 \qquad = \text{Rs. } 139.33$$

लाभों का पुनर्विनियोजन (Ploughing back of profit)– जब कम्पनियों द्वारा प्रतिवर्ष होने वाले सम्पूर्ण लाभ को लाभांश के रूप में वितरित नहीं किया जाता है, अपितु कुछ लाभ पुनर्विनियाजन के उद्देश्य से संचित कर लिए जाते हैं। संचयों में हस्तान्तरण के कारण स्वामित्व पूंजी में वृद्धि हो जाती है।

Illustration 8

निम्नलिखित पारिस्थितियों में अंश का मूल्य ज्ञात कीजिए।

	M ltd.	**S Ltd.**
Profit after tax	Rs. 10,00,000	10,00,000
Equity Share of Rs. 50 Each	Rs. 50,00,000	50,00,000
Ploughing back rate	20%	40%
Normal rate of return	16%	16%

निगमीय लाभांश कर का ध्यान नहीं रखना है।

Solution

Calculation of dividend and rate of dividend

	M ltd.	**S Ltd.**
	Rs.	Rs.
Net Profit after tax	10,00,000	10,00,000
Less: Transfer to Reserve (Ploughing back of profit)	2,00,000	4,00,000
Amount of Dividend	8,00,000	6,00,000
Rate of Dividend on equity Capital	$\frac{8,00,000}{50,00,000} \times 100$ = 16%	$\frac{6,00,000}{50,00,000} \times 100$ = 12%

$$\text{Value per Equity Share} = \frac{\text{Rate of Dividend}}{\text{Normal Rate of return}} \times \text{Paid up value of share}$$

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

$\frac{16}{16}$ X 50 $\frac{12}{16}$ X 50

= Rs. 50 = Rs. 37.50

2.4.2.2 संभावित लाभांश दर या लाभांश क्षमता दर विधि (on the basis of expected rate of return)–

लाभांश की दर के आधार पर अंश का मूल्य ज्ञात करने की सबसे बड़ी कमी है कि जो कम्पनी अधिक लाभांश बांटती है उसके अंश का मूल्य अधिक होगा और कम लाभांश बांटने वाली कम्पनी के अंशों का मूल्य कम होगा। इस कमी को दूर करने के लिए लाभांश भुगतान दर के स्थान पर लाभांश क्षमता दर के आधार पर अंश का मूल्यांकन करना चाहिए। इस विधि में प्रति अंश मूल्य निम्नलिखित प्रकार से ज्ञात किया जाएगा–

$$\text{Value per equity share} = \frac{\text{Expected rate of return}}{\text{Normal rate of return}} \times \text{Paid up value of share}$$

$$\text{Expected rate of return} = \frac{\text{Profit available for equity share}}{\text{Paid up value of equity share Capital}} \times 100$$

Profit available for equity share = Net profit after Taxation - (Preference share div. + Transfer to Reserve as per Com. Act, 1956 + Provision for income tax)

Illustration 9

निम्नलिखित सूचना जानवी लि. से सम्बन्धित है। संभावित लाभांश दर के आधार पर सामान्य अंश के मूल्य की गणना कीजिए–

5,000 Equity shares of Rs. 100 each	5,00,000
2,000 Preference shares of Rs. 100 each	2,00,000
Profit before income tax	2,50,000
Transfer to General Reserve	5% of Current Year's Profit
Normal Rate of return	15%
Rate of income tax	50%

Solution:

(i) Calculation of Profit available for Equity Shareholder

		Rs.
Profit before income tax		2,50,000
Less: Provision for taxation @ 50%		1,25,000
Profit after tax		1,25,000
Less : Transfer to Reserve 5% of Rs. 1,25,000	6,250	
Preference share dividend	20,000	26,250
Profit for equity shareholders		98,750

(ii) Calculation of Expected rate of return

$$= \frac{\text{Profit avaibale for equity shareholders}}{\text{Paid up value of equity share Capital}} \times 100$$

$$= \frac{98,750}{5,00,000} \times 100$$

$$= 19.75\%$$

(iii) Calculation of Value per share

$$\text{Value per equity share} = \frac{\text{Expected rate of return}}{\text{Normal Rate of return}} \times \text{Paid up value of share}$$

$$= \frac{19.75}{15} \times 100$$

$$= \text{Rs. } 131.67 \text{ per share}$$

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

First Alternative Solution

(i) Earning per Equity share (EPS) = $\frac{\text{Profit available for equity shareholder}}{\text{No. of Equity Shares}}$

$= \frac{98,750}{5,000}$

= Rs. 19.75

(ii) Price Earning Ratio (P. E. Ratio) = $\frac{100}{\text{Normal Rate of return}}$

$\frac{100}{15}$

= 20\3

(iii) Value per Equity share = E.P.S. X P. E. Ratio

19.75 X 20\3 = Rs. 131.67

Second Alternative Solution

(i) Capitalised value Equity share = $\frac{\text{Profit available for equity shareholders}}{\text{Normal Rate of Retun}}$

$= \frac{98,750}{15} \times 100$

= Rs. 6,58,333.33

(ii) Value per Equity Share = $\frac{6,58,333.33}{5,000}$

= Rs. 131.67

2.4.2.3 वास्तविक प्रत्याय दर या उपार्जन क्षमता के आधार (on the basis of Actual Rate of Return or earning Capital)

अधिकांश कम्पनियां वास्तविक लाभ का बहुत कम हिस्सा लाभांश के रूप में वितरित करती है, लाभ की शेष राशि कम्पनी के विकास, विस्तार या आधुनिकीकरण के लिए रोक लेती है, ऐसी स्थिति में अंशधारियों को लाभांश ही नहीं बल्कि रोके गए लाभों में से वो बोनस अंश भी मिलते है। अतः कम्पनी के अंशों का मूल्यांकन दीर्घकाल लाभार्जन क्षमता के आधार पर किया जाना अधिक उपर्युक्त रहता है। अंश के मूल्य की गणना निम्नलिखित सूत्र द्वारा की जाएगी–

$$\text{Value per Equity share} = \frac{\text{Actual Rate of Retun}}{\text{Normal Rate of Retun}} \times \text{Paid up value per share}$$

$$\text{Actual Rate of Retun} = \frac{\text{Profit Earned}}{\text{Net Capital Employed}} \times 100$$

उपर्युक्त सूत्र में प्रयुक्त मदें–

(अ) अर्जित लाभ (Profit Earned)– किसी संचय में हस्तान्तरण ऋणपत्रों पर ब्याज, पूर्वाधिकार अंशों पर लाभांश घटाने से पूर्व परन्तु कर घटाने के बाद के बचे लाभ को अर्जित लाभ कहते हैं। यदि लाभ में गैर व्यापारिक आय शामिल है तो उसे लाभ में से घटाएगें तथा गैर व्यापारिक हानि घटी हुई है तो उसे लाभ में पुनः जोड़ दिया जाएगा।

(ब) शुद्ध विनियोजित पूंजी (Net Capital Employed)– शुद्ध विनियोजित पूंजी से तात्पर्य दीर्घकालीन विनियोजित पूंजी से है। इसमें समता अंश पूंजी, अधिमान अंश पूंजी, सभी प्रकार के संचय एवं आधिक्य, ऋणपत्रों एवं ऋणों एवं पुनर्मूल्यांकन पर लाभ को जोड़ा जाएगा तथा कृत्रिम सम्पत्तियों, गैर–व्यापारिक विनियोग एवं पुनर्मूल्यांकन पर हानि को घटाएगें।

Net Capital Employed = Equity Share Capital + Preference Share Capital + Reserve & Surplus + Debentures + Long term Loan - (Fictitious Assets + Revaluation Profit - Revaluation Loss - Non trade Investment)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Illustration 10

ताराचंद लि. की 31 मार्च, 2009 को स्थिति अग्रलिखित है–

Balance Sheet as 31st March, 2009

Liabilities		Amount	Assets	Amount
Share Capital			Building (at Cost)	50,00,000
50,000 Equity share of Rs. 100 each		50,00,000	Machinery (at Cost)	15,00,000
25,000 10% Preference share of Rs. 50		12,50,000	Furniture (at Cost)	7,00,000
Reserve & Surplus		2,50,000	Investment	3,00,000
Profit & Loss A\c		10,00,000	Stock	2,00,000
8% Debentures		5,00,000	Debtors	5,00,000
SundryCreditors		2,00,000	Cash at Bank	2,00,000
Provision for Depreciation			Preliminary Expenses	50,000
Building	90,000		Discount on issue of Deb.	50,000
Machinery	1,00,000		.	
Furniture	10,000	2,00,000		
		85,00,000		**85,00,000**

भवन 60,00,000 रु., मशीन 12,00,000 रु., स्टॉक 1,50,000 रु. तथा ख्याति 1,00,000 रु. पर मूल्यांकित की गई। इसी प्रकार की अन्य कम्पनी में विनियोजित पूंजी पर 12% लाभार्जन क्षमता प्रदर्शित करती है। चालू वर्ष का लाभ कर घटाने से पूर्व 9,00,000 रु. है। लाभार्जन क्षमता के आधार पर अंश के प्रतिफल मूल्य की गणना कीजिए। कर की दर 50% है।

Solution

(i) Calculation of profit earned:

	Rs.
Profit for Current year before tax	9,00,000
Less: Income from Non-Trade Investments	15,000
Profit befor Tax	8,85,000
Less: Income tax	4,42,500
Profit after Tax	4,42,500
Add: Interest on debentures	40,000
Profit after tax but before Interest or Profit Earned	4,82,500

(ii) Calculation of Net Capital Employed

Total of Assets at Realisable value

Assets:		in Rs.
Goodwill		1,00,000
Land & Building		6,00,000
Plant & Machinery		12,00,000
Furniture & Fixtures (7,00,000 -10,000)		6,90,000
Stock		1,50,000
Debtors		5,00,000
Cash at Bank		2,00,000
Total Assets		**88,40,000**
Less: Liabilities (Current)		
Creditors	2,00,000	
Provision for Taxation	4,42,500	6,42,500
Net Capital Employed		**81,97,500**

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(iii) Calculation of Actual rate of Earnings

$$\frac{\text{Profit Earned}}{\text{Net capital Employed}} \times 100$$

$$\frac{4,82,500}{81,97500} \times 100$$

= 5.89%

(iv) Calculation of value per share

$$\frac{\text{Actual Rate of Earning}}{\text{Normal Rate of Earning}} \times \text{Paid up value per equity share}$$

$$\frac{5.89}{12} \times 100$$

= Rs. 49.08

2.5 अंशों का उचित मूल्य ज्ञात करना

अंश का सम्पत्ति आधारित मूल्य (आन्तरिक मूल्य) तथा प्रत्याय मूल्य (बाजार मूल्य) के औसत मूल्य को अंशों का उचित मूल्य कहते हैं। समता अंश का उचित मूल्य अग्रलिखित सूत्र द्वारा ज्ञात किया जाता है–

$$\text{Fair value per share} = \frac{\text{Intrinsic Value of a share + Yield value of a share}}{2}$$

Illustration 11

31 मार्च 2009 को प्रज्ञा लि. का चिट्ठा निम्नलिखित है–

Balance Sheet as 31st March, 2009

Liabilities	Amount	Assets	Amount
Share Capital		Land & Building	7,00,000
10,000 Equity share of Rs. 100 each	10,00,000	Plant & Machinery	4,00,000
Reserve & Surplus	1,50,000	Furniture & Fixtures	1,00,000
Profit & Loss A\c	2,50,000	Stock	5,00,000
Workmen's Provident fund	1,00,000	Debtors	2,00,000
Sundry Creditors	2,25,000	Cash at Bank	1,25,000
Provision for Tax	3,00,000		
	20,25,000		**20,25,000**

भवन का 10,00,000 रु., फर्नीचर का 50,000 रु., प्लाण्ट एवं मशीनरी का 4,50,000 रु., स्टॉक का 6,00,000 रु. और ख्याति का 2,00,000 रु. पर मूल्यांकन किया गया। कम्पनी के कर से पूर्व लाभ इस प्रकार हैं–
2007– 5,00,000 रु. 2008– 8,00,000 रु. 2009 – 11,00,000 रु.।

इसी प्रकार की अन्य कम्पनियां अपने अंशों के बाजार मूल्य पर 20% आय देती है। कम्पनी प्रतिवर्ष लाभों का 25% सामान्य संचय में हस्तान्तरित करती है। अंशों का उचित मूल्य ज्ञात कीजिए यदि कर की दर 50% हो।

Solution

(i) Calculation of Net Assets (Realisable value)

Assets:	**in Rs.**	
Goodwill	2,00,000	
Land & Building	10,00,000	
Plant & Machinery	50,000	
Furniture & Fixtures	4,50,000	
Stock	6,00,000	
Debtors	2,00,000	
Cash at Bank	1,25,000	26,25,000

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Less: Current Liabilities

Workmen's Provident fund	1,00,000	
Provision for Taxation	2,25,000	
Creditors	3,00,000	6,25,000
Value of Net Assets		**20,00,000**

(ii) Intrinsic Value of Share

$$= \frac{\text{Net Assets}}{\text{No. of Equity Shares}} = \frac{20,00,000}{10,000} = \text{Rs. } 200$$

(iii) Calculation of Expected Rate of Return

	Rs.
Profit for 3 Years (5,00,000 + 8,00,000 + 11,00,000) =	24,00,000
Average profit = 2,40,000\3	8,00,000
Less: Income tax (50%)	4,00,000
	4,00,000
Less: Transfer to Reserve (25%)	1,00,000
Profit Available for Equity Share	3,00,000

$$\text{Expected Rate of Return} = \frac{\text{Profit available}}{\text{Equity Share Capital}} \text{ X } 100$$

$$= \frac{3,00,000}{10,00,000} \text{ X } 100$$

$$= 30\%$$

(iv) Calculation of Yield value per share

$$\text{Yield value per share} = \frac{\text{Expected Rate of Return}}{\text{Normal Rate of Return}} \text{ X Paid up value of share}$$

$$= \frac{30}{20} \text{ X } 100$$

$$= \text{Rs. } 150$$

(v) Calculation of Fair value per share

$$\text{Fair value per share} = \frac{\text{Intrinsic Value of a share + Yield value of a share}}{2}$$

$$= \frac{200 + 150}{2} = \frac{375}{2}$$

$$= \text{Rs. } 187.50$$

2.6 बोनस अंशों के निर्गमन की दशा में सामान्य अंशों का मूल्यांकन (Valuation of equity shares in Case of issue of bouns shares)

कम्पनी जब अपने संचयों एवं अवितरित लाभों का पूंजीकरण करने हेतु अपने वर्तमान अंशधारियों को बोनस अंशों का निर्गमन करती है, तो प्रति अंश बाजार मूल्य गिर जाता है, क्योंकि बोनस अंशों का निर्गमन से केवल अंशों की संख्या बढ़ती है, जबकि शुद्ध सम्पत्तियों का मूल्य तो पूर्ववदत ही बना रहता है। बोनस अंशों के निर्गमन के तुरन्त पश्चात् अंशों का बाजार मूल्य कम हो जाता है, क्योंकि प्रति अंश लाभांश, प्रत्याय या लाभार्जन भी कम हो जाता है। बोनस अंशों के निर्गमन से कम्पनी को अंश पूंजी के रूप में कोई धन प्राप्त नहीं होता है। बोनस अंशों के निर्गमन के पश्चात् अंशों का मूल्य इस प्रकार ज्ञात किया जाता है–

$$\text{Value per share} = \frac{\text{Net Assets (Existing Equity Fund)}}{\text{No. of Shares (Including bouns shares)}}$$

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Illustration 12

अंशु लि. की पूंजी 50,00,000 रु. की है जो 100 रु. वाले 50,000 रु. अंशों में विभाजित है। 31 मार्च, 2009 को इसके संचय में 50,00,000 रु. है। इस संचय में से कम्पनी प्रत्येक 5 धारित अंशों के लिए 3 बोनस अंश निर्गमित करती है। अंशों का मूल्य ज्ञात कीजिए : (i) बोनस अंशों के निर्गमन से पूर्व तथा (ii) बोनस अंशों के निर्गमन के पश्चात्।

Solution	**Rs.**
(i) Value of Share before issue of Bonus shares	
Equity share Capital	50,00,000
Add: Reserve	50,00,000
Net Assets	1,00,00,000

$$\text{Value per share} = \frac{1,00,00,000}{50,000} = \text{Rs. } 200$$

(ii) Value of Share after issue of Bonus shares	
Equity share Capital (Including Bonus)	
(50,000 + 30,000 = 80,000)	80,00,000
Add: Reserve (Rs. 50,00,000 - Rs. 30,00,000)	20,00,000
Net Assets	1,00,00,000

$$\text{Value per share} = \frac{1,00,00,000}{80,000} = \text{Rs. } 125$$

2.7 अधिकार अंशों का निर्गमन (Issue of Right Shares)

यदि कोई कम्पनी द्वारा अपने समामेलन क दो वर्ष पश्चात् या अंशों के प्रथम आंवटन के एक वर्ष पश्चात्, दोनों में जो पहले हो, यदि नए अंश निर्गमन किए जाए तो कम्पनी के विद्यमान अंशधारियों को ये अंश क्रय करने का प्रथम अधिकार है। कम्पनी के विद्यमान अंशधारियों के इस अधिकार के आधार पर निर्गमित अंश 'अधिकार अंश' (Right Shares) कहलाते हैं। जब कम्पनी अधिकार निर्गमन की घोषणा करती है तो कम्पनी के अंशों का मूल्य इस अधिकार के कारण बढ़ जाता है। अंशों का हस्तान्तरण अग्रलिखित दो प्रकार से हो सकता है–

(1) अधिकार रहित (Ex-Right)– इसके अन्तर्गत अंश बाजार मूल्य में अधिकार का मूल्य शामिल नहीं होता है क्योंकि अधिकार अंशों को क्रय करने का अधिकार विक्रेता के पास ही रहता है।

(2) अधिकार सहित (Cum-Right)– इसके अन्तर्गत अंश के बाजार मूल्य में अधिकार का मूल्य शामिल होता है, क्योंकि अधिकार अंशों को क्रय करने का अधिकार का मूल्य अग्रलिखित सूत्र से ज्ञात किया जाता है–

$$\text{अधिकार मूल्य} = \frac{\text{अधिकार अंशों की संख्या}}{\text{विद्यमान अंशों की संख्या + अधिकार अंशों की संख्या}} \times \text{(विद्यमान अंशों का बाजार मूल्य – अधिकार अंशों का निर्गमन मूल्य)}$$

अतः प्रत्येक अधिकार अंश हेतु चकाए गए अधिकार अंश का मूल्य =

अधिकार का मूल्य X प्रत्येक अधिकार अंश हेतु आवश्यक विद्यमान अंशों की संख्या

Illustration 13

नेहा लि. अपनी अंश पूंजी 100 रु. वाले प्रत्येक 5 धारित अंशों के बदले 3 समता अंशों का 240 रु. पर निर्गमन करके बढ़ाती है। कम्पनी ने पिछले वर्ष के लिए 30 रु. प्रति अंश नकद लाभांश घोषित किया है। लाभांश की एवं नए अंशों की घोषणा पर पुराने अंश बाजार में "लाभांश सहित एवं अधिकार सहित" 850 रु. पर उद्धत किए जाते है। बाजार उद्धरण में सम्मिलित अधिकार का मूल्यांकन कीजिए।

Solution	**Rs.**
Market Price of the old share	
Market Price Cum-dividend & Cum-Right	850
Less: Dividend	30
Market Price Cum-Right	820

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

$$\text{Value of Right} = \frac{\text{No. of Right Share x (M.P. - I.P.)}}{\text{No. of Existing share + No. of Right share}}$$

$$= \frac{3 \text{ X } (820 - 240)}{5 + 3} = \frac{3 \text{ X } 580}{8}$$

$$= \text{Rs. } 217.50$$

स्व परीक्षा प्रश्न (Self Examination Questions)

अति–लघुत्तरात्मक प्रश्न (Very-Short Answer Type Questions)

1. अधिकार अंशों के मूल्यांकन का सूत्र क्या है? (Bikaner Univ., 2005)
2. अंश के 'आंतरिक मूल्य' से आप क्या अभिप्रायः है? (Raj. Univ., 2006)
3. अंशों पर लाभांश की दर से क्या अभिप्रायः है? (Kota Univ., 2007)

लघूत्तरात्मक प्रश्न (Short Answer Type Questions)

1. शुद्ध सम्पत्ति से क्या आशय है? इसे ज्ञात करने की दो विधियां बताइए। (Kota Univ., 2004)
2. अंशों के मूल्यांकन की आवश्यकता किन परिस्थितियों में होती है? (Kota Univ., 2006)
3. अंशों के मूल्यांकन में बोनस अंशों के निर्गमन के प्रभाव की व्याख्या कीजिए। (Bikaner Univ., 2007)

निबन्धात्मक प्रश्न (Essay Type Questions)

1. अंशों के मूल्यांकन की विभिन्न विधियों का वर्णन कीजिए। (C.S. Inter,)
2. अंशों का मूल्यांकन करना अनिवार्य क्यों है? (M.D.S. Univ., 1997)
3. अंशों के मूल्यांकन से आप क्या समझते हैं? अंशों के मूल्यांकन की शुद्ध सम्पत्ति विधि का वर्णन कीजिए।
4. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियां लिखिए–
   (i) अधिकारों का मूल्यांकन
   (ii) अंशों का उचित मूल्य
   (iii) शुद्ध विनियोजित पूंजी
   (iv) आय–मूल्य
   (v) आन्तरिक मूल्य

निबन्धात्मक प्रश्न (Essay Type Questions)

1. 31 मार्च, 2005 को जेड प्रा. लि. का चिट्ठा अग्र प्रकार है–

Liabilities	Amount	Assets	Amount
3,000 Equity Share of Rs. 100 each	3,00,000	Sundry Assets	5,48,000
1,000 12% Prefer. Share of Rs. 100 each	1,00,000	Discount on Issue of Debentures	2,000
General Reserve	10,000	Preliminary Expenses	5,000
Debenture Redemption Reserve	20,000	Deferred Advertisement Expenses	35,000
10% Debentures	50,000		
Provision for Depreciation	15,000		
Sundry Creditors	95,000		
	5,90,000		**5,90,000**

ऋणपत्रों पर 6 माह का ब्याज बकाया है तथा अधिमान अंशों पर चालू वर्ष का लाभांश बकाया है। यह मानते हुए कि विभिन्न सम्पत्तियां पुस्तक मूल्य पर मूल्यांकित हैं, समता अंशों का मूल्य ज्ञात कीजिए, यदि

(i) अधिमान अंशों को पूंजी तथा लाभांश का पूर्वाधिकार है।

(ii) अधिमान अंशों को पूंजी का पूर्वाधिकार है, परन्तु लाभांश का पूर्वाधिकार नहीं है।

(iii) अधिमान अंशों को पूंजी का पूर्वाधिकार नहीं है, परन्तु लाभांश का पूर्वाधिकार है।

(iv) अधिमान अंशों को पूंजी तथा लाभांश (अर्थात् दोनों) का ही पूर्वाधिकार नहीं है। (M.D.S. Univ., 1997)

Ans. Value per share : (i) Rs. 91.17 & Rs. 112, (ii) Rs. 95.17 & Rs. 100, (iii) Rs. 93.38 & Rs. 105.38, (iv) Rs. 96.38

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

2. दो कम्पनियां राम लि. एवं श्याम लि. सम्पत्तियों, संचयों एवं दायित्वों में बिल्कुल एक जैसी हैं, केवल उनकी पूंजी संरचना अलग है। राम लि. की अंश पूंजी 1,10,00,000 रु. है जो 100 रु. वाले 10,000 10% पूर्वाधिकार अंशों एवं 10 रु. वाले 10,00,000 समता अंशों में विभाजित है। श्याम लि. की अंश पूंजी भी 1,10,00,000 रु. है जो 100 रु. वाले 50,000 10% पूर्वाधिकार अंशों एवं 10 रु. वाले 6,00,000 समता अंशों में विभाजित है। इस प्रकार की कम्पनियों के समता अंशों पर उचित प्रत्याय की दर 12% अनुमानित की जाती है। दोनों कम्पनियों के लिए 2003 एवं 2004 वर्ष के लिए लाभ क्रमशः 30,00,000 रु. एवं 35,00,000 रु. थे।
उपर्युक्त सूचना के आधार पर दोनों कम्पनियों के समता अंशों के मूल्य की गणना कीजिए। (M.L.S. Univ., 2004)
Ans. Value per share : Ram Ltd. Rs. 26.25, Shyam Ltd. Rs. 38.19

3. मि. तनु एक सीमित कम्पनी के समता अंशों में 1,00,000 रु. विनियोजित करना चाहते हैं एवं आपसे सलाह मांगते हैं कि आपके द्वारा निर्धारित अंशों के उचित मूल्य के आधार पर वह कितने अधिकतम अंश खरीदने की आशा कर सकते हैं। निम्नलिखित सूचना उपलब्ध है–

	रु.	रु.
निर्गमित एवं प्रदत्त पूंजी	8,50,000	
100 रु. वाले 10% पूर्वाधिकार अंश	6,50,000	15,00,000

व्यवसाय के शुद्ध लाभ 1,60,000 रु. हैं। ऐसे समता अंशों की दशा में आशान्वित सामान्य प्रत्याय की दर 10% है। यह पाया गया है कि शुद्ध सम्पतियों का मूल्य पुनर्मल्यांकन के बाद पुस्तक मूल्य से 80,000 रु. अधिक है। ख्याति की गणना अधिलाभों (यदि कोई हो) के 5 वर्षों के क्रय के आधार पर करनी है। (M.D.S. Univ., 2008)
Ans. Value of Goodwill Rs. 28,750, Intrinsic value per share Rs. 11.67, Yield value per share Rs. 11.54, Fair value of share Rs. 11.61 and No. of share acquired 8,613

4. 31 मार्च, 2008 को एक्स लि. का चिट्ठा अग्र प्रकार है–

Liabilities	**Amount**	**Assets**	**Amount**
10,000 Equity Share of Rs. 100 each fully paid	10,00,000	Land & Building	4,40,000
Profit & Loss Account	3,56,000	Plant & Machinery	1,90,000
Bank overdraft	40,000	Stock	7,00,000
Sundry Creditors	1,54,000	Sundry Debtors	3,10,000
Provision for Taxation	90,000		
	16,40,000		**16,40,000**

मूल्य–ह्रास और कर के लिए आयोजन करने के बाद, कम्पनी के शुद्ध लाभ इस प्रकार थे– 2003–04– 1,70,000 रु., 2004–05– 1,92,000 रु., 2005–06– 1,80,000 रु., 2006–07– 2,00,000 रु., 2007–08– 1,90,000 रु.।
31 मार्च, 2008 को भूमि व भवन का मूल्यांकन 5,00,000 रु. तथा प्लाण्ट व मशीनरी का मूलयांकन 3,00,000 रु. पर किया गया। व्यापार की प्रकृति को देखते हुए अन्तिम विनियोजित पूंजी पर 10% इस कम्पनी में उचित प्रत्याय मानी जाती है।
शुद्ध सम्पत्तियों के आधार पर समता अंश का मूल्य ज्ञात कीजिये। ख्याति का मूल्यांकन, अधिलाभों के 5 वर्षों के क्रय के आधार पर किया जा सकता है। (Raj. Univ., 2008)
Ans. Value of Goodwill Rs. 56,500 Value per Equity Share Rs. 158.25

5. एक ही उद्योग में लगी दो कम्पनियों के सम्बन्ध में निम्नलिखित आंकड़े उपलब्ध हैं। यदि पहली कम्पनी (उद्योग का प्रतिनिधित्व करने वाली) के अंशों का बाजार मूल्य 20 रु. है तो दूसरी कम्पनी के अंशों का मूल्य ज्ञात कीजिए।

	First Company	Second Company
Net Assets backing	300%	200%
Ratio of Profit earned to profits distributed	200%	150%
Dividend per share	Rs. 2	Rs. 3

(J. N. Univ., 1996)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

Ans. Value per share Rs. 27.27

6. 31 मार्च, 2002 को पी लि. का चिट्ठा अग्र प्रकार है–

Liabilities	Amount	Assets	Amount
25,000 Equity Share of Rs. 10 each	2,50,000	Land & Building	1,20,000
Reserve & Surplus	1,00,000	Plant & Machinery	2,30,000
Profit & Loss Account (including Rs. 1,00,000 for current year's profit after tax)	1,25,000	Furniture	20,000
		Stock	1,25,000
		Sundry Debtors 2,50,000	
Provision for Taxation (for current year's profit)	1,00,000	Less: Prov. for Baddebts 10,000	2,40,000
Creditors	1,75,000	Cash at Bank	10,000
		Preliminary Exp.	5,000
	7,50,000		**7,50,000**

निम्नलिखित सूचनाएं भी उपलब्ध करवाई गई हैं–

1. भूमि व भवन, प्लाण्ट व मशीनरी, फर्नीचर एवं देनेदार का बाजार मूल्य क्रमशः 2,00,000 रु., 2,40,000 रु., 15,000 रु. एवं 2,35,000 रु. है।
2. इसी प्रकार का व्यापार करने वाली कम्पनियां अपने अंशों के बाजार मूल्य पर 13.5% लाभ प्रदर्शित करता है।
3. गत तीन वर्षों के कर से पूर्व लाभ 35,000 रु. वार्षिक वृद्धि प्रदर्शित करते हैं।
4. ख्याति का मूल्यांकन, अधिलाभों के 2 वर्षों के क्रय के आधार पर किया जा सकता है।(सामान्य औसत लाभ के आधार पर)।

आपको अंशों का उचित मूल्य ज्ञात करना है। (B.B.A. Part-I, 2002)

Ans. Value of Goodwill Rs. 65,000, Intrinsic value per share Rs. 24.60, Yield value per share Rs. 26.63

7. अंशु लि. की पूंजी 25,00,000 रु. की है जो 100 रु. वाले 25,000 रु. अंशों में विभाजित है। 31 मार्च, 2009 को इसके संचय में 50,00,000 रु. है। इस संचय में से कम्पनी प्रत्येक 5 धारित अंशों के लिए 3 बोनस अंश निर्गमित करती है। अंशों का मूल्य ज्ञात कीजिए : (i) बोनस अंशों के निर्गमन से पूर्व तथा (ii) बोनस अंशों के निर्गमन के पश्चात्।

8. नेहा लि. अपनी अंश पूंजी 250 रु. वाले प्रत्येक 5 धारित अंशों के बदले 2 समता अंशों का 600 रु. पर निर्गमन करके बढ़ाती है। कम्पनी ने पिछले वर्ष के लिए 30 रु. प्रति अंश नकद लाभांश घोषित किया है। लाभांश की एवं नए अंशों की घोषणा पर पुराने अंश बाजार में "लाभांश सहित एवं अधिकार सहित" 2,200 रु. पर उद्धत किए जाते है। बाजार उद्धरण में सम्मिलित अधिकार का मूल्यांकन कीजिए।

9. श्याम लि. ने 250 रु. वाले पूर्ण प्रदत्त समता अंशों पर निम्नलिखित लाभांश का भुगतान किया।

वर्ष 2007 : 16%, वर्ष 2008 : 17%, वर्ष 2009 : 18%

उसी प्रकार की समान कम्पनी के 250 रु. वाले पूर्ण प्रदत समता अंश 460 रु. मूल्य पर उद्धत किए गए तथा उसी प्रकार की समान कम्पनी की आगामी प्रत्याशित लाभांश दर 70 रु. प्रति अंश है।

समता अंशों का मूल्य ज्ञात कीजिए यदि लाभांश की प्रत्याशा (i) लाभांश की सामान्य औसत दर के बराबर हो, (ii) लाभांश की भारित औसत दर के बराबर हो, तथा
(iii) वर्ष 2009 के चुकाए गए लाभांश से 10% अधिक हों।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun